बेगम मेरी विश्वास

खण्ड दो

बिमल मित्र

बेगम मेरी विश्वास



स्वर्गीय अग्रज डॉ० विजयकुमार मिश्र

स्मरणीयेषु—

आमुख

कर्नल मॉलेसन ने अपनी पुस्तक में लिखा है—The story of the rise and progress of the British power in India possesses peculiar fascination to all classes of readers It is a romance sparkling with incidents of the most varied character.

मेरी यह धारणा है कि इस एक विषय को लेकर जितने ग्रंथ देश-विदेशों में लिखे गये हैं उतने अन्य किसी विषय पर नहीं लिखे गये। गुलाम हुसैन की सियार-उल-मुताखरीन से लेकर सर जॉर्ज फॉरेस्ट तक और सर जॉर्ज फॉरेस्ट से लेकर सन् १९६३ में छपी माइकेल एडवर्ड की लिखी पुस्तक 'बैटल ऑफ प्लासी' तक की लम्बी तालिका मौजूद है।

यह बहुश्रुत और बहुपठित कहानी ही इतने दिनों से मेरा पीछा क्यों करती रही है, इसकी कोई ठीक-ठीक वजह मैं नहीं बतला सकता। और सिर्फ पीछा ही नहीं करती रही, बल्कि बीच-बीच में मेरी मानसिक शांति में बाधा भी पहुँचाती रही है। बार-बार इस कहानी को भूलने की कोशिश की, बार-बार इसे अपने मन से मिटा देने की कोशिश की लेकिन वैसा न कर सका। सन् १९५६ से १९६६, कितने साल हुए? दस साल! इन्हीं दस सालो के बीच एक पत्रिका में 'सखी-संवाद' के नाम से इस कहानी को लिखना प्रारम्भ किया था। एक साल तक प्रकाशन होने के बाद बीच में ही लिखना बंद कर सोचा था, छुटकारा मिल जायेगा। लेकिन फिर भी उसने मुझे छोड़ा नही। आज इतने दिनों बाद दुबारा शुरू से लिखकर जैसे मुझे छुटकारा मिला। अब जाकर मैं निश्चित हो पाया हूँ।

इस कथा के प्रति मैं एक कारण से विशेष कृतज्ञ हूँ। वह यह है, कि इस कथा के साथ दो सौ साल पहले के कुछ लोगों से मेरा परिचय हो गया। बड़ा ही घनिष्ठ परिचय। इस घनिष्ठता की वजह से मुझे यह जानने का मौका मिला कि इन दो सौ सालों में जो भी रद्दोबदल हुए, वह बाहरी थे। वास्तव में मानव वही मानव है। देखा कि हार और जीत सिर्फ कहने की बात है! जो जीतता है वह जीतता नहीं, जो हारता है वह भी वास्तव मे हारता नहीं। इतिहास की हार-जीत की संज्ञा उपन्यास की हार-जीत की संज्ञा से अलग है। देखा, उपन्यास ही सत्य है इतिहास मिथ्या है। ऐतिहासिकों में मतभेद है। लेकिन औपन्यासिक निरंकुश, निर्विरोध और निर्विकार है। एकमात्र उपन्यास ही इतिहास के मर्म केन्द्र तक पहुँचकर अपने को प्रतिष्ठित कर पाता

है। ब्रिटिश पार्लियामेंट ने लॉर्ड क्लाइव को जालसाज़ कहकर उसका घोर अपमान किया था। भारतवासियों ने भी जालसाज़ कहकर उसे नीचा दिखलाना चाहा। क्लाइव को मुजरिम के कटघरे में खड़ा कर और उसे कड़ी सजा देकर ब्रिटिश पार्लियामेंट ने इतिहासकारों की नजरों में निष्कलंक बने रहना चाहा। लेकिन चोरी का माल हजम करने में उसे कोई हिचक नहीं हुई। क्लाइव का जो होना है हो, भारतवासियों का जो होना है हो, लेकिन इतिहास निष्कलंक बना रहे।

लेकिन ट्रुथ? सत्य?

सहस्र सम्मतियों के आधार पर जो ग्रंथ लिखा जाता है, उसी का एक और नाम है इतिहास। इतिहासकार के उपादान वे सारे पुराने रेकॉर्ड हैं, जो हमेशा सत्य-भाषण नहीं करते। जिस तरह रूस के जार के जमाने में लिखा इतिहास स्टालिन के जमाने में रद्द हो जाता है, उसी तरह स्टालिन के जमाने का इतिहास ख्रुश्चेव के जमाने में झूठा साबित कर दिया जाता है। लेकिन इतिहासकार के लिए इन उपादानों का मूल्य जो भी रहे, उपन्यासकार के लिए उनका मूल्य कानी कौड़ी होता है। एकमात्र सत्य के संधान में उपन्यासकार की सार्थकता है। इसीलिए 'बेगम मेरी विश्वास' इतिहास पर आधारित तो है ही लेकिन उससे भी अधिक सत्य पर आधारित है।

—बिमल मित्र

प्रसिद्ध इतिहासज्ञ

डा०—रमेशचन्द्र मजूमदार का अभिमत

एक महान् उपन्यास

लब्धप्रतिष्ठ उपन्यासकार श्री विमल मित्र ने सम्प्रति 'बेगम मेरी विश्वास' नामक एक वृहद् ऐतिहासिक उपन्यास की रचना की है। इस ग्रंथ की भूमिका में उन्होंने कहा है—"उपन्यास ही सत्य है और इतिहास मिथ्या।...."एकमात्र उपन्यास ही इतिहास की मर्मवस्तु के केन्द्र तक पहुँच सकता है।" बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला के अल्प-कालीन राजत्व की पृष्ठभूमि में एक अनूठी और मनोरम कहानी के माध्यम से उन्होंने इसी मत की स्थापना करने का प्रयास किया है। इतिहासज्ञ की गति मुर्शिदाबाद के विराट् 'चेहल-सुतून' प्रासाद के राजदरबार तक ही सीमित है। उसके परे जो विराट् जनाना महल है—उसके दरवाजे इतिहासज्ञों के लिये हमेशा बन्द रहे हैं। किन्तु उपन्यासकार मन के रथ पर आरूढ़ होकर वहाँ आजादी के साथ आ-जा सकता है। ी विमल मित्र ने इसी महल की एक अनूठी कहानी की भित्ति पर अपने उपन्यास की ःचना की है। इस उपन्यास की नायिका बेगम मेरी विश्वास थी एक साधारण हिन्दू ःमणी! सिराजुद्दौला के विलास-व्यसन की माँग पूरी करने के लिए जिन परिस्थितियों ः बीच उसका जीवन व्यतीत हुआ, उसी आधार पर यह अनूठी कहानी लिखी गई है। ःसराजुद्दौला के जीवन की कुछेक प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में मेरी विश्वास ःथा और भी कुछेक नर-नारियों की विचित्र जीवन-कथा इस उपन्यास की उपजीव्य ः। सिराजुद्दौला के व्यर्थ जीवन के विषादमय चित्र, उनके दुश्चरित्र सहयोगी, नवाब ःलीवर्दी की बेगम—सिराजुद्दौला की नानी तथा और अनेकानेक पार्श्व-चरित्रों के ःमावेश एवं 'चेहल-सुतून' की अन्दरूनी जिन्दगी के चित्र द्वारा अठारहवीं शताब्दी के ःध्य के बंगाल की जीवन-यात्रा की एक अपूर्व छवि फूट पड़ी है। मेरी विश्वास के ःसाधारण व्यक्तित्व ने इस चित्र को महिमा-मंडित किया है। श्री बिमल मित्र अपनी ःमिका में चाहे जो कहें; जिन ऐतिहासिक तथ्यों से हम वाकिफ़ हैं, उनको उन्होंने ःवीकार कर लिया है—उसका उल्लंघन नहीं किया है। उनके ऊपर कल्पना की तूलिका ःे उन्होंने नाना प्रकार के रंगों का समावेश किया है। उपन्यासकार को यह अधिकार ः भी। अतएव इस उपन्यास में इतिहास के साथ कल्पना का विरोध नहीं, समन्वय ःटित हुआ है।

—रमेशचन्द्र मजूमदार

अनुवादक की ओर से



हिन्दी पाठकों को विमल बाबू का परिचय देना आवश्यक है। बंकिम, रवीन्द्र और शरत् के बाद विमल बाबू ही बँगला साहित्य के ऐसे कथाकार हैं जिन्होंने भारत के हर कोने में अपने पाठक बना लिये हैं। अधिक मूल्य होने के बावजूद उनके उपन्यासों एवम् विभिन्न भारतीय भाषाओं में उनके अनुवादों की माँग दिनोंदिन बढ़ रही है। उनकी लोकप्रियता तथा सफलता का सबसे बड़ा प्रमाण यही है।

बात २३ जून सन् १७५७ की है। प्लासी की लड़ाई में बंगाल का नवाब सिराजुद्दौला हार गया। उसी के साथ भारत का स्वातंत्र्य सूर्य पूरे दो सौ साल के लिए अस्त हो गया। अठारहवीं सदी के मध्यकाल से बीसवीं सदी के मध्य तक उस पराधीनता की ग्लानि हमारे जीवन को झकझोरती रही। पश्चिमी यंत्र-सभ्यता की आँधी ने भारत के सामाजिक जीवन को सिर्फ आलोड़ित ही किया, ऐसी बात नहीं है, उत्थान-पतन की इस पथ-परिक्रमा में अगर उससे हानि हुई तो लाभ भी कम नहीं हुए। सिराज की मौत पर कुछ लोगों ने आँसू बहाये, लेकिन उसकी मौत से खुश होने वाले लोग ही शायद ज्यादा थे; और दुर्भाग्यवश ये लोग थे उसके अपने ही अजीज, अपने ही दोस्त! दुर्भाग्य और दुर्घटनाओं के अंधकार में भटकते उस युग की कहानी का नाम ही है 'बेगम मेरी विश्वास'।

आधुनिक बंगाल के दो सौ सालों का इतिहास एवम् उनमें अन्त-र्निहित प्राण-स्पन्दन विमल बाबू के चार उपन्यासों में पूर्ण होता है। युग-चिह्न के रूप में 'बेगम मेरी विश्वास' उनके इस उपन्यास-चतुष्टय का प्रथम भाग है। अपने ही मुल्क के लोगों की गद्दारी और साजिशों में फँसकर सन् १७५७ का हिन्दुस्तान किस प्रकार गुलामी के शिकंजों में जकड़ गया, इसका इतना सटीक विवरण इसके पूर्व के किसी उपन्यास

में नहीं मिलता। अंग्रेजी हुकूमत के अंधकार से आच्छन्न दिनों के बीच ही एकदिन हठात् ऊषा की लालिमा दिखलायी दी।....सन् १८८५ में 'इंडियन नेशनल कांग्रेस' का जन्म हुआ। उसी दिन से लेकर सन् १९१२ तक, जबकि भारत की राजधानी कलकत्ते से दिल्ली चली गयी, की कहानी आपके दूसरे उपन्यास 'साहब बीबी गुलाम' की विषय-वस्तु है। इसके बाद ही घनघोर संग्राम का युग आया। एक ओर था ब्रिटिश राजतंत्र और उसका पाशविक अत्याचार तथा दूसरी ओर थी आजादी के लिए सिसकती भारत की आत्मा, इस सब को मिलाकर द्वितीय महायुद्ध के बाद भारत की स्वतंत्रता-प्राप्ति। १९१२ से लेकर १९४७ तक की इस कहानी का नाम है, 'खरीदी कौड़ियों के मोल'। इसके बाद उनके एक और ग्रंथ 'इकाई दहाई सैकड़ा' में स्वाधीन भारत की एक और ही तस्वीर देखने को मिलती है।

इस ग्रंथ-चतुष्टय के माध्यम से कथाकार ने दीर्घ दो सौ साल की पथ-परिक्रमा को वास्तविक रूप में निरूपित किया है, एवम् समाज-वीक्षण और जीवन-दर्शन की स्वाभाविक क्षमता से शायद बँगला साहित्य के एकमात्र सामाजिक इतिहासकार के रूप में अपने को प्रतिष्ठित किया है।

—दिनेश आचार्य

जनसाधारण के चरित्रगुण से राज्य की स्थापना होती है; जनसाधारण के चरित्र-दोष से राज्य नष्ट होता है। शासक तो निमित्त मात्र होते हैं। सिराजुद्दौला के दोष से राज्य नष्ट नहीं हुआ। उन दिनों सर्वगुणसम्पन्न और कोई नवाब होता, तब भी जनसाधारण के चरित्रदोष से राज्य का नष्ट होना अवश्यम्भावी था।

॥ बंगदर्शन ॥ १२८६ बंगाब्द ॥ चैत्र ॥

बेगम मेरी विश्वास

(द्वितीय खण्ड)

दुनिया में कुछ लोग होते हैं जो चुपचाप अपना काम करते रहते है। ये लोग हमेशा परदे के पीछे ही रहना पसन्द करते है। ये लोग परदे के पीछे से सब कुछ देखते रहते है। इन लोगो मे उच्चाकाक्षा होती है लेकिन इसके लिए ये लोग किसी का नुकसान नही करते। उनका अपना काम होना चाहिए। दूसरे का हो तो भी अच्छा, न हो तो भी अच्छा।

अठारहवी सदी के बडे-बड़े अमीर-उमराव भी अपनी उन्नति चाहते थे लेकिन उन्नति कभी भी चिरस्थायी नही रहती। आज वे बडे हैं, लेकिन कल फिर मे छोटे हो सकते हैं।

आज नवाब सिराजुद्दौला बंगाल, बिहार और उड़ीसा के नवाब हैं, कल उनकी नवाबी छिन भी सकती है। उनके पतन के बाद कही अपना भी पतन न हो जाये, इस बात के लिए यह ध्यान मे रखना जरूरी है कि भावी नवाब कौन होगा? अभी से उसका प्रिय पात्र बने रहना होगा।

जो दूरदर्शिता होने पर यह बात सही हो सकती है वह दृष्टि हर किसी में नहीं थी। सिर्फ दो आदमियो में थी। एक था नन्दकुमार और दूसरा मुंशी नवकृष्ण। उद्धवदास ने मुंशी नवकृष्ण की कहानी पहले ही लिख दी है। अब नन्दकुमार की कहानी शुरू होती है।

हुगली का फौजदार नन्दकुमार जन्म से ब्राह्मण था। रोज दोनों वक्त सन्ध्या और जप किये बिना पानी तक नहीं पीता था। लेकिन उसका दिल और दिमाग हर समय मुर्शिदाबाद मे रहता था। उसके पास मुर्शिदाबाद से जो भी आता उससे पूछता, "क्या खबर है?"

आजकल नवाब किसकी बात पर उठता-बैठता है। मीर जाफर की या जगत सेठ जी की नवाब से पटती है या नही, नन्दकुमार को पता रहता था।

वह जानता था कि मुर्शिदाबाद की खबर माने नवाब की गुप्त खबर। इस समय [illegible] नवाब का प्रियपात्र कौन है? नवाब किसकी बात अधिक

आजकल कैसा है ? जगत् सेठ किस गुट में है ? मीर जाफर के साथ नवाव का कैसा मेलजोल चल रहा है ? किस अमीर पर नवाव ज्यादा खुश हैं ? नवाव हिन्दुओं की तरफदारी कर रहे हैं या मुसलमानों की ? मोहनलाल, मीर मदन हिन्दू हैं। इन पर जव नवाव की नेक नजर है तो नंदकुमार पर भी पड़ सकती है।

फौजदार के पास फिरंगी लोग भी आते हैं। अपना देश छोड़कर मक्खी-मच्छरों से भरे, गर्मी और जूड़ी से भरे, खून-खरावी, जलन और खुशामद से भरे मुल्क में वे दौलत कमाने के लिए ही आये हैं न ? दौलत कमाने के लिए कारोबार करना पड़ता है, जिसके लिए नवाब निजामत को टैक्स भी देना पड़ता है। इसीलिए निजामत की खवर जानना चाहते हैं।

कोई कहता, "सुना है, आजकल नवाव मरियम वेगम की वात ज्यादा मानते हैं।"

"मरियम वेगम ? वह कौन है ?"

कोई कहता, "अपने हतियागढ़ के राजा की दूसरी वहू है, नवाब आजकल उसी के इशारे पर नाचते हैं।"

तभी कोई कहता, "मैंने तो यहाँ तक सुना है फौजदार साहव, कि मरियम वेगम रात के वक्त मरदाना भेस वनाकर शहर में घूमती है।"

"शहर में घूमती है ? क्यों ?"

"अरे क्यों क्या ? नवाव के दुश्मनों को पकड़ने के लिए।"

जो भी सुनता वही वेगम साहवा की हिम्मत की दाद देता। कहता, "यह तो ताज्जुव करने की वात है।"

इतने में दूसरा कहता, "नवाव के दोस्त कहाँ है ? सभी तो दुश्मन हैं।"

ये सारी खवरें डच कोठियों में भी जातीं, चन्दननगर की फ्रांसीसी कोठियों में भी जातीं और हुगली की अंग्रेज कोठी में भी। नवाव से अंग्रेजों की लड़ाई की खवर आती तो फौजदार के दफ्तर में वड़ी सनसनी फैल जाती। कव कैसा हुक्म आवे कौन कह सकता है ? आज अंग्रेजों से लड़ाई है तो कल डचों से हो सकती है, फिर फ्रांसीसियों से भी। हिन्दुस्तान का कोई यह नहीं कह सकता कि किसके भाग्य में क्या है ? नवावी निजामत में कोई किसी पर विश्वास नहीं करता, इसलिए कोई किसी से कुछ कहता भी नहीं। कहीं वह वात निजामत तक पहुँच गयी तो वुलावा आयेगा और नौकरी भी खत्म। अगर मरियम वेगम तक वात पहुँच गयी तब तो और भी मुश्किल है। इसके अलावा मेंहदी निसार है, यारजान है, मंसूर अली मेहर है, फिर जासूस वशीर मियाँ भी है।

फिर एक दिन खवर आयी, नवाव की फौज अंग्रेजों से हार गयी है। हारकर नवाव ने सुलहनामे पर दस्तखत भी किया है। वाट्स और अमीचंद को मुर्शिदावाद वुलाया गया है। दोनों कलकत्ते से रवाना भी हो चुके हैं।

इस खवर के मिलने के वाद फौजदार साहव रोज जप करते समय मन ही मन

कहते रहे, हे माँ काली, हे जगदंबा, नवाब सीधे मुर्शिदाबाद चला जाये, हुगली की तरफ न आये।

नवाब हुगली आये तो क्या फौजदार की झंझट कम है? आने से पहले से इंतजाम करना होगा, फिर नवाब के रहते सारे इंतजाम की देख-भाल और चले जाने के बाद भी घबड़ाहट बनी रहती है। नवाब जब आते हैं तो अकेले नहीं आते। भूत-पिशाचों की टोली उनके साथ लगी रहती है। नवाब से जितना डर नहीं उससे ज्यादा इन भूत-प्रेतों से डरना होता है। इनके लिए शराब और औरत, पता नहीं क्या-क्या जुटाना पड़ता है। इसलिए कोई भी फौजदार नहीं चाहता कि नवाब मेरे इलाके में आये।

उस दिन फौजदार के पास अचानक नवाब का खत आया।

नवाब ने लिखा था, 'अंग्रेज लोग सुलहनामे की शर्तों के खिलाफ हमारे दोस्त फ्रांसीसियों की कोठी चन्दननगर की ओर बढ़ रहे हैं। हुगली के फौजदार जनाब नन्दकुमार उन्हें आगे न बढ़ने दें।'

खत पढ़ते ही फौजदार पहले तो चौंक उठा। फिर लड़ाई? इसके बाद फौजदार साहब ने दोबारा खत पढ़कर उस आदमी की ओर देखा। कहा, "और रुपये? रुपये कहाँ हैं?"

"कैसे रुपये?"

"क्यों, इसमें एक लाख रुपये के लिए जो लिखा है!"

खत के साथ एक और खत भी था। उसमें लिखा था, "इस पत्र-वाहक के हाथ एक लाख रुपये भेज रहा हूँ। ये रुपये फ्रांसीसी सरकार को दिये जायें। नवाब सरकार ने उन लोगों से दो लाख रुपये लिये थे। इन रुपयों से वे लोग अंग्रेजों को ठीक करें।"

इसके बाद उस आदमी ने कहा, "आपके लिए यह थैली भी है।"

फौजदार साहब ने थैली लेकर रख ली, इसके बाद कहा, "ठीक है, अब तुम जाओ।"

"जी सरकार, रसीद नहीं देंगे?"

"किस बात की रसीद?"

"यही खत और रुपयों की।"

"ठीक है दफ्तर में मुंशी से ले लो।"

लेकिन दो दिन बाद ही अचानक अमीचन्द आ पहुँचा। नन्दकुमार ने हँसकर पूछा, "आप?"

लेकिन अमीचन्द हँसा नहीं। उसने कहा, "आसपास में कोई है तो नहीं? आपसे कुछ जरूरी बातें करनी थीं। कुछ रुपये कमाना चाहते हैं?"

रुपये! यह पंजाबी कहता क्या है?

फिर कहा, "अरे रुपया ही तो कलियुग में सब कुछ है अमीचन्द साहब!"

"मैं कहता हूँ, आपको कलकत्ते के बारे में कुछ पता है ?"

नन्दकुमार ने कहा, "कलकत्ते की खबर रखे बगैर फौजदारी कैसे चल सकती है ? लेकिन अब तो सुना है नवाब नहीं, मरियम बेगम हुकूमत चला रही है।"

अमीचन्द ने कहा, "यह सब उस मेंहदी निसार की बेवकूफी का नतीजा है। पता नहीं कहाँ से उसे ले आया, अब उसी को सीधा कर रही है। लेकिन खैर, उस बात को जाने दीजिए, हम लोग काम की बातें करें।"

नन्दकुमार ने कहा, "कहिए, मैं क्या खिदमत कर सकता हूँ ?"

"आपके पास कोई हुक्मनामा आया है ?"

"जी हाँ, आया है।"

अमीचन्द ने कहा, "अब आपको एक काम करना होगा फौजदार साहब। आपके सिवा यह काम करने का बूता और किसी में नहीं है। रुपये के लिए फिक्र न करें, जितना माँगेंगे, मिलेगा।"

फौजदार ने पूछा, "मुझे क्या करना होगा ?"

अमीचन्द ने कहा, "काम कोई मुश्किल नहीं है। फिरंगी फौज जब चन्दननगर की ओर बढ़े तो आप उसे रोकेंगे नहीं।"

सुनकर फौजदार जरा देर चुप रहा।

अमीचन्द ने कहा, "अरे इसमें सोचने का क्या है ?"

"लेकिन यह क्या ठीक होगा ?"

"आप भी कैसी बातें करते हैं ? आपको और आपके दफ्तर वालों को क्या हर महीने तनख्वाह मिलती है ?"

नन्दकुमार ने कहा, "वक्त पर अगर तनख्वाह मिलती रहती तो फिर फिक्र किस बात की थी ?"

अमीचन्द ने मुस्कराते हुए कहा, "फौजदार साहब, यह मुझे मालूम है। यह नवाबी ज्यादा दिन नहीं टिकेगी। इसलिए तो कहता हूँ डूबते का साथ छोड़कर किसी बड़े दरख्त से अपनी किश्ती बाँधिए। ये लोग, मेरा मतलब फिरंगियों से है, व्यापारी आदमी हैं, नियम-कानून के बड़े पक्के होते हैं, कभी भी वादे के खिलाफ कोई काम नहीं करते।"

"ठीक है, लेकिन मुझे करना क्या होगा ?"

"वही आपको बतलाया न, क्लाइव साहब से मेरी बात हो चुकी है। आप जो रकम माँगेंगे, मिलेगी।"

"पाँच हजार देगा ?"

"क्यों नहीं देगा ? पाँच ही क्यों छः या सात जो भी कहेंगे मिलेगा।"

नन्दकुमार कुछ देर सोचता रहा, फिर बोला, "ठीक है, मैं जरा ठाकुरघर से हो आता हूँ।"

"ठाकुरघर ?"

"जी हाँ, बिना अपनी इष्टदेवी की आज्ञा के मैं कुछ भी नहीं करता।"

कहकर नन्दकुमार अन्दर चला गया। जरा देर बाद बाहर आते ही अमीचन्द ने पूछा, "आपकी इष्टदेवी ने क्या कहा?"

"कहा कि बारह हजार ले।"

"ठीक है वही सही; बारह हजार ही लीजिए।"

"देगा तो?"

"जरूर। फिर भी आप मेरी बात पर यकीन न कीजिए। मैं क्लाइव के पास आज ही आदमी भेजता हूँ। साहब अगर जवाब में गुलाब लिखकर भेजें तो समझ लीजियेगा कि उसे आपकी बात मंजूर है।

"फिर मुझे क्या करना होगा?"

"कुछ भी नहीं। फ्रांसीसियों के पास नवाब के भेजे हुए रुपये न भेजिए और अंग्रेज जब चन्दननगर पर हमला करने आयें तो आप चुपचाप बैठे रहें।"

अमीचन्द चला गया।

बारह हजार रुपये! मुफ्त में इतनी बड़ी रकम हाथ लग गयी। वह तो वक्त पर इष्टदेवी की याद आ गयी नहीं तो बेकार में छः हजार रुपये का नुकसान हो जाता। फौजदार नन्दकुमार यही सब सोच रहा था कि पहरेदार ने आकर कहा, "हुजूर, फिरंगी कोठी से हरकारा आया है।"

"ठीक है ले आ।"

हरकारे ने आकर फौजदार साहब को कोर्निश की और एक लिफाफा बढ़ा दिया। फौजदार नन्दकुमार ने वह लिफाफा अन्दर अपने खास कमरे में ले जाकर खोला, कागज के एक सफेद टुकड़े पर लिखा था—

गुलाब का फूल।



काम के मारे क्लाइव को दम मारने की भी फुरसत नहीं थी। एक न एक फिक्र उसे लगी ही रहती। और करने वाला भी वह अकेला। एक वर्दनी था हर्षचरण, उसे भी उन लोगों के लिए छोड़ देना पड़ा था।

कर्नल किसी-किसी दिन बड़ा अनमना हो जाता था। होम लौटने को जी चाहता। उसे अपने घर की याद आती।

क्लाइव ने बाहर की ओर देखा। फौज तैयार हो रही थी। और नवाब के सिपाही तामजान के पीछे-पीछे चले आ रहे थे। नवाब की सुना है, बहुत-सी बेगमें हैं। इतनी सारी बेगमें अकेले नवाब को कैसे प्यार करती होंगी। सुना है, इन बेगमों को स्लेव की तरह रखा जाता है। शायद हर्षचरण को इन बेगमों के बारे में कुछ पता हो।

हरीचरण से पूछने पर उसने कहा, "हजूर, मैंने कभी बेगमों को नहीं देखा, सिर्फ बाँदियों को देखा है।"

"बाँदी माने ?"

"बांदी माने नौकरानी।"

"नौकरानी ?"

"जी हाँ बेगम को हरम के बाहर निकलने का हुक्म नहीं है।"

"किसी के साथ बातचीत भी नहीं कर पातीं ?"

"जी नहीं हजूर। बाहर अगर जाना भी होता है तो बुरका पहनना होता है।"

"अन्दर हरम में मर्द लोग जाते हैं या नहीं ?"

"जी नहीं, वहाँ सिर्फ खोजा लोग जा सकते हैं।"

साहब ने हैरत से कहा, "यूनक। स्ट्रेंज !"

काफी दिनों बाद आज क्लाइव ने अपने पिता को खत लिखा। उसमें भी उसने लिखा, 'डैडी यहाँ सब अजीब हैं। यहाँ का नवाब बहुत-सी शादियाँ करता है। अपनी बेगमों को वह स्लेव्स की तरह रखता है। औरतों पर यहाँ बड़ा जुल्म होता है। एक ही एपार्टमेंट में बेगमों को रखा जाता है जिसका नाम है हरम। यहाँ पॉलीगेमी खूब चलती है। एक मर्द की सैकड़ों बीवियाँ हो सकती हैं। लेकिन इसके लिए उसकी निन्दा नहीं होती। लेकिन आज एक बेगम से मेरी मुलाकात हुई। वह बहुत ही इंटेलीजेन्ट थी। पहले मेरा ख्याल था कि जो कई बीवियाँ रखता है, उसकी बीवियाँ उससे हेट करती हैं लेकिन देखा, यह बेगम अपने हजबेंड को खूब रेस्पेक्ट करती है। यह औरत बहुत अच्छी थी। इंडियन औरतों के बारे में मेरी धारणा बदलती जा रही है। जिस हिन्दू बीवी को शैल्टर दिया है वह भी बहुत ही रेस्पेक्टेबल लेडी है। लेकिन आश्चर्य की बात है कि उसकी शादी एक पोएट से हुई है। यह पोएट आदमी बड़ा नेक है। इसका आउटलुक ब्रॉड है। यह इन्सान को ही गॉड समझता है। इसके लिए हरेक आदमी गॉड है। इससे मुझे नयी लाइट मिली। कई दिनों पहले हमारी सिलेक्ट कमेटी के पास खबर आयी थी कि फ्रांस के साथ हमारी लड़ाई शुरू हो गयी है। काउंसिल ने मुझे आर्डर किया है कि यहाँ जो फ्रेंच टेरिटरी है चन्दननगर, उस पर हमला करने के लिए। इसी से मैं बड़ा बिजी हूँ। बंगाल का मिलिटरी अफेयर्स जरा ठीक होते ही मैं आपके पास आऊँगा।'...

जल्दी-जल्दी चिट्ठी खतम कर क्लाइव लिफाफे को बंद करने जा ही रहा था। इसी डाक से चिट्ठी नहीं गयी तो पता नहीं कब पहुँचेगी। इस जहाज से जाने पर भी कितने दिनों में यह चिट्ठी पहुँचेगी कोई ठीक नहीं। सात महीने भी लग सकते हैं और आठ महीने भी।

तभी बाहर से आवाज आयी, "अरे साहब, तुम अन्दर हो क्या ?"

"हाँ दीदी, क्या हुआ ?"

सालाना खिलअत तीन लाख रुपये थी वह सिर्फ बारह हजार रुपयों के लिए नवाब का इतना बड़ा नुकसान कैसे कर सकता था !

नवाब के सामने पेश होने पर भी नन्दकुमार ने अपनी सफाई में यही कहा।

उसने कहा, "जहाँपनाह यह कैसे सोच पाये कि मैं जहाँपनाह के दुश्मनों से घूस लूँगा। यह कैसे मुमकिन हो सकता है ?"

नवाब उस वक्त बड़े संजीदा थे। लेकिन कान्त को लग रहा था नवाब जैसे नन्दकुमार के आगे हाथ जोड़कर चिरौरी कर रहे हों। कान्त को अन्दर ही अन्दर बड़ा बुरा लग रहा था। नवाब के आगे खड़े होकर जो इतना बड़ा झूठ बोल सके उसे तो कत्ल कर देना चाहिए। लोग इतना भी नहीं समझते कि नवाब के खत्म होते ही हमें भी खत्म हो जाना होगा।

मराली के वापस आते ही कान्त ने पूछा था, "साहब के पास जाने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई ?"

मराली ने कहा था, "क्यों मैं तो नवाब के भले के लिए ही गयी थी।"

"लेकिन फिरंगी साहब के साथ बात करने में तुम्हे डर नहीं लगा ?"

"जब चेहल-सुतून छोड़कर यहाँ आ सकती हूँ तो पेरिन साहब के बगीचे में जाने मे क्यों डर लगता ? जो थोड़ा-बहुत डर था भी वह एक जने का ख्याल कर खत्म हो गया।"

कान्त ने पूछा था, "लेकिन चेहल-सुतून छोड़कर आने की क्या जरूरत थी ? एक भी खोजा या बाँदी लिये बिना बाहर निकलने मे डर नही लगा ?"

मराली ने कहा, "शुरू-शुरू में डर लगा था।"

"फिर ?"

"एक जने की बात सोचकर डर खत्म हो गया।"

कान्त ने पूछा, "किसकी बात सोचकर ? नवाब की बात ?"

मराली ने कहा, "शुरू-शुरू मे नवाब की बात सोचकर ही कलकत्ते आयी थी लेकिन एक दूसरे की बात सोचकर क्लाइव से मिलने गयी।"

"किसकी बात ?"

"वह मैं तुम्हे नही बतला सकती। नवाब तक को नही बतलाया। लगता है मेरी सारी मेहनत बेकार गयी। न खुद को ही सुखी कर पायी न और किसी को ही।"

कहते-कहते मराली की आँखें छलछला उठीं।

सचमुच मराली को तब क्या मालूम था कि जिसे नवाब से बचाने के लिए वह रानी बीबी बनकर चेहल-सुतून आयी थी हतियागढ की वही छोटी बहूरानी घटना-चक्र में पड़कर क्लाइव की छावनी मे जा पहुँचेगी। अगर यही होना था तो इस नाटक की क्या जरूरत थी ?

कान्त ने कहा था, "मराली, चलो न हम लोग कहीं चले जायँ।"

"लेकिन कहाँ?"

कान्त ने कहा था, "यह लड़ाई-झगड़ा अच्छा नहीं लगता। जिसे देखो वही अपने स्वार्थ के लिए पागल है। यहाँ पर एक दिन भी ठहरने को जी नहीं चाहता।"

मराली ने कहा, "मुझी को कौन अच्छा लगता है।"

"अगर तुम्हें अच्छा नहीं लगता तो यहाँ क्यों आयीं? खैर, चलो अब भी निकल चलें।"

मराली ने कहा, "जाया तो जा सकता है लेकिन मेरे जाने पर हतियागढ़ की रानी का क्या होगा?"

"जो तुम्हारी सारी तकलीफों की जड़ है तुम उसी के लिए तुम इतनी परेशान क्यों हो?"

"तुम्हारे कहने का मतलब है कि मेरी इस हालत के लिए नवाब जिम्मेदार है? अगर ऐसा ही होता तो मैं अभी नवाब को लात मारकर निकल चलती।"

"तब कौन जिम्मेदार है?"

"तुम क्या सुनना ही चाहते हो? तो लो सुनो, तुम अगर उस दिन देरी से नहीं आये होते तो क्यों ही मैं छोटे सरकार के यहाँ भागकर जाती और क्यों ही मुझे चेहल-सुतून में आना पड़ता?"

कान्त ने कहा, "उस एक कसूर के लिए ही तो यह हालत हुई है। लेकिन अब वह सब सोचने से क्या फायदा? लेकिन उस उद्धवदास बेचारे ने क्या कसूर किया था?"

"कसूर उसका नहीं, मेरे नसीब का है। मैं तुम्हारे पैरों पड़ती हूँ, दया करके मेरे सामने ये सब बातें न करो। जिस दिन मैंने अपनी माँग से सिन्दूर पोंछ डाला था उसी दिन से मेरा नाम मरियम बेगम हो गया। समझ लो कि मैं मर चुकी हूँ।"

"छि:, तुम कहती क्या हो?"

कहकर कान्त अपने हाथ से मराली का मुँह बन्द करने जा ही रहा था कि मराली अपने कमरे में चली गयी। जाते समय कह गयी, "मैं नवाब से मुलाकात करने जा रही हूँ, देखना कोई अन्दर न आये।"

इसके बाद ही नानी बेगम और मरियम बेगम नवाब से मिलने गयीं।

इन लोगों को देखकर नवाब जैसे चौंक उठे। उन्होंने कहा, तुम लोग क्यों आयी हो?"

जवाब नानी बेगम ने दिया, "सोचा तू अकेला है इसीलिए चली आयी।"

नवाब ने कहा, "कौन कहता है मैं अकेला हूँ? मुझे क्या तुम अब भी बच्चा समझती हो?"

"नहीं-नहीं, मेरे कहने का यह मतलब नहीं है। मरियम बेटी कह रही थी कि तू काफी मुसीबत में है।"

"कैसी मुसीबत ?"

कहकर नवाब ने मरियम बेगम की ओर देखा।

मरियम बेगम ने कहा, "जी हाँ जहाँपनाह, आप इस वक्त मुसीबत में हैं।"

"चेहल-सुतून में बैठे-बैठे तुम्हें यह कैसे पता लगा कि मैं मुसीबत में हूँ ?"

मरियम बेगम ने कहा, "चेहल-सुतून में बैठे-बैठे ही मुझे यह पता लगा था कि सफीउल्लाह साहब आपका खून करना चाहते हैं। मुझसे न पूछकर आप यह सवाल *अगर अमीचन्द से पूछे होते तो शायद काफी कुछ पता चलता।"*

"देखो..."

नवाब ने जैसे मायूस होकर अपने चारों ओर देखा। फिर कहा, "जिन्दगी में जो कुछ चाहा जाता है वह सब क्या मिलता है ? दोस्त क्या सभी को मिलते हैं ? मुझे दुश्मन मिले हैं, मुझे उन्हीं के साथ रहकर अपना काम चलाना होगा। उन्हीं की बात माननी होगी।"

"क्यों ? उन लोगों को छोड़कर क्या और लोग नहीं हैं ? सबको निकालकर आप नये-नये आदमी क्यों नहीं रख लेते ?"

"बेगम साहबा, यह काम इतना आसान नहीं है जितना आप समझती हैं। आप अगर मेरी जगह होतीं तो शायद समझ पातीं।"

मरियम बेगम ने कहा, "वाह ! गुनहगार को भी सजा नहीं दी जायेगी तब आप नवाब किस बात के हैं ?"

"लोग-बाग शायद यही जानते हैं कि मैं जो चाहूँ कर सकता हूँ, लेकिन ऐसा नहीं है। नानी जी सब कुछ जानती हैं। मैंने घसीटी बेगम को अभी तक नजरबन्द करके रख छोड़ा है। मीर जाफर का ओहदा मीर मदन को दिया, मोहनलाल को दीवान-ए-आला बना दिया और गुलाम हुसैन को मुल्क से भगा दिया, लेकिन इतना सब करने पर मुझे सिर्फ बदनामी भर ही मिली। इसके अलावा देखो न, मैंने तुम्हीं को तुम्हारे शौहर से छीनकर अपने हरम में रखा छोड़ा है।"

मरियम बेगम ने कहा, "हरम में कैसा रख छोड़ा है वह तो देख ही रही हूँ, अभी तो आपकी बिना इजाजत लिये फिरंगी क्लाइव तक से मिल आयी।"

नवाब ने कहा, "यह मैं जानता हूँ।"

"लेकिन मैं आपके दुश्मन के यहाँ गयी इसलिए मुझे तो आपने कोई सजा नहीं दी !"

नवाब ने नानी बेगम की ओर देखा। कहा, "नानी जी, आप कह सकती हैं कि मैं जिन लोगों को सजा देता हूँ वह लोग मुझे इतना क्यों चाहते हैं ? और जिनका मैंने कभी कोई नुकसान नहीं किया वे लोग क्यों मुझसे दुश्मनी मोल लेते हैं ? इन फिरंगियों को देखो न, मैंने इनकी सारी शर्तें मंजूर कीं फिर भी ये लोग शर्त तोड़ रहे हैं।"

नानी बेगम ने कहा, "तुम्हें इन लोगों पर यकीन ही नहीं करना चाहिए था।"

"यक़ीन क्या मैंने ऐसे ही किया था ! उधर अहमद शाह अब्दाली दिल्ली लूटकर इधर ही बढ़ रहा है। अकेला दो-दो दुश्मनों को कैसे सम्हालता ?"

मरियम बेगम ने कहा, "जहाँपनाह, अपनी जिन्दगी में मैंने कोई नवाब नहीं देखा और शायद देखूँगी भी नहीं। लेकिन एक बात कहे रखती हूँ, आपको अगर मुर्शिदाबाद की नवाबी खोनी पड़े तो उसकी वजह आप ही होंगे।"

"क्योंकि मैं बहुत ही खराब हूँ, आपके कहने का यही मतलब है न ?"

"नहीं। बल्कि यह कि आप इतना अधिक सह लेते हैं।"

"लेकिन दूसरों का ख्याल कुछ और ही है। महाराज कृष्णचन्द्र से लेकर जगत सेठ जी तक सभी कहते हैं कि मैं बहुत ही बदमिजाज और घमंडी हूँ।"

मरियम बेगम ने कहा, "लोग जो भी कहें मैं जो जानती हूँ वही मैंने कहा। क्लाइव की छावनी में जाने के लिए आपको मुझे सजा देनी चाहिए थी।"

नवाब ने कहा, "सजा ही देनी होगी तो पहले अपनी माँ को सजा देनी चाहिए लेकिन तुम आखिर कौन-सी सजा चाहती हो, सजा देने लायक ताकत अभी भी मेरे हाथ में है।"

"लेकिन आपने मेरे कसूर के बारे में तो कुछ पूछा ही नहीं।"

"तुम खुद ही कहो कि तुमने क्या गुनाह किया है।"

"मैं अगर अपना गुनाह कबूल न करूँ तो क्या आप जबरदस्ती कबूल नहीं करवा सकते ?"

नवाब ने कहा, "बेगम साहबा, एक जमाना था जब यह भी करता था। लोगों से जबरदस्ती गुनाह कबूल करवाता था। रिआया पर अगर रोब न रखा जाये तो मसनद कैसे चलेगी ?"

"लेकिन अब तो उसी मसनद के लिए मुर्शिदाबाद से इतनी दूर यहाँ फिरंगियों से लड़ने आये हैं, मसनद के लिए ही आपने अपनी मौसी को नजरबन्द किया और भाई शौकत जंग का खून किया ! अब तक जो कुछ किया मसनद के लिए ही तो किया। आप और आपकी मसनद क्या अलग-अलग हैं ?"

नवाब कुछ देर तक सोचते रहे फिर बोले, "लेकिन तब तो सोचा था कि मैं मसनद मिलने पर ही सुखी हो पाऊँगा।"

"और अब ?"

"अब सोच रहा हूँ कि वे ही दिन अच्छे थे जब मसनद मेरे हाथ में नहीं थी।"

"लेकिन जहाँपनाह, क्या सचमुच उन दिनों को वापस चाहते हैं ?"

"चाहने पर भी क्या मिलना मुमकिन हो सकता है ?"

मरियम बेगम ने कहा, "अभी भी मुमकिन है।"

"कैसे मुमकिन है।"

मराली एक क्षण चुप रही।

फिर कहा, "आप सभी को एक साथ बरखास्त कर दीजिए।"

नवाब ने कहा, "उधर फ्रांसीसियों से अंग्रेजों की लड़ाई छिड़ गयी है, अहमद शाह अब्दाली अलग बढ़ा आ रहा है। इस समय सबको बरखास्त कैसे कर सकता हूँ?"

"तब आप कम से कम हुगली के फौजदार नन्दकुमार को तो हटा ही दीजिए।"

"क्यों? वह तो वफादार आदमी है।"

मराली ने कोई जवाब नहीं दिया।

नवाब ने कहा, "नन्दकुमार के बारे में तुम्हें शक क्यों कर हुआ?"

मराली ने कहा, "फौजदार साहब ने अमीचन्द के मार्फत बारह हजार रुपये घूस में लेने का इन्तजाम किया है।"

"कैसे? मैंने तो उसे फिरंगियों के खिलाफ फौज भेजने का हुक्म दिया है।"

फौजदार नन्दकुमार आपका हुक्म न माने, इसीलिए तो यह घूस देने का वादा किया गया है।"

"लेकिन यह सारी बातें तुम्हें मालूम कैसे हुईं?"

मराली ने नवाब के सवाल का जवाब न देकर कहा, "उसे यहीं बुलवा लीजिए।"

"लेकिन तुम्हें यह बात आखिर मालूम कैसे हुई, पहले यह तो बताओ।"

मरियम बेगम ने कहा, "वह मैं नहीं बतलाऊँगी जहाँपनाह जिस तरह निजामत के जासूस होते हैं, उसी तरह बेगमों के जासूस भी तो हो सकते हैं?"

"तुमने जासूस भी रख छोड़े हैं क्या?"

"मुझे जासूस तो नहीं रखने पड़े लेकिन मेरा अपना एक आदमी है जो मुझे सारी खबरें पहुँचाता है।"

"कौन है वह? उसका नाम क्या है?"

"जहाँपनाह आप उसका नाम न पूछें। वह आपके पास ही है।"

नवाब ने मराली को ऊपर से नीचे देखा फिर कहा, "सच कह रही हो?"

"लेकिन पहले आप फौजदार साहब को बुलवाइए।"

कान्त बाहर खड़ा-खड़ा सब सुन रहा था। वह चौंक उठा। मराली किसके बारे में कह रही है। अगर वह अपनी बात साबित न कर पायी? तभी कान्त की निगाह एक ओर खड़े शशी पर पड़ी। उसने आश्चर्य से पूछा, "तुम यहाँ?"

"तुम्हीं से मिलने आया था, अच्छा यह बेगम साहबा यहाँ किसलिए आयी हैं?"

कान्त ने कहा, "मुझे नहीं मालूम।"

"तुम मुझसे छिपा रहे हो, तुम सब जानते हो। तुम तो हर वक्त नवाब के पास ही रहते हो।"

"नवाब के पास रहना तो मेरा काम ही है।"

शशी ने कहा, "लेकिन मैंने तो तुम्हें बेगम साहबा के साथ बातचीत करते भी देखा है।"

"मुझे ? कब देखा ?"

"हाँ, मैंने तुम्हें बेगम साहबा के साथ बात करते हुए देखा है। बेकार मुझसे छिपा रहे हो। मैं कोई किसी से कहने थोड़े ही जा रहा हूँ।"

शशी बुरी तरह से कान्त के पीछे पड़ गया था। बड़ी मुश्किल से कान्त पीछा छुड़ा पाया। काम का बहाना करके कान्त खुद ही चला आया। मराली शायद ठीक ही कहती थी यह किसी का जासूस न हो !

काफी रात गये जब नवाब सोने चले गये कान्त का जी जैसे छटपटा रहा था। इधर छावनी में लोग काफी कम हो गये थे। अमीचन्द और वाट्सन तो पहले ही कासिम-बाजार कोठी जा चुके थे। इसराज खाँ भी मुर्शिदाबाद चला गया था। दीवान रणजीत राय भी जगत सेठ जी को खबर देने के लिए महिमापुर चले गये थे।

कान्त धीरे से उठकर मराली के खेमे में चला आया।

"इस समय क्या काम है ? तुम्हें क्या वक्त-बेवक्त का ख्याल नहीं रहता ?"

कान्त ने कहा, "मराली, मुझे बड़ा डर लग रहा है।"

मराली ने कहा, "तो मेरे पास यहाँ क्यों आये हो ? पहरेदारों के पास जाओ।"

"नहीं, यह बात नहीं है, तुम जब नवाब से बातें कर रही थी, मैंने छुपकर सब कुछ सुना है। अब क्या होगा ?"

"किस बात का क्या होगा ?"

"तुम क्या साबित कर पाओगी ?"

"क्या ?"

"यही की हुगली के फौजदार ने क्लाइव साहब से घूस ली है। अगर तुम साबित नहीं कर पायीं तो अमीचन्द तुम्हारी जान का दुश्मन बन जायेगा। तुम शायद उसे जानती नहीं हो।"

"किसने कहा कि मैं उसे नहीं जानती ? ठीक है, रात काफी हो चुकी है अब तुम जाओ।"

कहकर कान्त को करीब-करीब बाहर ठेलकर मराली ने दरवाजा बन्द कर लिया।

●

पेरिन साहब के बगीचे में रात ही को तैयारियाँ शुरू हो गयी थीं। एडमिरल वाट्सन काफी सुबह आया था। फौज एकदम तैयार हो चुकी थी। वाट्सन के आते ही क्लाइव ने उसे बाँहों में जकड़ लिया।

"ह्वाट्स अप राबर्ट ? तुम्हें आखिर हुआ क्या है ?"

क्लाइव जैसे खुशी से नाच उठा था। वाट्सन से हमेशा का झगड़ा जैसे वह भूल ही चुका था।

"वाटसन अभी-अभी उस स्काउन्ड्रेल ऑफ ए बीस्ट का खत मिला है। नन्द-कुमार राजी है।"

"राजी माने ? एग्रीड ?"

"हाँ, उसे बारह हजार रुपये घ्राइब देने होंगे। इसके बाद वह हमारी फौजों को नहीं रोकेगा। हम आज ही चन्दननगर पर अटैक करेंगे! बी रेडी। नाउ ऑर नेवर !"

"जरा वह खत दिखलाओ तो।"

क्लाइव ने खत वाटसन को दिखलाया। वाटसन ने खत पढ़कर कहा, "तुमने अपने इस प्लान के बारे में मुझे तो नहीं बतलाया ?"

"हाँ पहले नहीं बतलाया। अब सक्सेसफुल हो गया है, इसीलिए बतला रहा हूँ।"

"तुमने क्या लिखा था ?"

"मैंने यह खत लिखा था, जिसके जवाब में अमीचंद ने मुझे लिखा।"

"अमीचन्द का खत कहाँ है, जरा देखूँ।"

क्लाइव खत खोजने लगा। खत आखिर कहाँ गया ?

"किसी ने चुरा तो नहीं लिया ?"

"चुरायेगा कौन ? यहाँ तो कोई भी नहीं आया।"

लेकिन तभी क्लाइव को जैसे ख्याल आया वह बेगम को अन्दर अकेले छोड़-कर बाहर वाटसन से बात करने आया था, बेगम ने कहीं उसी वक्त तो खत उठा नहीं लिया ? बाप रे ! गॉड सेव माइ सोल ! सचमुच क्या लेटर को लेकर ब्लैकमेल करेगी ? सोचते ही क्लाइव का दिल बड़े ज़ोर से धड़कने लगा। अब क्या होगा ?



एडमिरल वाटसन अब तक क्लाइव को देखे जा रहा था। रावर्ट को वह बहुत दिनों से देख रहा है, लेकिन जितना देखता, उतना ही आश्चर्य होता। रावर्ट हिन्दुस्तान में केवल लड़ने ही नहीं आया, बल्कि इस देश को जानने भी आया है। मद्रास से वाटसन क्लाइव को देख रहा है। क्लाइव कब क्या करता, कब क्या सोचता, किसी को पता नहीं चलता। शायद उसको भी खुद पता नहीं चलता। लेकिन जिसके ऊपर इतने लोगों का जीना-मरना निर्भर है, जिस पर कंपनी का भविष्य निर्भर है, उसके लिए इस कदर कल्पनाप्रिय होना क्या शोभा देता है ! किसी से कुछ कहता नहीं, किसी की कुछ सुनता नहीं, जब जी में आया हिन्दुस्तानी गाँववालों में बैठकर बातें करने लग जाता। कोई गाँववाला तमाखू पीता हुआ जा रहा है तो रावर्ट उसके पास पहुँच जायेगा और पूछेगा, "ह्वाट इज दिस ? यह क्या है ?"

बेचारा देहाती आदमी घबड़ा जाता। फिर सँभलकर कहता, "यह हुक्का है।"

"हुक्का ?"

फिर जरा रुककर क्लाइव ने कहा था, "अगर तुम कहो तो मैं खुद न खाकर उनको खिला सकता हूँ। अपने राशन से उनको खिला सकता हूँ।"

"नहीं-नहीं, यह सब मैंने कब कहा ? मैं यही सोचता रहता हूँ, तुमने इनको रखा क्यों ? ह्वाट फॉर ?"

"क्यों रखा है, क्या तुम नहीं जानते ? तुमसे नहीं कहा ?"

"उनको सेफ शेल्टर देने के लिए। उनको हिफाजत से रखने के लिए।"

"येस, एक्जैक्टली सो। तुम्हें सुनकर आश्चर्य होगा वाटसन, कई दिन पहले मेरे पास हतियागढ़ के राजा आये थे।"

"क्यों ? क्या कहने ?"

"महाराजा कृशनचन्दर ने उनको मेरे पास भेजा था, टु हेल्प हिम !"

"हाउ ? कैसे ?"

"उनकी वाइफ को बेंगाल के नवाब ने किडनैप कर अपने हरम में रखा है।"

"नवाब लोग तो ऐसा करते ही हैं। दैट इज़ ए कस्टम हियर।"

"लेकिन उनकी वाइफ को नवाब ने कनवर्ट किया है। हिन्दू को महमेडन बनाया है। उनका नाम भी बदलकर मरियम बेगम रखा है।"

"फिर ?"

"अब उनको अपनी वाइफ कैसे वापस मिल सकती है इसी बारे में सलाह करने मेरे पास आये थे। उन्होंने कहा, "नवाब को ओवर-थ्रो करने की कोशिश हम करेंगे तो वे सभी हमारी मदद करेंगे। हमें रुपये-पैसे से, फौज से हेल्प करेंगे। ऑल दि जमींदार्स हमारा साथ देंगे।"

"यह तो हम जानते हैं।"

"कुछ भी नहीं जानते। सिर्फ जगत सेठ और मीर जाफर ही नहीं, पेटी जमींदार्स विल आल्सो हेल्प अस।"

"दैट्स गुड। लेकिन नवाब को ओवर-थ्रो करने से कौन नया नवाब होगा ? हू ?"

राबर्ट ने कहा था, "यह बाद में सोचा जायेगा। नवाब बनने के लिए सभी लोग तैयार बैठे हैं। लेकिन यह सब अभी नहीं सोचेंगे। पहले फ्रेंच को इस इलाके से निकाल बाहर करना होगा, नहीं तो दे मे ज्वॉयन दी नवाब।"

"तुमने हतियागढ़ के राजा से क्या कहा ?"

"मैंने कुछ कॉमिट नहीं किया। पूरी बात हो भी नहीं पायी। उसके पहले ही नवाब की आर्मी ने हमारे कैम्प पर गोलाबारी शुरू की और वे चले गये। आइ थिंक, वे मेरे पास फिर आयेंगे। इसीलिए इन लेडियों को मैं अपने पास रखना चाहता हूँ। लेट देम रिमेन हीयर। नहीं तो रास्ते में नवाब का कोई आदमी इनको देख लेगा तो

किडनैप कर हरम में ले जायेगा। तुमने खुद भी तो देखा है कैसी खूबसूरत लेडी है। है न ?"

"मुझे तो कोई ब्यूटी दिखाई नहीं पड़ती। खैर, मेरे पास ब्यूटी देखने का समय कहाँ है ?"

"क्या मेरे ही पास समय है ?"

"यह तो देख रहा हूँ कि तुम्हारे पास इसके लिए समय है। तुम उनके साथ बातें करते हो, जोक करते हो।"

"नो !"

ये बातें सुनकर क्लाइव की नीली आँखें लाल हो ही रही थी कि उसने अपने पर काबू कर लिया। इन लोगों पर नाराज होने से कोई लाभ नहीं है। ये तो मेरी आँखों से इंडिया को देख नहीं रहे हैं। ये तो इंडियनों को आदमी ही नहीं समझते। और ये आये ही हैं इस कंट्री को जीतने। मैं भी तो आया हूँ, राबर्ट सोचता, कंट्री को जीतने से पहले कंट्रीमेन का हार्ट जीतना होगा। लेकिन ये लोग यह बात नहीं समझते।

राबर्ट ने कहा था, "खैर, यह सब मैं तुम्हारे साथ डिस्कस करना नहीं चाहता। फिर मैंने सोचा था, हतियागढ़ के राजा को एक बार और बुलाऊँगा और उसकी वाइफ को हरम से छुड़ाने की कोशिश करूँगा। नवाब से कहूँगा कि वह उनकी वाइफ को वापस कर दे। लेकिन नहीं, बाद में सोचा, यह कोशिश अभी नहीं करूँगा।"

"नहीं-नहीं, तुम इस मामले में न पड़ो तो अच्छा है राबर्ट। नवाब का फैमिली ऐफेयर्स लेकर हमें क्यों माथापच्ची करनी ? हम यहाँ रुपया कमाने, तिजारत करने आये हैं। नवाब की मॉरलिटी देखना हमारा काम नहीं है। लेट हिम डू ह्वाटएवर हि लाइक्स। किसी राजा की बहू को लेकर नवाब ऐडेल्ट्री करता है तो करने दो, दैट्स नॉट आवर लुक-आउट।"

राबर्ट ने कहा था, "लेकिन मैं भी तो इंसान हूँ। इंसान होने के नाते मेरी भी मॉरल ड्यूटी है।"

"तब तो तुम्हें प्रीचर होना चाहिए था, मिशनरी फॉदर।"

राबर्ट ने कहा था, "नहीं, मैं चाहता तो यह कर सकता था। हतियागढ़ की राजा की वाइफ मेरे पास आयी थी।"

"अरे ! हतियागढ़ के राजा की वाइफ ? तुम्हारे पास ? कब ?"

राबर्ट ने कहा, "तुमने उसे देखा है।"

"मैंने ? मैंने उसे कब देखा ?"

"हाँ, तुमने देखा है। उस दिन तुमने मेरे कमरे में आकर देखा नहीं एक लेडी बुरके में थी। वही तो हतियागढ़ के राजा की वाइफ थी।"

"लेकिन वह तो इस समय बेंगाल के नवाब की बेगम है।"

"हाँ, वही मरियम बेगम है। दैट इज दी वाइफ ऑफ हतियागढ़ राजा।

अब नवाब की बेगम बनी है। पहले राजा की बात सुनकर उनकी वाइफ पर सिमपैथी हुई थी लेकिन अब मेरे मन में कोई सिमपैथी नहीं है। बड़ी चालाक औरत है। उस समय समझ नहीं पाया था कि किसलिए मेरे पास आयी है। सोचा था, हरम से भागने के बारे में बात करने आयी होगी या हजबैंड के पास खबर भिजवाने के लिए, लेकिन—"

वाटसन उत्सुक हो सुन रहा था।

"फिर क्या हुआ ? किसलिए आयी थी ?"

"बड़ी चालाक औरत है। मुझे बेवकूफ बनाकर चली गयी ! मैं विफ्लड हो गया। अब समझ रहा हूँ वह मुझे धोखा देने आयी थी।"

वाटसन ने पूछा, "फिर क्या उसी बेगम ने चिट्ठी चुरायी है ?"

"येस।"

"फिर तो अमीचंद बुरी तरह फँसेगा। ही विल बी कॉट !"

"हैंग योर अमीचंद। अमीचंद के लिए मैं परेशान नहीं हूँ। अमीचंद मे गो टु हेल। नवाब हम पर अटैक कर सकता है।"

"बेगम साहबा तुम्हारे पास से कहाँ गयी मालूम है ?"

"जरूर नवाब के पास गयी होगी। लेकिन मुझसे कह गयी, नवाब से बिना कहे ही आयी है। मुझे लगता है, मुझसे झूठ बोली; मुझे लगता है, नवाब को हमारी चिट्ठी मिली थी और उसी ने बेगम को भेजा था हमारे कैम्प के बारे में जानकारी लेने।"

"लेकिन वही मरियम बेगम है, यह तुमने कैसे जाना ? मे बी समबडी एल्स ? कोई दूसरी भी तो हो सकती है। हो सकता है, मरियम बेगम का भेस बनाकर कोई मर्द ही आया हो। तुमने क्या उसका चेहरा देखा था ?"

"कैसे देखता, बुरका जो पहने थी।"

"बुरका खोलकर क्यों नहीं देखा ?"

"पहले मैंने भी शक नहीं किया था।"

"यही तो तुम्हारा वीकनेस है राबर्ट। कितने ही दिन कहा है कि औरतों पर विश्वास न करो। यही जो तुमने नेटिव वूमेन को अपने कैम्प में रखा है, वे भी तो स्पाई हो सकती हैं। नवाब की स्पाई। हो सकता है उन्हीं लोगों ने नवाब के पास हमारे मूवमेण्ट के बारे में खबर भेजी हो।"

क्लाइव ने थोड़ा सोच लिया। फिर कहा, "लेकिन यह कैसे हो सकता है ? दे आर सो गुड।"

"स्पाई हमेशा गुड होते हैं।"

"लेकिन उसके हजबैंड को मैं जानता हूँ। हि इज ए पोएट। पोएट आदमी बढ़िया है।"

"पोएट ने क्या कहा है कि वह उसकी वाइफ है ?"

"हाँ, कहा है। लेकिन वाइफ हजबैंड के पास जाना नहीं चाहती। शायद हजबैंड पसंद न आया हो।"

"लेकिन जाना कहाँ चाहती है ?"

"अपने फॉदर के पास।"

"वे तो अकेले वोट से कहीं जा रही थी ?"

"हाँ, तीर्थ को जा रही थी। हिन्दू लेडी हैं न। बड़ी धार्मिक हैं। तुम्हें मालूम है वाटसन, वे वीफ नहीं खातीं, फाउल नहीं खाती, ड्रिंक भी नहीं करती। वे कैसे स्पाई हो सकती हैं ?"

वाटसन ने कहा, "फिर भी तुम अमीचंद को खत लिख भेजो।"

"किसलिए ?"

"लिख दो कि उसकी एक चिट्ठी मेरे टेबुल पर से गायब हो गयी है। मरियम बेगम चुराकर ले गयी है।"

इतने में बाहर कोई आवाज हुई और क्लाइव ने मुड़कर देखा। आर्मी का कोई आदमी। मेसेंजर।

"क्या खबर है फ्लेचर ?"

फ्लेचर कमरे में आया।

"मैं अभी हुगली के फौजदार साहब के पास से आ रहा हूँ।"

"वह लेटर दे दिया है ?"

"जी हाँ। लेकिन सुना, नवाब ने फौजदार साहब को अपने खेमे मे बुला भेजा है।"

"ह्वाट फॉर ? किसलिए ?"

"यह नहीं जानता। बहुत ही अर्जेण्ट कॉल है। फौजदार साहब आ रहे हैं।"

"यहाँ ?"

"यहाँ नहीं। नवाब के कैम्प में। नवाब से मिलने।"

"ऑलराइट। तुम वाच रखना। जाओ।"

फ्लेचर के चले जाते ही एडमिरल ने क्लाइव की ओर देखा। पूछा, "अब क्या करना चाहते हो ? ह्वाट नेक्स्ट ?"

क्लाइव एक क्षण में फोर्ट सेंट डेविड के कमांडर में बदल गया।

उसने कहा, "दिस इज दि अपरचुनिटि वाटसन। नाउ ऑर नेवर ! मैं चन्दन-नगर पर अटैक करूँगा।"



हुगली के फौजदार साहब उस वक्त नवाब की छावनी के दरबार में खड़े थे। पास ही सेठ अमीचन्द भी खड़ा था।

नवाब के सामने खड़े हुगली के फौजदार साहब की हालत वैसी ही थी जैसी

देवी के सामने बलि के लिए खड़े किये किसी बकरे की होती है। सिर्फ फौजदार ही क्यों, सेठ अमीचन्द के भी होश आज फाख्ता हो रहे थे। फिर ये ही क्यों, नवाब के सामने बड़े-बड़े रथी-महारथियों को भी लांछित होना पड़ा है। दस पुश्तों से जमींदार हैं, ऐसे जमींदारों को भी बकाया रुपये न दे सकने के कारण कैदखाने में बन्द होना पड़ा। जगत सेठ ऐसे करोड़पतियों का भी दिल काँप उठता था नवाब के सामने खड़े होकर। कोर्निश करने में तनिक गलती हुई कि बस डाँट सुननी पड़ी। अठारहवीं सदी के बंगाल के निवासियों के लिए जो दिल्लीश्वर थे वही बंगेश्वर थे और वही जगदीश्वर थे। उस जमाने के लोग कहते थे—आप नवाब हैं, आपके लिए कोई पाप नहीं है। आप बेकसूर हैं, निर्दोष हैं, निष्पाप हैं। आप ही की मेहरबानी से हम जिन्दा हैं। आपके हुक्म पर कोई सुनवाई नहीं है। आप ही खुदाताला हैं और हम आपके दासानुदास।

उस जमाने में जो अमीर-उमराव सवेरे उठते थे वे खुदा का नाम लेने के बाद यही मनाते थे कि नवाब की नेक नजर हम पर बनी रहे।

उन दिनों जो जमींदार सवेरे जागते थे वे पहले ही भगवान का नाम लेकर कहते थे कि नवाब हमसे खुश रहें। हमेशा हम उनकी नेक नजर में रहे।

केवल अमीर-उमराव और जमींदारों की बात ही नहीं, तमाम हिन्दुस्तान के लोगों की यही बिनती थी। आज का सवेरा तो देखा, आज तो जिन्दा हैं, लेकिन कल भी जिन्दा रहेंगे कि नहीं इसका क्या पता? कल तक ही तुम हमारे बारे में सोचो। परसों जिन्दा रहें तो परसों की बात सोचना। १७०७ में बादशाह औरंगजेब की मृत्यु के बाद जीवन, ऐश्वर्य, आशा, आस्था सभी कुछ मनुष्य के लिए क्षणस्थायी हो गये थे। आज तो धान काटकर खलिहान में भर लिया लेकिन कल ही डिहीदार का आदमी आकर कह सकता है, यह नवाब का है, उनके हुक्म से लिये जा रहा हूँ। अनुष्टुप् छंद में मंत्र पढ़कर विवाह किया, पत्नी को घर ले आया लेकिन कल ही नवाब का आदमी परवाना दिखाकर उसे ले जा सकता है। निजामत का परवाना रुकने वाला नहीं है। विधाता के विधान से भी वह अमोघ है। वैद्य या हकीम को बुलाकर मौत को भी दो दिन टाला जा सकता है लेकिन इसे नहीं टाला जा सकता!

नवाब कह रहे थे, "अमीचन्द साहब तो कासिमबाजार जाने वाले थे, कासिमबाजार न जाकर वे तुम्हारे पास क्या करने गये थे?"

जवाब अमीचन्द ने दिया, "जहाँपनाह, नंदकुमार मेरे पुराने दोस्त हैं, उनसे जरा मुलाकात करने गया था।"

"लेकिन उनसे मिलने का और कोई वक्त आपको नहीं मिला? फिरंगी लोग जब चन्दननगर पर हमला करने को सोच रहे थे ठीक उसी वक्त आप वहाँ पहुँचे।"

"फिरंगी लोग चन्दननगर पर हमला कर रहे हैं? मुझे तो इस बारे में कुछ नहीं मालूम।"

अमीचन्द को जैसे किसी ने आसमान से गिरा दिया हो!

नवाब के गले की आवाज इस बार जैसे और भी भारी हो गयी थी। पास खड़े कान्त को जैसे लग रहा था कि नवाब जोर से क्यों नहीं चिल्लाते ? इतने बड़े नवाब में क्या इतनी-सी ताकत भी नहीं है ? इन दोनों को कैद नहीं कर सकते ? या जिस तरह हुसैन अली को कत्ल किया था उसी तरह कत्ल क्यों नहीं कर देते ? इसके बजाय इन जालिमों के साथ इतनी नर्मी बरत रहे हैं। चेहरा जैसे सूख गया है। इसी नवाब से लोग इतना जलते हैं ? आजकल नवाब दिन भर अपने खेमे में चुपचाप बैठे रहते हैं, किसी से भी ज्यादा मिलते-जुलते नहीं, सबकी बात ध्यान से सुनते जरूर हैं लेकिन खुद एक-दो लफ्ज से ज्यादा नहीं बोलते। वह भी बहुत ही आहिस्ते-आहिस्ते। अब तो फिरंगियों से सुलह हो जाने के बाद नवाब इतने संजीदा हो गये हैं। सारी छावनी में शराब के फव्वारे चलते लेकिन कान्त ने नवाब को किसी भी दिन शराब पीते हुए नहीं देखा। जरूरत होने पर या तो पानी या ठण्डा शर्बत पीते, बस।

रात को नवाब की आँखों में नींद भी नहीं थी। कान्त सोकर उठकर जब बाहर आता तो देखता, नवाब उससे पहले ही सोकर उठे हैं। नवाब कोने की खिड़की में बाहर देख रहे हैं। उस समय भी सूरज उगा नहीं था। दूर-दूर तक धान के खेत सूने पड़े थे। लड़ाई होगी सुनकर किसान खेत छोड़-छोड़कर भागे थे। इसलिए खेत भी खाली थे। बुआई नहीं हो पायी थी खेतों के पार गंगा बह रही है। गंगा के पार पेड़-पालों की धूमिल परछाइयाँ। बहुत सारे पंछी उड़कर गंगा की तरफ जा रहे थे, शायद उस पार। उससे आगे दृष्टि नहीं जाती। शायद पूरब की रोशनी वहाँ तक पहुँच नहीं पायी थी। उसी तरफ देखते हुए नवाब पता नहीं क्या सोचते रहते। कान्त सोचता, बाहर चला जाऊँ, लेकिन वह जा नहीं पाता, खड़े-खड़े नवाब को देखता रहता है। इस तरह नवाब को देखना उसे बड़ा अच्छा लगता।

"कौन ?"

नानी बेगम जिस दिन पहली बार मराली के साथ छावनी में आयी थी कान्त ने उन्हें फूट-फूटकर रोते देखा था।

"मिर्जा, तू कितना दुबला हो गया है, अपनी सेहत का ख्याल क्यों नहीं रखता ? ठीक से खाता-पीता है या नहीं ?"

नानी बेगम की बात सुनकर नवाब मुस्कराये। ठीक से खाना-पीना होने पर ही जैसे सेहत अच्छी रहती है ? कान्त अगर निजामत की नौकरी में न आता तो शायद उसे पता ही नहीं चलता कि नवाब और बादशाहों को भी कोई तकलीफ हो सकती है। यह भी नहीं जान पाता कि साधारण लोग जिनका बाहरी रूप देखकर, जिनका सुख-ऐश्वर्य देखकर जलते हैं उन्हें भी भूख नहीं लगती, रात को घबराहट के मारे उन्हें भी नींद नहीं आती। साधारण लोग समझ नहीं पाते इन नवाबों को भी तकलीफ है और वे भी मामूली लोगों की तरह तड़पते रहते हैं। सचमुच उन दिनों कान्त बंगाल के नवाब के इतने करीब आ गया था, इसीलिए उसके मन में कोई लालच नहीं था। न धन के लिए, न नाम के लिए, न सुख के लिए, न शान्ति के लिए।

कों ने कान्त को पागल समझा है। कहा है, तू नवाव के इतने पास रहा और अपने यदे के लिए कुछ न कर सका। इन लोगों को क्या मालूम था कि देने का मालिक न नवाव है और न वादशाह। लेने से पहले लेने लायक भी वनना पड़ता है। हर ोई क्या ले सकता है? अलीवर्दी खाँ तो मिर्जा मुहम्मद को मसनद दे गये थे लेकिन र्जा क्या उस मसनद को रख सका? कान्त सोचता, अगर कुछ माँगना या लेना है ो ऐसा ही कुछ माँगूंगा या लूंगा जो खो नहीं जाता, हमेशा रहता है। जो मिल जाने र कोई डरता नहीं कि खो जायेगा। कोई डरता नहीं कि कोई छीन लेगा। यही पाना तो सार्थक है।

खैर, ये सब वातें फिलहाल जाने दो।

लेकिन उस दिन नवाव के चेहरे की हालत कुछ दूसरी ही थी। वही नन्दकुमार जिसे मरहूम नाना अलीवर्दी खाँ इतना चाहते थे, खुश होकर जिसे उन्होंने हुगली का फौजदार वना दिया था, वही इतना वड़ा दगावाज होगा?

"जहाँपनाह आप यकीन मानिए, आपको किसी ने झूठी खवर दी है।"

"लेकिन अमीचन्द के हाथ का लिखा खत भी क्या झूठा हो सकता है?"

अमीचन्द ने कहा, "शायद आपको याद होगा कि एक वार पहले भी किसी ने मुझे फँसाने के लिए जाली खत लिखा था, यह खत भी जाली नहीं है इसका क्या सवूत है?"

"अमीचन्द साहव, अगर यह खत जाली है तो हम और आप भी जाली हैं। आप लोग क्या वंगाल के नवाव को एकदम वेवकूफ समझते हैं या यही कि मैं मसनद छोड़कर अहमद शाह अव्दाली के डर से कन्दहार भाग गया हूँ?"

दरवार में उस वक्त जैसे सनसनी छा गयी थी। जो नवाव अच्छी तरह से खाता-पीता तक नहीं है रात-रात भर तक चहलकदमी करता है, उसी की जवान पर जैसे विजली तड़प रही थी। अन्दर मराली और नानी वेगम के कान तक भी आवाज पहुँची। मराली अपने को किसी तरह रोक नहीं पा रही थी। उसने कहा, "नानी जी मैं जा रही हूँ।"

नानी वेगम ने कहा, "अरी, इस समय तू कहाँ जायेगी? तू कहाँ मरदों के बीच दरवार में जाने की सोच रही है?"

"जी हाँ, उन लोगों को आपके मिर्जा पर यकीन नहीं आ रहा है।"

"लेकिन तेरे जाने से क्या वे लोग यकीन कर लेंगे?"

"जी हाँ, मैं उन लोगों को यकीन करा के ही मानूंगी। ये सव के सव ठग हैं।"

"लेकिन तू आखिर कैसे यकीन दिला सकती है?"

"वह तरीका भी मुझे मालूम है। उन लोगों को अगर इस पर भी यकीन न आता तो मैं उनके मुंह पर सात जूते लगाकर उनसे कवूल कराऊँगी।"

"लेकिन वेगम होकर दरवार में जायेगी कैसे? मिर्जा क्या कहेगा?"

मराली ने कहा, "क्यों ? मैं तो क्लाइव साहब की छावनी में भी गयी थी, आपके मिर्जा ने जब तभी कुछ नहीं कहा तो अब क्या कहेंगे ?"

कहकर मराली झटपट बुरका पहनकर बाहर दरबार में चली गयी।

●

कहाँ, कब और कैसे किसी का नसीब खुल जायेगा, कौन कह सकता है ! जिस समय ईस्ट इण्डिया कम्पनी पाल ताने लकड़ी के जहाज से बंगाल आयी उस समय यह लड़का पैदा भी न हुआ था। यही नवकृष्ण। बड़े होने पर जब होश सँभाला, देखा, दिल्ली के शाही फ़रमान की कोई कीमत ही नहीं रह गयी है। पता नहीं, कहाँ से कौन-सी म्लेच्छ जाति के कुछ लोगों ने आकर कलकत्ते में अपना अड्डा जमा लिया है। उन दिनों गोरे साहब लोग नयनचन्द मल्लिक के यहाँ किराये पर रहते थे। वहाँ पर नवाब के अमीर और उमराव पालकियों में आते थे। रात-रात भर खाना-पीना और हुल्लडबाजी होती रहती थी। शहर में तब लोग ही कितने थे ? म्युनिस्पैल्टी अभी बनी ही थी, जिसके बड़े हाकिम हॉलवेल साहब थे। तभी से यह लड़का ताक-ताक कर उस ओर देखा करता था। वह गंगा के किनारे बैठा-बैठा जहाजों से माल चढ़ाना-उतारना देखा करता था।

नवकृष्ण उन दिनों पोस्ता के राजा के नाना के यहाँ मामूली-सी मुंशीगिरी की नौकरी किया करता था। लक्ष्मीकान्त धर को लोग नकू धर के नाम से जानते थे। नकू धर बाबू का फिरंगी कम्पनी के साथ लेन-देन का कारोबार था। घाट पर साहब लोगों से मुलाकात करने कौन जाये ?

नवकृष्ण कहता, "मालिक, मैं जाऊँगा।"

नकू धर बाबू को यह छोटा-सा सलोना लड़का बहुत अच्छा लगता था।

वे कहते, "मुनीम जी, नबो को ही भेजो।"

ये सब बातें काफी दिन पहले की हैं। कम्पनी के घाट पर उन दिनों कम्पनी के माल के अलावा और भी कितनों का माल आता-जाता था। सेठ हुजूरीमल, सेठ वैष्णवचरण, बेचरिज साहब और पोस्ता के राजा बाबुओं का माल भी आता-जाता था। यह सब इस लड़के की आँखों के सामने से गुजरा था।

एक दिन कम्पनी का घाट ज्वार में बह गया, तब नया घाट बनाना पड़ा। गोरे साहबों ने नियम बना दिया कि घाट में जिस किसी भी महाजन का माल उतरेगा या चढ़ेगा उसे महसूल देना होगा। नकू धर बाबू ने कहा—हम लोग अपना नया घाट बनायेंगे।

वही हुआ भी। गंगा-किनारे एक-एक कर नये घाट बनने लगे। चाँदपाल घाट, काशीनाथ घाट, बैचेटोर घाट, जैक्सन घाट, कोर सन्स घाट, ब्लाइदर घाट, हुजूरीमल घाट। इसके बाद बाजारों की नींव पड़ी। शोभाबाजार, चार्ल्स बाजार, हाटखोला बाजार, घासटोला बाजार वगैरह।

छोटे नवो के सामने यह जैसे अलिफ-लैला का किस्सा गुजर रहा था। हर समय जैसे एक ही बात दिल को कचोटती रहती, नकू बाबू के यहाँ वह जिन्दगी खराब कर रहा है, उसे बाहर रहना चाहिए। अगर किसी गोरे साहब के यहाँ नौकरी मिल जाये तो जीवन धन्य हो जायेगा।

घाट पर कम्पनी का जहाज आते ही और किसी गोरे साहब को देखते ही नवो झुककर सलाम करता।

कुछ दिनों बाद नवो टूटी-फूटी अंग्रेजी बोलना भी सीख गया। कहता—"गुड मार्निंग सर !"

सचमुच, कब, कहाँ और कैसे किसका नसीब खुलता है, कहा नहीं जा सकता!

राजा राजवल्लभ के कलकत्ता आने पर, नवो ने उन्हें अपनी दुखभरी दास्तान सुनायी। गिड़गिड़ाते हुए उसने कहा था, "राजा साहब, आपकी तो साहब लोगों से काफी दोस्ती है, मुझे कोई छोटा-मोटी नौकरी दिलवा दीजिए न—"

राजा साहब को शायद दया आ गयी थी। उन्होंने पूछा था, "तुम क्या-क्या काम जानते हो ?"

नवकृष्ण ने कहा था, "जी, मैं सब कर सकता हूँ।"

"लेकिन जानते हो, फिरंगी लोग गोमांस खाते हैं ?"

"जी खूब अच्छी तरह से, मुसलमान भी तो खाते हैं। उससे मुझे क्या है ? दफ्तर में काम पूरा करके गंगा जी नहा लिया करूँगा।"

"लिख-पढ़ सकते हो ?"

"जी शुभंकरी गणित जानता हूँ।"

"और फारसी ?"

"जी फारसी लिख सकता हूँ, पढ़ सकता हूँ और बोल भी सकता हूँ।"

राजा साहब को बात याद रही। अमीचन्द से जब उनकी मुलाकात हुई तो पता लगा कि गोरे साहब किसी फारसी पढ़े-लिखे आदमी की तलाश में हैं। मुंशी काजीउद्दीन हैं, लेकिन वे तो मुसलमान हैं। दीवान रामचन्द्र भी है। लेकिन-मुर्शिदाबाद के अमीर-उमराव नवाब को उखाड़ना चाहते हैं, जिसके लिए वे अंग्रेजों को मदद भी देंगे, उनके खतों का तर्जुमा किसी ऐरे-गैरे आदमी से तो नहीं कराया जा सकता।

क्लाइव ने पूछा था, "ऐसा हिन्दू मुंशी कहाँ मिलेगा ?"

अमीचन्द ने कहा था, "मेरे पास है।"

"उसका नाम क्या है ?"

"नवकृष्ण।"

इसीलिए उद्धवदास ने अपने काव्य में लिखा है—कहाँ, कब और कैसे किसका नसीब खुल जायेगा कौन कह सकता है ? नवकृष्ण था नकू धर के यहाँ का मामूली मुंशी। वहाँ से निकलकर वह एक दिन अचानक अंग्रेज दफ्तर का मुंशी बन गया।

...सके बाद अमीचन्द और मीर जाफर ने जितने भी खत लिखे, सबका तर्जुमा नवकृष्ण ...ने ही किया। अब रामचन्द्र को नहीं बुलाया जाता था।

उस दिन पेरिन साहब के बगीचे में फिर नवकृष्ण की बुलाहट हुई। नवकृष्ण ...ने जाकर जमीन तक झुककर सलाम की।

"मुंशी, मैं बड़ी मुसीबत में पड़ गया हूँ, मुझे बचाना होगा। कैन यू सेव ...मी?"

मुंशी ने कहा, "जी, मैंने हुजूर का नमक खाया है। हुजूर जो भी हुक्म देंगे, सर-आँखों पर होगा।"

"मेरा एक इम्पॉरटेन्ट लेटर चोरी चला गया है।"

"किसने चुराया? मुझे सिर्फ नाम बतला दीजिए, मैं उसे गर्दन पकड़कर हुजूर के सामने पेश कर दूँगा।"

"नहीं-नहीं, यह बात नहीं है, सुनो।"

भगवान ने नवकृष्ण को बुद्धि बेकार में नहीं दी थी। हो सकता है इतिहास के प्रयोजन से ही मुंशी नवकृष्ण का होना जरूरी हो गया था।

सब सुनकर मुंशी ने कहा, "ठीक है हुजूर, मैं अभी जा रहा हूँ।"

"लेकिन देखो, हुगली का फौजदार और अमीचन्द भी वहाँ हैं, मरियम बेगम भी वहीं है।"

मुंशी ने कहा, "हुजूर, जो भी हो मरियम बेगम आखिर एक औरत ही तो है—मुंशी नवकृष्ण एक औरत से हार नहीं मानेगा।"

"नहीं मुंशी, तुम मरियम बेगम को जानते नहीं हो। वेरी क्लेवर, वेरी गुड गर्ल—खूब होशियारी से काम करना।"

मुंशी ने कहा, "मैंने हुजूर का नमक खाया है, जरूरत पड़ने पर मैं बेगम के पैर भी पकड़ लूँगा।"

"हूँ! तुम एक मुसलमान औरत के पैर पकड़ोगे?"

"इसमें क्या है? आप मुझे हुक्म दीजिए, पैर पकड़ना तो दूर की बात है, मैं मरियम बेगम के तलवे तक चाट आऊँगा। हुजूर के लिए क्या मैं इतना भी न करूँगा?"

"ठीक है, मुंशी तुम फौरन चले जाओ, इस वक्त तुम्हारे ऊपर ही कम्पनी का एग्जिस्टेन्स डिपेन्ड करता है। तुम अगर यह काम कर पाये तो मैं इंगलैण्ड के प्राइम मिनिस्टर मिस्टर पिट को लिखकर तुम्हें रिवार्ड दिलवाऊँगा।"

ज्यादा वक्त खराब न कर मुंशी बाहर निकल गया।

वाटसन अब तक चुपचाप बैठा था।

क्लाइव की ओर देखकर उसने हँसते हुए कहा, "राबर्ट, यही लोग रीयल इंडियन हैं। ये पैसे के लिए सब कुछ कर सकते हैं। बेगम के तलवे और जूते भी

छोटे नबो के सामने यह जैसे अलिफ-लैला का किस्सा गुजर रहा था। ह समय जैसे एक ही बात दिल को कचोटती रहती, नकू बाबू के यहाँ वह जिन्दगी खर कर रहा है, उसे बाहर रहना चाहिए। अगर किसी गोरे साहब के यहाँ नौकरी मि जाये तो जीवन धन्य हो जायेगा।

घाट पर कम्पनी का जहाज आते ही और किसी गोरे साहब को देखते ही न झुककर सलाम करता।

कुछ दिनों बाद नबो टूटी-फूटी अंग्रेजी बोलना भी सीख गया। कहता—"गु मार्निंग सर!"

सचमुच, कब, कहाँ और कैसे किसका नसीब खुलता है, कहा नहीं जा सकता

राजा राजवल्लभ के कलकत्ता आने पर, नबो ने उन्हें अपनी दुखभरी दास्ता सुनायी। गिड़गिड़ाते हुए उसने कहा था, "राजा साहब, आपकी तो साहब लोगों र काफी दोस्ती है, मुझे कोई छोटा-मोटा नौकरी दिलवा दीजिए न—"

राजा साहब को शायद दया आ गयी थी। उन्होंने पूछा था, "तुम क्या-क्य काम जानते हो?"

नवकृष्ण ने कहा था, "जी, मैं सब कर सकता हूँ।"

"लेकिन जानते हो, फिरंगी लोग गोमांस खाते हैं?"

"जी खूब अच्छी तरह से, मुसलमान भी तो खाते हैं। उससे मुझे क्या है? दफ्तर में काम पूरा करके गंगा जी नहा लिया करूँगा।"

"लिख-पढ़ सकते हो?"

"जी शुभंकरी गणित जानता हूँ।"

"और फारसी?"

"जी फारसी लिख सकता हूँ, पढ़ सकता हूँ और बोल भी सकता हूँ।"

राजा साहब को बात याद रही। अमीचन्द से जब उनकी मुलाकात हुई तो पता लगा कि गोरे साहब किसी फारसी पढ़े-लिखे आदमी की तलाश में हैं। मुंशी काजीउद्दीन हैं, लेकिन वे तो मुसलमान हैं। दीवान रामचन्द्र भी है। लेकिन-मुर्शिदाबाद के अमीर-उमराव नवाब को उखाड़ना चाहते हैं, जिसके लिए वे अंग्रेजों को मदद भी देंगे, उनके खतों का तर्जुमा किसी ऐरे-गैरे आदमी से तो नहीं कराया जा सकता।

क्लाइव ने पूछा था, "ऐसा हिन्दू मुंशी कहाँ मिलेगा?"

अमीचन्द ने कहा था, "मेरे पास है।"

"उसका नाम क्या है?"

"नवकृष्ण।"

इसीलिए उद्धवदास ने अपने काव्य में लिखा है—कहाँ, कब और कैसे किसका नसीब खुल जायेगा कौन कह सकता है? नवकृष्ण था नकू धर के यहाँ का मामूली मुंशी। वहाँ से निकलकर वह एक दिन अचानक अंग्रेज दफ्तर का मुंशी बन गया।

...सके बाद अमीचन्द और मीर जाफर ने जितने भी खत लिखे, सबका तर्जुमा नवकृष्ण ...ही किया। अब रामचन्द्र को नहीं बुलाया जाता था।

उस दिन पेरिन साहब के बगीचे में फिर नवकृष्ण की बुलाहट हुई। नवकृष्ण ... जाकर जमीन तक झुककर सलाम की।

"मुंशी, मैं बड़ी मुसीबत में पड़ गया हूँ, मुझे बचाना होगा। कैन यू नेव ...ी ?"

मुंशी ने कहा, "जी, मैंने हुजूर का नमक खाया है। हुजूर जो भी हुक्म देंगे, ...र-आँखों पर होगा।"

"मेरा एक इम्पॉरटेन्ट लेटर चोरी चला गया है।"

"किसने चुराया ? मुझे सिर्फ नाम बतला दीजिए, मैं उसे गर्दन पकड़कर हुजूर ...के सामने पेश कर दूँगा।"

"नहीं-नहीं, यह बात नहीं है, सुनो।"

भगवान ने नवकृष्ण को बुद्धि बेकार में नहीं दी थी। हो सकता है इतिहास के ...योजन से ही मुंशी नवकृष्ण का होना जरूरी हो गया था।

सब सुनकर मुंशी ने कहा, "ठीक है हुजूर, मैं अभी जा रहा हूँ।"

"लेकिन देखो, हुगली का फौजदार और अमीचन्द भी वहाँ हैं, मरियम बेगम ...भी वहीं है।"

मुंशी ने कहा, "हुजूर, जो भी हो मरियम बेगम आखिर एक औरत ही तो ...है—मुंशी नवकृष्ण एक औरत से हार नहीं मानेगा।"

"नहीं मुंशी, तुम मरियम बेगम को जानते नहीं हो। वेरी क्लेवर, वेरी शूड ...गर्ल—खूब होशियारी से काम करना।"

मुंशी ने कहा, "मैंने हुजूर का नमक खाया है, जरूरत पड़ने पर मैं बेगम के ...पैर भी पकड़ लूँगा।"

"हैं ! तुम एक मुसलमान औरत के पैर पकड़ोगे ?"

"इसमें क्या है ? आप मुझे हुक्म दीजिए, पैर पकड़ना तो दूर की बात है, मैं मरियम बेगम के तलवे तक चाट आऊँगा। हुजूर के लिए क्या मैं इतना भी न करूँगा ?"

"ठीक है, मुंशी तुम फौरन चले जाओ, इस वक्त तुम्हारे ऊपर ही कम्पनी का एक्जिस्टेन्स डिपेन्ड करता है। तुम अगर यह काम कर पाये तो मैं इंग्लैण्ड के प्राइम मिनिस्टर मिस्टर पिट को लिखकर तुम्हें रिवार्ड दिलवाऊँगा।"

ज्यादा वक्त खराब न कर मुंशी बाहर निकल गया।

वाटसन अब तक चुपचाप बैठा था।

क्लाइव की ओर देखकर उसने हँसते हुए कहा, "राबर्ट, यही लोग रीयल इंडियन हैं। ये पैसे के लिए सब कुछ कर सकते हैं। बेगम के तलवे और ...

चाट आयेंगे। हमें राइट मैन मिला है, अमीचन्द ने हमें ठीक आदमी दिया है, दि रियल स्काउन्ड्रेल।"

●

सन् १७३९ में नादिर शाह दिल्ली के तख्त पर सिर्फ अठावन दिन हुकूमत करके और चार करोड़ रुपये लेकर लौट गया था। मैसूर के राजा के ससुर ने दामाद के यार-दोस्तों की नाक काट कर सबके सामने उसकी बेइज्जती की थी। हिन्दुस्तान का असली मालिक कौन है, यह ठीक नहीं था। दिल्ली का बादशाह मालिक है या हैदर अली, या जेनरल बुशी या नवाब सिराजुद्दौला, कुछ भी ठीक नहीं था। इसलिए अगर कम्पनी के चहेते खिदमतगार बनना चाहते हो तो नवाब के पैर चाटो, नवाब की बेगम के पैर चाटो और एडमिरल वाटसन या क्लाइव के पैर चाटो। उससे हिन्दुस्तान का भला भले ही न हो लेकिन तुम्हारा खुद का भला जरूर होगा। हिन्दुस्तान का भला सोचने की जरूरत नहीं है, उसके लिए खुदाताला है। तुम अपना खुद का भला पहले सोचो। जो हिन्दुस्तान का मालिक होगा वह तुम्हें बंगाल का मालिक भी बना देगा। तुम उसी को भजो।

मुंशी नवकृष्ण जब नवाब की छावनी में पहुँचा, उस समय वहाँ बड़ी सरगर्मी थी। इससे पहले मुंशी नवकृष्ण कभी नवाब के दरबार में गया नहीं था। लेकिन दरबारी कायदे उसे मालूम थे। नकू घर के सरिश्ते में काम करते समय उसने यह सब सीख लिया था। उस समय भी उसे कई बार नवाब-निजामत के अमीर-उमरावों से मिलने जाना पड़ा था और बाबुओं की तरफ से बातचीत करनी पड़ी थी। लेकिन उस समय उसे अपने को बड़ा छोटा महसूस हुआ था। ऐसा लगा था, मानो सभी उसे मामूली समझ रहे हैं। फिर सूतानुटी और गोविन्दपुर का भी नक्शा बदला और साहब लोग शहर में जमकर बस गये। लेकिन नवकृष्ण वही नवकृष्ण रह गया था। वही खाता-बही बगल में दबाये सरिश्ते में आना-जाना।

लेकिन कम्पनी की नौकरी लग जाने से उसे आशा की रोशनी दिखाई पड़ी थी।

कम्पनी की नौकरी लगने की बात सुनकर बाबू लोग खुश ही हुए थे। कहा था—धर्म न बिगाड़कर काम करते जाना नवो। इससे धर्म भी बना रहेगा और पैसा भी कमा पाओगे।

लेकिन धर्म बनाये रखना कायस्थ घर का लड़का नवकृष्ण जानता था। घर बाबू लोग सुवर्णवणिक थे, लेकिन कोई नहीं कह सका कि नौकरी की खातिर नवकृष्ण ने अपना धर्म बिगड़ने दिया है। रोज चट्टी उतारकर सरिश्ते के दफ्तर में गया और लौटते समय वही चट्टी पहनकर घर लौटा। बनियों का छुआ पानी तक कभी नहीं पिया। अब यहाँ भी वही नियम था। अब यह कम्पनी का सरिश्ता था। कम्पनी का मुसलमान मुंशी काजीउद्दीन उसे शुरू-शुरू में टेढ़ी निगाह से देखने लगा था, लेकिन वह जानता था कि दूसरों के सामने अपने को छोटा करने में असुविधा कुछ भी हो, सुविधा

ही ज्यादा है। भले ही किसी की निगाह में छोटा हो गया लेकिन असल में तो छोटा नहीं हुआ। अपना काम बन गया तो फिर कौन किसे छोटा कर सकता है ?

उस दिन सिंहवाहिनी की मूर्ति के सामने नवकृष्ण देर तक आँखें मूँदे यही प्रार्थना करता रहा।

वह कह रहा था, हे माँ सिंहवाहिनी, मुझे और कुछ नहीं चाहिए। बस, अपार दौलत दो। दौलत की भीख ही तुमसे माँग रहा हूँ। ऐसा अवसर जीवन में कभी नहीं आयेगा। इधर नवाब मुसीबत में है, उधर कम्पनी भी मुसीबत में है। ऐसी मुसीबत में जिसे फायदा करना होता है, कर लेता है। मुसीबत है, इसीलिए न कम्पनी मेरी खातिर करती है। मुसीबत टल जाने पर कौन किसकी खातिर करता ? उस समय तो मुझे कुत्ते-बिल्ली की तरह दुत्कारेंगे। इसलिए जब तक इन लोगों की मुसीबत है, मेरे लिए कोई मौका कर दो माँ। मैं तुम्हारे लिए हीरे का मुकुट और सोने की नथ बनवा दूँगा।

बात माँ के कानों तक पहुँची या नहीं यह तो नहीं पता, लेकिन इसके बाद ही साहब के पास से बुलाहट आयी और मौका मिला।

नवाब की छावनी भी कितनी बड़ी थी ! नवाब के खेमे की चोटी दूर से दिखाई पड़ती। कतारों में घोड़े बँधे थे। दूर से ही नवाब निजामत का झंडा दिखाई पड़ता। जहाँ भी नवाब जाते वहीं सिपाही-बरकंदाज जाते। कचहरी भी साथ में रहती। बाईजी-बेगमों के खेमे भी गाड़े जाते। बावर्ची, मशालची, नौकर, खिदमतगार सभी रहते।

लेकिन उस दिन जो नवकृष्ण नवाब के दरबार में घुस सका था, वह केवल कम्पनी की नौकरी की बदौलत नहीं बल्कि खुद आगे बढ़ने की ताकीद से। जैसे भी हो, रुपया कमाना ही है। दौलत के बिना जीवन सूना है। दौलत चाहिए ही। हुगली के फौजदार ने दौलत कमायी, लक्ष्मीकांत धर ने दौलत कमायी, वैष्णवचरण सेठ ने दौलत कमायी तो नवकृष्ण भी दौलत कमाकर रहेगा। अपरिमित दौलत।

नवाब के दरबार में इत्तला देकर जाना पड़ता है।

इत्तला देने के बाद मुंशी नवकृष्ण दरबार में जा ही रहा था कि उसने देखा बुरका पहने कोई बेगम वहाँ आकर खड़ी है।

नवकृष्ण ने फौरन जमीन तक झुककर कोर्निश की। बेगम जो भी रही हो, होगी तो नवाब की ही बेगम। नवाब की बेगम को कोर्निश करने के माने हैं नवाब को कोर्निश करना।

मराली ने पूछा, "तुम कौन हो ?"

मुंशी नवकृष्ण ने कहा, "बन्दे को मुंशी नवकृष्ण कहते हैं।"

"हिन्दू ? काफिर !"

"जी हाँ, बेगम साहबा, बन्दा काफिर ही है। पेट की खातिर फिरंगी साहब की नौकरी करता हूँ लेकिन नमक नवाब बहादुर का ही खाता हूँ।"

"नवाब का नमक खाता हूँ, इसके माने ?"

"जी, नवाब का नमक कौन नहीं खाता ? पूरे हिन्दुस्तान के लोग नवाब का नमक खाकर ही तो जिन्दा हैं !"

"तुम यहाँ किसलिए आये हो ?"

नवकृष्ण मन ही मन सोच रहा था—यही मरियम बेगम होगी। लेकिन उसके साथ इतनी आसानी से मुलाकात हो जायेगी यह तो सोचा भी नहीं था।

"खता माफ हो, आप ही क्या मरियम बेगम साहबा हैं ?"

"तुम मुझे पहचानते हो ?"

"आपको कौन नहीं पहचानता ? मेरे मालिक क्लाइव साहब आपकी तारीफ करते नहीं थकते।"

"तुम क्या कर्नल क्लाइव के पास से आ रहे हो ?"

"जी हाँ बेगम साहबा।"

"किसलिए ?"

मुंशी ने कहा, "आप साहब से मुलाकात करने गयी थीं लेकिन साहब आपकी खिदमत में कोई नजराना पेश न कर पाये जिसका उन्हें सख्त अफसोस है।"

"मेरे चले आने के बाद तुम्हारे साहब के दफ्तर में कोई आया था क्या ?"

"कौन आता ? मैं ही आया था। मेरे साहब जरा भुलक्कड़ हैं आप उनके कसूर का ख्याल न करें।"

वहीं से नवाब का चोबदार जा रहा था।

मराली ने आहिस्ते से आवाज दी, "नौशेर अली।"

नौशेर अली आकर कोर्निश करने के बाद खड़ा हो गया।

मराली ने कहा, "इसे कैद करके नवाब के पास ले जाओ।"

"जी, मैंने तो कुछ भी नहीं किया।"

लेकिन नौशेर अली तब तक हुक्म की तामील कर चुका था। मुंशी को कैद कर उसने दरबार में नवाब के सामने पेश किया।

नवाब के सामने सेठ अमीचन्द और नन्दकुमार सर झुकाये खड़े थे।

इस नये कैदी पर नजर पड़ते ही नवाब ने पूछा, "यह कौन है ?"

जवाब मराली ने दिया, "जहाँपनाह, यह फिरंगियों का जासूस है।"

मुंशी ने दोनों हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाते हुए कहा, "नहीं खुदावन्द, मैं जासूस नही हूँ। मैं क्लाइव साहब का मुंशी हूँ।"

"यहाँ किसलिए आये थे ?"

"साहब ने मुझे बेगम साहबा से माफी माँगने के लिए भेजा है।"

"किस बात की माफी ?"

मुंशी ने कहा, "बेगम साहबा साहब के दफ्तर में तशरीफ ले गयी थीं और मेरे साहब उनकी खिदमत में कोई नजराना पेश करना भूल गये थे।"

मराली ने डपटकर कहा, "बस इतना ही ?"

पूरे दरबार में जैसे सनसनी छा गयी।

मराली ने कहा, "जहाँपनाह, इन लोगों ने हर ओर साजिशों का जाल बिछा रखा है, यह मुंशी भी उनमें से एक है। यह खबर पाकर कि जहाँपनाह ने फौजदार साहब और सेठ अमीचन्द साहब को इत्तला करायी है, कर्नल क्लाइव ने अपने मुंशी को सारे वाकिये से वाकिफ होने के लिए यहां भेजा है।"

नवाब ठीक नहीं कर पा रहे थे कि क्या करें।

मराली ने कहा, "नानी बेगम साहबा की ख्वाहिश है कि दरबार फिलहाल बरखास्त किया जाये, मुर्शिदाबाद पहुँचकर मोतीझील में इन तीनों की सुनवायी की जाये।"

पिछले कई दिनों से नवाब भी काफी परेशान थे। उन्हें भी यह बात पसन्द आयी। दरबार बरखास्त करके नवाब अपने खास खेमे में चले आये। पीछे-पीछे मराली भी वहीं आ पहुँची।

मराली ने अब बुरके की नकाब हटा दी थी। नवाब के सामने खड़े होकर उसने कहा, "जहाँपनाह, यहां से फौरन निकल चलिए, नहीं तो पता नहीं हम लोग किस नयी साजिश के जाल में फँस जायेंगे।"

तब तक नानी बेगम भी आ पहुँची थी। उन्होंने भी यही राय दी।

नवाब ने कहा, "लेकिन यह भी तो मेरा ही इलाका है।"

मराली ने कहा, "यह लोग सबके सब जहाँपनाह के दुश्मन हैं, पास ही में फिरंगियों का भी अड्डा है। ये तीनों शैतान तो अपने हाथ में हैं ही, अब हमारे लिए मुर्शिदाबाद चलना ही ठीक रहेगा।"

"लेकिन मैं आज ही नन्दकुमार को बरखास्त करना चाहता हूँ।"

"इस वक्त बरखास्त करने का नतीजा अच्छा नहीं होगा। वह खुल्लमखुल्ला जाकर साहब से मिल जायेगा। कुछ दिन कैद में पड़े रहेंगे तो सब ठीक हो जायेगा।"

"लेकिन यह मुंशी ?"

मराली ने कहा, "मैं क्लाइव के दफ्तर से जो खत ले आयी थी, उसी को लेने आया है।"

"क्लाइव की इतनी हिम्मत ?"

"जहाँपनाह क्या क्लाइव को अभी तक नहीं पहचान पाये ?"

"लेकिन मीर जाफर तो कहता था कि ये लोग बड़े ईमानदार होते हैं।"

"जहाँपनाह शायद मीर जाफर अली साहब को भी अच्छी तरह से पहचान चुके होंगे। इन तीनों को कैद कर मुर्शिदाबाद ले चलिए, इससे क्लाइव के होश गुम हो जायेंगे और वह चन्दननगर पर हमला नहीं करेगा।"

"लेकिन इस वक्त इन लोगों को नाराज करना क्या ठीक होगा ?"

मराली ने कहा, "जहाँपनाह को क्या कभी अच्छा वक्त भी नसीब हुआ है ?

जिन्दगी में किसी को भी अच्छा वक्त मिलता है क्या ?"

नवाब ने मरियम बेगम की ओर हैरत से देखकर पूछा, "बेगम साहबा, जिन्दगी के बारे में यह सब आपको किसने सिखाया ? तुम्हारा निकाह कब हुआ था ?"

"वे सब बातें अभी जाने दीजिए आलीजाह ।"

"नहीं तुम बतलाओ । मेरे यहाँ तो और भी बहुत-सी बेगमें हैं लेकिन इस तरह से तो कोई भी नहीं सोचती ।"

मराली ने कहा, "आलीजाह, आप इतने नर्मदिल न बनें । इतना नर्मदिल होने से आप मसनद सँभाल नहीं पायेंगे ।"

"बस, मसनद की ही फिक्र करती हो । अब मुझे मसनद के बारे में सोचना अच्छा नहीं लगता । अब मैं सिर्फ जीना चाहता हूँ ।"

"लेकिन आप ऐसा कहें, यह शोभा नहीं देता । बंगाल के लाखों लोग आपके ही भरोसे जी रहे हैं ।"

नवाब और भी आश्चर्य में पड़ गये । कहा, "सच-सच कहो न, तुमने इतनी सारी बातें कहाँ सीखीं ? किसने तुम्हें इस तरह बातें करना सिखाया ?"

मराली ने कहा, "मेरी बात रहने दें जहाँपनाह, मैं मामूली औरत हूँ, बहुत ही मामूली ।"

"नहीं, नहीं तुम्हें बताना ही होगा ।"

मराली बोली, "उधर दरबार में लोग आपके हुक्म के इंतजार में बैठे हैं ।"

"बैठे रहने दो । उन्हें बैठे रहने की आदत है । तुम कहो ।"

"आलीजाह, आपने क्या पहले यह सब किसी से नहीं सुना ?"

"नहीं, किसी ने इस तरह नहीं कहा ।"

"क्या कहते हैं आप ? आपके पास कितने ही मौलवी हैं, कितने ही पंडित हैं, जो आप से तनख्वाह लेकर कुरान की नकल कर रहे हैं, गीता की नकल कर रहे हैं ।"

नवाब ने कहा, "यह उनका पेशा है बेगम साहबा, इसी से उनकी रोजी चलती है ।"

"लेकिन आलीजाह ने क्या कभी वह सब पढ़कर नहीं देखा ? मौलवियों को बुलाकर उनकी बातें नहीं सुनीं ?"

नवाब ने कहा, "बचपन से ही मैं गलत रास्ते पर चला गया था बेगम साहबा, मैं बस गजलें सुनता रहा, ठुमरी सुनता रहा, नाच देखता रहा, दिल्ली से तवायफें बुलाता रहा, उन्हीं के साथ रात गुजारता रहा और कुछ सोचने-समझने का मौका ही नहीं मिला । जिन्दगी का एक दूसरा भी पहलू है, इसका मुझे ख्याल ही न रहा ।"

"लेकिन कुरान ? कुरान भी क्या आपने कभी नहीं पढ़ा ?"

नवाब ने कहा, "नहीं ।"

नानी बेगम सब सुन रही थीं । बोलीं, "मैंने कितनी ही बार मिर्जा को पढ़कर

सुनाया है, लेकिन वह सुनता ही नहीं था, बस हुड़दंग मचाये फिरता था।"

"मुझे उस समय यह सब अच्छा नहीं लगता था नानी जी।"

मराली बोली, "लेकिन अब यह सब कैसे अच्छा लग रहा है आलीजाह ?"

"यह तो नही कह सकता बेगम साहबा। यही जो तुमने कहा, अच्छा वक्त कभी नसीब नहीं हुआ, बड़ा अच्छा लगा।"

मराली बोली, "समुद्र में जिस तरह लहरें होती हैं उसी तरह इस जीवन में आफतें हैं। यही नियम है। लहरें रुकें तो नहायें, यह जो लोग सोचते है उनके लिए समुद्र में नहाना मुमकिन नही होता।"

"सच कहो न बेगम साहबा, इतनी बातें तुम्हे कहाँ से मालूम हुई ? क्या हतियागढ़ के राजा ने तुम्हें यह सब बताया था ?"

"नहीं जहाँपनाह !"

"फिर किसी मौलवी ने ? तुम्हारे पुरोहित ने ?"

"नहीं आलीजाह।"

"फिर किसने बताया ?"

मराली बोली, "मेरी एक मुँहबोली बुआ थी, नयन बुआ। वह मुझे रामायण-महाभारत पढ़कर सुनाती थी। मैंने यह सब उसी से सीखा है।"

"मुझे एक बार यह सब सुना सकती हो ? एक बार अपनी नयन बुआ को चेहल-सुतून में ला सकती हो ?"

मराली हँसी। बोली, "नही जहाँपनाह, ऐसा नहीं हो सकता। मैंने अपनी जात बिगाड़ी है, लेकिन सभी क्यों बिगाड़ने चले ?"

"क्या मेरे चेहल-सुतून में आने से ही जात चली जायेगी ?"

"जायेगी। हिन्दुओं की जात बड़ी कमजोर चीज है, बड़ी जल्दी बिगड़ जाया करती है।"

फिर जरा रुककर मराली ने कहा, "एक आदमी था जिससे मैंने यह सब सीखा है।"

"कौन है वह ?"

"वह एक कवि है।"

"हाफिज ?"

"नही।"

"तब ? कबीर ?"

मराली ने कहा, "नही जहाँपनाह, वह इतना मशहूर नही है। फक्कड़ है, कुछ लोग उसे पागल भी कहते हैं। वह भजन गाता फिरता है। वही भजन सुनकर मैंने यह सब सीखा है।"

"रहता कहाँ है ?"

"उसका कोई ठिकाना नहीं है। आज यहाँ है, तो कल वहाँ।"

"उसे एक दिन बुलाओ न।"

मराली ने कहा, "मौका लगते ही उसे बुलाऊँगी। उसके भजन सुनकर जहाँ-पनाह को तसल्ली होगी।"

"उसका नाम क्या है?"

"वह अपने को हरि का दास भक्त हरिदास कहता है।"

कान्त पास के खेमे में खड़ा सब सुन रहा था। उद्धवदास की बात चलते ही वह सिहर उठा। मराली क्या अभी भी उद्धवदास को भुला नहीं पायी?

पास ही के खेमे में मुंशी नवकृष्ण, सेठ अमीचन्द और नन्दकुमार कैद थे।

अमीचन्द गुस्से से दाँत पीस रहा था। नन्दकुमार ने बड़ी मानूमियत से उसकी ओर देखकर पूछा, "अब क्या होगा सेठ साहब? आपका खत मरियम बेगम के हाथ में कैसे पड़ गया?"

सुनकर मुंशी के भी कान खड़े हो गये।

उसने कहा, "नवाब क्या हम लोगों को कत्ल करा देगा? मैं तो बेगुनाह हूँ।"

तभी फिर दरबार में बुलाहट हुई। नवाब ने हुक्म दिया, "अमीचन्द साहब, हम लोग आज ही मुर्शिदाबाद के लिए रवाना हो रहे हैं। आप तीनों को भी साथ चलना होगा।"

कहकर नवाब जा ही रहे थे कि पीछे से अमीचन्द ने कहा, "हम लोग क्या अपने को जहाँपनाह का कैदी मानें?"

"मेरे कहने का तो यही मतलब निकलता है, अमीचन्द साहब।"

कहकर नवाब वहाँ से चले आये और उसके बाद ही छावनी में 'तैयार होओ, तैयार होओ' का शोर मच गया। थोड़ी देर बाद मिर्जा मुहम्मद हैबते जंग सिराजुद्दौला आलमगीर बहादुर की फतह के नारों की गूंज से आसमान जैसे फट पड़ रहा था।

जरा अकेला पाते ही अमीचन्द ने कहा, "नन्दकुमार, बहुत सहा। अब और देर करने से काम नहीं चलेगा। इसे फौरन खत्म करना पड़ेगा।"

नन्दकुमार ने आहिस्ते से पूछा, "किसे?"

"मरियम बेगम साहबा को।"

सुनकर मुंशी नवकृष्ण चौंक उठा। साथ ही साथ उसकी लम्बी चोटी भी हिल उठी।

●

महाराज कृष्णचन्द्र बजरे से कालीघाट जा रहे थे। काफी रात हो चुकी थी। अरसे बाद आज रामप्रसाद सेन मिला था। महाराज ने उसे भी साथ में ले लिया। रामप्रसाद गा रहा था—

मां, मेरी यही भावना ।
कहां था मैं आया कहां,
जाऊं कहां क्या ठिकाना ।
देह मे मेरी हैं छः रिपु
देते हैं मां कुमंत्रणा...

तभी अचानक एक बूढ़े मांझी ने आकर कहा, "महाराज, नवाब आ रहे हैं। रोकने का हुक्म हुआ है।"

छोटे सरकार पास बैठे थे। बोले, "अब क्या होगा ?"

भारतचन्द्र ने कहा, "अरे, किसकी बात कर रहे हो ?"

गोपाल बाबू ने कहा, "महाराज, लगता है हम लोगो के साथ कोई मसखरी हा है।"

बूढ़े मांझी ने कहा, "नही महाराज, नवाब ने इत्तिला करायी है कि वे हमारे पर आयेंगे। नवाब रामप्रसाद जी का गाना सुनना चाहते हैं।"

उन दिनों आधी रात की गंगा-यात्रा बड़ी खतरनाक होती थी। गंगा में उन जो कुछ हो जाता था उसकी दास्तान कही भी लिखी नहीं है।

इतनी रात हो जाने पर भी मराली की आंखों में नींद न थी। नवाब द्दौला नही सो पाये थे तो मरियम बेगम कैसे सो सकती थी ?

मराली ने कहा था, "आलीजाह, नींद आयेगी, कोशिश करिए।"

"कोशिश तो कब से कर रहा हूं, लेकिन नींद है कि आने का नाम ही नही "

अमीचन्द, नन्दकुमार और मुंशी एक दूसरे बजरे मे पीछे आ रहे थे। वे लोग ं सो रहे थे और नवाब की आंखो में नींद नही थी।

"बेगम साहबा !"

मराली ने कहा, "जी आलीजाह !"

"चेहल-सुतून मे एक बेगम ने मुझे एक बार पता नही कौन-सा अर्क पिलाया "

"किस बेगम ने ?"

नवाब ने कहा, "वह तो मुझे याद नही है, लेकिन इतना याद है कि अर्क पीने द मुझे बडा अच्छा लगा था और उस रात बड़ी गहरी नींद आयी थी।"

मराली ने कहा, "आलीजाह, मैं उस अर्क के बारे में जानती हूं।"

"जानती हो ? तुमने पीया है क्या ?"

"नही आलीजाह, मुझे उसकी जरूरत नहीं पड़ी। मैं मामूली घर की , मुझे ऐसे ही गहरी नींद आती है।"

नवाब ने कहा, "बेगम साहबा, मैं भी वैसा ही मामूली आदमी क क जमाना था जब मसनद मेरी ख्वाहिश थी। लेकिन अब मैं उसे

"आलीजाह, मसनद पर बैठकर भी गरीब हुआ जा सकता है।"

"वह कैसे हो सकता है ? मुझे तो यह मसनद ही सारी आफतों की जड़ लगती है।"

"नहीं आलीजाह, यह बात नहीं है। महाभारत, हाफिज या कबीर पढ़कर आपको पता लगता।"

"तुमने शायद यह सब पढ़ा है ?"

मराली ने कहा, "नहीं आलीजाह, सब कुछ नहीं पढ़ना होता। हमारे महाभारत में जो कुछ लिखा है, आपके कुरान में भी वही है।"

"इसका मतलब कुरान पढ़ने पर मुझे नींद आयेगी ?"

मराली ने कहा, "जरूर आयेगी। नानी बेगम साहबा तो इसीलिए कुरान पढ़ती हैं।"

"दरबार में कितने ही मौलवी हैं जिन्हें कुरान का तर्जुमा करने के लिए मोटी-मोटी रकमें दी जाती हैं, लेकिन मैंने तो आज तक नहीं पढ़ा।"

"अब पढ़ियेगा तो आपको नींद आयेगी।"

"और हाँ, तुमने उस दिन किसी कवि का नाम लिया था न ?"

"हरिदास ?"

"हाँ-हाँ, वही। तुम उसका गाना नहीं सुनवा सकतीं ?"

और ठीक उसी वक्त कहीं दूर से एक सुरीली आवाज हवा में तैरती सुनायी दी। कोई मीठी आवाज में गा रहा था।

आवाज साफ नहीं सुनाई पड़ रही थी, लेकिन सुर बड़ा मधुर था।

"सुनिए आलीजाह।"

आवाज जैसे और भी नजदीक आ गयी थी—

माँ, मेरी यही भावना।
कहाँ था मैं आया कहाँ,
जाऊँ कहाँ क्या ठिकाना।...

मराली ने गाने का मतलब समझा दिया।

महाजीवन के उस पार से अपार शांति की शीतल बयार आकर नवाब को शांति देने लगी।

नवाब ने आवाज दी, "कोई है ?"

कान्त आकर कोर्निश करके खड़ा हो गया।

"यह कौन गा रहा है ? बजरा किसका है ?"

कान्त ने जरा देर बाद ही आकर खबर दी, "जहाँपनाह, बजरा महाराज कृष्णचन्द्र का है और रामप्रसाद गा रहा है।"

नवाब ने पूछा, "रामप्रसाद, यह कौन है ?"

मराली ने जवाब दिया, "हालीशहर का एक कवि है।"

"तुमको यह सब कैसे मालूम है ?"

"हम सभी ने इसका गाना जो सुना है, आलीजाह ! हमारे यहाँ के किसान खेती करते वक्त यही गाना गाते हैं और घर की बहू-बेटियाँ भी यही गाना गाती हैं।"

सुनकर सूबे बंगाल के नवाब मिर्जा मुहम्मद सिराजुद्दौला को जैसे बड़ा अजीब लगा। वह नवाब है इसलिए सभी उनको कोर्निश करते हैं, लेकिन यह जैसे बिना मसनद का नवाब है। इसकी मसनद जैसे लोगों के दिल में है।

"इसे बादशाह से खिलअत मिली है ?"

"नहीं आलीजाह।"

"जागीर ?"

"वह भी नहीं।"

"तब ? तब ये लोग इसे इतना क्यों मानते हैं ? इसे तो देखना चाहिए।"

और साथ ही साथ नवाब का हुक्म हो गया।

फौरन नवाब के हुक्म की तामील हुई।

नवाब बहादुर खुद महाराज के बजरे में गये। साथ में कान्त भी गया। महाराज कृष्णचन्द्र और उनके साथ ही कवि भारतचन्द्र, गोपाल बाबू और छोटे सरकार घबराकर खड़े हो गये। जरूर कहीं कुछ गड़बड़ हो गयी है। आज पता नहीं क्या होगा।

"महाराज, गा कौन रहा था ?"

सुनकर जैसे सबकी जान में जान आयी। नजराना, सजा या सम्मान के लिए नहीं, नवाब बहादुर गाना सुनने के लिए आये हैं।

"महाराज, मैं एक गाना सुनूँगा।"

कवि रामप्रसाद ने कहा, "जहाँपनाह, हुक्म करिए, कौन-सा गाना सुनेंगे ?"

"जो आप का जी चाहे सुनायें।"

रामप्रसाद ने शुरू किया—

सैयाँ गये परदेस
सखी री, मैं का करूँ...

लेकिन नवाब ने रोककर कहा, "नहीं नहीं, यह नहीं। जो आप अभी गा रहे थे वही गाइए।"

"कौन गाना ?"

"वही जो माँ-माँ कहकर कोई गाना गा रहे थे।"

रामप्रसाद की आँखें बन्द हो आयीं। उनकी आँखों से झर-झर आँसू झरने लगे।

साधक कवि गाने लगा—

मॉं, मेरी यही भावना।
कहाँ था मैं आया कहाँ,
जाऊँ कहाँ, क्या ठिकाना।
देह में मेरी हैं छः रिपु
देते हैं माँ कुमंत्रणा।
मन से कहूँ भजो काली
वह मेरा कहा सुने ना।

रामप्रसाद सेन की आँखों से आँसू बहता ही रहा।

और उधर, उसी आधी रात के वक्त एक दुर्घटना हुई जिसने अठारहवीं सदी के इतिहास को एक नया मोड़ दिया।

●

"उसके बाद ?"

मराली ने कहा, "उसके बाद दूसरे ही दिन मुसीबत आ गयी थी।"

उद्धवदास खुद ही सब कुछ लिख गया है। वह दमदम की बगीचे वाली कोठी में अपनी पोथी वगैरह लेकर आ जाता और सारी बातें सुनकर अपनी पोथी के पन्नों को रँगता जाता। उस समय कर्नल क्लाइव के ऊपर मुसीबत आ गयी थी। कम्पनी की सिलेक्ट-कमेटी के साथ उसका झगड़ा चल रहा था। दिल-दिमाग ठीक नहीं था। बेगम मेरी विश्वास एक-एक कर सारी बातें बताती जाती और उद्धवदास उन्हें लिखता जाता। उद्धवदास ने सारी बातों को ज्यों का त्यों नहीं लिखा है। सारे बंगाल में घूमते-घामते वह प्रायः बूढ़ा हो गया था। क्लाइव साहब ने कान्त सागर में एक ताल्लुका उसे दे दिया था, वहीं से उद्धवदास रोज पैदल चलकर आता और बेगम मेरी विश्वास के सामने बैठा रहता।

यह सब बातें प्रायः आखिर की हैं। जैसे किसी गजल का आखिरी बन्द।

मराली की शक्ल-सूरत भी बदल-सी गयी थी। उसकी हालत ही जैसे बदल गयी थी। पता नहीं, कहाँ गया था उसका वह कच्चे सोने की तरह दमकता हुआ रंग, मेंहदी लगे हाथ के नख। अब न तो वह ओढ़नी है और न ही जरी के काम किये चुन्नटदार सलवार और कमीज।

नवाब उन दिनों मरियम बेगम के भक्त-से हो गये थे। जो नवाब कभी मोतीझील से चेहल-सुतून नहीं आते थे, मोतीझील में ही दरबार लगाते, दरबार लगाने के बहाने रात मोतीझील में ही काटते, उसी नवाब को उन दिनों चेहल-सुतून आते देखकर सभी को ताज्जुब हुआ था।

नवाब ने कहा था, "लोगों का कहना है कि मुर्शिदाबाद की मसनद चलाती है मरियम बेगम।"

"आलीजाह, इन बातों पर क्या आप यकीन करते हैं ?"

मुद्दत के बाद नवाब की खुली हँसी सुनायी दी थी उस दिन। अकबर बादशाह से लेकर शाहजहाँ तक, शुजाउद्दीन, सरफ़राज खाँ, यहाँ तक कि अलीवर्दी खाँ भी, बेगमों के बिना कोई चला सका है मसनद ? नानी बेगम के बगैर क्या नाना नवाब ही मसनद चला पाते ?

पेशमन बेगम ने कहा था, "तूने कैसा जादू किया है नवाब पर ?"

नवाब जिस कमरे में आराम फरमा रहे थे, उस कमरे में कोई नहीं आ सकता, किसी को हुक्म ही नहीं था जाने का। बहुत दिनों के बाद नवाब को आराम की नींद नसीब हुई थी। शायद यह रामप्रसाद के गाने का ही असर था। रामप्रसाद के गाने ने ही शायद नवाब को यह समझा दिया था कि ऐशो-इशरत, यह सब कुछ नहीं है। एक दिन जिस तरह नवाब शुजाउद्दीन चला गया, तुम भी उसी तरह चले जाओगे। जिस प्रकार नवाब अलीवर्दी खाँ चला गया, उसी तरह तुम्हें भी चले जाना है। फिर इन कुछ दिनों के लिए लोगों पर यह अत्याचार क्यों, यह अनाचार क्यों ? अपने अन्दर छिपे इन दुश्मनों की सलाह न मानो, ये बेचैनी, अनिद्रा और दिली तकलीफ के अलावा कुछ नहीं देंगे। यह सब जो तुम्हें दिखायी दे रहा है, सब थोड़ी देर के लिए है, यह सब झूठ है। अगर सच कुछ है तो वह है प्यार। आलीजाह ! प्यार करना सीखो, इस दुनिया के सभी लोगों से प्यार करना सीखो। उसी से तुम्हें सुख की नींद आयेगी, चैन मिलेगा।

"लेकिन उन्हें क्या मैं सजा न दूँ, जिन्होंने मेरे साथ दुश्मनी की है ?"

"जरूर सजा दें आलीजाह ! अगर उनका पालन-पोषण करना आपका फर्ज है तो कसूर करने पर सजा देना भी आपका फर्ज है। लेकिन पालन-पोषण न करने पर सजा देने का आपको कोई हक नहीं है।"

"तो क्या मैं अपनी रिआया की परवरिश नहीं करता ?"

"जी नहीं।"

"तो फिर इतने दिनों तक मैंने क्या किया है ?

"आपके बाप, दादा, परदादा आदि जो अब तक करते आये हैं, आपने भी वही किया है। औरत का भोग किया है, जमीन पर कब्जा किया है और खूबसूरती को रौंदा है। आपने जो कुछ किया है, खानदानी काम किया है। लेकिन अब सब कुछ बदल गया है, इतिहास भी बदल गया है। इन्सान एक कदम और आगे बढ़ गया है। तवारीख़ आज आपके बाप-दादों के किये की कैफियत चाहता है। आज आपको उन सब के सारे किये की कीमत अदा करनी होगी।"

"क्यों ? उनके किये की कीमत मुझे क्यों अदा करनी होगी ? मैं क्यों उसके लिए प्रायश्चित्त करूँगा ? आईने-अकबरी में तो इस तरह के किसी कानून का जिक्र नहीं है ?"

"नहीं है, लेकिन तवारीख के आईने-अकबरी का यही कानून है।"

"तो फिर मैं क्या करूँ ?"

"तुम्हें अपनी कुर्बानी देनी होगी ।"

अचानक नवाब की आँखों के आगे एक तेज धार वाला छुरा चमचमा उठा। और साथ ही एक डरी हुई चीख के साथ नवाब की नींद टूट गयी। इन्साफ मियाँ उस वक्त नौबतखाने में बैठे भैरों राग अलाप रहा था। बेहोशी की-सी हालत में नवाब के कान में सिर्फ एक ही बात सुनायी दे रही थी—सुबह हो गयी है, अब उठ जाओ नवाब, आफताब निकल आया है, अब दिन शुरू होने वाला है, नयी सुबह के साथ तुम्हारी किस्मत की परीक्षा होनेवाली है। देखना है कि रामप्रसाद के गानों से जो नसीहत तुम्हें मिली है, किस तरह तुम उसे काम में लगाना चाहते हो।

उस दिन मोतीझील के दरबार में नवाब के चेहरे को देखकर सभी को ताज्जुब होने लगा था। इस तरह खुशमिजाज नवाब को काफी अरसे से किसी ने नहीं देखा था। मुंशी नवकृष्ण, सेठ अमीचन्द और हुगली के फौजदार नन्दकुमार भी दरबार में हाजिर थे।

नवाब उन तीनों की ओर मुखातिब होते हुए बोले, "तुम लोगों को छोड़ दिया अमीचन्द।"

तीनों ने सर झुकाकर कृतज्ञता जतायी।

नवाब बोले, "यह न समझना तुम सब कि मैं तुम्हारे कसूर का बदला नहीं ले सकता था, सजा नहीं दे सकता था, लेकिन अपराध मैंने भी किया है।"

नवाब के इस तरह अपने को कसूरवार मान लेने पर सभी अचकचा-से गये।

"हाँ कसूर मैंने भी किया है। मैं ही क्यों, मेरे बाप-दादों ने भी किया है। सजा अगर देनी ही है तो मुझे भी वह सजा भुगतनी होगी। जिस दिन तुम्हें तुम्हारे कसूरों के लिए सजा दूँगा मुझे भी अपने कसूरों की सजा लेनी होगी। ऐशो-इशरत कुछ नहीं है सेठ अमीचन्द ! जिस तरह नवाब शुजाउद्दीन चले गये, अलीवर्दी खाँ चले गये, मैं भी उसी तरह एक न एक दिन चला जाऊँगा। इस लिए जिस तरह तुम हो, मैं भी ठीक उसी तरह हूँ। इस चार दिन की जिन्दगी में किसी को गुमान नहीं करना चाहिए। शरीर में रहने वाले दुश्मनों की सलाह न मानो अमीचन्द, वे तुम्हें बेचैनी और तकलीफों के अलावा और कुछ नहीं दे सकते। यह जो भी कुछ देख रहे हो, सब झूठ है। सच अगर कुछ है तो वह है मुहब्बत। इस दुनिया की हर चीज से मुहब्बत करना सीखो अमीचन्द, उसी में तुम्हें सुख और चैन मिलेगा।"

बाहर निकलकर फौजदार साहेब सेठ अमीचन्द की ओर देखने लगे।

"नवाब आज इस तरह अनहोनी बात क्यों करने लगा ?"

मुंशी नवकृष्ण अवाक् हो गया, बोला, "नवाब वैसे आदमी बुरा तो नहीं है फौजदार साहब !"

अमीचन्द हँसने लगा।

अमीचन्द हँसता हुआ बोला, "नवाब-बादशाह इस तरह के पागलपन अक्सर

करते ही हैं। दरअसल यह भी एक तरह की शैतानी ही है। बादशाह औरंगजेब भी कभी-कभी इस तरह करते थे। शैतानी करने के बाद वह अमीर-उमराव को यह कहकर धमकाते थे कि मैं मक्का चला जाऊँगा।"

सिर्फ अमीचन्द या नन्दकुमार और नवकृष्ण ही नहीं—मोतीझील के सभी कर्मचारियों ने इसी तरह सोचना शुरू कर दिया था कि आखिर नवाब को हुआ क्या ? नवाब तो इस तरह हँसकर बात नहीं करते थे, हँसकर बात करना तो दूर रहा—मोतीझील आकर उन्हें नींद भी नहीं आती थी। आखिर नवाब को हुआ क्या ?

मराली ने कान्त को बुला भेजा। इतने दिन के बाद कान्त फिर मुर्शिदाबाद आया था। लेकिन अतरवाले बूढ़े से भेंट नहीं कर पाया। पता नहीं, किस वक्त उसकी पुकार हो जाय। नवाब सो रहे हैं—मालूम होने पर कान्त ने सोचा कि क्यों न एक बार अतरवाले बूढ़े शराफत अली से भेंट कर ले। यह सोचकर ज्यों ही वह मोतीझील से निकला कि मरियम बेगम का बुलावा आ गया।

कान्त दौड़ते हुए मरियम के पास पहुँचा। बोला, "क्या बात है ?"

मराली ने कहा, "तुम्हें एक काम करना होगा।"

"बोलो न क्या काम है।"

"उसे एक बार बुलाना होगा।"

"किसे ?" न समझते हुए कान्त ने पूछा।

"वही जो गीत रचता है, कवित्त करता है। लेकिन याद रहे, मेरे बारे में कुछ न कहना। कहना कि नवाब उसका गाना सुनना चाहते हैं।"

कान्त अचम्भे में आ गया। बोला, "उद्धवदास ? उद्धवदास की बात कर रही हो ? लेकिन मैं उसे पाऊँगा कहाँ ? वह क्या अभी मुर्शिदाबाद में है ?"

"यह मैं कुछ नहीं जानती। चाहे जैसे भी हो उसे खोज कर लाना ही होगा। सारे बंगाल में वह कहीं न कहीं मिल ही जायेगा।"

लेकिन उस समय तक कान्त को क्या मालूम था कि मराली की सभी उम्मीदें नाउम्मीदी में बदल जायेंगी, मुर्शिदाबाद के इतिहास में इस तरह का परिवर्तन आयेगा और बंगाल पर एकाएक ऐसी मुसीबत आ पड़ेगी।

नवाब ने सोकर उठते ही खिदमतगार को पुकारा।

खिदमतगार के आते ही बोले, "नकलची को बुलाओ।"

नकलची ! किस नकलची को ! कहाँ का नकलची ?

नवाब ने कहा, "जो दरबार में कुरान की नकल किया करते हैं, उन्हें ही बुलाओ।"

कुरान की नकल करते हैं ! नवाब ने अब तक एक से एक बेसिर-पैर के हुक्म दिये हैं, लेकिन कभी कुरान-नकलची को बुलाने का हुक्म नहीं दिया।

इब्राहिम खाँ शराबखाने में चुपचाप बैठा-बैठा देख रहा था कि कब कौन अमीर-उमराव आता है। कब यारजान साहब आकर शराब की माँग करता है, मुँह

वाये वह इसी का इन्तजार कर रहा था कि नवाब का हुक्म सुना। सुनकर वह भी अचकचा-सा गया है। नवाब क्या कुरान पढ़ेंगे ?

यह भी एक अजीब घटना है मोतीझील की। शराब का हुक्म हुआ है, तवायफ का हुक्म हुआ है, उस्तादों का हुक्म हुआ है, रुपयों और पाप का भी हुक्म हुआ है, लेकिन कुरान का भी हुक्म हुआ है—यह शायद किसी ने नहीं सुना होगा। नवाब ने कुरान की शक्ल भी देखी है या नहीं, इसमें शक है। नवाब ने शायद अपनी जिन्दगी में सिर्फ एक बार कुरान को छुआ है, वह भी अलीवर्दी खाँ के मरने पर, जब उन्होंने जीवन में कभी शराब न पीने की कसम खायी थी। इसके बाद तो न नवाब को कभी कुरान की जरूरत पड़ी न कुरान को नवाब की।

लेकिन कुरान के नकलची को लेकर आने से पहले ही एक और खबर लेकर दूसरा खिदमतगार आ पहुँचा।

"खुदावन्द, मीरबख्शी मोहनलाल दरबार में हाजिर हैं।"

"क्या ?"

दूसरी बार जवाब देने पर नवाब की समझ में बात आयी। उन्होंने कहा, "दरबार में हाजिर करो।"

इसके बाद मोहनलाल ने जो खबर दी वह जैसी दुखदायी थी वैसी ही नवाब को भड़का देने वाली भी थी। अंग्रेज फौज ने चन्दननगर पर हमला कर दिया है। लड़ाई भी खतम हो गयी है। कर्नल क्लाइव ने फ्रांसीसियों के किले पर से उनका झण्डा उतारकर यूनियन जैक फहरा दिया है।

नवाब एक-ब-एक उछल पड़े। सत्ताइस साल का पठानी खून जैसे उबाल खा गया। "तो फिर हुगली का फौजदार कहाँ है ? अमीचन्द कहाँ है ? मुंशी नवकृष्ण कहाँ गया ? उन लोगों को मुर्शिदाबाद छोड़कर किसने जाने दिया ? मीर जाफर अली साहब कहाँ है ? बुलाओ उसे, मैं सबको कत्ल करा दूँगा। दिल्ली के बादशाह का सनदयाफ्ता नवाब मैं हूँ, मेरे हुक्म की उदूली क्यों की उन लोगों ने ? और फिर कासिम बाजार का वाट्स कहाँ गया, मँसियें लाँ ? उन लोगों को भी बुलाओ।"

यह खबर चेहल-सुतून में भी पहुँची। मराली कुछ खातिरजमा-सी हो उठी लेकिन खबर मिलते ही उसने पीर अली खाँ को बुला भेजा, "मेरा तामजान तैयार करो मैं इसी वक्त मोतीझील जाऊँगी।"

मराली की बाँदी भी इस हुक्म को सुनकर उसके कपड़े तैयार करने लगी। उसने उसके सभी कपड़े निकाल दिये, ओढ़नी, अंगिया, घाघरा और पायजेब सभी कुछ तैयार कर दिया। चेहल-सुतून में एक अजीब-सी खलबली मच गयी, मरियम बेगम फिर नवाब के पास जा रही है। सारी रात एक साथ रहने पर भी जी नहीं भरा शायद !

●

हालीशहर के कवि का गाना सुनते-सुनते जब महाराज कृष्णचन्द्र त्रिवेणी के घाट पर पहुँचे, उन्हें पता चला कि अंग्रेजों ने चन्दननगर के किले पर कब्जा कर लिया है।

छोटे सरकार ने बड़ी उम्मीद की थी कि इस बार महाराज कृष्णचन्द्र को लेकर क्लाइव के पास जायेंगे। क्लाइव साहब की कोशिश से शायद नवाब के हरम से छोटी बहूरानी का उद्धार हो जाये।

महाराज ने कहा था, "लेकिन इसके बाद भी क्या आप छोटी बहूरानी को घर में वापस लेंगे, छोटे सरकार ?"

छोटे सरकार ने जवाब दिया था, "ठीक है, लोग-बाग जो कहेंगे वही होगा। न हुआ तो प्रायश्चित्त करा लूंगा, ब्राह्मण-पंडित बुलाकर विधिवत् पूजा-पाठ करा लूंगा।"

महाराज सब कुछ सुनने के बाद बोले, "लेकिन जो कुछ सुन रहा हूँ उससे तो यही पता चलता है कि मुल्लाओं ने बहू के ऊपर जादू-टोना कर दिया है।"

"कैसे ?"

"मुर्शिदाबाद की मसनद तो इस समय बहू ही चला रही है, क्योंकि नवाब आजकल उसी के कहे मुताबिक हर काम करता है! नवाब के श्यामा-संगीत सुनने की धुन तो आपने उस दिन देखी ही थी। रामप्रसाद का भजन सुनकर नवाब की आँखों से कैसे झर-झर आँसू बहने लगे थे ? एक भी उर्दू गजल सुनने की ख्वाहिश जाहिर नहीं की नवाब ने, सिर्फ श्यामा-संगीत ही सुनता रहा। यह बहू के अलावा और किसी के बूते की बात नहीं है।"

गोपाल बाबू ने कहा, "तब फिर मुल्लाओं ने किस तरह जादू किया है महाराज ? कहीं छोटी बहू ने ही तो उन सभी मुल्लाओं पर जादू नहीं कर दिया है ?"

महाराज ने कहा, "नहीं गोपाल बाबू, मालूम पड़ता है कि मुल्लाओं ने ही बहूरानी पर जादू किया है, नहीं तो बहूरानी के कानों में भी तो यह बात गयी थी कि उसके स्वामी हमारे बजरे पर हैं, फिर भी गाना सुनने के बहाने नवाब के साथ क्यों नहीं आयी ?"

छोटे सरकार बोले, "नहीं महाराज, बेगम होकर भला वह आपके बजरे पर कैसे आती ? जात तो उसकी चली ही गयी है। शायद सोचा हो कि अब मैं उसे नहीं अपनाऊँगा।"

"बात तो सही है, आप उसे अपनाते भी तो कैसे ?"

छोटे सरकार ने कहा, "तो फिर आप ही रास्ता बतलायें कि मैं किस तरीके से उसे फिर से अपना सकता हूँ ? आप हैं नवद्वीप के महाराज, पंडितों के नियम-कानूनों के जन्मदाता। आप जो कुछ भी कहेंगे, मैं करने के लिए तैयार हूँ। अगर आप कहें तो उसके लिए मैं खुद मुसलमान हो जाऊँ।"

ठीक इसी समय खबर मिली कि अंग्रेजों ने फरासडाँगा का किला दखल कर लिया है।

महाराज खबर सुनकर कुछ देर चुपचाप रहे फिर बोले, "अच्छा, पहले तो कालीघाट चला जाय, बाद में सोचा जायेगा कि क्या किया जाय।"

यह बात उस समय की है जब चन्दननगर का नाम फरासडाँगा था। एक दिन १६६८ ई० में फ्रांसीसी जहाजों पर चढ़कर इसी फरासडाँगा में आये थे। पहले यह जगह दलदल भरी थी, बाद में इसे बस्ती बनाया गया था। पक्के मकान बने रहने के लिए, किला बनाया गया। डूप्ले के वक्त का तो कुछ पूछना ही नहीं! उस समय यह चन्दननगर कलकत्ता की रौनक से होड़ लेने लगा था। चन्दननगर की यह हालत देखते ही अंग्रेजों की शनि-दृष्टि उस पर पड़ी। हिन्दुस्तान में कहीं और इस तरह खूब-सूरत और आलीशान मकान हैं क्या? फ्रांसीसियों के जहाज दूर-दूर के देशों से माल ढोकर लाते। जेद्दा, मक्का, बसरा, चीन, पेगू आदि जगहों से लौटने के बाद जहाज हुगली नदी में आकर ठहरते थे।

हाँ, तो गोला-बारूद-तोप सब-कुछ जहाज में भरकर गया था। पैदल हजारों सिपाही मार्च करते हुए गये थे। फोर्ट डि अरलियन्स सिर्फ एक किला ही नहीं, फ्रांसी-सियों की ताकत का सबूत भी था। ख्वाजा वाजिद ने फ्रांसीसियों के साथ रोजगार करके अच्छा-खासा धन पैदा कर लिया था। जगत्सेठ साढ़े सात लाख रुपये देकर अच्छा-खासा सूद वसूल कर रहे थे। फिर अंग्रेजों के साथ लड़ाई होने पर फ्रांसीसियों का, उन सब का काफी नुकसान न हो तो और क्या हो?

लेकिन लड़ाई जब हो ही गयी है, तो इसे मान लेने के अलावा और चारा भी क्या है?

ज्यों-ज्यों दिन गुजरने लगे, त्यों-त्यों खराब खबरें आने लगीं। कोई कहता, अंग्रेजों के गोलों की मार से फ्रांसीसियों का किला गंगा नदी में ढह गया है।

कोई कहता, अंग्रेजों की गोलियों का शिकार होकर फ्रांसीसियों की लाशें गंगा में बह रही हैं।

जो लोग उस ओर माल की खरीद-फरोख्त करने जाकर जो खबर लाते थे, लोग उन्हें सुन-सुनकर चौंक उठते थे।

लोग-बाग घाट की ओर जाने पर मल्लाहों को देखते ही पूछ बैठते, "क्यों भाई, फरासडाँगा की कोई खबर जानते हो क्या?"

और फिर कौन किसकी खबर रखता है? खबर रखने से फायदा ही क्या है किसी को? जितना समय खबर के चक्कर में रहेंगे, उतनी देर तक अगर किसी भक्त-समाज में बैठकर ऊपर वाले का नाम लें तो कम से कम परलोक तो बनेगा। खबर जानने से किसी को कुछ फायदा तो होने से रहा, ऊपर से नुकसान ही है। न अपना

फायदा, न दूसरे का ही। इससे अच्छा यही होगा कि खेतो मे काम कर कुछ अन्न ही उपजाने का इन्तजाम करें। फरासडांगा से दल के दल फ्रांसीसी आ रहे हैं कासिम-बाजार की कोठियों में रहने के लिए। मॅसिये लॉ उनसे सारी खबरें सुनता है। इतना बड़ा किला फोर्ट डि अर्लियन्स, उसकी एक भी ईंट सलामत नहीं बची।

वाट्स भी अपनी कोठी में रहने के लिए आ गया था। अंग्रेजों की कोठी से फ्रांसीसियों की कोठी बहुत दूर नही थी। वाट्स अपनी कोठी पर बैठा चुरुट पी रहा होता है और सारी खबरें लेता रहता है। लेकिन पहरेदार का इन्तजाम करने में कोई गलती नही की है वाट्स ने। फिरंगी सिपाही दिन-रात कोठी के सामने बन्दूक लेकर पहरा देते हैं। मॅसिये लॉ को यकीन नही है जरा भी कि कब क्या हो जाय, किसके दिमाग मे क्या आ जाये।

रात के वक्त सभी खामोश रहते थे। गंगा में इधर-उधर से नौकाओं और बजरों का आना-जाना जारी रहता। उधर वाट्स साहब के पहरेदारों की नजर भी बड़ी मुस्तैद थी, पता नही किस ओर से कौन आकर हमला कर दे। कुछ कहा नही जा सकता। चन्दननगर से भागे हुए फ्रांसीसियों को नवाब ने शेल्टर दिया है, यह अच्छा नही हुआ है।

उस दिन बहुत रात गये कोठी में फ्लेचर आ पहुँचा।

फ्लेचर कर्नल का आदमी था। इधर से उधर खबरें ले आने-ले जाने का काम करता था। काफी दूर से घोड़ा दौड़ाता हुआ आया था और खड़ा-खड़ा हाँफ रहा था। लेकिन वाट्स के सामने आते ही बड़े मजे मे बातें करने लगा।

"क्या हाल है फ्लेचर ? कर्नल की क्या खबर है ?"

"सब अच्छी खबर है हुजूर। चन्दननगर को हम लोग नेस्तनाबूद कर चुके हैं।"

कर्नल क्लाइव के मद्रास वापस जाने की बात थी। वाट्स को भी यही बात मालूम थी। क्लाइव राइटर होकर हिन्दुस्तान आया था। वह काफी दिनो से यहाँ है। अब तो वह बड़ी अच्छी बँगला और फारसी बोलता है। हिन्दी भी बोल लेता है। शुरू से ही हिन्दुस्तान में रहने की वजह से वह बहुत कुछ सीख चुका है। इसीलिए तो विलायत वालों को उसके ऊपर इतना यकीन है। बंगाल के अमीर-उमराव और खुद नवाब के मिनिस्टर भी नवाब के फेवर में नहीं हैं। मसलन ढाई हजारी मनसबदार यार लुत्फ खाँ, मीर जाफर अली खाँ, जगत् सेठ या अमीचन्द वगैरह सभी तो नवाब को गद्दी से हटाकर खुद ही नवाब बनने की फिराक में हैं। खैर, अब असली काम हो गया है, चन्दननगर फोर्ट पर जब कब्जा कर ही लिया है तब कर्नल के बंगाल मे न रहने पर भी चलेगा। अब तो ईस्ट इंडिया कम्पनी को कोई खतरा नही है। कम्पनी अब नवाब को अपनी मुट्ठियों में रख सकती है। फ्रांस वाले नहीं हैं, डेनमार्क वाले नहीं हैं, हालैण्ड वाले भी नही हैं, पुर्तगाल वाले भी नहीं हैं, और हैं भी तो यहाँ उनकी कोई ताकत नही है।

लेकिन फ्लेचर ने जो कुछ कहा, वह कुछ और ही था।

"कर्नल क्लाइव ने फौज लेकर मुर्शिदाबाद की ओर हुगली के मैदान में तम्बू डाल रखे हैं।"

"क्यों?"

फ्लेचर ने कहा, "वही बात तो आपसे कहने आया हूँ हुजूर, अगर नवाब अंग्रेजों के ऊपर हमला करता है तो उसके लिए पहले से ही तैयार रहना होगा! हीयर इज़ दी लेटर फ्रॉम कर्नल।"

वाट्स ने चिट्ठी लेकर पढ़ी। पढ़कर मन ही मन हँसा।

इसके बाद उसने कहा, "लेकिन नवाब से इतना डरने की क्या बात है? कर्नल को क्या मालूम नहीं है कि नवाब की मर्जी लड़ाई करने की नहीं है?"

"तो हुजूर, राजा दुर्लभराम फौजें लेकर प्लासी के मैदान में इन्तजार क्यों कर रहा है?"

"वह तो नवाब की बेगम की सलाह से।"

"नवाब की बेगम?"

वाट्स ने कहा, "हाँ, इसकी खबर मुझे मिल गयी है। उस दिन चन्दननगर पर हमले की खबर पाकर ही मरियम बेगम मोतीझील गयी थी। मैंने सब खबर ले ली है। नहीं तो नवाब ने हम लोगों को सुलहनामे के अनुसार बतौर हर्जाना कुछ रुपया भी भेज दिया है।"

"तो हुजूर, आप कर्नल को वही बात लिख दीजिए न। कर्नल सुनकर खुश हो जायेंगे!"

वाट्स ने कहा, "मैं तो लिख ही दे रहा हूँ, लेकिन तुम ये बातें कर्नल को मुँह जबानी भी समझा देना। कहना कि हम लोगों को अब नवाब से डरने की कोई जरूरत नहीं है। सिर्फ मरियम बेगम ही नवाब को उभार रही है—उस मरियम बेगम को ही सबक दे देने पर काम बन जायेगा। यह देखो न, नवाब के खत की नकल तो मेरे पास भी है।"

कहकर वाट्स ने नवाब के खत की नकल भी दिखलायी। नकल में लिखा था, 'मेरे जिम्मे जितना रुपया था, मैंने करीब-करीब पूरा कर दिया है, बाकी रुपया भी जल्दी ही चुका दिया जायेगा। मैंने सुलह का एक-एक हरफ पूरा किया है, लेकिन आप लोगों की ओर से अब तक ऐसा कुछ भी नहीं हुआ है। अंग्रेज सिपाहियों के जुल्मों से हुगली, हिजली, बर्दवान और नदिया के लोग परेशान हो गये हैं। कालीघाट को कलकत्ता की जमींदारी करार कर दिया गया है। यह सब आपकी जानकारी में हुआ है, ऐसा यकीन नहीं होता। खैर, हम लोगों में जिस दोस्ती की शुरुआत हुई है उसे निभाना ही हमारा फर्ज है। सुना है, फ्रांसीसी फौजें आपका मुकाबिला करने के लिए दक्षिण की ओर गयी हैं। लेकिन वे लोग अगर मेरे राज्य में खुराफात करने पर

आमादा हों तो खबर मिलते ही मैं फ़ौज भेजकर उन्हें शिकस्त देने में आपकी मदद करूँगा।"

फ्लेचर ने कहा, "यह लेटर लिखने के बाद भी नवाब ने राजा दुर्लभराम के साथ फ़ौजें भेजी हैं।"

"मैंने कहा न, यह सब मरियम बेगम की सलाह से हुआ है।"

"तो मरियम बेगम क्या कम्पनी के साथ लड़ाई करना चाहती है ?"

"लगता तो ऐसा ही है।"

"तब तो कर्नल ने ठीक ही किया है। ऐसे वक्त मद्रास जाना ठीक भी न होता !"

वाट्स ने चुरुट का धुआँ उड़ाते हुए कहा, "नहीं, यह बात नहीं है।"

"क्यों ?"

"कर्नल को शायद इन सबकी खबर नहीं है। मरियम बेगम अब शायद ज्यादा दिन नहीं बच पायेगी।"

"मतलब ?"

वाट्स ने कहा, "मैं आज इसी का बन्दोबस्त करने जा रहा हूँ। आज मिड-नाइट में ढाई-हज़ारी मनसबदार यार लुत्फ़ खाँ के घर जा रहा हूँ।"

"यार लुत्फ़ खाँ साहब क्या हम लोगों के फ़ेवर में हैं ?"

वाट्स साहब ने कहा, "रुपये देने पर सभी इण्डियन हम लोगों के फेवर में हो जायेंगे। सभी रुपया चाहते हैं—रुपया देने पर सभी हमारे लिए सब कुछ करने को तैयार हो जायेंगे। नन्दकुमार जिस तरह रुपया देने से न्यूट्रल हो सकता है, उसी तरह कुछ ज्यादा रुपये देने पर कोई मरियम बेगम का खून भी कर सकता है।"

फ्लेचर चमक उठा, "यार लुत्फ़ खाँ क्या खुद ही मरियम बेगम का खून करेंगे ?"

"वह सब अभी कुछ नहीं बतलाऊँगा फ्लेचर। आज की रात तुम कोठी पर ही रहो, कल मॉर्निंग में तुम्हें सब कुछ बतलाऊँगा। कर्नल के लिए चिट्ठी भी उसी समय तुम्हें दे दूँगा।"

●

उधर मोतीझील के अंदर गुलाबी अतर की खुशबू से नवाब का मिज़ाज काफ़ी दिनों बाद जरा खुश हुआ है। मरियम बेगम ने अपने हाथों आज दरबार-घर में धूप जला दिया है। नवाब को धूप की खुशबू बहुत ही अच्छी लग रही थी।

नवाब ने कहा, "आपने बड़ा अच्छा किया बेगम साहबा, धूप की सुगन्ध मुझे बेहद अच्छी लगती है।"

"यह मैं जानती हूँ आलीजाह, देखिएगा आज भी आपको काफ़ी अच्छी नींद आयेगी।"

नवाब ने कहा, "आज कई दिनों से लगातार सो रहा हूँ बेगम साहबा। काफी दिनों बाद इस तरह रात को सो रहा हूँ। जब भी तुम मेरे साथ रहती हो, मुझे नींद आती है।"

"खिदमतगार से हर रोज धूप जलाने को कह दूँगी।"

नवाब ने कहा, "वह कह देना, लेकिन तुम्हें मेरे पास यहीं रुकना पड़ेगा।"

मराली ने एक कदम पीछे हटते हुए कहा, "छी, आलीजाह क्या इतने छोटे हैं ?"

"नहीं हूँ, यह तुमसे किसने कह दिया ? मैं तो एक अव्वल दर्जे का लम्पट हूँ।"

"और लोग चाहे जो कहें, मेरे लिए तो आलीजाँह, आप काफी बड़े हैं।"

नवाब ने हैरत से आँखें फाड़कर कहा, "लगता है बेगम, तुम मुझे काफी चाहती हो। तुमने तो मुझे हैरत में डाल दिया।"

"क्यों, आपको क्या किसी ने कभी चाहा नहीं है ?"

"तुम्हारा मतलब प्यार से है ? शायद मिला है, शायद नहीं भी। और शायद मिला भी है तो जान नहीं पाया। सोच लिया, कि मेरी दौलत के लिए ही हर कोई मुझे चाहता है।"

मराली ने कहा, "और मैं ? आप समझते हैं, मुझे आपकी दौलत से कोई सरोकार नहीं है ?"

"तुम्हें ?"

नवाब पता नहीं क्या सोचने लगे। फिर कहा, "शायद यह भी ठीक है ! मुझे जब हर कोई दौलत के लिए ही तो चाहता है, तुम्हीं क्यों उन लोगों से अलग होने लगीं ? तुम्हीं क्यों मुझे चाहोगी ? इसके अलावा मुझमें खासियत ही कौन-सी है ? मैं ठहरा लम्पट, नीच और अत्याचारी ! दौलत के सिवाय मेरे पास देने को और है ही क्या ?"

मराली ने नवाब के बाल सहलाते हुए कहा, "आलीजाह, अगर प्यार के मामले में इतने ही कंगाल हैं तो क्या आपको पता है कि प्यार पाने के लिए प्यार देना भी पड़ता है ?"

नवाब ने कहा, "तब तो सच कहना ही ठीक होगा बेगम साहबा। मुझे तो यह भी नहीं मालूम कि प्यार किस चीज का नाम है ? इसके बारे में मुझे किसी ने भी नहीं बतलाया। तुम्हारी शादी हो चुकी है, तुम अपने आदमी को चाहती होगी, तुम्हारा आदमी भी तुम्हें चाहता होगा—इस प्यार को तुम मुझसे ज्यादा अच्छी तरह से जानती हो। कहो तो, प्यार किसे कहते हैं ?"

मराली ने कहा, "एक बात पूछूँ आलीजाह, आप अपनी मसनद से मुहब्बत करते हैं न ?"

"करता हूँ। लेकिन वह तो अलग बात है।"

"जो भी हो, मसनद छोड़ने में आपको तकलीफ होगी न ? कोई अगर आपकी

मसनद छीन ले तो आपको तकलीफ नहीं होगी ?"

"तकलीफ तो होगी।"

"तब आपने जो इतनी सारी लड़कियों को लाकर चेहल-सुतून में ठूंस रखा है, इन्हें भी तो अपने आदमियों को छोड़ते वक्त तकलीफ हुई ही होगी ?"

नवाब ने मराली की ओर देखा। फिर कहा, "इसके माने मैंने तुम्हें भी काफी तकलीफ दी है ? तुम क्या अब भी अपने शौहर को भुला नहीं पायी हो ?"

मराली ने कहा, "यह बात आपकी समझ में नहीं आयेगी आलीजाह।"

"क्यों, समझ में क्यों नहीं आयेगी बेगम साहबा, तुम्हारे समझाने से जरूर समझ में आयेगी।"

मराली ने कहा, "वह सब सुनकर आज रात भर आपको नींद नहीं आयेगी।"

"नहीं-नहीं, तुम कहो। मैं सुनूंगा।"

मराली ने कहा, "हम औरतें दो बार प्यार नहीं करतीं।"

नवाब जरा देर के लिए चुप रहे, फिर उन्होंने कहा, "मुझे माफ करना बेगम, तुम्हारे ऊपर मैंने जुल्म किया है।"

"छी आलीजाह, बंगाल के नवाब होकर आप ऐसी बात करते हैं ?"

"तुम्हारे लिए मैं नवाब नहीं हूँ, बल्कि इस वक्त मैं नवाब ही नहीं हूँ।"

"वह ठीक है, फिर भी सबसे पहले आपकी मसनद है फिर मैं।"

"नहीं बेगम, इस वक्त मुझे मसनद और तख्त की याद न दिलाओ। यह सब ...तना अच्छा नहीं लग रहा है। अभी तो तुम अपने बारे में कुछ सुनाओ। कहो, मैं ...म्हारे लिए क्या कर सकता हूँ ? क्या करने से तुम खुश हो सकती हो ?"

मराली ने कहा, "इस तरह की बातें क्यों कर रहे हैं आलीजाह ?"

"क्यों नहीं करूँ ? मैं अगर बेइंसाफी करता हूँ या इंसानियत के खिलाफ कोई ...करता हूँ तो उसका नतीजा भी मुझे भुगतना ही चाहिए।"

"आपको इस तरह की बातें करते अगर कोई सुन ले आलीजाह ?"

"सुनकर यही न सोचेगा कि बंगाल का नवाब सिराजुद्दौला नवाब ही नहीं है, ...इंसान भी है।"

"लेकिन इससे आपका नुकसान ही होगा, कोई भी फिर आपसे डरेगा नहीं।"

"डरेगा नहीं लेकिन प्यार तो करेगा ? मुझे तो इस वक्त प्यार ही चाहिए ..."

इसके बाद जरा रुककर नवाब ने फिर कहा, "लेकिन बेगम, तुम मेरी बात ...हो, मैंने पूछा था तुम्हारे लिए मैं क्या कर सकता हूँ जिससे तुम खुश हो ..."

...राली ने कहा, "मुझे खुश करना जहांपनाह के बूते के बाहर की बात है।"

...तुम क्या कह रही हो बेगम ? जानती नहीं हो, मैं बंगाल का नवाब हूँ, मेरे ...पर सारा बंगाल, एक छोर से दूसरे छोर तक कांप उठेगा।"

"हो सकता है, लेकिन आलीजाह, मुझे इससे कोई खुशी नहीं होगी। मुझे खुश करना खुदाताला के भी वस के वाहर की वात है।"

"तुम कह क्या रही हो? तुम्हें क्या सचमुच इतनी तकलीफ है?"

मराली ने कहा, "जी हाँ आलीजाह—"

नवाव कुछ देर तक मराली की ओर देखता रहा, फिर कहा, "इसके माने मैंने तुम्हारा इतना वड़ा नुकसान कर दिया है—मैंने ही तुम्हें इतनी तकलीफ दी है?"

मराली की आँखों से टप-टप आँसू झरने लगे। नवाव जल्दी से मराली की ओढ़नी से उसके आँसू पोंछने के लिए आगे बढ़े लेकिन मराली चेहरा घुमाकर खुद ही आँसू पोंछने लगी।

नवाव ने उठकर मराली की ओर झुकते हुए कहा, "बेगम, आज पहली वार तुम मेरे सामने रो पायी हो। आज पहली वार मैंने तुम्हें अपने सामने खड़े होकर रोने दिया है।"

"मेरा कसूर माफ हो आलीजाह, आइन्दा कभी भी यह गलती नहीं होगी। यह लीजिए मैं हँस रही हूँ।"

नवाव कहने लगा, "आज तक मैंने तुम्हारी हर वात मानी है वेगम। तुमने जैसे कहा, वैसा ही किया। तुम्हारे ही कहने से राजा दुर्लभराम को फौजें लेकर प्लासी भेजा है—तुम्हारे कहने पर ही कासिमवाजार की फ्रांसीसी कोठी मैंने रहने दी है, क्योंकि तुमने मुझे मेरी नींद वापस दिलायी है। फिर आज इस तरह से मेरा जी क्यों खराव कर दिया? तुम मेरे सामने इस तरह से क्यों रोयी? आज क्या मैं सो पाऊँगा?"

मराली ने कहा, "आप अपनी नींद के वारे में ही सोच रहे हैं, लेकिन और कोई भी सोता है या नहीं, कभी आपने सोचा है? कभी सोचा है कि किसी की तकलीफ आपसे भी वढ़कर हो सकती है?"

नवाव ने कहा, "इसके लिए मैं वहुत ही शर्मिन्दा हूँ वेगम। तुम्हारे ऊपर जो जुल्म ढाये गये हैं, उन्हें दूर करने की मैं भरसक कोशिश करूँगा। कहो न, मेरे क्या करने से तुम खुश हो सकती हो?"

मराली ने कहा, "मैं तो पहले ही कह चुकी हूँ आलीजाह, कि मुझे खुश करना आपके वस की वात नहीं है।"

"लेकिन मैंने ही तुम्हें तुम्हारे खाविंद के पास से लाकर यहाँ चेहल-सुतून में रखा है।"

"चेहल-सुतून में लाकर आपने मुझे वचा लिया आलीजाह।"

नवाव को हैरत हो रही थी।

"तुम कह क्या रही हो?"

"जी हाँ, मैं ठीक कह रही हूँ आलीजाह, आप मुझे यहाँ नहीं लाते तो और भी तकलीफ होती।"

"लेकिन यह तुमने पहले तो कभी नहीं वतलाया? इसके माने मैंने तुम्हारा

कोई नुकसान नहीं किया ?"

मराली ने कहा, "नहीं।"

"तब क्या मैंने तुम्हें यहाँ लाकर तुम्हारे ऊपर एहसान किया है ?"

"जी हाँ।"

नवाब को बड़ा अजीब लग रहा था। मराली ने कहा, "आप अगर मुझे यहाँ नहीं लाते तो शायद मुझे फाँसी लगाकर या गंगा में कूदकर जान देनी पड़ती। आपने मुझे उबार लिया है।"

"यह क्या कह रही हो ? तुम क्या अपने खाविन्द से प्यार नहीं करती थीं ?"

मराली ने कहा, "मेरे फूटे नसीब में इससे भी बहुत कुछ ज्यादा लिखा है आलीजाह।"

"सचमुच क्या तुम अपने खाविन्द को चाहती नहीं थी ?"

मराली ने कहा, "अगर प्यार ही कर पाती तो फिर क्या बात थी ? लेकिन मेरा तो नसीब ही खराब है।"

"तुम कह क्या रही हो बेगम ? मेरी तो समझ में कुछ भी नहीं आ रहा है।"

मराली ने कहा, "मेरी बात कोई भी नहीं समझ पायेगा आलीजाह ! शादी होने पर भी मुझे आदमी नहीं मिला, आदमी पाकर भी मैं उसकी बहू नहीं बन पायी।"

जरा देर बाद नवाब ने कहा, "बेगम तुम क्या जादू जानती हो ?"

"क्यों, आप ऐसा क्यों कह रहे हैं ?"

"नहीं तो मुझे इस तरह से क्यों बहका रही हो ? मुझे क्यों बेकार लालच दिखा रही हो ? मैंने तो सबको माफ कर दिया है। अमीचंद, नन्दकुमार वगैरह सभी के कसूरों को भुला कर उन्हें रिहा कर दिया है। सोचता था अब मैं सिर्फ प्यार करूँगा। लेकिन तुमने तो मेरा सारा हिसाब ही गड़बड़ कर दिया।"

मराली ने हैरत से पूछा, "क्यों आलीजाह मैंने क्या कर दिया ?"

"तुम्हीं ने तो मुझे रामप्रसाद के भजन सुनवाये। तुम्हीं ने तो मुझसे कुरान पढ़वाया। मैं तुम्हें प्यार करने लगा हूँ बेगम।"

मराली ने कहा, "मुझे बड़ा डर लग रहा है आलीजाह। मुझे लगता है अब आपको नींद नहीं आ रही है।"

"न आये, नींद न आना मेरे लिए कोई नयी बात नहीं है।"

मराली ने कहा, "नहीं आलीजाह, आपको नींद नहीं आयेगी तो फिर मुझे भी नींद नहीं आयेगी।"

नवाब ने कहा, "तुम जाओ बेगम। जाकर शराफत अली का अर्क पीकर लेट रहो, नींद आ जायेगी। इसके अलावा तुम्हें अगर नींद नहीं आती तो उसमें मुझे क्या ? तुम तो मुझे प्यार नहीं करती हो।"

मराली ने कहा, "जहाँपनाह, एक औरत क्या जीवन में दो बार प्यार कर सकती है ?"

सुनकर नवाब सिराजुद्दौला की आँखें भर आयी थीं। काफी देर तक उसने कुछ नहीं कहा। मराली ने कहा था "आप तो जाइए आलीजाह !"

नवाब ने कहा था, "नहीं, मैं नहीं सोऊँगा। तुम जाओ, चली जाओ यहाँ से।"

मराली ने फिर भी कहा था, "आपको इस तरह से नाराज नहीं होना चाहिए। एक मामूली औरत की बातों पर बंगाल के नवाब बहादुर का खफा होना ठीक नहीं है।"

नवाब फिर भी जैसे सुनने को तैयार न थे। सिर्फ कहा था, "तुम जाओ, जो मेरा जी चाहेगा, मैं वही करूँगा, कल ही मॅसिए लाँ को बुलाकर कासिमबाजार से भगा दूँगा। कह दूँगा, फ्रांसीसी लोगों से मेरा कोई वास्ता नहीं है, अंग्रेज ही मेरे दोस्त हैं, अंग्रेज ही मेरे लिए सब कुछ हैं। मैं तुम्हारी कोई भी बात अब नहीं सुनूँगा। तुम जाओ !"

"हाय रे ! सभी मर्द क्या एक जैसे ही होते हैं ! जैसा कांत वैसा ही नवाब सिराजुद्दौला। वह उद्धवदास भी वैसा ही है और वह क्लाइव भी वैसा ही। एक बार तुम मुसलमान बनाओगे, फिर ईसाई बनाकर हिन्दू औरत की-सी पति-भक्ति चाहोगे, यह कैसे हो सकता है ? तुम्हें सिर्फ अपना ही ख्याल है, मेरी बात को तो किसी ने एक बार भी नहीं सोचा। मेरे तो जैसे जी ही नहीं है। मेरा अपने बारे में सोचना भी जैसे कोई कसूर है ! मैं जैसे पत्थर हूँ, मैं जैसे पहाड़ हूँ, एक औरत नहीं हूँ।"

मोतीझील घुप्प अँधेरे में चुपचाप खड़ा था। रोज की तरह नवाब को सुलाकर मराली चेहल-सुतून की ओर जा रही थी। आगे-आगे बाँदी चल रही थी और पीछे-पीछे मराली। नीचे चबूतरे पर तामजान तैयार खड़ा था।

अचानक एक आहट सुनकर मराली चौंक उठी। कान्त शायद इसी मौके की तलाश में इतनी देर से खड़ा था।

पास आकर कहा, "जरा अपनी बाँदी से एक ओर हट जाने को कहो, जरूरी बात है।"

बाँदी दूर चली गयी।

मराली ने कहा, "हाँ, अब बोलो, वह मिला ?"

"कौन ?"

"याद नहीं ? इतनी अच्छी तरह से समझा दिया था कि नवाब उसका गाना सुनना चाहते हैं, और तुम्हें याद ही नहीं है ?"

कान्त ने कहा, "उसी को ढूँढ़ने तो गया था। लेकिन ढूँढ़ निकालना क्या इतना आसान है ?"

"क्यों वह नहीं मिलेगा ?"

"फिर जाऊँगा। जरा देर पहले ही कासिमबाजार वाला वह फिरंगी वाट्स अपने मनसबदार यार लुत्फ खाँ के मकान में घुसा था।"

"तो क्या हुआ ?"

"नहीं, इतनी रात गये पालकी में से निकलकर बुरका पहने किसी को आते देखकर शक हो गया। सोचने लगा, मनसबदार साहब के यहाँ इस वक्त कौन आया? सिपाही वशीर मियाँ का दोस्त था। मैंने जाकर उससे दोस्ती गाँठी, तब पता लगा। सुनकर बड़ा डर लग रहा है। तुम्हें कत्ल करने की साजिश हो रही है।"

मराली ने कहा, "मुझे कत्ल करने की?"

"हाँ, सिपाही चुपचाप वहाँ जाकर यही सुन आया था।"

"लेकिन मैंने उन लोगों का क्या बिगाड़ा है जो वे मेरा खून करेंगे?"

कान्त ने कहा, "उस दिन तुमने क्लाइव के यहाँ से खत चुराया था न। तभी से ये लोग तुम्हारे ऊपर खफा हैं। तुम्हारे कहने से ही नवाब ने राजा दुर्लभराम को प्लासी भेजा है। तुम्हारे कहने से ही..."

मराली ने बीच में ही रोककर कहा, "मेरा खून किस तरह से किया जायेगा? जहर पिलाकर?"

कान्त ने कहा, "यह नहीं जानता। यह मनसबदार रुपये मिलने पर सब कर सकता है। तुम रोज रात को मोतीझील से चेहल-सुतून जाती हो, यह बात सभी को मालूम है। रास्ते में अगर किसी ने कुछ कर दिया तो? मुझे तो बड़ा डर लग रहा है।"

"वाट्स क्या अभी तक मनसबदार के यहाँ होगा?"

कान्त ने कहा, "शायद अभी तक वहीं होगा, मैं तो उसे वहीं छोड़कर आया था।"

मराली ने कहा, "ठीक है, तुम जाओ।"

मराली आगे बढ़ गयी।

कान्त ने पूछा, "कहाँ जा रही हो?"

मराली ने कहा, "मनसबदार के मकान पर।"

बाँदी के साथ मराली जाकर तामजान में बैठ गयी। कान्त चुपचाप वहीं खड़ा रहा। खड़ा-खड़ा तामजान को फाटक से निकलकर बायीं ओर न जाकर दायीं ओर जाते देखता रहा।



महाराज कृष्णचन्द्र पहली बार कालीघाट नहीं आये थे। उनके कालीक्षेत्र में आते ही हालदार कुल में हलचल मच जाती। इस बार रामप्रसाद सेन भी साथ आया है। नटमंदिर में जैसे भजन और पदों से भक्ति-रस की धारा बह चली। लोग सुनते जाते और रोते। लेकिन मन था कि भरने का नाम ही नहीं लेता और कहते, एक और हो जाय।

वैसे रामप्रसाद से किसी को कहने की जरूरत भी नहीं थी। गद्गद भाव से गाये जा रहा था। दूर-दूर से लोग उसके भजन सुनने आये थे। सिर्फ भक्त ही नहीं, भिखारी और कंगालों की भीड़ भी जमा हो गयी थी। पता नहीं, महाराज फिर कब

जायें ? कालीघाट की हालत अब पहले जैसी नहीं रही । फिरंगी कंपनी के आने के बाद
से यात्री लोग जरूर बढ़ गये हैं, आमदनी भी बढ़ गयी है, लेकिन इस तरह दो-दो
लड़ाइयों के बाद भी क्या किसी पर यकीन किया जा सकता है ? सारा कलकत्ता तो
एक बार जलकर राख हो चुका है । आग की लपटें जरा दक्षिण की ओर बढ़ आयी
होतीं तो माँ का मंदिर भी नहीं बच पाता ।

वे लोग कहते, "उस बार तो महाराज, माँ ने ही बचा लिया, नहीं तो पता
नहीं क्या होता ? नवाबी फौज ढाकुरिया तक बढ़ आयी थी ।"

महाराज ने पूछा, "फिर क्या हुआ ?"

"होता क्या, माँ ने ही बचा लिया । हम लोगों ने मिलकर बस माँ को पुकारना
शुरू कर दिया था । आखिर माँ को दया आयी और हम लोग देखते क्या हैं, माँ ने
तीसरा नेत्र खोल दिया है और उसमें से आग की लपटें निकल रही हैं ।"

एक दूसरे भक्त ने कहा, "लपटें तो निकलती ही हैं । फिरंगी हो या मुसलमान,
थे तो दोनों ही यवन । दोनों में से एक अगर हिन्दू होता; तब भी बात थी ।"

महाराज जब तक रहे, बड़ी धूमधाम रही । लेकिन छोटे सरकार छटपटा रहे
थे । महाराज को जैसे उनकी बात सुनने की फुरसत नहीं थी, रामप्रसाद का भजन
सुनते जा रहे थे और विभोर होकर बीच-बीच में माँ-माँ की आवाज लगा रहे थे ।

गोपाल बाबू कहने लगे, "महाराज, अब की बार संदेशों में चीनी का भाग
ज्यादा है ।"

महाराज ने कहा, "कैसे पता लगा ?"

गोपाल बाबू ने कहा, "देख नहीं रहे हैं, पिछली बार चींटियाँ कितनी मोटी-मोटी थीं, अब की बार कमजोर हो गयी हैं ।"

"चीनी ज्यादा होने से क्या चींटियाँ कमजोर हो जाती हैं ?"

गोपाल बाबू ने कहा, "कमजोर तो हो ही जाती हैं, आप गुड़ खाने वाली चींटी
से छेना खाने वाली चींटी की कुश्ती करा दीजिए, गुड़ खाने वाली चींटी हारती है या
नहीं ?"

राय गुणाकर भी सुन रहे थे ।

गोपाल बाबू ने कहा, "पहले तो महाराज मुझे भी यकीन नहीं होता था । खुद
मेरे घर पहले खूब मोटी-मोटी चींटियाँ थीं, बड़े जोर से काटती थीं । उन दिनों मैं
संदेश, रबड़ी और छेना खाता था ।"

महाराज ने हँसते-हँसते पूछा, "फिर क्या हुआ ?"

गोपाल बाबू ने कहा, "इसके बाद आपने जब मेरी जमीन जब्त कर ली, मेरी
माहवारी कम कर दी, तभी एक दिन क्या देखता हूँ सबकी सब चींटियाँ कमजोर हो
गयी हैं ।"

"क्यों, तुम्हारी माहवारी कम करने से चींटियाँ कैसे दुबली हो गयीं ?"

"जी, गुड़ खा-खाकर । मेरे पास अब रबड़ी खाने लायक पैसा तो रहा नहीं,

य-भैंस बेच दी, सिर्फ गुड़ खाकर रहता। घर में गुड़ से भरे मटके थे, जिनका गुड़ कर चीटियां दुबली हो गयीं।"

महाराज ने कहा, "तुम खुद तो वैसे के वैसे ही रहे, तुम्हारी जगह चीटियां तीं दुबली हो गयीं ?"

गोपाल बाबू ने कहा, "जी, मेरी और चीटियों की जान क्या एक जैसी है ? मैं अगर चीटी होता तो दुबला हो गया होता।"

दीवान कालीकृष्ण ने कहा, "महाराज, गोपाल बाबू क्या कहना चाहते हैं, समझ रहे हैं न ?"

महाराज ने पूछा, "गोपाल बाबू, तुम्हें अगर फिर से जमीन दे दी जाय तो बढ़िया चीजें खाओगे-पिओगे, कि सिर्फ भांग और गांजा ही पियोगे ?"

"भांग, गांजा पीकर नशेबाजी करने के लिए भी तो दूध-घी की जरूरत पड़ती । बिना दूध-घी के भी कहीं नशेबाजी की जा सकती है ?"

राय गुणाकर ने कहा, "लेकिन आप नशा करते ही क्यों हैं ? इससे क्या फायदा है ?"

गोपाल बाबू ने कहा, "वह आपकी समझ में नहीं आयेगा राय गुणाकर, आप तो सर झुकाकर सरस्वती के आगे आ बैठे हैं। आपको इस सब की जरूरत नहीं है। लेकिन एक बार मेरी हालत भी तो सोचकर देखिए। मुझे कभी दुःखी नहीं होना चाहिए, बीमारी की हालत में भी मुस्कराना चाहिए। महाराज अगर आँखें भरी हुई देख लें तो मेरी नौकरी चली जाय। आप सोच भी नहीं सकते कि जिस दिन मेरा लड़का मरा उस दिन भी सभा में आकर मुझे हमेशा की तरह महाराज को हँसाना पड़ा था। दो दिन तक किसी को पता नहीं चला। मैंने बहू से भी रोने को मना कर दिया था कि अगर महाराज के कानों में बात पहुँच गयी तो महाराज को तकलीफ होगी।"

महाराज ने कहा, "इसीलिए तो तुम्हें इतना चाहता हूँ गोपाल बाबू, तुम्हारे लड़के के मरने की खबर तो मुझे उसी दिन लग गयी थी, लेकिन मैंने तुम्हें बतलाया नहीं था।"

"आपको पता था ?"

महाराज की बात सुनकर गोपाल बाबू को बड़ा अचंभा हुआ।

"तुम्हारी नौकरी क्या यों ही है, मैंने तुम्हें अच्छी तरह से परखा है। तुम्हारी [illegible] छीन लीं, माहवारी कम कर दी। आदमी को पहचानना क्या इतना [illegible] है ? सीता को क्या वाल्मीकि ने यों ही छोड़ दिया था। परीक्षा कर-करके [illegible] बना डाला। वाचस्पति जी को भी काफी दिनों की परीक्षा के बाद [illegible] है। भारतचंद्र को भी कितनी ही बार परखने के बाद राय गुणाकर [illegible] न करूँ तो इतना बड़ा राज्य दो दिन भी नहीं टिकेगा।"

रोज इसी तरह महफिल जमती। हँसी-मजाक होता। [illegible] होते। महाराज कृष्णचंद्र का हाथ ही टूट गया था। ऊपर से [illegible]

चलता था कि महाराज के मन में कौन-सी आँधी चल रही है।

एक दिन छोटे सरकार को बुलाकर पूछा, "क्या हुआ ? इस तरह चेहरा भारी किये क्यों रहते हैं ?"

छोटे सरकार को सब्र करना मुश्किल पड़ रहा था। महाराज हँसी-मजाक करने में ही मस्त हैं। छोटे सरकार की बात का जैसे उन्हें ख्याल ही नहीं है। उधर से खबर आयी है कि चंदननगर फतह करके क्लाइव लौट आया है। शुरू में महाराज को डर था कि नवाब की फौज कहीं क्लाइव से लड़ने न आ जाये। लेकिन कुछ भी नहीं हुआ। कलकत्ते के कुछ लोग गंगा पार भाग गये और कुछ कालीघाट के मंदिर के पास आ बसे थे। इन कुछ ही दिनों में कालीघाट में जैसे भीड़-भाड़ बढ़ गयी थी। हालदार की आमदनी बढ़ गयी और भिखारियों की भी जैसे बन आयी।

महाराज ने कहा, "कहने को मैं नवद्वीप का महाराज हूँ छोटे सरकार। जानते हैं, मैं अपनी पत्नी को काबू में नहीं रख सकता ?"

सुनकर छोटे सरकार को बड़ा अजीब लगा।

"अरे हाँ, सच कह रहा हूँ छोटे सरकार, अच्छा सुनिए, किसी को भी नहीं मालूम। आपको ही बतला रहा हूँ। मैंने दूसरी बार पाणिग्रहण किया है और जिसके साथ किया है वह ऊँचे कुल की बेटी है। मेरे श्वसुर की इच्छा अपनी बेटी का विवाह मेरे साथ करने की कतई नहीं थी। लेकिन मेरी सम्पत्ति और प्रतिभा देखकर लोभ संवरण भी नहीं कर पा रहे थे। सुहागरात वाले दिन मैंने अपनी पत्नी से पूछा, कहो कैसा लग रहा है ? मेरे साथ विवाह न हुआ होता तो इस तरह सोने के लिए चाँदी-का पलंग मिलता ? इस पर मेरी पत्नी ने क्या कहा, जानते हैं ? उसने कहा और थोड़ी दूर जाकर विवाह होने पर सोने के लिए सोने का पलंग मिलता।"

कहकर महाराज बड़े जोर से हँसने लगे।

"इसके माने नवाब सिराजुद्दौला के साथ सोने पर, सोने के लिए सोने का पलंग मिलता। सुनकर पहले तो बड़ा कष्ट हुआ। रात भर अच्छी तरह से नींद भी न आयी। इतने बड़े राज्य का राजा होकर मैं अपनी पत्नी को भी सुखी नहीं कर पाया फिर मुझे किस बात का अहंकार है ?"

"फिर ? फिर क्या किया ?"

"करता क्या ? पत्नी के सामने हँसकर अपमान हजम कर गया। लेकिन अ मन में एक काँटा विंध गया कि मेरी इतनी सम्पत्ति भी पत्नी को आकर्षित नहीं कर पायी सुबह उठते ही गोपाल भाँड़ को बुला भेजा। सोचा, आज उसे परखूँ। उसकी जमी छीन ली, माहवारी कम कर दी। उसका इकलौता लड़का था, एक दिन वह भी म गया। मुझे फौरन खबर मिली लेकिन उससे मैंने कुछ भी नहीं कहा। फिर भी देख वह उसी तरह हँस-हँसकर बात कर रहा है। उसे देखकर कोई भी पता नहीं लग सकता था कि उसका इकलौता लड़का मर गया है। वह रोज की तरह मजे से मसख

र रहा था। इन वाचस्पति मिश्र और राय गुणाकर की तरह गोपाल भाँड़ भी एक रत्न है।"

"फिर ?"

"फिर आज सुना न ? इसीलिए तो रामप्रसाद सेन को बुलाकर भजन सुन रहा हूँ। बेकार में रोने-धोने से क्या लाभ ? आपकी धर्मपत्नी को चेहल-सुतून में रखकर ... ही क्या सुखी है ! सुखी होता तो रामप्रसाद के भजन सुनने वजरे पर क्यों आता ? वह क्लाइव ! वह फिरंगी ही अपना देश, अपने बाल-बच्चे और बहू को छोड़कर यहाँ मच्छर और मक्खियों से भरे देश में क्यों पड़ा है ? लड़ाई करने या इस देश को लूटने के लिए ? नहीं, ऐसा नहीं भी हो सकता है। शायद आपकी और मेरी तरह उसके मन में भी कोई चोट हो, कोई दुःख हो, नहीं तो इन मुट्ठी भर सिपाहियों को लेकर वह नवाब से लड़ने की हिम्मत न करता। लोग कह सकते हैं, यह कोई दैवी शक्ति है। यह शक्ति ही है जो किसी को योद्धा, किसी को कवि और किसी को भाँड़ बनाती है। ये सभी महापुरुष हैं, रत्न हैं। मैं स्वयं महापुरुष नहीं हूँ, लेकिन मुझे महापुरुष की पहचान है। यह भी एक तरह की एक विशेषता है जो हर किसी में नहीं होती। मुझमें और कोई गुण नहीं है, सिर्फ रुपये हैं, इसीलिए मैं रुपये खर्च कर इन महापुरुषों को पाल रहा हूँ। राय गुणाकर को पाल रहा हूँ, गोपाल भाँड को पाल रहा हूँ, अगर सम्भव होता तो क्लाइव को भी पालता।"

छोटे सरकार चुपचाप सुन रहे थे।

महाराज की बात पूरी होने पर उन्होंने कहा, "तब मैं क्या करूँ। हातियागढ़ को छोड़े काफी दिन हो गये हैं, मेरी धर्मपत्नी चिंतित हो रही होगी।"

महाराज ने कहा "कुछ दिन और सब्र करिए, यह तो आप भी जानते हैं कि इस बार मैं क्लाइव से मिलने आया हूँ। कालीघाट में आना तो बहाना मात्र है।"

छोटे सरकार ने कहा, "और कितने दिन यहाँ रहना होगा ?"

महाराज ने कहा, "आप ही के लिए तो मैं यहाँ पर रुका हूँ, क्लाइव इस समय हुगली की छावनी में है। उधर दुर्लभराम भी फौज लिये प्लासी के मैदान में जमा बैठा है।"

"तब ?"

"मैं हुगली जा सकता था। लेकिन वहाँ जाने से नवाब के जासूसों की नजर में पड़ने का डर है। सुना है एक-दो दिन में ही क्लाइव पेरिन साहब के बगीचे में वापस आने वाला है।"

"पेरिन साहब के बगीचे में क्यों ?"

महाराज ने कहा, "शायद आपको नहीं मालूम, वहाँ पर क्लाइव ने एक देशी औरत को रख छोड़ा है।"

"यह तो मैंने भी सुना है। उस पागल की बहू के बारे में कह रहे हैं न ? वही जो भजन गाता फिरता है ?"

महाराज ने कहा, "ये लोग गोमांस खाते हैं न, इसीलिए इनके खून में गर्मी ज्यादा होती है। बिना औरत के रात नहीं काट सकते।"

छोटे सरकार ने कहा, "लेकिन इसीलिए क्या परायी बहू को रख लेना चाहिए?"

"अरे उस औरत का भी तो सुना है चरित्र खराब है। अपने आदमी के पास जाना ही नहीं चाहती।"

"वह आदमी एकदम फक्कड़ जो है। ऐसे आदमी के साथ बेचारी आखिर रहे भी कैसे?"

इतने में हालदार महाशय कमरे में आये।

"क्या खबर है हालदार जी?"

"कोई आप से मिलने के लिए आये हैं।"

महाराज समझ गये। उन्होंने छोटे सरकार से कहा, "आप जरा पास वाले कमरे में जाकर बैठें।"

छोटे सरकार के जाते ही शशी अंदर आया।

महाराज ने पूछा, "क्या खबर लाया है रे शशी?"

"सारी खबरें लेकर आया हूँ महाराज।"

"तो पहले मुर्शिदाबाद की खबर सुना। मरियम बेगम के बारे में कुछ पता चला?"

"हाँ महाराज। बेगम ने नवाब को अपनी मुट्ठी में कर रखा है। उनके बारे में और भी खबरें लाता लेकिन बेगम ने कान्त को मुझसे बात करने को मना कर दिया है।"

"क्यों?"

"मुझ पर संदेह करती है, लेकिन मैंने भी दूसरा रास्ता निकाल लिया है।"

"कौन-सा?"

"फकीर का भेस बनाकर मुर्शिदाबाद के रास्तों पर घूमता रहता हूँ। वहाँ चौक में शराफत अली नाम का एक खुशबू वाला है, उसका एक नौकर है, जिसका नाम है बादशाह। उसी बादशाह से दोस्ती कर ली है, वही मुझे सारी खबरें देता है। खुशबू वाला बूढ़ा मुझे खाना भी देता है। उसी ने मुझे मरियम बेगम के बारे में बतलाया।"

"क्या?"

"कह रहा था कि वे मरियम बेगम के खून का साजिश कर रहे हैं।"

"कौन कर रहा है?"

"यही अमीचन्द, नन्दकुमार और क्लाइव का मुंशी नवकृष्ण।"

महाराज ने इसके बाद पूछा, "और उधर हुगली की क्या खबर है?"

"वहाँ से छावनी खत्म कर क्लाइव कलकत्ते आ रहा है।"

"आ रहा है?"

"हाँ, जब मैं वहाँ से चला, सिपाहियों ने तम्बू-डेरे खोलना शुरु कर दिया था।"

"ठीक है, अब तुम मुर्शिदाबाद जाओ और वहाँ के हालचाल देते रहो।"

शशी के जाते ही महाराज ने छोटे सरकार को बुला भेजा। फिर कहा, चलिए छोटे सरकार, अब कुछ न कुछ हो ही जायेगा, क्लाइव कलकत्ते आ पहुँचा है।"

छोटे सरकार को जैसे फिर भी शक हो रहा था। पूछने लगे, "आपको कैसे [पता] चला?"

"अपने आदमी से, इतने दिन से उसी की तो राह देख रहा था।"

"मैं भी चलूँ?"

"हाँ, आपका साथ रहना भी जरूरी है। सब कुछ साफ-साफ कह डालियेगा।"

"अरे उस बार भी तो कहा था। लेकिन अचानक गोलाबारी शुरु हो गयी [औ]र मैं डर के मारे चला आया। लेकिन आपके साथ जाने से यह कुछ अन्यथा तो नहीं [हो]येगा?"

महाराज ने कहा, "मेरे राय गुणाकर ने लिखा है—

बड़न की प्रीति, रेत को बाँध,
छन मे बेड़ी छन में चाँद।

[क्]लाइव कर्नल है तो क्या हुआ, मैं भी तो महाराज हूँ। चलिए देखा जायेगा, क्या [हो]ना है?"



●

पेरिन साहब के बाग में आते ही क्लाइव ने पता लगाया। दीदी और उसकी [त]ह के लिए दिल बेचैन हो रहा था।

"दीदी!"

दुर्गा को भी जैसे बड़ी चिंता लग रही थी। बात-बात पर हरीचरण को [झ]िड़कती, "तुम्हारा साहब कैसा आदमी है? कह गया था, दो-चार दिन में वापस आ [ज]ायेगा, पूरा एक महीना होने को आया, अभी तक पता ही नहीं है।"

हरीचरण ने कहा, "लड़ाई में जाने पर क्या इन बातों का ध्यान रहता है?"

"ध्यान नहीं रहता तो कहा क्यों था? चलकर हमें हुगलीगढ़ पहुँचा दे—हम [से] अब यहाँ पर नहीं रहा जाता।"

और ठीक तभी क्लाइव आ पहुँचा।

आते ही पूछा, "मुझसे खूब नाराज हो न?"

दुर्गा ने कहा, "नाराज नहीं होऊँगी? तुम्हें क्या है, तुम्हारे बाल-बच्चे सात समंदर पार हैं, तुम बेकार में हम लोगों के लिए क्यों दिमाग खराब करते हो?"

क्लाइव ने कहा, "वाह! मुझे तुम लोगों का ख्याल नहीं है, यह किसने कह दिया?"

तभी हरीचरण ने आकर कहा, "महाराज कृष्णचन्द्र आये हैं।"

कर्नल को जरा अजीब लगा। महाराज कृष्णचंद्र ! महाराजा ऑफ नदिया ?

"आलराइट, उन्हें ड्राइंग-रूम में बैठाओ।"

हरीचरण ने कहा, "साथ में एक और भी कोई हैं।"

"ठीक है, दोनों को बैठाओ, मैं अभी आया।"

दुर्गा ने क्लाइव साहब के चेहरे की ओर देखा।

जब क्लाइव दुर्गा से बात करता है तब उसके चेहरे का रंग कुछ और रहता है और जब वह किसी दूसरे आदमी से बात करता है तब उसके चेहरे का रंग कुछ और। दुर्गा तो नहीं समझती कि राजनीति क्या है।

क्लाइव अक्सर कहता, "तुम मजे में हो दीदी, कहाँ से चावल-दाल-नमक-तेल-लकड़ी आ रही है, इसकी कोई खबर नहीं रखतीं। तुम्हारे मेन-फोक इसकी खबर रखते हैं। इंगलैंड में मेरी वाइफ पेगी है न, वह भी तुम्हारी तरह मेरी असल खबर नहीं रखती। मैं यहाँ कितनी तकलीफ उठाकर कम्पनी के लिए एम्पायर की नींव डाल रहा हूँ यह सिलेक्ट कमेटी को भी नहीं मालूम। नवाब की बेगमें भी क्या नवाब के मन की बात जानती हैं ? अगर जानतीं तो दुनिया का रूप ही बदल जाता। इसीलिए मैं तुम से आकर बातें करता हूँ और तुम्हारे सामने हँसता हूँ। नवाब भी इसी तरह बाहर महफिल जमाता है, शिकार खेलता है लेकिन वह भी अन्दर ही अन्दर मेरी तरह है। वह भी मेरी तरह बाहर कुछ है तो अन्दर कुछ और। तुम लोग तो दीदी, रात को सो सकती हो। कितने ही दिन देखा है, तुम लोग आराम से सो रही हो। लेकिन मैं? तुम्हें मालूम भी न होगा कि रात को मैं सो नहीं सकता। अगर मैं रात को सो गया तो ईस्ट इंडिया कंपनी भी सो जायेगी। नवाब की भी यही हालत है। मुर्शिदाबाद के मोतीझील में जाकर देखो, नींद के लिए नवाब को कितनी जहमत उठानी पड़ती है। बंगाल के लोगों को क्या इस बारे में कुछ भी मालूम है ?"

चन्दननगर से लौटकर क्लाइव के लिए आराम से बैठना मुश्किल हो गया। कहीं कोई गोलमाल चल ही रहा था। इंडिया में किसी पर विश्वास करना भी मुश्किल है। हुगली का फौजदार नन्दकुमार भी एक स्काउंड्रेल है। अमीचन्द एक बीस्ट ! लेकिन इन्हीं लोगों से हेल्प लेना पड़ेगा। इन लोगों को डिसरिगार्ड करने से भी नहीं चलता। फ्लेचर ठीक समय पर खबर दे गया था कि तीनों छोड़ दिये गये हैं। तीनों में मुंशी नवकृष्ण सबसे कम उम्र का था।

क्लाइव ने उससे पूछा था, "नवाब ने तुम लोगों को छोड़ क्यों दिया ?"

नवकृष्ण मुर्शिदाबाद से सीधे क्लाइव के पास पहुँचा था।

वह बोला, "हजूर, यह सनक है।"

"सनक ? मतलब ? नवाब को क्या सनक सूझी ?"

"हजूर, अमीचन्द साहब ने कहा, नवाब-बादशाहों को ऐसी सनक हुआ करती है। औरंगजेब बादशाह भी यही करता था। वह कभी-कभी अमीर-उमरावों को धमका

देता था कि मैं मक्का चला जाऊँगा। खैर, यह सब सुनकर आप आराम से न बैठ जाइए। नवाब अन्दर ही अन्दर आप लोगों को हिन्दुस्तान से भगाने की साजिश कर रहा है।"

"अरे ! यह तुमसे किसने कहा ?"

"जी, मैं मुर्शिदाबाद से सब सुनकर आ रहा हूँ। सभी से मिलकर आ रहा हूँ जी। जगत्सेठ से मिला, दोहजारी मनसबदार यार लुत्फ खाँ से मिला, आपके लिए मैं सबसे मिलकर आ रहा हूँ।"

"लेकिन वह लेटर ? जो लेटर मरियम बेगम स्मगल कर ले गयी थी, वह नहीं लाये ?"

"आप भी हुज़ूर बड़े सीधे हैं। इतना सीधापन इस दुनिया में नहीं चल सकता। जो जैसा उसके साथ वैसा ही करना पड़ता है। मुझे देखिए न, मैं सीधा-सादा हूँ, इसी-लिए न इतनी तकलीफ उठा रहा हूँ।"

"तुमने तो कहा था, जैसे भी हो मरियम बेगम से वह लेटर ले आऊँगा।"

"वही तो कह रहा हूँ हुज़ूर। इसी की कोशिश चल रही है। अमीचन्द साहब बहुत बिगड़ गये हैं। बिगड़ने की बात ही है। कहाँ की एक अदना औरत, नवाब की बेगम बन गयी है तो सूरज को दीपक समझने लगी है। आजकल तो वह किसी की परवाह ही नहीं करती। शायद सोच रही है कि हमेशा ऐसा ही रहेगा।"

क्लाइव ने कहा, "लेकिन मुंशी, मैंने सुना है कि मरियम बेगम ही हतियागढ़ के राजा की सेकंड वाइफ है। हतियागढ़ का राजा एक बार मेरे पास आया था उसी से मालूम हुआ।"

मुंशी ने कहा, "वह जब थी, तब थी, अब तो नवाब के साथ..."

"क्या नवाब के साथ ?"

"सोती है। स्लीपिंग। सेम बेड।"

"सच ?"

"क्या आपको आश्चर्य हो रहा है। इस तरह कितनी ही औरतों के साथ नवाब सोता है। नवाब के लिए क्या औरतों की कमी है ? मेरे पास ज्यादा पैसा नहीं है, इसलिए इतनी शादियाँ नहीं कर सकता। हम हिन्दुओं में भी जो कुलीन हैं वे भी डेढ़ सौ-दो सौ औरतों से ब्याह करते हैं। यह सब आप नहीं समझेंगे हुज़ूर। मरियम बेगम नवाब के साथ सोकर फूली नहीं समा पा रही है। अच्छे-अच्छे गहने और बाँदियाँ जो उसे मिले हैं, इसलिए अपने आदमी की बात एकदम भूल गयी है। औरतों की यही खासियत है हुज़ूर, जब जहाँ रहे वहीं की हो जाती हैं। फिर भी सोचता हूँ हुज़ूर, कि इंसान इस तरह बेईमान कैसे हो ? एक बार भी अपने पति का ख्याल नहीं आया !"

"उसके बाल-बच्चे नहीं हैं मुंशी ?"

"जी नहीं, लेकिन रहता भी तो ऐसा ही करती। कितनी ही औरतें अपने बाल-

बच्चे छोड़कर चेहल-सुतून में रहने आयी हैं। एक तरफ आपको देखने को मिलेगा कि पति के मर जाने पर उसकी चिता पर पत्नी जल रही है तो दूसरी तरफ एक पति के रहते दूसरे के घर रह रही है, ऐसी भी औरत मिलेगी। इसीलिए हजूर, हमारे शास्त्रों में औरत को नरक की ड्योढ़ी कहा गया है। मनु ने कहा है, औरतों को घर में बंद कर रखना, खिड़की-दरवाजे बंद कर; जरूरत पड़े तो दरवाजे पर साँकल चढ़ाकर भी रखनी होगी। थोड़ी ढिलाई मिली कि दूसरे की हो जायेगी।"

क्लाइव सुन रहा था। मुंशी की बात सुनकर जरा देर सोचता भी रहा। फिर कहा, "मुंशी, इंग्लैंड में मेरी भी वाइफ है, लेकिन वह मुझे छोड़कर कहीं नहीं जाती। मैंने तो उसे साँकल से बाँधकर नहीं रखा। मैं तो उसे छोड़कर इतनी दूर चला आया हूँ।"

मुंशी ने कहा, "आप क्या कहते हैं हजूर, आप लोगों से हम लोगों की भला तुलना हो सकती है? आप लोग तो देवता के समान हैं। हिन्दू शास्त्र में कहा गया है—श्वेतद्वीप का मनुष्य! हम आप लोगों से बहुत छोटे हैं हजूर।"

"लेकिन—"

क्लाइव ने कहा, "लेकिन मेरे यहाँ जो दो हिन्दू औरतें हैं वे तो बड़ी अच्छी हैं। एक विडो है और दूसरी मैरिड। वे तो अच्छी हैं, वे बीफ नहीं खातीं, ड्रिंक नहीं करतीं, फाउल नहीं खातीं।"

मुंशी ने कहा, "सब तो ठीक है, लेकिन हज़बैंड के पास क्यों नहीं जातीं?"

"उसका हजबैंड बहुत बड़ा पोएट है मुंशी, बहुत बढ़िया पोएट्री बनाता है लेकिन यह औरत किसी तरह उसके पास जाना नहीं चाहती।"

"फिर सोच लीजिए, क्यों नहीं जाना चाहती?"

क्लाइव ने पूछा, "बताओ न मुंशी, क्यों नहीं जाना चाहती?"

मुंशी ने कहा, "बताऊँ, क्यों नहीं जाना चाहती?"

"बताओ।"

मुंशी बोला, "असल में वह आदमी कुछ करता-धरता नहीं इसीलिए। पोएट्री से तो किसी का पेट नहीं भरता हजूर। पोएट्री सुनना अच्छा है, गाना भी अच्छा लेकिन पोएट्री से गहने नहीं बनते, पोएट्री से साड़ी नहीं मिलती, पोएट्री से भात नहीं जुटता। फिर इस पोएट्री से क्या फायदा? इसीलिए तो हजूर, मैं आपकी सेवा में पड़ा हूँ और जी-जान से आपकी सेवा करूँगा।"

क्लाइव ने कहा, "लेकिन मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकूँगा मुंशी, मेरे पास रुपये कहाँ हैं?"

मुंशी ने कहा, "अभी रुपया नहीं है, लेकिन बाद में तो होगा, उस समय इस गरीब का ख्याल रखियेगा।"

क्लाइव ने कहा, "बाद में रुपया कहाँ से आयेगा? मैं तो कंपनी की नौकरी करता हूँ, कंपनी मुझे तनख्वाह देती है।"

"मैं कहता हूँ आप अमीर बनेंगे, दौलत आपके चरण चूमेगी। भगवान आपको धन देगा। इसलिए मैं अपनी गॉडेस सिंहवाहिनी के सामने प्रे करता हूँ हुजूर, मेरे साहब को दौलत दीजिए। साहब की दौलत होगी तो मुझे भी दौलत मिलेगी।"

"लेकिन दौलत लेकर मैं क्या करूँगा ?"

मुंशी ने कहा, "मुर्शिदाबाद के नवाब के पास क्या कम दौलत है ?"

"मुर्शिदाबाद के नवाब के पास दौलत है तो मुझे कैसे मिलेगी ? नवाब मुझे क्यों देगा ?"

मुंशी ने कहा, "दौलत क्या कोई ऐसे ही किसी को दे देता है हुजूर, माँगने से ही मिलेगी।"

"माँगने से ही कैसे मिलेगी ?"

"आपके डर से नवाब देगा।"

"नवाब मुझसे डरता है क्या ?"

"डरता नहीं तो क्या हम तीनों को ऐसे ही छोड़ देता ? सभी ने तो मुझसे कहा, नवाब क्लाइव से डरता है इसलिए आप लोगों को छोड़ दिया। यार लुत्फ ने यही कहा, मीर जाफर ने यही कहा और जगत्‌सेठ ने भी यही कहा।"

"क्या सभी नवाब के एजेन्ट हैं ?"

"जी हाँ हुजूर, सभी नवाब के एजेन्ट हैं। इतने दिनों तक आप दूसरों से सुनते रहे अब मुझसे सुन लीजिए। मैं तो गलत नहीं कहूँगा। झूठ कहना पाप है हुजूर, झूठ कहने पर नरक में जाना पड़ता है। जो झूठ कहता है वह रौरव नरक में जाकर सड़ता है।"

क्लाइव मुंशी की बात सुनकर थोड़ी देर सोचता रहा।

मुंशी अब भी कहे जा रहा था, "यह जो आपने चन्दननगर जीत लिया, पहले तो आप कितना डरते रहे, कितनी ही बातें सोचते रहे, लेकिन कुछ हुआ ? नवाब कुछ कर सका ? करे भी तो कैसे ? उधर दिल्ली की तरफ से अहमद शाह अब्दाली बंगाल की तरफ आ रहा है, इस हालत में नवाब किससे-किससे लड़ेगा ? कौन उसकी मदद करेगा ? उसका मददगार भी तो कोई नहीं है।"

"क्यों फ्रांसीसी ? जनरल बुशी ? मँसिये लॉ ?

"अरे फ्रांसीसियों से आप लोगों का मुकाबला ? आप लोगों के दिमाग के आगे फ्रांसीसी टिक सकते हैं ? नवाब को क्या आप लोगों के बारे में पता नहीं है ?"

क्लाइव ने कहा, "दिमाग की बात कर रहे हो तो मरियम बेगम ज्यादा दिमाग वाली है। नहीं तो वह मुझे कैसे बेवकूफ बनाकर आ सकती थी ?"

मुंशी ने कहा, "उसी की बात कर रहा हूँ। अब देखिए न, उसे कैसे काबू में लाता हूँ।"

"क्यों ? क्या करोगे ? मर्डर ?"

"वह जब हो जायेगा तब सुन लीजियेगा।"

ये सब बातें बहुत पहले हो गयी थीं। हुगली में कैम्प बनाते समय। फिर वहीं से वाट्स का खत आया। फ्रांसीसियों से झगड़ा होने की बात भी लिखी थी।

रात को जब सभी सो गये थे उस समय क्लाइव बिस्तरे से उठा।

नवकृष्ण को क्लाइव ने बुला भेजा।

नवकृष्ण सामने आकर खड़ा हुआ तो क्लाइव ने कहा, "मुंशी, नवाब के खजाने में कितनी दौलत है ?"

"दौलत की कोई इंतिहा नहीं।"

"फिर भी ?"

"इतनी अशर्फियाँ हैं हजूर, कि आप अकेले नहीं ले जा सकते। हम आप मिलकर भी उसे नहीं ले जा सकते। दौलत पीढ़ियों से इकट्ठी हो रही है न। इस दौलत का कोई हिसाब नहीं है। नवाब को भी नहीं मालूम कि उसके पास कितनी दौलत है। बेगमों को भी नहीं मालूम।"

क्लाइव ने कहा, "फिर नवाब से लड़ाई छिड़े तो अच्छी तरह छिड़े। यह देखो नवाब ने क्या लिखा है।"

मुंशी पढ़ने लगा—

'मैंने कंपनी को जितने रुपये देने का वादा किया था, वह करीब-करीब दे दिया है। सुलह की शर्तें भी मैं मानकर चल रहा हूँ, लेकिन कंपनी की तरफ से उन शर्तों को पूरा करने की कोशिश नहीं की जा रही है। अंग्रेज सिपाहियों की ज्यादती से हुगली, वर्दवान और नदिया के लोग घबड़ाये हुए हैं। यह सब आप लोगों की जानकारी में हो रहा है ऐसा मुझे विश्वास नहीं होता। सुना है फ्रांसीसियों ने आप लोगों से लड़ने के लिए दकन से फौज भेजी है। वे अगर हमारे राज्य में कोई उपद्रव करते हैं तो किसी तरह बरदाश्त नहीं किया जायेगा। मुझे इसकी सूचना मिलते ही मैं अपनी फौज भेजकर उनको रोकूँगा।'

क्लाइव ने पूछा, "इस खत को पढ़कर तुम्हें कैसा लगा ?"

मुंशी बोला, "लगता है, इसके पीछे भी मरियम बेगम का हाथ है।"

"क्यों ?"

"नवाब को मरियम बेगम ने तरकीब बतायी है। कहा है, जरा नर्मी से खत लिखने से भी काम बन जायेगा। नहीं तो नवाब इतना नर्म मिजाज का आदमी नहीं है। इस चिट्ठी के जवाब में हजूर, आप एक कड़ा खत लिखिए। आपके नरम बनने से काम नहीं बनेगा।"

"फिर क्या लिखूँ, कहो।"

मुंशी कलम कागज लेकर बैठा। फिर लिखा, 'आपका खत मिला, लेकिन कासिमबाजार के फ्रांसीसियों को भगाने का हुक्म न देने तक यह नहीं माना जा सकता कि नवाब निजामत कंपनी से सुलह बनाये रखना चाहती है। आप और ज्यादा देर किये बिना कासिमबाजार की फ्रांसीसी कोठी बंद करवा दीजिए।'

चिट्ठी पढ़कर क्लाइव ने दस्तखत कर दिया।

दस्तखत हो जाने के बाद मुंशी वह खत मुर्शिदाबाद भिजवाने का इंतजाम करने चला गया। जाने से पहले वह क्लाइव से कहता गया, "आप एक काम कीजिए हुजूर, आप कासिमबाजार के वाट्स साहब को लिख दीजिए कि यार लुत्फ खाँ साहब से मिल लें।"

क्लाइव ने कहा, "इससे तो सभी जान जायेंगे।"

"कैसे जान जायेंगे? बेगम की तरह बुरका पहनकर रात को मिलने के लिए लिख दीजिए। पालकी से जाने को लिख दीजिए, इससे कोई शक नहीं करेगा। यार लुत्फ खाँ को अगर आप नवाब बना सकेंगे तो वे आपके लिए सब कुछ करेंगे।"

इसके बाद यह खत भी लिखा गया। मुंशी नवकृष्ण ने अपना काम पूरा किया है। अब जो तुम कर दिखा सकते हो और जो मेरे भाग्य में है, वह तो होना ही है। अपने देश के लोगों ने मेरे लिए जो नहीं किया, वही तुम मेरे लिए करोगे। इतने दिन माँ से प्रार्थना की लेकिन माँ ने नहीं सुनी। अब हीरे का कानवाला बना दूँगा माँ, जड़ाऊ गहनों से तुम्हें सजा दूँगा। अगर तुम दया करोगी माँ तो मुंशी नवकृष्ण तुम्हारे लिए सब कुछ करेगा। अब मुझ पर कृपा करो माँ सिंहवाहिनी।

हरीचरण के चले जाने पर दुर्गा ने कहा, "अब यह कौन आ गया? मरे चैन से बात भी नहीं करने देते।"

क्लाइव ने कहा, "इन्हें तुम नहीं जानती? अपने मतलब से आये हैं।"

"हर किसी को क्यों सर चढ़ाते हो? ये अपना भी समय खराब करते हैं और तुम्हारा भी।"

क्लाइव ने कहा, "हम पराये देश में आये हैं, हर किसी को हाथ में रखे बिना हमें यहाँ कौन टिकने देगा?"

"ठीक है, लेकिन उस पागल को यहाँ मत आने देना—इस बहू के मारे मैं तो दिक आ गयी। न अपने आदमी के पास जायेगी और न अपने घर जा सकती है—यह तुम्हारी लड़ाई क्या अब बंद नहीं होगी?"

"सीधे फरासडांगा से ही चला आ रहा हूँ, सुना है तुम्हारा नवाब आजकल मरियम बेगम की बात पर ही उठता-बैठता है।"

"यह मरियम बेगम कौन है?"

"हातिमागढ़ के राजा की दूसरी बीवी का नाम ही मरियम बेगम है।"

दुर्गा चौंकी। वही मराली है क्या? मराली मरियम बेगम हो गयी। अब उसका इतना रोबदाब हो गया है। छोकरी निकली तो तेज!

तभी क्लाइव ने कहा, "अब मैं चलूँ दीदी, वे लोग काफी देर से बैठे हैं।"

क्लाइव के जाते ही, दुर्गा ने अन्दर जाकर कहा, "बहूरानी कुछ सुना तुमने?

ये सब बातें बहुत पहले हो गयी थीं। हुगली में कैम्प बनाते समय। फिर वहीं से वाट्स का खत आया। फ्रांसीसियों से झगड़ा होने की बात भी लिखी थी।

रात को जब सभी सो गये थे उस समय क्लाइव बिस्तरे से उठा।

नवकृष्ण को क्लाइव ने बुला भेजा।

नवकृष्ण सामने आकर खड़ा हुआ तो क्लाइव ने कहा, "मुंशी, नवाब के खजाने में कितनी दौलत है ?"

"दौलत की कोई इंतिहा नहीं।"

"फिर भी ?"

"इतनी अशर्फियां हैं हजूर, कि आप अकेले नहीं ले जा सकते। हम आप मिलकर भी उसे नहीं ले जा सकते। दौलत पीढ़ियों से इकट्ठी हो रही है न। इस दौलत का कोई हिसाब नहीं है। नवाब को भी नहीं मालूम कि उसके पास कितनी दौलत है। बेगमों को भी नहीं मालूम।"

क्लाइव ने कहा, "फिर नवाब से लड़ाई छिड़े तो अच्छी तरह छिड़े। यह देखो, नवाब ने क्या लिखा है।"

मुंशी पढ़ने लगा—

'मैंने कंपनी को जितने रुपये देने का वादा किया था, वह करीब-करीब दे दिया है। सुलह की शर्तें भी मैं मानकर चल रहा हूँ, लेकिन कंपनी की तरफ से उन शर्तों को पूरा करने की कोशिश नहीं की जा रही है। अंग्रेज सिपाहियों की ज्यादती से हुगली, बर्दवान और नदिया के लोग घबड़ाये हुए हैं। यह सब आप लोगों की जानकारी में हो रहा है ऐसा मुझे विश्वास नहीं होता। सुना है फ्रांसीसियों ने आप लोगों से लड़ने के लिए दकन से फौज भेजी है। वे अगर हमारे राज्य में कोई उपद्रव करते हैं तो किसी तरह बरदाश्त नहीं किया जायेगा। मुझे इसकी सूचना मिलते ही मैं अपनी फौज भेजकर उनको रोकूंगा।'

क्लाइव ने पूछा, "इस खत को पढ़कर तुम्हें कैसा लगा ?"

मुंशी बोला, "लगता है, इसके पीछे भी मरियम बेगम का हाथ है।"

"क्यों ?"

"नवाब को मरियम बेगम ने तरकीब बतायी है। कहा है, जरा नर्मी से खत लिखने से भी काम बन जायेगा। नहीं तो नवाब इतना नर्म मिजाज का आदमी नहीं है। इस चिट्ठी के जवाब में हजूर, आप एक कड़ा खत लिखिए। आपके नरम बनने से काम नहीं बनेगा।"

"फिर क्या लिखूं, कहो।"

मुंशी कलम कागज लेकर बैठा। फिर लिखा, 'आपका खत मिला, लेकिन कासिमबाजार के फ्रांसीसियों को भगाने का हुक्म न देने तक यह नहीं माना जा सकता कि नवाब निजामत कंपनी से सुलह बनाये रखना चाहती है। आप और ज्यादा देर किये बिना कासिमबाजार की फ्रांसीसी कोठी बंद करवा दीजिए।'

चिट्ठी पढ़कर क्लाइव ने दस्तखत कर दिया।

दस्तखत हो जाने के बाद मुंशी वह खत मुर्शिदाबाद भिजवाने का इंतजाम करने चला गया। जाने से पहले वह क्लाइव से कहता गया, "आप एक काम कीजिए हुजूर, आप कासिमबाजार के वाट्स साहब को लिख दीजिए कि मीर लुत्फ खाँ साहब से मिल लें।"

क्लाइव ने कहा, "इससे तो सभी जान जायेंगे।"

"कैसे जान जायेंगे? बेगम की तरह बुरका पहनकर रात को मिलने के लिए लिख दीजिए। पालकी से जाने को लिख दीजिए, इससे कोई शक नहीं करेगा। मीर लुत्फ खाँ को अगर आप नवाब बना सकेंगे तो वे आपके लिए सब कुछ करेंगे।"

इसके बाद यह खत भी लिखा गया। मुंशी नवकृष्ण ने अपना काम पूरा किया है। अब जो तुम कर दिखा सकते हो और जो मेरे भाग्य में है, वह तो होना ही है। अपने देश के लोगों ने मेरे लिए जो नहीं किया, वही तुम मेरे लिए करोगे। इतने दिन माँ से प्रार्थना की लेकिन माँ ने नहीं सुनी। अब हीरे का कानबाला बना दूँगा माँ, जड़ाऊ गहनों से तुम्हें सजा दूँगा। अगर तुम दया करोगी माँ तो मुंशी नवकृष्ण तुम्हारे लिए सब कुछ करेगा। अब मुझ पर कृपा करो माँ सिंहवाहिनी।

हरीचरण के चले जाने पर दुर्गा ने कहा, "अब यह कौन आ गया? मेरे चैन की बात भी नहीं करने देते।"

क्लाइव ने कहा, "इन्हें तुम नहीं जानती? अपने मतलब से आये हैं।"

"हर किसी को क्यों सर चढ़ाते हो? वे अपना भी समय खराब करते हैं और तुम्हारा भी।"

क्लाइव ने कहा, "हम पराये देश में आये हैं, हर किसी को हाथ में रखे बिना हमें यहाँ कौन टिकने देगा?"

"ठीक है, लेकिन उस पागल को यहाँ मत आने देना—इस बहू के मारे मैं तो दिक आ गयी। न अपने आदमी के पास जायेगी और न अपने घर जा सकती है—यह तुम्हारी लड़ाई क्या अब बंद नहीं होगी?"

"सीधे फरासडांगा से ही चला आ रहा हूँ, सुना है तुम्हारा नवाब आजकल मरियम बेगम की बात पर ही उठता-बैठता है।"

"यह मरियम बेगम कौन है?"

"हातियागढ़ के राजा की दूसरी बीबी का नाम ही मरियम बेगम है।"

दुर्गा चौंकी। वही मराली है क्या? मराली मरियम बेगम हो गयी। अब उसका इतना रोबदाब हो गया है। छोकरी निकली तो तेज!

तभी क्लाइव ने कहा, "अब मैं चलूँ दीदी, वे लोग काफी देर से बैठे हैं।"

क्लाइव के जाते ही दुर्गा ने अन्दर जाकर कहा, "बहूरानी कुछ सुना तुमने?

उस मुँहजली ने चेहल-सुतून जाकर नवाब को मुट्ठी में कर लिया है। यहाँ सोच सोचकर मरी जा रही हूँ कि हाय राम, शोभाराम की लड़की को हमने ही पानी ढकेल दिया, और वह वहाँ मजा कर रही है।"

छोटी बहूरानी ने कहा, 'एक काम क्यों नहीं करती दुर्गा ? एक बार मरा के पास खबर करा दे कि हम लोग मुसीबत में फँसे हैं, नवाब हम लोगों को ज्यादा तंग न करे।"

दुर्गा ने सोचते हुए कहा, "तुम चुप भी रहो बहूरानी, इतनी जल्दबाजी ठी नहीं है, मुझे सोचने दो।"

छोटी बहूरानी ने चिढ़कर कहा, "सोचते-सोचते तो तूने पूरा साल निका दिया और कितना सोचेगी ? अब तो मुझसे एक दिन भी नहीं रुका जाता।"

"बहूरानी धीरज से काम लो, कहीं बात खुल गयी तो एक नयी आफत उ खड़ी होगी।"

तभी हरीचरण के आने की आहट सुनकर दुर्गा चुप हो गयी।

●

महाराज कृष्णचन्द्र कह रहे थे, "इस बंगाल की किस्मत में काफी दुःख बदे कर्नल, दिल्ली या दक्षिण की बात जाने दीजिए। वह दूर की बात है। फिर भी जो कु सुन पाता हूँ उसके अनुसार हिन्दुस्तान की ताकत का केन्द्र आज दक्षिण है। शाहंश औरंगजेब इस बात को समझता था इसीलिए आखिरी दिनों में उसने दक्षिण को का में करने की कोशिश की। लेकिन जो होना नहीं था वह कैसे हो सकता था ? अब फि से हिन्दू राज्य आ रहा है। बाजीराव, सिन्धिया, होकर और गायकवाड़ पर ही अ तक हम लोगों को भरोसा था। अब आया है बालाजी राव !"

क्लाइव बड़े ध्यान से सब कुछ सुन रहा था। महाराज को आज उसने पहल बार देखा था। साथ वाला आदमी चुपचाप बैठा हुआ था।

उसने कहा, "देखिए महाराज, हम लोग तिजारत करने आये हैं।"

"वह तो मालूम है, आप लोग यहाँ पर रहने थोड़े ही आये हैं।"

"और हम लोग तो वापस जा ही रहे थे। साढ़े तीन हजार रुपये सालान नज़राना देकर हमें सनद मिली, लेकिन उन दिनों कम्पनी को एक पैसा भी प्रॉफिट न हो रहा था और आज जब कम्पनी ने प्रॉफिट करना शुरू किया तो नवाब हमसे च जाने को कह रहा है।"

महाराज ने कहा, "आप इस वक्त जाने की भूल न करियेगा। मुगल साम्राज्य के दिन पूरे हो गये हैं। मराठा सरदार भी आपस में लड़ रहे हैं। असल में पाप क राज्य रहता नहीं है। पाप का फल भुगतना ही पड़ता है। औरंगजेब जैसे बादशाह मरते समय कहा था—मैं दुनिया में आते वक्त साथ में कुछ लेकर नहीं आया, लेकि

जाते वक्त पाप की गठरी लेकर जा रहा हूँ।"

क्लाइव ने कहा, "देखता हूँ, आपके इंडिया में महाराजा से लेकर भिखारी तक सभी फिलॉसफर हैं।"

"यह शायद यहाँ की मिट्टी का गुण है।"

क्लाइव ने कहा, "फिलॉसफरों को राजनीति में नहीं ही आना चाहिए महाराजा, इन लोगों को तो शादी भी नहीं करनी चाहिए।"

महाराज ने कहा, "यह तो है ही! इसीलिए मैंने अपने दरबार में हर तरह के लोगों को रखा है। कोई मेरा पंचांग बनाता है, कोई मुझे कुश्ती लड़ना सिखाता है, कोई काव्य लिखता है, कोई युद्धकला का पारखी है तो कोई बस चुटकुला सुनाता है।"

साहब ने कहा, "मेरी कोठी में एक हिन्दू बीबी है महाराज, उसका हजबैंड भी फिलॉसफर है। वह कहता है, सारी दुनिया ही उसका घर है। वह खुद पोएट है, पोएट्री लिखता है।"

महाराज ने पूछा, "आपने हिन्दू बीबी को अपने यहाँ क्यों रखा है?"

क्लाइव बोला, "क्या करता? वह अपने हजबैंड के पास जाना ही नहीं चाहती।"

"उसके बाप के घर में क्या कोई नहीं है? वहीं भेज दीजिए।"

"कैसे भेजूँ? आप तो नवाब को जानते हैं। अगर नवाब के स्पाई की निगाह उस लेडी पर पड़ गयी तो उसे ले जाकर अपने हरम में बंद कर देगा। मरियम बेगम भी तो इसी तरह हरम में ले जायी गयी थी।"

"यही तो। मरियम बेगम इन्हीं की पत्नी है। इन्हीं के बारे में कहने के लिए आपके पास आया।"

क्लाइव ने कहा, "मैं जानता हूँ। लेकिन आपको मालूम है आपकी वाइफ़ बड़ी क्लेवर लेडी है।"

छोटे सरकार ने कहा, "चालाक? लेकिन वह तो इतनी चालाक नहीं थी।"

"नो-नो, वेरी क्लेवर!"

"लेकिन जब तक मेरे पास थी तब तक वह बड़ी अच्छी थी। बड़े ही नम्र स्वभाव की स्त्री थी। मामूली-सी बात पर रो देती थी, मामूली-सी बात के लिए रूठ जाती थी, बड़े भाग्य से किसी को ऐसी पत्नी मिल सकती है साहब। आप जैसे भी हो मेरी पत्नी का उद्धार कीजिए।"

क्लाइव बोला, "लेकिन आपको मालूम है, आपकी पत्नी मेरे यहाँ से एक इम्पॉर्टेन्ट लेटर चुराकर ले गयी है। आपकी पत्नी ने मुझे ब्लैकमेल किया है। मिलिटरी सिक्रेट चोरी करने पर क्या सजा होती है आपको जरूर मालूम होगा।"

छोटे सरकार ने कहा, "आप गलती कर रहे हैं साहब, मेरी पत्नी ऐसा काम नहीं कर सकती। मेरी पत्नी सती स्त्री है।"

उस मुँहजली ने चेहल-सुतून जाकर नवाब को मुट्ठी में कर लिया है। यहाँ सोच-सोचकर मरी जा रही हूँ कि हाय राम, शोभाराम की लड़की को हमने ही पानी में ढकेल दिया, और वह वहाँ मजा कर रही है।"

छोटी बहूरानी ने कहा, 'एक काम क्यों नहीं करती दुर्गा ? एक बार मराली के पास खबर करा दे कि हम लोग मुसीबत में फँसे हैं, नवाब हम लोगों को और ज्यादा तंग न करे।"

दुर्गा ने सोचते हुए कहा, "तुम चुप भी रहो बहूरानी, इतनी जल्दबाजी ठीक नहीं है, मुझे सोचने दो।"

छोटी बहूरानी ने, चिढ़कर कहा, "सोचते-सोचते तो तूने पूरा साल निकाल दिया और कितना सोचेगी ? अब तो मुझसे एक दिन भी नहीं रुका जाता।"

"बहूरानी धीरज से काम लो, कहीं बात खुल गयी तो एक नयी आफत उठ खड़ी होगी।"

तभी हरीचरण के आने की आहट सुनकर दुर्गा चुप हो गयी।

●

महाराज कृष्णचन्द्र कह रहे थे, "इस बंगाल की किस्मत में काफी दुःख बदे हैं कर्नल, दिल्ली या दक्षिण की बात जाने दीजिए। वह दूर की बात है। फिर भी जो कुछ सुन पाता हूँ उसके अनुसार हिन्दुस्तान की ताकत का केन्द्र आज दक्षिण है। शाहंशाह औरंगजेब इस बात को समझता था इसीलिए आखिरी दिनों में उसने दक्षिण को काबू में करने की कोशिश की। लेकिन जो होना नहीं था वह कैसे हो सकता था ? अब फिर से हिन्दू राज्य आ रहा है। बाजीराव, सिन्धिया, होकर और गायकवाड़ पर ही अब तक हम लोगों को भरोसा था। अब आया है बालाजी राव !"

क्लाइव बड़े ध्यान से सब कुछ सुन रहा था। महाराज को आज उसने पहली बार देखा था। साथ वाला आदमी चुपचाप बैठा हुआ था।

उसने कहा, "देखिए महाराज, हम लोग तिजारत करने आये हैं।"

"वह तो मालूम है, आप लोग यहाँ पर रहने थोड़े ही आये हैं।"

"और हम लोग तो वापस जा ही रहे थे। साढ़े तीन हजार रुपये सालाना नजराना देकर हमें सनद मिली, लेकिन उन दिनों कम्पनी को एक पैसा भी प्रॉफिट नहीं हो रहा था और आज जब कम्पनी ने प्रॉफिट करना शुरू किया तो नवाब हमसे चले जाने को कह रहा है।"

महाराज ने कहा, "आप इस वक्त जाने की भूल न करियेगा। मुगल साम्राज्य के दिन पूरे हो गये हैं। मराठा सरदार भी आपस में लड़ रहे हैं। असल में पाप का राज्य रहता नहीं है। पाप का फल भुगतना ही पड़ता है। औरंगजेब जैसे बादशाह ने मरते समय कहा था—मैं दुनिया में आते वक्त साथ में कुछ लेकर नहीं आया, लेकिन

जाते वक्त पाप की गठरी लेकर जा रहा हूँ।"

क्लाइव ने कहा, "देखता हूँ, आपके इंडिया में महाराजा से लेकर भिखारी तक सभी फिलॉसफर हैं।"

"यह शायद यहाँ की मिट्टी का गुण है।"

क्लाइव ने कहा, "फिलॉसफरों को राजनीति में नहीं ही आना चाहिए महाराजा, इन लोगों को तो शादी भी नहीं करनी चाहिए।"

महाराज ने कहा, "यह तो है ही! इसीलिए मैंने अपने दरबार में हर तरह के लोगों को रखा है। कोई मेरा पंचांग बनाता है, कोई मुझे कुश्ती लड़ना सिखाता है, कोई काव्य लिखता है, कोई युद्धकला का पारखी है तो कोई बस चुटकुला सुनाता है।"

साहब ने कहा, "मेरी कोठी में एक हिन्दू बीवी है महाराज, उसका हजबैंड भी फिलॉसफर है। वह कहता है, सारी दुनिया ही उसका घर है। वह खुद पोएट है, पोएट्री लिखता है।"

महाराज ने पूछा, "आपने हिन्दू बीवी को अपने यहाँ क्यों रखा है?"

क्लाइव बोला, "क्या करता? वह अपने हजबैंड के पास जाना ही नहीं चाहती।"

"उसके बाप के घर में क्या कोई नहीं है? वहीं भेज दीजिए।"

"कैसे भेजूँ? आप तो नवाब को जानते हैं। अगर नवाब के स्पाई की निगाह इस लेडी पर पड़ गयी तो उसे ले जाकर अपने हरम में बंद कर देगा। मरियम बेगम भी तो इसी तरह हरम में ले जायी गयी थी।"

"यही तो। मरियम बेगम इन्हीं की पत्नी है। इन्हीं के बारे में कहने के लिए आपके पास आया।"

क्लाइव ने कहा, "मैं जानता हूँ। लेकिन आपको मालूम है आपकी वाइफ बड़ी क्लेवर लेडी है।"

छोटे सरकार ने कहा, "चालाक? लेकिन वह तो इतनी चालाक नहीं थी।"

"नो-नो, वेरी क्लेवर!"

"लेकिन जब तक मेरे पास थी तब तक वह बड़ी अच्छी थी। बड़े ही नम्र स्वभाव की स्त्री थी। मामूली-सी बात पर रो देती थी, मामूली-सी बात के लिए रूठ जाती थी, बड़े भाग्य से किसी को ऐसी पत्नी मिल सकती है साहब। आप कैसे भी हो मेरी पत्नी का उद्धार कीजिए।"

क्लाइव बोला, "लेकिन आपको मालूम है, आपकी पत्नी मेरे यहाँ से एक इम्पॉर्टेन्ट लेटर चुराकर ले गयी है। आपकी पत्नी ने मुझे ब्लैकमेल किया है। मिलिटरी सिक्रेट चोरी करने पर क्या सजा होती है आपको जरूर मालूम होगा।"

छोटे सरकार ने कहा, "आप गलती कर रहे हैं साहब, मेरी पत्नी ऐसा काम नहीं कर सकती। मेरी पत्नी सती स्त्री है।"

उस मुँहजली ने चेहल-सुतून जाकर नवाब को मुट्ठी में कर लिया है। सोचकर मरी जा रही हूँ कि हाय राम, शोभाराम की लड़की को हमने ढकेल दिया, और वह वहाँ मजा कर रही है।"

छोटी बहूरानी ने कहा, 'एक काम क्यों नहीं करती दुर्गा ? एक ह के पास खबर करा दे कि हम लोग मुसीबत में फँसे हैं, नवाब हम लोगों ज्यादा तंग न करे।"

दुर्गा ने सोचते हुए कहा, "तुम चुप भी रहो बहूरानी, इतनी जल्दब नहीं है, मुझे सोचने दो।"

छोटी बहूरानी ने चिढ़कर कहा, "सोचते-सोचते तो तूने पूरा साल दिया और कितना सोचेगी ? अब तो मुझसे एक दिन भी नहीं रुका जाता।"

"बहूरानी धीरज से काम लो, कहीं बात खुल गयी तो एक नयी आ खड़ी होगी।"

तभी हरीचरण के आने की आहट सुनकर दुर्गा चुप हो गयी।

●

महाराज कृष्णचन्द्र कह रहे थे, "इस बंगाल की किस्मत में काफी दुःख ब. कर्नल, दिल्ली या दक्षिण की बात जाने दीजिए। वह दूर की बात है। फिर भी जो सुन पाता हूँ उसके अनुसार हिन्दुस्तान की ताकत का केन्द्र आज दक्षिण है। शाहं औरंगजेब इस बात को समझता था इसीलिए आखिरी दिनों में उसने दक्षिण को क में करने की कोशिश की। लेकिन जो होना नहीं था वह कैसे हो सकता था ? अब पि से हिन्दू राज्य आ रहा है। बाजीराव, सिन्धिया, होकर और गायकवाड़ पर ही अ तक हम लोगों को भरोसा था। अब आया है बालाजी राव !"

क्लाइव बड़े ध्यान से सब कुछ सुन रहा था। महाराज को आज उसने पह बार देखा था। साथ वाला आदमी चुपचाप बैठा हुआ था।

उसने कहा, "देखिए महाराज, हम लोग तिजारत करने आये हैं।"

"वह तो मालूम है, आप लोग यहाँ पर रहने थोड़े ही आये हैं।"

"और हम लोग तो वापस जा ही रहे थे। साढ़े तीन हजार रुपये सालाना नजराना देकर हमें सनद मिली, लेकिन उन दिनों कम्पनी को एक पैसा भी प्रॉफिट नहीं हो रहा था और आज जब कम्पनी ने प्रॉफिट करना शुरू किया तो नवाब हमसे चले जाने को कह रहा है।"

महाराज ने कहा, "आप इस वक्त जाने की भूल न करियेगा। मुगल साम्राज्य के दिन पूरे हो गये हैं। मराठा सरदार भी आपस में लड़ रहे हैं। असल में पाप का राज्य रहता नहीं है। पाप का फल भुगतना ही पड़ता है। औरंगजेब जैसे बादशाह ने मरते समय कहा था—मैं दुनिया में आते वक्त साथ में कुछ लेकर नहीं आया, लेकिन

जाते वक्त पाप की गठरी लेकर जा रहा हूँ ।"

क्लाइव ने कहा, "देखता हूँ, आपके इंडिया में महाराजा से लेकर भिखारी तक सभी फिलॉसफर हैं ।"

"यह शायद यहाँ की मिट्टी का गुण है ।"

क्लाइव ने कहा, "फिलॉसफरों को राजनीति में नहीं ही आना चाहिए महाराजा, इन लोगों को तो शादी भी नहीं करनी चाहिए ।"

महाराज ने कहा, "यह तो है ही ! इसीलिए मैंने अपने दरबार में हर तरह के लोगों को रखा है । कोई मेरा पंचांग बनाता है, कोई मुझे कुश्ती लड़ना सिखाता है, कोई काव्य लिखता है, कोई युद्धकला का पारखी है तो कोई बस चुटकुला सुनाता है ।"

साहब ने कहा, "मेरी कोठी में एक हिन्दू बीबी है महाराज, उसका हजबैंड भी फिलॉसफर है । वह कहता है, सारी दुनिया ही उसका घर है । वह खुद पोएट है, पोएट्री लिखता है ।"

महाराज ने पूछा, "आपने हिन्दू बीबी को अपने यहाँ क्यों रखा है ?"

क्लाइव बोला, "क्या करता ? वह अपने हजबैंड के पास जाना ही नहीं चाहती ।"

"उसके बाप के घर में क्या कोई नहीं है ? वहीं भेज दीजिए ।"

"कैसे भेजूँ ? आप तो नवाब को जानते हैं । अगर नवाब के स्पाई की निगाह इस लेडी पर पड़ गयी तो उसे ले जाकर अपने हरम में बंद कर देगा । मरियम बेगम भी तो इसी तरह हरम में ले जायी गयी थी ।"

"यही तो । मरियम बेगम इन्हीं की पत्नी है । इन्हीं के बारे में कहने के लिए आपके पास आया ।"

क्लाइव ने कहा, "मैं जानता हूँ । लेकिन आपको मालूम है आपकी वाइफ बड़ी क्लेवर लेडी है ।"

छोटे सरकार ने कहा, "चालाक ? लेकिन वह तो इतनी चालाक नहीं थी ।"

"नो-नो, वेरी क्लेवर !"

"लेकिन जब तक मेरे पास थी तब तक वह बड़ी अच्छी थी । बड़े ही नम्र स्वभाव की स्त्री थी । मामूली-सी बात पर रो देती थी, मामूली-सी बात के लिए रूठ जाती थी, बड़े भाग्य से किसी को ऐसी पत्नी मिल सकती है साहब । आप जैसे भी हो मेरी पत्नी का उद्धार कीजिए ।"

क्लाइव बोला, "लेकिन आपको मालूम है, आपकी पत्नी मेरे यहाँ से एक इम्पॉर्टेन्ट लेटर चुराकर ले गयी है । आपकी पत्नी ने मुझे ब्लैकमेल किया है । मिलिटरी सिक्रेट चोरी करने पर क्या सजा होती है आपको जरूर मालूम होगा ।"

छोटे सरकार ने कहा, "आप गलती कर रहे हैं साहब, मेरी पत्नी ऐसा काम नहीं कर सकती । मेरी पत्नी सती स्त्री है ।"

"आपकी पत्नी नवाब के साथ चेहल-सुतून में रात बिताती है, फिर भी कह रहे हैं आपकी पत्नी सती है।"

"मेरी पत्नी को मैं नहीं पहचानता साहब ! आप कैसे पहचान सकते हैं ? मेरी पत्नी जान दे देगी, लेकिन नवाब के साथ चेहल-सुतून में रात नहीं बितायेगी।"

क्लाइव ने कहा, "मैं इंडियन नहीं हूँ, मैं इंगलिशमैन हूँ, मैं आपके यहाँ के मैरेड लाइफ के बारे में कुछ नहीं जानता। लेकिन मेरा ख्याल था कि हिन्दू वीवि[illegible] बड़ी अच्छी होती हैं। मेरे यहाँ जो लेडी हैं उन्हें तो देख रहा हूँ शी इज वेरी गुड। ड्रिंक नहीं करती, बीफ नहीं खाती, फाउल नहीं खाती।"

छोटे सरकार ने कहा, "मेरी पत्नी भी यह सब नहीं खाती।"

क्लाइव ने कहा, "लेकिन अमीचंद साहब ने कहा है, आपकी स्त्री सब कुछ खाती है, अर्क पीती है, नशा करती है।"

महाराज कृष्णचन्द्र ने कहा, "छोड़ो भी, यह सब लेकर बहस करने से फायदा क्या ? नवाब के हरम में रहने पर वह सब खाना ही पड़ेगा, बिना खाये रहेगी कैसे ?"

छोटे सरकार ने कहा, "अगर खाये भी तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। अब भी अगर मेरी पत्नी मिल जाय तो उसे अपने घर रख लूँगा।"

"लेकिन वह तो मुसलमान हो गयी है, उसे आप कैसे अपने घर में रखेंगे ? इससे आपकी जाति भ्रष्ट नहीं हो जायेगी ?"

छोटे सरकार ने महाराज कृष्णचन्द्र की ओर देखा। कहा, "फिर क्या होगा महाराज ? आप मुझे विधान बतावें। कहिए, मैं क्या करूँ ?"

महाराज ने इस बात का जवाब न देकर क्लाइव की ओर देखकर कहा, "आप कोई विधान दे सकते हैं साहब ?"

क्लाइव को हँसी आ गयी। कहा, "बंगाल आपका देश है। आप यहाँ के महाराज हैं, आप मुझसे विधान पूछ रहे हैं। हम तो यहाँ व्यापार करने आये हैं।"

महाराज ने कहा, "देश तो हमारा है, लेकिन देश के लोग यह समझते कहाँ हैं ? आप यहाँ आकर कंपनी का फायदा देख रहे हैं लेकिन हम यहाँ रहकर अपना ही फायदा देख रहे हैं। देश किसका है, यही तो अभी तय नहीं हो पाया है।"

"लेकिन यह देश तो आपका बर्थप्लेस है। हम तो फॉरेनर हैं।"

महाराज ने कहा, "असल में जो आप हैं वही हम भी हैं। यह मेरा भी देश नहीं है, नवाब सिराजुद्दौला का भी नहीं है, दिल्ली के बादशाह का भी नहीं। बादशाह औरंगजेब की मृत्यु के बाद हम सभी एक हो गये हैं—आप, हम, फ्रांसीसी, पठान, मुगल, हिन्दू सभी।"

क्लाइव ने सुनकर थोड़ी देर सोच लिया। फिर कहा, "मैं तो कंपनी का नौकर हूँ, कंपनी की इजाजत के बिना मैं कुछ कर नहीं सकता, कंपनी को मैं इस बारे में लिखूँगा, उस समय आप लोग मेरी मदद करेंगे न ?"

छोटे सरकार ने कहा, "मैं आपकी मदद करूँगा, मेरा जो कुछ है, सभी देकर

मैं कंपनी की मदद कर सकता हूँ।"

क्लाइव ने कहा, "अगर हम लड़कर नवाब को हरा दें तो किसको मसनद पर बैठाएँगे ?"

छोटे सरकार ने कहा, "नवाब बनने के लिए लोगों की कमी न होगी साहब !"

"लेकिन जिस किसी को नवाब नहीं बनाया जा सकता। आप होंगे ?"

महाराज कृष्णचन्द्र चौंक उठे। बोले, "मैं ?"

"जी हाँ, आप !"

"लेकिन मैं तो हिन्दू हूँ।"

"हिन्दू होने से क्या हुआ ? मराठे भी तो हिन्दू हैं।"

अंदर कमरे में दुर्गा बेचैन हो रही थी। मराली का अगर नवाब के दरबार में इतना रोबदाब है तो उसी को खबर भेजने से सारी झंझट खत्म हो जायेगी। लेकिन किससे उसके पास खबर भेजी जाय ?

हरीचरण को दुर्गा ने बुलाया, "सुनो तो भैया, तुम्हारा साहब अब तक किस से बतिया रहा है ? ये सब कौन हैं ? हिन्दू हैं या मुसलमान ?"

हरीचरण ने कहा, "यह तो मुझे मालूम नहीं है दीदी।"

"क्या इन लोगों के पास कोई काम-काज नहीं है कि तुम्हारे साहब के पास बैठे-बैठे बस उसका समय खराब कर रहे हैं। तुम उन लोगों से जाने को कह दो न ! तब से पता नहीं क्या बड़बड़ा रहे हैं।"

हरीचरण ने कहा, "साहब जब बात कर रहा हो उस समय उसके पास जाने पर वह बड़ा बिगड़ता है। मैं वहाँ नहीं जा सकता दीदी।"

"फिर मैं ही जाती हूँ। मेरे जाने पर भी क्या तुम्हारा साहब बिगड़ेगा ?"

"तुम जाओगी तो साहब तुमसे कुछ नहीं कहेगा, लेकिन मुझे बाद में डाँटेगा। कहेगा, तू जब देख रहा था कि मैं बात कर रहा हूँ, तब क्यों दीदी को आने दिया ?"

दुर्गा बोली, "जैसे तुम्हारे साहब को कोई काम-धाम नहीं है वैसे ही और किसी को भी नहीं है, यही तुम्हारे साहब ने समझ लिया है न ? हमारा यहाँ पड़े रहने से कैसे चलेगा ?"

हरीचरण ने कहा, "यह तो साहब ने कह दिया है दीदी, कि अब लड़ाई खत्म हो गयी है अब तुम लोगों को घर भेज देगा।"

"नहीं भैया, तुम्हारा साहब बिगड़े या न बिगड़े, मैं अभी जा रही हैं।

हरीचरण घबड़ाकर बोला, "दीदी, इतने जोर से न बोलो ! साहब .

"धत्तेरे ! तुम्हारा साहब जाय भाड़ में !"

"नहीं दीदी, तुम साहब को नहीं पहचानती। साहब हँसकर बात करता है तो यह मत समझ लो कि वह गुस्सा करना नहीं जानता। साहब का गुस्सा करना तो तुमने देखा नहीं, साहब गुस्सा करता है तो अनर्थ हो जाता है।"

"लेकिन हम क्या तुम्हारे साहब का खाती हैं, कि उसका ..."

कर ले तो समझूँ !"

इतना कहकर दुर्गा वहाँ रुकी नहीं। पीछे से छोटी बहूरानी ने पुकारा, "वहाँ मर्द लोग बातें कर रहे हैं, वहाँ तू क्यों जा रही है दुर्गा? अगर कोई देख ले तो क्या होगा?"

"देख ले न, मेरा क्या करेगा जरा सुनूँ?"

"कहीं बात बिगड़ गयी तो? जरा घूँघट खींच ले चेहरे पर तब जा।"

हरीचरण ने एक बार और रोकना चाहा। कहा, "तुम्हारे पाँवों पड़ता हूँ दीदी, मत जाओ। बार-बार मना करने पर भी तुम नहीं मानती। रुको, मैं ही साहब को बुला लाता हूँ, फिर तुम्हें जो कुछ कहना है यहीं कहो।"

"लेकिन ये मुँहजले क्या दिन भर यहीं बैठे-बैठे बातें करेंगे?"

इतना कहकर दुर्गा आँगन पार कर साहब के कमरे की ओर जाने लगी।

●

आज काफी दिनों बाद उद्धवदास मुल्लाहाटी आया था।

मधुसूदन कर्मकार ने उसे देखकर कहा, "इतने दिन कहाँ थे भगत जी? नवाब के आदमी कब से तुम्हें ढूँढ़ते फिर रहे हैं।"

"मैं किसी का नौकर थोड़े हूँ भाई।"

"जब परवाना दिखाकर पकड़ ले जायेंगे तब पता चलेगा।"

उद्धवदास ने हँसते हुए कहा, "परवाना तो भाई एक दिन सभी का आना है और जब आयेगा तो जाना ही पड़ेगा। लेकिन उससे पहले यह पोथी पूरी करनी है। थोड़ा-सा गुड़ निकालो तो खाकर पानी पी लूँ।"

कहकर उद्धवदास खुद ही लोटे में पानी लेकर हाथ-पैर धोने लगा। इसके बाद पोटली खोलकर अँगोछा निकालते हुए कहने लगा, "जहाँ देखो वहीं लड़ाई, कहीं शांति से बैठकर पोथी लिख सकूँ, इतना भी संभव नहीं है। आखिर इस लड़ाई से फायदा क्या है?"

मधुसूदन ने कहा, "सभी तुम्हारी तरह फक्कड़ थोड़े हो जायेंगे। तुम्हारी तरह हर कोई बिना बहू और बाल-बच्चों वाला थोड़े ही है।"

"बहू के होने पर भी मैं इस झमेले में नहीं पड़ता। मजे से खाता और अपनी पोथी लिखता। अच्छा, अपनी पोथी का आदि पर्व तुम्हें सुनाता हूँ, कैसा लगता है बतलाना।"

कहकर उद्धवदास ने अपनी पोटली में से पोथी निकालकर पढ़ना शुरू किया—

प्रथम वन्दौं देव गणपति।
वन्दौं दूजे माता वसुमति॥
पूरब ते वंदौं देव दिवाकर।
पश्चिम वंदौं पंच पैगम्बर॥

वंदौं उत्तर नगाधीश हिमालय।
दक्षिण वंदौं सिंधु रामेश्वर॥

मधुसूदन ने कहा, "वाह भगत जी, वाह, आपने तो कमाल कर दिया।"

"राय गुणाकर से बढ़िया है या नहीं ?"

लेकिन तभी वहां कान्त आ पहुँचा।

"वाह भगत जी, आप यहाँ हैं और मैं आपको ढूंढता फिर रहा हूँ। चलिए, मुर्शिदाबाद चलकर नवाब को थोड़े भजन सुना आइए।"

"मैं क्यों चलूँ, नवाब को भजन सुनना है तो यहाँ आये! मैं कोई तुम्हारे नवाब का नौकर हूँ ?"

"तुम तो नाराज हो गये भगत जी।"

"नाराज नहीं होऊँगा ? रामप्रसाद सेन का भजन सुनने के लिए नवाब महाराज कृष्णचन्द्र के बजरे तक गये, और मेरे भजन सुनने नहीं आ सकते ?"

मधुसूदन कर्मकार ने कहा, "हो आओ न भगत जी, नवाब ने इतने प्रेम से तुम्हें बुलाया है।"

सुनकर जैसे उद्धवदास का मन भी पिघलने लगा। उसने कहा, "ठीक है, प्रेम से बुलाया है तो चलो, चलता हूँ। वैसे हुक्म मैं एक हरि का छोड़कर और किसी का नहीं मानता।"

चलते-चलते कान्त ने पूछा, "भगत जी, तुम्हें बहू की याद आती है ?"

उद्धवदास ने कहा, "मैं बहू के ऊपर एक काव्य लिख रहा हूँ, तुम्हें नहीं मालूम ?"

कान्त ने कहा, "यह सब बात रहने दो। तुम भी मनुष्य हो, तुम्हारा शरीर भी रक्त-मांस का बना है, इसलिए तुम्हें भी भूख-प्यास लगती है, तुम कोई पत्थर थोड़े हो ? बहू के लिए क्या तुम्हें दुःख नहीं होता ?"

उद्धवदास ने कहा, "तुम जो इतनी बातें कर रहे हो, क्या तुमने शादी की है ?"

कान्त ने कहा, "मेरी शादी हो गयी है भगत जी।"

"शादी हो गयी है ? बहू कहाँ है ?"

कान्त बोला, "मेरी बात छोड़ो भगत जी, तुम अपनी बात कहो, तुम्हारी बहू कहाँ है जानते हो ?"

उद्धवदास ने कहा, "मेरी बहू तो क्लाइव साहब की बगान-बाड़ी में है।"

"तुम्हारी बहू वहाँ क्यों रहती है ? तुम जबर्दस्ती उसे ला नहीं सकते अपने पास ?"

उद्धवदास हँसा। बोला, "तुमने शादी की है, लेकिन तुम्हें यह बात नहीं मालूम ? बहू और हरि दोनों के स्वभाव एक समान है। बुलाने पर या जबर्दस्ती करने पर कोई नहीं आता। कितने ही लोग तो मंदिरों में जाकर हरि का नाम ले-लेकर गला

फाड़कर चिल्लाते हैं, कितने ही लोग तो मसजिदों में जाकर नमाज पढ़ते हैं, लेकिन क्या इससे आता है ? बताओ न, चुप क्यों हो गये ? हरि आता है उनके पास ?"

कान्त ने पूछा, "फिर हरि कैसे आता है ?"

उद्धवदास ने कहा, "हरि को बुलाने पर हरि नहीं आता। हरि का नाम लेकर जीवन समर्पित करना पड़ता है।"

"कैसे ?"

उद्धवदास ने कहा, "फिर सुनो भाई, एक गाना सुनाता हूँ।"

उद्धवदास गाना शुरू करने जा ही रहा था कि कान्त ने उसे रोककर क "अब गाने की जरूरत नहीं है, तुम्हारा गाना देश-विदेश तक पहुँच गया है। तुम्हारा गाना गाते हैं नवाब के कानों तक यह बात पहुँची है। इसीलिए नवाब ने बुला भेजा है। वे तुम्हारा गाना सुनना चाहते हैं।"

"क्या तुम नवाब की नौकरी करते हो ?"

कान्त ने कहा, "देखो, नवाब को अगर खुश कर सको तो तुम्हें खि मिलेगी, जागीर मिलेगी, दौलत मिलेगी।"

उद्धवदास ने कहा, "यह लालच तुम राय गुणाकर को दिखाओ, वह नवा तारीफ में पोथी लिख डालेगा। मैं तो अपनी बहू को लेकर पोथी लिखूँगा। मेरी ब तुम नहीं जानते। हतियागढ़ के राजा छोटे सरकार के नौकर शोभाराम विश्वा बेटी, बड़ी तेज-तर्रार लड़की, मैं उसे पसंद नहीं आया, इसलिए वह घर छो भागी है।"

"जो बहू भाग गयी है उसे लेकर क्या लिखोगे ?"

उद्धवदास ने कहा, "वह बहू तो तुम लोगों की बहुओं की तरह मामूली है न। बड़ी जबर्दस्त बहू है। तुम लोगों की बहुएँ तो बस खाना पकाती हैं और पैदा करती हैं लेकिन यह, यह सब नहीं करती। यह भी मेरी तरह फक्कड़ है, चक्कड़ है। एक बार यहाँ जाती है तो एक बार वहाँ। इस समय क्लाइव साहब के है। लेकिन वहाँ भी क्या समझते हो रहेगी ? एक जगह रहने वाली लड़की ही व है। वहाँ से भी भागेगी। जिस तरह मैं यहाँ-वहाँ घूमता रहता हूँ, उसी तरह व घूमती रहती है।"

दोनों बातें करते हुए जा रहे थे।

मुल्लाहाटी से सवेरे निकले थे और अब सूरज बीच आसमान में पहुँच था। फेरीघाट के पास आते ही कान्त पेड़ के नीचे बैठ गया। नाव उस पार गयी सर पर चिलचिलाती धूप थी। सामने की ओर देखकर कान्त का सर मानो च लगा। कान्त का अपना जीवन भी तो इसी तरह घूमते हुए बीत चला है। अ उद्धवदास भी तो जीवन भर से घूम ही रहा है, लेकिन इसे तो थकावट नहीं आती बगल में देखा, उद्धवदास वहीं जमीन पर सो गया है। हाथ की पोटली सर के रख ली है और जोर-जोर से साँस छोड़ रहा है। कान्त ने नदी के उस पार देखा

वहाँ से छूट चुकी थी।

सहसा उत्तर दिशा से जोरों की आवाज आने लगी। कान्त ने मुड़कर देखा। देखा, दूर से मानो गर्द का पहाड़ आगे बढ़ा आ रहा है। काल-वैसाखी की आँधी चलनी शुरू हो गयी क्या ? हाँ, यही तो आँधी चलने का समय है। कान्त ने जल्दी-जल्दी उद्धवदास को पुकारा, "भगत जी उठो, देखो आँधी आ रही है।"

लेकिन उद्धवदास की नींद कच्ची नहीं थी।

कान्त ने फिर देखा, आँधी-वाँधी कुछ नहीं है। नवाब की फौज आ रही थी। सामने हाथियों के झुंड, फिर घोड़े, उसके पीछे सिपाही तोपें खींचते हुए आ रहे थे। बड़ी-बड़ी लंबी तोपें। कान्त आड़ में होकर सब कुछ देखता रहा। कान्त को फौज वाले जानते थे। उनके साथ कान्त हुलसीबगान में था। फौज देखने के लिए आसपास के गाँवों से बच्चे-बूढ़े सभी फेरीघाट पर आ जुटे थे। उनकी भीड़ में खड़े कान्त पर किसी की निगाह नहीं पड़ी। फौज जब आगे बढ़ गयी तब शशी की निगाह कान्त पर पड़ी। शशी एकदम पीछे था।

"अरे तू ? तू फिर कब फौज में भरती हो गया ?"

शशी ने पूछा, "तू यहाँ क्या कर रहा है ?"

कान्त ने कहा, "मैं अपने काम से आया था। लेकिन फौज वापस क्यों आ रही है ? लड़ाई में हार गयी क्या ?"

"नहीं, लड़ाई हुई ही नहीं। निजामत से हुक्म आया है लौट चलने के लिए।"

शशी मुस्कराया। कान्त को अपने पास बुलाया। कहा, "मेरे पास आ, तुझे एक बात कहनी है।"

फिर कान्त के कान के पास मुँह ले जाकर फुसफुसाकर बोला, "लड़ाई होगी। अन्दर ही अन्दर साजिश चल रही है।"

कान्त को बड़ा आश्चर्य लगा। अभी तो मुर्शिदाबाद में देख आया कि कोई खास बात नहीं है और नवाब आराम से मोतीझील में रह रहे हैं। इसी बीच यह सब क्या हो गया ?

कान्त ने पूछा, "फिर तो तेरी नौकरी रहेगी।"

"रहेगी भाई, जरूर रहेगी। अब कोई डर नहीं है।"

"लेकिन तूने कैसे समझा कि फिर लड़ाई होगी ? किसने कहा तुझसे ?"

शशी ने कहा, "मुझे खबर मिली है। सभी क्लाइव के पास गये थे।"

"कौन-कौन गये थे ?"

"सभी। एक दिन मैं छुट्टी लेकर लक्काबाग से कालीघाट के मंदिर में गया था। काली माँ को डाली चढ़ायी, कहा, माँ, लड़ाई बंद न हो। लड़ाई बंद होने से मेरी नौकरी चली जायेगी।"

कान्त ने पूछा, "लेकिन यह तो बता कि कौन-कौन क्लाइव के पास गये थे ?"

"अरे सभी गये थे। यार लुत्फ खाँ से लेकर हमारे मनसबदार तक, सभी।"

"लेकिन क्यों गये थे ?"

शशी ने कहा, "बेगम साहबा पर वे बेहद नाराज हैं।"

"कौन बेगम साहबा ? नानी बेगम साहबा ?"

शशी ने कहा, "अरे नहीं। वह जो हिन्दू बेगम है न। मरियम बेगम। वही जो हलसीबगान में आयी थी। उसी पर सभी बिगड़ गये हैं। क्लाइव भी बिगड़ा हुआ है। तुझे नहीं मालूम, वही बेगम तो क्लाइव साहब के दफ्तर में घुसकर अमीचंद की चिट्ठी चुरा लायी थी। वही आजकल नवाब को हिकमत बता रही है। इस समय नवाब तो उसी की मुट्ठी में है।"

शशी ने पूछा, "तू नहीं जानता ? यह तो सभी को मालूम है।"

बात करते-करते कान्त फौज के साथ बहुत दूर चला आया था। इसलिए अब लौटा। उसे ऐसा लगा मानो शशी बहुत खुश है। लड़ाई होगी यही जानकर वह खुश है। लेकिन उसे ताज्जुब भी हुआ, आखिर मराली पर ये लोग इतना खफा क्यों हैं ? मराली तो सबका भला चाहती है। मराली चाहती है, नवाब का भला हो और नवाब सबका भला करे। मराली की बात मानकर नवाब बदल गये हैं। आजकल वे रोज कुरान पढ़ते हैं। नवाब को मराली रोज महाभारत पढ़कर सुनाती है। कौन राजा अच्छा है, कौन नवाब अच्छा है, कैसे प्रजापालन किया जाता है, यह सब नवाब मन लगाकर सुनता है। मराली के कहने पर ही नवाब ने अमीचन्द, नन्दकुमार और नवकृष्ण को छोड़ दिया। फिर भी सब उस पर खफा हैं। फिर क्या नवाब पहले जैसा आचरण करता तो ठीक रहता ?

कान्त का दिल काँपने लगा। अगर सचमुच मराली को कुछ हो-हवा गया तो क्या होगा ? अगर सचमुच उस पर कोई आपत्ति आयी तो कान्त क्या करेगा ? कैसे मराली को बचायेगा ? और मराली ही न बची तो कान्त के बचे रहने से ही क्या लाभ ?

उद्धवदास उस समय भी मजे से सो रहा था।

कान्त उसे धक्का देकर जगाने लगा, "भगत जी ! ओ भगत जी ! उठो।"

उद्धवदास उठा; बोला "इतना शोरगुल क्यों हो रहा है ? जरा आराम से सो रहा था, पर कोई सोने दे तब न।"

कान्त ने कहा, "नाव आ गयी है, चलो।"

उद्धवदास न चाहते हुए भी उठा। फिर पोटली बगल में दबाये घाट की तरफ चला।

●

इतिहास की शिक्षा बड़ी कठिन शिक्षा है। जो वह शिक्षा नहीं पाता वह अंधा है। इतिहास ने बार-बार प्रमाणित कर दिया है कि षड्यन्त्र राजनीति का ब्रह्मास्त्र है। तुम अलेक्जेन्डर, नेपोलियन या क्रॉमवेल हो सकते हो, लेकिन अगर साम्राज्य स्थापित

करना चाहते हो तो षड्यन्त्र के ब्रह्मास्त्र के बिना सफलता नहीं मिलने की।

उद्धवदास कहता, "कलियुग का अधिष्ठाता देव कलि ही है।"

लोग पूछते, "क्यों?"

तब उद्धवदास व्याख्या करके समझाते। क्रोध के औरस से उसकी बहन हिंसा के गर्भ से कलि का जन्म हुआ। कलि ने भी अपनी बहन दुरुक्ति से विवाह कर लिया, जिससे दो सन्तानें हुईं। लड़के का नाम था भय और लड़की का मृत्यु। इन भय और मृत्यु से कलियुग शुरू होता है।

नादिरशाह ने जब हिन्दुस्तान पर हमला किया था, उस समय वह दिल्ली की मसजिद पर खड़े होकर निरीह लोगों की निष्ठुर हत्या देखकर आनन्द और उत्तेजना से अपनी फौज के सिपाहियों को बार-बार उत्साहित करता था। वह कहानी दिल्ली से दूर-दूर तक लोगों के मुँह से फैल गयी थी। डर और मौत का जो चित्र उस दिन मे लोगों के मन में खिंच गया था वह कभी न मिट सका। खाकर भी उन्हें सुख नहीं था, सो-कर भी चैन नहीं था, बस हर वक्त यही डर बना रहता था कि शायद वह मौत आ गयी।

छुटपन में, मराली जब बहुत छोटी थी, यह सब कहानी सुन चुकी थी। सोते में मदन बुआ ने उसे अचानक जगा दिया है—अरे उठ! उठ!

हड़बड़ाकर सभी नींद से जाग पड़ते थे। फिर बड़े सरकार के महल में जाकर छिप जाते थे। दो-चार-दस लोग नहीं, पूरे गाँव के लोग वहाँ जुटते थे। इतने सारे लोग एक हवेली में कैसे जगह पाते? अतिथिशाला, पूजा-मंडप, शिवमंदिर, कचहरी हर कहीं लोगों की भीड़। माधव ढाली छत पर से छोटी तोप दागता रहता। बड़े सरकार ऊपर से यह सब देखते। महल के चारों तरफ खाई में पानी भरा जाता था और फिर चारों तरफ पुआल की मढ़ियों में आग लगा दी जाती थी। आग देखकर बर्गी शायद डर जाते। फिर सुबह सभी लोग अपने-अपने घर चले जाते।

यही थी उन दिनों की हतियागढ की जीवन-यात्रा। मराली ने यह सब देखा था। फिर लोग टोली बनाकर जनवास में, चंडीमंडप में, ढेंकी की मड़ैया में और पूजा-मंडप के आँगन में इस बारे में बातें करते। उनकी बातें भी मराली ने सुनी थी। वे लोग आपस में बातें करते कि मुगलों को भगाकर पठान आ रहे हैं या कहते पठानों को भगाकर बर्गी आ रहे हैं।

लोग कहते, मुर्शिदाबाद का नवाब बस हरम में बैठे-बैठे शराब पीना और बेगमों को लेकर ऐश करता है।

उसी समय से मराली के मन में गुस्सा था। नवाब का नाम सुनते ही उसकी आँखों के आगे एक विचित्र तस्वीर तिर जाती थी। फिर सचमुच भाग्य के फेर से उसका नवाबी हरम में आना तय हुआ तो वह मन ही मन बहुत डर गयी थी। उसने पेट के पास आँचल में छिपाकर हतियागढ के लोहार का बनाया एक चाकू ले लिया था। सोचा था, अगर कुछ हो-हवा जाये तो उस चाकू से या तो अपनी जान ले लेगी या

बाद की। लेकिन नवाबी हरम में पहुँचकर वह आश्चर्य में पड़ गयी। अरे, यहाँ के ोग तो मुझसे कुछ भी नहीं कहते। नानी बेगम को देखकर वह अवाक् रह गयी। ोक नयन बुआ की तरह थी नानी बेगम। एक दिन नवाब को भी उसने देखा, लेकिन हाँ ? नवाब तो हरम में आता ही नहीं। और, नवाब तो शराब पीता भी नहीं।

फिर जैसे-जैसे दिन बीतते गये और भी विचित्र घटनाएँ घटने लगीं। बड़ी ही साधारण एक गाँव की लड़की के जीवन में इससे विचित्र और क्या हो सकता था ? अगर उसकी शादी हो जाती और वह ससुराल चली जाती तो शायद अब तक उसके कई बाल-बच्चे हो जाते। रोज रात को अपने आदमी के साथ सोती और दिन में ढेंकी से धान कूटकर चावल बनाती और घरवालों के लिए भात पकाती। उद्धवदास के साथ शादी होने पर भी वह जो करती कान्त के साथ शादी होने पर भी उसे वही करना होता। कहीं कोई फर्क नहीं पड़ता।

उद्धवदास के बारे में वह नहीं सोचती थी, लेकिन कान्त के लिए उसे अफसोस होता था। यही तो कान्त है न !

कान्त बोलता कुछ नहीं, चाहता भी कुछ नहीं। मराली जो कुछ कहती उसी को पूरा कर मानो वह कृतार्थ हो जाता। उसी के लिए वह परछाईं की भाँति नवाब के साथ रहता, और पता नहीं कहाँ-कहाँ चक्कर लगाता। नवाब का कहीं कोई नुक-सान न हो जाय इसी डर से वह काँपता रहता।

कान्त कहता, "लोग तुम्हें जान से मारने की साजिश कर रहे हैं मराली।"

मानो मराली मर जायेगी तो कान्त का सर्वनाश हो जायेगा।

यार लुत्फ खाँ साहब के मकान के सामने से जाते समय मराली को बार-बा यही सब बातें याद पड़ी थीं। पालकी के कहार जानते थे कि किस तरफ कौन-स मकान मनसबदार साहब का है। रात काफी हो चुकी थी। सारा मुर्शिदाबाद शहर स चुका था और भी उधर जगत्सेठ जी का मकान था। मराली ने पालकी की खिड़कं से झाँककर बाहर का माहौल देख लिया। अँधेरा जैसे गमक रहा था !

एक मकान के सामने आकर तामजान रुक गया। तामजान के रुकते ही मराल ने पेट के पास छिपाकर रखा चाकू देख लिया। फिर वह बाहर जाकर खड़ी हो गयी उसने बुरके से अपने को ढँक लिया।

लेकिन चौक बाजार की अँधेरी सड़क के अँधेरे मोड़ पर उस समय बशीर मि चुपचाप छिपकर खड़ा था। दूर से सड़क जहाँ तक दिखाई पड़ती, बड़े ध्यान से उ देख रहा था। शाही सड़क सीधी होती है। दिन में फिर भी भीड़ रहती है लेकिन र के वक्त लोग कहाँ चलते ? कोतवाली के पहरेदार दूसरे समय तो पहरा देते, लेवि इस समय जब चारों तरफ कोई चहल-पहल नहीं थी तब उनका झमेला भी कम और वे भी ढीले पड़ गये थे।

एक बार तो ऐसा लगा मानो तामजान आ रहा है। अँधेरे में धुंधली छाईं की तरह चेहल-सुतून की तरफ आ रहा है। फिर लगा, नहीं, देखने की भूल

अकेले बशीर मियाँ पर जिम्मा नहीं था। थोड़ी दूर पर और चार आदमी अँधेरे में छुपे बैठे थे।

बशीर मियाँ कभी भी कच्चा काम नहीं करता।

बैठे-बैठे बशीर मियाँ की कमर दुखने लगी। जेब से एक बीड़ी निकालकर उसने सुलगा ली। मुट्ठी में आग छिपाकर वह मुँह से धुआँ छोड़ने लगा। साली जासूसी झंझट का काम है। दिन हो या रात हो बस परछाईं के पीछे टोह लगाते फिरो। हुक्म करने में तो पैसा खर्च होता नहीं। मंसूर अली तो हुक्म देकर इस समय आराम से नाक बजा रहे हैं। अगर हुक्म तामील न हुआ तो झाड़ बशीर को सुननी पड़ेगी।

अठारहवीं सदी की रातें बड़ी भयंकर थी। इन्हीं रातों के अँधेरे में साजिश करने वाले चोरों की तरह दिल्ली से लेकर हिन्दुस्तान की गली-गली में निकल पड़ते थे। कहाँ कौन किसका तख्त छीन लेगा, कौन किसके खिलाफ जासूस छोड़ेगा, कौन किस दिन इस दुनिया से चुपचाप गायब हो जायेगा, इसी के विष-मन्त्र इन रातों की अँधियारी में पढ़े जाते थे। ऐसी ही एक रात हतियागढ़ से बंगाल की ऐश्वर्य-लक्ष्मी अनजान राह पर निकल आयी थी। ऐसी ही एक रात मराली ने चेहल-सुतून में आकर भाग्य-लक्ष्मी को ठुकरा दिया था। ऐसी ही एक रात वाट्स साहब भेस बदलकर दो-हजारी मनसबदार यार लुत्फ खाँ के मकान में घुसा था।

उस रात एक क्षण के लिए भी नानी बेगम साहबा सो न सकी।

एक बार झपकी आती कि वे हड़बड़ाकर उठ बैठती।

लेकिन कहीं कोई नहीं था। चेहल-सुतून में रात को जागने से ऐसी बहुत सारी आवाजें सुनाई पड़ती थीं। कितनी ही पीढ़ियों से यहाँ खून-खराबी होती रही है, खामोशी से मर मिटने की कराह यहाँ की कोठरियों में बंद है, रात के अँधेरे में शायद वे ही अदृश्य आत्माएँ कब्र से निकल आतीं। शायद वे ही आत्माएँ फिर घुँघरू पहन लेती हैं, पेशवाज पहन लेती हैं, अँगिया-लँहगा पहन लेती है, अर्क पीती हैं, हँसना और रोना शुरू करती हैं, फिर पागलों की तरह नाचना शुरू कर देती हैं। मानो फिर गुलशन बेगम गाना शुरू करती है—जो होना था वह हो गया अब उसकी क्या परवाह है।

नानी बेगम साहबा यह सब समझती थी। लेकिन मन का सन्देह दूर नहीं होता था। क्या मरियम बेगम मोतीझील से लौट आयी? क्या मसजिद में नमाज पढ़ने का समय हो गया? भिश्ती पानी छिड़क गया?

उस रात नानी बेगम ने अचानक सोते में उठकर पुकारा, "पीर अली! पीर अली खाँ!"

चेहल-सुतून में शायद पीर अली को ही नींद नहीं थी। मुर्शिद कुली खाँ के जमाने से वह जागा बैठा है। जागते हुए वह इस चेहल-सुतून का उत्थान-पतन और अभ्युत्थान-अवनति देखता आ रहा है। सत्रहवीं सदी में जो अवक्षय शुरू हो गया था, शायद वही अकेला उसका साक्षी था। उसने मुर्शिद कुली खाँ को देखा है, शुजाउद्दीन

खाँ को देखा है, सरफ़राज खाँ को देखा है और देखा है अलीवर्दी खाँ को। अब एक और नवाब को देख रहा है। यह नवाब सोना चाहता है। यह नवाब कुरान पढ़ना चाहता है। यह तो अजीब बात है। यह सब देखने के लिए ही मानो पीर अली खाँ इतने साल जी गये।

पीर अली के आने पर नानी वेगम ने कहा, "क्यों रे पीर अली, मरियम वेगम आ गयी?"

"जी नहीं वेगम साहबा!"

नानी वेगम को फ़िक्र होने लगी। मरियम इतनी देर तो कभी भी नहीं करती। तब क्या मिर्जा ने उसे रोक लिया है। क्या मिर्जा को आज फिर नींद नहीं आयी?

इन्हीं सब रातों में कासिमवाजार कोठी के दफ्तर में बैठे-बैठे वाट्स साहब कलकत्ते की कौंसिल के पास डिस्पैच लिख भेजता है। निजामत की सारी कॉनफिडेंशियल खबरें। कहाँ कौन किस तरह कांसपिरेसी में मदद करेगा। जगत्सेठ का मतलब क्या है? वह किधर झुक रहा है? फ्रेंच कोठी की तरफ या ब्रिटिश कोठी की तरफ? अगर जगत्सेठ किसी तरह हमारी तरफ हो जाय तो फिर चिंता किस बात की!

उधर जगत्सेठ की हवेली में उस रात को गुप्त मंत्रणा चल रही थी। भीखू शेख को आज खास तौर से होशियार रहने का हुक्म हुआ था।

कोई परछाईं देखते ही भीखू शेख चिल्ला पड़ता, "भाग साला कुत्ते का बच्चा।"

जिस दिन अमीचंद साहब आता है, उस दिन और भी कड़ी निगाह रखने की ताक़ीद होती मालिक की तरफ से। उस दिन भीखू शेख का रोवदाव देखने लायक होता है।

"भाग साले इधर से!"

पठान भीखू शेख अपनी खबरदारी की मसनद पर जैसे नवाब वन बैठता। वह नहीं जानता कि कौन अमीचंद है, या कौन वाट्स है यार लुत्फ खाँ है? वह बस जानता है हिन्दुस्तान के मालिक महतावचन्द जगत्सेठ बहादुर को। खुदाताला अगर इस मालिक को जिन्दा रखते हैं तो उसे भी बराबर रोटी मिलती रहेगी।

वाट्स ने एक खत निकालकर पढ़ना शुरू किया।

खत यार लुत्फ खाँ का था।

लिखा था, 'नवाब जल्दी ही अहमद शाह अब्दाली को रोकने के लिए आजिमाबाद जा रहे हैं। इस वक्त नवाब अंग्रेजों से दोस्ती का दिखावा कर रहे हैं। लेकिन आजिमावाद से वापस आते ही वे अंग्रेजों को हिन्दुस्तान से बाहर निकालने का बीड़ा उठायेंगे। सारे अमीर-उमराव नवाब के खिलाफ हैं। नवाब की गैरहाजिरी में अंग्रेजी फौजें मुर्शिदाबाद पर हमला करें तो हम लोगों की पूरी मदद मिलेगी। लक्कावाग से फौजें हटाना भी नवाब की एक चाल है। आप लोग मुझे नवाब बनाने को तैयार हों

तो राजा दुर्लभराम और जगत्सेठ जी आदि मेरी मदद करेंगे।'

वाट्स ने पूछा, "मनसबदार ने जो लिखा है, वह सब सच है ?"

सेठ जी ने कहा, "और मीर जाफर साहब ?"

वाट्स ने बतलाया, "मीर जाफर ने लिखकर नहीं दिया मुँह-जबानी कहा है।"

"क्या कहा ?"

पास अमीचन्द साहब बैठा था। उसने कहा, "मीर जाफर साहब ने मुझे खत लिखा है। वह खत मेरे पास है। मैं वही खत लेकर कर्नल क्लाइव के पास जाऊँगा।"

जगत्सेठ जी ने पूछा, "मुझे वह खत दिखाने में कोई आपत्ति तो नहीं है ?"

अमीचंद ने कहा, "आपको दिखाने में क्या आपत्ति हो सकती है सेठ जी, आप तो हमारे ही साथ हैं। यह लीजिए, सुनिए।"

अमीचंद ने खत पढ़ना शुरू किया—

'खुदा और पैगम्बर के नाम कसम खाकर मैं वादा करता हूँ कि जितने दिन मैं जिन्दा रहूँगा इस राजीनामे की शर्तों को मानता रहूँगा—

(१) नवाब के साथ अंग्रेजों की जो सुलह हुई है, मुझे उसकी सारी शर्तें मंजूर हैं।

(२) हिन्दुस्तान या यूरोप में जो भी अंग्रेजों का दुश्मन होगा, वह हमारा भी दुश्मन होगा।

(३) फ्रांसीसियों को बंगाल से निकाल बाहर किया जायेगा और उनकी सारी कोठियाँ अंग्रेजों को दे दी जायेंगी। फ्रांसीसियो को इस मुल्क में बसने नहीं दिया जायेगा।'

बशीर मियाँ बहुत देर तक चौक बाजार की सड़क पर बैठा रहा। एक-एक कर चार बीड़ियाँ फूँक डालीं। फिर भी मरियम बेगम का तामजान दिखाई न पड़ा। फिर वह धीरे-धीरे अपने एक साथी के पास गया, बोला, "तुम लोग चुपचाप खड़े रहो, मैं पता लगाकर आता हूँ।"

बशीर मियाँ मोतीझील के फाटक पर पहुँचा।

फाटक पर पहरेदार उस समय भी पहरा दे रहा था। बशीर मियाँ ने उससे पूछा, "क्यों मियाँ साहब, बेगम साहबा का तामजान अभी तक नहीं निकला ?"

पहरेदार ने पूछा, "क्यों जी, बेगम साहबा के बारे में इतनी पूछ-ताछ क्यों ?"

"नहीं, ऐसे ही पूछ रहा हूँ। बेगम साहबा क्या आजकल नवाब के साथ ही सो रही है ?"

पहरेदार बिगड़ गया। बोला, "नवाब चाहे जिसके साथ सोवे, इससे तेरे बाप

का क्या बिगड़ता है ?"

बशीर मियाँ हो-हो कर हँसने लगा। गुस्सा होने पर बशीर मियाँ का का नहीं चलता। काम उसे निकालना ही होता है।

बशीर मियाँ बोला, "नाराज हो रहे हो मियाँ साहब ? नाराज होने की कौन सी बात कही ?"

"नाराज़ हुआ तो ठीक किया। तेरे बाप का क्या आता-जाता है ?"

बशीर मियाँ फिर भी हँसने लगा। बोला, "मेरे बाप को क्यों घसीट रहे मियाँ साहब ? मेरा बाप तो कभी का मर चुका है। साला बाप मरा भी है और मु कंगाल भी बना गया है।"

"भाग ! भाग ! तू यहाँ से भाग !"

बशीर मियाँ ने अंदर निगाह दौड़ाकर देखा, मोतीझील के बरामदे में बेग साहबा का तामजान नहीं था। फिर बेगम साहबा कहाँ गयी ? चली गयी क्या ? लेकि चेहल-सुतून जाने के लिए कोई दूसरा रास्ता तो नहीं है।

उसी रात बशीर अपने फूफा के घर पहुँचा।

पुकारा, "फूफा जी ! ओ फूफा जी !"

मंसूर अली को रात में नींद कम आती है, आधी रात तक तो नहीं ही आती दफ्तर से मेंहदी निसार के घर जाना पड़ता है। नौकरी की खातिर वहाँ जाकर खुशाम करनी पड़ती है। निसार साहब के न रहने पर भी वहीं गद्दे पर थोड़ी देर बैठना पड़ता है, पान-तमाखू खाना पड़ता है। निसार साहब के घर में होने पर हर बात में 'हाँ जे करना पड़ता है। मंसूर साहब की पाँच बीवियाँ थीं। आज इसके साथ सोना पड़त है तो कल उसके साथ। बीवियों का मिजाज रखने के लिए शराब की प्याली गटकक बिस्तर पर करवटें बदलते रहना पड़ता है।

बशीर मियाँ के बुलाने पर निसार साहब की कच्ची नींद टूटी।

"साला सूअर का बच्चा, चिल्ला क्यों रहा है ?"

"फूफा जी, तामजान नहीं मिला।"

"किसका तामजान ? किस हरामजादी का तामजान ?"

नींद की खुमारी में मंसूर साहब को कुछ भी याद नहीं था।

फिर जब मंसूर साहब को ख्याल आया तो वह और भी बिगड़ गया। बोला "बदतमीज, बेवकूफ, बेअदब कहीं का ! तामजान नहीं मिला तो मेरे पास क्यों आय है ? ढूँढ़, कहाँ गया। तामजान क्या आसमान में उड़ जायेगा ? मुर्शिदाबाद शहर में अच्छी तरह ढूँढ़। अगर तामजान न मिला तो समझ ले, तेरी नौकरी खतम।"

इसके बाद बशीर मियाँ को कुछ कहने की हिम्मत न पड़ी। फूफा से डांट सुनकर वह फिर तामजान ढूँढ़ने चला गया।

जगत्सेठ के दरबार में उस समय मीर जाफर साहब का राजीनामा पढ़ा जा रहा था।

जगत्सेठ ने पूछा, "फिर क्या हुआ ?"

अमीचंद साहब पढ़ने लगा, 'कलकत्ते के अंग्रेज बाशिंदों को लूटमार में जो नुकसान हुआ है उसके लिए पचास लाख रुपये का हर्जाना देने का वादा कर रहा हूँ। देशी लोगों को जो नुकसान हुआ है उसके लिए बीस लाख रुपये अलग दूँगा।'

ठीक तभी दरवाजे पर दस्तक हुई।

सेठ जी ने खुद उठकर दरवाजा खोला।

सामने भीखू शेख खड़ा था।

"एक तामजान आया है हुजूर !"

"इस वक्त किसका तामजान आया ?"

"हुजूर, कोई औरत है।"

औरत ! सुनकर सेठ जी को बड़ा अजीब लगा। रात को इस वक्त यह कौन औरत आयी है ? दरवाजा बंदकर सेठ जी दीवानखाने के पास ही खड़े हो गये।

बुरका पहने एक आकृति को देखकर सेठ जी को और भी आश्चर्य होने लगा। उन्होंने पूछा, "आप कौन हैं ?"

बुरके में छिपी वह औरत और भी पास आ गयी। चारों तरफ अच्छी तरह देख लेने के बाद बुरके में से एक चेहरा बाहर झलका। फिर भी सेठ जी पहचान नहीं पाये। तब आगंतुक स्त्री ने बुरका उतार दिया। कहा, "आप मुझे पहचान नहीं पायेंगे सेठ जी। मैं भी आपकी तरह हिन्दू हूँ। एक हिन्दू लड़की। मैं हतियागढ़ के राजा की छोटी बीवी हूँ।"

जगत्सेठ को सचमुच बड़ा आश्चर्य हुआ।

उस औरत ने कहा, "यहाँ चेहल-सुतुन में मुझे मरियम बेगम कहते हैं, लेकिन मेरा असली नाम कुछ और है। बड़ी मुसीबत में पड़कर आपके पास आयी हूँ।"

"ओह, तो आप मरियम बेगम हैं ! बैठिए, मैंने आपके बारे में सुना है। कहिए, मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ ?"

जगत्सेठ बैठे। लेकिन मराली नहीं बैठी।

"आपको तो सब मालूम ही होगा सेठ जी, आपके नवाब ने मुझे जबर्दस्ती यहाँ ला पटका है।"

जगत्सेठ ने कहा, "मैंने सब सुना है। आपके पति मेरे पास आये थे। उन्होंने सब कहा है।"

"मैं कई दिनों से आपके पास आने की बात सोच रही थी। यार लुत्फ खाँ साहब के पास जाने की बात भी सोची, लेकिन वहाँ जा नहीं पायी। रोज रात को आने के लिए निकलती थी, लेकिन आपके पठान पहरेदार को देखकर डर लगता था। आज रह नहीं पायी, इसलिए हिम्मत करके चली आयी हूँ।"

जगत्सेठ ने कहा, "आप तो कलकत्ते क्लाइव साहब के पास भी गयी थीं ?"

मराली ने कहा, "जब जिसके पास जाने का मौका मिल रहा है, उसी के पास जा रही हूँ। बताइए, क्या करूँ ? मैं एक औरत हूँ, मुझमें कितनी ताकत है ?"

"सुना है, क्लाइव साहब के दफ्तर से आपने कोई खत चुराया है।"

"मैं ? मैं खत चुराऊँगी ? मैं क्यों क्लाइव साहब के दफ़्तर से खत चुराऊँगी ? कैसा खत ? किसलिए चुराऊँगी ? क्लाइव साहब ने मेरा क्या बिगाड़ा है ?"

इतना कहते-कहते मराली की आँखों से आँसू झरने लगे।

जगत्सेठ ने कहा, "रोइए नहीं। आपको जो कुछ कहना हो वही कहिए।"

"शायद मेरे भाग्य में और भी दुःख बदा है, नहीं तो आप जैसे लोग मुझ पर अविश्वास क्यों करेंगे ? अब तक मैं यही सोचती रही कि कैसे नवाब से बदला लिया जाय, और मेरे ही नाम यह कलंक लगा। मेरे पति के कानों तक यह सब बात पहुँचने पर वे क्या सोचेंगे, बता सकते हैं ? जरूर मेरे किसी दुश्मन ने आपको यह सब बताया होगा !"

जगत्सेठ ने कहा, "ऐसा भी हो सकता है। लेकिन मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ ?"

मराली ने कहा, "आप मेरे लिए बहुत कुछ कर सकते हैं। मैं इतने दिनों तक चेहल-सुतून में रहकर बस यही सोचती रही कि कैसे यहाँ से भागूँगी। कितने ही दिन नवाब ने मेरे साथ सोना चाहा है, लेकिन मैं उसे अर्क पिलाकर भाग आयी।"

"अर्क ? कैसा अर्क ?"

मराली ने कहा, "चौक बाजार में शराफत अली की खुशबू-तेल की दुकान है, वही बेगमों को चोरी-छिपे अर्क बेचता है। मैं वही अर्क नवाब को पिलाती हूँ। कितने ही दिन सोचा है, नवाब को जहर खिलाकर मार डालूँ। लेकिन नियामत के कारण ऐसा नहीं हो सका।"

"नियामत ? नियामत कौन है ?"

"मोतीझील का खिदमतगार। वह बड़ी कड़ी नजर रखता है। मोतीझील में नियामत है तो चेहल-सुतून में नानी बेगम।"

जगत्सेठ बोले, "लोग जो कहते हैं, मुर्शिदाबाद की मसनद आप ही चलाती हैं, यह क्या गलत है ?"

"क्या आप देखना चाहते हैं ?"

इतना कहकर मराली ने झट से अपना पेशवाज खोल डाला। अँगिया का थोड़ा हिस्सा दिखाई पड़ते ही जगत्सेठ ने घबड़ाकर कहा, "क्या दिखा रही हैं ?"

"बिना दिखलाये आप मेरी बात का विश्वास नहीं करेंगे। उन लोगों ने लोहे की सींक गरम कर मेरे बदन को किस तरह दागा है, देखिए।"

जगत्सेठ ने कहा, "मुझे विश्वास हुआ। देखने की जरूरत नहीं।"

"लेकिन अब मैं लौटना नहीं चाहती सेठ जी, आप मुझे यहीं छिपाकर रखें।

से भी हो, मुझे हतियागढ़ भिजवा दीजिए। आप इतने बड़े आदमी हैं। आप एक औरत को नहीं बचा सकते, उसकी इज्जत को नहीं बचा सकते ?"

इतना कहकर मराली चुप हो गयी।

फिर बोली, "बगल के कमरे से किन लोगों के बात करने की आवाज आ रही है? क्या वहाँ कोई है ?"

"हाँ।"

मराली चौंकी।

"फिर क्या होगा ? उन लोगों ने मेरी बात सुन ली होगी।"

जगत्सेठ ने कहा, "घबड़ाने की बात नहीं। वे हमारे ही आदमी हैं। अमीचंद और वाट्स। उनसे आपको डरने की कोई बात नहीं। आप यहाँ बैठें। मैं जरा उनके पास जा रहा हूँ। देखूँ, आपके लिए क्या कर सकता हूँ।"

इतना कहकर जगत्सेठ जी बगल वाले कमरे में चले गये।

बशीर मियाँ ने जो सोचा था, वही हुआ। फूफा के घर से निकलकर मनसबदार साहब के घर गया था, फिर वहाँ से लौटा तो उसने सुना, तामजान गया था और लौट भी आया है। फिर महिमापुर में जाते ही बशीर मियाँ ने देखा, जगत्सेठ की हवेली के सामने तामजान खड़ा है।

"भाग जा कुतिया का बच्चा, भाग यहाँ से।"

बशीर मियाँ ने कहा, "एक बीड़ी पिलाओ न मियाँ साहब। इतना बिगड़ क्यों रहे हो ? क्या कसूर मैंने किया है ?"

अब भीखू शेख बन्दूक तानकर आगे बढ़ा। बशीर मियाँ झट से एक पेड़ की आड़ में छिप गया।

"साला कुतिया का बच्चा ! उल्लू का पट्ठा !"

पठान भीखू शेख फाटक के सामने खड़े होकर गुस्से के मारे मन ही मन बड़-बड़ाता रहा।

●

बड़े सवेरे ही शराफत अली की फुलेल तेल की दुकान के पिछवाड़े में आकर कान्त ने पुकारा, "बादशाह ! ओ बादशाह !"

शराफत अली की तरह बादशाह भी गहरी नींद सोता था। एक या दो बार पुकारने से उसकी नींद टूटने वाली न थी। कई बार आवाज लगाने पर बादशाह की नींद टूटी।

उसने अंदर से ही आवाज दी, "कौन ?"

"मैं हूँ कान्त, दरवाजा खोल।"

बादशाह ने आकर दरवाजा खोल दिया। कान्त बाबू के साथ एक और आदमी को देखकर पूछा, "यह कौन है ?"

"अरे, इसका नाम उद्धवदास है भाई। रास्ते में भिखारी लोग इसी के गीत गाते हैं। यही वह उद्धवदास है। इसी ने रचा है—रहिहों न भुवन-भवन में।"

अब उद्धवदास बोला, "मेरा और एक नाम है, भक्त हरीदास।"

फिर कान्त की तरफ मुखातिब होकर उद्धवदास ने पूछा, "तुम यहीं रहते हो क्या? बड़ी अच्छी कोठरी मिली है। बड़ी अच्छी है। इसी का नाम बादशाह है क्या?"

फिर बादशाह से कहा, "तुम बादशाह ही लगते हो। लेकिन कहाँ के बादशाह हो? दिल्ली के या दीन-दुनिया के?"

उद्धवदास को और भी मजा आया।

बादशाह भी अवाक् हो गया था। पूछा, "ये कौन हैं कान्त बाबू? ये किनको साथ ले आये?"

उद्धवदास ने कहा, "मैं हरी का दास हूँ भैया!"

"हरी कौन है?"

"अरे। यह तो हरी को ही नहीं जानता! क्यों भाई, तुमने हरी का नाम नहीं सुना? फिर सुनो, हरी की बात सुनो।"

इतना कहकर उद्धवदास ने गाना शुरू किया—

हरिनाम जिसका दुःख न मिटा दे,
ऐसा अभागा है कहाँ?
कान कटे तो बिगड़ न जाय
ऐसा विरागी है कहाँ?
ऐसी वस्तु है कहाँ जो
दामोदर की भूख मिटा दे?
ऐसी औषध है कहाँ जो—
ब्रह्मशाप का दुःख मिटा दे?
श्याम की मुरली की निन्दा—
करे ऐसा सुर कहाँ?
देह-धारण का दुःख न मिले,
ऐसा गौरव है कहाँ?
तुच्छ माने सुमेरु को
ऐसी बुद्धि है किसकी?
ब्रह्म का कर ले निरूपण,
ऐसी शक्ति है किसकी?
गर्भ-काल की बात जाने,
ऐसी मेधा है किसकी?

लिखा भाग्य का दे मिटा,
ऐसी क्षमता है किसकी ?

बादशाह इतना सब समझता नहीं। वह इस शख्स को एकाएक गाते देख जरा घबड़ा गया था। कान्त ने उद्धवदास को रोक दिया। कहा, "रुको भी भगत जी, तुम भी मजेदार आदमी हो। जहाँ-तहाँ गाने लगोगे तो लोग क्या समझेंगे ?"

इतना कहकर कान्त उद्धवदास को खींचते हुए अपने कमरे में ले गया।

फिर कान्त ने कहा, "जिस-तिस को इस तरह गाना क्यों सुनाते हो भगत जी ? सभी क्या तुम्हारे गीतों का मतलब समझते हैं ? तुम्हारे गीतों का मतलब तो नवाब समझते हैं। नवाब को गाना सुनाओगे तो वे तुम्हारी इज्जत करेंगे।"

उद्धवदास यह सुनकर हँसने लगा।

बोला, "नहीं भाई, मुझे नवाब से इज्जत नहीं चाहिए। नवाब तो दो दिन के लिए है। इसलिए वह जो मुझे इज्जत देगा, वह भी दो दिन की है। मैं किसान मजदूरों से इज्जत चाहता हूँ।"

उद्धवदास की यह बात बहुत दिनों तक कान्त को याद थी। उद्धवदास ने शायद चाहा था कि मैं भी एक दिन रामप्रसाद बनूँगा। रामप्रसाद के गीतों की तरह लोग मेरे भी गीत गायेंगे। आखिर हुआ भी ऐसा ही। उद्धवदास पता नहीं कहाँ-कहाँ अपनी पोथी बगल में दबाये घूमता फिरता और गाता रहता था। ये गाने भी लोगों की जबान पर फिरते थे। लोग कहते—यह उद्धवदास का गाना है। उद्धवदास का गाना सुनते ही लोग बेचैन हो उठते। मन लगाकर सुनते। कहते—उद्धवदास, एक गाना और सुनाओ।

इधर कान्त भी कई दिनों से मुर्शिदाबाद में नहीं था। थोड़ा और दिन पड़ते ही वह उद्धवदास को लेकर मोतीझील गया।

कान्त को देखते ही इब्राहिम कोठरी से निकल आया।

"क्या खबर है पुरकायस्थ जी ?"

इब्राहिम खाँ ने कहा, "तुम मुझे पुरकायस्थ न कहा करो कान्त बाबू, मेरी नौकरी चली जायेगी।"

"लेकिन मेरी बात सुन कौन रहा है ? यहाँ है ही कौन ?"

पुरकायस्थ ने कहा, "आजकल सब उलट-पुलट हो गया है कान्त बाबू, वह दिन अब नहीं रहा। अब मेरी नौकरी रहेगी या नहीं, कौन कह सकता है ?"

"आश्चर्य की बात है। तुम हिन्दू से मुसलमान बने, फिर भी तुम्हारी नौकरी नहीं रहेगी ?"

कान्त ने कई बार इब्राहिम के बारे में सोचा है। बेचारा शायद [illegible] जाता। लेकिन धर्म के बदले उसने अपनी रोटी पक्की कर ली है। बेचारे के लिए [illegible] से ही बढ़कर प्राण है। आखिर प्राण बड़ा भी क्यों न हो ? [illegible] कान्त बेवरिज साहब की गद्दी में नौकरी करता रहा, फिर यहाँ [illegible]

नवाब निजामत की नौकरी करने लगा। बस, पेट के ही लिए न? फिर पता नहीं, कहाँ से मराली आ गयी। वह जानता था, मराली के जीवन से मेरा जीवन अगर एकाकार हो गया तो मुझे कभी भी शान्ति नहीं मिलेगी। वह तो मराली से, मरियम बेगम से एकात्म हो गया था।

ऊपर जाते-जाते नियामत से भेंट हो गयी।

नियामत ने कहा, "मरियम बेगम साहबा तो यहाँ नहीं हैं हुजूर!"

"यहाँ नहीं हैं? कहाँ गयीं?"

"यह तो नहीं मालूम। आप चेहल-सुतून में पता लगाइए।"

"लेकिन नजर मुहम्मद ने तो कहा, बेगम साहबा चेहल-सुतून में नहीं हैं।"

"चेहल-सुतून में नहीं हैं तो कहाँ जायेंगी हुजूर? जरूर चेहल-सुतून में हैं। रोज रात को चेहल-सुतून जाती हैं और आज भी गयी हैं।"

आश्चर्य! सचमुच कान्त आश्चर्य में पड़ गया। कहाँ गयी मराली? कहाँ जा भी सकती है? कहीं जायेगी भी तो तामजान से ही जायेगी। अकेली पैदल तो सड़क से जा नहीं सकती।

मोतीझील से चौक बाजार की सड़क पर आते ही कान्त ने देखा, महिमापुर की तरफ से एक तामजान आ रहा है। यह क्या? रात बिताकर दिन में महिमापुर से आ रही है? जगत्सेठ के यहाँ गयी थी क्या? तामजान पास आते ही कान्त ने अच्छी तरह देखा। झालरदार तामजान। चारों तरफ से ढँका। तामजाम में कौन है, पता नहीं चलता।

अचानक किसी ने पीछे से बदन छुआ तो कान्त ने मुड़कर देखा, बशीर मियाँ खड़ा था।

"अरे तू? इतने दिनों तक तू कहाँ था?"

बशीर मियाँ ने इस बात का जवाब न देकर कहा, "क्या देख रहा है? अन्दर मरियम बेगम हैं।"

फिर बशीर मियाँ ने कहा, "तूने तो बेगम साहबा को एकदम मुट्ठी में कर लिया है। ऐसा कैसे किया?"

कान्त ने कहा, "यह बात रहने दे। बेगम साहबा महिमापुर में कहाँ गयी थीं?"

"और कहाँ? जगत्सेठ की कोठी में। साला दुश्मनी करने लगा है न, इसीलिए शायद पता लगाने गयी थीं।"

"किसके साथ किसकी दुश्मनी?"

बशीर मियाँ ने कहा, "यह सब अभी नहीं [illegible]। तू तो म[illegible] बेगम का आदमी है न। मैंने तुझे निजामत में नौकरी [illegible] गया? अब तू मुझसे ही दुश्मनी कर रहा है।"

"मैं तुझसे दुश्मनी करता हूँ? क्या क[illegible]

"दुश्मनी नहीं कर रहा है तो मरियम बेगम के लिए हमारे पीछे जासूसी क्यों कर रहा है? क्या बेगम साहबा हम लोगों का मुकाबला कर सकेंगी? हमारे साथ कौन-कौन है जानता है?"

"कौन-कौन है?"

"सभी हैं। मंसूर अली मेहर साहब, मीर जाफर साहब, अमीचंद साहब, हुगली के फौजदार साहब, जगत्सेठ, सभी। तू क्या हमारे साथ दुश्मनी कर सकेगा? तेरी बेगम साहबा भी क्या हमारा कुछ कर पायेंगी?"

तामजाम तब तक चेहल-सुतून की तरफ बढ़ गया था। कान्त ने उसी ओर देखते हुए कहा, "अच्छा भाई, मुझे जरूरी काम है, अभी जा रहा हूँ। फिर तेरे साथ बात होगी।"

इतना कहकर कान्त चला गया।

बशीर मियाँ भी रुका नहीं। साला काफिर, बेईमान कहीं का! ठहर जरा, बेईमानी का जवाब कैसे दिया जाता है यह मुझे अच्छी तरह मालूम है। मन-ही-मन यह बड़बड़ाता हुआ वह मंसूर अली मेहर साहब की हवेली की ओर चल दिया।

●

उस रात मरियम बेगम को सचमुच बड़ा डर लगा था। एकदम जैसे शेर की माँद में आ घुसी थी। यहाँ वह आज पहली बार आयी थी। सेठ जी की हवेली भी वह नहीं जानती थी। उसकी हिम्मत ने उसकी विचार-बुद्धि को अंधा कर दिया था।

सेठ जी के अंदर आते ही अमीचंद ने पूछा, "कौन आया सेठ जी?"

वाट्स को भी कुछ शक हो रहा था। उसने सारे कागजात जल्दी से छुपा लिये थे।

उसने भी पूछा, "हू इज इट? कौन आया है?"

जगत्सेठ जी ने कहा, "चुप! आहिस्ते बात करिए। मरियम बेगम है।"

वाट्स और अमीचंद दोनों चौंक उठे। पूछा, "यहाँ किसलिए आयी है?"

"घबड़ाने की कोई बात नहीं है, बेगम साहबा चेहल-सुतून से भागकर आयी हैं।"

"भागकर आयी हैं, माने?"

"माने भागकर आयी है। मुझसे कह रही थी कि मैं उसे उसके हिन्दू पति के पास पहुँचवा दूँ।"

अमीचंद ने कहा, "सच?"

"जी हाँ, मुझे अपनी पीठ पर के दाग भी दिखलाये। बतला रही थी कि चेहलसुतून में उसकी पीठ लोहे की गर्म सलाख से झुलसा दी गयी है।"

"आपको पीठ खोलकर दिखला दी?"

"खोलने जा रही थी, मैंने मना कर दिया। कह रही थी, जान रहते चेहल-सुतून नहीं जाऊँगी।"

"आपने क्या कहा ?"

"उसे कमरे में बैठाकर यहाँ चला आया।"

"बेगम साहबा अभी तक वहीं उसी कमरे में बैठी है ?"

"हाँ।"

जगत्सेठ ने फिर कहा, "लेकिन मुझे तो लगता है बेचारी बड़ी तकलीफ में है। जो भी हो, है तो आखिर हिन्दू औरत ही न ?"

"अब आप क्या करेंगे ?"

"यही सलाह करने के लिए तो उसे वहाँ बैठाकर यहाँ आया हूँ। हतियागढ़ के राजा, छोटे सरकार भी एक बार मेरे पास आये थे। वही जब सफीउल्लाह साहब का खून हुआ था।"

अमीचंद ने कहा, "आप क्या उसकी बात का यकीन कर रहे हैं ? इसी औरत ने क्लाइव के यहाँ जाकर खत चुराया था।"

सेठ जी ने कहा, "मुझे तो यकीन नहीं आता। बेचारी के आगे नवाब का हुक्म मानने के सिवाय चारा भी तो नहीं है। वैसे औरत भली है।"

"कैसे पता लगा ?"

"बेचारी बात करते-करते बड़े जोर से रोने लगी।"

"अरे, औरतें तो इस तरह आँसू बहाने में माहिर होती ही हैं।"

सेठ जी ने कहा, "रोने-रोने में भी फर्क होता है अमीचंद जी ! यह बेगम साहबा मेरे पास रहने के लिए ही आयी है। कह रही है, चेहल-सुतून वापस नहीं जाऊँगी।"

"आपने क्या कहा ?"

"मैं बेगम साहबा को कैसे अपनी हवेली में रखूँ, यही सोच रहा हूँ। बेगम साहबा यहाँ है, यह अगर नवाब को मालूम हो जाय तो क्या मेरी खैरियत है ? सब करा-धरा काम चौपट हो जायेगा।"

वाट्स ने कहा, "आप उसे भगा दीजिए जगत्सेठ जी !"

अमीचंद ने कहा, "हाँ जगत्सेठ जी, आप उसका विश्वास हर्गिज न करें।"

"वह तो ठीक है, लेकिन हतियागढ़ के राजा से मैं क्या कहूँगा ? वे अगर फिर मेरे पास आयें तो मैं उनसे क्या कहूँगा ? उनकी बीवी मेरे घर आयी और मैं उसे बचा न सका, यह सुनकर उन्हें बड़ी तकलीफ होगी। वे बड़े भले आदमी हैं।"

"लेकिन रात को इस वक्त हतियागढ़ के राजा आपको कहाँ मिलेंगे ?"

"उनके पास अभी आदमी भेजना पड़ेगा।"

"फिर भी यहाँ आते-आते उन्हें दो दिन तो लग ही जायेंगे, तब तक बेगम साहबा को कहाँ रखेंगे ?"

"यही तो मैं भी सोच रहा हूँ।"

लेकिन काफी सोच-विचार के बाद भी कोई रास्ता नहीं निकला।

सेठ जी ने कहा, "बेगम को अन्दर बैठाकर आया हूँ, जाकर उन्हें समझाऊँ।"

"क्या समझायेंगे ?"

"आप ही लोग बतायें, क्या समझाऊँ ?"

अमीचन्द ने कहा, "इस समय क्लाइव से हम लोगों की बातचीत चल रही है। इस समय बेगम साहबा की झंझट मोल लेना क्या ठीक होगा ? इस समय नवाब ज़रा चुपचाप है, इस समय उसे ख्वामख्वाह चिढ़ाने से क्या फायदा ?"

"ठीक है । मैं अभी आया ।"

कहकर जगत्सेठ जी अंदर चले गये ।



आँगन पारकर दुर्गा तब तक सीधे क्लाइव साहब के दफ्तर में पहुँच गयी। लेकिन यह क्या ? साहब कहाँ गया ? अभी तो हरीचरण ने कहा, साहब अपने दफ्तर में बैठे किसी से बात कर रहा है। लेकिन दफ्तर तो खाली है।

"हरीचरण ! ओ हरीचरण ! तुम्हारा साहब कहाँ गया ?"

हरीचरण दौड़ते हुए आ पहुँचा। पूछा, "क्या साहब नहीं है ?"

"नहीं, तुम्हारे साहब का दफ्तर तो खाली है। तुमने तो अभी कहा, दो आदमी आये हैं और साहब उनके साथ बात कर रहा है। लेकिन यहाँ तो कोई नहीं है।"

हरीचरण भी नहीं जानता था कि साहब कब चला गया है। वह भी दफ्तर की तरफ यह देखने के लिए गया कि साहब है या निकल गया है। उसने जाकर देखा, कमरा खाली है। साहब कब गया, किसी को बताकर भी नहीं गया। हरीचरण को बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर साहब कहाँ गया ? ऐसा तो नहीं होता। इस तरह बिना बताये तो साहब कहीं भी नहीं जाता।

अब दुर्गा क्लाइव पर बुरी तरह बिगड़ गयी थी। क्लाइव को नज़दीक न पाकर दुर्गा का सारा गुस्सा हरीचरण पर बरसने लगा। मानो साहब ने दुर्गा या छोटी बहूरानी का कोई उपकार नहीं किया था। इतने दिनों तक जो साहब अपने ही साथियों से लड़ता-झगड़ता रहा, उन दोनों को बैठाकर इतने दिनों तक खिलाता रहा, यह सब भी दुर्गा को याद न पड़ा। उसके मन में जो आया वही वह बकने लगी।

दुर्गा बड़बड़ाने लगी, "हरामजादे साहब ने सोचा है, हम उसकी बाँदी हैं। जैसे हम लोगों को उसने खरीद लिया है। तुम कहते क्यों नहीं हरीचरण कि हम उसकी बाँदी नहीं हैं।"

हरीचरण ने कहा, "तुम ऐसा क्यों कह रही हो दीदी ? किसी ने तुमसे कहा भी है कि तुम साहब की बाँदी हो ?"

"ऐसा क्यों नहीं कहूँगी ? हजार बार कहूँगी। क्यों तुम्हारे साहब ने हम लोगों को यहाँ रख रखा है ? हम कुछ कहतीं नहीं, इसीलिए न ? लड़ाई-ओड़ाई सब खत्म हो गयी, अब हमें उसने किस लिए यहाँ रखा है ? हम आज ही चली जायेंगी। तुम हमें अभी से चलो।"

इतना कहकर दुर्गा गरजती हुई अंदर की तरफ चली गयी। छोटी बहूरानी भी दुर्गा की आवाज पाकर इधर आ रही थी।

पूछा, "क्या हुआ दुर्गा ?"

दुर्गा बोली, "यही देखो न ! हमें यहाँ छोड़कर साहब कहीं गप्प लड़ाने चला गया है। चलो, हम अभी चली जायेंगी। क्या हम लोगों का घरबार नहीं है ? क्या हमारे अपने जन नहीं हैं ? साहब ने सोचा क्या है ?"

छोटी बहूरानी ने कहा, "हम जायेंगी कहाँ ? हमें कौन ले जायेगा ?"

"जहाँ भी हो, हम वहीं जायेंगी। जहन्नुम में जायेंगी, भाड़ में जायेंगी। जाने की जगह की क्या कमी है ? क्या सोचा है साहब ने कि मैं तुम्हें लेकर कहीं जा नहीं सकती ? लो, कपड़े-लत्ते बाँध-बूँध लो। यहाँ अब एक क्षण भी नहीं रहने की।"

हरीचरण पीछे-पीछे आ पहुँचा था। उसने कहा, "आप ज़रा समझा दें न बहूरानी, साहब के लौट आने से पहले चले जाना क्या ठीक होगा ?"

छोटी बहूरानी ने कहा, "लेकिन तुम हमें पहुँचा क्यों नहीं देते कि हम अपने घर चली जायें।"

हरीचरण ने कहा, "पहुँचाने को तो मैं पहुँचा सकता हूँ, लेकिन साहब लौटकर अगर डाँटने लगे तब ?"

"डाँटेगा ? डाँटेगा क्यों ?"

दुर्गा फिर चिल्लाने लगी।

"हम क्या हमेशा के लिए यहाँ रहने आयी हैं ? हम क्या तुम्हारे साहब की नौकरानी हैं ?"

हरीचरण इस बेकार की बहस में नहीं गया। उसने कहा, "तुम लोगों को कहाँ ले जाना होगा, यही बताओ न, मैं अभी लिये चल रहा हूँ। क्या मैंने कभी कहा है कि नहीं ले जाऊँगा ? तुम लोगों की देखभाल करने के लिए ही तो साहब ने मुझे रखा है। बताओ, तुम लोगों को कहाँ ले जाना है ?"

दुर्गा ने बहूरानी की ओर देखा। याने सवालिया आँखों से यही पूछा कि कहाँ जाया जाय ? लेकिन किसी ने कुछ तय नहीं किया था। एक दिन दोनों कृष्णनगर जाने के लिए घर से निकली थीं। लेकिन उस दिन कौन-सी तिथि थी, कौन-सा नक्षत्र था, यह किसी ने नहीं देखा था। क्योंकि ऐसा करने का मौका ही नहीं था। किसी तरह निकल भागने की बात ही उस समय आ पड़ी थी। उस समय किसे मालूम था कि महीनों उन दोनों को रास्ते में ही रहना पड़ेगा। उस समय उनको क्या मालूम था कि इस तरह म्लेच्छ साहब के घर में रहना पड़ेगा !

कभी-कभी दुर्गा कहती, "मुँह न झुलस दूँ ऐसे साहब का ! अपने बीवी-बच्चे कहीं पड़े हैं और यहाँ लड़ने आया है। फिर लड़ना ही है तो लड़कर नवाब को मार क्यों नहीं देता ? अगर यही नहीं कर सकता तो साहब किस बात का है ?"

फिर कभी साहब की बातों से दुर्गा खुश हो जाती तो वह साहब की बड़ी

तारीफ करने लगती थी।

"दिन भर खटते-खटते बेचारे का चेहरा सूख गया है।"

दुर्गा समझती कि साहब आजकल बहुत ज्यादा सोचने लगा है। लेकिन छोटी बहूरानी के चेहरे की तरफ देखते ही उसे छोटे सरकार की याद आने लगती। जो आदमी एक क्षण बहूरानी को छोड़कर रह नहीं सकता था, पता नहीं वही अब किस तरह दिन बिता रहा है। कितने ही फूलों से दुर्गा बहूरानी का जूड़ा बाँध देती थी। शाम को बहूरानी को नहलाकर पाँवों में महावर लगाकर सजाती। एक दिन भी जूड़ा ठीक से न बाँधा जाता तो छोटे सरकार गुस्सा होते। अब वही बेचारे क्या बहूरानी को दूर भेज कर आराम से होंगे? उसका भी मन जरूर छटपटा रहा है। फिर यहाँ पैरिन साहब के बगीचे में छोटी बहूरानी भी रात को सोते समय रोती है, कहती है, दुर्गा, मेरा गला घोंटकर मार डाल, मैं मर जाऊँ तो भी अच्छा है। अब जीने को मन नहीं करता।

पास के बादाम के दरख्त से चमगादड़ की किच-किच आवाज आती तो बहूरानी जाग जाती; चीख पड़ती, "दुर्गा! अरी दुर्गा!"

दुर्गा कहती, "क्या हुआ बहूरानी?"

बहूरानी कहती, "कोई रो रहा है न?"

लेकिन यहाँ से निकल जाने से ही क्या शांति मिलेगी, इसका भी कोई निश्चय नहीं था। पता नहीं, फिर बहते-बहते किस किनारे से जा लगें? यह भी कौन कह सकता है कि वहाँ क्या होगा?

हरीचरण ने कहा, "ठीक है, अगर कृष्णनगर जाना चाहो तो वहाँ पहुँचा दूँ।"

उस समय शाम हो आयी थी। छोटी बहूरानी लंबा घूँघट काढ़कर नाव में जा बैठी। साहब नहीं है, न सही। साहब से कहकर जाती तो साहब शायद जाने भी न देता। शायद दो-चार दिन और रोक लेता। तरह-तरह के बहाने बनाकर रोक लेता। लड़ाई अगर कभी न खत्म न हो तो क्या हमेशा क्लाइव साहब के यहाँ पड़े रहना होगा?

दुर्गा और बहूरानी के साथ एक पोटली के सिवाय और कुछ नहीं था। उसी पोटली को हरीचरण ने नाव में रख दिया।

"साहब लेकिन बहुत नाराज होगा दीदी।"

दुर्गा ने कहा, "होने दे नाराज! साहब क्या मेरा कोई लगता है? मैं अगर बिगड़ जाऊँ तो अनर्थ हो जायेगा।"

छोटी बहूरानी ने पूछा, "लेकिन तुम्हारा साहब गया कहाँ है हरीचरण? हमसे कहकर भी तो जा सकता था?"

हरीचरण तब तक नाव की गलही के पास जाकर बैठा ही था। कहा, "साहब इस समय बहुत ज्यादा परेशान है बहूरानी। अभी-अभी तो फरासडांगा से फांसीसियों को भगाकर आया है। शायद फिर कोई काम आ पड़ा है।"

"काम आ पड़ा है न और कुछ ! किसी से गप्प लड़ाने चला गया होगा । ये लोग कौन आये थे हरीचरण ?"

हरीचरण ने कहा, "साहब के पास कितने ही लोग आते रहते हैं । क्या मैं सभी को जानता हूँ ?"

अब तक नाव गंगा की बीच धारा में आ गयी थी । सर-सर नाव उत्तर की ओर चलने लगी । बरानगर घाट के बाद जिधर देखो उधर ही जंगल नजर आता है । शाम की मद्धिम धूप पानी पर पड़कर सोने की लहरों-सी झलमला रही थी । पेरिन साहब का बगीचा आंखों से ओझल हो चुका था । बगीचे के पहरेदारों में से जिनको पता चला उन्होंने बस एक निगाह देख लिया । वह भी दूर से । लेकिन इधर अच्छी तरह देखने की मनाही थी । साहब सिपाहियों को इधर आने ही नहीं देता था । बरानगर छोड़कर नाव बड़ी गंगा में आ गयी । बड़ी गंगा का यह पार या वह पार ठीक से दिखाई भी नहीं पड़ता । गंगा यहाँ काफी चौड़ी थी ।

छोटी बहूरानी ने अचानक पूछा, "मराली को खबर भिजवाने का क्या हुआ दुर्गा ?"

दुर्गा ने कहा, "एक बार कृष्णनगर के राजमहल तक तो पहुँच जाऊँ, फिर देखूँगी कि क्या कर सकती हूँ ।"

"वह क्या अब हमको पहचान पायेगी ?"

"अगर वह मुँहजली पहचान न पायी तो उसका मुंह न झुलस दूँगी । मैं अगर उसे न बचाती तो अब तक वह रहती कहाँ ? आज नवाब के साथ सोकर दुनिया को कुछ समझती ही नहीं !"

"एक बार हरीचरण से कह दे न, मरियम बेगम को खबर भेज देगा ।"

दुर्गा ने कहा, "तुम चुप रहो बहूरानी ! वह कृष्णनगर के महाराज से कहकर देखूँगी शायद कोई रास्ता निकल आवे ।"

आखिर में नाव एकदम मुहाने के पास आ गयी, उस समय चारों तरफ घना अँधेरा छाया था । जंगल के बीच-बीच कहीं एक-आध रोशनी जल रही थी । इस माहौल में गंगा के बीच नाव में छोटी बहूरानी का शरीर सिहर उठा ।

अचानक हरीचरण ने दरवाजे के पास आकर कहा, "दीदी, बत्ती बुझा रहा हूँ ।"

"क्यों हरीचरण, क्या हुआ ?"

"पीछे से कोई बजरा आ रहा है ।"

"बजरा ? किसका बजरा ? कौन आ रहा है ?"

हरीचरण ने कहा, "मुझे क्या मालूम दीदी, लगता है निजामत का होगा । निजामत का झालरदार बजरा ।"

हरीचरण ने तुरन्त बत्ती बुझा दी । अँधेरा चारों तरफ और भी गाढ़ा हो आया ।

र्मा ने बहूरानी के और पास आकर उसे दोनों हाथों से पकड़ लिया। कहा, '[illegible] त बहूरानी, मैं तो [illegible]। जब तक मैं हूँ, कोई तुम्हें छू भी नहीं सकता।"

●

पेरिन साहब के बगीचे में एक और उत्तेजित नाटक हो रहा था। [illegible] क्लाइव का मन खराब था। हुगली से खबर आने पर [illegible] दुर्लभराम ने नवाबगंज से अपनी फौज हटा ली है। इसके बाद वहाँ [illegible] ही रहा था कि महाराज कृष्णचंद्र और [illegible] के जमींदार [illegible]।

इतने दिनों तक जो धारणा क्लाइव के मन में बन रही थी, [illegible] तरह अपनी जड़ जमा ली। ये ही इंडियन हैं! [illegible] ने उसको [illegible] पहचाना था, आज क्लाइव ने भी पहचाना। हाँ, ये ही इंडियन हैं! [illegible] की मामूली नौकरी से छः रुपये के माहवार की हैसियत से यह आया था। [illegible] कुल-गौरव था, न विद्या थी और न धन ही। [illegible] नहीं था। ईश्वर ने बस दो आँखें दी थीं और एक सीना, जिन्हें [illegible] अदम्य साहस। दूसरा उसके पास कुछ नहीं था। [illegible] उसे दस बार खरीद सकता था। लेकिन उनके पास [illegible] कहा, हम तुम्हें अपना मित्र बनाएँगे। [illegible] क्लाइव ही [illegible] है, [illegible] उसका [illegible] है! इन लोगों में [illegible] कोई चीज़ भी नहीं है। [illegible] कार भी भरोसा करना नहीं जानते? ये लोग अपने मुल्क की बात [illegible] भी नहीं सोचते। बस, अपनी ही बात सोचने में मशगूल हैं। बस, अपने ही फायदे और नुकसान की बात! लेकिन मैं भी तो इंसान हूँ। क्लाइव ने सोचा, मैं भी तो अपना फायदा सोच सकता हूँ। मुझमें भी तो लोभ हो सकता है? मैं भी तो इन लोगों की [illegible] सकता हूँ।

वाट्सन ने कहा था, "कर्नल, यही [illegible] है, [illegible] मौका फिर नहीं आएगा। [illegible], [illegible] कोई भी नहीं है, [illegible] हैं कि [illegible]।"

महाराज कृष्णचंद्र की बातें सुनते-सुनते वाट्सन की कही बात याद आ रही थी। नवाब के फेवर में कोई भी नहीं है। यहाँ तक कि खुद उसकी नानी भी उसके [illegible] है। इससे बड़ा अनाथ दुनिया में कौन हो सकता है? नवाब जरूर हारेगा। फिर भी इतिहास का नशा भी अजीब है, [illegible] इतिहास बनेगा!

क्लाइव ने कहा, "मैं अगर मुर्शिदाबाद पर अटैक करूँ तो आप लोग कोई हेल्प करेंगे?"

छोटे सरकार बड़े ध्यान से सब सुन रहे थे। उन्होंने कहा, "मैं वादा करता हूँ कि मैं हर तरह से आपकी मदद करूँगा। मैं रुपये-पैसे से, आदमियों से, जैसे भी हो सके, आपकी मदद के लिए तैयार हूँ।"

लेकिन तभी बाहर से किसी के पैरों की आहट सुनाई दी।

का चेहरा कैसा संजीदा हो उठा था।"

"मैंने तो साहब से कहा कि रुपये से, पैसे से, आदमियों से, हाथियों से, हर तरह से आपकी मदद करूँगा।"

"आपने अच्छा ही किया है। मैं भी गुप्त रूप से हर तरह से मदद करूँगा लेकिन मैं महाराजा होकर यह सब खुलकर कैसे कहता? यह सब बात अगर खुल जाये तो मेरा नुकसान भी हो सकता है। राजनीति में जल्दबाजी नहीं चलती! मौका देखकर ठीक समय पर ठीक काम किया जाता है, यह तो आपको भी मालूम है? इसीलिए अभी तक नवाब मुझ पर शक नहीं करता। अगर सब पर शक करना शुरू कर दे तो हम लोग कुछ भी न कर पायेंगे।"

छोटे सरकार ने पूछा, "अब मैं क्या करूँ?"

महाराज ने कहा, "मैं कृष्णनगर पहुँचकर ही आपको खबर भेजूंगा।"

"लेकिन खबर भेजकर ही आप क्या करेंगे, मुझे तो अब कोई आशा नहीं दिखाई पड़ती।"

महाराज ने कहा, "आशा किसी की नहीं मिटती छोटे सरकार, नहीं तो बादशाह औरंगजेब तिरानवे साल की उम्र में मरते समय वैसी बात न कहते। हम आप तो मामूली लोग हैं। हम अगर तीन सौ साल जीयें तो भी हमारी आशा मिटेगी नहीं।"

कमरे में बैठे वाट्सन ने पूछा, "वे लोग चले गये?"

"हाँ गये। उन्हीं को तो विदा करने गया था।"

"फिर अब फोर्ट चलो।"

"क्यों?"

"कासिमबाजार से फ्लेचर का लेटर आया है कि मीर जाफर से हम लोगों की जो बातें चल रही थीं, खुल गयी हैं। जगत्सेठ जी की हवेली पर जिस समय वाट्स और अमीचंद मशविरा कर रहे थे, ठीक तभी वहाँ अचानक मरियम बेगम जा पहुँचीं।"

"हूँ! लेकिन मरियम बेगम को भला कैसे पता चल सकता है?"

"गॉड नोज़! सुना है, मरियम बेगम सेठ जी के पास जाकर बिलख रही थी, कहा कि मैं अपने हज़बेन्ड के पास लौटना चाहती हूँ।"

क्लाइव ने कहा, "ऑल ब्लफ! सब झूठ है।"

वाट्सन ने कहा, "सच हो या झूठ, वी मस्ट बी केयरफुल। चलो, मैंने सारा प्लान ठीक कर रखा है। कल वाट्स और अमीचंद कलकत्ते आ रहे हैं। मेरी राय में तो हमें फौरन मुर्शिदाबाद की ओर कूच कर देना चाहिए।"

क्लाइव ने भी कहा, "ठीक है, चलो।"

दोनों बाहर निकल पड़े। वक्त बिलकुल नहीं है। एक बार सोचा कि हरीचरण

कहता चले, लेकिन वह आसपास कहीं नजर ही नहीं आया।

वाट्सन ने पूछा, "किसे खोज रहे हो?"

क्लाइव ने कहा, "दोनों लेडीज को जरा खबर दे आऊँ।"

"अभी तक वे तुम्हारे यहाँ मौजूद हैं? उनके लिए क्यों परेशान होते हो, अब चलो, बाद में आकर मिल लेना।"

एक ओर मीर जाफर की टर्म्स, और दूसरी ओर ये लोग। ठीक है, जरा देर के लिए फोर्ट जाकर वापस आना है, इसमें देर ही कितनी लगेगी। एडमिरल वाट्सन भी खींचातानी कर रहा है। वक्त भी नहीं है। बिना किसी को बतलाये क्लाइव बाहर चला आया। इसके बाद पेरिन साहब का बगीचा पार कर कर्नल और एडमिरल को लिए कम्पनी की पालकी सीधे फोर्ट की ओर चल दी।

●

इतिहास का यह भी शायद एक मजाक ही था। कौन जानता था कि बेगम मेरी विश्वास के उस रात जगत्सेठ की हवेली से जाने के साथ ही इस तरह सारी दुनिया का नक्शा बदल जायेगा। गाँव के एक मामूली आदमी शोभाराम की लड़की मराली वाला दासी इस सारे रद्दोबदल के पीछे थी। और बेगम मेरी विश्वास क्या खुद भी जानती थी? शायद नहीं।

वाट्स और अमीचंद जितनी देर तक सेठ महताबचंद के साथ सलाह-मशविरा करते रहे मराली कान लगाये सुनती रही।

सेठ जी के कमरे में आते ही मराली हट आयी और अपनी जगह पर बैठ गयी।

सेठ जी ने पूछा, "आप रात के वक्त आयी हैं, चेहल-सुतून में किसी को पता नहीं चला होगा?"

"पता क्यों नहीं चला होगा? मेरे तामजान के कहार तो साथ ही आये हैं।"

"तब?"

"लेकिन मेरे पास तो इस समय सोच-विचार करने के लिए जरा भी वक्त नहीं है।"

"लेकिन मेरे यहाँ आपके रहने से मेरा भी नुकसान है और आपका भी।"

"आप जैसे आदमी अगर यह बात कहेंगे तो मैं कहाँ जाऊँगी? मैं जाकर किससे आश्रय माँगूँ? कौन हम औरतों की इज्जत बचायेगा?"

सेठ जी को शायद तरस आ गया, या हो सकता है खुद को बचाने के लिए ही उन्होंने कहा, "बेगम साहबा, आप चेहल-सुतून जाइए, हतियागढ़ में आपके पति के साथ बात करके मैं आपको खबर दूँगा।"

"लेकिन आप मुझे खबर देंगे कैसे?"

"आप ही बतलाइए, आपके पास किस तरह खबर पहुँचायी जाय?"

"एक आदमी है, उससे मेरे बारे में पता लगा सकते हैं।"

"कौन ?"

"चौक में शराफत अली इत्रवाले के यहाँ रहता है। उसका नाम कान्त है कान्त सरकार। उसे खबर देने पर मुझे सूचना मिल जायेगी।"

"वह कौन है ?" सेठ जी ने हैरानी से पूछा।

मराली बोली, "वह हमारे गाँव का ही एक आदमी है।"

बगल वाले कमरे में बैठे अमीचंद और वाट्स दूसरी ही उधेड़-बुन में लगे थे मरियम बेगम जब सेठ जी के यहाँ आ ही गयी है तो देरी करने से क्या फायदा जैसे भी हो भाग चलने में ही गनीमत है। अमीचंद बुरी तरह से घबड़ा गया था एक बार कम्पनी के चंगुल में फँस चुका था, दूसरी बार इस मरियम बेगम ने चकम देकर पकड़ा दिया। अब की फँसने पर तो निकलना ही मुश्किल हो जायेगा। चल निकल ही चलें !

भीखू शेख दरवाजे पर खड़ा कड़ी निगरानी रख रहा था। पीछे से दो शरी आदमियों के आने की आहट पाकर वह सीना फुलाकर खड़ा हो गया।

"सलाम हजूर !"

लेकिन उस समय किसी के पास सलाम लेने की फुरसत नहीं थी। वाट्स साह ने बुरका ओढ़ लिया था। दोनों जाकर पालकी पर सवार हो गये। रात करीब खत हो चली थी। सारा महिमापुर खामोश था। लेकिन इतिहास को नींद कहाँ ! व चुपचाप अपनी खानापूरी करने में लगा था। अगले सफे पर पता नहीं क्या लिख जाना था ! जीवन या मृत्यु, उत्थान या पतन, ध्वंस या सृष्टि। मोतीमन उलमुल अलाउद्दौला जाफर खाँ नासिरी नासिर जंग मुर्शिद कुली खान जो मसनद छोड़कर ग थे उसकी बेइज्जती करने वाले को क्या सजा तजवीज की जाये अगले सफे का मजमू शायद यही था। युग-पुरुष सोच रहा था और लिख रहा था—ई० सन् १७०७, हिज ११११८ की २८ जक़ात याने २१ फरवरी शाहंशाह औरंगजेब के इन्तकाल के साथ इस मसनद से तुम्हारा हक भी खत्म हो गया। इस बात की गाँठ बाँध लो कि तुम्ह कानूनों से मेरे कानून कहीं ज्यादा सख्त हैं। जहाँ अत्याचार होगा वहाँ पतन भी होग जहाँ अन्याय है वहीं ध्वंस होगा और अपव्यय जहाँ होगा वहाँ विलोप तो होगा ही। तु मानो चाहे न मानो इस कानून की तौहीन करने की ताकत किसी में नहीं है। जिल्ले इलाही शाहंशाह अकबर ने जिस नीति के भरोसे पर इतने बड़े साम्राज्य की स्थाप की, उसे उसी के उत्तराधिकारियों ने अपनी अदूरदर्शी और भ्रान्तिपूर्ण नीति से घृण स्पद बना दिया, इसीलिए मैंने उनका पतन कर दिया। यह मेरा इंगित मात्र है, समझ पाओगे तो बच जाओगे वर्ना दो-तीन सौ साल के लिए इस भागीरथी पर अपने अधिकार से हाथ धोओगे। आज ११ जून की रात को अस्ति लिखितम्। शु मस्तु।

ने देखा, साहब लोग हवाखोरी के लिए निकल रहे हैं। फिरंगी कोठी के साहब रोज ही हवाखोरी के लिए निकलते हैं। किसान लोग हल लिये खेतों की तरफ जा रहे थे। बारिश से पहले ही खेत जोतकर तैयार करना पड़ेगा। फिर दिन जरा निकला तो सामने क्षितिज तक फैली बंजर जमीन नजर आयी। उस समय वहाँ कोई नहीं था। दोनों घोड़े तेज भागने लगे। जब किसी के देख लेने का डर नहीं रहा तो वाट्स घोड़े से उतर पड़ा। नवद्वीप यहाँ से ज्यादा दूर नहीं था। दोनों घोड़े छोड़ दिये गये। अब जानवर भी जितना चाहें घास चर लें। घाट पर किसी की नाव बँधी थी। उसी नाव में बैठकर अमीचंद और वाट्स डाँड़ खेने लगे। वाट्स ने कहा, "कम ऑन अमीचंद! क्विक, क्विक!"

हाँ, वाट्स के शरीर में ताकत है, यह तो कहना ही पड़ेगा।

नवद्वीप पहुँचकर बजरा मिल गया। खबर पाकर कम्पनी के साहब ने भेज दिया था।

वाट्स ने पूछा, "लेकिन यह फ्लेचर इतनी जल्दी कैसे पहुँच गया?"

"साहब को सौदागरी नाव मिल गयी थी। कम्पनी की फौज भी कालना के लिए रवाना हो गयी है।"

"तुम्हें किसने भेजा?"

"एडमिरल साहब ने।"

बजरा काफी मजबूत था। नवद्वीप से कालना पहुँचने में खास वक्त नहीं लगता। मल्लाह लोग जल्दी-जल्दी डाँड़ खेने लगे।

हरीचरण सचमुच घबड़ा गया था। यह नाव क्या निजामत की है? हरीचरण ने हाँक लगायी—बड़े मियाँ, जरा जल्दी।

लेकिन पीछे वाला बजरा काफी तेजी से आ रहा था। हरीचरण ने झट-पट बजरे की सारी रोशनियाँ गुल कर दीं। दोनों ही बजरे जोरों से चल रहे थे। लेकिन पीछे वाला बजरा प्रतिक्षण नजदीक आता जा रहा था।

जब बजरा एकदम करीब आ गया तो हरीचरण चिल्लाया—सम्हाल के!

लेकिन पता नहीं किसने हरीचरण की गरदन पकड़ ली थी। बजरे पर एक साथ कई आदमियों के कूदने की आवाज आयी। दुर्गा ने झाँककर देखा, कई काली-काली छायाएँ बजरे पर चली आ रही थीं।

"कौन? तुम लोग कौन हो?"

बहूरानी डर के मारे दुर्गा की गोद में छिप गयी। दुर्गा चिल्ला उठी—"कौन? तुम लोग कौन हो?"

वाट्स अभी तक अपने बजरे में था।

उसने पूछा, "अंदर कोई लेडी भी है क्या? माने अंदर कोई औरत है क्या?"

"जी हाँ, हुज़ूर। एक नहीं दो-दो हैं।"

वाट्स ने अमीचंद की ओर देखा। फिर कहा, "मैं कह रहा था न, मरियम बेगम चुपचाप भाग रही थी। हम लोगों को देखते ही बजरे की बत्तियाँ गुल कर दीं।" फिर उठते हुए कहा, "चलो, जरा देख आयें।"

अमीचंद ने कहा, "लेकिन ये दो क्यों हैं? साथ में क्या नानी बेगम भी हैं?"

"होंगी, नहीं तो कोई बाँदी भी हो सकती है।"

वाट्स और अमीचंद दोनों अपने बजरे से इस बजरे पर आ गये। तब तक मरियम बेगम साहबा के बजरे पर के नौकर-चाकर-माँझी सिपाही सभी के हाथ-पैर बाँधे जा चुके थे।

अमीचंद ने कहा, "वाट्स, होशियार रहना। मरियम बेगम की कमर में हमेशा छुरा रहता है।"

"कोई बात नहीं, मेरे पास भी पिस्तौल है।"

●

उधर रात और भी गहरी हो रही थी। मोतीझील में नवाब सिराजुद्दौला को अचानक महसूस हुआ कि आज की रात रोज जैसी नहीं है। रोज रात को मरियम बेगम आकर बैठती थी। रामप्रसाद की, उद्धवदास की और तरह-तरह की बातें सुनाती थी, फिर सुलाकर पता नहीं कब चली जाती थी।

ये कुछ दिन बड़े आराम से गुजरे। काफी दिनों बाद जैसे नवाब को आराम मिला था।

नानी बेगम के आने पर मिर्ज़ा पूछते, "नानी साहबा, ठीक तो हैं न?

"तू अपनी बता, तेरा क्या हाल है?"

"मैं तो खूब मजे में हूँ नानी साहबा!"

"तू, अगर मजे में है तो मुझे किस बात की फिक्र होगी। मेरा तो जो कुछ भी है तू ही है।"

"अच्छा नानी साहबा!"

मिर्ज़ा जैसे कहते-कहते रुक गया। फिर बोला, "अच्छा नानी साहबा, बचपन में आप मुझसे नेक बनने के लिये कहा करती थीं न?"

"हाँ, कहा तो करती थी। लेकिन आज अचानक यह क्यों पूछ रहा है?"

"लेकिन तब मैंने आपकी बात पर ध्यान नहीं दिया था। लेकिन बात न सुनने पर आपने मुझे डाँटा क्यों नहीं? सजा क्यों नहीं दी? मुझे क्यों नहीं बताया कि इंसान को अपनी जिन्दगी में ही अपने गुनाहों की सजा मिल जाती है? क्यों नहीं बतलाया कि दुनियावी मजहब के इंसानियत को प्यार करना कहीं बड़ा है?"

"लेकिन अचानक ये बातें तेरे दिमाग में किसने भर दीं?"

"नहीं नानी साहबा, मैं कुरान शरीफ सुन रहा था।"

ने देखा, साहब लोग हवाखोरी के लिए निकल रहे हैं। फिरंगी कोठी के साहब रोज ही हवाखोरी के लिए निकलते हैं। किसान लोग हल लिये खेतों की तरफ जा रहे थे। बारिश से पहले ही खेत जोतकर तैयार करना पड़ेगा। फिर दिन जरा निकला तो सामने क्षितिज तक फैली बंजर जमीन नजर आयी। उस समय वहाँ कोई नहीं था। दोनों घोड़े तेज भागने लगे। जब किसी के देख लेने का डर नहीं रहा तो वाट्स घोड़े से उतर पड़ा। नवद्वीप यहाँ से ज्यादा दूर नहीं था। दोनों घोड़े छोड़ दिये गये। अब जानवर भी जितना चाहें घास चर लें। घाट पर किसी की नाव बँधी थी। उसी नाव में बैठकर अमीचंद और वाट्स डाँड़ खेने लगे। वाट्स ने कहा, "कम ऑन अमीचंद! क्विक, क्विक!"

हाँ, वाट्स के शरीर में ताकत है, यह तो कहना ही पड़ेगा।

नवद्वीप पहुँचकर बजरा मिल गया। खबर पाकर कम्पनी के साहब ने भेज दिया था।

वाट्स ने पूछा, "लेकिन यह फ्लेचर इतनी जल्दी कैसे पहुँच गया?"

"साहब को सौदागरी नाव मिल गयी थी। कम्पनी की फौज भी कालना के लिए रवाना हो गयी है।"

"तुम्हें किसने भेजा?"

"एडमिरल साहब ने।"

बजरा काफी मजबूत था। नवद्वीप से कालना पहुँचने में खास वक्त नहीं लगता। मल्लाह लोग जल्दी-जल्दी डाँड़ खेने लगे।

हरीचरण सचमुच घबड़ा गया था। यह नाव क्या निजामत की है? हरीचरण ने हाँक लगायी—बड़े मियाँ, जरा जल्दी।

लेकिन पीछे वाला बजरा काफी तेजी से आ रहा था। हरीचरण ने झट-पट बजरे की सारी रोशनियाँ गुल कर दीं। दोनों ही बजरे जोरों से चल रहे थे। लेकिन पीछे वाला बजरा प्रतिक्षण नजदीक आता जा रहा था।

जब बजरा एकदम करीब आ गया तो हरीचरण चिल्लाया—सम्हाल के!

लेकिन पता नहीं किसने हरीचरण की गरदन पकड़ ली थी। बजरे पर एक साथ कई आदमियों के कूदने की आवाज आयी। दुर्गा ने झाँककर देखा, कई काली-काली छायाएँ बजरे पर चली आ रही थीं।

"कौन? तुम लोग कौन हो?"

बहूरानी डर के मारे दुर्गा की गोद में छिप गयी। दुर्गा चिल्ला उठी—"कौन? तुम लोग कौन हो?"

वाट्स अभी तक अपने बजरे में था।

उसने पूछा, "अंदर कोई लेडी भी है क्या? माने अंदर कोई औरत है क्या?"

"जी हाँ, हुज़ूर। एक नहीं दो-दो हैं।"

वाट्स ने अमीचंद की ओर देखा। फिर कहा, "मैं कह रहा था न, मरियम बेगम चुपचाप भाग रही थी। हम लोगों को देखते ही बजरे की बत्तियाँ गुल कर दीं।" फिर उठते हुए कहा, "चलो, ज़रा देख आयें।"

अमीचंद ने कहा, "लेकिन ये दो क्यों हैं? साथ में क्या नानी बेगम भी हैं?"

"होंगी, नहीं तो कोई बाँदी भी हो सकती है।"

वाट्स और अमीचंद दोनों अपने बजरे से इस बजरे पर आ गये। तब तक मरियम बेगम साहबा के बजरे पर के नौकर-चाकर-माँझी सिपाही सभी के हाथ-पैर बाँधे जा चुके थे।

अमीचंद ने कहा, "वाट्स, होशियार रहना। मरियम बेगम की कमर में हमेशा छुरा रहता है।"

"कोई बात नहीं, मेरे पास भी पिस्तौल है।"



उधर रात और भी गहरी हो रही थी। मोतीझील में नवाब सिराजुद्दौला को अचानक महसूस हुआ कि आज की रात रोज़ जैसी नहीं है। रोज़ रात को मरियम बेगम आकर बैठती थी। रामप्रसाद की, उद्धवदास की और तरह-तरह की बातें सुनाती थी, फिर सुलाकर पता नहीं कब चली जाती थी।

ये कुछ दिन बड़े आराम से गुज़रे। काफी दिनों बाद जैसे नवाब को आराम मिला था।

नानी बेगम के आने पर मिर्ज़ा पूछते, "नानी साहबा, ठीक तो हैं न?

"तू अपनी बता, तेरा क्या हाल है?"

"मैं तो खूब मज़े में हूँ नानी साहबा!"

"तू, अगर मज़े में है तो मुझे किस बात की फ़िक्र होगी। मेरा तो जो कुछ भी है तू ही है।"

"अच्छा नानी साहबा!"

मिर्ज़ा जैसे कहते-कहते रुक गया। फिर बोला, "अच्छा नानी साहबा, छुटपन में आप मुझसे नेक बनने के लिये कहा करती थीं न?"

"हाँ, कहा तो करती थी। लेकिन आज अचानक यह क्यों पूछ रहा है?"

"लेकिन तब मैंने आपकी बात पर ध्यान नहीं दिया था। लेकिन अपनी बात न सुनने पर आपने मुझे डाँटा क्यों नहीं? सज़ा क्यों नहीं दी? मुझे क्यों नहीं बतलाया कि इंसान को अपनी ज़िंदगी में ही अपने गुनाहों की सज़ा मिल जाती है? क्यों नहीं बतलाया कि दुनियावी मसनद से इंसानियत को प्यार करना कहीं बड़ी चीज़ है!"

"लेकिन अचानक ये बातें तेरे दिमाग़ में किसने भर दीं?"

"नहीं नानी साहबा, मैं कुरान शरीफ़ सुन रहा था। सुनकर मुझे गहरी नींद

ने देखा, साहब लोग हवाखोरी के लिए निकल रहे हैं। फिरंगी कोठी के साहब रोज ही हवाखोरी के लिए निकलते हैं। किसान लोग हल लिये खेतों की तरफ जा रहे थे। बारिश से पहले ही खेत जोतकर तैयार करना पड़ेगा। फिर दिन जरा निकला तो सामने क्षितिज तक फैली बंजर जमीन नजर आयी। उस समय वहाँ कोई नहीं था। दोनों घोड़े तेज भागने लगे। जब किसी के देख लेने का डर नहीं रहा तो वाट्स घोड़े से उतर पड़ा। नवद्वीप यहाँ से ज्यादा दूर नहीं था। दोनों घोड़े छोड़ दिये गये। अब जानवर भी जितना चाहें घास चर लें। घाट पर किसी की नाव बँधी थी। उसी नाव में बैठकर अमीचंद और वाट्स डाँड़ खेने लगे। वाट्स ने कहा, "कम ऑन अमीचंद! क्विक, क्विक!"

हाँ, वाट्स के शरीर में ताकत है, यह तो कहना ही पड़ेगा।

नवद्वीप पहुँचकर बजरा मिल गया। खबर पाकर कम्पनी के साहब ने भेज दिया था।

वाट्स ने पूछा, "लेकिन यह फ्लेचर इतनी जल्दी कैसे पहुँच गया?"

"साहब को सौदागरी नाव मिल गयी थी। कम्पनी की फौज भी कालना के लिए रवाना हो गयी है।"

"तुम्हें किसने भेजा?"

"एडमिरल साहब ने।"

बजरा काफी मजबूत था। नवद्वीप से कालना पहुँचने में खास वक्त नहीं लगता। मल्लाह लोग जल्दी-जल्दी डाँड़ खेने लगे।

हरीचरण सचमुच घबड़ा गया था। यह नाव क्या निजामत की है? हरीचरण ने हाँक लगायी—बड़े मियाँ, जरा जल्दी।

लेकिन पीछे वाला बजरा काफी तेजी से आ रहा था। हरीचरण ने झट-पट बजरे की सारी रोशनियाँ गुल कर दीं। दोनों ही बजरे जोरों से चल रहे थे। लेकिन पीछे वाला बजरा प्रतिक्षण नजदीक आता जा रहा था।

जब बजरा एकदम करीब आ गया तो हरीचरण चिल्लाया—सम्हाल के!

लेकिन पता नहीं किसने हरीचरण की गरदन पकड़ ली थी। बजरे पर एक साथ कई आदमियों के कूदने की आवाज आयी। दुर्गा ने झाँककर देखा, कई काली-काली छायाएँ बजरे पर चली आ रही थीं।

"कौन? तुम लोग कौन हो?"

बहूरानी डर के मारे दुर्गा की गोद में छिप गयी। दुर्गा चिल्ला उठी—"कौन? तुम लोग कौन हो?"

वाट्स अभी तक अपने बजरे में था।

उसने पूछा, "अंदर कोई लेडी भी है क्या? माने अंदर कोई औरत है क्या?"

"जी हाँ, हुज़ूर। एक नहीं दो-दो हैं।"

वाट्स ने अमीचंद की ओर देखा। फिर कहा, "मैं कह रहा था न, मरियम बेगम चुपचाप भाग रही थी। हम लोगों को देखते ही बजरे की बत्तियाँ गुल कर दीं।" फिर उठते हुए कहा, "चलो, जरा देख आयें।"

अमीचंद ने कहा, "लेकिन ये दो क्यों हैं? साथ में क्या नानी बेगम भी हैं?"

"होंगी, नहीं तो कोई बाँदी भी हो सकती है।"

वाट्स और अमीचंद दोनों अपने बजरे से इस बजरे पर आ गये। तब तक मरियम बेगम साहबा के बजरे पर के नौकर-चाकर-माँझी सिपाही सभी के हाथ-पैर बाँधे जा चुके थे।

अमीचंद ने कहा, "वाट्स, होशियार रहना। मरियम बेगम की कमर में हमेशा छुरा रहता है।"

"कोई बात नहीं, मेरे पास भी पिस्तौल है।"

●

उधर रात और भी गहरी हो रही थी। मोतीझील में नवाब सिराजुद्दौला को अचानक महसूस हुआ कि आज की रात रोज जैसी नहीं है। रोज रात को मरियम बेगम आकर बैठती थी। रामप्रसाद की, उद्धवदास की और तरह-तरह की बातें सुनाती थी, फिर सुलाकर पता नहीं कब चली जाती थी।

ये कुछ दिन बड़े आराम से गुजरे। काफी दिनों बाद जैसे नवाब को आराम मिला था।

नानी बेगम के आने पर मिर्ज़ा पूछते, "नानी साहबा, ठीक तो हैं न?

"तू अपनी बता, तेरा क्या हाल है?"

"मैं तो खूब मजे में हूँ नानी साहबा!"

"तू, अगर मजे में है तो मुझे किस बात की फिक्र होगी। मेरा तो जो कुछ भी है तू ही है।"

"अच्छा नानी साहबा!"

मिर्ज़ा जैसे कहते-कहते रुक गया। फिर बोला, "अच्छा नानी साहबा, छुटपन में आप मुझसे नेक बनने के लिये कहा करती थीं न?"

"हाँ, कहा तो करती थी। लेकिन आज अचानक यह क्यों पूछ रहा है?"

"लेकिन तब मैंने आपकी बात पर ध्यान नहीं दिया था। लेकिन अपनी बात न सुनने पर आपने मुझे डाँटा क्यों नहीं? सजा क्यों नहीं दी? मुझे क्यों नहीं बतलाया कि इंसान को अपनी जिंदगी में ही अपने गुनाहों की सजा मिल जाती है? क्यों नहीं बतलाया कि दुनियावी मसनद से इंसानियत को प्यार करना कहीं बड़ी चीज है!"

"लेकिन अचानक ये बातें तेरे दिमाग में किसने भर दीं?"

"नहीं नानी साहबा, मैं कुरान शरीफ सुन रहा था। सुनकर मुझे गहरी नींद

आयी। पता है नानी साहबा, आजकल रोज रात को मुझे नींद आती है।"

"यह तो अच्छी बात है बेटा, इसीलिए तो मैं रोज कुरान पढ़ती हूँ।"

"लेकिन यही बातें आपने नाना साहब को क्यों नहीं सिखलायीं ?"

सुनकर नानी बेगम को कोई जवाब नहीं सूझा। उन्होंने क्या कुछ कम तकली उठायी हैं ? इस निगोड़ी मसनद की वजह से भला कौन चैन की नींद सो पाया है ? खु नवाब अलीवर्दी खाँ तक को नवाब शुजाउद्दीन के साथ दगाबाजी करनी पड़ी। जि हाजी अहमद को शुजाउद्दीन ने पनाह दी, उसी का खून करवाते क्या अलीवर्दी खाँ क हाथ नहीं काँपा ? यह बात क्या सच है कि हाजी अहमद ने शुजाउद्दीन को जहर देक मार डाला था ?

"लेकिन आज तू यह सब क्यों पूछ रहा है ?"

"नहीं नानी साहबा, आपको इसका जवाब देना ही होगा।"

"आज कोई अगर मुझे जहर देकर नवाब शुजाउद्दीन की तरह मार डाले, जि तरह नवाब सरफराज का मेरे नाना जी ने खून किया था, उसी तरह अगर मुझे को मार डाले तो मेरे खूनी को आप कुसूरवार साबित कर सकेंगी ?"

सुनकर नानी बेगम की आँखों में आँसू आ गये। कोई जवाब देते न बना।

"बतलाइए, आज तो इस बात का जवाब देना ही होगा।"

"क्या जवाब दूँ ?"

मिर्जा ने कहा, "सच क्यों नहीं कहतीं नानी जी, कहिए न कि मुझे अप गुनाहों का फल तो भुगतना ही होगा, साथ ही अपने नाना साहब के गुनाहों का भ यहाँ तक कि दिल्ली के शाहंशाह के गुनाहों का भी फल भोगने के लिए मुझे तैया रहना होगा !"

नानी बेगम को यह सब सुनना अच्छा नहीं लगा। वे उठने लगीं, लेकिन मिर्ज छोड़ने वाले नहीं थे। बोले, "बतलाइए न नानी साहबा, मैं क्या करूँ ?"

नानी बेगम ने मिर्जा के सामने जरा सख्त होने की कोशिश कीं। बोलीं "लेकिन अब तुझे तकलीफ क्या है, तू जो-जो चाहता था वह सब कुछ तो तुझे मि चुका है।"

"क्या मिल गया है मुझे ?"

"क्या नहीं मिला ? तुझे मसनद चाहिए थी, नहीं मिली क्या ?"

"इसी का नाम नवाबी है ? जिधर देखो उधर ही साजिश, दुश्मनी और दग क्या यही मैंने माँगा था ?"

"तब तुझे क्या चाहिए ?"

"मुझे प्यार चाहिए नानी साहबा, मैं और कुछ नहीं चाहता।"

"मैं क्या तुझे प्यार नहीं करती ?"

"आपके चाहने से क्या होगा नानी साहबा, मैं तो आपको नहीं चाहता मरियम बेगम का कहना है कि सिर्फ प्यार पाने से ही काम नहीं चलता, बदले में कु

ना भी पड़ता है।"

"क्या तू मुझे प्यार नहीं करता ?"

"मैं आपको कैसे प्यार कर सकता हूँ नानी साहबा ? गुनाह करते-करते मेरे दिल में प्यार जैसा कुछ रह ही नहीं गया है।"

"तू ये सब बातें न सोचाकर मिर्जा, यह सब सोचने पर मसनद नहीं रहती और मसनद पाकर यह सब सोचा नहीं जाता। कौन क्या सोच रहा है, किस बात से किसका क्या नुकसान होगा, इन सब बातों में सर खपाना नवाब-बादशाहों का काम नहीं है। इन बातों से दिमाग खराब होता है।"

"मेरा दिमाग तो खराब हो ही चुका है।"

"लेकिन बेटा, इस उम्र में दिमाग खराब करने से कैसे काम चलेगा ? यह क्यों भूलता है कि तेरे अच्छे-बुरे के साथ हम लोगों का भी अच्छा-बुरा जुड़ा हुआ है। तेरा कुछ होने पर हम लोगों का क्या होगा ?"

चेहल-सुतून आकर नानी बेगम मराली से पूछती, "क्यों री, मिर्जा आजकल इस तरह की बातें क्यों करने लगा है ? तूने उसे क्या सिखला दिया है ? क्या कहा है उससे ? तू भी क्या उसकी बुराई चाहती है ?"

"क्या हुआ नानी साहबा ?"

"क्यों, तुझे क्या पता नहीं है कि शाहंशाह और नवाबों को ये बातें नहीं करनी चाहिए ?"

"क्यों नानी साहबा, नवाब क्या दूसरे इंसानों से अलहदा हैं ?"

"अलहदा नहीं होता तो खुदाताला सभी को नवाब-बादशाह न बना देते। अलहदा नहीं हैं तो लोग नवाब-बादशाहों से डरते क्यों हैं ? उनको वे मानते क्यों हैं ?"

मराली थोड़ी देर चुप रहकर फिर कहती, "लेकिन नानी साहबा, आपके मिर्जा को उससे राहत नहीं मिलती। आपके नाती को राहत मिले, इसीलिए तो मैंने उन्हें रामप्रसाद का भजन सुना दिया। राहत के लिए ही वे मौलवी साहब को कुरान शरीफ की आयतें सुनाने के लिए बुलाते हैं। राहत बड़ी चीज है या मसनद ?"

"जो समझ में आये सो कर, लेकिन मुझे डर लगता है।"

"घबराने की कोई बात नहीं है नानी साहबा, आपके नाती अब ठीक हो जायेंगे।"

"लेकिन तू मिर्जा की इतनी फिक्र क्यों करती है ? चेहल-सुतून में तो और भी कितनी ही बेगमें हैं, वे लोग तो इस तरह नहीं सोचतीं ?"

"वे लोग मुझ जैसी बदनसीब थोड़े ही हैं !"

"फिर वही बात ! आखिर तुझे हुआ क्या है ? तुझे तकलीफ किस बात की है ? राजा साहब के पास जाना चाहती है तो बोल, कल ही भिजवा दूँ। लेकिन तू तो कुछ बोलती ही नहीं।"

"किसी को आदमी की चाह है, किसी को औलाद की तो किसी को दौलत की,

लेकिन नानी साहबा मुझे तो इनमें से किसी चीज की भी चाह नहीं है।"

"आखिर तुझे हुआ क्या है, साफ-साफ कह न।"

"आपके नाती भी यही बात पूछते हैं।"

"ठीक ही तो करता है, मिर्जा तुझे चाहता है इसीलिए यह सब पूछता है।"

"यह जानती हूँ नानी साहबा, लेकिन मेरा रास्ता तो खुदा ने ही बन्द कर दिया है, नहीं तो मुझे क्या चाह नहीं होती ? लेकिन चाहूँ कैसे ? बीवी होकर भी किसी की बीवी नहीं हो पायी, आदमी रहते हुए भी मेरा आदमी नहीं है !"

"तेरी ये पहेलियां तो मेरी समझ में आती नहीं।"

अपनी बात खत्म कर वह और नहीं रुकी, सीधे अपने कमरे में जाकर मराली ने कमरा बंद कर लिया। यह टीस ही ऐसी थी जो न तो किसी को बतलायी जा सकती थी, और बतलाने पर भी किसी के लिए इसका समझना मुश्किल था। कान्त कोशिश करके हार गया लेकिन कुछ भी पल्ले नहीं पड़ा। कान्त से भी मराली ने कितनी ही बार कहा था, "तुम बेकार में मेरे पीछे-पीछे क्यों घूमते हो ? तुम भगवान के लिए यहाँ से जाओ न ! मेरा खून हुए बिना क्या तुम्हें चैन नहीं मिलेगा ?"

कान्त कहता, "क्यों, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ?"

"तुम मेरे पास क्यों आते हो ? तुम्हें क्या और कहीं मरने की जगह नहीं मिलती ? निज़ामत की नौकरी छोड़कर क्यों कोई दूसरी नौकरी नहीं करते ?"

"लेकिन तुम्हीं तो मुझे बुलवाती हो। एक दिन न आने पर ही बुलवा भेजती हो ?"

"जाओ, और खबरदार जो फिर यहाँ आये तो, मेरे बुलाने पर भी नहीं।"

कान्त हैरान रह जाता। आखिर इसे हो क्या गया है ? देखते ही जो जी में आता है बकने लगती है। लेकिन कुछ दिन बाद ही फिर बुला भेजती है।

कान्त के पहुँचते ही मराली पूछती, "आये क्यों नहीं ?"

"तुम्हीं ने तो मना किया था।"

"तुम भी खूब हो, मैंने मना किया और तुमने आना बंद कर दिया ?"

कान्त कहता, "मैं आया भले ही नहीं, लेकिन तुम्हारे बारे में खबर लेता रहता था।"

"लेकिन क्यों ? मैं तुम्हारी कौन हूँ ? मुझसे तुम्हारा क्या रिश्ता है ?"

इसी तरह जब जो जी में आता, कहती। कान्त कभी भी मराली को समझ नहीं पाया। कभी लगता, मराली उसे चाहती है, उससे चोरी-छिपे मिलना उसे अच्छा लगता है। साथ ही किसी-किसी दिन उसे पहचान भी नहीं पाती।

उस दिन सुबह मराली का तामजान मोतीझील की ओर जा रहा था। कान्त भी पीछे-पीछे मोतीझील जा पहुँचा। अंदर उसे देखते ही मराली चौंक उठी, "तुम !"

"तुम्हीं ने तो आने को कहा था ?"

"मैंने ? मैंने तुम्हें कब बुलाया ?"

"तुमने उद्धवदास को लाने को कहा था न। बड़ी मुश्किल से लाया हूँ।"

"लेकिन इस वक्त मुझे भजन सुनने की फ़ुरसत ही कहाँ है ! नवाब को भी तो फ़ुर्सत नहीं है।"

"तब उससे जाने को कह दूँ ?"

मराली ने कुछ सोचा। फिर कहा, "लेकिन इधर बड़ी गड़बड़ हो गयी है। अब शायद किसी का भी बचना मुश्किल होगा।"

"क्यों, क्या हुआ ?"

मराली की बात सुनकर कान्त हैरान रह गया। मराली कह क्या रही है ? अभी तक तो कान्त ही मराली को होशियार करता आया है, और आज मराली स्वयं उसे डर दिखला रही है ! कान्त कुछ कहने ही जा रहा था लेकिन तभी कुछ लोगों के आने की आहट सुनाई दी।

फिर भी कान्त ने आगे बढ़कर पूछा, 'बतलाओ न, क्या हुआ है ?"

मराली ने कहा, "वाट्स कासिमबाजार कोठी छोड़कर भाग गया है।"

कान्त को याद है, उस रोज वाट्स के भाग जाने की खबर से जैसे मुर्शिदाबाद में तहलका मच गया था। उस दिन कान्त को रात भर नींद नहीं आयी थी। सिर्फ कान्त ही क्यों, मुर्शिदाबाद में किसी को भी नींद नहीं आयी थी। चौक में लोग काना-फूसी कर रहे थे। मीर जाफर अली साहब भी, सुना है, फिरंगियों से मिल गये हैं। क्या होगा ? अब मरियम बेगम क्या कर रही है ? सड़क पर बैठा जो ज्योतिषी भविष्यवाणी किया करता था, वह भी लड़ाई की बातें ही ज्यादा करने लगा था। हर किसी के चेहरे पर आतंक का भाव नजर आता था। सिर्फ शराफत अली जरा खुश नजर आता था। लगता है अल्लाह ने सुन ली ! इतने दिनों की उम्मीद लगता है, इस बार पूरी होगी। वापस आते ही उद्धवदास ने कान्त से पूछा, "प्रभु नवाब भजन नहीं सुनेंगे ?"

●

छोटे सरकार अब की बार काफी दिनों बाद हतियागढ़ वापस आये थे। मुर्शिदाबाद, कृष्णनगर और कालीघाट का चक्कर काटते-काटते वे काफी थक गये थे। उधर जग्गा खजांची भी अकेला पड़ गया था। डिहीदार रजा अली भी कोई न कोई बहाना लेकर आये दिन खजांचीखाने में आता या मुंशी को भेजता था। मुर्शिदाबाद से निजामत ने भेंट माँगी है, उसी का तगादा करता था। कभी घी चाहिए तो कभी तम्बाकू तो कभी गुड़। निजामत की बही में जितना जो कुछ लिखा था, वह तो वसूल करता ही, जो न लिखा था, वह भी वसूल किया जाता।

छोटे सरकार के आते ही जगत्सेठ जी का खत लेकर एक आदमी आया।

सुनकर बड़ी बहूरानी गुस्से से लाल हो गयीं। बोलीं, "तब ठीक है, चुपचाप हाथ-पैर बाँधकर बैठे रहो।"

छोटे सरकार कहते भी क्या !

एक दिन छोटे सरकार के पूर्वपुरुषों ने त्याग-भोग-संयम-संग्राम के पथ पर

चलकर जिस वंश की प्रतिष्ठा की थी, इतने दिनों बाद आज मानों उसी वंश की परीक्षा ली जा रही थी उनके माध्यम से। इतने दिनों बाद मानों उनके पूर्वपुरुषों की विदेही आत्माएँ सामने आकर खड़ी हो गयी थीं। इतने दिनों बाद वे आत्माएँ मानो कह रही थीं—तुम्हारा धर्म, तुम्हारा वंश, तुम्हारी निष्ठा, तुम्हारा देश आज तुमसे साहस की माँग कर रहे हैं, वीरता की माँग कर रहे हैं। आज तुम्हारी परीक्षा का दिन आ गया है। आज तुम्हारे आत्म-विश्लेषण का दिन है। चाहो तो तुम त्याग करके दरिद्र बन जाओ या आत्माधिकार की प्रतिष्ठा के लिए संग्राम करो। अकेले संग्राम अगर कठिन हो तो सम्मिलित संग्राम छेड़ो। यह तुम्हारे अकेले के अधिकार का प्रश्न नहीं है, यह तुम्हारे ही वंश के अधिकार का प्रश्न नहीं है, यह तुम्हारी रियासत और रिआया सभी के अस्तित्व का प्रश्न है। सभी के अस्तित्व का प्रश्न लेकर इतिहास आज तुम्हारे सामने आ खड़ा हुआ है। इस प्रश्न का उत्तर तुम्हें देना ही होगा।

रात को सोते-सोते भी छोटे सरकार जाग पड़ते। प्रतिदिन का संसार अपनी माँग लिये उनके सामने आ हाथ फैलाता। फिर कहता, "कहो, मेरे सवाल का जवाब दो।"

सुबह शिवाले से वापस आकर बड़ी बहूरानी ने पूछा, "क्या सोच रहे हो?"

छोटे सरकार ने कहा, "नहीं तो। सोच कहाँ रहा हूँ?"

बड़ी बहूरानी से रहा न गया। बोलीं, "दुहाई तुम्हारी। तुम्हारा यह चुपचाप बैठे रहना मुझसे देखा नहीं जाता। कुछ तो करो।"

"लेकिन करूँ क्या?"

"मैं अगर मर्द होती तो बतलाती।"

"लेकिन कुछ तो कह ही सकती हो।"

"तुम लोगों के रहते मैं क्या रास्ता बतलाऊँगी?"

छोटे सरकार ने कहा, "महाराज का तो कहना है, थोड़े दिन और सब्र करो।"

"क्यों, किसलिए? अगर महाराज के ऊपर बीती होती तो उन्हें पता लगता।"

"नहीं, यह बात नहीं है। क्लाइव साहब खुद काफी कोशिश कर रहे हैं। मुझसे कह रहे थे कि मेरी बहू नवाब के हरम में शराब पीती है। मैंने तो कह दिया, ऐसा कभी भी नहीं हो सकता।"

"तुमने यह क्यों नहीं कहा कि शराब पीये या जो भी करे हमारी बहू है हम समझेंगे।"

"यह भी कहा था।"

"फिर?"

"साहब इतने व्यस्त आदमी हैं कि ज्यादा बात नहीं कर सकते। बीच में ही एक आदमी आ गया और हम लोग चले आये। कह आया हूँ कि जरूरत होने पर मैं फिरंगियों को हाथी, घोड़ा और दौलत सब दूँगा। इस नवाब को खत्म किये बिना मुझे

द नहीं आने की थे ।"

"तुम यह कह पाये ?"

"क्यों, कहूँगा क्यों नहीं ? खुद महाराज गवाह हैं। तुम समझती हो मैं यहाँ [illegible]
आकर चुपचाप बैठा रहता हूँ। हाँ, एक बात और सुनी है। मुर्शिदाबाद के सारे
[illegible]ओं का कहना है कि नवाब फिलहाल छोटी बहू की मुट्ठी में है। वह जो [illegible] है
ही नवाब करता है।"

"और दुर्गा ? वह हरामजादी वहाँ बैठी-बैठी क्या कर रही है ? छोटे बहू [illegible]
का दिमाग खराब हो सकता है, लेकिन उसकी बुद्धि पर क्यों पत्थर पड़ गया ?"

"उसे तो सब कुछ सम्हालने के लिए ही साथ भेजा था, और [illegible] है कि कोई
खबर तक नहीं देती ?"

बड़ी बहू ने कहा, "उसकी बात जाने दो, वह छोटी जात की औरत है। उसके
भला कितनी बुद्धि हो सकती है। लेकिन छोटी बहू को जो कुछ [illegible]
था। खुद वह अपना मुँह झुलसा रही है और साथ ही हम सबका [illegible]
अक्ल है ?"

छोटे सरकार ने कहा, "तुम सब कुछ बिना समझे [illegible]
हो ?"

"क्यों न दूँ भला ? मैं ही उसे इस घर में ले आयी, [illegible]
बहू बनाया और उसने मेरा ही सर्वनाश किया। मैं उसका [illegible]
[illegible] वह नहीं समझती ? यह मेरा घर है या उसका [illegible]

जग्गा खजांची डरता हुआ छोटे सरकार के पास [illegible]
में बताकर, कहीं किसी कागज पर दस्तखत कराना हुआ [illegible]
उस दिन भी छोटे सरकार खजांची बाबू पर बिगड़ पड़े। [illegible]
ही देखना हो तो आप किसलिए हैं खजांची बाबू ?"

खजांची बाबू सर खुजलाते हुए खिसक [illegible]
इसीलिए हतियागढ़ की रियासत टिकी है, [illegible]

आज भी जग्गा खजांची के आते ही छोटे [illegible]

"फिर आ गये ? अब क्या करना है [illegible]
आप छोड़ेंगे नहीं।"

लेकिन जग्गा खजांची के छोटे [illegible]
सरकार को बड़ा आश्चर्य हुआ।

छोटे सरकार ने हैरानी से कहा, [illegible]

खत की सील देखते ही छोटे [illegible]
मुहर किया लिफाफा था। [illegible]
कि आपकी सहधर्मिणी श्रीमती [illegible]
मुझसे मुलाकात की है। [illegible]

अपने हालात का उन्होंने पूरा ब्योरा मुझे दिया। मैंने उन्हें आश्वासन दिया है कि यथासाध्य मैं उनके हित साधनार्थ चेष्टा करूँगा। पत्र पाते ही कृपया यहाँ चले आयें, विलम्ब न करें, क्योंकि पता नहीं कब क्या हो जाये। फिलहाल आपकी धर्मपत्नी को वापस ले जाने का यही अवसर है। इति'

छोटे सरकार ने सर उठाकर देखा, जग्गा खजांची अभी तक खड़ा था।

छोटे सरकार ने पूछा, "वह आदमी कहाँ है?"

"जी, अतिथिशाला में ठहरा है।"

"ठीक है, उससे जाने को कह दीजिए।"

जग्गा खजांची जा ही रहा था कि छोटे सरकार ने कहा, "सुनिए।"

जग्गा खजांची फिर सामने आ खड़ा हुआ।

लेकिन फिर पता नहीं क्या कहते-कहते छोटे सरकार रुक गये।

कहा, "अच्छा, आप जाइए।"

जग्गा खजांची के जाते ही छोटे सरकार खत हाथ में लिये बड़ी बहूरानी के महल की ओर चले दिये।



"आपका आचरण फरवरी में हुई सन्धि के अनुरूप न होकर नाना छलों से पूर्ण रहा है। चार मास में प्राप्य धन का मात्र पंचमांश ही आपने शोध किया है। संधिबद्ध होते ही बंगाल से अंग्रेजों को भगाने के लिए आपने फ्रांसीसी सेनापति बुं... को आमंत्रित किया है। फ्रांसीसी सेनापति लॉ को आपने अपने व्यय से राजधानी से पचास कोस दूर रख छोड़ा है। आपने अकारण अंग्रेजों का अपमान किया है। फौजें भेजकर कासिमबाजार कोठी की तलाशी ली है तथा अंग्रेज वकील को दरबार से निकाल दिया है। प्राप्य अशर्फियाँ न देकर हम लोगों के हितैषी अमीचंद को नगर से बाहर कर दिया है। इतने पर भी अंग्रेज लोगों ने सब कुछ शान्ति के साथ सहन किया। पठानों के हमले के समय अंग्रेज आपकी मदद को तैयार थे। अब दूसरा कोई रास्ता न देख अंग्रेजी फौजें मुर्शिदाबाद की ओर बढ़ रही हैं। वहाँ पहुँचकर आपके ही दरबार के मीर जाफर अली, राजा दुर्लभराम, जगत्सेठ जी, मीर मदन और मोहनलाल जी के ऊपर फैसले का भार दिया जायेगा। आशा करता हूँ उन लोगों द्वारा किया निर्णय आपको भी स्वीकार होगा।'

फौजें पहले ही रवाना हो चुकी थीं। क्लाइव ने खत पर दस्तखत करके, खत फ्लेचर को दे दिया।

इसके बाद खुद भी एक नाव पर चढ़ गया। दो सौ नावों का इंतजाम किया गया था। पेरिन साहब के बगीचे में एक तरह से कोई भी नहीं रहा। कलकत्ते से सीधे नवद्वीप पहुँचना होगा। वहाँ से छः कोस पर पाटुली है, और पाटुली से छः कोस पर काटोआ है। वहाँ से उत्तर दिशा में चलकर साँकाई पड़ेगा।

वाट्सन पहले ही रवाना हो चुका था।

अचानक कुछ दूर एक नाव पर सफेद कपड़ा उड़ते देख क्लाइव को बड़ा आश्चर्य हुआ।

"हू इज देट ? वह कौन है ? वे लोग कौन हैं ?"

क्लाइव ने नाव रोकने का आदेश दिया।

बोला, "स्टॉप हीयर।"

पीछे से नाव तीर की भाँति सन्-सन् चली आ रही थी। फिर उस नाव के ज़रा पास आते ही वाट्स चिल्लाया, "कर्नल !"

क्लाइव हैरान रह गया। फिर पूछा, "कासिमबाज़ार कोठी छोड़कर आ रहे हो ?"

"येस। लेकिन एक न्यूज़ है कर्नल, हमने मरियम बेगम को गिरफ्तार किया है।"

"कहाँ है ?"

"अंदर है। चले आओ।"

●

"फिर ? फिर क्या हुआ।"

उद्धवदास बैठे-बैठे मराली से कहानी सुनता और 'बेगम मेरी विश्वास' काव्य लिखता।

फिर पूछता, "उसके बाद ? उसके बाद क्या हुआ ?"

क्लाइव भी उद्धवदास को काफी मानता था।

कहता, "पोएट, तुम नवाब को अपनी पोएट्री नहीं सुना पाये लेकिन मैं सुन रहा हूँ। तुम मेरी की बायोग्राफी लिख रहे हो, लेकिन मेरी बायोग्राफी कौन लिखेगा ?"

आश्चर्य ! यह भी आश्चर्य है। इतिहास में कौन किसकी बात लिखता है ? उस दिन शायद खुद क्लाइव भी नहीं जानता था कि उद्धवदास एक दिन उसकी कहानी भी लिखेगा।

क्लाइव किसी-किसी दिन पूछता, "पोएट, लाइफ के माने क्या है ?"

उद्धवदास समझ नहीं पाता, पूछता, "प्रभु, लाइफ क्या है ?"

"मैंने इतनी लड़ाइयाँ लड़ीं, कितना कुछ किया लेकिन आज भी मेरी समझ में नहीं आता कि वह ठीक था या गलत ! मैं गरीब था, आज बड़ा आदमी बन गया हूँ, फिर भी मुझे लगता है कि मैंने यह ज़िन्दगी नहीं चाही थी। बना सकने हो [illegible] क्यों ऐसा लगता है ?"

उद्धवदास कहता, "देखिए प्रभु, आदमी पैदा होते ही रोता है लेकिन [illegible] हँसते हैं।"

क्लाइव कहता, "बिलकुल ठीक ! इंसान के पैदा होते ही उसकी जिन्दगी रो
से शुरू होती है।"

उद्धवदास कहता, "लेकिन प्रभु, वह जब जाता है तब दूसरे लोग रोते
और वह हँसते-हँसते चल देता है। जो आदमी इस तरह हँसते हुए जाता है उसी क
जीवन सार्थक है।"

बात क्लाइव को बड़ी अच्छी लगी थी। उसी दिन से मराली ने देखा, क्ला
बड़ा अनमना-सा रहने लगा था। नवाब सिराजुद्दौला के आखिरी दिन वह नहीं दे
पायी थी। सिर्फ सुना भर था। बड़ा दर्दनाक था वह अवसान। सारा मुर्शिदाबा
जैसे फूट-फूटकर रो रहा था। उस दिन कहाँ था यह उद्धवदास और कहाँ थी व
खुद ?

और भी एक बात उसे बार-बार याद आती। वह जगत्सेठ जी की हवे
में गयी थी। न जाने किसने कान में कह दिया था कि यह रात बड़ी खतरनाक
सकती है। जगत्सेठ जी ने कहा था, "आप जाइए बेगम साहबा, मैं आपके पति
पास खबर भिजवाता हूँ।"

लेकिन उसका पति है कौन ? कहाँ है वह ? जो लड़की पति को छोड़कर भा
थी उसे दूसरा आदमी कैसे बचा सकता था ? इसीलिए तामजान वापस जा रहा था
महिमापुर से लौटते वक्त उसने देखा था, भोर में कासिमबाजार कोठी के दो गोरे सा
घोड़े पर सवार घूमने जा रहे हैं।

मराली ने अपने तामजान के कहारों से पूछा भी था, "वे लोग कौन हैं ?"

कहारों ने पता लगाकर बतलाया था, "वाट्स साहब और अमीचंद जी
घूमने जा रहे हैं।"

मराली को न जाने कैसा शक हुआ। ऐसा तो नहीं होना चाहिए !

फिर मराली वहाँ रुकी नहीं। वहाँ से सीधे वह मोतीझील गयी। मोतीझ
में उस समय चारों तरफ खामोशी थी। वहाँ पहुँचकर वह तामजान से उतर गयी

कहारों को तामजान लेकर सीधे गंगा किनारे जाने के लिए मराली ने
दिया। झालरदार तामजान। झालर से ढके रहने पर पता नहीं चलता कि अ
कौन है।

मराली ने कहारों से कह दिया था कि अगर कोई पूछे तो बता देना, मरि
बेगम कलकत्ता गयी है।

गंगा के घाट पर निज़ामत के बीसियों बजरे हर समय तैयार रहते थे। नव
का जभी मन होता, वे पहुँच जाते। फिर अगर नवाब का मन हुआ तो नदी-विहार
लिए बजरा खोलना होता। उस समय देर नहीं की जा सकती थी।

खाली तामजान घाट किनारे गया। उस समय भी अँधेरा था। चारों त
न जाने कैसी डरावनी उदासी छायी थी। चेहल-सुतुन के नौबतखाने में इंसाफ मिय
शहनाई पर कोई राग अलापना तब शुरू नहीं किया था।

तामजान के घाट किनारे पहुँचते ही माझी-मल्लाहों में खलबली मच गयी थी।

"कौन है ? कौन है ?"

माझी-मल्लाह झटपट डाँड़ लेकर तैयार हो गये। शायद नवाब आये होंगे, नहीं तो कोई बेगम साहबा।

तामजान उतारा गया। लेकिन उसमें से कोई बाहर न निकला।

कहारों ने मल्लाहों के पास जाकर उनके सरदार के कानों में कुछ कहा। फिर झटपट माझी-मल्लाह तैयार हो गये। बजरा रवाना होने के लिए तैयार हो गया। उसी ओर में मुर्शिदाबाद की गंगा में एक बजरे की रस्सी खोली गयी और पाल ताना गया।

"यह बात किसी को मालूम न हो मियाँ साहब, मरियम बेगम साहबा का हुक्म है। समझ गये न ?"

मल्लाह ने कहा, "हाँ भाई समझा। किसी को कानों कान खबर न होगी।"

उसके बाद तामजान मुड़ा। फिर वह चेहल-सुतून की ओर चलने लगा। लेकिन उसी समय उस पर बशीर मियाँ की निगाह पड़ गयी।

बशीर मियाँ मंसूर अली साहब की हवेली से लौट रहा था। तामजान देखकर न जाने उसे कैसे शक हुआ। इसी तामजान को उसने जगत्सेठ की हवेली के चबूतरे पर देखा था। अब गंगा के किनारे देख रहा है!

"क्यों भाई, तामजान किसका है ?"

"बेगम साहबा का, मियाँ साहब !"

"कौन-सी बेगम साहबा ?"

"मरियम बेगम साहबा। शायद सैर करने कलकत्ता गयी हैं।"

बशीर मियाँ को बड़ा ताज्जुब लग रहा था। मरियम बेगम साहबा सैर करने कलकत्ते गयी हैं! ओह, समझा! अब तक जगत्सेठ जी के यहाँ थीं। वाट्स साहब और काफिर अमीचंद भी वहीं थे। तब क्या बेगम साहबा को सब पता लग गया ?

"साथ में और कौन था ?"

"साथ में बाँदी गयी है, और कौन जाता ?"

"तोबा ! तोबा !"

फिर बशीर मियाँ वहाँ रुका नहीं। उस समय निजामत का बजरा अँधेरे में हवा के बीच पाल ताने सर-सर आगे बढ़ा जा रहा था। बशीर मियाँ मंसूर अली साहब के मकान की ओर चलने लगा।

लेकिन रास्ते में ही बशीर की भेंट कम्पनी के फिरंगी हरकारे से हो गयी।

इस हरकारे का नाम था फ्लेचर।

बशीर मियाँ ने पूछा, "क्यों साहब, इस वक्त कहाँ चले ?"

"कलकत्ते।"

"खूब रही! मरियम बेगम साहबा भी कलकत्ते ही गयी हैं!"

"क्यों ? हाई ?"

"यह कैसे कह सकता हूँ ? जरूर कोई खास बात होगी।"

फ्लेचर ने जरा देर कुछ सोचा, फिर घोड़े को घुमाकर कहा, "चलूँ, वाट्स साहब को न्यूज दे दूँ।"

फ्लेचर चला गया।

बशीर मियाँ ने भी फूफा साहब की हवेली की ओर कदम बढ़ाये। अब खबर पाकर फूफा खुश हो जायेंगे। बड़े खफा हो रहे थे फूफा साहब।

●

खबर भोर होते न होते आ पहुँची। जगत्सेठ जी के यहाँ जो सलाह-मशविरा होता था सब कुछ रात में ही होता था। रात के वक्त ही सेठ जी को ज्यादा काम करना पड़ता। नवाब-बादशाह जब नाच और नशे में डूबे होते थे, अमीर-उमरावों का काम उसी वक्त होता था। दिन के वक्त सारे काम कायदे के मुताबिक चलते हैं। लेकिन वह सब ऊपरी और दिखावे के लिए होता था। असल काम तो रात के अँधेरे में ही चलता है। किसको उठाना होगा, किसको गिराना होगा, किसको खतम करना होगा और किसे खिताब देना होगा, यह सब रात को ही ठीक होता था।

आधी रात के बाद जगत्सेठ जी को जरा देर नींद आयी थी। इतनी दौलत के मालिक के लिए गहरी नींद सोना कोई अच्छी बात नहीं है। जिसकी दौलत जितनी ज्यादा हो, उसकी नींद भी उतनी ही कम होती है। लेकिन जगत्सेठ के नौकर-चाकर, चोबदार-खिदमतगार और कहार-नौकर भर पेट खाना खाकर आराम से सो जाते। उनकी नींद बड़ी गहरी होती। वे जैसे खाते थे, सोते भी वैसे ही थे। लेकिन उस रात बुलाहट के मारे उनकी भी नींद टूटी। भीखू शेख ने सदर महल में खबर भेजी। सदर महल से अन्दर महल को खबर भिजवायी गयी। अन्दर महल के लोगों ने और भी अन्दर खबर भेजी।

"क्या खबर है ?"

खबर सुनकर जगत्सेठ के लिए सोना मुश्किल हो गया। गुसलखाने में जाकर वे वहाँ से जल्दी ही निकल आये।

उस समय भी ठीक से भोर नहीं हुआ था।

बहुत ही धीरे-धीरे बातें हुईं। बहुत ही धीरे-धीरे कानाफूसी !

"क्या बात है ?"

मंसूर अली साहब से खबर पाकर मेंहदी निसार खुद दौड़े-दौड़े आये। इन सब मामलों में किसी पर यकीन नहीं किया जा सकता। इसलिए खुद ही आना पड़ा। नवाब को सब पता लग चुका है।

"मरियम बेगम को नवाब ने रातों-रात कलकत्ते भेजा है।"

"हाँ ! रात को ही तो वह यहाँ आयी थी। उसकी आजिज़ी पर तरस खाकर मैंने हतियागढ़ आदमी भेज दिया है।"

"आदमी क्या चला गया ?"

"हाँ, वह तो शायद छोटे सरकार के पास पहुँच भी गया होगा। मैंने कहलवा दिया है कि जितनी जल्दी हो सके छोटे सरकार यहाँ चले आयें।"

मेंहदी निसार ने कहा, "आप इतनी आसानी से बहकावे में आ गये ? उधर वाट्स और अमीचंद जो कासिमबाजार कोठी छोड़कर भाग गये हैं, यह बात भी नवाब को मालूम हो चुकी है।"

"यह कैसे हो सकता है ? तुम्हारे आदमियों ने बेईमानी तो नहीं की ?"

"नहीं सेठ जी, मेरा आदमी क्यों बेईमानी करेगा ?"

"फिर नवाब को कैसे मालूम हुआ ? किसने नवाब को खबर की ?"

"मरियम बेगम साहबा सब कर सकती हैं।"

"तब क्या क्लाइव साहब अभी तक कलकत्ते में ही हैं ? १२ जून को तो उनके मुर्शिदाबाद के लिए रवाना होने की बात थी।"

मेंहदी निसार ने कहा, "पता नहीं क्या हो गया। अब तो खबर मिलने का भी कोई उपाय नहीं रहा। कासिमबाजार कोठी का जो आदमी खबर लाता था अब तो उसका आना भी मुश्किल है।"

"मीर जाफर अली साहब आजकल कहाँ हैं ?"

"अपनी हवेली में।"

"मरियम बेगम साहबा के कलकत्ते जाने के बारे में क्या उन्हें पता है ?"

"कह नहीं सकता। शायद उन्हें अभी तक खबर न मिली होगी।"

"तब आप फौरन जाकर उन्हें खबर दे दें। क्लाइव को लिखा मीर जाफर अली साहब का खत अगर बेगम साहबा के हाथ पड़ गया तो सब भंडाफोड़ हो जायेगा। फिर सबके सब कत्ल होंगे। यार लुत्फ खाँ को भी जरा होशियार कर दें। सभी के लिए होशियार हो जाना जरूरी है।"

बड़े ही शक-शुबहे और होशियारी के वे दिन और रातें थीं। मेंहदी निसार साहब के जाने के बाद जगत्‌सेठ जी जरा देर वैसे बैठे ही रहे। यह सिर्फ मसनद बदलने की बात नहीं है, मसनद के साथ ही मुर्शिदाबाद में भी कुछ रद्दो-बदल होगा। सरफराज खाँ को कत्ल करने के बाद अलीवर्दी खाँ ने जैसा किया था। उसी तरह सख्ती बरतनी होगी। फौज के लोगों को अभी तक कुछ भी पता नहीं है। उन लोगों को पता लगने से पहले ही तख्ता उलट देना होगा। मीर बख्शी मोहनलाल अभी भी नवाब के साथ है। लेकिन और कितने दिन ? कुछ ही दिनों में खबर आ जायेगी कि कर्नल क्लाइव और एडमिरल वाट्सन फौज लिये मुर्शिदाबाद की ओर आ रहे हैं। और तब नवाब बहादुर की नींद टूटेगी ! तब इसी सेठ महताबचंद की याद आयेगी।

धीरे-धीरे दिन निकला। जगत्‌सेठ जी सवेरे से इन्तजार कर रहे थे। लेकिन कोई खबर नहीं आयी। उनका सारा दिन बड़ी बेचैनी में कटा। उनके दफ्तर में और दिनों की तरह झुंड के झुंड कर्मचारी काम पर आये। सेठ जी भी निश्चित समय पर सवेरे

दफ्तर गये। उनके सामने हिसाव की वहियाँ आयीं। हिसाव की बहियों के पन्नों पर से अनगिनत अंक अपने कई-कई सिफरों को सीने में सिमटाये सेठ जी की तरफ देखने लगे। ये कोई दो-चार अंक तो थे नहीं, मानो अंकों के पहाड़ हों! हजार, लाख, करोड़ सिफरों में सिमटकर जैसे आँखों के आगे से ओझल होने लगे। एक दिन नवाव-वादशाहों की जरूरत से ही जगत्सेठों का सर्जन हुआ था लेकिन अब जगत्सेठों के लिए नवाव-वादशाह थे। सूद के अंक तो अव पहले की तरह नियम मुताबिक नहीं वढ़ते। अव तो सूद कम होते-होते जैसे मूल ही किसी तरह वचने लगा। फिर जगत्सेठ वनने में क्या लाभ है? जगत्सेठ जी सोचने लगे। अगर मैं ही जगत्सेठ हूँ तो नवाव मुझे हुक्म क्यों करता है? वहियों के पन्नों पर के अंकों के सिफर मानो जीवंत होकर उन्हें तमाचा लगाने लगे। मानो अव ये मामूली सिफर नहीं, नवाब हैं! फिर लगा, नवाव ने मानो वंदूक की गोलियों के रूप में उनकी वहियों के पन्नों पर ये सिफर वरसाये हैं। लेकिन ये सिफर न होते तो क्या मिर्जा मुहम्मद की नवाबी टिक पाती? क्या वह नवाव वना रहता? क्या चेहल-सुतून रहता? मोतीझील—वेगमें—मसनद— तामजान—हाथी-घोड़े—तोपें—गोला-वारूद—कुछ भी नहीं रहता।

रास्ते भर जगत्सेठ जी कान खड़े किये रहे। कहीं कोई कुछ कह तो नहीं रहा है? क्या किसी को नहीं मालूम कि क्लाइव अपनी फौज लिये मुर्शिदावाद आ रहा है? क्या किसी को भी नहीं मालूम कि अव मीर जाफर खाँ ही मसनद विछाकर चेहल-सुतून में, मोतीझील में अपना दरवार रोशन करेगा?

प्रतिदिन इसी रास्ते से जगत्सेठ अपने दफ्तर जाते थे। जगत्सेठ जी की पालकी देखते ही मुर्शिदावाद के लोग झुक-झुककर हाथ जोड़-जोड़कर नमस्कार करते। सड़क पर चलते लोग वड़े अदव से दोनों किनारे हटकर खड़े हो जाते। हिसाब की वहियों के पन्नों पर के सिफर तो उनकी हवेली के लोहे के संदूकों में बंद रहते और वस वे ही दफ्तर जाते। दफ्तर में जाकर वे वस उन्हीं सिफरों को देखते रहते हैं और निश्चित होकर चैन की साँस लेते हैं। सव कुछ ठीक है। रुपये-पैसे, कौड़ी-दमड़ी के कूट भग्नांश तक उनकी वहियों में लिखे रहते। मिर्जा मुहम्मद चाहे कुछ भी कहे, लेकिन वहियों के ये सिफर ही असली नवाव हैं, मुर्शिदावाद के नवाव हैं, और दिल्ली के वादशाह हैं! उनकी वहियों के सिफरों में से एक भी कम हो जाय तो नवाव के मोतीझील की एक मशाल तुरंत बुझ जायेगी, चेहल-सुतून के खाने की थालियों के साथ एक कटोरी तुरंत कम हो जायेगी। जव तक जगत्सेठ हैं तभी तक नवाव भी हैं। केवल हैं ही नहीं, वड़े गौरव और शान से हैं।

फिर चौक वाजार से जाते समय कुछ लोगों के वातें करने की आवाज जगत्सेठ जी के कानों में आयी थी। क्या कह रहे हैं वे?

धीरे-धीरे यह वातें करना शोर-शरावे में वदल गया। जगत्सेठ जी ने पालकी की खिड़की में से झाँककर वाहर देखा। साथ ही साथ वे चकित रह गये। ये कौन हैं? कौन हैं ये? क्या ये कंपनी के सिपाही हैं? क्या कंपनी के सिपाही वंदूक तानकर

दाबाद में घुस पड़े हैं ? कब आये ये मुर्शिदाबाद में ? आज ही तो बारह जून है !
नी जल्दी ये पहुँच गये !

आँखों के आगे सिपाहियों की नंगी तलवारें चमकने लगीं। तलवार ले-ले वे
ीझील की तरफ भागे जा रहे थे। चेहल-सुतून की तरफ भागे जा रहे थे।

जगत्सेठ जी ने चिल्लाकर कहारों को होशियार किया, "चल, जल्दी चल,
न जल्दी !"

लेकिन इतिहास के लिए जल्दी कैसे हो सकती है ? इतिहास की पालकी तो
ड़ों सूरज के कहार ढोते हैं। वे भोर में पूरब दिशा में उगते हैं और साँस रोके आकाश
 परिक्रमा करते हैं। उनकी रफ्तार के साथ भला कौन होड़ बदता ? किस जगत्सेठ
इतनी हिम्मत थी ? मुर्शिदाबाद के तुम जगत्सेठ हो सकते हो लेकिन इतिहास तो
ाडसेठ है। इतने विशाल ब्रह्मांड में एक जगत्सेठ का अस्तित्व ही क्या है ? तुम्हारे
स कितनी दौलत है जो इतिहास का मुकाबला करोगे ? आज तुम नवाब को हटाये दे
 हो, लेकिन तुम्हें क्या मालूम है कि एक दिन तुम्हें भी कोई हटा देगा ? उस दिन
म्हारी दौलत तुम्हें बचा नहीं पायेगी, तुम्हारी नामवरी तुम्हें बचा नहीं पायेगी। उस
न तुम्हारी दौलत ये नातेदार-रिश्तेदार सभी तुम्हें छोड़ देंगे। उस दिन कोई रॉबर्ट
ाहब, कोई कंपनी तुम्हें बचा नहीं पायेगी। रॉबर्ट क्लाइव की तरह उस दिन तुम भी
ट जाओगे।

"सेठ जी !"

अपना नाम सुनकर सेठ महताबचंद चौंक उठे। और साथ ही उनके मुँह से
कला—नहीं ! नहीं ! मैं कुछ भी नहीं जानता ! मीर जाफर, वाट्सन या अमीचंद
सी से भी मेरा कोई सरोकार नहीं है, मुझे छोड़ दो...

"सेठ साहब, मैं हूँ मेंहदी निसार। मुझे नहीं पहचाना ?"

तभी जैसे होश आया। सेठ महताबचंद ने अपने चारों ओर देखा। यह तो
नका अपना घर है। तब क्या बैठे-बैठे खुमारी आ गयी थी ?

"मेंहदी निसार साहब, आप ? इस वक्त ?"

"जी हाँ, सेठ साहब ! नवाब ने मीर जाफर अली साहब को क़ैद कर
या है।"

"हैं ! मीर जाफ़र को कैद कर लिया ? तब तो हम सभी फँसेंगे !"

"आपके कहने पर मीर जाफर साहब की हवेली गया था, उन्हें इत्तला करने के
लए। तभी देखा हवेली को निजामत के सिपाहियों ने घेर लिया था।"

सेठ जी सोचने लगे।

"घबड़ाने की कोई बात नहीं है, उधर मिस्टर क्लाइव ने भी मरियम बेगम
ाहबा को गिरफ्तार कर लिया है।"

"आप कहते क्या हैं ?

"जी हाँ, मरियम बेगम चालबाजी करने कलकत्ते पहुँची थी। लेकिन वाट्स

और अमीचंद ने उसे रास्ते में ही गिरफ्तार करके क्लाइव के सुपुर्द कर दिया है।"

अचानक तभी सदर फाटक पर मोतीझील का प्यादा आ पहुँचा।

भीखू शेख ने पूछा, "क्या हुआ ?"

"सेठ जी के नाम परवाना है।"

परवाना जब अंदर सेठ जी के हाथ में आया तो वे घबड़ा गये। जो सोचा था वही हुआ। उनके पास परवाना आया है तो और लोगों के नाम भी आया ही होगा। लेकिन यह काम किसका हो सकता है ?

मेंहदी निसार भी सोच रहा था, इतने दिनों की मेहनत क्या बेकार जायेगी ?

सेठ जी ने पूछा, "आप किस पर शक करते हैं ?"

मेंहदी निसार ने कहा, "कुछ समझ में नहीं आ रहा है। मरियम बेगम ऐसा कर सकती थी लेकिन उसे तो क्लाइव साहब ने गिरफ्तार कर लिया है।"

"कैद करके कहाँ रखा है ?"

"मालूम नहीं।"

"ठीक है। आप चलिए मेंहदी निसार साहब ! मैं भी तैयार हो लूँ।"

इतना कहकर जगत्सेठ महल में चले गये। नवाब का परवाना क्या खुदाताला के परवाने से कम जरूरी था ?

•

छोटे सरकार चिट्ठी पाते ही हतियागढ़ से रवाना हो गये। इतने दिनों बाद छोटी बहूरानी मिली है, यह क्या कम बड़ी बात है ? धर्म बिगड़ा है तो क्या हुआ, लेकिन धर्म से भी जो बड़ा है, धर्म से भी जो महान है, उसका आकर्षण क्या कम है ?

शायद पुरोहित महाशय आकर शास्त्र का विधान सुनायेंगे। कहेंगे, प्रायश्चित्त करना होगा। मुसलमानों के हाथ का खाया है, मुसलमानों में उठी-बैठी है, यह क्या कोई छोटा-मोटा अपराध है ? लेकिन भले ही यह अपराध हो, लेकिन छोटे सरकार छोटी बहूरानी को एक बार देख तो पायेंगे।

चलते वक्त बड़ी बहूरानी ने कहा था, "खबर मिलते ही मुझे खत भेजना, मैं आ जाऊँगी।"

"तुम क्या करने आ जाओगी ?"

"एक-आध बात पूछनी है।"

"क्या पूछना है ? मैं ही पूछ लूंगा।"

"तुम्हारे पूछने से काम नहीं चलेगा। मुझे सिर्फ इतना जानना है कि मुँहजली ने जात तो गँवायी, साथ में क्या धर्म भी डुबो दिया है ?"

"मतलब ? जात और धर्म क्या अलग-अलग हैं ?"

इसके बाद छोटे सरकार ने और कुछ समझने की कोशिश नहीं की। वे सीधे

अपने बजरे से मुर्शिदाबाद चले आये। लेकिन मुर्शिदाबाद पहुँचकर महिमापुर के घाट पर उतरते ही उन्हें वहाँ का वातावरण न जाने कैसा लगा। चारों तरफ सनसनी और खामोशी छायी थी। घाट पर जो माझी-मल्लाह थे, वे भी कैसे अनमने-से थे। क्या हो गया था इनको ? छोटे सरकार सोचते रहे। ऐसा तो नहीं होता। हमेशा से छोटे सरकार उनको देखते आ रहे थे। वे हमेशा खाना पकाते, गाते या नमाज पढ़ते हुए मिलते या कम से कम छोटे सरकार की तरफ सवालिया निगाह से देखते होते। लेकिन इस बार क्या हो गया है ? मुर्शिदाबाद में कोई खास बात हो गयी है क्या ? छोटे सरकार कुछ भी नहीं समझ पाये।

छोटे सरकार को सारा किस्सा महिमापुर में जगत्सेठ जी की हवेली में जाकर मालूम हुआ।

जगत्सेठ जी के दीवान जी सामने ही बैठे थे। बोले, "सेठ जी तो हवेली में नहीं हैं।"

"कहाँ गये हैं ? मैं तो उन्हीं का खत पाकर आ रहा हूँ।"

दीवान जी ने कहा, "यह मुझे मालूम है। सेठ जी मोतीझील गये हैं। नवाब का परवाना आया था।"

"परवाना ? परवाना किसलिए आया था ?"

दीवान जी ने कहा, "मीर जाफर साहब गिरफ्तार कर लिये गये हैं। क्या आपको यह नहीं मालूम ?"

"किस दिन ? कब ? फिर क्या सारा भंडाफोड़ हो गया है ?"

"शायद ऐसा ही हुआ हो, क्योंकि सभी के नाम परवाना निकला है। यार लुत्फ खाँ, मेंहदी निसार साहब, यारजान साहब, जगत्सेठ जी, कोई भी बचा नहीं है।"

छोटे सरकार ने पूछा, "अब क्या होगा ?"

दीवान जी ने कहा, "क्या होगा, कुछ कहा नहीं जा सकता। सेठ जी जब तक वापस नहीं आते तब तक कुछ मालूम नहीं हो सकता। आप बैठिए, आराम कीजिए, फिर देखा जायेगा क्या होता है। निजामत की हालत ठीक नहीं है।"

"हालत क्यों ठीक नहीं है ?"

"हालत ठीक नहीं है तो ठीक नहीं है। कासिमबाजार कोठी के फिरंगी लोग भी कोठी छोड़कर भाग गये हैं।"

"क्यों भाग गये ?"

दीवान जी ने कहा, "शायद, कंपनी के हेड ऑफिस से हुक्म आया था, नहीं तो वे इस तरह सब कुछ छोड़-छाड़कर भागते ही क्यों ?"

"फिर तो लगता है, फिरंगी लोग लड़ाई छेड़ेंगे।"

दीवान जी ने कहा, "आप अभी तो आराम कीजिए, फिर सेठ जी आयेंगे तो उन्हीं से सब मालूम होगा।"

इतना कहकर दीवान जी अंदर चले गये ।

●

मोतीझील में उस वक्त दरबार पूरी गर्मी पर था । मुर्शिद कुली खाँ खजाने में जो कुछ छोड़ गये थे, नवाब सरफराज खाँ के अमल में वह ठिकाने लग चुका था । सरफराज खाँ बड़े विलासी नवाब थे । थोड़े रुपये में उनका काम नहीं चलता था । दौलत उनके लिए हाथ का मैल थी । बेगमों के साथ होली खेलकर रात भर में लाखों रुपये उड़ा देते थे । पुरखों का कमाया रुपया मिल गया था इसलिए उड़ाओ और ऐश करो !

लेकिन अलीवर्दी खाँ जब मसनद पर बैठे तो शाही पेशकश नज़र करते-करते हालत पतली हो गयी । इसके अलावा घूस ऊपर से । बिना घूस के शाही सनद मिलना नामुमकिन था । बादशाह सलामत तक पहुँच ही नहीं हो पाती थी, सनद तो दूर की बात थी । फिर हमेशा से जो होता है उसमें तब्दीली करना किसके बूते की बात थी ?

इसके अलावा बर्गी डाकुओं के हमले की वजह से अलग परेशानी रहती थी ।

रुपया रुपया न रहकर गोया पानी रह गया था । सारे बंगाल को चूसकर जो रुपया आता था सारा का सारा बर्गियों को भगाने में बह जाता । बर्गियों से छुट्टी पाकर नवाब अलीवर्दी खाँ कुल तीन ही साल चैन से बैठ पाये थे कि अल्लाह मियाँ के यहाँ से बुलावा आ गया । हाँ, तो सिराजुद्दौला के नवाब होने पर खजाने में इन्हीं तीन सालों में जमा की गयी दौलत थी ।

लेकिन मीर जाफर साहब का ख्याल दूसरा ही था ।

उनका कहना था कि मेरे नवाब होते ही आप लोगों को रुपये की कमी नहीं रहेगी ।

लेकिन ऐन मौके पर सब गुड़ गोबर हो जायेगा, यह किसे पता था ?

पौ फटते ही निजामती सिपाहियों ने जाकर मीर जाफर अली साहब की हवेली घेर ली । जिसने देखा, अपने घर आकर दरवाजा बंद कर लिया । नवाबी खौफ ! पता नहीं किस पर गिरे ? साथ ही अफवाहों का बाजार भी गर्म हो उठा ।

चौक बाजार की सड़कों पर कानाफूसी शुरू हो गयी थी ।

किसी ने कहा, "सुना है, मीर जाफर साहब को कत्ल कर दिया है ।"

दूसरे ने कहा, "दिमाग खराब हुआ है ? मीर जाफर साहब को क़त्ल कर सके ऐसा माई का लाल पूरे बंगाल में नहीं है !"

एक और ने कहा, "मीरन साहब क्या समझते हो, चुप बैठने वाले आदमी हैं ? पूरे गुंडे हैं ! वे क्या ऐसे ही छोड़ देंगे ?"

"अरे, देख ली तेरे मीरन साहब की गुंडागिरी ! नवाबी फौजों के सामने गुंडा-गिरी करने के लिए कलेजा चाहिए, कलेजा !"

"देख मीरन साहब की हिम्मत की परख न कर । कत्ल करा देंगे और कानों-

कान खबर न होगी।"

अंत तक मीरन की कितनी हिम्मत है, अभी तक वह है या नहीं, इसी बात को लेकर दो दलों में बहस छिड़ गयी। बहस छिड़ते ही भीड़ इकट्ठी हो जाती है। अरे, नवाब क्या कोई छोटा-मोटा गुंडा है? नवाब के बचपन के दिनों की गुंडई जिन लोगों ने देखी थी आज उन्हीं के मुँह से सब सुनते हैं। आज वही सभी कह रहे थे, "नवाब की गुंडई क्या किसी से कम है? अरे वही उलटे तुम सबको गुंडई सिखा सकता है। हमने अपने चाचा से सुना है, नवाब जब छोटे थे तभी लड़कियों को पकड़-पकड़कर अपने साथ लिये बजरे में हवाखोरी करने निकलते थे। हमारे चाचा ने वह सब जमाना देखा है। तू क्या जानता है? तू तो कल का छोकरा है!"

छोकरा शब्द सुनते ही एक बिगड़ गया। बोला, "क्या कहा, मैं छोकरा हूँ? मैं क्या तेरा नौकर हूँ? मेरा बाप तेरे बाप से ज्यादा तलब पाता है इसी निजामत की नौकरी में!"

बात यहीं खत्म नहीं हुई। इसके बाद हाथापाई भी शुरू हो गयी।

शराफत अली की दुकान के सामने यह सब हो रहा था।

"अरे, भाग यहाँ से! भाग जा!"

एक ने कहा, "हुजूर, साला कहता है कि नवाब बहादुर मीरन से डरते हैं! एक शरीफ के नाम पर कीचड़ उछाल रहा है।"

"कौन साला शरीफ है? कौन हरामजादा नवाब को शरीफ कह रहा है?"

शराफत अली ने चीखकर कहा, "भाग यहाँ से! हाजी अहमद का पोता भी कहीं शरीफ हो सकता है? भाग यहाँ से।"

कामकाज न होने पर जो होता है, मुर्शिदाबाद में वही हो रहा था। आवारा और लफंगे छोकरे सारा दिन चौक बाजार में आवारागर्दी करते घूमते। पैदा होने के बाद से ही ये लोग देखते आये हैं कि खुशामद और घूस से इस दुनिया में सब कुछ हासिल किया जा सकता है, सच्चाई और ईमानदारी से यहाँ काम नहीं चलता। निजामत का मुलाजिम होने के लिए जरूरी है कि आप किसी के जमाई हों या किसी के लड़के या भाई-भतीजे। अगर आप यह सब भी नहीं हैं फिर भी काम हासिल हो सकता है, अगर आप कुछ जमा-पूँजी खर्च करने को तैयार हैं। और अगर गाँठ में पूँजी भी नहीं है तो एक ही रामबाण बचता है जो बिल्कुल अचूक है। वह रामबाण है औरत! औरत से बढ़कर हथियार दूसरा नहीं है। बस, ख्याल इसी बात का रखना होगा कि उम्र करीबन सोलह-सत्रह और बला की खूबसूरत हो। जिसके पास हुस्न और औरत जैसे हथियार मौजूद हों उसकी हुकूमत के आगे कोई उँगली नहीं उठा सकता। अरे यार, वे लोग बेवकूफ हैं जो ईमानदारी के पीछे भागते हैं, नवाब अलीवर्दी खाँ ने कभी खिराज भेजा था? नवाब सिराजुद्दौला ने भी कभी खिराज के नाम पर कानी कौड़ी दिल्ली के शाहंशाह के पास भेजी थी? कुरान और गीता में जो कुछ लिखा है, बकवास है। जमाना बदल रहा है, लिहाजा यार, हमें अपने कुरान और अपनी गीता

भी वदलनी होगी !

एक ओर कम्पनी की सिलेक्ट कमेटी के लोग, जब नये जमाने के लोग नये बाजार की फिराक में घूम रहे थे, ईसा मसीह के नाम पर दुनिया को गुलाम बना रहे थे तभी अपने हिन्दुस्तान के शाहंशाह के दरबार में विना घूस दिये सनद नहीं मिलती थी, विना औरत के खिलअत नहीं बख्शी जाती थी। तब पंडित, मौलवी, साधु, फकीर या कुरान और गीता की कोई कीमत नहीं रह गयी थी। कद्र थी सिर्फ सलाम और खुशामद की ! आज जो नवाब का भला चाहते थे, नवाब बहादुर उन्हें पसंद नहीं करते थे। जो नवाब की निगाहों में चढ़ जायेगा उसी की पौ-बारह होगी और नवाब की नजरों में चढ़ने के लिए अमीर-उमरावों को खुश रखना होगा। लेकिन यह भी कोई आसान काम नहीं था। इतने सारे खुशामदियों की भीड़ को पीछे ठेलकर आखिर आगे बढ़ें कैसे ? फिर आगे बढ़ भी गये तो तुम्हारी बात सुनने की न किसी को ख्वाहिश ही है न फुरसत ! खुदाताला को फुरसत हो सकती है लेकिन नवाब बहादुर और उनके उमरावों को फुरसत कहाँ है ?

पठान हुकूमत में यही हुआ और मुगल हुकूमत में भी यही होता आया है। लेकिन अब जमाना बदल रहा है। उधर सिक्ख हैं तो इधर मराठा उठ रहे हैं। लेकिन ये लोग आपस में ही लड़ते-झगड़ते मर-खप जायेंगे। आप लोग सात समुद्र पार कर यहाँ आये हैं, अब आपका ही भरोसा है। हुजूर, हम लोगों को बचाइए। अब से आप ही हमारे माई-बाप हैं ! बंदगी हुजूर, बंदगी !

मिर्जा मुहम्मद के आगे भी उस दिन सारे अमीर कायदे के मुताबिक कोर्निश करके खड़े थे। जो लोग हमेशा से सलाम बजाने वाले रहे हैं, वे जरूरत होने पर तो तुम्हें सलाम बजायेंगे ही, लेकिन काम निकलते ही दूसरे आदमी को भी सलाम बजाने में पीछे नहीं रहेंगे।

और कोई वक्त होने पर शायद मिर्जा के दिमाग में यह बात नहीं आती। लेकिन आज वह समझ गया था। विलकुल नासमझ होने से, देरी करके समझने वाला होना कहीं अच्छा होता है। सुबह होते ही मीर जाफर अली की हवेली को घेर लिया गया था। कोतवाल को हुक्म हुआ था कि मीर जाफर अली साहब को गिरफ्तार करके पेश किया जाये। लेकिन कुछ ही देर बाद कोतवाल को वापस लौट आने का हुक्म मिला।

फिर नवाब बहादुर का हुक्म हुआ कि कोतवाल नहीं, मैं खुद ही जाफर अली के पास जाऊँगा। जो कभी न हुआ था, आज वही हुआ। एक दिन इसी हवेली में मिर्जा मुहम्मद खेलने आया करता था। जाफर अली मिर्जा के नाना अलीवर्दी खाँ का बहनोई होता था।

नानी बेगम ने कह दिया था, "उसके सामने झुकने पर भी तेरी इज्जत प

कोई आँच नहीं आयेगी।"

मिर्जा ने कहा था, "लेकिन सारे शहर के आदमी क्या कहेंगे ? सब लोग यही सोचेंगे कि नवाब पर मुसीबत आयी है इसलिए जाफर अली की खुशामद करने गया है।"

"लोग जो कहते हैं, कहने दे !"

"हाँ नानी जी, लोगों की बातों का ख्याल करते-करते ही आज मेरी यह दशा हुई है।"

"तेरी कौन ऐसी दशा हुई है जो इस तरह बातें कर रहा है ?"

मिर्जा ने कहा, "नहीं नानी जी, अब लोगों की इज्जत पर कभी ठेस नहीं पहुँचाऊँगा। अब से मैं सभी की इज्जत किया करूँगा।"

"फिर तू जा, और मीर जाफर साहब को बुला ला।"

मिर्जा को अपनी हवेली में आया देख मीर जाफर पहले तो हैरान रह गया। हँसना चाहने पर भी होंठों पर हँसी नहीं आयी। बहुत दिनों की बहुत बेइज्जती का बदला लेने को मन हुआ। मिर्जा की बातों से समझ गया कि आदमी मुसीबत में ही झुकता है।

मीर जाफर ने अपने को सम्हालकर कहा, "मैं दरबार में नहीं गया इसलिए क्या मुझे गिरफ्तार किया जा रहा है ?"

"गिरफ्तार करना होता तो मैं खुद क्यों आता जाफर अली साहब, कोतवाल को भेजता।"

"कोतवाल को भी तो भेजा गया था, फिर वापस क्यों बुलवा लिया ?"

"उसी गलती को ठीक करने के लिए तो आया हूँ जाफर अली साहब !"

"लेकिन यहाँ मेरे पास ?"

"मेरा और है ही कौन ?"

"लेकिन अपने जिन अजीजों के बूते पर मुझे दरबार से बेइज्जत करके निकाल दिया था, वे लोग अब कहाँ चले गये ?"

"किन लोगों के बारे में कह रहे हैं ?"

"यही आपके ससुर इराज खाँ साहब, मोहनलाल, मीर मदन वगैरह !"

"मैं मुर्शिदाबाद का नवाब आपकी हवेली में आकर आपसे माफी माँग रहा हूँ, फिर भी आप माफ नहीं कर रहे हैं !"

मीर जाफर ने कहा, "आज मेरा खड़ा होना इतना खराब लग रहा है लेकिन जिस दिन मेरी बेइज्जती करने के लिए मोहनलाल के सामने [illegible] दिया था, तब मुर्शिदाबाद के नवाब बहादुर कहाँ थे ?"

"लेकिन मैंने तो कह दिया न कि मुझसे गलती हो गयी। [illegible] रहा। बंगाल के इतिहास ने मुझे एकदम बदल डाला है।"

"इसके माने ?"

मीर जाफ़र अली ने दरवाजे की ओर देखा। सारे दरवाजे और खिड़कियां बं हैं। अगर चाहें तो एक ही लमहे में बंगाल की मसनद के मालिक का मुंह बन्द किय जा सकता है। लेकिन नहीं, राजनीति कूटनीति होती है यह सही बात है, लेकिन कूट नीति की भी कोई नीति हो सकती है, जिसके मुताबिक सजे हुए दस्तरखान को ठुकरा देना चाहिए। उस ओर जरा भी लोभ नहीं दिखलाना चाहिए। तभी तो आ जब सारी बात खुल गयी है, नवाब उसकी खुशामद करने आया है। खुदाताला मर्जी !

"सच में मैं बिलकुल ठीक कह रहा हूँ। वक्त ने मुझे एकदम बदल दिया है जिस मिर्जा ने हुसैन अली का खून कराया था, जिसने अपनी सगी मौसी को नजरबं करके रखा था, जिस मिर्जा से सारा मुर्शिदाबाद थर-थर काँपता था वह मैं आज नहीं हूँ।

जरा देर रुककर मिर्जा ने फिर कहा, "लोगों का कहना है, मेरी बदनामी औ कमजोरी से फायदा उठाकर आपने फिरंगी कम्पनी से हाथ मिलाया है।"

"लोग जो भी कहें, आपका भी यही कहना है ?"

मिर्जा ने कहा, "लोगों की बात न हो तो जाने दें, लेकिन वाट्स आखिर बिन कुछ कहे-सुने कासिमबाजार कोठी छोड़कर क्यों चला गया ? इसके अलावा यह खत ?

इतना कहकर मिर्जा ने एक खत निकालकर मीर जाफ़र की ओर बढ़ाया।

मीर जाफ़र ने खत ध्यान से पढ़कर नवाब को लौटा दिया।

नवाब ने कहा, "इसके माने मुर्शिदाबाद की मसनद के लिए मुझे जंग कर होगी ? और आप लोगों ने, माने आप, जगत्सेठ जी, यार लुत्फ खाँ और राजा दुर्ल राम सभी ने मुझे छोड़ दिया है ?"

मीर जाफ़र फिर भी चुपचाप खड़ा रहा।

"यही मेरे जीवन की पहली लड़ाई नहीं है अली साहब ! आपको सभी कु मालूम है। लड़ाई से मैं नहीं घबड़ाता। तमाम दुनिया से मैं अकेले लड़ने को तैयार हूँ लेकिन अभी जो कहा न, अब मैं पहले का मिर्जा मुहम्मद नहीं हूँ। शायद आपको माल न हो अली साहब, कि आजकल मैं रोज कुरान शरीफ पढ़ता हूँ। आज मैं सभी प्यार चाहता हूँ, मुहब्बत चाहता हूँ। आप शायद सुनना चाहेंगे कि ऐसा क्यों हुआ फिर सुनिए। मैं कलकत्ते से लौट रहा था। गंगा के बीच वह आधी रात का वक्त थ बजरे में अपने बिस्तर पर लेटा था। नींद नहीं आ रही थी। मन में तरह-तरह चिंताओं की लहरें उठ रही थीं। सोच रहा था, मसनद पाकर मुझे क्या मिला ? मुझे इस क्या सहूलियत मिली ? जब मैं पैदा हुआ था, तभी से इस मसनद को लेकर इतनी शत्रु चल रही है। मसनद के लिए ही मेरे रिश्तेदार मेरे खिलाफ साजिश कर रहे हैं। जीव में खून-खराबा भी जो किया, इसी मसनद के लिए। लेकिन जिस मसनद के लिए इतना कुछ किया उस मसनद ने मुझे क्या दिया ? इस मसनद के मिलने से मुझे मिला ? जितना ही सोचता था, मेरी चिन्ता उतनी ही बढ़ती जाती थी, इतने में कि के गाने की आवाज कानों में आयी अली साहब ! सोचा, इतनी रात गये कौन गा र

है ? बाहर झाँककर देखा, एक बजरा जा रहा था। उसी बजरे से गाने की आवाज आ रही थी।"

मीर जाफर साहब को जवाब नहीं सूझा। सोचा, नवाब शायद बहकाने के लिए कूटनीति की कोई नयी चाल चल रहा है। ठीक है, फिर कूटनीति के दाव-पेंच ही चलने दें।

"फिर अली साहब, मैंने उस बजरे को रोकने को कहा। सुना, नदिया के महाराजा कृष्णचन्द्र उस बजरे में हैं और गाना रामप्रसाद गा रहा है। आपने रामप्रसाद का गाना जरूर सुना होगा। मैं बंगाल, बिहार और उड़ीसा का सूबेदार हूँ लेकिन खेतों में किसान, नदी में मल्लाह, राह-बाट में नौकर-चाकर तो मेरा नाम नहीं लेते, वे तो रामप्रसाद का ही नाम लेते हैं। उसके पास तो जागीर नहीं है, मसनद नहीं है, सनद और फर्मान भी नहीं हैं। मैंने सोचा, जाऊँ, देख आऊँ और एक सूबेदार को जिसे अमीर-गरीब सभी मानते हैं। फिर गया भी। मुझे देखकर रामप्रसाद एक उर्दू गजल गाने लगा। मैंने कहा, नहीं, तुम अपना गाना गाओ, जिसे लोग-बाग इतना पसंद करते हैं।"

मिर्जा मुहम्मद कहते रहे, "अली साहब, वह फिर अपना गाना गाने लगा—माँ मेरी यही भावना, कहाँ था मैं आया कहाँ, जाऊँ कहाँ क्या ठिकाना।"

इतने में बाहर फाटक पर दस्तक हुई।

मिर्जा मुहम्मद ने पूछा, "कौन है ?"

मीर जाफर ने कहा, "मैं देख आता हूँ।"

मिर्जा ने कहा, "नहीं अली साहब, जिस-तिस को अभी मत आने दीजिए। [illegible] मैं बहुत सारी बातें कहने आया हूँ। आज मैं सारी बातें आपसे कहूँगा।"

मीर जाफर ने कहा, "ठीक है, मैं किसी को यहाँ न आने दूँगा। [illegible] बातें सुनूँगा। फिर भी जरा देख तो आऊँ कि कौन आया है, [illegible]"

मीर जाफर साहब चले गये।

इतिहास के लिए यह भी एक अजीब घटना है। [illegible] के लिए हर किसी को मोतीझील के दरबार में [illegible] मुसाहिबों की खुशामद करता फिर रहा था। [illegible]

लेकिन दुनिया में जितने भी बादशाह [illegible] सबकी जिम्मेदारी जैसे अकेले सिराजुद्दौला पर [illegible] उसकी नजरों के आगे उस नये बनाने [illegible] बाप, दादा और परदादा ने जो [illegible]

मीर जाफर फाटक तक [illegible]

"[illegible]"

मिर्जा ने फिर पूछा, "कौन ? कौन आया था इस समय ?"

मीर जाफर ने कहा, "कोई नहीं, ऐसे ही ।"

"ऐसे ही माने ? ऐसे ही कहीं दरवाज़े पर दस्तक होती है ?"

मीर जाफर अली ने कहा, "होती है मिर्जा, होती है ! मैं रोज ही इस तरह की आवाजें सुनता हूं ।"

"सच अली साहब, आप भी सुनते हैं ? लेकिन मेरा तो ख्याल था कि मुझ अकेले को ही यह सब सुनाई देता है ।"

"यह सब मन का भ्रम है ।"

"आप भी कह रहे हैं, मन का भ्रम है । आप भी कह रहे हैं, यह सब कुछ नहीं है । लेकिन मैं सोचता था, शायद मुझको ही ऐसा होता है । शायद मुझपर कोई परेशानी आ रही है और यह उसी का इशारा है ।"

"आप यह सब सोचकर परेशान न हों ।"

"परेशान कैसे न होऊं ? मुझे अपनी फिक्र नहीं है, मुझे फिक्र है मुर्शिदाबाद की । क्लाइव मुर्शिदाबाद की मसनद हथियाने की फिराक में बैठा है और आप लोगों का यह हाल है ? इस बेचारे मुर्शिदाबाद ने आप लोगों का क्या बिगाड़ा है ?"

मीर जाफर ने कहा, "लेकिन मुझे यह सब सुनाने से क्या फायदा ? मुझे तो आपने निजामत से निकाल दिया है ।"

"मैंने आपको निकाल दिया है ?"

"आप ही ने तो सबसे कह दिया था कि मीर बख्शी मोहनलाल को सलाम कर तब दरबार में दाखिल होना पड़ेगा । मैंने अगर वह नियम नहीं माना तो उसमें किसका दोष है ? मेरा या आपका ? मुझमें अगर आत्म-सम्मान नाम की कोई चीज हो तो वह मेरा दोष है या गुण ? आप सूबा-ए-बंगाल के नवाब हैं, आपका जिस तरह आत्म-सम्मान है, उसी तरह आत्म-सम्मान आपकी प्रजाओं का भी है ।"

"लेकिन इस कसूर के लिए आप मुझे इतनी बड़ी सजा देंगे ?"

"किसने कहा कि मैं आपको सजा दे रहा हूं ?"

"क्या आपने अंग्रेजों के साथ समझौता नहीं किया ? मुझे मसनद से हटाने के लिए क्या आपने फिरंगियों के साथ मिलकर साजिश नहीं की । आप क्या यही कहेंगे कि मैंने जो कुछ सुना है वह गलत है ? फिर मैं क्यों अपना दरबार छोड़कर आपकी जाफरगंज की हवेली में आया ? मुसीबत में न पड़ने पर क्या कोई नवाब इस तरह किसी अमीर-उमराव के घर आता है ?"

"आपने तो मुझे पकड़ ले जाने के लिए फौज भेजी थी । मैं जाऊंगा नहीं, यही समझकर आपने फौज वापस बुला ली और खुद आये । यह तो आपकी ही गरज है । आप अपनी गरज से आये हैं ।"

"भले ही अपनी गरज से आया हूं, लेकिन नवाब तो मैं ही हूं । आपने तो इसी निज़ामत का नमक खाया है । आज उसी की दुहाई देकर आपसे अर्ज कर रहा हूं ।"

मीर जाफ़र ने कहा, "आप इस तरह न कहें। आपको जो कुछ कहना है, साफ़-साफ़ कहिए।"

"गलती आपकी है या मेरी ? आपने फिरंगियों के साथ साजिश क्यों की ? आज मैं यह बात रहने देता हूँ, क्योंकि इसका फैसला बाद में भी हो सकता है। लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप मेरे साथ रहें।"

"लेकिन किस हैसियत से रहूँ ?"

"जिस हैसियत से आप रहना चाहें। मैं इस बारे में कुछ न कहूँगा। इस समय फिरंगियों से मेरी दुश्मनी चल रही है, मैं चाहता हूँ, आप मेरे साथ रहें। आप भी इसी बंगाल के रहने वाले हैं। बंगाल मुल्क का जिसमें भला हो, वही आप करें। और मैं कुछ नहीं चाहता। जिन फिरंगियों से मेरी दुश्मनी चल रही है वे न तो मेरे अपने हैं और न आपके ही। वे किसी और मुल्क से आये हैं। वे यहाँ आकर हमारे आपसी झगड़े से फायदा उठाकर मुझे लाल-लाल आँखें क्यों दिखायेंगे ? इससे क्या मेरी अकेले की बेइज्जती है ? क्या इसमें आपकी बेइज्जती नहीं है ? मेरा नुकसान होने पर क्या आपका नुकसान न होगा ?"

"इतना सब-कुछ आप मुझसे क्यों कह रहे हैं ? मैं क्या कुछ नहीं समझता ?"

"मैं मानता हूँ कि आप सब समझते हैं लेकिन जब किसी के मन में गुस्सा हो तब वह कुछ भी समझना नहीं चाहता। मुझ पर गुस्सा करके आप मेरा सर्वनाश करने के लिए उन फिरंगियों से साजिश कर रहे हैं। लेकिन मेरा सर्वनाश होने पर आपका भी सर्वनाश होगा। क्या मेरा सर्वनाश होने के बाद भी आप बच जायेंगे ? कहिए, क्या कभी ऐसा होगा ?"

मीर जाफ़र ने कहा, "मैं इस समय कुछ भी न कहूँगा क्योंकि कहने पर भी आपके मन की जो दशा है, उसमें आप कुछ भी समझ न सकेंगे।"

"अली साहब, अभी ज्यादा बातें करने का समय नहीं है। बातें बाद में भी हो सकती हैं। उस समय आपकी सारी बातें सुनूँगा। मेरी बातें भी आप सुनेंगे। लेकिन इस समय आपसे एक अनुरोध करूँगा।"

"कहिए।"

"आप मेरे सामने कुरान शरीफ छूकर कहिए कि इस लड़ाई में आप फिरंगियों की मदद न करेंगे। इस लड़ाई में आप मुर्शिदाबाद का हित देखेंगे, बंगाल का हित देखेंगे, बंगाल की मसनद का हित देखेंगे और मेरा हित देखेंगे।"

थोड़ी देर खामोश रहकर मीर जाफ़र ने कुछ सोच लिया।

"आप खामोश न रहें अली साहब, कुरान ले आइए। कुरान हाथ में लेकर आप वादा कीजिए। कुरान हाथ में लेकर आप वादा करेंगे तो मैं सारी पिछली बातें भूल जाऊँगा अली साहब। आपके खिलाफ मैंने जो कुछ सुना है सब भूल जाऊँगा। एक बार फिरंगियों को कलकत्ते से भगा दूँ, फिर आप जो कहेंगे अली साहब, वही मैं करके दूँगा। आप अगर अपने परिवार के साथ दिल्ली में जाकर रहना चाहें तो वह भी इन्ते

मंजूर होगा। मैं सारा इंतजाम कर दूँगा। आपको किसी बात की तकलीफ न हो, इसका सारा इंतजाम मैं कर दूँगा। आप कुरान ले आइए।"

मीर जाफर ने कहा, "आपको मेरी बात पर यकीन नहीं होता ?"

"आपकी बात पर ही तो यकीन होना है अली साहब, फिर भी वही बात कुरान के सामने हो। मैं आजकल कुरान पढ़ता हूँ अली साहब।"

"इसके पहले भी तो मैंने कुरान हाथ में लेकर कसम खायी है लेकिन आपने फिर भी मुझपर अविश्वास किया है।"

"फिर भी आप कुरान ले आइए अली साहब। बीते समय से इस समय को तुलना न कीजिए। इस समय मुर्शिदाबाद की हालत और भी नाजुक है। इस बार या तो हिन्दुस्तान बचेगा या एकदम तबाह हो जायेगा। और मेरे बचने से ही हिन्दुस्तान बचेगा, फिर हिन्दुस्तान के बचते ही अली साहब, मैं, अमीचंद, जगत्सेठ सभी बचेंगे। यह न सोचिए अली साहब, कि मेरे न रहते भी आप सभी बने रहेंगे। यह मुसीबत हम सभी की है। आप कुरान शरीफ लाइए।"

मीर जाफर कुरान लाने के लिए कमरे के बाहर चला गया।

फिर जाफरगंज के देवता, मोतीझील के देवता, महिमापुर के देवता, हतियागढ़, कलकत्ता, हिन्दुस्तान और इंगलैंड, सभी के देवता, सभी की निगाह से ओझल रहकर व्यंगभरी मुस्कान मुस्कराने लगे।

०

हतियागढ़ से आकर छोटे सरकार हाँफने लगे थे। हतियागढ़ से महिमापुर तो कम दूर नहीं है। इस बार को लेकर वे महिमापुर की हवेली में कितनी ही बार आये थे। फिर भी उन्हें आशा का प्रकाश दिखाई पड़ने लगा था। छोटी बहूरानी का खूबसूरत चेहरा याद करते हुए भी उन्हें बड़ा अच्छा लगा। इसी कमरे में, यहीं भागकर वह आश्रय पाने की आशा से आयी थी। फिर वह जाती भी तो किसके पास ? चेहल-सुतून से भाग आना क्या इतना आसान है ? वहाँ के खोजाओं की आँख बचाकर निकल भागना क्या आसान है ? मुर्शिद कुली खाँ के जमाने से वहाँ कड़ा पहरा है। आसमान के चाँद-सूरज-तारे जो बेगमात देख नहीं पातीं उन्हीं के बीच छोटी बहूरानी दिन काट रही है। शादी के बाद आज तक जो छोटे सरकार के पास न होने से सो भी नहीं पाती थी, आज उसी को मुसलमानी हरम में बंद होकर रात काटनी पड़ रही है। छोटी बहू... क्या मालूम कि छोटे सरकार भी उसके बिना किस तरह बेचैन हैं। कितने ही दिन हो गये वे कचहरी के काम-काज भी नहीं देखते। जग्गा खजांची हिसाब की खाता-बही लेकर लौट जाता है। सारा हतियागढ़ आज उनके लिए मरुभूमि हो गया है। उनकी तकलीफ भी क्या कोई समझ पाता है ? महाराज कृष्णचंद्र बस धीरज धरने को कहते हैं। महाराज को कैसे मालूम हो सकता है ? महाराज की उम्र अधिक है, उनके बाल-बच्चे भी हैं, लेकिन छोटे सरकार के क्या है ?

छोटे सरकार ने दीवान जी को फिर बुलाया।

"सेठ जी आ क्यों नहीं रहे हैं?"

दीवान जी ने बतलाया, "मीर जाफर साहब के साथ जरूरी बातें कर रहे हैं।"

"कैसी जरूरी बातें?"

दीवान जी ने कहा, "आपको क्या कुछ भी मालूम नहीं है। कासिमबाजार की कोठी से फिरंगी लोग भाग गये हैं।"

"यह तो सुना है, फिरंगी भाग गये हैं। यह तो अच्छा ही हुआ।"

दीवान जी ने कहा, "लेकिन इस तरह किसी से कुछ बिना कहे भाग जाना तो नवाब की अवहेलना हुई न? फिर अंग्रेजों से सबका इतना मिलना-जुलना, इस तरह साजिश करना सबको मालूम हो गया है।"

"लेकिन नवाब को कैसे मालूम हुआ?"

दीवान जी ने कहा, "मरियम बेगम साहबा उस दिन रात को आयी थी न, वही सब सुनकर गयी है।"

"यह आप क्या कह रहे हैं?"

"सेठ जी के आने पर आपको सब-कुछ मालूम हो जायेगा। बस, इतना ही समझ लीजिए कि निजामत की हालत बहुत बिगड़ चुकी है। नवाब बहुत ज्यादा घबड़ा गया है। क्लाइव साहब ने नवाब को जो खत लिखा है उससे घबड़ाना ही पड़ता है।"

"क्यों क्या लिखा है उस खत में?"

"लिखा है कि फौज लेकर कासिमबाजार आ रहा हूँ।"

"क्यों? क्लाइव साहब क्यों आ रहा है? लड़ाई होगी क्या?"

"लिखा है कि फ्रांसीसियों को भगाने के लिए आ रहा हूँ। लिखा है, हम जल्द ही कासिमबाजार आ रहे हैं। फिर नवाब को एक परवाना भी देना है जिससे हमारी दो हजार की फौज अजीमाबाद की तरफ जाकर पटने के फ्रांसीसियों को पकड़ लाये।"

छोटे सरकार बड़े सोच में पड़ गये। ठीक ऐसे ही समय गड़बड़ शुरू हो गयी। पहले लड़ाई हुई थी कलकत्ते के जंगल में, लेकिन अब लड़ाई होगी एकदम राजधानी में। छोटे सरकार का मन काँप उठा।

छोटे सरकार ने पूछा, "जगत्सेठ जी क्या कहते हैं?"

दीवान जगत्सेठ के दफ्तर का बहुत पुराना आदमी था। जो भी करना होता है, उसी से सलाह-मशविरा करके तब जगत्सेठ जी करते हैं। इसलिए दीवान को सब कुछ मालूम था। नवाब की हालत इस समय बहुत बुरी है। फ्रांसीसियों को भगा देने पर भी उनको चोरी-छिपे तनख्वाह दी जा रही है। कोई कहता है, बुशी को आने के लिए छुपे तौर पर खबर भेजी गयी है। एक दिन एक हुक्म निकालते हैं तो दूसरे दिन नवाब उसे फाड़ डालते हैं। क्या करना चाहिए, नवाब इसका निर्णय नहीं कर पा रहे हैं। उधर गुप्तचर ने खबर भेजी है कि अंग्रेजों की आधी फौज कासिमबाजार के लिए

रवाना हो चुकी है।

इतनी सारी खबरें हतियागढ़ के छोटे सरकार को नहीं मिली थीं। अगर लड़ाई छिड़ती है तो हतियागढ़ के लिए भी मुसीबत है। वहाँ डिहीदार रजा अली बैठा है। वह आकर रुपया माँगेगा, लोग-लश्कर माँगेगा, पेशगी में मालगुजारी माँगेगा। सोचते-सोचते छोटे सरकार का दिमाग जैसे परेशान हो गया।

उस दिन जगत्सेठ जी जब मोतीझील से लौटे, उस समय काफी रात हो गयी थी। उस दिन की तरह जगत्सेठ जी को कभी परेशान नहीं देखा गया था।

सेठ जी ने कहा था, "हालत बड़ी खराब है छोटे सरकार।"

"यह तो मैं समझ रहा हूँ।"

"आपको जब खत लिखा था, उस समय भी बात इतनी नहीं बढ़ी थी। लेकिन दो ही दिनों में बात बहुत ज्यादा बढ़ गयी है। नवाब खुद जाफरगंज में मीर जाफर की हवेली में गये थे। अभी हालत बिगड़ी हुई समझकर नवाब दूसरी ही तरह का बर्ताव कर रहे हैं। इस समय वे किसी को नाराज करना नहीं चाहते। उस बार सबके सामने मेरे मुँह पर तमाचा मारा था, लेकिन इस बार बड़े कायदे से बात की।"

छोटे सरकार ने कहा, "इसी मौके पर क्या मेरी पत्नी को चेहल-सुतून से निकाला नहीं जा सकता?"

जगत्सेठ ने कहा, "लेकिन सुना है, आपकी पत्नी इस समय चेहल-सुतून में नहीं हैं। मेरे साथ उनकी ऐसी बात हुई थी कि मैं उनको बुला भेजूंगा। चौक बाजार में शराफत अली की खुशबूदार तेल की जो दूकान है, वहीं कान्त नाम का एक आदमी है, उसी को खबर करने से आपकी पत्नी यहाँ आ जायेंगी—ऐसी बात हुई थी।"

"कान्त? कान्त कौन है?"

जगत्सेठ ने कहा, "मैं नहीं जानता, कान्त कौन है।"

"कान्त के पास खबर भेजने के लिए क्यों कहा है?"

"यह भी मुझे नहीं मालूम। आपकी पत्नी ने कहा था, उसी को खबर करने से आपकी पत्नी को खबर मिल जायेगी। लेकिन अब तो उसके पास जाने से भी कोई लाभ न होगा। सुना है, मुझसे कोई खबर न पाकर आपकी पत्नी कलकत्ते चली गयी हैं।"

"कलकत्ते में क्यों गयी?"

"शायद क्लाइव साहब से कोई सहायता मिले इसी आशा से।"

छोटे सरकार सीधे होकर बैठ गये। कहा, "मैं तो एक बार क्लाइव के पास गया था। महाराज कृष्णचन्द्र के साथ मैंने जाकर क्लाइव से सब कुछ कहा है। क्लाइव को तो मालूम है कि मरियम बेगम कौन है।"

जगत्सेठ ने कहा, "क्लाइव को जब सब मालूम है तब वह जरूर आपकी पत्नी को आपके पास भेज देगा। लेकिन इस समय क्लाइव के पास भी तो यह सब सोचने-विचारने का समय नहीं है। इस समय नवाब की जो दशा है, वही दशा क्लाइव की भी

। सब कुछ मीर जाफर साहब पर निर्भर करता रहा है।"

"मीर जाफर साहब क्या करेंगे ?"

जगत्सेठ ने कहा, "इस समय मीर जाफर जिसका साथ देगा, उसी की जीत होगी। मीर जाफर के साथ फिरंगियों की सारी बात, यहाँ तक कि लिखा-पढ़ी भी हो गयी है। फिर भी कोई उस पर विश्वास नहीं कर पा रहा है। इधर नवाब के कहने पर मीर जाफर ने कुरान शरीफ हाथ में लेकर कसम खायी है। अब यह बात जब क्लाइव के कानों में पहुँचेगी तब क्या वह पूरी तरह से मीर जाफर पर विश्वास कर सकेगा ?"

"अब मैं क्या करूँ ? मुझे आप क्या करने को कहते हैं ?"

जगत्सेठ ने कहा, "यही तो मैं भी सोच रहा हूँ, लेकिन कोई निश्चय नहीं कर पा रहा हूँ।"

"चौक बाजार में शराफत अली की दुकान पर ही एक बार जाऊँ ? यह जो आपने नाम बताया, कान्त उससे एक बार मिल लूँ। शायद वह कोई रास्ता बता सके।"

जगत्सेठ ने कहा, "हाँ, ऐसा कर सकते हैं, लेकिन वहाँ जाकर भी कोई फायदा होगा, ऐसा मुझे नहीं लगता, क्योंकि मरियम बेगम तो इस समय चेहल सुतून में हैं नहीं, वे तो क्लाइव के पास कलकत्ते गयी हैं।"

"फिर क्या मैं भी वहीं जाऊँ ? क्लाइव साहब से ही जाकर सब कुछ कहूँ ?"

जगत्सेठ ने कहा, "लेकिन आप क्या अकेले जायेंगे ?"

"क्यों, अकेले जाने में क्या दोष है ?"

"यह बात नहीं है, अगर महाराज कृष्णचन्द्र को साथ लेकर जाते तो अच्छा रहता। फिर क्लाइव साहब भी आपको कहाँ मिलेगा ? सुना है, साहब तो अपनी फौज लेकर कलकत्ते से रवाना भी हो चुका है।"

छोटे सरकार ने कहा, "अब मैं क्या करूँ जगत्सेठ जी, मैं तो कोई निश्चय नहीं कर पा रहा हूँ। आप ही मुझे कोई सलाह दें।"

"फिर तो आज आप एक बार शराफत अली की दुकान पर हो आयें। फिर न हो तो क्लाइव के पास जाइयेगा।"

छोटे सरकार खड़े हो गये। बोले, "फिर अभी जाता हूँ।"

"अभी जायेंगे ? इस समय तो सड़कों पर जासूसों का जाल बिछा है। आप यहाँ आये हैं, यह भी उनको मालूम हो सकता है। रात और ज्यादा हो जाय तभी आप जायें।"

फिर जरा रुककर सेठ जी बोले, "एक बात और बता देता हूँ, आप कौन हैं, कहाँ से आये हैं, यह सब किसी से न कहियेगा। ऐसे डाँवाडोल के समय कौन किसको पकड़कर कोतवाली में बंद कर दे, यह किसी को मालूम नहीं। आप अगर पकड़े गये तो आप पर भी मुसीबत आयेगी और मुझ पर भी।"

छोटे सरकार फिर निराश होकर बैठ गये। उन्हें मानो किसी तरह की देर बरदाश्त नहीं हो रही थी।

जगत्सेठ ने फिर कहा, "हां, अभी आप थोड़ी देर आराम कर लें, फिर रात ज्यादा हो जाय तो आपके साथ एक आदमी कर दूंगा। वह आपको शराफत अली की दुकान बता देगा। अभी आप यहीं रहें। आपके खाने का इंतजाम करने के लिए कहे देता हूं।"

इतना कहकर जगत्सेठ ने खिदमतगार को बुलाया।

●

मुर्शिदाबाद की हालत उन दिनों डांवांडोल चल रही थी। मुर्शिदाबाद के लिए यह कोई नयी बात नहीं थी। जब भी यहाँ कोई लड़ाई हुई, कोई न कोई गड़बड़ी होती ही रही है। मुर्शिद कुली खां के जमाने से लेकर सरफराज खां अलीवर्दी खां तक यही हाल रहा। नवाब सिराजुद्दौला जब छोटे थे तब भी मुर्शिदाबाद की हालत बड़ी नाजुक थी। लेकिन वह और बात थी। भाई-भाई में लड़ाई, बर्गी डाकुओं के हमले और पठानों के हमले तक ही बात सीमित थी लेकिन अब हालत कुछ और ही थी, अब फिरंगी फौजों का सामना करना था। हां, रास्ते और सड़कों पर कानाफूसी और अफवाहों का बाजार गर्म था। शाम होते ही बाजार सूना हो जाता था, जो ज्योतिषी चौक बाजार के चौराहे पर बैठा रहता था, वह भी आजकल झुटपुटा होते ही अपनी दुकान बन्द कर देता। कहता, राहू की दशा लगी है, बड़ा खराब समय आ रहा है।

बूढ़े शराफत अली में कोई फर्क नहीं आया था। वह रोज शाम को अगरबत्ती जलाकर अम्बरी तम्बाकू की खुमारी में डूबा रहता था और हाजी अहमद के वारिसों को गाली दिया करता।

उस दिन कई दिन बाद नजर मुहम्मद आया। नजर मुहम्मद सामने के दरवाजे से नहीं आया, चुपचाप पीछे के दरवाजे से आया।

"क्यों रे नजर मुहम्मद ! क्या बात है ?"

"हुजूर ! आपको मरियम बेगम साहबा याद फरमा रही हैं।"

कान्त को सुनकर अजीब लगा। उसने पूछा, "मरियम बेगम साहबा क्या चेहल-सुतून में ही हैं ?"

"जी हां हुजूर ! लेकिन इस बात का किसी को पता नहीं है।"

कान्त के बदन में जैसे रोमांच हो आया। तरह-तरह की अफवाहें सुनकर उसका मन खराब हो गया था। हो क्या गया था ? कोई कहता, मरियम बेगम को क्लाइव ने गिरफ्तार कर रखा है तो कोई कहता कि उसने बेगम को गंगा के घाट पर अकेले जाते हुए देखा था। कई बार बशीर मियां से पूछने को जी चाहा लेकिन पता नहीं क्या सोचकर वह मन मारकर रह गया।

एक साफ धोती पहनकर कान्त बाहर निकला। नजर मुहम्मद बाहर इंतजार

कर रहा था।

बादशाह को बुलाकर कान्त ने कहा, "बादशाह, मैं जरा बाहर जा रहा हूँ।"

बादशाह ने पूछा, "कहाँ ? कब तक वापस आयेंगे ?"

कान्त ने कहा, "यह नहीं कह सकता। निजामत से बुलाहट हुई है। पता न कहाँ जाना पड़ जाये।"

कहकर वह जाते-जाते रुक गया। उसने कहा, "हाँ, एक बात का ख्याल रखना, कोई अगर मेरे बारे में पूछे तो बतलाना मत। मैं कहाँ गया हूँ, क्या करता हूँ, कुछ भी कहने की जरूरत नहीं है। मैं यहाँ रहता हूँ, यह भी बतलाने की जरूरत नहीं है। आजकल निजामत की कचहरी में बड़ी कड़ाई हो रही है।"

बादशाह ने कहा, "ठीक है।"

मुर्शिदाबाद के चौक बाजार में उस समय सन्नाटा छाया हुआ था। नजर मुहम्मद किस रास्ते से और कहाँ ले जा रहा है, कान्त की समझ में नहीं आ रहा था।

उसने पूछा, "इधर से क्यों नजर ? फाटक के रास्ते से सीधे क्यों नहीं चलते ?"

नजर मुहम्मद ने कहा, "मरियम बेगम साहबा आजकल दूसरे महल में हैं।"

आखिर में जिस जगह वे दोनों पहुँचे वह अजीब जगह थी। ठंडी और सुनसान। चेहल-सुतून का शोरगुल यहाँ नहीं पहुँच पाता था। नजर मुहम्मद उसे एक कमरे में पहुँचाकर बाहर चला गया। सामने ही मराली खड़ी थी। उसका चेहरा जैसे बड़ा ही उतरा-उतरा-सा लग रहा था, पहले की सी रौनक नहीं रह गयी थी।

मराली ने कहा, "इस तरह से देख क्या रहे हो ? बैठो।"

कान्त ने बैठते हुए कहा, "मैंने तुम्हारे बारे में काफी कुछ सुना है। सुना है, क्लाइव ने गुस्से में आकर तुम्हें गिरफ्तार किया है इसलिए नवाब भी गुस्से में आकर फिरंगियों के साथ लड़ाई करने जा रहे हैं।"

मराली ने कहा, "हाँ, लोग यही जानते हैं।"

"लेकिन नवाब भी क्या यही जानते हैं ?"

"हाँ।"

"लेकिन अचानक इस तरह की अफवाहें कैसे फैलीं ? और तुम भी लोगों की नजर बचाकर इस तरह क्यों मारी-मारी फिर रही हो ?"

मराली ने कहा, "नवाब के खतरे की बात सोचकर ही मैंने यह रास्ता अपनाया है। मेरी वजह से लोग नवाब के दुश्मन हो गये हैं। उन लोगों का ख्याल है कि नवाब मेरे इशारों पर उठते-बैठते हैं। यहाँ भी सिर्फ एक जने को छोड़कर किसी को भी मालूम नहीं है कि मैं यहाँ हूँ। यहाँ तक कि नानी बेगम भी नहीं जानतीं और दूसरी बेगमें भी नहीं जानतीं।"

कान्त ने कहा, "वह कौन है ?"

"तुम शायद पहचानते होगे। वही जिसने तुम्हारे साथ मेरा विवाह ठीक कराया

था, सच्चरित्र पुरकायस्थ। वही जो इब्राहिम खाँ के नाम से आजकल मोतीझील
खिदमत करता है। उसके अलावा यही नजर मुहम्मद जानता है।"

कान्त के कुछ कहने से पहले ही मराली ने कहा, "खैर, इन सब बातों
छोड़ो, जिसलिए तुम्हें बुलाया है पहले वह बात कह डालूं।"

कान्त ने कहा, "कहो।"

"उधर कलकत्ते में बड़ी गड़बड़ी हो गयी है।"

कहकर मराली ने अपनी चोली में हाथ डालकर एक खत बाहर निकाला।

फिर कहा, "यह खत मुझे छोटी बहूरानी ने लिखा है।"

"छोटी बहूरानी ?"

मराली ने कहा, "हाँ-हाँ, वही हतियागढ़ के छोटे सरकार की दूसरी बी
जिसके लिए मुझे यह स्वाँग रचना पड़ा है। मुझे चेहल-सुतून आना पड़ा, कलमा पढ़
मुसलमान बनना पड़ा और मरियम बेगम बनना पड़ा। लेकिन इतना सब करने के बा
भी शायद मैं बेचारी को बचा नहीं पाऊंगी।"

"लेकिन यह खत तुम्हारे पास कैसे पहुँचा ?

"इसी इब्राहिम खाँ की मार्फत। वह रोज हाथियों को लेकर गंगा जाते हैं न
उसी के हाथ से यह खत मुझे मिला है।"

कान्त ने कहा, "हाँ, आदमी बड़ा अच्छा है।"

मराली ने कहा, "हाँ, उसे तो मालूम है न कि उसी की गड़बड़ी से मेरी शा
एक बूढ़े से हो गयी और मेरा यह हाल हुआ। बेचारा बड़ा अफसोस करता है। कह
है, मेरी वजह से तुम्हारी यह दशा हुई बेटी। खैर, छोटी बहूरानी को तो बचाना
होगा।"

"छोटी बहूरानी को क्या हो गया है ?"

मराली ने कहा, "पहले तो सुना था कि फिरंगियों के साथ पेरिन साहब
बगीचे में है लेकिन यकीन नहीं हो रहा था और इसीलिए पेरिन साहब के बगीचे त
गयी भी थी। उस समय तो अमीचन्द का लिखा खत पाकर सभी पोल खुल गयी
पर इस बार एक और ही मुसीबत आयी है।"

"क्या ?"

"फिरंगियों ने उसे मरियम बेगम समझ लिया है। दुर्गा और छोटी बहू
बजरे से कृष्णनगर जा रही थीं, रास्ते में भूल से मरियम बेगम समझकर फिरंगि
उन्हें गिरफ्तार कर लिया है। इसलिए उन्होंने मेरे पास खत भेजा है कि किसी त
नवाब से कहकर उन्हें छुड़ा लूं।"

"नवाब कहाँ हैं ?"

"इस हालत में मैं नवाब से कैसे कह सकती हूँ ? फिरंगियों से किसी भी व
लड़ाई छिड़ सकती है।"

"तब क्या करोगी ?"

मराली ने कहा, "इसीलिए तो तुम्हें बुलाया है, रास्ता एक ही है, मैं फिरंगी साहब के पास जाऊँगी और उन लोगों से असलियत का पता बतलाकर कहूँगी कि मरियम बेगम मैं हूँ इन लोगों को छोड़ दो।"

"लेकिन उन्होंने तुम्हें ही गिरफ्तार कर लिया तब ?"

मराली ने कहा, "गिरफ्तार तो कर ही लेंगे। मैंने उन लोगों की कितनी ही साजिशों को मिट्टी में मिला दिया है। मुझे पाते ही वे लोग टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे।"

कान्त की समझ में नहीं आ रहा था, वह मराली की ओर देखने लगा। बहुत दिनों बाद कान्त ने मराली का चेहरा देखा था। कैसा सूखा लग रहा था वह चेहरा। इसलिए कान्त ने कोई प्रतिवाद नहीं किया। फिर उसने मराली के कहने का विरोध किया ही कब था ?

तभी मराली ने कहा, "तुम्हें भी मेरे साथ चलना होगा। इसीलिए तुम्हें बुलाया है।"



उधर उस दिन शराफत अली की दुकान पर आकर एक भले आदमी ने पूछा, "शराफत अली खुशबू वाले की दुकान क्या यही है ?"

शराफत अली उस वक्त पीनक में था। उसने कोई जवाब नहीं दिया।

बादशाह ने कहा, "हाँ, आपको क्या चाहिए ?"

"यहाँ पर कान्त नाम का कोई आदमी रहता है क्या ?"

तभी जैसे शराफत अली की पीनक टूट गयी। उसने पूछा, "कौन ? हाजी अहमद ?"

शराफत अली बैठे-बैठे शायद उसी के बारे में सोच रहा था। हाजी अहमद मरकर कब जहन्नुम में चला गया। उसका भाई अलीवर्दी खाँ भी मर चुका है फिर भी जैसे शराफत अली उसको भुला नहीं पा रहा था। अगरबत्ती के धुएँ से भरी दुकान में बैठे-बैठे अपने दुश्मन का एक बार फिर से खून किये बिना बूढ़े शराफत अली को चैन नहीं मिल रहा था। कान्त को इसीलिए अपने यहाँ पनाह दी। वह बूढ़ा हो चुका था, आँखों से कुछ दिखलाई नहीं देता, हाथ-पाँव में भी जोर नहीं रहा। लेकिन बदला लेना ही होगा। बूढ़ा कान्त से बार-बार पूछा करता था, और कितनी देर है रे ?

सिर्फ कान्त को ही क्यों ? कान्त जैसे और भी कितने ही जवान छोकरे अपने पास रखकर उन्हें खिला-पिलाकर शराफत अली अपनी साध पूरी करने का ख्वाब देखा करता था लेकिन किसी-किसी दिन बूढ़ा बड़ा मायूस हो जाता।

कान्त कहता, "कोशिश तो कर रहा हूँ।"

"लेकिन तेरी जान-पहचान तो उस बेगम से है न ? वह नवाब की मदद क्यों करती है ?"

"कौन कहता है कि वह नवाब की मदद करती है ?"

"सभी कहते हैं। सभी कहते हैं कि हाजी अहमद का पोता बेगम के इशारे पर ही उठता-बैठता है।"

कान्त कहता, "आपने गलत सुना है बड़े मियाँ!"

"मैंने गलत सुना है?"

शराफत अली जैसे चिढ़कर कहता, "मैंने गलत सुना है? मैं क्या बहरा बूढ़ा हो गया हूँ तो क्या मेरा दिमाग ही ठीक नहीं रहा? बदतमीज कहीं का!"

इसके बाद बूढ़ा नशे की खुमारी में अपनी फारसी भाषा में न जाने क्या बड़-बड़ाता रहता। यह भाषा कान्त समझ नहीं पाता था फिर भी उस बूढ़े पर गुस्से की जगह दया ही आती।

उधर छोटे सरकार ने फिर पूछा, "यहाँ कान्त नाम का कोई आदमी रहता है क्या?"

बादशाह ने आकर कहा, "नहीं जनाब, यहाँ इस नाम का तो कोई नहीं रहता। यही तो शराफत अली खुशबू वाले की दुकान है, तेल और इत्र बिकता है। आप कौन हैं?"

छोटे सरकार को समझ में नहीं आ रहा था कि वे क्या करें? सेठ जी ने गलत पता तो नहीं बतला दिया। एक बार जी में आया कि आसपास की दुकान में पूछकर देखें, लेकिन फिर सोचा कि वैसा करना शायद ठीक न होगा। छोटे सरकार आहिस्ते-आहिस्ते वहाँ से चल दिये।

●

हालत जैसे-जैसे संगीन हो रही थी कर्नल क्लाइव का दिमाग उतना ही खुल रहा था। दुनिया में कुछ ऐसे लोग भी हैं जो झंझट और मुसीबत में रहना पसंद करते हैं। मीर जाफर को एक के बाद एक कई खत लिखे जा चुके थे। लेकिन अब तक जवाब में सिर्फ एक ही खत आया था।

मीर जाफर ने लिखा था, आप बेफिक्र रहिए, हालाँकि मैंने नवाब से कुरान छूकर वादा किया है कि फिरंगियों का साथ नहीं दूँगा। फिर भी सच यही है कि जब मैंने आपके सुलहनामे पर दस्तखत कर दिया है तो आपका ही साथ दूँगा।"

लेकिन ऐन मौके पर अमीचन्द आ पहुँचा।

अमीचन्द के चेहरे का भाव देखकर क्लाइव को जाने क्यों शक-सा हुआ। फिर भी उसने मुस्कराते हुए पूछा, "क्या हाल है अमीचन्द साहब?"

पास ही वाट्स खड़ा था।

अमीचन्द ने कहा, "आप लोगों की खातिर जो काम आज कर आया हूँ, उसके लिए कम्पनी की सिलेक्ट कमेटी को मुझे काफी दिनों तक याद रखना होगा।"

"क्या कर आये हैं?"

अमीचंद ने कहा, "आप वाट्स साहब से ही पूछिए। मैं खुद कहूँगा तो लगेगा

मैं घमंड दिखा रहा हूँ।"

क्लाइव ने कहा, "फिर भी आप कहिए तो। आप पर इतने दिनों से विश्वास करता आ रहा हूँ और अब भी विश्वास करता हूँ।"

सुनकर अमीचन्द जोर से हँस पड़ा। अमीचन्द की वह हँसी बड़ी खतरनाक थी। ...इव को याद आया, जिस दिन वह पहली बार अमीचन्द से मुलाकात करने उसके घर गया था, उस दिन भी वह इसी तरह हँसा था।

अमीचन्द ने कहा, "मैं ठहरा कामकाजी आदमी, सोच-समझकर काम करता हूँ।"

"इसके माने ?"

अमीचन्द ने कहा, "यहाँ बजरे पर बैठे-बैठे तो नहीं कह सकता, मेरी हवेली पर चलिए न। मैंने पूरा इन्तजाम कर रखा है।"

"किस बात का इन्तजाम ?"

"यकीन-का।"

फिर भी क्लाइव की समझ में नहीं आ रहा था।

अमीचन्द ने कहा, "चाहे जहाँ चलिए, मेरी हवेली पर या पेरिन साहब के बगीचे के अपने दफ्तर में।"

इतनी देर बाद क्लाइव की समझ में बात आयी। दि स्काउंड्रेल! बाकी लोगों को पहले भेजकर वह अभी पेरिन साहब के बगीचे से आया था, फिर वहीं जाना होगा। ...किन क्लाइव ने उसी तरह मुस्कराते हुए कहा, "ऑल राइट।"

तभी वाट्स ने कहा, "लेकिन मरियम बेगम का क्या होगा ?"

"मरियम बेगम ?"

एक के बाद एक मुसीबत क्लाइव को जैसे पागल किये दे रही थी। जून महीने की रात। जरा देर में जोर का तूफान आयेगा। बाहर आसमान काला नजर आ रहा था। क्लाइव ने उधर देखकर कहा, "मरियम बेगम के साथ कौन है ?"

"एक बाँदी है। कहीं पकड़ न जाय इसीलिए हिन्दू लेडी बनकर रह रही है।"

"बजरे के माँझी-मल्लाह ? वे लोग कहाँ हैं ?"

"वे मरने-मारने को तैयार थे लेकिन हम लोगों ने उनके हाथ-पैर बाँधकर पानी में डुबो दिया है। दे आर ऑल डेड।"

सुनकर क्लाइव को अच्छा नहीं लगा। उसने कहा, "अरे! यह तुमने क्या किया ?"

अमीचन्द ने कहा, "ठीक ही तो किया है। उन लोगों को अगर ऐसे ही छोड़ देते तो बात नवाब के कान में न पहुँच जाती ?"

"लेकिन मरियम बेगम को गिरफ्तार करना क्या ठीक होगा ? इस समय बेगमों से हमें क्या लेना-देना ?"

वाट्स ने कहा, "इस बेगम ने ही तो हम लोगों का सारा भंडाफोड़ कर दिया था। रात को यही बेगम तो जगत्सेठ की हवेली में गयी थी। उसी ने तो नवाब से

सारी बात कही थी।"

"लेकिन अब उसे रखेंगे कहाँ ?"

अमीचन्द ने कहा, "क्यों, आपके बगीचे में तो एक हिन्दू लेडी है ही। वहीं रह लेगी। एक कमरे में हिन्दू लेडी रहेगी और दूसरे में मुसलमान लेडी।"

क्लाइव ने कहा, "नहीं, वे चली गयी हैं।"

"अरे! उन लोगों को भगा दिया? अच्छा ही किया। औरत ही रखनी है, तो अच्छी-सी रखें, जिसके साथ तफरीह करने में मजा आये।"

अमीचंद की बात सुनकर क्लाइव चिढ़ गया। उसने कहा, "मिस्टर अमीचंद औरतों के बारे में मुझे आपके विचारों की कोई जरूरत नहीं है। मैं काफी दिनों से इण्डिया में हूँ। मुझे यहाँ की औरतों के बारे में कुछ-कुछ पता है।"

"अरे! आप तो नाराज हो गये। आपके साथ यही तो एक मुश्किल है।"

"स्टॉप देट टॉपिक। इसके बारे में अब एक शब्द भी नहीं सुनना चाहता।"

इसके बाद मल्लाहों की ओर घूमकर क्लाइव ने हुक्म दिया, "पेरिन साहब के बगीचे की ओर चलो।"

•

बंगाल के इतिहास के लिए अठारहवीं सदी का वह वक्त बड़ा ही खराब था। हिन्दुस्तान के लोग जब अपनी-अपनी खुदगर्जी की अफीम खाकर ऊँघ रहे थे तब भूगोल के दूसरे कोने में विदेश से आये मुट्ठी भर आदमी चुपचाप एक दूसरा ही इतिहास और दूसरा ही भूगोल तैयार करने में लगे थे। उनके लिए तकलीफ और आराम जैसी कोई चीज न थी। नींद और आराम उनके लिए महज शब्दकोश के दो शब्द थे। जब एम्पायर हासिल हो जायेगी तब इनका उपयोग भरपूर किया जायेगा। तब तक इन्हें इसी तरह पड़े रहने दो। यह मच्छर, साँप, जोंक और ये जहरीले बिच्छू और सड़ी गर्मी सब कुछ एक दिन सूद और मूल को मिलाकर हीरे-जवाहिरात की शक्ल में हासिल होंगे तब लोग कहेंगे—दि सन नेवर सेट्स इन द ब्रिटिश एम्पायर। ब्रिटिश साम्राज्य में सूर्य अस्त नहीं होता। इसके बाद हैं अरब, अफ्रीका, बर्मा, सीलोन, मिस्र और मेसोपोटामिया। अमेरिका के हाथ से निकल जाने से बड़ा नुकसान हुआ है। इण्डियन एम्पायर से ही उसे पूरा करना होगा।

क्लाइव और अमीचंद फिर पेरिन साहब के बगीचे में आये। सारी फौजी सिपाही जा चुके थे। पेरिन साहब की कोठी और कलकत्ते फोर्ट में अब एक भी सिपाही न था, पहरा देने और कोठी की देखभाल करने के लिए जो सिपाही वहाँ रह गये थे, उन लोगों की बुलाहट हुई।

"मरियम बेगम को कहाँ रखा है?"

"हुजूर! पहले वाली दोनों औरतों को जहाँ रखा गया था, वहीं इन लोगों का भी इन्तजाम कर दिया है।"

निकाल बाहर नहीं किया।"

क्लाइव ने कहा, "मेरे पास इन सब बातों को सुनने का वक्त नहीं है, करना क्या है वह कहिए।"

अमीचन्द ने कहा, "इसीलिए तो आपको लेकर यहाँ आया हूँ। मेरे पास भी वक्त की कमी है।"

"तो फिर कहिए न आखिर करना क्या है ?

अमीचन्द ने कहा, "देखिए, आप लोग अगर यार लुत्फ खाँ के साथ यह सुलह करते तो मेरे कहने को कुछ न था। लेकिन आप लोगों ने मीर जाफर को ही पसंद किया। जो कुछ भी हो गया ठीक ही हुआ। अब नवाब होने के बाद मीर जाफर आपको जो रकम देगा, मुझे भी उसमें से हिस्सा मिलना चाहिए।"

"आपको हिस्सा मिलना चाहिए !"

अमीचन्द ने कहा, "ज्यादा नहीं, आप लोगों को जो मिले उसमें से सिर्फ पाँच प्रतिशत।"

सुनकर क्लाइव थोड़ी देर तक गुमसुम बैठा रहा। इतना आगे बढ़कर अब इस अमीचन्द की वजह से पीछे हटना पड़ेगा क्या ? नवाब को खत लिखा जा चुका है, अंग्रेजी फौजें मुर्शिदाबाद की ओर बढ़ गयी हैं, सिर्फ मेरा पहुँचना बाकी है। अभी तक तो अमीचन्द दिखलाता रहा कि वह अंग्रेजों के साथ है। सही माने में इसी ने हम लोगों को नवाब के खिलाफ भड़काया है, इसी ने तो मुझे बतलाया कि सारे अमीर और उमराव नवाब के खिलाफ हैं, इसी ने तो जगत्सेठ जी को नवाब के खिलाफ किया। यही अमीचन्द अपने घर में धूप और चन्दन से गुरु नानक की तस्वीर की पूजा करता है। फलता में इसी ने अंग्रेजी फौजों को रसद का सामान बेचकर मोटा मुनाफा कमाया है। ये लोग ऐन मौके पर असली रंग में आते हैं। ये अमीचन्द, नन्दकुमार और मुंशी नवकृष्ण वगैरह। जैसे-जैसे दिन गुजर रहे थे, इण्डियन लोगों को देखकर क्लाइव का आश्चर्य बढ़ता जा रहा था। रास्ता चलते आम राहगीर और गाँवों के किसान तो ऐसे नहीं हैं। कितनी ही बार उन लोगों ने बड़े चाव से क्लाइव को बुलाकर हुक्का पिलाया है।

क्लाइव ने भी उन लोगों के घर के बरामदे में घंटों बैठकर सुख-दुःख की बातें की हैं। उन लोगों को नहीं मालूम कि कौन अमीचंद है, कौन जगत्सेठ है और कौन यह मीर जाफर है। उन लोगों को तो इस बात का भी पता नहीं है कि उनके नवाब कौन हैं ! उन्होंने तो सिर्फ रामप्रसाद के भजन सुने हैं और हरि, राम, कृष्ण, राधा, लक्ष्मी, सरस्वती और शीतला मैया का नाम सुना है और यह अमीचन्द वगैरह उन लोगों को लालच और डर दिखाकर जगत्सेठ बने बैठे हैं।

"पाँच प्रतिशत की बात सुनकर क्या कर्नल क्लाइव चौंक उठे हैं ?"

इतनी देर बाद जैसे क्लाइव को होश आया। लेकिन अमीचन्द शायद नहीं जानता था कि क्लाइव अगर उसकी चालाकी न पकड़ पाया तो वह बेकार ही फोर्ट

सेन्ट डेविड का कमान्डर बना था, ऐसे-ऐसे हजारों अमीचंदों को सबक देने की हिम्मत के साथ ही वह इण्डिया आया है।

"पाँच प्रतिशत के हिसाब से सिर्फ तीस लाख रुपये मिल पायेंगे। यह रकम कोई खास ज्यादा नहीं है।"

रात गहरी हो रही थी। इस अमीचंद ने तो सारा प्रोग्राम खराब कर दिया। फिर भी क्लाइव ने हँसते हुए अमीचन्द से कहा, "और ?"

अमीचन्द ने कहा, "और ज्यादा कुछ नहीं, नवाब के खजाने में जो रुपये और जेवरात मिलें, उसमें से एक-चौथाई हिस्सा मेरा होगा। बाकी [illegible] हिस्सा कोई भी [illegible] उससे मुझे कोई मतलब नहीं है।"

"और ?"

अमीचन्द ने कहा, "और माने ?"

"यही कि आप और क्या-क्या चाहते हैं। मैं चाहता हूँ कि सब कुछ पहले से [illegible] हो जाय जिससे बाद में कोई मिसअन्डरस्टैंडिंग न रहने पाये।"

अमीचन्द ने कहा, "मेरा भी ठीक यही मतलब है। नहीं तो बाद में [illegible] कहेंगे कि इस अमीचन्द ने हमें ठग लिया।"

"लेकिन तीस लाख रुपये तो नहीं दे पाऊँगा।"

"कितना देंगे ?"

क्लाइव ने कहा, "कहूँ ?"

अमीचन्द ने कहा; "कहिए न, सब बात साफ-साफ [illegible]"

क्लाइव ने कहा, "तीस लाख रुपये नहीं दे पाऊँगा।"

"लेकिन कितना दे पायेंगे, वही तो बतलाइए।"

क्लाइव ने कहा, "सब लिखा-पढ़ी [illegible] ठीक है। मैं बीस लाख दूँगा। राजी है ?"

अमीचन्द सोचने लगा। [illegible]

[illegible] व्यापारियों को [illegible] नुकसान हुआ है, [illegible] के लिए [illegible] को लाख [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ऐसी तो कोई बात नहीं हुई थी।"

क्लाइव ने कहा, "नहीं-नहीं, यह कैसे हो सकता है? आप कब से हम लोगों की मदद कर रहे हैं, हम लोग क्या इतने अनग्रेटफुल हैं? फिर भी जब आप कह रहे हैं तो पक्की लिखा-पढ़ी हो जाना ही ठीक है।"

"मेरा भी यही कहना है।"

"लेकिन इस वक्त तो यह सब नहीं हो सकता। इस वक्त तो मैं जरूरी काम से जा रहा हूँ। सारे पेपर लेकर मैं कल सुबह आपके घर पहुँच जाऊँगा।"

अमीचन्द ने कहा, "सुलहनामे पर आप सभी लोगों के दस्तखत होने चाहिए— आप, वाट्सन, ड्रेक, वाट्स, मेजर किलपैट्रिक और बीचर सभी के। ठीक उसी तरह जिस तरह मीर जाफर के साथ दस्तावेज तैयार किया गया है, इस सुलहनामे पर भी आप सभी की मंजूरी होनी लाज़िमी है।"

"ठीक है ऐसा ही होगा।"

अमीचन्द खुश होकर चला गया। वाट्स अभी भी चुपचाप बैठा था। चले जाने के बाद उसने कहा, "कर्नल, अमीचन्द जैसा कह रहा है वही करना चाहिए वर्ना वह जाकर नवाब से सारी बातें कह देगा। इससे मीर जाफर भी मुश्किल में पड़ सकता है और मुमकिन है कि वह अपने वादे को भी न रख पाये।"

क्लाइव ने कहा, "नहीं, मैं रुपये नहीं दूँगा।"

"इसके माने? अभी-अभी तो आपने बीस लाख रुपये देने का वादा किया है।"

"मैं अपना वादा पूरा नहीं करूँगा। इस स्काउंड्रेल को सबक सिखाऊँगा। आइ विल टीच हिम ए लेसन।"

कहकर क्लाइव उठ खड़ा हुआ। उसने वाट्स से कहा, "चलो। लेट अस गो।"

क्लाइव ने कहा, "वे लोग शायद अभी होंगे। देर होने से शायद चले जायें हमें जल्दी चलना चाहिए।"

पेरिन साहब का बगीचा पूरी तरह अँधेरे में डूब चुका था। क्लाइव और वाट्स दरवाजा पार कर बाहर आ खड़े हुए। बड़े-बड़े पेड़ों पर कुछ चमगादड़ अपने डैने फटकार रहे थे। कितनी ही चिन्ताओं का बोझ सर पर लादे इतिहास एक के बाद एक अध्याय लिखता जा रहा था। सत्य-असत्य, न्याय-अन्याय और उत्थान-पतन की लहरें बार-बार किनारे से आ टकरायी हैं। इस बार इण्डिया का नम्बर है। तुमने इतने दिनों तक मुझे अस्वीकार किया है, मेरी अवहेलना की है, फिर भी मैंने कुछ नहीं कहा। एक बार तुमने कहा, भगवान है; फिर कहा, भगवान नहीं है। कभी तुम इहलोक पर विश्वास करते रहे और कभी परलोक पर। अलेक्जेण्डर समरकन्द के जिस तख्त पर बैठकर एक दिन सिकन्दर बादशाह के नाम से मशहूर हो गया, उसी पर बाद में तैमूर और बाबर बैठे। हुकूमत हमेशा एक आदमी के हाथ में नहीं रहती। एक बार

एक सौ दस साल की बुढ़िया से बाबर ने पहली बार हिन्दुस्तान की कहानी सुनी थी कि सन् १३९८ ई० में किस तरह तैमूर लंग ने हिन्दुस्तान को अपने कब्जे में किया था। तभी से इस लड़के ने निश्चय कर लिया था कि वह एक बार हिन्दुस्तान जरूर जायेगा।

फिर एक दिन जब बाबर दिल्ली के तख्त पर बैठ गया तो उधर बंगाल में एक जने ने एक दूसरा ही तख्त हासिल कर लिया। इस तख्तनशीन का नाम था, चैतन्य महाप्रभु। हिन्दुस्तान का इतिहास इसी तरह तख्तों की अदला-बदली का इतिहास है। तख्त जब भी बदला गया तभी अमीचन्द जैसों ने दस्तखत करके पक्का दस्तावेज तैयार कर लेना चाहा। लेकिन भारत-भाग्य-विधाता के विधान से एक दिन सारे दस्तावेज और सुलहनामे बेकार हो गये।

"सर !"

पीछे से अचानक लेसिंग्टन की आवाज सुनकर क्लाइव ने मुड़कर देखा।

"क्या बात है ?"

लेसिंग्टन ने दरवाजे की ओर देखते हुए कहा, "आप क्या बाहर जा रहे हैं ?"

"क्यों, कुछ कहना था ?"

लेसिंग्टन ने कहा, "मरियम बेगम और उनकी बाँदी आपको बुला रही हैं। सिर्फ एक बात कहना चाहती हैं।"

"क्या बात ?"

"यह नहीं बतलाया।"

क्लाइव ने कहा, "इस समय मेरे पास बात करने का समय नहीं है। कल सुबह मुर्शिदाबाद जा रहा हूँ, वापस आने पर बातें होंगी।"

"लेकिन वे लोग कुछ खा-पी नहीं रही हैं, खाये बिना मर गयीं तो ?"

क्लाइव ने कहा, "मरती हैं तो मरने दो। मरियम बेगम के मर जाने से ईस्ट इंडिया कम्पनी का कोई नुकसान नहीं होगा।"

कहकर क्लाइव अँधेरे में ही आगे बढ़ गया।

●

अमीचन्द अपनी हवेली पर आते ही सबसे पहले हिसाब की बही निकालकर अपनी सारी जायदाद, मिल्कियत और कारोबार में लगी पूँजी का हिसाब लिखता था। हिसाब एकदम पक्का और साफ था। गुरु नानक का चेला, सिर के ऊपर गुरु का चित्र लटकाकर हिसाब लिखता था। हिसाब का मजा भी अजीब मजा है। एक के बाद एक सिफर बैठा देने से दस हो जाता है। उसके बाद अगर एक सिफर और लगाओ तो सौ बन जायेगा। उसके बाद एक सिफर और लगाते ही एक हजार ! इसी तरह एक के बाद एक सिफर लगाकर अमीचन्द आज लाखों रुपये का मालिक बन चुका है। आज उस रकम में बीस लाख और जुड़ गये। कुछ भी करना नहीं पड़ा। न कोई मेहनत, न

किसी तरह की खरीद-फरोख्त, सिर्फ जरा-सी बुद्धि खर्च करनी पड़ी और इस बुद्धि की कीमत मिली बीस लाख रुपये। वही में आखिरी रकम और जोड़ देने पर कुल रकम कितनी होगी अमीचन्द इसी का हिसाब लगाने में लगा था। तभी जैसे ख्याल आया और उसने दीवाल पर लटकी तस्वीर की ओर देखकर दोनों हाथ जोड़ दिये और फिर दोनों हाथों से कानों को छुआ।

●

रात और भी गहरी हो चली थी।

बजरा तेजी से गंगा के पानी को चीरता हुआ आगे बढ़ रहा था। सुबह फटने से पहले ही बजरे ने मुर्शिदाबाद का घाट छोड़ा था। उसके बाद सारा दिन सारी शाम और आधी से ज्यादा रात पता नहीं कहाँ निकल गयी। इस बात का जैसे किसी को ख्याल ही न था।

कान्त ने कहा, "तुम्हें नींद आ रही है, तुम जाकर सो जाओ। मैं भी बाहर जाकर लेटता हूँ।"

मराली ने कहा, "तुम कहाँ सोओगे ?"

कान्त ने कहा, "बाहर।"

मराली ने कहा, "कल की तरह अगर आज भी बारिश हुई तब ? वह देखो बादल कितनी जोर से घिर रहे हैं।"

"लेकिन यहाँ तो तुम सोओगी, मैं यहाँ कैसे सो सकता हूँ ?"

मराली को हँसी आ गयी। उसने कहा, "क्यों ? यहाँ मेरे पास सोने में क्या डर लगेगा ?"

कान्त ने कहा, "डर नहीं लगेगा ! मैं तो मैं, तुमसे कौन नहीं डरता ? जगत्सेठ जी डरते हैं, अमीचन्द डरता है, मीर जाफर, मंसूर अली, मेंहदी निसार यहाँ तक कि क्लाइव भी तुमसे डरता है। सचमुच यह सब तुमने कैसे सीखा ?"

"क्या ?"

"यही कि किस तरह लोगों के साथ कैसे मिला-जुला जाता है, कैसे बातचीत की जाती है और किस तरह किसी को मुट्ठी में किया जाता है।"

मराली हँसने लगी। उसने कहा, "अरे वाह ! मैंने किसको मुट्ठी में कर लिया है ?"

कान्त ने कहा, "क्यों, तुम्हें नहीं पता ?"

मराली ने कहा, "साफ-साफ कहो न किससे मालूम हुआ ? नजर मुहम्मद से या नानी बेगम से ?"

कान्त ने कहा, "अच्छा, यही बतलाओ कि कौन तुम्हारी मुट्ठी में नहीं है ? नवाब को तुमने मुट्ठी में नहीं कर रखा है ? जगत्सेठ जी को मुट्ठी में नहीं कर रखा है ? सचमुच तुम क्या जादू जानती हो मराली ?"

मराली ने कहा, "तुमने तो अपनी बात छोड़ ही दी।"

"मैं ? मेरी बात जाने दो। मैं भी कोई आदमी हूँ, मुझे हाथ में करना कौन मुश्किल काम है ?"

मराली ने कहा, "सचमुच, मेरे लिए क्यों अपनी जिन्दगी खराब कर रहे हो ?"

"खराब कैसे कर रहा हूँ ? तुम्हारे साथ रहता हूँ, तुम्हारा हुक्म तामील कर रहा हूँ, यही क्या मेरे लिए कम है ? कभी-कभी लगता है तुम्हारे लिए और भी अगर कुछ कर पाता तो अपने को धन्य मानता।"

मराली ने फिर वही सवाल दुहराया।

मराली ने कहा, "लेकिन मेरे लिए इतना कष्ट क्यों कर रहे हो ?"

कान्त ने कहा, "वह तुम नहीं समझ पाओगी। तुम अगर मर्द होतीं तो समझ पाती।"

"क्या औरत होकर समझ नहीं सकती ?"

कान्त ने कहा, "लेकिन तुम ऐसी औरत कहाँ हो ? तुम तो आम औरतों से अलग हो।"

"मैं अलग हूँ ?"

"अलग न होतीं तो क्या मेरे साथ इस तरह से सलूक करतीं ? यही जो मुझे अपने कमरे में बैठाकर मेरे साथ बातचीत करती हो और कोई क्या इसी तरह से बात करती। और कोई होती तो वह क्या अपने आदमी को छोड़कर यहाँ चेहल-सुतून में नवाब के साथ रात गुजार सकती थी ?"

"क्यों, मेरी जैसी तो चेहल-सुतून में कितनी ही औरतें हैं।"

"तुम जैसी कहाँ हैं ? वे सब तो शराफत अली की दुकान का अर्क पीती हैं। वे सब तो नवाब को खुश कर उनसे रुपये, जेवरात और मोहरें हासिल करना चाहती हैं। तुम भी क्या वही करती हो ?"

इसके बाद अचानक जरा रुककर कान्त ने कहना शुरू किया, "तुम जरा देर सो लो, नहीं तो कल तुम्हारी तबीयत खराब हो जायेगी। मैं चलता हूँ।"

मराली ने कहा, "तुम भी यहीं सो जाओ।"

"नहीं मरानी, लालच मत दिखाओ। तुम्हारी तरह मेरे मन में ताक़त नहीं है। पता नहीं क्या कर बैठूं और बाद में पछताने के सिवाय कुछ न रह जाये।"

मराली ने कहा, "अगर पछताने का डर है तो मुर्शिदाबाद छोड़कर और कहीं क्यों नहीं चले जाते ? और कहीं नौकरी करके मजे से घर क्यों नहीं बसाते ?"

"काश ! अगर वह कर पाता।"

कहकर कान्त बाहर आया। लेकिन तभी बादलों की जोर से गड़गड़ाहट शुरू हुई और पानी बरसना शुरू हो गया। कान्त उन काले-काले बादलों की ओर देखता हुआ वहीं दरवाजे पर खड़ा हो गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे।

मराली विस्तरे पर लेटी थी ।

मराली ने वहीं से कहा, "देख लिया न ? मैंने तो पहले ही कहा कि पानी वरसेगा । अव दरवाजा वन्द कर दो । बौछार आ रही है ।"

कान्त दरवाजा वन्द कर अन्दर चला आया ।

उस समय वाहर झम-झम वर्षा होने लगी थी । वर्षा नहीं हो रही थी मानो वाजे वज रहे थे । वाजे क्या उत्सव के ही प्रतीक हैं ! जीवन-मृत्यु-आनन्द-विरह सभी संगीत वनकर अपने को प्रकाशित करते हैं । रोना भी तो एक तरह का संगीत है । लेकिन उस झम-झम वर्षा की एकांत रात में भी कान्त की आँखों में आँसू क्यों छलक आये ?

मराली चुपचाप कान्त की ओर देखती रही ।

उसने कहा, "तुम्हें हो क्या गया है ? रो क्यों रहे हो ?"

कान्त ने कहा, "नहीं । रो कहाँ रहा हूँ ?"

"अच्छा, जरा इधर आओ । देखूँ ।"

लेकिन कान्त वहीं खड़ा रहा ।

आखिर में मराली खुद ही उठकर गयी ।

मराली ने कान्त के कंधे पर दोनों हाथ रखे । फिर उसकी ठुड्डी पकड़कर चेहरा ऊपर किया । कहा, "तुम सचमुच रो रहे हो या पानी की वूँदें हैं ?"

उसने कान्त का हाथ पकड़कर उसे अपने नजदीक विस्तरे पर ला वैठाया फिर कहने लगी, "देखती हूँ तुम तो, औरतों से भी वढ़कर हो । रोना तो मुझे चाहिए लेकिन तुमने ही रोना शुरू कर दिया । आखिर तुम्हें हुआ क्या है ?"

वजरा उस वारिश में भी तेजी से आगे वढ़ रहा था और अन्दर वैठे दो प्राणियों के मन में भी उस समय वाहर की अशांत प्रकृति की तरह जोर का अंधड़ चल रहा था ।

काफी देर वाद मराली ने कहा, "तुम भी क्या वचपना करते हो ! तुम्हारे लिए अपनी तकलीफ ही सव कुछ है दूसरे की तकलीफ का तुम्हें जैसे ख्याल ही नहीं है । मेरा हृदय जैसे पत्थर का है ? मैं जैसे कुछ समझती ही नहीं हूँ ?"

कान्त थोड़ी देर चुप रहा ।

फिर उसने कहा, "लेकिन मराली, तुम अपने आपको इस तरह से क्यों मिटा रही हो ?"

"वाह ! मैं मिटा रही हूँ या तुम्हीं मुझे मिटाने पर तुले हुए हो ?"

कान्त ने कहा, "फिर भी दोष मुझको ही दोगी ! तुमसे कितनी वार भाग चलने के लिए कहा है ? लेकिन तुमने कभी मेरी वात पर कान दिया ?"

"लेकिन जव तुम मुझे इस चेहल-सुतून में ले आये थे तव इस वात का ख्याल नहीं था ?"

"लेकिन तब मुझे क्या मालूम था कि मैं तुम्हें ही चेहल-सुतून में ले जा रहा हूँ !"

मराली ने कहा, "ठीक है, हो सकता है यह बात नहीं जानते थे, लेकिन इतना तो पता था कि एक अबला को चेहल-सुतून में ले जा रहे हो। वह चाहे मैं ही हूँ या और कोई? वह भी तो आखिर औरत ही थी, उसका भी तो घर हो सकता था। तुमने एक बार भी नहीं सोचा कि तुम एक औरत का जीवन नष्ट कर रहे हो उसे यहाँ लाकर?"

कान्त के कुछ कहने से पहले ही मराली ने फिर कहा, "लेकिन देखो, जिसके भाग्य में सुख नहीं होता उसे किसी भी तरह सुखी नहीं किया जा सकता। नहीं तो अपने विवाह वाले दिन सुबह मैंने छोटी बहूरानी के कमरे में जाकर देखा था, बाप रे! क्या शान! क्या शौकत! उस पर छोटे सरकार का प्यार, सब कहाँ चला गया? आज उन छोटी बहूरानी ने मुझे ही खत लिखा है! भाग्य की बात ही कुछ ऐसी है।"

कान्त ने कहा, "बहूरानी का जो हुआ सो हुआ, मैं अपनी बात सोच रहा हूँ।"

"अपनी बात! अपनी कौन-सी बात सोच रहे हो?"

"मेरी वजह से ही तो तुम्हारा यह हाल हुआ।"

मराली ने कहा, "यह सोचकर अब क्या करोगे? समझ लो कि मेरे भाग्य में यही लिखा था।"

"यही तो नहीं सोच पाता। मजे में बेवरिज साहब की गद्दी में काम करता था, अब वहाँ भी सब कुछ बदल गया है। नये-नये घाट बन गये हैं, नये-नये बाजार बन गये हैं। कलकत्ता जैसे बदला-बदला नजर आता है। और कलकत्ता ही क्यों, सभी कुछ तो बदल गया है। तुम भी बदल गयी हो। सिर्फ मैं ही नहीं बदला हूँ।"

मराली ने कहा, "वाह! मैं कहाँ से बदल गयी?"

"बदली नहीं हो? पहले क्या तुम ऐसी ही थी?"

"क्यों? पहले कैसी थी?"

"तुम्हें पता है, अब तुम कितनी सुन्दर हो गयी हो?"

मराली ने हँसते हुए कहा, "वाह! पहले क्या मैं खराब लगती थी?"

"नहीं मेरे कहने का यह मतलब नहीं है। सच्चरित्र पुरकायस्थ जब मुझसे तुम्हारा विवाह ठीक करने गये थे तो उन्होंने तुम्हारे बारे में बतलाया था।"

"क्या बतलाया था?"

"अब वह सब सुनकर क्या करोगी? लेकिन बाद में जब तुम्हें देखा तो लगा कि उनका कहना ही ठीक था। और उसके बाद ज्यों-ज्यों तुमको देख रहा हूँ दिनों दिन तुम और भी सुन्दर होती जा रही हो।"

मराली खिलखिलाकर हँस पड़ी।

उसने कहा, "कजरे में रात के वक्त क्या इस तरह की बातें करनी चाहिए?"

कान्त ने कहा, "क्यों, क्या हुआ ? कोई सुन थोड़े ही रहा है।"

"अगर सुन लेता तो शायद खराब होता ?"

कान्त ने कहा, "खराब नहीं होता ? ये सब बातें क्या हर किसी के सामने क जाती हैं ? कोई सुने तो पता नहीं क्या सोचेगा।"

"सोचेगा क्या ? यही कि तुम मुझे प्यार करते हो।"

अचानक बजरा जोर से हचकोले खाने लगा। कान्त और मराली गिरते गिरते बचे। झट से अपने को सँभालकर बैठते हुए कान्त ने कहा, "लगता है, तूफान आयेगा।"

मराली ने कहा, "आये न, तुम घबड़ा क्यों रहे हो ?"

कान्त ने कहा, "जरा रुको, बाहर जाकर देख तो आऊँ कि क्या हो रहा है।"

मराली ने कहा, "तूफान से घबराने की क्या बात है ?"

कान्त ने कहा, "मैं अपने लिए नहीं घबड़ा रहा हूँ, तुम्हारे लिए घबड़ा रहा हूँ।"

"मेरे लिए ? मेरे लिए क्यों घबड़ा रहे हो ? मैं क्या तैरना नहीं जानती ?"

कान्त ने कहा, "तैरना तो मैं भी जानता हूँ। बचपन में तैरकर गंगा पार कर अकेले ही कलकत्ते आया था। मैं इसलिए नहीं कह रहा हूँ, बात यह नहीं है।"

मराली ने कहा, "ओह ! अब समझी।"

"क्या समझी ?"

"चौक बाजार के किसी ज्योतिषी ने तुम्हारा हाथ देखकर बतलाया था कि तुम पानी में डूबकर मरोगे।"

कान्त ने कहा, "अरे नहीं, वह बात नहीं है। तुम क्या सोचती हो मैं ज्योतिषी की बात का विश्वास करता हूँ ? उसने तो और भी बहुत कुछ कहा था।"

"क्या कहा था ? यही न कि मेरे साथ तुम्हारा विवाह होगा।"

कान्त ने मुस्कराकर कहा, "वाह ! तुम्हें तो देखता हूँ सब कुछ याद है।"

"तुम क्या सोचते हो मेरे पास मन जैसी कोई चीज है ही नहीं ?"

कान्त अब अपने को रोक नहीं पाया। मराली के एकदम पास सरककर उसने कहा, "सचमुच, ज्योतिषी ने वैसा क्यों कहा था ?"

"वाह ! तुम भी खूब हो !"

मराली ने एक ओर खिसकते हुए कहा, "तुम खिसक क्यों आये ? देखती हूँ बात करते ही फिसल पड़ते हो, तुम भी ठीक नवाब की तरह छोटे-से बच्चे ही हो !"

कान्त ने कहा, "नवाब की बात इस समय जाने दो, मेरी ही बात करो। क्या सचमुच तुम कभी मेरे बारे में सोचती हो ? क्या तुम मेरी तकलीफ समझती हो ? जो हो चुका उसे क्या बदला नहीं जा सकता ?"

मराली ने कहा, "तुम्हें साथ लाकर तो लगता है मैंने मुसीबत खड़ी कर ली है।"

"नहीं, बतलाओ न, तुम क्या मेरे बारे में कभी सोचती हो ?"

मराली ने कहा, "तंग न करो, यह सब बात पूछी नहीं जाती।"

कान्त ने कहा, "लेकिन तब मैं किसके सहारे ज़िंदा रहूँगा ?"

मराली ने कहा, "नहीं, उसे भूल जाओ, शादी कर लो और मज़े से गृहस्थी बसाओ।"

कान्त ने कहा, "अगर यह मुमकिन होता तो तुम सोचती हो मैं ऐसा नहीं करता ?"

"आखिर यह मुमकिन क्यों नहीं है ?"

"अब तुम्हें यह भी बतलाना होगा ? अगर इतना भी नहीं समझती तो तुमने मुझे चेहल-सुतून में क्यों बुला भेजा था ? मेरे साथ हँस-हँसकर बातें क्यों की थीं ? क्यों तुमने मुझपर इतना यकीन किया था ? क्यों तुमने वादा किया था ?"

"छि ! छि !"

मराली ने अपना हाथ कान्त के होंठों पर रखते हुए कहा, "तुम्हारी ज़बान पर तो देखती हूँ, कोई भी बात आने से नहीं रहती।"

और ठीक तभी बजरा बड़े ज़ोर से डगमगाया। मराली झोंक न सम्हाल पायी और सामने की ओर गिर पड़ी। कान्त भी तब अपनी बात कहते-कहते भावावेश में इतना आगे बढ़ गया था कि मराली डर गयी। उसके मुँह पर हाथ रखने के सिवाय मराली के पास और कोई चारा न था।

तभी बाहर से मल्लाहों की आवाज़ सुनाई दी, "होशियार ! तूफ़ान आ रहा है !"

हाँ, उस दिन सचमुच बड़े ज़ोर का तूफ़ान आया था। बजरे के अन्दर भी अकेले में उस सूनी और अँधेरी रात को बड़े ज़ोर का तूफ़ान आया था। वह तूफ़ान कान्त और मराली के जीवन में भी आया था।

सिलेक्ट कमेटी की मीटिंग ख़त्म होते ही क्लाइव सीधे अमीचन्द के यहाँ हालसीबागान जा पहुँचा। जो साज़िश एक दिन महताबचन्द जगत्सेठ की हवेली में शुरू हुई थी, यह आज बढ़ते-बढ़ते कलकत्ते की सिलेक्ट कमेटी की मीटिंग तक पहुँच गयी है। इस तरह की मीटिंगें पहले भी होती रही थीं। सब कुछ तय हो चुका था। किसे कितना देना होगा उसकी भी लिखा-पढ़ी हो चुकी थी। अब इतने दिनों बाद जब फ़ौजें जा चुकीं तब यह नया कॉन्ट्रैक्ट किस बात का ?"

क्लाइव ने कहा, "अमीचंद को हम लोगों की बात पर यकीन नहीं हो रहा है।"

"क्यों, हम लोग फ़ॉरेनर हैं इसीलिए क्या आदमी नहीं हैं ? हम लोगों की बात की कोई कीमत ही नहीं है ?"

क्लाइव ने कहा, "यह सब कहने से कोई फ़ायदा नहीं है। अमीचन्द

मैन है, जवानी बातों पर यकीन नहीं करेगा ? इसके अलावा—"

वाटसन ने कहा, "इसके अलावा क्या ?"

"इसके अलावा मैंने हर ओर से सोचकर देख लिया है। इस वक्त अमीचन्द को नाराज करना ठीक नहीं होगा। वार के वक्त हर किसी के साथ फ्रेन्डली रिलेशन रखना ही ठीक होता है। अगर उसने नवाब के पास जाकर मीरजाफर के खिलाफ कुछ उगल दिया तो बना-बनाया खेल बिगड़ जायेगा। मीरजाफर ही तो हम लोगों का असली ऐसेट है, वही तो हमारा मूलधन है। अमीचन्द की बात में आकर नवाब ने उसे अरेस्ट कर लिया तब ?"

उस दिन शाम से ही आसमान में बादल छाये थे। जिस वक्त सिलेक्ट कमेटी की मीटिंग शुरू हुई, बाहर बारिश हो रही थी।

इसके बाद रात और भी गहरी हो गयी।

हर आइटम कमेटी के सामने पेश किया गया। खुद क्लाइव ने हिसाब तैयार किया था कि किसे कितना मिलेगा और क्या-क्या मिलेगा। नवाब का खजाना कब हाथ में आयेगा, पाँच पुश्तों से जमा किया गया ट्रेज़र कब निकलेगा। मुर्शिद कुली खाँ से लेकर अलीवर्दी खाँ तक सभी ने रिआया के पसीने की कमाई को जोर-जबर्दस्ती वसूल कर यह खजाना वज़नी किया था। इतने सारे रुपये ! और सिर्फ रुपये ही क्यों ? हीरे, मोती, पन्ने वगैरह जवाहिरात भी तो थे। ये जवाहिरात कितने थे, इसका हिसाब तारीख-ए-बंगाल के सफों में नहीं लिखा है। यह सारा हिसाब कोई छोटा-मोटा हिसाब भी नहीं था।

सिर्फ दो कागज ! एक सफेद और एक लाल।

"ये दो कागज किसलिए ?"

क्लाइव ने कहा, "एक जाली है और एक असली है। असली कागज में सबका नाम है, सिर्फ अमीचन्द का नाम नहीं है। और जाली लाल कागज में सबके नाम के साथ अमीचन्द का भी नाम है।"

क्लाइव ने कहा, "उस स्काउंड्रेल को यह दस्तावेज दिखलायेंगे और इसी में उसका दस्तखत रहेगा।"

जरा देर बाद जैसे सभी को ख्याल आया, हम लोग क्या लायर हैं ? हम लोग सबके सब क्या झूठे हैं, बेईमान हैं ? लेकिन ऐसा क्यों ? हम लोग यहाँ ईस्ट इण्डिया कम्पनी का फायदा देखने आये हैं। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के फायदे में ही हम लोगों का भी फायदा है। देयर इज़ नथिंग रॉंग इन वार ऐण्ड लव। लड़ाई और प्यार के वक्त इन्साफ़ और ईमानदारी की बात नहीं सोची जाती।

सबसे पहले क्लाइव ने दस्तखत किया। बड़े-बड़े अक्षरों में अपना नाम लिखकर क्लाइव ने कागज ड्रेक की ओर बढ़ा दिया। ड्रेक के दस्तखत करने के बाद वाट्स, किलपैट्रिक और वीचर ने दस्तखत किया। मीरजाफर का दस्तखत पहले से ही मौजूद था।

"अब तुम भी अपने सिगनेचर करो।"

वाट्सन अब तक चुपचाप खड़ा था। उसने कहा, "नहीं।"

"क्यों? तुम सिगनेचर नहीं करोगे?"

"मैं जाली दस्तावेज पर दस्तखत नहीं करूँगा, दिस इज सिन। यह पाप है।"

गुस्से, अपमान और शर्म से क्लाइव की गोल आँखें और भी गोल हो गयीं। क्लाइव शुरू से ही बड़ा घमंडी और हिम्मती था। लोगों से घृणा पाकर उसका मन बड़ा ही स्पर्शकातर हो उठा था। यह वाट्सन क्या अपने को सबसे सुपीरियर मानता है? जाली दस्तावेज पर साइन कर अमीचन्द को धोखा दिया जा रहा है इसलिए क्या क्लाइव वाट्सन से छोटा हो गया? तुम सोचते हो कि मुझे इतना भी नहीं पता कि न्याय किसे कहते हैं और अन्याय किसे? इण्डिया में आकर नवाब से मसनद छीन लेना क्या अन्याय नहीं है? यहाँ की औरतों के साथ रात को बिस्तरे पर सोना क्या अन्याय नहीं है?

क्लाइव जब बोलना शुरू करता है तब उसे होश नहीं रहता। हम लोग फौजें लेकर अपनी जान हथेली पर रखकर मरने जाते हैं। तुम्हें यह नहीं पता कि कल हम जिन्दा रहेंगे या मरेंगे? ऐसी हालत में भूल-चूक कौन सोचता है? और कोई सोचे तो सोचे, रॉबर्ट क्लाइव नहीं सोचेगा। रॉबर्ट क्लाइव ने आज तक किसी की परवाह करना नहीं सीखा। उसने अपने बाप की, माँ की भी परवाह नहीं की, दुनिया की परवाह नहीं यहाँ तक कि अपनी जिन्दगी की भी परवाह नहीं की। तुम उसे न्याय और अन्याय का पाठ पढ़ाने आये हो? तुम सोचते हो इतना आगे बढ़कर मैं रुक जाऊँगा! नो, नेवर! क्लाइव नेवर रिट्रीट्स।

वाट्सन तब भी अपनी बातों पर अड़ा था। उसने कहा, "नहीं, मैं सिगनेचर नहीं करूँगा।"

"ठीक है। तुम्हारे दस्तखत की जरूरत भी नहीं है। तुम्हारी जगह कोई और दस्तखत कर देगा। जाली दस्तखत।"

"कौन दस्तखत करेगा?"

"कोई भी करे? सिर्फ तुम्हारी वजह से इतनी दूर आकर पीछे नहीं हटा जा सकता। जिन्दगी में हार मानना किसे कहते हैं, यह मैंने नहीं सीखा। आज भी हार नहीं मानूँगा।"

"आखिर हम लोगों को भी तो मालूम हो कि दस्तखत कौन करेगा?"

"लेसिंग्टन से दस्तखत करा लूँगा।"

आखिर में हुआ भी वही। सिलेक्ट कमेटी के मेम्बरों ने वोफकी ... । जैसे भी हो काम पूरा होना चाहिए। हमें लड़ाई में जीतना है। ... करने नहीं आये हैं, हम लोग इण्डिया का तख्त हथियाने आये ... और इन्साफ की कोई जरूरत नहीं है।

बारिश और भी तेज हो गयी थी और उधी ...

उधर अमीचन्द को किसी भी तरह नींद नहीं आ रही थी। उसके दोनों कान बाहर की ओर लगे थे। बीच-बीच में लगता, जैसे कोई घोड़े पर आ रहा है, फिर लगता, नहीं, कोई नहीं है।

हालसीबगान आते-आते क्लाइव पूरी तरह भीग चुका था।

उसे देखकर अमीचन्द का चेहरा खिल गया।

उसने कहा, "मैं तो सोच रहा था आप आ नहीं पायेंगे।"

क्लाइव ने कहा, "यह कैसे हो सकता है ? मैंने वादा किया था।"

"नहीं, बारिश शुरू हो गयी न इसीलिए। अरे ! आपके तो सारे कपड़े भीग गये हैं ! ड्रिंक लेंगे ?

क्लाइव ने अपनी जेब से लाल कागज में लिखा एक दस्तावेज बाहर निकाला।

"लाल कागज क्यों ?"

"दफ्तर में और कोई कागज नहीं था। सिलेक्ट कमेटी के मेम्बर जाने वाले ही थे, पहुँचने में अगर जरा भी देर हो जाती तो कोई भी न मिलता।"

कहकर क्लाइव ने कागज खोलकर अमीचन्द के सामने बिछा दिया।

"देखता हूँ सभी ने दस्तखत कर दिया है।"

क्लाइव ने कहा, "हाँ, अच्छी तरह से देख लें, सभी के दस्तखत मौजूद हैं।"

देखकर अमीचन्द फूला नहीं समा रहा था। पूरे बीस लाख रुपये बिना किसी मेहनत के या पूंजी खर्च किये मिल गये। सिर्फ जरा-सी बुद्धि खर्च हुई। एक ही [illegible] में पूरे बीस लाख !

"अब आप दस्तखत कीजिए।"

अमीचन्द ने दीवाल पर लटकी गुरु नानक की तस्वीर की ओर देखकर हाथ जोड़ दिये, फिर दस्तावेज पर दस्तखत कर दिया।

"ठीक है ?"

क्लाइव ने कहा, "हाँ, ठीक है।"

दस्तखत कराकर कागज जेब में रखते हुए क्लाइव ने कहा, "अब मैं चलूं।"

"कुछ पियेंगे नहीं ?"

क्लाइव ने कहा, "नो, थैंक्स ! इस वक्त ड्रिंक करने का टाइम नहीं है। मीर जाफर का खत आया है, लिखा है, नवाब ने फौज लेकर उसे कलकत्ते की ओर [illegible] है। फौज शायद अब तक कालना आ पहुँची होगी।"

इसके बाद क्लाइव और नहीं रुका। अब क्लाइव उस दिन की राह देख रहा है, जब मीरजाफर आयेगा ?

पीछे से अमीचन्द ने कहा, "अरे, बारिश रुकने पर जाते।"

क्लाइव उस बारिश में ही अपने घोड़े पर सवार होकर चल दिया।

अमीचन्द ने दरवाजा बन्द कर लिया। वह आज अर्से बाद चैन की नींद सोयेगा। पूरे बीस लाख ! वैसे सेठ अमीचन्द करोड़ों का मालिक है। लेकिन अब

उसमें बीस लाख की रकम और जुड़ गयी। कम्पनी को करोड़ों रुपये मिलेंगे, फिरंगियों को मिलेंगे पचास लाख रुपये, उसी के लिए रुपया नहीं है! तीस लाख रुपये में से बीस लाख रुपये कर दिये। खैर, वही सही। बीस लाख ही कौन बुरे हैं!

सेठ अमीचन्द गुरु नानक की तस्वीर के नीचे खड़े होकर फिर एक बार काफी देर तक आँखें बन्द किये खड़ा रहा। लेकिन अगर उस दिन आँखें खुली होतीं तो अमीचन्द देखता कि गुरु नानक अपने भक्त की भक्ति देखकर मुस्करा उठे थे।

और उस दिन सिर्फ बीस लाख रुपये के लिए हिन्दुस्तान ने पूरे दो सौ साल की गुलामी खरीद ली।

•

पेरिन साहब की कोठी के अपने कमरे में दुर्गा और छोटी बहूरानी दोनों बैठी थीं। बाहर बारिश हो रही थी। इसी जगह वे काफी दिनों तक रह चुकी थीं। यह जगह जैसे उनकी अपनी हो गयी थी। यहीं पर हरीचरण उन लोगों की देखभाल करता था। यहीं से वे साहब से नाराज होकर चली गयी थीं। लेकिन कैसे क्या हो गया? फिरंगी सिपाहियों ने उनके बजरे में घुसकर जैसे सब कुछ उलट-पलट कर दिया।

दुर्गा ने कहा, "लेकिन तुमने अपना नाम क्यों बतलाया?"

छोटी बहूरानी ने जवाब दिया, "मैंने कब अपना नाम बतलाया? उन्हीं लोगों ने तो कहा कि मैं मरियम बेगम हूँ।"

शाम से दोनों वैसे ही बैठी थीं, खाना-पीना कुछ भी नहीं हुआ था।

दुर्गा ने कहा, "उस मुँहजली की अक्ल को पता नहीं क्या हो गया! चिट्ठी भेजी थी उसका जवाब तक नहीं भेजा। नवाब के हरम में जाकर छोकरी जैसे सब कुछ भूल ही गयी।"

"लेकिन क्या पता कि उसे चिट्ठी मिली भी है? तुमने किसके हाथ भेजी थी? हर किसी की चिट्ठी क्या हरम के अन्दर जा सकती है?"

शाम से ही एक आदमी खाना खिलाने के लिए पीछे पड़ा था। उस समय तो कह दिया, नहीं खाना है लेकिन अब भूख के मारे जान निकल रही थी। उसके बाद से किसी का भी पता नहीं। वह आदमी बाहर से दरवाजा बन्द करके चला गया था। फिर उस नासपीटे साहब को भी आज ही बाहर जाना था!

इधर पानी अलग बरस रहा था।

अचानक जैसे बाहर किसी ने साँकल खटखटायी। छोटी बहूरानी डर के मारे दुर्गा से सटकर बैठ गयीं। लेकिन दुर्गा ने हिम्मत से काम लिया।

उसने डपटकर पूछा, "कौन है?"

कभी-कभी ऐसा होता है। जब सिर पर कोई बड़ी मुसीबत आती है, निकलने की कोई राह नहीं दिखलाई देती तब लगता है, जैसे कोई आया या जैसे किसी ने पुकारा। खास कर जून की उस तूफानी रात में ऐसा ही कुछ लग रहा था।

आखिर में छोटी बहूरानी से रहा न गया। उसने कहा, "यह सब तेरी वजह से हुआ है। अगर इस तरह न आयी होती तो यह सब क्यों होता ?"

दुर्गा के पास जवाब देने को कुछ भी न था। उसने सिर्फ इतना ही कहा, "मैं तो सिर्फ तुम्हारे लिए ही आयी थी। लेकिन जब भाग्य ही खराब हो तो क्या किया जा सकता है छोटी बहूरानी ?"

"लेकिन तू तो इतने जन्तर-मन्तर जानती है, कोई उपाय क्यों नहीं निकालती ? कोई ऐसा मन्तर पढ़ दे कि हरामजादे सब एक साथ मर जायें।"

लेकिन इस तरह का झगड़ा भी कब तक चलता ? झगड़ा करते-करते थककर छोटी बहूरानी बिस्तर पर औंधी पड़कर रोने लगतीं, दुर्गा की कोई भी बात नहीं सुनतीं। कहतीं, "यहां से निकल जा ! मैं तेरी कोई बात नहीं सुनना चाहती। भाग यहाँ से !"

दुर्गा जैसे हार गयी थी। काफी दिन पहले दुर्गा एक दिन विधवा हो गयी थी। वह उस समय छोटी थी। अब न उसे अपनी शादी की बात याद थी, न आदमी की। सिर्फ इतना भर याद है कि दूल्हा आया था, जोर की मंगल-ध्वनि हुई थी। बस, इसके बाद जब से होश आया तभी से बड़ी बहूरानी के साथ है।

शुरू-शुरू में दुर्गा बड़ी बहूरानी के मायके में थी लेकिन जिस दिन हतियागढ़ में छोटे सरकार के साथ बड़ी बहूरानी का विवाह हुआ, जैसे उसका भाग्य खुल गया। हतियागढ़ आने के बाद से दुर्गा के अख्तियार और इज्जत में और बढ़ोत्तरी हुई। विपत्ति-आपत्ति के समय लोग उससे झाड़-फूंक कराते रहते और दवा लेते। हतियागढ़ की औरतों में उसने काफी नाम कमा लिया था। बचपन में एक बुढ़िया ने टोने-टोटके बतला दिये थे। उसी की बदौलत उसकी गाड़ी चल रही थी। बुढ़िया ने कह दिया था कि लोगों का भला करना और भला देखना, ऐसा करने पर तेरा भी भला होगा।

इसीलिए इतने दिनों से दुर्गा सब की भलाई करती चली आयी। लेकिन जिस दिन से मरी मुँहजली को छुपाकर रखा, जिस दिन उसे मुर्शिदाबाद के चेहल-सुतून में भेजा, उसी दिन से मानो उसका कोई भी टोना-टोटका असर नहीं करता। दुर्गा आजकल बड़ी असहाय-सी हो गयी थी।

छोटी बहूरानी को जब गुस्सा आता तो कहती, "अब मैं तेरी बात नहीं सुनूंगी। तेरी बात सुनकर ही मेरा यह हाल हुआ है।"

दुर्गा की आँखें भर आतीं; वह कहती, "बहूरानी, तुम अपनी ही तकलीफ के बारे में सोच रही हो। क्या तुम्हीं को दुःख हो रहा है और मुझे दुःख नहीं होता ?"

छोटी बहूरानी कहतीं, "तेरे उन जन्तर-मन्तरों को क्या हो गया ? एक घात लगा दे न उन हरामजादों पर !"

दुर्गा कहती, "अब घात नहीं लगेगी छोटी बहूरानी, मेरे सारे जन्तर-मन्तर बेकार हो गये हैं।"

"क्यों ? क्या हो गया तेरे जन्तर-मन्तर को ?"

दुर्गा ने कहा, "मैंने घात लगायी थी, लेकिन कुछ भी नहीं हुआ । जिस बूढ़ी दादी ने मुझे मन्तर सिखलाये थे, उसने कहा था, किसी का बुरा करेगी तो मन्तर नहीं फलेगा ।"

"लेकिन तूने किसका बुरा किया है ?"

"ओ मैया ! तुम कह क्या रही हो छोटी बहूरानी ! मैंने उस मरी मुँहजली का बुरा नहीं किया ? बेचारी को मुसलमानों के हरम में भेज दिया, इस पर भी क्या सोचती हो हमारा भला हो सकता है ? तुम आज इतनी-सी बात के लिए छटपटा रही हो और मुझे बुरा-भला कह रही हो । लेकिन उस बेचारी के बारे में तो एक बार भी नहीं सोचा ?"

छोटी बहूरानी नाराज हो गयी । उसने कहा, "उसकी बात क्यों सोचें ? उस हरामजादी ने क्या हमारे बारे में सोचा है ? तूने चिट्ठी लिखी पर नासपीटी ने उसका जवाब तक नहीं दिया ।"

दुर्गा कहती, ' नहीं बहूरानी, तुम उसको गाली न दो । हो सकता है, वह इस समय चेहल-सुतून में बैठी रो रही हो ।"

सारी रात इसी तरह कट गयी । शुरू-शुरू में बारिश धीमी थी, बाद में जोर पकड़ लिया । इतने दिनों की गर्मी से सारी जमीन जैसे झुलस गयी थी । आज ही पहली बार बारिश हुई थी । पानी पड़ने से जैसे सब कुछ ठंडा हो गया था । उसी में पता नहीं कब छोटी बहूरानी सो गयी थी । दुर्गा पास बैठी थी । उसने आहिस्ते से एक साड़ी लेकर बहूरानी के ऊपर डाल दी । बड़े मच्छर हैं ।

इसके बाद ही सब कुछ ठंडा हो गया । बाहर बगीचे के पेड़ों पर कुछ चमगादड़ उड़ रहे थे जिनके पंखों की फड़फड़ाहट सुनाई दे रही थी । दुर्गा को भी नींद आ रही थी । वह छोटी बहूरानी के पाँवों के पास सिकुड़कर लेटी और सो गयी ।

जब नींद टूटी तब सुबह हो चुकी थी । बाहर अभी तक जरा-जरा दिखाई देता था । लेकिन अच्छी तरह से देखने पर लगा था, सब कुछ जैसे हल्के नीले रंग में डूबा है । छोटी बहूरानी अभी सो रही थी । दुर्गा ने एक बार उसकी ओर देखा । छोटी बहूरानी के होंठ जैसे हिल रहे थे । जैसे नींद में ही छोटे सरकार के साथ बातें कर रही थी ।

दुर्गा ने आहिस्ते-आहिस्ते दरवाजा खोला । दरवाजा खोलकर एक बार बाहर की ओर झाँककर देखा, कुछ भी दिखलाई नहीं दे रहा था । ये लोग क्या दरवाजा बन्द करना भूल गये ? सामने की ओर से तो साँकल लगा दी थी । शायद उधर का ध्यान ही नहीं किया । हरीचरण काफी दिनों तक उन लोगों के साथ रहा । वह सब कुछ जानता था । यह शायद नया आदमी है, कुछ भी नहीं जानता ।

दरवाजा खोलते ही गंगा की ओर से हवा का बड़ा तेज झोंका आया । पानी बरसना बन्द हो चुका था । एक सोंधी-सोंधी खुशबू में वातावरण महक उठा था । हतिमागढ़ में भी पहली बार पानी बरसने पर ऐसी ही सोंधी-सोंधी महक उठती थी

दुर्गा ने फिर बाहर की ओर देखा। छोटी बहूरानी को लेकर अगर यहाँ से भागे तो कौन देख सकता है? लेकिन यहाँ से वे भागकर जायेंगी कहाँ? और ...ी भी तो कैसे? रास्ते में दोनों को रात में अकेले जाते देखकर लोग शक नहीं ...?

आजकल वैसे ही दिन बड़े खराब चल रहे हैं। सिपाही और पहरेदार घूमे ...ते हैं। फिर से पकड़कर बन्द कर दिया तो?

अचानक नींद में ही छोटी बहूरानी बड़बड़ाने लगीं।

दुर्गा ने जल्दी से छोटी बहूरानी को झकझोरते हुए कहा, "बहूरानी, क्या हुआ? कोई सपना देख लिया क्या?"

छोटी बहूरानी शायद सपना ही देख रही थी। दुर्गा की बात पर करवट बदल-कर फिर सो गयी। सब कुछ बड़ा सूना-सूना लग रहा था। पानी रुक जाने के बाद से झींगुरों की आवाज और भी तेज हो गयी थी। बीच-बीच में कोई मेंढक टर्रा उठता। लगता है पानी फिर से बरसेगा। दुर्गा क्या करे समझ नहीं पा रही थी।

"बहूरानी!"

अचानक किसी के पाँवों की आहट सुनकर दुर्गा चौंक उठी। उसने पीछे मुड़-कर देखा, दरवाजे के बाहर कोई खड़ा था। दुर्गा बड़े जोर से चीखने ही जा रही थी लेकिन उस आदमी की आँखों का भाव देखकर रुक गयी।

"आप लोग नहीं पहचान पायेंगी, मैं मराली के पास से आ रहा हूँ।"

मराली का नाम सुनकर दुर्गा को जरा तसल्ली हुई।

उसने पूछा, "तुम कौन हो?"

"मैं आप लोगों को ले जाने के लिए आया हूँ। जल्दी से बहूरा... जगाइए।"

उस आदमी के कपड़े पूरी तरह भीग चुके थे। सिर से लेकर पाँव त... बह रहा था। जरा रुककर उसने कहा, "शाम को ही यहाँ आया हूँ। अंदर ... हिम्मत नहीं हो रही थी।"

"हम लोगों के बारे में कैसे पता चला?"

"क्यों? आप लोगों ने मरियम बेगम के पास चिट्ठी लिखी थी न?"

"इसका मतलब हरामजादी को वह चिट्ठी मिल गयी थी।"

"चिट्ठी मिलने पर ही तो उन्होंने मुझे यहाँ भेजा है।"

"लेकिन वह हरामजादी तुम्हारी कौन होती है? तुम क्यों आ... उसके कौन हो?"

उस आदमी ने कहा, "कोई भी नहीं।"

"कोई भी नहीं? अब तुम्हारी बातों पर विश्वास करके अगर ... पता नहीं कहाँ पहुँचें और किसके हाथ में पड़ें?"

...आदमी ने कहा, "आप लोग मेरा विश्वास कर सकती हैं

हाथ के इशारे से दुर्गा ने उसे बुलाया।

उसने कहा, "तुम कौन हो ? जरा इधर आओ न।"

उस आदमी ने डरते-डरते एक बार चारों ओर देखा। फिर वह धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा।

●

फिरंगी फौज पाटुली तक पहुँच गयी थी। पाटुली नवद्वीप से छः कोस पर है। वहाँ से काटोआ के उत्तर में अजब नदी के उस पार साँकाई में एक बहुत बड़ा किला है। पहले ही से सारा इन्तजाम हो चुका था कि फिरंगियों के गोली चलाते ही किले के सिपाही अपने हथियार और गोला-बारूद छोड़कर भाग जायेंगे।

लेकिन मेजर साहब इतनी आसानी से किले पर कब्जा नहीं कर पाया। एक बार तो लगा नवाब के सिपाही गोलाबारी करने ही वाले हैं। साथ ही साथ अंग्रेज सिपाही भी दौड़ पड़े। तभी देखा गया, उन लोगों ने खुद किले के ऊपर वाले छप्परों में आग लगा दी। इसके बाद सिपाही किले के पिछले फाटक से भाग गये।

क्लाइव ने और देरी नहीं की, झटपट अन्दर जाकर देखा, वे लोग सब कुछ वैसे ही छोड़कर चले गये थे। कपड़े, बिस्तर और रसद। बाप रे, इतना सारा चावल ! हिसाब लगाकर देखा गया, दस हजार आदमी अगर इसे साल भर तक खायें तो भी बच ही जायेगा।

क्लाइव ने सब लोगों से वहीं रुकने को कहा। पहले तो मैदान में ही तम्बू लगाया था। इसके बाद जब पानी बरसने लगा तो उन लोगों ने काटोआ के घरों में घुसकर रात काटी।

दूसरे दिन सुबह अच्छी तरह दिन निकलने के पहले ही मीरजाफर का खत आ गया। उसने लिखा था, "नवाब मनकरा जा पहुँचा है और वहीं मोर्चाबन्दी कर लड़ने के लिए इन्तजार करेगा। आप लोग घूमकर अचानक हमला करियेगा।"

साथ ही साथ क्लाइव ने जवाब दिया, "हमारी फौज प्लासी तक आगे बढ़ रही है इतने पर भी मीर जाफर साहब आकर दादपुर में हम लोगों से नहीं मिलते हैं तो हम लोग नवाब से सुलह कर लेंगे।"

खत भिजवाकर क्लाइव थोड़ी देर तक खामोश बैठा रहा। अचानक लेसिंग्टन आकर सामने खड़ा हो गया। लेसिंग्टन को वहाँ देखकर क्लाइव चौंक गया। पेरिन साहब की छावनी छोड़कर अचानक यहाँ क्या करने आया ? उसने पूछा, "क्या हुआ ? मरियम बेगम वगैरह कहाँ हैं ? उनकी देखभाल कौन कर रहा है ?"

लेसिंग्टन बुरी तरह हाँफ रहा था। वह शुरू से ही ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ था। उसे काफी तकलीफें भी झेलनी पड़ी थीं। जब कम्पनी की फौज कलकत्ते से भागकर फलता पहुँची थी, कितने ही दिन वह आधे पेट खाकर नवाब के खिलाफ लड़ता रहा था। वह भी फ्लेचर के साथ ही इण्डिया आया था। उसके बाद कितने ही लोग

आये और चले गये, लेकिन वह वहीं का वहीं पड़ा रहा, कोई प्रोमोशन तक नहीं मिला।

लेसिग्टन ने एक बार कर्नल क्लाइव से अपने बारे मे बात की थी।

सब कुछ सुनकर क्लाइव ने कहा था, "तुम मेरे साथ रहो, मैं तुम्हारी हेल्प करूँगा।"

यह सब लडके इंगलैण्ड में अपने माँ-बाप से ठुकराये और दुत्कारे हुए थे। जिनका कोई भी न था, वे अपना भाग्य आजमाने इण्डिया चले आये थे। लेकिन यहाँ आकर भी जिन लोगो का भाग्य नही चमक पाया लेसिग्टन उन्ही में से एक था। जरूरत पड़ने पर उसे स्पाई का और मैसेंजर का काम भी करना पड़ता था।

उस दिन अचानक पहली तारीख को लेसिग्टन के हाथ में दो रुपये रखते हुए क्लाइव ने कहा था, "यह लो।"

लेसिग्टन रुपये देखकर आश्चर्य-चकित हो गया था।

"रुपये ? किस बात के रुपये ?"

"यह मैं तुम्हें अपनी जेब से दे रहा हूँ। यू टेक इट। कम्पनी जब तक तुम्हारे लिए कुछ नहीं करती, मैं हर महीने तुम्हें रुपये दूँगा।"

कर्नल का व्यवहार देखकर लेसिग्टन की आँखें भर आयी थी। रुपये लेते-लेते भी उसका हाथ जैसे आगे नहीं बढ रहा था।

"टेक इट ! मैं कह रहा हूँ तुम रुपये ले लो। एक दिन मैंने भी तुम्हारी तरह तनख्वाह बढ़ाने के लिए कम्पनी के लोगों की खुशामद की थी। लेकिन किसी ने मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया था। आखिर मारपीट और झगड़े कर मैंने अपना हक वसूला।"

तभी से लेसिग्टन हर महीने की पहली तारीख को क्लाइव से दो रुपये पाता था और बदले मे क्लाइव जो कुछ कहता, वही करता था। कर्नल के लिए वह सब कुछ कर सकता था।

क्लाइव समझाने की कोशिश करता, "देखो, जैसे हम लोगों की कम्पनी की हालत है उसी तरह इण्डिया के नवाब की भी हालत है। निजामत मे भी तुम्हारी तरह हजारों लेसिग्टन घूम रहे हैं।"

लेसिग्टन चुपचाप कर्नल की बातें सुनता।

क्लाइव और भी कहता, "सिर्फ अमीचन्द या मीरजाफर को मिलाने से नवाब को नहीं हराया जा सकता। उसे हराने के लिए तुम्हारी तरह के लेसिग्टनों की भी जरूरत है। मैंने इन लेसिग्टनों की मदद से ही फोर्ट सेन्ट डेविड को जीता। असल मे जान गँवायी तुम लोगों ने और वाहवाही मुझे मिली। मैं आज कर्नल हो गया हूँ। तुम लोगों की तनख्वाह वही छः रुपये है। यही होता है। दुनिया का यही कानून है। खैर, घबराओ मत, यह लड़ाई जीत गया तो तुम्हारे लिए और भी कुछ करूँगा।"

लेसिग्टन ने मुस्कराते हुए कर्नल की बात सुनी थी पर कोई जवाब नहीं दिया था।

इसके बाद जब कर्नल ने उससे मीरजाफर के दस्तावेज पर एडमिरल वाट्सन के जाली दस्तखत करने को कहा था तब उसने एक बार पूछा था, "मैं दस्तखत करूँ ?"

"हाँ, करो।"

"लेकिन जाली दस्तखत करना तो क्राइम है।"

क्लाइव ने उस वक्त और कुछ नहीं कहा था। वक्त भी ज्यादा न था। सिर्फ क्लाइव की दोनों आँखें देखकर लेसिंग्टन समझ गया था कि कर्नल बुरी तरह गुस्से में है। उसने जल्दी से कागज लेकर वाट्सन का जाली दस्तखत बना दिया।

क्लाइव ने ही कहा था, "अरे! तुमने तो दस्तखत कर भी दिया ?"

लेसिंग्टन ने कहा था, "आप गुस्सा हो गये थे न ? इसीलिए कर दिया।"

क्लाइव ने कहा था, "गुस्से की बात नहीं है। एक दिन तनख्वाह नहीं बढ़ी, इसलिए तुम अफसोस कर रहे थे। लेकिन तनख्वाह क्यों नहीं बढ़ी आज समझ पाया हूँ ? छः रुपये महीने के राइटर से आज मैं कर्नल कैसे हो गया ? एक बात तुमसे कहे रखता हूँ लेसिंग्टन ! बाद में काम आयेगी। इन्साफ और ईमानदारी किसे कहते हैं, मुझे अच्छी तरह मालूम है लेकिन इतना भी याद रखो कि अन्याय के साथ युद्ध करते वक्त इन चीजों का ख्याल करनेवालों को फौज में शामिल नहीं होना चाहिए। यह बात याद रखोगे तो एक दिन तुम भी कर्नल बन सकते हो।"

लेसिंग्टन ने क्लाइव की इस बात को कई बार सोचा था और शायद वह एक दिन ईस्ट इण्डिया कम्पनी का कर्नल हो भी जाता। लेकिन लक्कावाग की लड़ाई के दौरान नवाबी फौज की गोली खाकर उसे प्रोमोशन की सारी आशा को तिलांजलि दे सिर्फ कम्पनी ही नहीं कम्पनी के मालिकों को भी छोड़कर चले जाना होगा, यह बात कोई सोच भी नहीं पाया था।

उस दिन लेसिंग्टन समझ नहीं पाया और किसी को भी पता न चला लेकिन क्लाइव उस दिन रोया था। लेकिन वह तो काफी बाद की बात है। उससे पहले भी काफी कुछ हो गया था।

पहले तो लेसिंग्टन समझ नहीं पाया। पेरिन साहब के बगीचे में नवाब की बेगम को रखा गया था तो लेसिंग्टन को अपनी ड्यूटी के बारे में पूरा-पूरा ख्याल था। कर्नल क्लाइव का हुक्म था, कड़ी नजर रखना ! बेगम बाहर न निकलने पाये।

उस दिन बांदी ने अन्दर से आवाज देकर कहा, "अरे ! तुम लोग क्या हमें मार डालना चाहते हो ? हमें क्या भूख-प्यास नहीं लगती ?"

लेसिंग्टन उसकी बातों का कोई मतलब नहीं निकाल पाया।

दुर्गा ने डपटकर कहा, "तुम्हारा साहब कहाँ है ? जरा उसे बुलाकर तो लाओ। उसका मुँह झुलस दूँगी। कितनी बार कहा है कि हम लोग बेगम नहीं हैं, फिर भी तुम लोगों की समझ में नहीं आता।"

लेसिंग्टन ने मन ही मन कहा, खाने के लिए जब इतनी खुशामद की थी तब तो खाया नहीं, अब चिल्लाने से भला क्या होना है ? दुर्गा और भी न जाने क्या-क्या

कहती रही लेकिन लेसिंग्टन ने उसकी बातों पर कोई ध्यान न दिया। वह काफी दूर पर ऐसी जगह जाकर बैठ गया जहाँ दुर्गा के चिल्लाने की आवाज पहुँच न पाये। सारी फौज कर्नल के साथ चली गयी थी। कहीं कोई न था। पूरी छावनी भर में सिर्फ तीन लोग थे—बेगम, उसकी बाँदी और लेसिंग्टन।

रात को पानी बरसा था। जून महीने की पहली बारिश। लेसिंग्टन ठंडे देश का आदमी था, इंडिया की गरमी में उसे बेहद तकलीफ हो रही थी। फिर कई दिनों से गर्मी भी भयानक पड़ रही थी। इसलिए बारिश के कारण थोड़ी ठंडक महसूस होते ही वह लेट गया और आराम से गहरी नींद सो गया। फिर कहाँ रही लड़ाई, कहाँ रहा अपना प्रोमोशन, कहाँ रही ड्यूटी और कहाँ रही मरियम बेगम। नींद में क्या किसी को किसी चीज का होश रहता है? बगीचे के पिछवाड़े आउट-हाउस में कर्नल क्लाइव के सिविल स्टाफ के कर्मचारी रहते थे; रसोईदार, झाड़ूदार, हरकारे वगैरह। वे लोग भी नींद में बेखबर थे। उसी समय न जाने कैसी आवाज हुई। कोई चीज झनझना उठी। लेकिन फिर खामोशी छा गयी। शायद वह चमगादड़ की आवाज थी या आउट-हाउस में किसी ने दरवाजा खोला था। हो सकता है, कुछ भी न हो, मात्र मन का भ्रम हो। हो सकता है, मन के भ्रम से सुनने में भी भ्रम हुआ हो। फिर लेसिंग्टन करवट बदलकर सो गया।

सवेरे फिर उठकर लेसिंग्टन एक बार उधर गया था।

लेसिंग्टन ने पहले समझा था, शायद वे सो रही हैं। लेकिन पास जाते ही देखा, खिड़कियाँ-दरवाजे सब खुले हैं। यह कैसे हुआ? दरवाजे में तो ताला लगा था। तो वे औरतें कहाँ गयीं? जल्दी-जल्दी वह कमरे में गया और अन्दर जाते ही उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। कहीं कोई नहीं था। फिर बगल वाले कमरे में गया। वहाँ भी कोई नहीं था। लौटकर आँगन में आया, लेकिन कहीं कोई नहीं था। कहाँ गयी मरियम बेगम? कहाँ गयी मरियम बेगम की वह बाँदी? उसका सर से पाँव तक सारा शरीर काँप उठा। अब क्या होगा?

अब इधर-उधर खोजने पर भी मरियम बेगम नहीं मिली, तब लेसिंग्टन दौड़कर आउट-हाउस की तरफ गया। बावर्ची, खानसामा, रसोईदार, झाड़ूदार ज्यादातर सभी आर्मी के साथ चले गये थे। बस, दो ही चार आदमी रह गये थे। लेसिंग्टन ने उन्हीं को बुलाया। वे सभी आराम से सो रहे थे। बहुत दिनों बाद उनको छुट्टी मिली थी। काम हल्का था, इसलिए उनका शरीर और मन भी ढीला पड़ गया था।

देर तक बुलाने पर वे आये।

उन्होंने कहा, "नहीं हुजूर, हमें तो कुछ भी नहीं मालूम।"

"फिर क्या मरियम बेगम और उसकी बाँदी आसमान में उड़ गयीं? कमरे में ताला बंद था, उसको किसने तोड़ा? कहाँ गयीं वे? कब गयीं?"

बगीचे में खामोशी छायी थी। लेसिंग्टन की चिल्लाहट से वह खामोशी टूट-फूट हो गयी। कर्नल का कड़ा हुक्म था इन पर निगाह रखने के लिए। उधर स्टाफ

में से किसी ने धोखा दिया है, नहीं तो वे इस तरह भागीं कैसे ? ऐसे भाग भी कै सकती थी ?

"मैं अभी कर्नल क्लाइव के पास जा रहा हूँ। सबके खिलाफ मैं शिकाय करूँगा। आइ शैल सैक यू ऑल !"

लेकिन सभी की नौकरी लेने से ही तो मरियम बेगम नहीं मिल जायेगी समस्या का भी समाधान नहीं होगा। कुछ तो करना ही होगा। लेसिग्टन तुरन्त च के लिए तैयार हो गया। कर्नल क्लाइव को तो खबर पहुँचानी ही थी।

फिर घंटे भर में सारा इंतजाम करके लेसिग्टन पैदल रवाना हो गया।

सोचते-सोचते कर्नल क्लाइव का दिमाग भारी हो गया था। उस बार लड़ा हुई थी कलकत्ते में। कलकत्ते में लड़ाई होने पर ज्यादा नुकसान होने का डर रहता है लेकिन अब लड़ाई है कलकत्ते के बाहर। लेकिन बाहर हो या अन्दर, लड़ाई आखि लड़ाई ही है। लड़ना माने ही जीना है, मरना है। जिन्दगी और मौत से खेलकर तो कर्नल क्लाइव जिन्दगी भर लड़ता आया है। न हो एक बार और सही। आँध आये तो आये, बारिश हो तो हो। मौत भी आये तो हर्ज क्या है ? एक दिन क्लाइ ने मौत ही चाही थी। मरने के लिए तैयार होकर ही वह इस नौकरी में आया था छः रुपये की तनख्वाह से आज यहाँ तक पहुँचा है। खबर आयी थी, नवाब मनकरा आर्मी लेकर और आगे बढ़ आया है। दादपुर पीछे छोड़कर नवाब आगे बढ़ आया है एकदम आमने-सामने।

लेसिग्टन की बात सुनकर पहले कर्नल चौंक उठा।

"क्या कहा ?"

लेसिग्टन ने कहा, "ताला टूटा पड़ा था। आउट-हाउस में भी सभी से पूछ लेकिन किसी को कुछ भी पता नहीं है।"

"लेकिन मरियम बेगम जा कहाँ सकती है ? उसे कौन ले गया ? लौटकर एक-एक को सैक करूँगा। तुमको भी सैक करूँगा। आइ शैल स्पेयर नोबडी।"

लेसिग्टन ने क्लाइव का यह रूप आज पहली बार देखा। वार-फील्ड का क्लाइ जैसे कोई दूसरा ही आदमी था। बातें लेसिग्टन से कर रहा था, लेकिन उसकी नज कहीं और ही थीं। उधर कैवेलरी थी, उसके पास इन्फेन्ट्री। लक्काबाग तक व लेसिग्टन को खींच लाया था। वहाँ पहुँचकर क्लाइव की फौज को रुक जाना पड़ा।

अचानक खबर आयी, नवाब आ पहुँचा है। मिनट भर के लिए जैसे क्लाइ घबरा गया, उसकी आँखों के आगे अँधेरा छा गया जैसे उसे कुछ भी याद नहीं र लेसिग्टन की ओर देखकर बोला, "तुम ? यहाँ कैसे ? यहाँ आने को किसने कहा था हू टोल्ड यू टु कम ?"

लेसिग्टन समझ गया कि साहब का दिमाग ठीक नहीं है।

"ओह ! समझा, तुम मरियम बेगम की खबर लेकर आये हो ? लेकिन व भाग कैसे सकती है ? किसने उसको भागने में हेल्प किया ?"

"हेल्प ?"

"हाँ, हेल्प !"

रात के करीब एक बजे क्लाइव लक्काबाग पहुँचा था। चारों ओर जुगनू झिलमिल-झिलमिल कर रहे थे। बरसाती रात होने की वजह से बड़ा कीचड़ हो रहा था।

अचानक क्लाइव चीख उठा, "बटालियन हॉल्ट !"

साथ ही साथ आर्मी रुक गयी। क्लाइव एक-एक सिपाही के पास जाकर देखने लगा किसी को कोई तकलीफ तो नहीं है ? आर यू टायर्ड ? आर यू हंग्री ? नींद तो नहीं आ रही है ? आज नींद आने से काम नहीं चलेगा। आज तो थकने से भी काम न चलेगा। हम लोग भी एक सौ अठावन साल से सोये नहीं हैं। सन् १५९९ में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की नींव पड़ी थी और यह है सन् १७५७। एक सौ अठावन साल से हम लोग जागे हुए हैं। और सिर्फ हम लोग ही क्यों, हम लोगों से पहले जो [illegible] लोग आये थे, वे लोग भी बिना सोये, बिना खाये और बिना थके ही रहे थे।

लेसिंग्टन खड़ा-खड़ा क्लाइव की बातें सुन रहा था।

अचानक क्लाइव ने कहा, "आओ, मेरे साथ आओ।"

इतना कहकर क्लाइव एक ऊँची जगह पर जा खड़ा हुआ। [illegible] के चारों तरफ मिट्टी के बाँध थे। फिर बाँध को छूती हुई एक [illegible]

क्लाइव ने एक ओर इशारा करके कहा, "वह देखो !"

लेसिंग्टन ने भी देखा। पौ फटने में अभी देर थी। [illegible] थे हाथी खड़े थे। उनकी पीठ पर लाल झूलें थीं। [illegible] के हाथों में नंगी तलवारें और हजारों नवाबी झंडे हवा में [illegible] आर्मी, इतने सोल्जर, इतने एलीफेन्ट, इतने हार्स। [illegible] नवाब की आर्मी के सामने हमारी आर्मी है ही [illegible] सोये हैं !

क्लाइव टकटकी लगाये उसी ओर देख [illegible]

अचानक उधर से जोर की आवाज [illegible]

फिर क्या हुआ, कोई समझ न सका। [illegible]

क्लाइव पूरी ताकत से चिल्ला [illegible]

•

उस दिन वह सब कुछ [illegible]

शराफत अली की दुकान [illegible]

चौक बाजार और दिलों [illegible]

जल्दी-जल्दी [illegible]

कुछ पता लगा ?"

छोटे सरकार ने कहा, "नहीं, इस नाम का तो वहाँ कोई आदमी नहीं रहता। अब आप ही बताइए क्या करूँ ?"

जगत्‌सेठ जी कुछ देर सोचते रहे, फिर उन्होंने कहा, "तो मैंने जो कुछ सुना है, सही है। आपकी सहधर्मिणी क्लाइव के हाथ पड़ गयी हैं।"

"तब क्या मैं कलकत्ते जाऊँ ? क्लाइव मुझे अच्छी तरह जानता है। मैं एक बार महाराज कृष्णचन्द्र के साथ जाकर उससे मिल भी चुका हूँ।"

जगत्‌सेठ जी ने कहा, "तब तो अच्छा ही हुआ। आप वहीं जाइए और वहीं से अपनी धर्मपत्नी को लेकर हतियागढ़ चले जाइयेगा। देरी न कीजिए।"

"लेकिन अभी तो रात है ?"

"तो इससे क्या हुआ ? देर करने से गड़बड़ हो सकती है। सुना है नवाब कल फिरंगियों के साथ लड़ाई करने जा रहे हैं।"

"फिर लड़ाई ?"

जगत्‌सेठ जी ने कहा, "हाँ। लेकिन इस बार क्लाइव खुद ही मुर्शिदाबाद पर हमला करेगा। अब की बार फिरंगी कलकत्ते में लड़ना नहीं चाहते। पिछली बार उन्हें काफी नुकसान उठाना पड़ा था इसीलिए।"

हाँ, तो इसीलिए छोटे सरकार उसी रात को बजरे से कलकत्ते के लिए रवाना हो गये। छोटे सरकार के मल्लाह भी जैसे बजरा चलाते-चलाते थक चले थे। वे लोग इतने दिनों से बजरा चला रहे थे। वैसे यह उन लोगों का पुश्तैनी धंधा था। लेकिन पिछले कुछ महीनों से जो झमेला शुरू हुआ तो रुकने का नाम ही नहीं लेता। कभी मुर्शिदाबाद, कभी कृष्णनगर तो कभी कलकत्ता, महीनों से यही चल रहा था।

अगले दिन आधी रात के वक्त छोटे सरकार का बजरा त्रिवेणी के घाट पर लगा।

जरा देर पहले यहीं से फिरंगी फौज गुजरी थी। उस समय भी सिपाहियों के चलने से घाट किनारे कीचड़ जमा था।

घाट पर बजरा लगते ही छोटे सरकार ने कहा, "वृन्दावन, बजरा यहीं लगा जरा उजाला हो, तब उतरेंगे।"

घाट पर दूसरे बजरे में उस समय कानाफूसी हो रही थी।

"अब यह कौन आ गया ?"

छोटी बहूरानी और दुर्गा चुपचाप एक ओर सोयी हुई थीं। इन कई दिनों दोनों न ठीक से सो पायी थीं, न खा-पी ही सकी थीं। इतने दिनों के बाद जैसे निश्चिन्त होकर सो रही थीं।

लेकिन मराली अभी-अभी जागी थी। डाँड़ चलाने की आवाज सुनकर वह चौंक पड़ी थी।

"अब यह कौन आ गया ?"

कान्त ने कहा, "इतनी जोर से न बोलो। ये लोग जाग जायेंगी !"

मराली ने कहा, "इससे तो अच्छा है कि बजरा खोल देने को कहो।"

कान्त ने कहा, "लगता है, किसी व्यापारी का बजरा है। अच्छा रुको, मैं देखता हूँ।"

कहकर कान्त ने झाँककर देखा।

बाहर आकर अँधेरे में ठीक से दिखाई न पड़ेगा, यह जानकर भी कान्त ने एक बार अच्छी तरह देखने की कोशिश की। वक्त बड़ा खराब आ गया है। इस समय सभी पर शक होता है। बड़े भाग्य से ही फिरंगी लोग पेरिन साहब का बगीचा छोड़कर लड़ने चले गये थे, नहीं तो छोटी बहूरानी को क्या इस तरह लेकर निकला जा सकता था?

कान्त ने सोचा, एक बार उस बजरे के माँझियों से दोस्ती गाँठ कर पता लगा ले कि बजरे में कौन है या बजरा किसका है। लेकिन तभी डर हुआ कि अगर किसी को मालूम हो गया। अगर क्लाइव साहब को ही पता चल गया तब?

अन्दर वापस आते ही मराली ने पूछा, "देखा, किसका बजरा है?"

कान्त ने कहा, "पूछने में डर लगा। सोचा था, व्यापारी की नाव होगी, लेकिन यह बजरा है। यह तो और किसी का लगता है।"

"किसका?"

"यह तो नहीं पूछा।"

मराली ने एक बार दुर्गा और छोटी बहूरानी की ओर देखा, दोनों मजे से सो रही थीं।

कान्त ने पूछा, "अब इन लोगों को लेकर कहाँ जाओगी? इन लोगों के लिए कहीं तुम खुद ही न पकड़ी जाओ?"

"मुझे कौन पकड़ेगा?"

कान्त ने कहा, "अगर चेहल-सुतून में तुम्हारी ढुँढाई हुई और नानी बेगम को पता लग गया कि तुम भाग गयी हो, और नवाब को यह मालूम हो गया तब क्या होगा?"

मराली ने हँसते हुए कहा, "मुझे अपनी चिन्ता नहीं है, मुझे तो कोई मारकर भी फेंक दे तो कोई बात नहीं। लेकिन जिस छोटी बहूरानी के लिए मैंने यह सब किया है, कहीं ऐसा न हो कि उसी को बचा न पाऊँ।"

कान्त ने कहा, "यह तो ठीक है, लेकिन तुम्हें अपने बारे में भी तो सोचना चाहिए।"

मराली ने कहा, "यह सब काफ़ी सुन चुकी हूँ, अब और सुनना अच्छा नहीं लगता। देखो न, वे दोनों कितने मजे से सो रही हैं।"

कान्त ने कहा, "इन लोगों को उठाकर पूछो न, वे लोग कहाँ जायेंगी।"

दोनों मजे में सो रही थीं। सचमुच दुर्गा जैसी औरत भी कुछ ही दिनों में ठंडी हो गयी। मराली अगर एक दिन की भी देर करती तो शायद उसे गले में फाँसी लगाकर ही लटकना होता। छोटी बहूरानी भी बुरी तरह से डर गयी थीं। कान्त को देखकर

दुर्गा भी डर के मारे कांपने लगी थी। लेकिन कान्त ने कहा था, "चुपचाप
ो मत, मैं मराली के पास से आ रहा हूं।"

दुर्गा ने कहा था, "वह मुंहजली कहाँ है ?"

"बोलो मत, नहीं तो कोई सुन लेगा। मराली को तुम्हारी चिट्ठी मिल गयी
ह खुद तुम लोगों को लेने के लिए आयी है। घाट पर बजरे में है।"

"तो उसे बुलाकर लाओ। वह खुद क्यों नहीं आयी ?"

कान्त ने कहा, "मराली के यहाँ आने में खतरा है इसीलिए मैं आया हूं।"

"तुम कौन हो ?"

कान्त ने कहा, 'मैं कान्त हूं।"

दुर्गा ने कहा, "कान्त कह देने से ही हो गया क्या ? कौन कान्त ? मरी क
ाथ तुम्हारा क्या सम्बन्ध है ? उसने तुम्हें क्यों भेजा है ? तुम क्या निजामत के नौकर
हो ? हमें किसी का विश्वास नहीं है। उस नासपीटे साहब को अच्छा आदमी समझा
था, लेकिन अब पता चला कि वह कितना हरामजादा है। तुम जाकर मरी को बुल
लाओ। बिना उसके आये हम नहीं जायेंगी।"

आखिर मराली को आना ही पड़ा। उसे देखते ही दुर्गा जो मुंह में आया
बकने लगी, "तुझ मुंहजली को नर्क में भी जगह नहीं मिलेगी। तुझे चाण्डाल भी नहीं
छुएंगे। जिसका खाती है उसी का बिगाड़ती है !"

लेकिन तभी मराली ने दुर्गा के दोनों पैर पकड़कर गिड़गिड़ाते हुए कहा, "दुहा
दुर्गा मौसी ! यह गाली-गलौज का समय नहीं है। बाद में जितना चाहो कह लेन

"हट, दूर हट ! मुझे छू मत लेना।" कहकर दुर्गा ने लात मारकर मराली
एक ओर कर दिया।

चीख-पुकार सुनकर छोटी बहूरानी की नींद टूट गयी थी।

आँख मलते हुए उसने कहा, "क्या हुआ दुर्गा ? कौन है ? अरे, यह तो
मराली लगती है।"

कहकर छोटी बहूरानी मराली की ओर जाने लगी। लेकिन बीच में ही
उसे रोक लिया। कहा, "उसे मत छुओ छोटी बहूरानी ! वह गाय खाती
मुसलमान हो गयी है।"

पास खड़ा कान्त सब कुछ सुन रहा था। उसे बहुत ही बुरा लग
जिनके लिए मराली ने इतना सब किया वे ही मराली की कैसी दुर्दशा कर

लेकिन तब तक छोटी बहूरानी की समझ में बात आ गयी थी। उन्
कहा, "एक ओर हट ! तू उसे क्यों बुरा-भला कह रही है ?"

फिर उसने मराली के पास जाकर पूछा, "मेरी चिट्ठी मिली ?"

मराली ने जल्दी से छोटी बहूरानी के पैर छूकर कहा, "मैं तुम
आयी हूं बहूरानी, और सच कहती हूं विश्वास करो मैंने गोमांस नहीं खा

दुर्गा ने कहा, "गोमांस खायेगी तो तू ही नर्क में जायेगी, हमार

छोटी बहूरानी ने वह बात अनसुनी करते हुए कहा, "तू हम लोगों को इसी समय यहाँ से ले चल ! तू न आयी होती तो मुझे फाँसी लगाकर मरना पड़ता ।"

लेकिन उस समय बहस करने का समय नहीं था । उधर ऐसा लगा, मानो कोई आ रहा था । पाँवों की आहट मिली । कोई आया तो सर्वनाश हो जायेगा । दरवाजे का ताला तोड़ते समय किसी को पता नहीं चला, यही काफी था । फिर देर करने से लोगों की नींद खुल जाती । इसलिए जो जिस हालत में था, उसी हालत में बजरे में आकर बैठ गया ।

बजरे में आकर भी छोटी बहूरानी जैसे डर के मारे काँप रही थीं । बजरे में हर तरह का इन्तजाम था ।

लेकिन छोटी बहूरानी ने खाने से इंकार कर दिया । कहने लगी, "नहीं री ! तू खाने के लिए मत कह । तूने हम लोगों को याद रखा, चिट्ठी पाकर यहाँ से निकाल लिया, इतना ही बहुत है ।"

दुर्गा ने अन्न का एक दाना भी नहीं खाया ।

मराली ने बहुतेरा कहा, "तुम खाओ छोटी बहूरानी, यह मेरे हाथ का छुआ नहीं है ।"

लेकिन दुर्गा कहने लगी, "तूने अपनी जात गँवायी है तो हमारा धर्म क्यों खराब करती है ? इस उमर में भी मैं दोनों जून धुले कपड़े पहनकर पूजा करती हूँ ।"

"लेकिन क्या पानी, पानी भी नहीं पियोगी ?"

"हम लोगों के लिए यह गंगा का पानी ही काफी है ।"

कहकर दुर्गा अँजुली में पानी भर-भरकर पीने लगी ।

इसके बाद दुर्गा ने कहा, "कई दिनों से सो नहीं पायी हूँ । थोड़ी देर सोऊँगी ।"

कहकर वह बिस्तरे पर जा लेटी ।

मराली ने कहा, "लेकिन यह तो बतलाओ कि तुम लोगों को जाना कहाँ है ? कहाँ पहुँचा दूँ ।"

"तू कहाँ ले जायेगी ?"

"तुम जहाँ कहोगी वहीं पहुँचा दूँगी ।"

"लेकिन तू खुद कहाँ जायेगी ? नवाब के हरम में ?"

मराली ने कहा, "मेरी बात जाने दो । एक दिन तुम लोगों के लिए ही मैं नवाब के हरम में गयी थी और अपनी जाति गँवायी थी । आज अगर तुम लोगों को निरापद जगह पहुँचा दूँगी तो अपना काम पूरा समझूँगी । फिर मैं जिन्दा रहूँ या मरूँ मुझे कोई चिंता नहीं होगी ।"

और तभी जैसे मराली को एक बात याद आ गयी ।

उसने पूछा, "मेरे पिता जी की क्या हालत है ? कभी याद करते हैं क्या ?"

दुर्गा को भी जैसे होश आया । उसने कहा, "धत्तो, कम से कम चार को मार दी है ।"

दुर्गा भी डर के मारे काँपने लगी थी। लेकिन कान्त ने कहा था, "चुपचाप
ी मत, मैं मराली के पास से आ रहा हूँ।"
दुर्गा ने कहा था, "वह मुँहजली कहाँ है ?"
"बोलो मत, नहीं तो कोई सुन लेगा। मराली को तुम्हारी चिट्ठी मिल ग
ह खुद तुम लोगों को लेने के लिए आयी है। घाट पर बजरे में है।"
"तो उसे बुलाकर लाओ। वह खुद क्यों नहीं आयी ?"
कान्त ने कहा, "मराली के यहाँ आने में खतरा है इसीलिए मैं आया हूँ
"तुम कौन हो ?"
कान्त ने कहा, 'मैं कान्त हूँ।"
दुर्गा ने कहा, "कान्त कह देने से ही हो गया क्या ? कौन कान्त ? मरी के
ाथ तुम्हारा क्या सम्बन्ध है ? उसने तुम्हें क्यों भेजा है ? तुम क्या निजामत के नौकर
हो ? हमें किसी का विश्वास नहीं है। उस नासपीटे साहब को अच्छा आदमी समझा
था, लेकिन अब पता चला कि वह कितना हरामजादा है। तुम जाकर मरी को बुला
लाओ। बिना उसके आये हम नहीं जायेंगी।"
आखिर मराली को आना ही पड़ा। उसे देखते ही दुर्गा जो मुँह में आया
बकने लगी, "तुझ मुँहजली को नर्क में भी जगह नहीं मिलेगी। तुझे चाण्डाल भी नहीं
छुएँगे। जिसका खाती है उसी का बिगाड़ती है !"
लेकिन तभी मराली ने दुर्गा के दोनों पैर पकड़कर गिड़गिड़ाते हुए कहा, "दुहाई
दुर्गा मौसी ! यह गाली-गलौज का समय नहीं है। बाद में जितना चाहो कह लेना।"
"हट, दूर हट ! मुझे छू मत लेना।" कहकर दुर्गा ने लात मारकर मराली
एक ओर कर दिया।
चीख-पुकार सुनकर छोटी बहूरानी की नींद टूट गयी थी।
आँख मलते हुए उसने कहा, "क्या हुआ दुर्गा ? कौन है ? अरे, यह तो
मराली लगती है।"
कहकर छोटी बहूरानी मराली की ओर जाने लगी। लेकिन बीच में ही
उसे रोक लिया। कहा, "उसे मत छुओ छोटी बहूरानी ! वह गाय खाती
मुसलमान हो गयी है।"
पास खड़ा कान्त सब कुछ सुन रहा था। उसे बहुत ही बुरा लग
जिनके लिए मराली ने इतना सब किया वे ही मराली की कैसी दुर्दशा कर
लेकिन तब तक छोटी बहूरानी की समझ में बात आ गयी थी। उन्हें
कहा, "एक ओर हट ! तू उसे क्यों बुरा-भला कह रही है ?"
फिर उसने मराली के पास जाकर पूछा, "मेरी चिट्ठी मिली ?"
मराली ने जल्दी से छोटी बहूरानी के पैर छूकर कहा, "मैं तुम
आयी हूँ बहूरानी, और सच कहती हूँ विश्वास करो मैंने गोमांस नहीं खाय
दुर्गा ने कहा, "गोमांस खायेगी तो तू ही नर्क में जायेगी, हमारा

छोटी बहूरानी ने यह बात अनसुनी करते हुए कहा, "तू हम लोगों को इसी समय यहाँ से ले चल ! तू न आयी होती तो मुझे फाँसी लगाकर मरना पड़ता।"

लेकिन उस समय बहस करने का समय नहीं था। उधर ऐसा लगा, मानो कोई आ रहा था। पाँवों की आहट मिली। कोई आया तो सर्वनाश हो जायेगा। दरवाजे का ताला तोड़ते समय किसी को पता नहीं चला, यही काफी था। फिर देर करने से लोगों की नींद खुल जाती। इसलिए जो जिस हालत में था, उसी हालत में बजरे में आकर बैठ गया।

बजरे में आकर भी छोटी बहूरानी जैसे डर के मारे काँप रही थीं। बजरे में हर तरह का इन्तजाम था।

लेकिन छोटी बहूरानी ने खाने से इंकार कर दिया। कहने लगी, "नहीं री ! तू खाने के लिए मत कह। तूने हम लोगों को याद रखा, चिट्ठी पाकर यहाँ से निकाल लिया, इतना ही बहुत है।"

दुर्गा ने अन्न का एक दाना भी नहीं खाया।

मराली ने बहुतेरा कहा, "तुम खाओ छोटी बहूरानी, यह मेरे हाथ का छुआ नहीं है।"

लेकिन दुर्गा कहने लगी, "तूने अपनी जात गँवायी है तो हमारा धर्म क्यों खराब करती है ? इस उमर में भी मैं दोनों जून धुले कपड़े पहनकर पूजा करती हूँ।"

"लेकिन क्या पानी, पानी भी नहीं पियोगी ?"

"हम लोगों के लिए यह गंगा का पानी ही काफी है।"

कहकर दुर्गा अँजुली में पानी भर-भरकर पीने लगी।

इसके बाद दुर्गा ने कहा, "कई दिनों से सो नहीं पायी हूँ। थोड़ी देर सोऊँगी।"

कहकर वह बिस्तरे पर जा लेटी।

मराली ने कहा, "लेकिन यह तो बतलाओ कि तुम लोगों को जाना कहाँ है ? कहाँ पहुँचा दूँ।"

"तू कहाँ ले जायेगी ?"

"तुम जहाँ कहोगी वहीं पहुँचा दूँगी।"

"लेकिन तू खुद कहाँ जायेगी ? नवाब के हरम में ?"

मराली ने कहा, "मेरी बात जाने दो। एक दिन तुम लोगों के लिए ही मैं नवाब के हरम में गयी थी और अपनी जाति गँवायी थी। आज अगर तुम लोगों को निरापद जगह पहुँचा दूँगी तो अपना काम पूरा समझूँगी। फिर मैं जिन्दा रहूँ या मरूँ मुझे कोई चिंता नहीं होगी।"

और तभी जैसे मराली को एक बात याद आ गयी।

उसने पूछा, "मेरे पिता जी की क्या हालत है ? कभी याद करते हैं क्या ?"

दुर्गा को भी जैसे होश आया। उसने कहा, "चलो, कम से कम बार की याद तो है।"

"याद क्यों नहीं होगी मौसी, पिता जी को कैसे भूल सकती हूँ ? जात गँवायी है तो क्या बाप को भी भूल गयी हूँ ? कोई बेटी भी क्या अपने बाप को भूल सकती है ?"

और उसके साथ ही आँखों के सामने सब कुछ आ गया। मराली कहने लगी, "वह छातिमतल्ले वाला टीला अभी तक है क्या दुर्गा मौसी ? और नयन बुआ का क्या हाल है ? नन्दरानी आजकल क्या करती है ? ठीक मेरे विवाह वाले दिन बेचारी के आदमी के मरने की खबर आयी थी। मुझे सब कुछ अच्छी तरह से याद है, नंदरानी की का रोना अब भी याद है। मुझे सब कुछ याद है, कुछ भी नहीं भूल पायी। तुम सोचती होगी, मैं आराम से हूँ। लेकिन मैं किस आराम से हूँ, यह अगर तुम लोग देखतीं।"

एक-एक कर मराली अपनी धुन में बहुत सारी बातें कह गयी। मानो वह क्षण भर में ही हतियागढ़ पहुँच गयी थी।

सुनते-सुनते दुर्गा ने कहा, जरा बाहर खिसककर बैठ ! छू गयी तो जाकर "बेकार में नहाना पड़ेगा।"

मराली ने कहा, "लेकिन मौसी, इतने दिनों तक तो तुम लोग क्लाइव साहब का छुआ खाती रहीं।"

"कौन कहता है कि छुआ खाया ? हम लोगों के लिए तो हरीचरण खाना बनाता था। उस बेचारे को मार डाला। वह होता तो तुझे क्यों चिट्ठी लिखती ? अरी छोटी बहूरानी, तुम कहो न, वह होता तो मरी को क्यों चिट्ठी लिखती ?"

तभी छोटी बहूरानी ने कहा, "अच्छा, अब चुप भी रह दुर्गा ! ज्यादा बक-बक मत कर ! मुझे नींद आ रही है।"

मराली ने कहा, "हाँ मौसी, तुम भी अब सोओ। अब तुम्हें परेशान न करूँगी। तुमने शादी वाले दिन जो उपकार किया था वह कभी न भूलूँगी ?"

दुर्गा को पुरानी बातें याद पड़ गयीं। पूछा, "अरी, तेरे उस आदमी ने तुझे ढूँढ़ा नहीं ?"

मराली ने कहा, "ढूँढ़ा था दीदी। पालकी से मुर्शिदाबाद जाते समय एक सराय के सामने उसका गाना सुना था। बड़ा ही करुण था वह गाना—रहिहों न भुवन-भवन तें।"

"फिर तूने क्या कहा ?"

'कैसे क्या कहती दुर्गा मौसी ? उस समय अगर कुछ कहती तो पकड़ी जाती र। इसीलिए चुप रही।"

"अच्छा किया जो चुप रही। वह तो एक ही फक्कड़ आदमी है, उससे भला रा कैसे निभ सकता था ? हाँ री मरी, नवाब के हरम के अन्दर का हालचाल कैसा ? बहुत तकलीफ है या बहुत आराम ? सुना है, बेगमें गुलाबजल से नहाती हैं, सोने गी थाली में भात खाती हैं, बाँदी कपड़ा पहना देती है, बाँदी खिला देती है और गाना ाकर सुलाती है। क्या यह सब सच है ?"

"नहीं दुर्गा मौसी, सब झूठ है। वहाँ पर सभी औरतें रोती हैं और दुख भूलने

के लिए अर्क पीती हैं।"

"अर्क पीती हैं? यह अर्क क्या होता है?"

मराली ने कहा, "एक तरह का जहर होता है!"

"जहर?"

"हाँ दुर्गा मौसी, जहर। संखिया जहर! वही जहर बाजार से खरीदकर नवाब की बेगमें खाती हैं।"

"लेकिन जहर क्यों खाती हैं, मरने के लिए?"

मराली ने कहा, "नहीं दुर्गा मौसी, जहर खाकर बेगमें सब कुछ भूल जाती हैं। सुख-दुख कुछ भी याद नहीं रहता। माँ-बाप और अपने जन किसी की बात याद नहीं रहती। उसे पीने पर ऐसा लगता है, मानो हमें कोई तकलीफ नहीं है। बदन में गरम लोहा दाग देने पर भी पता नहीं चलता। जब सारा बदन जल जाता है तब भी नशे में घुत बेगमें बैठी खिलखिलाती रहती हैं।"

"अरे राम, तू क्या कह रही है? तू भी खाती है क्या?"

मराली ने कहा, "उससे अगर छोटी बहूरानी का भला होता तो वह भी करती। लेकिन अभी तक उसकी जरूरत नहीं पड़ी। तुम लोगों के लिए मैं सब कुछ कर सकती हूँ। आज तुम लोगों को बचा पायी हूँ। मेरे लिए इतना ही काफी है।"

दुर्गा बोली, "कई महीने से कितनी तकलीफ में हूँ, यह मैं कैसे समझाऊँ मरी!"

"अब तो छुटकारा मिला दुर्गा मौसी। अब कोई डर नहीं है।"

दुर्गा ने कहा, "जिस दिन छोटे सरकार के पास छोटी बहूरानी को पहुँचा दूँगी, उसी दिन समझूँगी, छुटकारा मिला। उससे पहले नहीं। पता नहीं, कैसे बुरे क्षण में किसका मुँह देखकर हतियागढ़ से चली थी।"

मराली ने पूछा, "लेकिन तुम सब हतियागढ़ से क्यों चल दीं दुर्गा मौसी? मैं तो छोटी बहूरानी बनकर चेहल-सुतून में पहुँच ही गयी थी। छोटी बहूरानी को तुम छिपाकर नहीं रख सकती थीं जिससे किसी को मालूम न हो?"

दुर्गा ने कहा, "सब कर्मों का फेर है मरी, सब कर्मों का फेर है।"

"तुम ठीक ही कहती हो मौसी! चेहल-सुतून में जाकर सोचा था कि मैंने छोटी बहूरानी का बड़ा उपकार कर दिया है लेकिन कौन जानता था कि यह सब होगा!"

इसके बाद बाहर की ओर मुँह करके आवाज दी, "कान्त!"

कान्त के आने पर उसने कहा, "मल्लाहों से कह दो, त्रिवेणी के घाट पर बजरा बाँध दें।"

कान्त बाहर चला गया।

दुर्गा ने पूछा, "हाँ री मरी, यह छोकरा कौन है? तेरा नौकर है?"

"हाँ मौसी, नौकर ही समझ लो।"

"समझ लो के माने? क्या सचमुच नौकर नहीं है? कब से देख रही हूँ तेरी बात पर उठता-बैठता है। हमारा हरीचरण भी ठीक ऐसा ही था।"

मराली ने कहा, "मेरा अपना कहने को तो कोई नहीं है दुर्गा मौसी। फिर भ
उसकी तरह मेरा कोई अपना नहीं है। मेरे लिए वह जान तक दे सकता है।"

"हाँ, तुझे अच्छा नौकर मिला है। उसे कितनी तनख्वाह देनी पड़ती है?"

मराली ने कहा, "सभी क्या तनख्वाह लेते हैं दुर्गा मौसी! तनख्वाह न मिल पर भी वह काम करेगा। वह ऐसा ही है। फिर मैं खुश रहती हूँ तो उसे सब मिल जाता है।"

दुर्गा ने कहा, "तेरी यह पहेली मैं समझ नहीं पा रही हूँ, जरा साफ-सा बता न।"

मराली ने कहा, "न मौसी, यह सब समझने की जरूरत नहीं है, बल्कि अ तुम सोओ। देखो मौसी, जरूरत पड़ने पर मैं तुम्हें जगा लूँगी।"

इतना कहकर मराली ने दुर्गा का बिस्तर बिछा दिया। रात गहरी हो गय थी। दुर्गा छोटी बहूरानी के पायताने सो गयी। बाहर घुप्प अँधेरा था। मराली ने बाहर देखा। छप्पर के बाहर उस समय कान्त चुपचाप बैठा आसमान की ओर ता रहा था।

उसने पुकारा, "कान्त, सुनो!"

कान्त छाया की तरह नजदीक आया।

मराली ने कहा, "क्या सोच रहे हो?"

कान्त ने कहा, "कुछ भी तो नहीं।"

"सोचते होगे कि मैं तुम्हें क्यों लिवा लायी और इन लोगों को लेकर कहाँ रही हूँ। सोचते होगे, तुम्हें साथ लाकर तुम्हारे साथ बात क्यों नहीं कर रही हू यही न?"

कान्त ने कहा, "नहीं, मैं यह सब कुछ भी नहीं सोच रहा हूँ।"

मराली ने वह बात अनसुनी करते हुए कहा, "मैंने जिन लोगों के लिए अप सारे सुख को तिलांजलि दी, वे ये ही हैं। यह तुम्हें मालूम है न?"

कान्त ने कहा, "जानता हूँ।"

"अब इन लोगों को तो बचा लिया है। अब इन लोगों को हतियागढ़ पहुँचाक मुझे छुट्टी मिल जायेगी। फिर तुम जहाँ भी चाहो मुझे ले जा सकते हो।"

कान्त ने कहा, "तुम कह क्या रही हो?"

मराली ने कहा, "ठीक ही कह रही हूँ। एक दिन तुम मुझे चेहल-सुतू भगाकर ले जाना चाहते थे लेकिन इस बहूरानी की वजह से ही मैंने तुम्हारी बात नह मानी थी। आज मेरे ऊपर कोई भी उत्तरदायित्व नहीं रहा। मैं अब स्वाधीन हूँ।"

कान्त की समझ में जैसे फिर भी कुछ नहीं आ रहा था।

मराली ने कहा, "मेरी ओर क्या देख रहे हो? जो कहती हूँ सो करो।"

कान्त को तब भी जैसे विश्वास नहीं हो रहा था। उसने कहा, "तुम मे साथ भागोगी?"

"इसमें बुराई क्या है? अब तक जिस कारण से न जा पायी, वह बाधा तो अब मिट ही गयी है!"

कान्त ने कहा, "लेकिन तुम तो नवाब को इतना चाहती हो।"

मराली हँस पड़ी। उसने कहा, "नवाब को चाहने वालों की क्या कोई कमी है? नवाबों को चाहने वालों की कमी कभी नहीं होती।"

"लेकिन अब तो तुम्हारे सुलाने पर ही नवाब को नींद आती है मराली! तुम्ही ने नवाब को कुरान पढ़ना सिखाया। तुम्हारे बिना नवाब कहीं पागल न हो जायँ।"

मराली फिर हँसने लगी।

उसने कहा, "तब तुम नवाब को खाक समझते हो। जिस दिन मुर्शिदाबाद की मसनद नवाब छोड़ देगा, उसी दिन वह आदमी बन पायेगा। उससे पहले नहीं। लेकिन तुम नहीं जानते, नवाब के लिए पहले मसनद है फिर बेगम। बेगमें तो नवाब का हक है। वह उन्हें कभी भी प्यार कर सकता है? इसी तरह क्या बेगमें भी नवाब को प्यार नहीं कर सकतीं?"

कान्त सुनकर थोड़ी देर तक सोचता रहा।

फिर बोला, "तब?"

"तब जो कह रही हूँ वही करो।"

कान्त ने कहा, "तुम्हारा क्या दिमाग खराब हो गया है? तुम्हें लेकर मैं कहाँ भाग सकता हूँ? अगर पता चल गया तो कैसी आफत आयेगी कहो तो?"

मराली ने कहा, "तुम्हें अपनी आफत का तो ख्याल है मेरे बारे में एक बार भी नहीं सोचते हो। अब भाग जाने के सिवा मेरे पास चारा ही क्या है? मैं अब कहाँ जाऊँ? यह मुँह लेकर क्या मैं पिता जी के पास जा सकती हूँ? अब मुझे कौन आश्रय देगा?"

"लेकिन तुम तो छोटी बहूरानी के साथ छोटे सरकार के पास जा सकती हो।"

"तब तो हो चुका! पाँव छूकर प्रणाम करने गयी तो दुत्कार दिया, फिर इनके घर जाऊँ तो ये रहने देंगे, खाने देंगे।"

"उसी के लिए तो तुमने इतना किया मराली! जो कोई किसी के लिए नहीं करता, तुमने वही किया, तब वह क्या तुम्हें रहने के लिए जगह भी नहीं देगी?"

"यह सब बात जाने दो। जिसने मुझे अपना पैर तक नहीं छूने दिया, वह भला मुझे अपने घर में कैसे रख सकती है? इस बार चेहल-सुतून से निकलते वक्त ही मैंने ठीक कर लिया था अब वहाँ वापस नहीं जाऊँगी।"

"इन लोगों को हतियागढ़ पहुँचाने के बाद अगर फिर कोई मुसीबत खड़ी हुई?"

"अब मुसीबत कैसी?"

"अगर मेंहदी निसार को पता लग गया कि तुम असली बहूरानी नहीं हो तब? या यह कि हतियागढ़ की बहूरानी अपने घर में मौजूद है, तब क्या होगा?"

मराली ने भी इस बात को सोचकर नहीं देखा था। उसने कहा, "तब इन लोगों

को कहाँ ले जाऊँ, तुम्हीं बतलाओ।"

कान्त भी यही सोच रहा था।

उसने कहा, "महाराज कृष्णचन्द्र के साथ तो छोटे सरकार का अच्छा मेलजोल है, इन लोगों को कृष्णनगर ही क्यों नहीं पहुँचा देतीं ?"

अचानक बजरा रुक गया। बाहर से मल्लाहों ने कहा, 'हुजूर, त्रिवेणी घाट आ गया।"

कान्त ने कहा, "ठीक है, यहीं बजरा लगा दो।"

इसके बाद मराली की ओर देखकर कहा, "उन लोगों से पूछो, कृष्णनगर जायेंगी या नहीं ?"

मराली ने कहा, "बेचारी सो रही हैं। सो लेने दो, जागने पर पूछ लूंगी। उससे पहले बतलाओ कि मैं कहाँ जाऊँगी ?"

कान्त ने कहा, "तुम भगत जी के पास क्यों नहीं चली जातीं ?"

ठीक उसी समय घाट पर एक और बजरा आकर रुका।

मराली ने कहा, "यह किसका बजरा आया ?"

कान्त ने बाहर आकर देखने के बाद बतलाया, "नहीं, यह व्यापारी का बजरा नहीं है, किसी जमींदार का लगता है। काफी देर तक खड़ा-खड़ा देखता रहा लेकिन कोई भी बाहर नहीं आया शायद सब अन्दर सो रहे हैं !"

"अगर किसी ने हम लोगों को पहचान लिया तो ? मल्लाहों से नहीं पूछा कि अन्दर कौन है ?"

कान्त ने कहा, "नहीं, उससे तो और भी सन्देह होता। सोचेंगे, हम इतनी पूछताछ क्यों कर रहे हैं। इससे तो बेहतर है कि यहाँ से चल दिया जाय।"

अचानक मल्लाह की आवाज सुनाई दी, "हुजूर !"

कान्त ने बाहर निकलकर पूछा, "क्या बात है ?"

"यह देखिए हजूर ! उस बजरे का आदमी है, आपसे कुछ पूछना चाहता है।"

"क्या बात है ?"

उस आदमी ने विनीत भाव से नमस्कार करके पूछा, "क्या आप लोग बतला सकते हैं, फिरंगी क्लाइव साहब कलकत्ते में हैं या नहीं ?"

कान्त ने कहा, "कर्नल क्लाइव कलकत्ते में हैं या नहीं यह हम लोग कैसे बतला सकते हैं, हम लोग क्या फिरंगी क्लाइव के दफ्तर में नौकरी करते हैं ?"

"जी, यह बात नहीं है। रास्ते में एक आदमी ने बतलाया था कि क्लाइव फौज लेकर काटोआ की ओर गया है ! इसीलिए बाबू साहब ने आपसे पुछवाया, शायद आपको कुछ पता हो।"

"नहीं भाई; हमें कुछ भी नहीं मालूम।"

वृन्दावन एक बार और नमस्कार करके अपने बजरे में लौट गया। उसके पहुँचते ही छोटे सरकार ने पूछा, "वृन्दावन, उन लोगों ने क्या कहा ?"

वृन्दावन ने कहा, "नहीं हुजूर, उन लोगों को कुछ भी नहीं मालूम।"

छोटे सरकार ने फिर पूछा, "क्लाइव इस ओर से फौज लेकर नहीं गया?"

"उन लोगों को कुछ भी मालूम नहीं है।"

छोटे सरकार ने सोचा, हो सकता है ऐसा-वैसा आदमी होगा कोई, खबर नहीं रखता। शायद कोई परदेशी होगा, अभी-अभी घाट पर आया है। सिर उठाकर छोटे मोखे से बाहर आसमान की ओर देखकर छोटे सरकार अन्दाजा लगाने लगे। पूर्व की ओर जरा लाली फैल चुकी थी। थोड़ी देर में ही सुबह हो जायेगी। छोटे सरकार ने फिर लेटते हुए कहा, "ठीक है, जाकर तुम भी थोड़ी देर सो लो। जरूरत पड़ने पर बुला लूँगा।"

●

सचमुच उस समय किसी ने भी इस बात का ख्याल नहीं किया कि पूरब की ओर का आसमान आज और दिनों की बनिस्बत ज्यादा लाल हो उठा था। कोई भी समझ नहीं पाया कि अठारहवीं सदी के अँधेरे के बाद भोर होने में ज्यादा देर नहीं थी।

लश्कबाग की छावनी में नवाब सिराजुद्दौला अपने खेमे में बैठा बाहर की ओर देख रहा था। सचमुच, आज आसमान कुछ ज्यादा ही सुर्ख दिखलाई दे रहा था। हो सकता है कि सूरज की रोशनी कुहरे के जाल में फँस गयी थी इसलिए इतनी सुर्खी दिखलाई दे रही थी।

काफी रात तक मेंहदी निसार नवाब के साथ था। इसके बाद यह देखकर कि नवाब को नींद आ रही है, वह बाहर निकल गया था। बाहर सन्नाटा छाया था। लाल-लाल टोपी पहने फिरंगियों के सिपाही चीटियों जैसे लग रहे थे।

मेंहदी निसार मन ही मन खुश हो रहा था। सारी गड़बड़ी की जड़ यही दौलत है। शुरू-शुरू में मिर्जा मुहम्मद डर रहा था तो मेंहदी निसार ने ही उसकी हिम्मत बँधायी थी।

मिर्जा ने कहा था, "इतने रुपये कहाँ से आयेंगे?"

फौजी सिपाही अकड़कर बैठ गये थे। महीनों से उन्हें तनख्वाह नहीं मिल रही थी।

मेंहदी निसार ने कहा था, "एक-एक को गोली से उड़ा दूँगा। नमकहराम कहीं के!"

मिर्जा ने रोककर कहा था, "जानते हो, इस वक्त मेरे ऊपर मुसीबत है, अगर ये लोग भी अड़ गये तो किसके बूते पर लड़ाई करने जाऊँगा?"

मीरजान, मीर मदन, मोहनलाल और मीर जाफर ने भी यही कहा था।

मीर जाफर ने कहा, "इन लोगों की तनख्वाह क्यों नहीं दे दी जाती?"

मिर्जा मुहम्मद ने कहा, "यकीन मानिए, रुपया नहीं है। इतने रुपये दे देने पर तो सारा खजाना खाली हो जायेगा।"

लेकिन आश्चर्य ! पूरी तनख्वाह मिल जाने पर सभी सिपाही लड़ने को तैयार हो गये। दुर्लभराम, यार लुत्फ खाँ सभी आये। लक्कावाग में मीर वख्शी ने तीन ओर से घेरा डाल दिया।

पैंतीस हजार पैदल सिपाही, पंद्रह हजार घुड़सवार और चालीस तोपें थीं। उधर फ्रांसीसी फौज खड़ी थी। उन लोगों का गुस्सा अभी तक नहीं मिटा था। उन लोगों ने वादा किया था कि अंग्रेजों को वुरी तरह पछाड़कर ही हम लोग दम लेंगे। उन लोगों का सारा गुस्सा यूनियन जैक पर ही था और चन्दननगर के किले पर शान से वही यूनियन जैक फहरा रहा था।

मेंहदी निसार ने खुश होकर फिर एक वार चुटकी वजायी।

चुटकी वजाते ही जैसे सिहर उठा।

"कौन ?"

वशीर मियाँ न जाने कव चोरों की तरह आकर पीछे खड़ा हो गया था।

"खुदावन्द, मैं वशीर हूँ।"

"लेकिन इस समय क्या वात है ? देखता नहीं कि लड़ाई शुरू होने वाली है ? भाग यहाँ से !"

"खुदावन्द ने वंदे को मरियम वेगम साहवा की तलाश करने का हुक्म दिया था। वेगम साहवा का पता चला है।"

"मरियम वेगम ?"

मेंहदी निसार की इतनी खुशी में जैसे अचानक एक काँटा-सा चुभा। चेहल-सुतून से मरियम वेगम का भाग जाना जैसे मेंहदी निसार के लिए शर्म की वात थी। वह इतना भी नहीं कर पाया तो लानत है उसको। जव तक लश्करपुर के ताल्लुकेदार कासिम अली की तरह ही मरियम वेगम की भी हालत न कर देगा, उसके कलेजे को ठंडक नहीं पहुँचेगी। उधर मिर्जा लड़ाई करने जा रहा है। उसके साथ रहना भी लाजमी है। मंसूर अली को वेगम का पता लगाने के लिए कहकर वह लक्कावाग चला आया था। उसके वाद आज ही उसे मरियम वेगम के वारे में पता लगा।

अव वही मरियम वेगम मिली।

वशीर मियाँ की ओर देखकर उसने कहा, "वह कहाँ है ?"

"खुदावन्द ! त्रिवेणी के घाट पर।"

"त्रिवेणी के घाट पर ?"

"जी हाँ, मैं कलकत्ते गया था, वहाँ से खोजते-खोजते त्रिवेणी में आकर पता चल पाया।"

लेकिन वशीर मियाँ की वात पूरी होने से पहले ही वड़े जोर की आवाज से कान सन्न रह गये। फ्रांसीसी फौज ने अचानक तोप चला दी थी। गोला जाकर सीधे फिरंगी छावनी में पड़ा और साथ ही साथ, लोगों की चीखें सुनाई दीं।

"या अल्लाह !"

मेंहदी निसार ने खुश होकर एक बार फिर चुटकी बजायी। इसके बाद बशीर मियाँ की ओर देखकर कहा, "चल, मैं त्रिवेणी घाट पर चलूँगा।"

तभी फिरंगी तोपों ने भी गोले उगलने शुरू कर दिये। बुम-बुम की आवाज से कान के पर्दे फटे जा रहे थे।

मेंहदी निसार ने एक बार मीर जाफ़र की फौज की ओर देखकर सोचा, मीर बख्शी पता नहीं कौन-सी चाल चल रहा है! तब क्या सब कुछ बेकार हो जायेगा? अचानक तभी नवाब की फौज के दाहिने ओर से बुम-बुम की आवाज आयी।

मेंहदी निसार झुककर एक ओर खिसक आया, बोला, "इधर चला आ, नहीं तो मर जायेगा।"

बशीर मियाँ भी अपनी जान बचाने की फिक्र में एक तरफ हट आया। सूरज उस समय साफ़ चमकने लगा था। मेंहदी निसार भी उस समय लड़ाई देखने का लोभ छोड़ नहीं पा रहा था। जो कुछ फैसला होना है, अभी हो जाय तो अच्छा! नवाबी फौज की तोपें भी गोले बरसा रही थीं, लेकिन उनके गोले आम के पेड़ों की मोटी-मोटी डालियों से टकरा रहे थे। फौज लेकर चलने से मेंहदी निसार नवाब के साथ है। ऐसा आना मेंहदी निसार के लिए नया नहीं है। मिर्जा मुहम्मद जब जहाँ गये, वह हमेशा उनके साथ रहा। लड़ाई में जाने पर ज्यादा ही मौज रहती है। लड़ाई तो करेगी मीर बख्शी की फौज। मरना हो तो सिपाही ही मरेंगे। जब इधर से और उधर से गोलियाँ चलती हैं तो दूर से खड़े होकर देखने में बड़ा मजा आता है। फिर मौज-महफ़िल तो है ही। पहले मिर्जा मुहम्मद भी मौज-महफ़िल बहुत ज्यादा चाहते थे। खुद भी वे मौजें उड़ाते थे और दूसरे लोगों को भी ऐसा करने को कहते थे। लेकिन इधर कई महीनों से वे एकदम बदल गये थे। मोतीझील के आम दरबार में जब भी मेंहदी निसार गया, वहाँ के खिदमतगार ने यही कहा, सदर दरवाजा बंद है। अंदर जाकर थोड़ी देर मिर्जा से बात करेगा, इसका भी मौका नहीं मिला। हर समय मरियम बेगम नवाब के पास रहती थी। जब मरियम बेगम नहीं रहती, उस समय मिर्जा मुहम्मद मौलवी से कुरान शरीफ पढ़ते थे।

शुरू-शुरू में मेंहदी निसार को बड़ा ताज्जुब लगा था। फिर वह झल्ला गया। यह तो अच्छी मुसीबत हो गयी। वही तो पता नहीं, कहाँ से मरियम बेगम को लाया था। हतियागढ़ की रानी साहबा। पहले उसने सोचा था, मिर्जा मुहम्मद का दिल औरत से बहलायेगा लेकिन उसी मरियम बेगम ने नवाब को मुट्ठी में कर लिया!

उसी समय से मेंहदी निसार अपने मन में गुस्सा पाल रहा था।

मंसूर मेहर अली साहब को मेंहदी निसार ने उसी समय हुक्म दिया था कि जैसे भी हो इस बेगम को हटाना ही होगा। हटाना होगा का मतलब खत्म करना होगा!

मंसूर मेहर अली ने फिर कायदे के मुताबिक बशीर मियाँ को हुक्म किया था। बशीर मियाँ उसी समय से मरियम बेगम के पीछे पड़ गया था। कहा था, जैसे

भी हो उसे खत्म करूँगा फूफा साहब !

मंसूर मेहर अली ने उसे होशियार कर दिया था, "अरे बेवकूफ, तुझे खत्म नहीं करना है। खत्म करना हो तो मेंहदी निसार साहब खुद करेंगे। कहीं बेवकूफों का-सा काम न कर बैठना।"

लेकिन खत्म करना क्या इतना आसान था ? मरियम बेगम भी बड़ी होशियार औरत थी। तामजान की राह देखते हुए बशीर मियाँ चौक बाजार की सड़क पर लगाये बैठा रहा। सोचा था, रात को बेगम साहबा जब मोतीझील लौटेंगी उसी समय उसे उड़ा ले जाऊँगा। खोजा नजर मुहम्मद को उसने कितने ही दिन पान खिलाया था। पीर अली की भी खुशामद करने की उसने कोशिश की। लेकिन किसी भी तरह काम नहीं बना। रात-रात भर वह चौक बाजार की सड़कों पर और गलियों में भटकता रहा लेकिन मरियम बेगम उसके हाथ न आयी। मंसूर मेहर अली साहब से उसने कितनी ही गालियाँ सुनीं। वह बस अपने भाग्य को ही कोसता रहा। अपने ही ऊपर उसे ज्यादा गुस्सा था।

एक दिन तो बशीर मियाँ ने सब ठीक कर ही लिया था। गली के मोड़ पर उसने अपने आदमी बैठा रखे थे। बेगम साहबा आयी नहीं कि उनका तामजान गायब कर देगा। लेकिन ज्यों-ज्यों रात गहरी होती गयी, उसकी घबड़ाहट भी बढ़ने लगी। वह बार-बार मोतीझील तक जाकर चौक बाजार वापस आता रहा। आखिर मोतीझील जाकर उसने देखा, वहाँ तामजान नहीं है। फिर यहाँ-वहाँ खोजते हुए वह जगत्सेठ की हवेली पहुँचा।

जगत्सेठ की हवेली में बेगम साहबा का तामजान मौजूद था।

लेकिन वह हरामी का बच्चा भीखू शेख ! वह पठान का बच्चा बशीर मियाँ को देखते ही कुत्ते की तरह खदेड़ देता।

फिर जब भोर हो आया, तब बेगम साहबा का तामजान चलने लगा।

बशीर मियाँ भी पीछे-पीछे चलने लगा।

लेकिन तामजान चेहल-सुतून की तरफ न जाकर गंगा घाट की ओर जाने लगा।

बशीर मियाँ ने सोचा, बेगम साहबा शायद बजरे से कहीं जा रही हैं।

कहार लोग जब तामजान लेकर लौटने लगे तो बशीर मियाँ ने उनसे जाकर पूछा, "तामजान में कौन है ?"

कहारों ने कहा, "कोई नहीं है।"

"बेगम साहबा कहाँ गयीं ?"

"बजरे से गयी हैं।"

"कहाँ गयीं ?"

"यह तो नहीं मालूम हजूर !"

फिर उसी रात बशीर मियाँ एक बजरा लेकर अपने आदमियों के साथ रवाना

[illegible]ता। आगे वाला बजरा जितना तेज चलता, पीछे वाला भी उतना ही तेज चलता। आखिर आगे वाला बजरा मिल गया। उस समय बशीर मियाँ मुर्शिदाबाद से कई कोस दूर आ चुका था।

लेकिन कहीं कोई भी नहीं। मानो सब कुछ गायब हो गया।

बशीर मियाँ ने पूछा, "बेगम साहबा कहाँ हैं?"

मल्लाहों ने उलटे सवाल किया, "बेगम साहबा? कौन बेगम साहबा? किसके बारे में पूछ रहे हैं हुजूर?"

"क्यों, मरियम बेगम साहबा? इसी बजरे में तो थीं। कहाँ गयीं? कहाँ छिप गयीं?"

मल्लाहों ने कहा, "कहाँ छिपेंगी हुजूर? यह तो खाली बजरा है। इस बजरे में शराफत अली का माल आया था हुगली से। माल उतारकर हम हुगली लौट रहे हैं।"

उस दिन बेगम साहबा ने बशीर मियाँ को अच्छा बेवकूफ बनाया था। बेकार में हैरान होना पड़ा था और काफी झमेला भी सहना पड़ा था लेकिन बेगम साहबा कहाँ गयीं, इसका पता न चल सका था। न तो बेगम साहबा तामजान में थीं और न बजरे में।

मंसूर अली मेहर ने उस दिन बशीर मियाँ को बहुत डाँटा था। कहा था, "फिर कहाँ जायेंगी? तामजान में भी नहीं थीं, बजरे में भी नहीं थीं तो कहाँ गयीं? आसमान में उड़ गयीं, यही कहना चाहता है क्या?"

लेकिन ऐसा एक बार भी नहीं हुआ। इसके पहले भी कई बार ऐसा हो चुका था। सफीउल्लाह साहब के खून होने के बाद से ही मेहदी निसार बेगम साहबा पर बिगड़ा हुआ था और बस मौका ढूँढ़ रहा था। एक बार अगर बेगम साहबा मिल जायें तो उसे मेहदी निसार कभी न छोड़ेगा।

उसके बाद बशीर मियाँ बराबर मरियम बेगम को खोजता रहा। उसी समय खबर मिली, मरियम बेगम कलकत्ते में गिरफ्तार हो गयी हैं। वाट्स साहब और अमीचंद ने उसे पकड़कर क्लाइव साहब के जिम्मे पेरिन साहब के बगीचे में रखा है। बशीर मियाँ तक यह खबर पहुँचते काफी वक्त लगा था। लेकिन बेगम साहबा कब कहाँ गयीं, कैसे गयीं उसे मालूम न हो सका। बेगम साहबा के साथ एक बाँदी भी थी लेकिन यह बाँदी कहाँ से आयी? चेहल-सुतून के खोजाओं तक को पता न चल सका तो बेगम साहबा वहाँ कैसे गयीं और क्यों गयीं? आखिर बेगम साहबा का मतलब क्या है?

मंसूर अली साहब ने कहा था, "जरूर हम लोगों की साजिश का भंडाफोड़ कर देगी।"

"कैसी साजिश?"

मेहदी निसार जैसा आदमी भी डर गया था। मीर जाफर, अमीचंद,

वाली साजिश का राज क्या मरियम बेगम सबके सामने खोल देगी ? लेकिन मरियम बेगम को यह सब कैसे मालूम हो सकता है ?

"मीर जाफर साहब का राजीनामा जब जगत्सेठ की हवेली में पढ़ा जा रहा था, उस समय मरियम बेगम साहब बगल वाले कमरे से सब सुन रही थीं।"

"लेकिन यह सब नवाब से न कहकर क्लाइव से क्यों कहने लगेंगी ?"

मंसूर अली साहब ने कहा था, "नवाब से कहने की उसे फुर्सत ही कहाँ मिली? मेरा आदमी—बशीर मियाँ जो रास्ता रोके खड़ा था। इसीलिए बेगम साहबा मोती-झील में वापस न जाकर सीधे कलकत्ते चली गयीं। अब क्लाइव साहब को अगर मालूम हो जाय कि यह सब नवाब को मालूम हो गया है तो वह लड़ने ही नहीं आयेगा।"

इस बात ने मेंहदी निसार को बहुत ज्यादा परेशान कर दिया था। लेकिन उसी के बाद खबर आयी कि क्लाइव अपनी फौज के साथ मुर्शिदाबाद की तरफ आ रहा है। जैसा तय हुआ था, उसी मुताबिक काम होने लगा। फिर भी डर बना ही रहा।

नवाब की फौज के साथ मेंहदी निसार जब मुर्शिदाबाद से रवाना हुआ, उस समय भी उसके मन में डर था कि कहीं गड़बड़ न हो जाय। कहीं मरियम बेगम नवाब तक यह खबर न पहुँचा दे।

मेंहदी निसार ने मिर्जा मुहम्मद से पूछा था, "इस बार क्या तवायफें साथ नहीं जायेंगी अलीजाह ?"

नवाब अब भी लड़ने जाते थे हमेशा उनके साथ बेगमें और तवायफें भी जाती थीं। शौकत जंग से लड़ने जब नवाब पूर्णिया गये थे, उस समय भी ये नवाब के साथ थीं।

मिर्जा मुहम्मद ने जवाब दिया था, "नहीं।"

मेंहदी निसार ने फिर पूछा था, "लेकिन क्या कोई भी बेगम साहबा साथ नहीं जायेंगी आलीजाह ?"

मिर्जा मुहम्मद का चेहरा संजीदा था। उन्होंने कहा था, "नहीं, इस बार किसी को साथ नहीं लूंगा। फिर किस बेगम को साथ लूं ? किसी को भी साथ लेना अच्छा नहीं लगता।"

"लेकिन कोई बेगम साहबा अगर साथ रहतीं तो आलीजाह का भी मिजाज खुश रहता।"

"बेगमों में से कोई भी तो मुझे प्यार नहीं करती मेंहदी निसार, सभी को मैंने परख लिया है। वे केवल मेरी खुशामद करती हैं और अपनी तारीफ सुनना चाहती हैं। मुझसे सभी को कुछ न कुछ चाहिए लेकिन मुझे कोई भी कुछ देना नहीं चाहती। फिर मुझे देने लायक उनके पास है भी क्या ?"

मेंहदी निसार ने कहा था, "लेकिन मरियम बेगम साहबा ?"

"उससे मैं कुछ कहना नहीं चाहता, वह बड़ी अच्छी लड़की है। उसे तुम

जबर्दस्ती उसके शौहर से छीन कर लाये हो। वह दूसरी बेगमों की तरह नहीं है।"

"लेकिन वे तो आलीजाह को चाहती हैं।"

मिर्ज़ा ने कहा था, "उसके चाहने पर भी मैं उसे कैसे चाह सकता हूँ ? इसने मुझे रामप्रसाद का गाना सुनवाया और कुरान शरीफ पढ़ना सिखाया। इसी के कारण आज मैं सो सकता हूँ—यह तुम्हें मालूम है ? लेकिन उसे मैं कैसे तकलीफ दूँ ?"

"कैसी तकलीफ ?"

"तकलीफ नहीं है ? लड़ाई में जाना क्या आराम है ? उसे बहुत तकलीफ दी है मैंने ! मुझे नींद नहीं आती, यह देखकर वह महीनों मेरे साथ जागती रही है। जिससे मेरा भला हो, यही वह हमेशा सोचती रहती है।"

"क्या और कोई बेगम ऐसा नहीं सोचती ?"

मिर्ज़ा मेहदी निसार की बात सुनकर फीकी मुस्कान मुस्कराये थे। कहा था, "मेरी माँ ने भी क्या कभी मेरे बारे में कुछ सोचा है ?"

फिर जरा रुककर मिर्ज़ा मुहम्मद ने कहा था, "ये सब बातें छोड़ो निसार ! ये सब बातें सोचने से मेरा काम नहीं चलेगा। इस समय मुझे दूसरी बात सोचनी होगी। अच्छा कह, तुझे क्या लगता है, मीर जाफर मेरा नुकसान नहीं करेगा ? तेरा क्या ख्याल है ?"

"ऐसा क्यों कह रहे हैं आलीजाह ?"

"तरह-तरह की बातें कानों में आती हैं, इसीलिए।"

"कैसी बातें ?"

"बहुतों ने कहा है, मीर जाफर ने फिरंगियों से हाथ मिलाया है। मुझे हटाकर वह खुद नवाब बनना चाहता है।"

"क्या कहते हैं आलीजाह ? मीर जाफ़र साहब कभी ऐसा नहीं कर सकते हैं। मीर जाफ़र साहब को आप नहीं जानते क्या।"

"लेकिन जगत्सेठ जी इस तरह क्यों बात करते हैं ? क्या इधर मैंने किसी के साथ बुरा बर्ताव किया है ? हाँ, यह कह सकते हो कि कभी मैंने यह हुक्म दिया था कि मीर जाफर साहब जब दरबार में आयेंगे तो उन्हें ख्वाजा हादी को सलाम करना होगा, शायद इसी से वे बुरा मान गये।"

मेहदी निसार ने कहा, "इससे क्या होता है ? नवाबी करने पर तो सभी को खुश करना मुश्किल है।"

"सच कहते हो, तुमने मेरी बात समझी है। कहो, कितने लोगों को मैं खुश कर सकता हूँ ? पहले जरूर सोचा था कि नवाब बन जाने पर अपने यार-दोस्तों को अच्छे-अच्छे ओहदे दूँगा; लेकिन क्या ऐसा कर सका ? अपनी ही बात लो, मुझे इतना चाहते हो, तुम्हारी तनख्वाह भी बढ़ा नहीं पाया।"

मेंहदी निसार ने कहा, "मेरी बात जाने दीजिए आलीजाह, मुझे आपकी नेक निगाह मिली है बस, मुझे दौलत नहीं चाहिए।"

"तुम भले आदमी हो, इसीलिए ऐसा कह रहे हो। लेकिन मैं तो चाहता हूं, सबको खुश करना, लेकिन इतनी दौलत मेरे पास कहाँ है ? नवाब अलीवर्दी क्या कुछ छोड़ गये हैं ? बर्गियों से लड़ते-लड़ते उनकी सारी दौलत खत्म हो चुकी थी मैं उस समय समझता नहीं था, इसलिए उनसे लड़ता था। लेकिन जब नवाब बना तब सब कुछ समझ सका। अब समझ रहा हूं कि नवाब की बुराई करना आसान है, मसनद छीन लेना भी आसान है, लेकिन जो नवाब बनता है, वही समझता है नवाबी करने में मजा है!"

फिर ज़रा रुककर मिर्ज़ा मुहम्मद ने कहा था, "मैं यह नहीं कहता कि मुझमें कोई दोष नहीं है; मैं यह भी नहीं कहता कि मुझमें कोई पाप नहीं है; लेकिन नवाब बनने के बाद तो मैंने किसी का नुकसान नहीं किया ? फिर जो कुछ भी किया है, इसी मसनद के लिए किया है। शौकत जंग को मार डाला, लेकिन निजामत चलाने के लिए ऐसा तो करना ही पड़ेगा। घसीटी बेगम को कैद किया लेकिन ऐसा न करने पर क्या मेरी मसनद रहती ? जो मेरा नुकसान चाहे, क्या उसे भी सजा न दूँ ?"

"जरूर आलीजाह, जरूर उसको सजा दें।"

"छोड़ ये सब बातें ! अभी यह सब कहने का मौका नहीं है। पहले फिरंगियों को सजा दे लूं तब इन बातों का निबटारा करूँगा। मैंने नानी बेगम से भी कह दिया है कि पहले फिरंगियों को सजा दे लेने दो, फिर सभी की बात सुनूंगा। घसीटी बेगम गयी है, शौकत जंग गया है, अब फिरंगियों को खत्म कर अपनी लड़ाई खत्म करूंगा, फिर भी मीर जाफर को लेकर घबराता हूं।"

"नहीं आलीजाह, मीर जाफर साहब से आप बेकार डर रहे हैं। उन्होंने तो कुरान हाथ में लेकर क़सम खायी है।"

मिर्ज़ा मुहम्मद ने कहा, "मालूम है भाई, लेकिन रुपया बड़ा है या कुरान ?"

रास्ता चलते हुए हाथी की पीठ पर बैठे ये सब बातें हो रही थीं। आगे और पीछे नवाबी फौज थी। कतार बाँधे फौज चल रही थी। एक-एक गाँव पार करते ही सुनसान मैदान। कई कोस मैदान पार करके ही एकाध गाँव नजर आता। मेंहदी निसार को याद है बात करते-करते मिर्ज़ा मुहम्मद की पलकें बंद हो जाती थीं। इतने सिपाही, हजार-हजार गाँव और बंगाल-बिहार-उड़ीसा के नवाब के दोस्त मेंहदी निसार ! इसलिए मेंहदी निसार का रोबदाब भी कम नहीं था। फिर भी उसे लगा था, आज मुसीबत में पड़कर ही मिर्ज़ा इस तरह बात कर रहे हैं। फिर जब फिरंगियों से लड़ाई जीतकर लौटेंगे तब एक तरफ से सभी को बेइज्जत करेंगे। मेंहदी निसार के लिए इन नवाबों को जानना बाकी न था।

मेंहदी निसार ने कहा, "आप झूठमूठ शक कर रहे हैं आलीजाह, दौलत कभी कुरान से बड़ी हो सकती है ?"

"अरे भाई, हो सकता है ! महाराज नंदकुमार, मीर जाफर अली, राजा दुर्लभराम, जगत्सेठ जैसे लोगों के लिए रुपया अल्लाह से बढ़कर है। बस, अमीचंद

आदमी अच्छा है। वह गुरु नानक का भक्त है।"

"अमीचंद भला आदमी है?"

"हाँ, तुम लोग चाहे उसके बारे में कुछ भी कहो, लेकिन मैं कहता हूँ वह भला आदमी है।"

"कैसे समझा आलीजाह?"

"क्या अमीचंद अच्छा आदमी नहीं है? तुम्हारा क्या ख्याल है?"

मेंहदी निसार ने कहा, "आलीजाह की राय मेरी भी राय ही है। अगर कोई भला आदमी है तो बस अमीचन्द।"

मिर्जा ने कहा, "तुमने ठीक कहा है! मरियम बेगम ने भी अमीचंद के खिलाफ शिकायत की, लेकिन मैंने विश्वास नहीं किया। मैं सोच रहा हूँ, मुर्शिदाबाद लौटकर बादशाह के दफ्तर से अमीचंद के नाम सनद मँगा दूँगा।"

"यह बहुत ठीक रहेगा आलीजाह!"

"और देखो, मीर जाफर को मैं भगा दूँगा, एकदम बंगाल के बाहर भगा दूँगा। वही असल में बदमाश है! मैंने बहुत कुछ सोच रखा है। मरियम बेगम से भी कहा है, मुर्शिदाबाद छोड़कर मैं कलकत्ते में राजधानी बनाऊँगा। वहीं फिरंगियों के किले की मरम्मत कराकर अपना हरम बनाऊँगा।"

कितने ही सपना देख रखे थे मिर्जा ने! अपने ही मन में भविष्य का नक्शा भी तैयार ने खींच रखा था। पहले मीर जाफर भगाया जायेगा, उसके बाद राजा दुर्लभराम भगाया जायेगा, फिर यार लुत्फ लो! और जगत्सेठ? जगत्सेठ के बारे में भी मिर्जा मुहम्मद ने सोच रखा था।

"तुम यह सब किसी से कहना मत यार!"

"नहीं-नहीं, मैं किसी से क्यों कहूँगा आलीजाह? मैं भला नमकहरामी कर सकता हूँ?"

"यह मैं जानता हूँ। फिर भी होशियार किये दे रहा हूँ। होशियार रहना अच्छा है। सिपाहियों से कहूँगा, जगत्सेठ की दौलत लूट लो। अगर दिल्ली का बादशाह कुछ कहेगा तो उसे भी हिस्सा दे दूँगा, फिर बादशाह का भी मुँह बंद हो जायेगा। लेकिन इन सब बातों की किसी को भी कानों-कान खबर न हो।"

फ्रांसीसी फौज की तोप का गोला जब फिरंगियों की छावनी पर पड़ा तब मेंहदी निसार को नवाब की ये बातें याद आने लगीं।

फिर बशीर मियाँ की बातों से उसे होश हुआ।

बशीर मियाँ ने कहा, "चलिए जनाब, जल्दी कीजिए, नहीं तो मरियम बेगम का बजरा चल देगा।"

मेंहदी निसार को क्रोध आ गया।

कहा, "ठहर बेवकूफ, देख लूँ लड़ाई ठीक-ठीक हो रही है या नहीं!"

सभी कुछ पहले से निश्चित था। नवाब की तोपों के गोले आम के पेड़ों को...

डालियों से टकराने लगे। यह देखकर मेंहदी निसार ने फिर चुटकी बजायी। शाबाश मियाँ साहब, शाबाश!

यह कौन मियाँ साहब है, किस मियाँ साहब को मेंहदी निसार ने शाबाशी दी, यह वशीर मियाँ समझ न पाया। फिरंगियों की फौज अमराई की आड़ में है और नवाब की फौज खुले में।

वशीर मियाँ को डर लगा। उसने पूछ ही लिया, "फिरंगी लोग जीत पायेंगे न जनाब?"

"तू चुप रह! लड़ाई के वारे में तू क्या जाने?"

बहुत दिनों से शायद इस इलाके में कोई आया नहीं था। आम के बड़े-बड़े दरख्त सीना फुलाये खड़े थे। तोपों में लगी पीतल धूप पड़ने से चमक रही थी। मेंहदी निसार चलते-चलते भी बार-बार मुड़कर पीछे देख लेता था। नवाब शायद अभी तक अपने खेमे में सो रहा है। तुम सोते रहो नवाब मिर्जा मुहम्मद सिराजुद्दौला आलमगीर, सोये-सोये मजे से भविष्य का ख्वाब देखो! जागने के बाद तुम मीर जाफर को बंगाल, बिहार और उड़ीसा से निकाल देना। राजा दुर्लभराम, यार लुत्फ खाँ और यारजान को कत्ल करा देना। महताबचन्द जगतसेठ की दौलत जब्त कर तुम दिल्ली के शाहंशाह के साथ हिस्सा-बाँट कर लेना। आज अगर तुम्हारी नींद टूट जाये तो आलीजाह जो जी में आये करना! जब मीर जाफर नवाब बन जायेगा, तब मुझे यार कहकर पुकारने की हिम्मत तुम्हें न होगी। तब मैं मीर जाफर साहब की सनद पाकर दीवाने खालसा शरीफ मुहम्मद मेंहदी निसार खाँ साहब हो जाऊँगा। मेरे सामने आने पर तुम्हें तीन बार कोर्निश करनी पड़ेगी, वह भी अगर जिंदा रहोगे तब!

"क्या कहा?"

वशीर मियाँ ने कहा, "मैंने तो कुछ भी नहीं कहा हुजूर।"

"तूने नहीं कहा लेकिन लगता है जैसे किसी ने कुछ कहा।"

किसी ने कुछ भी नहीं कहा था। लेकिन फिर भी मेंहदी निसार को शक हो रहा था, जैसे किसी ने कुछ कहा है। हजारों सिपाही अपनी जान हथेली पर रखकर जूझ रहे थे। पैंतीस हजार पैदल सिपाहियों की फौज तलवार लिये ऊँचे पर एक ओर खड़ी थी। पन्द्रह हजार घुड़सवार और चालीस तोपों के धुएँ में सभी को ऐसा लगता है। नवाब सिराजुद्दौला को भी और मीरजाफर अली को भी। जो आज इस अदृश्य इंगित की उपेक्षा करते हैं, कल वे ही आश्चर्य-चकित हो जाते हैं। सिर्फ वे ही हैरान रह जाते हैं। उन्हीं को लगता है जैसे किसी ने कुछ कहा!

आसमान में पूरब की ओर अभी तक सुर्खी छायी थी। मेंहदी निसार ने एक बार आसमान की ओर देखकर कहा, "चल, वक्त ज्यादा नहीं है। फौरन वापस आना है।"

वशीर मियाँ आगे-आगे चल रहा था। मेंहदी निसार भी चलने लगा। ज्यादा दूर नहीं है। नवाब की छावनी को पार करने के बाद थोड़ी दूर चलकर दादपुर था। वशीर मियाँ ने दादपुर में नाव रख छोड़ी थी। उसी में बैठकर वशीर मियाँ ने मल्लाहों

ने कहा, "जरा जल्दी-जल्दी चलो, बड़ा जरूरी काम है !"

मेंहदी निसार की आँखों में अभी तक आसमान की सुर्खी तैर रही थी।

बशीर मियाँ ने दूर से ही दिखलाकर कहा, "वह देखिए !"

"मरियम बेगम उसी में है ?"

"जी हाँ हुजूर ! मैं तो उन्हें खोजते-खोजते पेरिन साहब के बगीचे में गया था। वहाँ पहुँचने पर सुना, उन लोगों ने मरियम बेगम साहबा को कैद कर लिया था, लेकिन बेगम साहबा ताला तोड़कर वहाँ से भाग निकली हैं।"

"फिर ?"

इसके बाद ढूँढ़ते-ढूँढ़ते हुजूर, यहीं त्रिवेणी घाट पर आया, और यहाँ आकर देखता क्या हूँ कि यह बजरा खड़ा है और अपना कान्त उसमें बैठा है। अँधेरे की वजह से वह मुझे नहीं देख सका।"

"कान्त कौन है ?"

"अरे वही जिसे मैंने निजामत के दफ्तर में नौकरी दिलायी थी। हरामी का बच्चा आज कल मरियम बेगम साहबा की बातों पर उठता-बैठता है। निजामत का काम भी नहीं करता।"

"काम नहीं करता तो उसकी नौकरी क्यों नहीं खत्म होती ?"

"हुजूर ! मरियम बेगम साहबा के चहेते की कौन नौकरी खत्म कर सकता है ? किसमें है इतना बूता ?"

सब सुनकर मेंहदी निसार साहब ने जैसे कान्त को जड़ से खत्म करने के पहले एक बार दम लिया। फिर कहा, "नवाब के लड़ाई से वापस आते ही उसे बरखास्त करना होगा।"

"लेकिन बजरे में बाहर वे लोग कौन हैं ?"

"जी, बजरे के मल्लाह होंगे, क्योंकि कान्त बाबू तो अन्दर मरियम बेगम साहबा के साथ महफ़िल गुलजार कर रहे होंगे !"

कहते-कहते नाव जाकर बजरे की दीवाल से आ भिड़ी। नाव के रुकते ही बशीर मियाँ उछलकर बजरे पर चढ़ने लगा।—"कान्त ! ओ कान्त !"

मेंहदी निसार पीछे-पीछे आ रहा था।

बशीर मियाँ ने कहा, "होशियार रहियेगा हुजूर ! मरियम बेगम साहबा छुरा रखती हैं।"

"धत् तेरे छुरे को !" कहकर मेंहदी निसार और भी आगे बढ़ आया।

मल्लाह पहले तो कौन है ? कौन है ? करके आगे बढ़े। इसके बाद निजामत का कोई अमीर होगा सोचकर रुक गये।

बशीर मियाँ ने झाँककर देखा, कोई भी नहीं था। मल्लाहों से पूछा, "बेगम

साहवा को कहाँ छुपा दिया है और वह कान्त वावू कहाँ चला गया ?"

वृन्दावन की समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

"वेगम साहवा तो यहाँ कोई भी नहीं है। कान्त नाम का भी यहाँ कोई नहीं है। यह तो छोटे सरकार का वजरा है।"

"छोटे सरकार कौन ? कहाँ के छोटे सरकार ?"

"जी, हतियागढ़ के जमींदार।"

सुनकर जैसे वशीर मियाँ का चेहरा उतर गया। मेंहदी निसार साहब को इतनी दूर लाकर इस तरह वेवकूफ वनना पड़ेगा, यह उसने भी नहीं सोचा था।

"लेकिन छोटे सरकार गये कहाँ ?"

"जरा वस्ती की ओर गये हैं, आने में देर होगी।"

वशीर मियाँ की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। उसने पूछा, "तुम लोग कहाँ से आ रहे हो ?"

वृन्दावन ने कहा, "छोटे सरकार मुर्शिदावाद गये थे वहीं से आ रहे हैं।"

मेंहदी निसार ने इतनी देर वाद पूछा, "छोटे सरकार कौन हैं ?"

वशीर मियाँ ने कहा, "हजूर ! छोटे सरकार हतियागढ़ के जमींदार हैं। डिही-दार रजा अली के इलाके के, इसी छोटे सरकार की रानी ही अपनी मरियम वेगम साहवा हैं।"

मेंहदी निसार की समझ में वात आ गयी। उसने कहा, "अच्छा, हम लोग यहीं वैठे हैं। छोटे सरकार शायद वीवी की खवर पाकर ही यहाँ आया है उसे पकड़ने पर मरियम वेगम को भी पकड़ा जा सकेगा।"

"यही ठीक है हजूर ! छोटे सरकार और जायेगा कहाँ ? उसे लौटकर वजरे पर आना ही पड़ेगा।"

मेंहदी निसार ने कहा, "लेकिन तूने क्या सचमुच मरियम वेगम को देखा था ?"

"कसम खुदा की हजूर ! मैंने इसी वजरे पर मरियम वेगम साहवा और कान्त को देखा था। क्या मैं हजूर के सामने झूठ वोल सकता हूँ !"

मेंहदी निसार ने कहा, "ठीक है, तू झूठ वोल रहा है या नहीं इस वात का पता अभी लगा जाता है।"

इतना कहकर मेंहदी निसार छोटे सरकार के पलंग पर जा वैठा। खिड़की के वीच से देखा, सूरज और भी साफ-साफ दिखलाई दे रहा था। मेंहदी निसार को एक वार लक्कावाग की याद आयी। फिर सोचा, वेकार में सोचने से क्या फायदा ? मीर जाफर साहव तो हैं ही। लक्कावाग की वात वाद में भी सोची जा सकती है। फिलहाल दीवाने खालसा शरीफ वनने के वाद मरियम वेगम की इज्जत कैसे ली जाय यही सोचना वेहतर रहेगा।



महाराज कृष्णचंद्र ने अपनी विष्णुमंगल की सभा उस दिन बड़ी जल्दी बरखास्त कर दी थी। यह बात सभी के कान में गयी। महाराज को आज कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। फिर भी गोपाल बाबू ने नहीं छोड़ा। एक के बाद एक चुटकुला सुनाते रहा था।

महाराज कृष्णचंद्र ने कहा था, "अब बस करो गोपाल बाबू! आज कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा है। सोने जाऊँगा।"

गोपाल बाबू ने कहा था, "महाराज, आपके तो पहले ही से दो पंख हैं लेकिन हम लोगों के तो एक ही है, हम लोग इतनी जल्दी कैसे सो सकते हैं?"

"पंख माने?"

"जी पंख माने पक्ष। माने महाराज की दो रानियाँ हैं न?"

इतनी देर बाद महाराज के चेहरे पर हँसी दिखाई दी। उन्होंने कहा, "गोपाल बाबू, दूसरी पत्नी का आनन्द ही तुमने देखा है, उससे हुआ कष्ट तुम नहीं समझ सकते। मुर्शिदाबाद के नवाब यह समझते होंगे, क्योंकि उनके हजार पंख हैं, हुनियागढ़ के छोटे सरकार समझते हैं, लेकिन उनके दो पंखों में से एक बेकार हो गया है।"

बात चल ही रही थी कि दीवान कालीकृष्ण अंदर आये।

महाराज ने कहा, "कहिए कालीकृष्ण जी, मक्काबाग की कोई खबर मिली?"

"जी नहीं, एक दूसरी ही खबर है।"

"कौन-सी?"

महाराज कृष्णचंद्र खबर सुनने के लिए उत्सुक हो उठे। दीवान जी का चेहरा देखकर समझ गये कि जरूर कोई खास खबर है। जल्दी से उठकर बाहर आये।

कालीकृष्ण ने धीरे से कहा, "हुनियागढ़ की दूसरी रानी साहबा आयी हैं।"

"दूसरी रानी साहबा? यहाँ?"

एकदम चौंक पड़े महाराज कृष्णचंद्र। पूछा, "कहाँ? कहाँ है? किसके साथ आयी है?"

महाराज कृष्णचंद्र को बहुत दिनों से ऐसा संदेह हो रहा था। मुर्शिदाबाद से उनको जैसी खबरें मिल रही थीं उनसे वे भी घबड़ा गये थे। नवाब के साथ फिरंगियों का झगड़ा दिनोंदिन जिस तरह बढ़ता जा रहा था, उससे उन्होंने समझ लिया था कि अब कोई उत्थान-पतन होकर रहेगा। लेकिन यह सब इतनी जल्दी हो आयेगा, यह वे समझ नहीं पाये थे। नवाब की फौज में भी उनका आदमी था। वे अपनी धर्मीदारी से

भाई अब मैं चलूँ ।"

कान्त ने भी नमस्कार किया, फिर कहा, "ठीक है, लेकिन दीवान जी, किसी को इस बात का पता भी न चले । छोटे सरकार को बुलाकर इन लोगों को उनके ही सुपुर्द कर दिया जाय ।"

इसके बाद कान्त फिर से बजरे पर आ गया । मल्लाह भी तैयार थे । कान्त ने कहा, "चलो, बजरा खोल दो ।"

लंगर खुलते ही छप-छप करता बजरा आगे बढ़ गया ।

●

लक्काबाग की अमराई में उस समय काफी उजाला था । फिर भी आसमान में बदली छायी थी । एक लाख आम के पेड़ थे लक्काबाग में । सभी पेड़ बड़े-बड़े । कतारों में पेड़ों का जमघट-सा था । जिसने यह बगीचा बनाया था वह जरूर शौकीन आदमी रहा होगा । इस समय पेड़ों में आम नहीं थे, सभी पककर झड़ गये थे । बैसाख-जेठ के महीनों में प्लासी गाँव के रहने वाले आकर इस बगीचे से कितने ही आम उठाकर ले जाते थे । यह भी जेठ का महीना था । लेकिन जो थोड़े-से आम फिर भी बचे थे, अब नहीं हैं । भागीरथी के किनारे नाव लगाकर व्यापारी लोग अपनी नावें आम से भर शहरों में और जिलों में ले जाते थे । इस समय लक्काबाग में आमों की बहार न थी । बस पत्तियाँ, हरी-हरी पत्तियाँ काली पड़कर मोटी हो गयी थीं ।

इसी बगीचे के पास नवाब अपने यार-दोस्तों के साथ कितनी ही बार शिकार खेलने आये थे । कितनी ही बार नवाब ने अपने यार-दोस्तों के साथ उस मकान में रात-रात भर महफिल गुलजार की थी । नवाब की छावनी से वह मकान दिखाई पड़ता था । इस समय उसी मकान में फिरंगी रह रहे थे ।

नवाब मिर्जा मुहम्मद ने खेमे की खिड़की में से उस तरफ देखा ।

रात को ही उस तरफ निगाह पड़ी थी । मेहदी निसार ने उसी मकान के बारे में कहा था ।

मेंहदी निसार ने कहा था, "हम और थोड़ा पहले आते तो उस मकान पर कब्जा जमा सकते थे आलीजाह !"

आलीजाह, आलीजाह, आलीजाह ! आलीजाह कहकर पुकारा जाना मिर्जा को बहुत पसंद आता था । बचपन से वे यही पुकार सुनने के अभ्यस्त थे । नाना जी को सभी इसी संबोधन से संबोधित करते थे । कब मैं इस तरह पुकारा जाऊँगा—मिर्जा की बहुत दिनों की यह आकांक्षा थी । लेकिन पंद्रह महीनों में ही सारी आकांक्षाएँ मिट गयीं । रात-रात भर जागना, दिन-दिन भर महफिल जमाना । सब हिसाब-किताब ठीक-ठीक मिल गया । मनुष्य के जीवन में आकांक्षाएँ भी कितनी रहती हैं ? फिर आकांक्षाएँ पूरी भी कितनी होती हैं ? कुरान पढ़ने के बाद से ये चिंताएँ दिमाग में आकर उथल-पुथल मचाती रहतीं । पहले नींद नहीं आती थी । उ[illegible] इसके लिए [illegible] बुलाया

बदला था। लेकिन कलिम्पोंग जेल से ही बहुत था—इस फ़ौजदाबाद की मदद से भी कोई बड़ी बात है! जिन लड़ों के बाद फतेहबाद का यह वतन को छूने की मिट्टी-पाँ, ऐसे नहीं जानता। क्या फतेहबाद पंजाब की जायदाद की हिफ़ाज़त करते थे? फतेहबाद की भी जायदाद की किसी हुकूमत की भी कभी नहीं जायदाद थी। लेकिन पंजाब के लिए ने तो अपनी बात कही नहीं थी! पहले केवल भी नहीं जानते थे, पंजाब की "इसी नहीं जानती थी। जिनके ये पंजाब के सब की बात की जायदाद भी नहीं चाहा। कहते थे बहुत, हमें मौत भी दो" हमें मौत भी शुरू दो! एक आदमी क्या किसी को खुश कर सकता है?

तुम्हारी बात याद पड़ती है पंजाब कलकत्ता! कितनी ही बार मैं तुम्हारे साथ लड़ाई में गया। तुम्हारे साथ काठियावाड़ गया, अहमदाबाद गया और लाहौर में भी गया। जब किसी तुम्हारे कौन कमाते लड़ते थे और तुम बैठे में बैठकर उनकी सलाह देते थे, मदद देते थे। कितनी बार डाँटते भी थे। कितनी बार गालियाँ भी देते थे। बाद के बाद किस्से याद पड़ते हैं। कभी-कभी तुम उन लोगों की खुशामद करते थे। तुम्हें ही तो मैंने सोचा था पंजाब कि लड़ाई में कोई लौटी नहीं जाती। तुम्हीं ने तो बताया था कि लड़ाई की जीत से सोचना की जीत मेल नहीं खाती। तुम्हीं ने तो बताया था कि इन्सान अगर साथ नहीं देगा तो मुल्क को किसी को बचा नहीं सकता। मैंने जो कुछ सीखा है, तुम्हीं से तो सीखा है। लेकिन तुमने भी तो कुछ नहीं सिखाया, यह सब कलिम्पोंग जेल ने सिखाया। आगे ही यह कामिल घर को पहुँचा दो, लेकिन हुकूमत के मुल्क कामिल कौन भी जानते हैं। काफ़िलों ने भी मैंने बहुत कुछ सीखा है सावन! अब अगर तुम कब्र से निकलकर मुझे देखो तो शायद पहचान भी न पाओगे। मैं बहुत बदल गया हूँ। तुम शायद नहीं जानते कि आजकल मैं कुरान भी पढ़ता हूँ। मैं तुमसे कहता हूँ कि इस ज़िन्दगी को मैं अगर फिर पाऊँगा! इस बार अगर सचमुच मैं कामिल की हैसियत से कौन मज़हबों में रहते हैं, तो भी उनके साथ रहूँगा। अब मैं उन पर ज़िम्मेदारी न करूँगा। उन पर भी नहीं, अपने फ़र्ज़-अदायगी पर भी नहीं! समझ गया हूँ कि कामिल होने से ही कोई कुछ नहीं होता और मुसलमान होने से ही कोई बड़ा नहीं होता। अब मैं समझ गया हूँ कि मुल्क के लिए इंसान नहीं, इंसान के लिए ही मुल्क है।

"मुबारक!"

"कौन? सिराज?"

शायद सिराज ने सोचा होगा कि मैं तो क्या हूँ या कर क्या हूँ। लेकिन सफ़र में सब ही क्या होगा, तो अब तुम जिन्दा रह जाते और यह बाहर? बदकिस्मत, मैंने तुम्हें भी अच्छी तरह से पहचान लिया है, मेरे दोस्त ने अगर तुम मेरी मदद नहीं करोगे तो मैं तुम्हारी मदद क्यों करने लगा? आज सब तुम्हें इसलिए लिए लड़ाई में मरने के लिए सिपाही बनकर गये थे तो तुम क्या ही जान चुके ही रहे थे। मैं तुम्हें देख चुका, सिर्फ़ तुम्हें ही नहीं, सबको भी देख चुका। इस बार बंगाल के सिपाहियों को क्या

हो सकता है, कोई भी न आया हो, तब क्या हुआ ? क्या महज वहम था ? बाहर की ओर देखते-देखते मिर्जा मुहम्मद ने फिर से मुँह में सटक लगायी। लेकिन तभी अचानक लगा जैसे हुक्का ठंडा पड़ गया था। नियामत तो जरा देर पहले ही हुक्का गरम कर चुका था। फिर यह कैसे ठंडा पड़ गया ? मिर्जा मुहम्मद आहिस्ते-आहिस्ते कश खींचने लगे।

"कौन है ?"

"कौन है ? कौन है ?" चिल्लाते हुए चार-पाँच खिदमतगार भागते आ रहे थे। नवाब का मिजाज विगड़ गया तो उनमें से किसी की गर्दन न बचेगी।

"मेरे हुक्के की चिलम कहाँ गयी ?"

सचमुच सभी लोग हैरान हो गये थे। थोड़ी देर पहले नियामत चिलम भरकर ले आया था। अब वह वहाँ नहीं थी। कुछ लोग कहने लगे, नवाब के आगे से उनके हुक्के की चिलम चुराने की हिम्मत किसमें हो सकती है ? इसी चिलम में एक दिन नवाब मुर्शिद कुली खाँ, शुजाउद्दीन, सरफराज खाँ और अलीवर्दी खाँ ने तम्बाकू पिया है। इतने दिनों से चला आया उत्तराधिकार जैसे आज सिराजुद्दौला के पास आकर लुप्त हो गया। सारे खिदमतगार डर के मारे काँप रहे थे।

मिर्जा मुहम्मद के हाथ में जितनी ताकत थी उससे उन्होंने अपनी गंगा-जमुनी को उठाकर फेंक दिया।

"हट जाओ मेरे सामने से !"

सारे खिदमतगार डरकर भाग गये। नवाब अपने विस्तर पर लेट गये।

"तुम लोग क्या मुझे जिन्दा ही मार डालना चाहते हो ? तुम लोग क्या मुझे जीते जी कब्र में गाड़ देना चाहते हो ?"

नवाब जैसे मन ही मन बड़बड़ाने लगे। शायद इसी का नाम मसनद है। इसी मसनद के लिए उनकी यह हालत हुई है। इंसान का विधाता अगर इतिहास है तो वह इतिहास-विधाता भी इंसान की तरह एक बार उठकर खड़ा होता है, चलता है और फिर सो जाता है। इंसान की ही तरह जागने से पहले वह एक बार करवट बदलकर सोता है। क्या इतिहास की नजर में तब देश, काल, राजा, नवाब और बादशाह सभी एकाकार हो जाते हैं। नवाब को शायद मालूम नहीं था कि इतने दिनों बाद फिर इतिहास के करवट बदलने का वक्त हो गया है, इतने दिनों बाद उसे फिर कैफियत देनी पड़ेगी, सबके सामने उसे हाथ जोड़कर कहना होगा—तुम मुझे न मारो, मुझे कुछ दिन के लिए और जीने दो ! मुझे मसनद नहीं चाहिए, मुर्शिदाबाद नहीं चाहिए, चेहल-सुतून नहीं चाहिए, मुझे इज्जत, मुहब्बत, प्यार कुछ भी नहीं चाहिए, मुझे सिर्फ जीने दो ! मैं एक अदना इंसान की तरह सिर्फ जिंदा रहना चाहता हूँ।

उधर फिरंगी फौज की तरफ से एक गोला आकर अचानक मीरमदन की फौज पर गिरा। साथ ही एक भयंकर आवाज हुई और उस आवाज से नवाब की खामोश रुलाई जैसे टूटकर टुकड़े-टुकड़े हो गयी।

●

मुल्लाहाटी के पास बजरा आते ही मराली ने बजरा रुकवाने को कहा।

कान्त ने कहा, "यह तो मुल्लाहाटी है। रात के समय यहाँ उतरोगी?"

मराली ने कहा, "जो भी हो, मुझे यही उतार दो।"

"लेकिन तुम्हें अकेली कैसे छोड़ सकता हूँ? आखिर तुम जाओगी कहाँ?"

मराली ने कहा, "जहाँ भी मेरा जी चाहेगा जाऊँगी, तुम्हें इससे क्या? मरूँ या जिंदा रहूँ तुम्हें परेशान होने की जरूरत नहीं है।" इसके बाद उसने घुद मल्लाहों की ओर देखकर कहा, "बजरा यहीं रोक दो, मुझे उतरना है।"

अचानक सभी सब ने देखा, एक दूसरा बजरा तेजी से उसी ओर आ रहा था।

कान्त ने कहा, "मराली, मेरी बात सुनो, इस तरह नासमझ न बनो। बाद में पता नहीं क्या होगा? फिर तुम्हें बचा भी पाऊँगा या नहीं कौन जाने?"

लेकिन मराली नहीं मानी। बजरा घाट पर लगते ही कान्त ने जोर से मराली का हाथ पकड़ लिया।

मराली ने एक झटका देकर अपना हाथ छुड़ाते हुये कहा, "छोड़ो, तुममें इतनी भी हिम्मत नहीं है? तुम क्या आदमी हो? तुम जानवर से भी गये-बीते हो। अगर इतना ही डर था तो पहले से क्यों नहीं कहा, तब चोरी-छुपे मिलने क्यों आते थे?"

"मराली!"

लेकिन मराली तब तक एक छलांग मारकर घाट पर उतर चुकी थी।

उधर जैसे अँधेरे की छाती चीरता हुआ वह दूसरा बजरा बढ़ा आ रहा था।

कान्त ने फिर पुकारा, "मराली! मराली!"

कोई-कोई जमाना ऐसा आता है जब किसी देश में एक ही ऐतिहासिक कारण से जाति और राष्ट्र का पतन नजर आता है। जो जाति हमेशा के लिए खो जाती है वह भी एक दिन में ही खत्म नहीं होती। उसके खत्म होने से पहले उसके समाज, उसकी राजनीति और धर्म-नीति में सड़न पैदा होती है। धर्म से लोगों का विश्वास शिथिल हो जाता है, देशवासी तब आत्मकेन्द्रित होकर खुदगर्जी और स्वार्थ के नशे में डूब जाते हैं। ईमानदारी, भक्ति, स्नेह और प्यार उनके लिए घृणा का रूप ले लेते हैं। इंसानियत जैसे उनके लिए मखौल रह जाती है। तुम हिन्दू हो या मुसलमान, दयालु हो या निष्ठुर, स्वार्थी हो या त्यागी, मुझे इससे कोई मतलब नहीं है। तुम्हारे ओहदे के मुताबिक हम तुम्हारी कदम-बोसी करेंगे। तुम अगर उमराव हो या नवाब के अजीज हो तो वही तुम्हारी सबसे बड़ी सनद है।

जब राष्ट्र-विप्लव होता है तब क्या सिर्फ राजा का ही उत्थान-पतन होता है? राज्य के छोटे-बड़े हर इंसान का उस दौरान उत्थान-पतन होता है। इतिहास के साथ-

साथ भूगोल का भी हेर-फेर होता है। एक उठता है तो दूसरा गिरता है। इसी
कहते हैं राष्ट्र-विप्लव। नये सिरे से नक्शे में रंग भरा जाता है। पुराना जनपद ध्व
हो जाता है और उसकी जगह नया जनपद जन्म लेता है। पुरातन के श्मशान में फि
नये सिरे से भविष्यत् के ध्वंस की चिता सजायी जाती है।

उद्धवदास कहता था, "तुम लोग नहीं जानते कि तुम लोगों ने कितनी ब
गलती की है।"

लोग पूछते, "हमने कौन-सी गलती की है?"

उद्धवदास कहता, "रुपये के लिए तुम लोग हरि का नाम भूल गये हो।"

लोग कहते, "अरे, तुम्हारे हरि का नाम लेने से क्या पेट भरेगा? इससे बल्कि नवाब का नाम लेना अच्छा है, कम से कम खिताब तो मिलेगा।"

"नहीं भाई, खिताब से कुछ नहीं होता। हरि के नाम की महिमा ही कु
और है। उसके बराबर कुछ भी नहीं है। लो, मैं तुम्हें हरिनाम की महिमा सुना
हूँ—

परमाणु तुल्य सूक्ष्म, हिंसक तुल्य मूर्ख,
भिक्षा तुल्य दुःख।
साधन तुल्य कर्म, दया तुल्य धर्म,
मानव तुल्य जन्म॥
माहेन्द्र तुल्य योग, स्वर्ग तुल्य भोग,
कुष्ठ तुल्य रोग।
वट तुल्य छाया, संतान तुल्य माया,
कार्तिक तुल्य काया॥
दैव तुल्य बल, आम्र तुल्य फल
गंगा तुल्य जल॥
पूर्णिमा तुल्य रात, ब्राह्मण तुल्य जात।
मृदंग तुल्य वाद्य, घृत तुल्य खाद्य॥
दूर्वा तुल्य घास, अग्रहायण तुल्य मास।
सर्वस्व तुल्य पन, विद्या तुल्य धन॥
दाता तुल्य यश, गान तुल्य रस।
उद्धार तुल्य जय, मरण तुल्य भय॥
गोकुल तुल्य धाम, वैसे हरि तुल्य नाम॥"

जाति के अवक्षय के उस दौरान में शायद उद्धवदास ही अपना विवे
रख पाया था। कम से कम उसके 'बेगम मेरी विश्वास' काव्य को पढ़कर तो य
में आता है। जब मुंशी नवकृष्ण, नन्दकुमार, अमीचन्द और जगत्सेठ यह
गांव के साधारण लोग भी खुदगर्जी और पाप के नशे में डुबकियां लगा र
वही एक ऐसा आदमी था जिसने कुछ भी नहीं चाहा।

लेकिन मेंहदी निसार को यह गूढ़ तत्त्व नहीं मालूम था। अगर वह जानता होता तो सन् १७५७ के जून महीने को २३ तारीख को वह राष्ट्र-विलम्ब होता ही क्यों ? इतिहास कैसे सोते-सोते करवट बदलता ? कैसे वह जाग उठता ?

उस दिन त्रिवेणी के घाट पर आकर जब मरियम बेगम का पता नहीं लगा तो ...दी निसार गुस्से से आग-बबूला हो गया। लेकिन सिर्फ गुस्सा होने से कुछ नहीं होता, यह बात मेहदी निसार अच्छी तरह जानता था। इसीलिए वह चुपचाप छोटे सरकार के बिस्तरे पर आ लेटा था। बशीर मियाँ बैठा-बैठा मल्लाहों के साथ बीड़ी फूंक रहा था।

वापस आने पर छोटे सरकार हैरान रह गये। उन्होंने पूछा, "तुम कौन हो ?"

कहीं किसी को पता न लग जाय इसीलिए त्रिवेणी के घाट पर बजरा लगवाकर छोटे सरकार पैदल ही कलकत्ते गये थे। इस तरह वे कई बार कलकत्ते जा चुके थे। लेकिन जब बुरे दिन आते हैं तो शिकायत करने पर भी उससे दूर हटने का कोई चारा नहीं रहता। छोटे सरकार को मालूम था कि अब बड़े सरकार का जमाना नहीं रहा। आज के नवाब का छोटे से छोटा अहलकार भी जमीदारों पर रोब गांठता है। कानून और इन्साफ जैसी कोई चीज रह नहीं गयी।

बशीर मियाँ उठ खड़ा हुआ। उसने वहीं से चिल्लाकर मेहदी निसार को खबर दी, "हुजूर ! छोटे सरकार आ गये हैं।"

हतियागढ़ के छोटे सरकार हिरण्यनारायण राय को अपनी जिन्दगी में बहुत ...र अपमान सहना पड़ा था। मुर्शिदाबाद की मसनद पर नये नवाब के बैठने से वह जैसे और भी बढ़ गया था। लेकिन उस दिन जो कुछ हुआ उसकी जैसे कोई तुलना नहीं हो सकती।

अन्दर से जो आदमी निकलकर आया वह मेहदी निसार था, इस बात का जैसे छोटे सरकार को यकीन नहीं हो रहा था।

लेकिन छोटे सरकार के नसीब में शायद और भी तकलीफ झेलना लिखा था।

"कहाँ है ? किसकी बात कर रहा है रे ?"

छोटे सरकार ने कहा, "वृन्दावन, मेरे बजरे में इन्हें किसने घुसने दिया, कौन हैं ये लोग ?"

वृन्दावन खड़ा थर-थर काँप रहा था। उसके मुँह से कोई जवाब न निकला। अठारहवीं सदी के बीचों-बीच जब इतिहास एक संधिस्थल में आकर खड़ा हो गया था, ठीक उसी समय छोटे सरकार ने मेहदी निसार को पहचाना। साथही साथ मेहदी निसार की नजरों का रुख देखकर वे समझ गये कि उन्हें एक बार फिर बेइन्साफी और बेईमानी का मुकाबला करना पड़ेगा।

तुम अत्याचारी हो सकते हो, तुम इंसानियत और कानून को भूल सकते हो, लेकिन मैं अपनी हिम्मत से, अपने मनोबल से तुम्हें हराऊँगा। आज मेरी दुर्दशा के कारण सिर्फ तुम ही हो। तुममें पाशविक शक्ति अधिक हो सकती है, लेकि... ...वीर्य

नहीं हूं। तुम अगर मुझे चोट पहुँचाओगे तो वही चोट दूने वजन के साथ तुम्हारे सीने में जा लगेगी। अगर मेरी अनिवार्य नियति मृत्यु है, तो उससे पहले मैं तुम्हारे साथ शक्ति-परीक्षा करूँगा!

"वृन्दावन, इन लोगों को वजरे से निकाल दे! यह मेरा वजरा है।"

वृन्दावन को कही गयी बातें समझने लायक बुद्धि और चाहे किसी में न रही, लेकिन मेंहदी निसार में थी। उसने बड़ी नर्मी से कहा, "आप इतने खफा क्यों हो रहे हैं जमींदार साहब! हम लोग तो आपके मेहमान हैं।"

छोटे सरकार को जैसे बड़ा अजीब लग रहा था। मेंहदी निसार जैसे आदमी का इतनी नर्मी से बातें करना अजीब बात थी।

"निजामत के काम से इधर आया था। घाट पर कोई नाव न मिली। मुझे सिर्फ उस पार जाना है। आप शायद मुझे पहचान नहीं पा रहे हैं। मुझे मेंहदी निसार कहते हैं।"

मेंहदी निसार का नाम सुनकर भी छोटे सरकार के भाव में कोई अन्तर नहीं आया। उन्होंने आहिस्ते-आहिस्ते अन्दर जाते हुए वृन्दावन से कहा, "वजरा छोड़ दे।"

मेंहदी निसार भी पीछे-पीछे अन्दर आया। छोटे सरकार के पास बैठकर उसने खीसें निपोरते हुए कहा, "जमींदार साहब! मरियम बेगम को कहाँ छोड़ आये?"

"कौन मरियम बेगम?"

"आप मरियम बेगम को नहीं जानते?"

अचानक जैसे छोटे सरकार को बिच्छू ने डंक मारा।

मेंहदी निसार इस बार जोर का ठहाका लगाकर हँस पड़ा।

"देखिए, आप फिर खफा हो रहे हैं! मुझसे छिपाने की कोशिश न कीजिए, उसका अंजाम अच्छा न होगा।"

छोटे सरकार ने कहा, "लेकिन मरियम बेगम तो मेरी बीबी है, उसे आपने कहाँ देखा?"

"वाह, जमींदार साहब! मरियम बेगम साहबा को छुपाकर उलटे मुझसे ही पूछ रहे हैं? बताइए, कहाँ छोड़ आये हैं।"

छोटे सरकार गुस्से से चीख पड़े, "शैतान!"

लेकिन मेंहदी निसार गुस्सा होना नहीं जानता था। उसने आवाज दी, "बशीर मियाँ!"

बशीर मियाँ अन्दर आया।

"तूने मरियम बेगम साहबा को इसी बजरे में देखा था न?"

"जी हाँ हजूर! मैंने देखा था मरियम बेगम साहबा बजरे के अन्दर बैठी थीं और बाहर कान्त बैठा था।"

"कान्त कौन?"

"वह निजामत का जासूस है।"

छोटे सरकार अपने को अब और न रोक पाये वहीं से चिल्ला पड़े, "वृन्दावन, जरा रोक दो !"

"चुप रहिए !"

मेंहदी निसार गुर्रा उठा और साथ ही साथ छोटे सरकार ने देखा, मेंहदी निसार का चेहरा अचानक बड़ा खोफनाक हो गया है। छोटे सरकार भी गुस्से के मारे आग-बबूला हो उठे। मेरे ही सामने मेरी पत्नी को इस तरह से कोई बोले और मैं कुछ भी न कहूँ ? उन्होंने कड़ी आवाज में कहा, "बतलाइए, मेरी बीवी को आप लोगों ने कहाँ रखा है ?"

"हम लोगो ने तो उन्हे इस बजरे पर ही देखा था। अब आप बतलाइए कि उन्हे कहाँ छुपा आये हैं ?"

छोटे सरकार ने तेज आवाज मे कहा, "ठीक है। अगर मैंने अपनी पत्नी को छुपा ही रखा है तो वही सही। मैं अपनी पत्नी को जहाँ चाहूँगा, रखूँगा।"

"लेकिन यह क्यों भूल जाते हैं कि मरियम बेगम अब आपकी औरत नहीं है। वह नवाब बहादुर की बेगम है जमींदार साहब !"

और साथ ही साथ मेंहदी निसार के गाल पर एक बड़े जोर का तमाचा आकर पड़ा। मेंहदी निसार को झटका सँभालते कुछ वक्त तो जरूर लगा लेकिन उसने सँभलने के बाद बशीर मियाँ को बुलाया, "बशीर, जाकर बजरे की रस्सी तो ले आ ! मैं इस बदतमीज को मजा चखाता हूँ।"

बशीर मियाँ जाकर फौरन रस्सी ले आया। छोटे सरकार ने रोकने की कोशिश की लेकिन उससे पहले ही दोनों ने मिलकर उन्हे अच्छी तरह से बाँध दिया।

"साले को और जोर से बांध ! इस साले जमींदार के बच्चे को अगर कुत्तो से न नुचवाया तो मेरा नाम मेंहदी निसार नही !"

वृन्दावन खड़ा-खड़ा सब देख रहा था। सारे मल्लाह भी देख रहे थे। इतनी देर बाद मेंहदी निसार की नजर उन लोगो पर पड़ी। उसने कहा, "मुर्शिदाबाद पहुँचकर इन लोगो को भी कुत्तों से न नुचवाया तो मेरा नाम मेंहदी निसार नही। जोर से चला ! और जोर से !"

डर के मारे सभी मल्लाह जोर से डाँड़ चलाने लगे। छोटे सरकार अपने बिस्तरे पर हाथ-पाँव बँधे पड़े थे। बशीर मियाँ ने उनके मुँह में कपड़ा ठूँस दिया था जिससे वे बोल भी नहीं सकते थे।

●

लक्कावाग की चहारदीवारी पर खड़ा कर्नल क्लाइव चारों ओर देख रहा था। एक जमाने में नवाब सिराजुद्दौला यहाँ पर शिकार खेलने के लिए आया करते थे। नवाब ने कितनी ही बार इस जगह को गुलजार किया था। तब उसने सोचा भी न था कि एक दिन यही पर फिरंगियो के साथ लड़ने आना पड़ेगा।

अचानक तभी फ्लेचर आ पहुँचा।

'एनी न्यूज ? कोई खबर ?"

"अब ठीक है कर्नल !"

"मीर जाफर से मुलाकात हुई ?"

फ्लेचर ने कहा, "नहीं, मीर जाफर से नहीं मिल पाया। सिर्फ नवाब के की खबर मिली है। बड़ी गड़बड़ो चल रही है।"

"क्यों ?"

"नवाब के पर्सनल स्टाफ के लोग भी उसके अगेन्स्ट हो गये हैं।"

"कैसे पता लगा ?"

फ्लेचर ने कहा, "नवाब के हुक्के की सोने की चिलम किसी ने चुरा ली है नवाब ने सबको बेंत से मारने का हुक्म दिया है।"

"फिर ?"

"स्टाफ के लोग रिवोल्ट करने की सोच रहे हैं।"

"कब रिवोल्ट करेंगे ?"

"यह तो नहीं कह सकता सर; उन लोगों का कहना है कि वे लोग इस नवाब की नौकरी नहीं करेंगे।"

"ठीक है, अब कोई न्यूज मिले तो इमीडिएटली मुझे पहुँचा देना।"

फ्लेचर चला गया। अचानक तभी फ्रेंच आर्मी की ओर से एक तोप गरज उठी। गोला आकर क्लाइव से जरा दूर पर गिरा। लेसिंग्टन क्लाइव के पास ही खड़ा था। आवाज के साथ ही वह दोनों हाथों से कान ढँकने जा रहा था। लेकिन उससे पहले ही गोले का एक टुकड़ा लगने से वह गिर पड़ा।

साथ ही साथ क्लाइव ने चीखकर कहा, "बटालियन ! फायर !"

उसके बाद ही चारों ओर जोर का हल्ला मच गया। लोग इधर-उधर दौड़ रहे थे। जरा देर के लिए फ्रेंच आर्मी ने गोलाबारी रोक दी। मेजर आयरकूट दौड़ा-दौड़ा आया।

"कर्नल कहाँ है ? ह्वेयर इज कर्नल ?"

लेकिन कोई भी नहीं बतला पा रहा था कि कर्नल कहाँ गया है।

आयर कूट हर एक से पूछ रहा था, "ह्वेयर इज कर्नल ? हैव यू सीन कर्नल?"

नवाब की इतनी बड़ी फौज का मुकाबला करना हम लोगों के हक में अच्छा न होगा। हम लोग पिस जायेंगे।" आयरकूट घबड़ाकर बड़बड़ाने लगा।

कर्नल उस समय लेसिंग्टन की डेड बॉडी के पास खड़ा था। लेसिंग्टन की डेड बॉडी को स्ट्रेचर पर लिटाकर अन्दर ले जाया जा रहा था।

"तुम सब चले जाओ। बी ऑफ यू ऑल !"

सब लोग वहाँ से चले गये। क्लाइव अकेला खड़ा डेड बॉडी की ओर देखने लगा। तुम भी छः रुपये महीने के राइटर थे। मैंने तुम्हें प्रोमोशन देने का वर्ड दिया

था। तुमने मेरे लिए बहुत कुछ किया। मेरे कहने से तुमने एडमिरल वाटसन का जाली दस्तखत तक कर दिया। लेकिन अब तुम मेरे कन्ट्रोल के बाहर चले गये हो, फिर भी मैं अपनी बात रखूंगा। मैं तुम्हें प्रोमोशन दूंगा। पॉस्थूमस प्रोमोशन!

"कर्नल!"

आयरकूट कमरे में आकर हैरान रह गया। क्लाइव की आँखें भरी हुई थीं!

आयरकूट जैसे आया था वैसे ही वापस चला गया। फ्रेंच जनरल लॉ फौज लेकर प्लासी की ओर आ रहा है। आयरकूट यही खबर देने आया था लेकिन क्लाइव की आँखों में आँसू देखकर उसका सारा मिलिटरी डिसिप्लीन जैसे चूर-चूर हो गया था।

क्लाइव लेसिंग्टन की मृत-देह के सामने खड़े होकर अपनी छाती पर दोनों हाथों से क्रॉस बनाते हुए कह रहा था—आमीन...



मेंहदी निसार और बशीर मियाँ बजरे में बाहर आकर बैठे थे। वृन्दावन वगैरह जोर-जोर से डाँड़ चला रहे थे। हाथ-पाँव बंधी हालत में छोटे सरकार अंदर पड़े थे।

अचानक बशीर मियाँ चिल्ला उठा, "हुजूर! वह देखिए।"

मेंहदी निसार ने पूछा, "कहाँ? हम लोग किस जगह हैं?"

"हुजूर, यह मुल्लाहाटी है। उधर देखिए, एक औरत बजरे से कूद रही है।"

मेंहदी निसार ने भी देखा। सचमुच मुल्लाहाटी के घाट पर बजरा लगा था और उसमें से एक औरत घाट पर कूदी।

"वह देखिए हुजूर, पीछे-पीछे एक आदमी भी कूद रहा है।"

बशीर मियाँ ने मल्लाहों के पास जाकर कहा, "जरा डाँड़ चला! बजरा घाट पर लगा दे।"

पास आते ही बशीर मियाँ पहचान गया। बोला, "अरे, यही तो मरियम बेगम साहबा हैं। वह देखिए हुजूर, अपना कान्त बाबू खड़ा है।"

नाम सुनकर मेंहदी निसार को भी हैरानी हो रही थी। या खुदा! मरियम बेगम साहबा यहाँ! उसने बशीर मियाँ से कहा, "जा, जल्दी से दोनों को पकड़ ला!"

हुक्म मिलते ही बशीर मियाँ फौरन कूदकर घाट पर जा पहुँचा। मरियम बेगम और कान्त भी वहीं थे। बशीर मियाँ ने झट से मराली का हाथ पकड़ लिया।

बजरे पर खड़ा मेंहदी निसार कह रहा था, "इधर ले आ!"

और आश्चर्य! मराली ने कोई विरोध नहीं किया। लेकिन कान्त चुप न रह सका। उसने कहा, "यह क्या कर रहा है? छोड़ इन्हें। जानता नहीं, ये मरियम बेगम साहबा हैं।"

कहकर कान्त बशीर मियाँ को पकड़ने के लिए बढ़ा लेकिन मराली ने कहा.

रहने दो, इन लोगों को जो करना है करने दो।"

मेंहदी निसार बजरे पर खड़ा-खड़ा सब देख रहा था। उसने वहीं से चिल्ला-कर कहा, "बशीर, उसे भी पकड़ ले!"

पास-पास दोनों बजरे लगे थे। इतने अँधेरे में बशीर मियाँ ने इन दोनों को कैसे पहचान लिया? सिर्फ मेंहदी निसार होता तो शायद यह काम न बन पाता। इसी वजह से निजामत के काम के लिए बशीर मियाँ जैसे लोगों की जरूरत पड़ती है। जैसे नाम के लिए कोतवाल, काजी और मीर बख्शी वगैरह सभी होते हैं लेकिन असल में निजामत बशीर मियाँ जैसे लोग ही चलाते हैं।

दूसरे बजरे में पड़े छोटे सरकार को कुछ भी मालूम नहीं हो पा रहा था। इतनी देर बाद पता लगा कि बाहर कुछ गड़बड़ हो रही है। जैसे कोई नया शिकार मेंहदी निसार के जाल में फँसा है। उन लोगों के लिए दोनों बजरे आगे-पीछे चल रहे थे। एक बार छोटे सरकार के जी में आया कि वृन्दावन को जोर से पुकारें। लेकिन फिर कुछ सोचकर चुप रह गये।

मेंहदी निसार ने एक बार पीछे मुड़कर देखा लेकिन कुछ कहा नहीं। एक बजरे की निगरानी मेंहदी निसार कर रहा था और दूसरे बजरे पर बशीर मियाँ तैनात था। अन्दर हाथ-पाँव बँधी हालत में मरियम बेगम पड़ी थी और बाहर कान्त पड़ा था।

कान्त ने थोड़ी देर बाद कहा, "बशीर, तू भले ही मुझे न छोड़, मरियम बेगम साहबा को छोड़ दे। भगवान तेरा भला करेंगे।"

बशीर मियाँ ने कहा, "चुप रहो, पास में ही मेंहदी निसार साहब हैं, सुन लेंगे।"

कान्त ने इस बार बहुत ही धीमी आवाज में कहा, "मुझे जो चाहे सजा दे ले, लेकिन मरियम बेगम साहबा को छोड़ दे। मैं तेरे पैरों पड़ता हूँ।"

बशीर मियाँ ने मुस्कराते हुए पूछा, "क्यों रे, तू मरियम बेगम साहबा के लिए इतना परेशान क्यों रहता है? उससे मुहब्बत करता है क्या? दोनों भागकर कहाँ जा रहे थे?"

कान्त ने कहा, "कसम से बशीर! हमारा ऐसा कोई मतलब नहीं था।"

"तब चेहल-सुतून से मरियम बेगम साहबा को भगाकर क्यों लाया? मैं मरियम बेगम साहबा के लिए दुनिया भर की खाक छानता फिर रहा हूँ और तूने मेरी आँखों में ही धूल झोंकी! सचमुच बतला, कहाँ जा रहा था। सच बोलेगा तो छोड़ दूँगा।"

कान्त ने कहा, "नहीं, मुझे न छोड़, तू मरियम बेगम साहबा को छोड़ दे।"

"बतलायेगा नहीं तो मैं मरियम बेगम साहबा को भी छोड़ने वाला नहीं हूँ।"

कान्त ने कहा, "तू जो माँगेगा मैं वही दूँगा। जितनी अशर्फियाँ कहेगा दूँगा।"

अशर्फियों का नाम सुनकर बशीर मियाँ के मुँह में पानी भर आया।

"अशर्फियाँ कहाँ से लायेगा?"

"इससे तुझे क्या ? तू अशर्फियाँ ले लेना, मैं चाहे जहाँ से भी लाकर दूँ।"

सुनकर बशीर मियाँ को लार टपकने लगी। मल्लाह जोर-जोर से डाँड़ चला रहे थे। बशीर मियाँ ने एक बार उन लोगों की ओर देखा फिर कान्त के और नजदीक आकर बैठ गया।

"सच बता, तू अशर्फियाँ कहाँ से लायेगा ?"

कान्त ने कहा, "तू मेरा पुराना दोस्त है, तेरी बात पर ही निजामत की नौकरी करने आया, तुझसे क्या झूठ बोल सकता हूँ ?"

"कितनी देगा ?"

"तू जितनी माँगेगा।"

बशीर मियाँ ने और भी पास आकर कहा, "तू मेरा जिगरी दोस्त है, लेकिन भाई, आजकल बड़ा तंग हूँ। रोज मेरी दोनों बीवियाँ नयी-नयी फरमाइशें करती रहती हैं और साली निजामत की इस नौकरी में मिलता ही क्या है ? तू तो जानता ही है कि मैं निजामत के लिए कितनी कड़ी मेहनत करता हूँ। मेहदी निसार जो नवाब का दोस्त बनता है, नमकहरामी करता है ! अब यह निजामत ज्यादा दिन नहीं चलेगी।"

"निजामत क्यों नहीं चलेगी ?"

बशीर मियाँ ने कहा, "इतनी जोर से न बोल, साला सुन लेगा ! लबकाबाग में लड़ाई छिड़ गयी है। इसी लड़ाई में फैसला हो जायेगा।"

"किस बात का फैसला ?"

"यह सब तुझे नहीं बतलाऊँगा, बात खुल जायेगी। साला मेहदी निसार बैठे-बैठे यही सब तो सोच रहा है। उस बजरे में हतियागढ़ के राजा साहब हैं और इस बजरे में उनकी औरत है। राजा साहब को पता भी नहीं है कि हम लोग उनकी बीवी को पकड़कर ले जा रहे हैं।"

"छोटे सरकार ! उस बजरे में क्या छोटे सरकार हैं ?"

बशीर मियाँ ने कान्त के मुँह पर हाथ रखते हुए कहा, "फिर चिल्ला रहा है !"

रास्ते भर बशीर मियाँ मेहदी निसार को गालियाँ देता रहा। कान्त को बड़ा अजीब लग रहा था। सब-के-सब नवाब के खिलाफ हैं। इस असलियत के पीछे कैसी साजिश ! क्या कहीं भी सुख नहीं है ? लेकिन यह मेहदी निसार जो छोटे सरकार और मराली को ले जा रहा है, इन लोगों का आखिर क्या करेगा ? जब नवाब नहीं हैं तो इन्हें सजा कौन देगा ?

बशीर मियाँ ने कहा, "थोड़ी देर और तकलीफ सह ले, मेहदी निसार के जाते ही तेरे हाथ-पाँव खोल दूँगा।"

कान्त ने कहा, "मुझे अपनी फिक्र नहीं है, मैं मरियम बेगम साहबा के सोच रहा हूँ।

"बेगम साहबा की रस्सी मैं नहीं खोल पाऊँगा।"

सुबह होते-होते दोनों बजरे मुर्शिदाबाद के घाट पर आकर लगे। घाट पर अभी लोगों का आना-जाना शुरू नहीं हुआ था। चेहल-सुतून के नौबतखाने से इंसाफ मियाँ की शहनाई की गूंज सुनाई दे रही थी। उधर लक्काबाग में न जाने कहाँ लड़ाई छिड़ी है और इधर इंसाफ मियाँ अपने रोजमर्रा के काम में मशगूल है। कान्त चुपचाप उसी हालत में पड़ा रहा। बशीर मियाँ जाकर पालकियाँ ले आया। पालकी में मरियम बेगम साहबा को बिठाकर पालकी के पल्ले बन्द कर दिये गये। इसके बाद छोटे सरकार बिना किसी हुज्जत के मेंहदी निसार के साथ जाकर पालकी में बैठ गये। छोटे सरकार ने कान्त को आज पहली बार देखा।

"मैं ?"

बशीर मियाँ ने कहा, "तू मेरे साथ जायेगा। लेकिन उससे पहले मेंहदी निसार ने इन मल्लाहों को गिरफ्तार करने का हुक्म दिया है। इन्हें गिरफ्तार किये बिना बात खुल जाने का डर है।"

इसके बाद बशीर मियाँ ने मल्लाहों को बुलाकर कहा, "चलो, सब मेरे साथ चलो!"

बिना एक भी सिपाही या पहरेदार के सब डर से काँपते हुए बशीर मियाँ के साथ चलने लगे। दोनों बजरे खाली पड़े रहे।

चौक बाजार के नजदीक आकर कान्त ने बशीर मियाँ से पूछा, "मरियम बेगम साहबा को कहाँ रखा जायेगा ?"

"यह जानकर क्या करेगा ?"

"कुछ भी नहीं, ऐसे ही जरा जानना चाहता हूँ।"

"पहले यह बता, मेरी अशर्फियाँ कब देगा ?"

"मुझे छोड़े बिना कैसे दे सकता हूँ ? अशर्फियाँ क्या मेरे पास धरी हैं ? इन्तजाम करना होगा।"

"कब तक इन्तजाम कर पायेगा ?"

"जब तू छोड़ देगा।"

बशीर मियाँ चलते-चलते न जाने क्या सोचने लगा। फिर बोला, "नहीं भाई, तुझे मैं छोड़ नहीं सकता! निसार साहब ने तुम सबको अभी कोतवाली में बन्द करने का हुक्म दिया है।"

"तब क्या होगा ?"

बशीर मियाँ कहा, "एक काम कर, अगर तू अभी जाकर अशर्फियाँ ले आता है तो मैं तुझे छोड़ दूँगा। लेकिन लायेगा कहाँ से ?"

कान्त ने कहा, "जहाँ मैं रहता हूँ वहीं से। लेकिन मरियम बेगम साहबा को छोड़ देगा न, निसार साहब तो कुछ नहीं कहेंगे ?"

"हाँ हाँ, वादा करता हूँ, छोड़ दूँगा।"

कान्त ने कहा, "मुझे नहीं छूटना, मेरा तो मरना ही अच्छा है।"

तब तक [illegible] के [illegible] कहा है, तू जाकर [illegible] ले आ।"

बशीर मियाँ ने कान्त के हाथ [illegible] न करता, मैं इन [illegible] हूँ।"

[illegible] दरवाजे [illegible] कान्त को [illegible] देखा तो [illegible] कहा, "[illegible] दिनों से कहाँ थे ?"

कान्त [illegible] बताये। बूढ़े शराफत अली ने [illegible] की मर्जी ? [illegible] तक उसी तरह [illegible] रहे हैं।

"[illegible] क्या है कान्त बाबू, [illegible] ?"

कान्त ने कहा, "शराफत अली [illegible] है ?"

"सो रहे हैं। जगाऊँ क्या ?"

"नहीं, रहने दो, मैं [illegible] हूँ।"

कान्त धीरे-धीरे शराफत अली के [illegible] लेकिन वह क्या कहकर बड़े मियाँ से रुपये माँगे ? अगर वह कहता है कि [illegible] बेगम साहिबा के लिए चाहिए तो बूढ़ा [illegible] बेगम साहिबा इतने रुपये का क्या करेंगी ? बेगम साहिबा से तुम्हारा क्या रिश्ता है ?

"मियाँ साहब !"

कोई जवाब नहीं।

बादशाह पीछे ही खड़ा था। उसने कहा, "ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ दीजिए।"

थोड़ी देर तक पुकारने के बाद शराफत अली आँखें मलते हुए उठा। बूढ़े मियाँ की लाल-लाल आँखें देखकर कान्त डर गया।

तभी बूढ़े मियाँ ने गुर्राकर कहा, "कौन है वह बदतमीज, जिसने मुझे जगा दिया ?"

लेकिन बूढ़े मियाँ के कुछ और कहने से पहले ही एक गड़बड़ हो गयी। बाहर पता नहीं किस बात का शोर हो रहा था। इतनी सुबह यह शोर कैसा ? ऐसा तो नहीं होता। चेहल-सुतून में बजती इंसाफ मियाँ की शहनाई अचानक रुक क्यों गयी ? क्या हुआ है, पता लगाने के लिए बादशाह बाहर निकल गया।

शराफत अली ने पूछा, "यह हल्ला किस बात का हो रहा है ? क्या हो गया ?"

शोरगुल तब तक और भी बढ़ गया था। कान्त भी हैरान था। क्या हुआ ? बशीर मियाँ क्या मल्लाहों से झगड़ने लगा। लेकिन बाहर आकर वह हैरान रह गया। झुण्ड के झुण्ड लोग इधर-उधर आ-जा रहे थे। एक अजीब-सी सनसनी [illegible]

वशीर मियाँ और सारे मल्लाह भी पता नहीं कहाँ चले गये थे। लोगों के चेहरे पर जैसे अजीव-सा आतंक और डर छाया हुआ था। सब एक-दूसरे से कानाफूसी कर रहे थे।

एक आदमी को अपने पास से गुजरते देखकर कान्त ने पूछा, "क्या हुआ है भाई ? यह शोर किस वात का है ?"

उस आदमी ने एक बार ऊपर से नीचे तक कान्त को देखा। फिर शायद उसे कुछ शक हुआ, इसलिए बिना कुछ कहे वह एक ओर चला गया।

कान्त आगे बढ़ने लगा। हर रोज इस वक्त बाजार की हालत ऐसी नहीं रहती। सब कुछ जैसे बड़ा ही अजीब लग रहा था। कान्त जिससे भी पूछता वही उसे शक की नजरों से देखता और बिना कुछ कहे आगे बढ़ जाता। जरा आगे बढ़कर ही मेंहदी निसार की हवेली थी। पता नहीं, छोटे सरकार और मरियम बेगम को वह कहाँ ले गया होगा ? उससे थोड़ी दूर पर ही महिमापुर है। कान्त वहीं जाकर खड़ा हुआ। हल्की-हल्की धूप निकल आयी थी लेकिन मुर्शिदाबाद जैसे अचानक बड़ा फीका-फीका नजर आने लगा था।

लेकिन यह वशीर मियाँ आखिर कहाँ चला गया ? रुपये छोड़ने वाला आदमी तो वह है नहीं। अचानक ऐसा क्या हो गया जिसकी वजह से वशीर मियाँ को इतनी सारी अशर्फियों का लालच छोड़कर भागना पड़ा ? फिर गया भी, तो आखिर कहाँ ?

शहर में तब तक कोलाहल ने और भी जोर पकड़ लिया था। हर कोई एक-दूसरे से पूछ रहा था, क्या हुआ ?

भीखू शेख जैसा आदमी भी जो किसी से बिना बात किये चुपचाप पहरा देता था, अचानक पूछने लगा, "क्या हुआ ?"

मुर्शिदाबाद में या बंगाल में ही नहीं, सारे हिन्दुस्तान में उस दिन एक ही सवाल उठा था—क्या हुआ ? सिक्ख, मराठे, फ्रांसीसी और डच सभी १७५७ की २४ जून की उस सुबह सोकर उठने के बाद बाहर का हल्ला सुनकर हैरान रह गये। सभी की जबान पर एक ही सवाल था—क्या हुआ ? ह्वाट्स अप ?

●

खबर क्लाइव के पास भी पहुँची थी लेकिन उसे यकीन नहीं हो रहा था। नवाब क्या इतनी बड़ी बेवकूफी कर सकता है ?

लेसिंग्टन को दफनाया जा चुका था। कर्नल खुद कब्रिस्तान तक गया था। लेकिन अभी रोने या अफसोस करने का वक्त नहीं है। पहले वार है, फिर इमोशन।

जिस लड़ाई के लिए इतिहास इतने दिनों से साजिश करता आया था वह इस तरह शुरू हो जायेगी, यह किसने सोचा था ? किसने सोचा था कि सात समुद्र पार लक्कावाग के इन आम के दरख्तों के बीच अपने सारे इमोशन को इस तरह हत्या करनी होगी ?

पास ही आयरकूट खड़ा था।

जैसे पहली बार कर्नल ने उसे देखा।

कहा, "चुपचाप क्यों खड़े हो ? क्या बात है ?"

आयरकूट ने कहा, "मेरे सिपाही रेस्ट लेना चाहते हैं।"

"ह्वाई ? क्यों ?"

"नवाब की इतनी फौज का मुकाबला करने में उन्हें डर लग रहा है। कह रहे हैं, हम लोग यहाँ मरने नहीं आये हैं, लड़ने आये हैं।"

कर्नल चीख पड़ा, "लड़ना और मरना क्या अलग-अलग हैं ?"

आयरकूट ने कहा, "मैं अपनी बात नहीं कर रहा हूँ, सिपाहियों के बारे में कह रहा हूँ।"

क्लाइव ने कहा, "चलो, मैं खुद चलता हूँ। देखता हूँ, किसे मरने से डर लगता है ?"

आयरकूट फिर भी खड़ा रहा।

क्लाइव ने कहा, "चलो !"

क्लाइव की गरज सुनकर आयरकूट थर-थर काँपने लगा। उसने अपना रिवाल्वर और भी कसकर पकड़ लिया।

उधर लक्काबाग में मिर्जा मुहम्मद ने पुकारा, "नियामत !"

बाहर जैसे कोई शोरगुल हो रहा था। लेकिन यह शोरगुल लड़ाई का तो नहीं है। उधर मीरमदन और मोहनलाल के सिपाही लगातार गोले बरसा रहे थे। लेकिन यह आवाज तो पीछे से आ रही है।

नवाब बहादुर ने फिर से पुकारा, "नियामत !"

"खुदावन्द !"

"यह शोर कैसा हो रहा है ?"

नियामत जैसे कुछ कहते-कहते रुक गया।

"बोलते क्यों नहीं ?"

"खुदावन्द ! खिदमतगारों को बेंत लगाये जा रहे हैं।"

"बेंत लगाये जा रहे हैं ! आखिर क्यों ?"

"उन लोगों ने खुदावन्द की चिलम चुरा ली थी।"

"चिलम चुरा ली, इसलिए बेंत लगाये जा रहे हैं ? किसके हुक्म से ?"

"यारजान साहब के।"

नवाब बहादुर जरा देर चुप बैठे रहे। बाहर से खिदमतगारों की कराह सुनाई दे रही थी। 'सप-सप' बेंत मारने की आवाज जैसे खेमे में आकर पड़ रही थी। मिर्जा मुहम्मद को लगा जैसे यह बेंत मारने की आवाज न होकर बंगाल की आत्मा की कराह हो ! सदियों से जिन लोगों की जान नवाब के हाथों से गयी है, चेहल-सुतून में जितनी बेगमों और वजीरों ने आत्महत्या की है सभी जैसे लक्काबाग के मैदान में आकर

कैफियत माँग रहे थे। लेकिन कैफियत कैसे दे सकता हूँ ? दूसरे के कसूर की जिम्मेदारी मैं कैसे ले सकता हूँ ? मिर्जा मुहम्मद अपनी जिम्मेदारी के आगे प्रश्न-चिह्न लगाकर जरा निश्चिन्त हुआ। लेकिन मरियम बेगम साहबा ने तो कहा था कि इन लोगों का भाग्य-विधाता मैं नहीं हूँ, मेरे ऊपर भी कोई और है, और वही सारी दुनिया का भाग्य-विधाता है।



"मेंहदी निसार कहाँ है ?"

"वह तो नहीं हैं, हजूर।"

"तब यारजान साहब को बुलाकर कह दो कि इन लोगों को बेंत न मारें, लड़ाई खत्म होने के बाद मैं ही सबको बेंत मारूँगा।" नियामत कोर्निश कर जाने लगा। मिर्जा मुहम्मद ने उसे अचानक रोककर कहा, "सुनो नियामत !"

नियामत रुक गया।

नवाब ने कहा, "चलो, मैं खुद चलता हूँ।" कहकर नवाब खेमे से बाहर निकल गये। पीछे-पीछे नियामत भी चलने लगा।



कृष्णनगर के राजभवन की अतिथिशाला के अन्दर से उद्धवदास के गाने की आवाज आ रही थी—



रहिहों न भुवन-भवन तें
सुनो हे गौरीपति महेश
जो नारी करे नाथ
पति-वक्ष तें पदाघात।...

रसोईघर के लोग अपने-अपने काम में लगे थे। महाराज अपने पलटा-कलछी को एक ओर फेंककर बाहर आया। उद्धवदास अपनी गठरी उतारकर हाथ-पैर धोते-धोते गा रहा था।

महाराज ने पूछा, "क्यों भगत जी, इतने दिन तक कहाँ रहे ?"

उद्धवदास ने उसकी बात अनसुनी कर कहा, "मूँग की दाल बनायी है ?"

महाराज ने पूछा, "कौन-सी मूँग की दाल खाओगे ? खड़ी या दली ?"

उद्धवदास ने कहा, "मेरे लिए सभी एक जैसी हैं, जैसी खड़ी वैसी दली।"

"सुना है लड़ाई हो रही है ?"

उद्धवदास ने कहा, "हाँ, मैंने भी लड़ाई के ऊपर एक छन्द बनाया है, सुनो—

दोउ पक्ष के राजा भये क्रोधमगन।
सम्मुख संग्राम तें दिये दोउ दरशन॥
उभय पक्ष के सैन्य को भयो संहार।
किन्तु भूमि ऊपर पड्यो न बूँद एक रुधिर॥

ऐसो अद्‌भुत युद्ध कौन नृप दिखायो ।
पदातिक जयी भये, अरु सेनापति हलस्यो ॥

अचानक सरखेल जी आते दिखाई दिये ।

उद्धवदास ने पूछा, "क्या बात है प्रभु ? बड़े चिन्तित दिखाई दे रहे हो ।"

सरखेल जी ने झुँझलाकर कहा, "अच्छा तुम चुप रहो, कभी दुनियादारी के झमेले में तो नहीं पड़े ! तुम्हारी पहेलियाँ सुनने से पेट नहीं भरेगा ।"

"यह दुनिया भी तो पहेली है प्रभु !"

"अच्छा-अच्छा रहने दो ! दुनियादारी के झमेले में पड़े होते तो पता लगता ।"

इसके बाद रसोइये की ओर देखकर सरखेल जी ने पूछा, "क्यों रे ! दीवान जी इधर आये थे क्या ?"

रसोइये ने कहा, "नहीं तो ।"

सरखेल जी जिधर से आये थे उधर ही चले गये ।

उधर दीवान जी पूछ रहे थे, "क्या, नहीं मिले ? सबसे पूछा क्यों नहीं कि छोटे सरकार कहाँ गये हैं ?"

"जी, पूछा तो था लेकिन कोई बतला नहीं पाया ।"

"ठीक है, मैं महाराज को बतला आऊँ ।"

सरखेल जी ने कहा, "हाँ, कह दीजियेगा कि एक महीना हो गया, हतियागढ़ से मुर्शिदाबाद जा रहा हूँ, कहकर गये हैं, उसके बाद से कोई खबर नहीं मिली । जगत सेठजी और बड़ी बहूरानी बहुत चिन्तित हैं ।"



महाराज कृष्णचन्द्र उस समय छोटी रानी से बातें कर रहे थे ।

छोटी रानी कह रही थी, "हतियागढ़ की रानी को देखा, बेचारी बड़ी अच्छी है लेकिन उसके साथ जो बाँदी है, बहुत ही मक्कार है । सुना है टोना-टोटका भी करती रहती है ।"

महाराज ने हँसकर कहा, "बाँदियाँ जरा मक्कार होती ही हैं । उन लोगों के खाने-पीने का प्रबन्ध ठीक से हो गया है न ?"

"हाँ, वही बाँदी बना लेती है । कहती तो है कि उन्होंने कभी फिरंगियों के हाथ का छुआ नहीं खाया । लेकिन उनके कहने से ही तो उन्हें रसोई में घुसने नहीं दिया जा सकता । इसीलिए मैं कहती हूँ, इन लोगों को यहाँ पर ज्यादा दिन रखना ठीक नहीं है । इन्हें कब भेज रहे हो ?"

महाराज ने कहा, "इन्हें भला कैसे भेजा जा सकता है, छोटे सरकार ने इन्हें बुलवाया है ।"

तभी जैसे रानी को कोई जरूरी बात याद आ गयी । उसने कहा, "सुना है लड़ाई फिर छिड़ गयी है ।"

"तुम्हें कैसे पता लगा ?"

"अपनी पद्म है न, उसी का मौसेरा भाई आया है। वही बतला रहा था। सुना है लोग लक्कावाग में फिरंगी पल्टन देखते ही भाग गये हैं। गाँव के गाँव खाली हो गये हैं।"

"हो सकता है दो दिन बाद हम लोगों को भी कृष्णनगर छोड़कर कहीं जाना पड़े।"

"यह तुम क्या कह रहे हो ? इधर कुछ दिनों से देख रही हूँ तुम बड़े चिंतित रहते हो। क्या बात है ? तबीयत तो ठीक है न ? वैद्य जी को क्यों नहीं दिखाते ?"

"तबीयत तो ठीक ही है, लेकिन सोचता हूँ कि मैंने यह अच्छा किया या बुरा ?"

"तुमने ऐसा क्या किया है ?"

महाराज ने कहा, "और किसने किया ? लोग घरबार और गाँव छोड़कर भाग गये हैं, हतियागढ़ की रानी को भी यहाँ आना पड़ा है और लक्कावाग में तोपें गरज रही हैं, इन सबके पीछे मैं ही तो हूँ।"

"मेरी समझ में लेकिन कुछ भी नहीं आ रहा है।"

महाराज ने कहा, "तुम्हें समझने की जरूरत भी नहीं है। अच्छा, अब मैं नीचे जा रहा हूँ।"

रानी ने कहा, "सारा दिन नीचे-नीचे ! ठीक है जाओ, मैं भी पद्म से अपनी चारपाई दूसरे कमरे में लगाने को कहे देती हूँ।"

महाराज ने रानी का हाथ पकड़ते हुए कहा, "नाराज न होओ। बड़ा ही जरूरी काम है।" कहकर महाराज नीचे जाने के लिए सीढ़ियाँ उतरने लगे।

नीचे जाते-जाते रास्ते में ही दीवान जी से भेंट हो गयी।

"दीवान जी, शशी से और कोई समाचार मिला ?"

"अभी-अभी समाचार आया, मीरमदन मारा गया है।"

सुनकर महाराज के सिर पर जैसे बिजली गिरी। मीरमदन मारा गया !

"समाचार तो ठीक है न ?"

"जी हाँ।"

"अब नवाब की हालत कैसी है, मीर जाफर साहब क्या कर रहे हैं ?"

"और तो कुछ भी पता नहीं लगा।"

"इन फिरंगियों का आखिर मतलब क्या है ? लड़ाई जीतकर क्या ये लोग मुर्शिदाबाद की मसनद को लेकर खींचा-तानी करेंगे ?"

"लग तो ऐसा ही रहा है। इसीलिए तो मीर जाफर चुप है।"

महाराज को जैसे अचानक याद आया। पूछा, "और हाँ, सरखेल जी आये ?"

"जी हाँ। छोटे सरकार का कोई पता नहीं चला।"

जगसेठत् जी को एक पत्र लिखो, शायद उन्हीं से कुछ पता लगे।"

उधर पद्म ने आकर रानी से कहा, "रानी माँ, तुम्हें वे लोग बुला रहे हैं।"

"कौन ?"

"अरे वही, हतियागढ़ की रानी है न ?"

"क्यों ? मुझसे कौन-सा काम आ पड़ा है ? अच्छा चल।"

बाहर अतिथिशाला में महफिल गुलजार हो रही थी। इस बार बहुत दिन बाद उद्धवदास आया था। सिर्फ उद्धवदास ही नहीं, लक्काबाग के आस-पास के बहुत-से लोग आकर महाराज की अतिथिशाला में ठहरे थे। उद्धवदास सभी को पहचानता है। सभी मिलकर उद्धवदास से गाने के लिए कहने लगे।

उद्धवदास ने कहा, "कौन-सा गाना सुनोगे ?"

"वही जो तुमने बहू के भाग जाने पर बनाया था।"

उद्धवदास ने अपना दाहिना हाथ कान पर रखकर गाना शुरू कर दिया—

रहिहों न भुवन-भवन में।
सुनो हे गौरीपति महेश॥
जो नारी करे नाथ।
पति-वक्ष में पदाघात॥

अन्दर छोटी बहूरानी के कान में भी आवाज गयी।

उसने कहा, "ओ दुर्गा, यह तो वही है!"

दुर्गा ने भी सुना। अरे, वह फक्कड़ बाबा तो यहाँ भी आ पहुँचा। उसने पद्म को बुलाकर कहा, "जरा अपनी रानी माँ को तो बुलाकर लाओ।"

रानी माँ के आने पर दुर्गा ने कहा, "रानी माँ, छोटी बहूरानी बहुत बुरी तरह से डर गयी है।"

"क्यों क्या हुआ ?"

"यह जो बाबा जी बाहर गाना गा रहा है, वह यहाँ तो नहीं आयेगा ?"

महारानी ने कहा, "क्यों क्या हुआ ?"

"जी, वह आदमी बड़ा खराब है।"

महारानी ने कहा, "अरे नहीं-नहीं, वह तो उद्धवदास भगत है। प्रायः यहाँ की अतिथिशाला में आकर ठहरता है और दो-चार दिन रहकर चला जाता है।"

●

तभी पद्म ने आकर कहा, "रानी माँ, महाराज आपको बुला रहे हैं।"

लक्काबाग में उस समय भारत-भाग्य-विधाता का संग्राम चल रहा था। एक ओर अठारहवीं सदी के मध्य भाग में निर्वीर्य मुगल सल्तनत के ध्वंसावशेष थे और दूसरी ओर था पश्चिम की वणिक्-सभ्यता का प्रतीक कर्नल क्लाइव। दुनिया के इतिहास में जितनी बार अतीत के साथ भविष्य की लड़ाई छिड़ी, उतनी ही बार राष्ट्र-विप्लव हुआ है। शांतिप्रिय लोगों ने कहा राष्ट्र-विप्लव हो रहा है तो हो, लेकिन वह कहीं हिंसा में

न बदल जाय। सबकी दृष्टि में हेय हिंसा जैसे तब मन ही मन हँसती रही। जो खून-खराबा होने वाला था, हुआ; जो नष्ट होना था, वह नष्ट हुआ लेकिन इसीलिए हिंसा चुप न बैठी रही। वह बार-बार मनुष्य की बाहरी सभ्यता की नकाब खोलकर जैसे मुँह चिढ़ाती और कहती रही, देखो मैं हूँ! कभी ईसा, कभी चैतन्य तो कभी बुद्ध की वाणी ने हताशों को सांत्वना दी और आश्वासन दिया लेकिन उसके साथ ही साथ चंगेज खाँ, तैमूर लंग, अलेक्जेण्डर के फौजी हमलों ने हरी-भरी जमीन को श्मशान में बदल दिया; एक ओर शान्ति थी तो दूसरी ओर अत्याचार था—मानव-सभ्यता का इतिहास यही रहा है। मनुष्य को जब किसी भी तरह से सत्य का संधान नहीं मिला तो वह आसमान के तारों और नक्षत्रों के रहस्योद्घाटन में लग गया। उसने प्रार्थना की—हे अदृश्य देव, उत्तर दो! मेरे चिरन्तन प्रश्नों का समाधान करो! लेकिन कोई भी उसके इन प्रश्नों का उत्तर न दे पाया। इतिहास अपनी राह बढ़ता रहा। सत्य-मिथ्या और अत्याचार सांत्वना सब कुछ जैसे एकाकार करके वह अनादि अनन्त महाकाल के लक्ष्य की ओर पहुँचने की चेष्टा में सब कुछ उलट-पुलट करते हुए निर्विकार भाव से आगे बढ़ता रहा। मानव भी उसी तरह अनन्त काल से आसमान की ओर ताकता प्रार्थना करता रहा—हे देव, सच क्या है? दिन या रात? ध्रुव क्या है? शिव या अशिव? और शाश्वत क्या है? हिंसा या अहिंसा?

खेमे से बाहर जाते-जाते नवाब मिर्जा मुहम्मद को ये ही बातें याद आ रही थीं। अचानक यारजान ने आकर कोर्निश की।

"आलीजाह ने मुझे याद फरमाया था?"

"तुम लोग आखिर रहते कहाँ हो? मेंहदी निसार कहाँ है?"

यारजान साहब ने कहा, "वह तो जहाँपनाह के दुश्मनों का मुकाबला करने गया।"

"और आप भी यहाँ खिदमतगारों को बेंत लगाकर दुश्मनों का मुकाबला कर रहे थे!"

"ये लोग बड़े बेईमान हैं आलीजाह।"

"लेकिन यह सब तुम बाद में नहीं कर सकते थे? तुम्हें अच्छी तरह पता है कि चारों ओर दुश्मन हैं। यह जानते हुए भी तुम उनकी गिनती बढ़ा रहे हो? एक दिन रुक नहीं सकते थे?"

"आलीजाह, मैंने तो आपके अच्छे के लिए ही उन्हें सजा दी थी।"

"मेरा अच्छा करने की अब और जरूरत नहीं है। मेहरबानी करके उन्हें फौरन छोड़ दीजिए।"

यारजान सर झुकाये चुपचाप खड़ा रहा।

"तुम मेरे सामने से चले जाओ यारजान, खुदा के लिए मुझे अकेला छोड़ दो।"

"खुदावन्द!"

"कौन?"

"मीरमदन मारा गया !"

नवाब मिर्ज़ा मुहम्मद सीधे होकर बैठे। खुद मोहनलाल आया था। फिर भी नवाब को जैसे यकीन नहीं आ रहा था। वह सूनी नजरों से मोहनलाल की ओर देखने लगे।

"जब गोली लगी वह मेरे पास ही खड़ा था। मीर जाफर, यार लुत्फ खाँ और राजा दुर्लभराम की तोपें अभी तक खामोश हैं खुदावन्द !"

नवाब उसी तरह खोयी नजरों से देखते रहे।

"खुदावन्द, अगर आपका हुक्म हो तो हम और सिनफ्रे आगे बढ़कर फिरंगियों को पीछे खदेड़ दें।"

इतनी देर बाद नवाब की जबान खुली, "मोहनलाल, जनरल लॉ की कोई खबर मिली ?"

"नहीं जहाँपनाह, जनरल के आने में शायद देर लगेगी, तब तक हमीं लोग इन लोगों को खदेड़ देंगे। आप सिर्फ हुक्म दे दीजिए।"

अचानक तभी बादलों की गरज सुनायी दी और साथ ही साथ मूसलाधार पानी बरसने लगा।

"खुदावन्द, बारूद बाहर पड़ी है, मैं जरा देखूँ जाकर।"

"लेकिन मीर जाफर कहाँ है ? उसने कुरान हाथ में लेकर कसम खायी थी। फिर भी दगा की ?"

बारिश और भी तेज हो गयी थी। सब खामोश थे। इस बात का जवाब देता भी कौन ? कौन कहता कि इतने हाथी, घुड़सवार, सिपाही और तोपों के रहते भी मीरमदन आखिर कैसे मारा गया। मीरमदन से ही तो मिर्ज़ा मुहम्मद ने जरा देर पहले पूछा था कि उसने गीता पढ़ी है या नहीं ? मीरमदन ने गीता नहीं पढ़ी थी ? हिन्दू होकर गीता नहीं पढ़ी, मुसलमान भी कुरान नहीं पढ़ते फिर भी दोनों ही लड़ते-लड़ते मारे जाते हैं। मीरमदन बेचारे ने मरने से पहले कभी यह भी नहीं सोचा होगा कि आखिर वह पैदा क्यों हुआ ? और मरने के बाद उसका क्या होगा ?

अचानक सिनफ्रे ने आकर कहा, "योर एक्सेलेन्सी, अंग्रेजों के सारे गोले और बारूद भीग गये हैं।"

"यह तो ठीक है मिस्टर सिनफ्रे, लेकिन जनरल लॉ क्यों नहीं आ रहा है ?"

"आप उसके लिए जरा भी फिक्र न करें, मैं तो हूँ। आइ मस्ट फाइट दोज इंग्लिश बास्टर्ड्स आउट !"

"मोहनलाल !"

"खुदावन्द !"

"एक बार मीर जाफर को बुलाकर लाओ, मैं उससे पूछूँगा, आखिर उसने इस तरह दगाबाजी क्यों की ?"

मोहनलाल बारिश में ही बाहर चला गया।

●

तीनों तामजान जिस वक्त मोतीझील पहुँचे, पौ नहीं फटी थी। मोतीझील में सभी देर से सोकर उठते थे, सिर्फ सच्चरित्र पुरकायस्थ पुरानी आदत होने की वजह से जल्दी उठ जाता था। एक साथ तीन-तीन तामजानों को चबूतरे पर रुकते देखकर इब्राहिम खाँ हैरान रह गया। इस वक्त कौन आया है ?

तभी देखा, एक पालकी में से मेंहदी निसार बाहर आया और दूसरी में से हतियागढ़ के छोटे सरकार। तीसरी पालकी में से बुरका पहने एक औरत निकली। औरत के दोनों हाथ पीठ पीछे बँधे थे। छोटे सरकार के भी दोनों हाथ भी बँधे थे। मेंहदी निसार दोनों को करीब-करीब धक्के देता अंदर ले गया।

सच्चरित्र पुरकायस्थ को और भी आश्चर्य हो रहा था।

थोड़ी देर बाद ही मेंहदी निसार जैसे आया था वैसे ही पालकी में बैठकर बाहर चला गया।

और तभी इंसाफ मियाँ की नौबत अचानक बजते-बजते बंद हो गयी। आखिर बात क्या है ? ऐसा तो नहीं होता। फिर बाहर यह शोर कैसा हो रहा है ?

"पुरकायस्थ जी !"

सच्चरित्र पुरकायस्थ ने चौंककर देखा, कान्त खड़ा था। उसने कहा, "अरे भैया, तुम ?"

"पुरकायस्थ जी, मरियम बेगम को यहाँ आते तो नहीं देखा ?"

"अब तो मेरा नाम इब्राहिम खाँ है भैया, क्यों बेकार में पुरानी बातें याद दिलाते हो ?"

कहते-कहते सच्चरित्र पुरकायस्थ की आँखें छलछला उठीं।

कान्त ने बूढ़े इब्राहिम की ओर देखते हुए कहा, "जो भी हो, यह मुसलमानी नाम लेकर मैं तुम्हें नहीं पुकार पाऊँगा, मेरे लिए तुम अभी भी हिन्दू हो, मैं जातपाँत नहीं मानता।"

सच्चरित्र पुरकायस्थ ने कहा, "नहीं भैया, जात-पाँत तो माननी ही चाहिए। मेरे पिता इन्दीवर घटक और मेरे बाबा..."

"वे सब बातें छोड़ो पुरकायस्थ जी उधर शोभाराम विश्वास की लड़की मराली का सर्वनाश हो गया है !"

"उसका क्या सर्वनाश होगा भैया, जिस लड़की ने अपना धर्म छोड़ दिया, जो नवाब के साथ सोती है....."

"खबरदार !"

कान्त करीब-करीब चीख उठा, "मराली के बारे में ऐसी बातें न कहो, तुमने अपनी आँखों से देखा है उसे नवाब के साथ सोते ?"

कान्त का गुस्सा देखकर इब्राहिम खाँ ने घबड़ाते हुए कहा, "नहीं-नहीं, मैं कैसे देख सकता हूँ ? नियामत क्या मुझे अंदर जाने देता है ?"

"नहीं देखा है तो उसके बारे में इस तरह बेसिर-पैर की बातें बात को ग़ो की फिर कभी न करना !"

"ठीक है भैया, मैं कब चाहता हूँ कि किसी का चरित्र खराब हो, मैं तो अपना ही चरित्र ठीक नहीं रख पाया।"

कान्त ने कहा, "खैर, यह बात छोड़ो। मराली को इन लोगों ने यहाँ लाकर रखा है, मुझे तो लगता है उसका खून करेंगे।"

"खून ? खून क्यों करेंगे ?"

"पहले यह पता लगाओ कि मराली को उन्होंने कहाँ बंद कर रखा है।"

"अभी आता हूँ, तुम यहीं रुको।"

कहकर सच्चरित्र सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। सीढ़ियाँ खत्म होने पर आम दरबार था और उसी के पास था जनानखाना। दूसरी ओर अमीर-उमरावों के आराम करने की जगह थी।

सच्चरित्र और आगे बढ़ा। छोटे सरकार को यहीं पर कहीं रखा गया था।

"कौन ? कौन है वहाँ ?"

समझ में नहीं आया कि आवाज कहाँ से आ रही थी। यह तो गनीमत थी कि नियामत नहीं था। दूसरे खिदमतगार भी नवाब के साथ लड़ाई में गये थे।

इतनी देर बाद सच्चरित्र देख पाया। एक कमरा, जिसके दरवाजे पर ताला लगा था, उसी दरवाजे के ऊपर मोखा बना हुआ था। उस मोखे में से एक चेहरा उसकी ओर ताक रहा था।

"तुम कौन हो ?"

"जी, मैं इब्राहिम खाँ हूँ बेगम साहबा !"

मराली पहले तो सच्चरित्र को पहचान ही न पायी। फिर उसने कहा, "तुम क्या सच्चरित्र पुरकायस्थ हो ?"

सच्चरित्र ने कहा, "हाँ बेटी, तुम्हें देखने ही इधर आया हूँ।"

"तुम एक काम कर दो पुरकायस्थ जी, नानी बेगम साहबा को दया करके खबर दे दो कि मरियम बेगम को मोतीझील में कैद करके रखा गया है।"

"लेकिन इन लोगों ने तुम्हें पकड़ कैसे लिया ?"

"वह सब बाद में सुनना, पहले नानी बेगम को खबर दे आओ।"

सच्चरित्र जा ही रहा था कि मराली ने फिर पुकारकर कहा, "छोटे सरकार को कहाँ रखा है, तुम्हें पता है ?"

"नहीं बेटी, यह तो मालूम नहीं है।"

"और बाहर यह हल्ला कैसा हो रहा है ?"

"पता नहीं, मैं भी सुन रहा हूँ। जाऊँ चेहल-सुतून जाकर [illegible] खबर दे आऊँ।"

कान्त अभी तक नीचे खम्भे की आड़ में खड़ा था। [illegible]

धूप छा रही थी। कान्त को डर लग रहा था, अगर कोई आ गया तो क्या होगा ?

और तभी एक दूसरी आवाज सुनकर कान्त चौंक पड़ा। नानी बेगम का ताम जान आ रहा था। दो हाथी आगे और दो पीछे भूमते हुए चले आ रहे थे।

कान्त खम्भे की आड़ में दुबका रहा।

नानी बेगम के पालकी से उतरते न उतरते उधर से एक और पालकी पहुँची। नानी बेगम ने बुरके के अंदर से ही पीछे मुड़कर देखा।

"कौन ?"

पीछेवाली पालकी से उतरकर मेंहदी निसार ने लम्बी कोर्निश की।

"मेंहदी निसार, सुना है तुमने मरियम बेगम को मोतीभील में गिरफ़्तार क रखा है ?"

"मैंने ? यह आप क्या कह रही हैं नानी बेगम साहबा ? गिरफ्तार करने वाल मैं कौन होता हूँ ? मैं तो सिर्फ जहाँपनाह के हुक्म का बंदा हूँ।"

"तब उसे किसने गिरफ्तार किया है ?"

मेंहदी निसार ने कहा, "मुर्शिदाबाद के नवाब मिर्जा मुहम्मद सिराजुद्दौल शाह कुली खान के हुक्म से ही उन्हें गिरफ्तार किया गया है।"

"मैं हुक्म देती हूँ कि उसे छोड़ दिया जाय।"

"लेकिन नवाब बहादुर का हुक्म...."

"चेहल-सुतून की बेगमों पर मेरा हुक्म ही सबसे ऊपर है मेंहदी निसा साहब !"

"आप अगर यही ठीक समझती हैं तो मुझे क्या उज्र हो सकता है ! लेकिन आप अच्छी तरह से सोच लीजिए, अगर नवाब बहादुर नाराज हुए तो क्या होगा ?"

"वह मैं समझ लूंगी।"

तभी सच्चरित्र ने आकर कोर्निश की।

नानी बेगम ने कहा, "यह कौन है ?"

मेंहदी निसार ने जवाब दिया, "जी, मोतीभील का खिदमतगार है।"

"चलो, मुझे जल्दी से मरियम बेगम के पास ले चलो।"

मेंहदी निसार ने कहा, "लेकिन बेगम साहबा पर निजामत के खिलाफ जासूस करने का जुर्म है। चेहल-सुतून से भागकर अभी तक बेगम साहबा फिरंगियों के सा ही थीं।"

"सबूत ?"

"खुद बशीर मियाँ ने उन्हें वहाँ देखा है।"

"बशीर मियाँ कौन है ?"

"बशीर मियाँ निजामत का जासूस है। काफी पुराना आदमी है। वह झू नहीं बोल सकता।"

नानी बेगम ने कहा, "निजामत का जासूस झूठ नहीं बोलेगा ? तुमने क्य

मुझे बेवकूफ समझ रखा है मेंहदी निसार ? और इस झूठ की वजह से ही तो आज निजामत का यह हाल हो गया है। यहाँ कौन झूठ नहीं बोलता ? तुम लोग अगर सच ही बोलते होते तो आज मिर्जा की यह हालत क्यों होती ! तुम्हीं लोग अगर सच्चे और ईमानदार होते तो क्या इन फिरंगियों की इतनी मजाल होती कि नवाब के खिलाफ उठायें ?"

कहते-कहते नानी बेगम हाँफने लगीं। जरा देर दम लेकर बोलीं, "चलो, मेरी चिड़िया को कहाँ बंद कर रखा है, मुझे वहाँ ले चलो !"

"लेकिन आलीजाह..."

नानी बेगम गरज उठीं, "खामोश मेंहदी निसार ! आलीजाह के बारे में तुम्हें परेशान होने की जरा भी जरूरत नहीं है। वह मेरा नाती है, मैं समझ लूँगी। पहले जो कह रही हूँ वह करो !"

मेंहदी निसार आहिस्ते-आहिस्ते नानी बेगम के साथ चलने लगा, और तभी....

"नानी बेगम साहबा !"

खोजा बरकत अली खड़ा-खड़ा हाँफ रहा था। जरा सम्हलने पर उसने कहा, "नवाब बहादुर चेहल-सुतून आ गये हैं।"

"मिर्जा वापस आ गया है ?"

मेंहदी निसार के सर पर भी जैसे आसमान टूट पड़ा।

"आलीजाह वापस आ गये ? कब ?"

"जी, अभी।"

क्षणभर में जैसे सब कुछ उलट-पुलट हो गया। दुनिया का चेहरा जैसे क्षण-भर में जर्द पड़ गया। दीन-दुनिया के नवाब बहादुर मिर्जा मुहम्मद आलमगीर मैदान-ए-जंग से वापस आ गये ? सभी के लिए जैसे यह हैरानी की चीज थी। नानी बेगम साहबा उसी हालत में वापस अपने तामजान में जा बैठीं। चार हाथी अपने बीच तामजान लिये फिर चेहल-सुतून की ओर चल दिये। सुभान अल्लाह ! तुमने आखिर मुझे दीवान-ए-खालसा बना ही दिया ! मेंहदी निसार भी फौरन अपनी पालकी में जा बैठा। मेंहदी निसार की पालकी के ओझल हो जाने के बाद जैसे सच्चरित्र को होश आया। कान्त ने भी खम्भे की आड़ में से निकलकर कहा, "क्या हुआ ? नवाब वापस क्यों आ गये ?"

लेकिन इस सवाल का जवाब कौन देता ? इंसान की दीवानगी के आगे नवाबी मसनद डगमगा रही थी। तभी मुर्शिदाबाद की गलियों-बाजारों-रास्तों, हर जगह लोग दबी जबान से पूछ रहे थे, "नवाब वापस आ गये ? क्या हुआ ? ह्वाट्स अप ?"

●

यह घटना थी सन् १७५७ के जून महीने की चौबीस तारीख की सुबह की। लेकिन २३ तारीख को लक्काबाग के मैदान में हुई इसकी शुरुआत को बतलाना भी

जरूरी है। एक ओर संयुक्त शक्ति का मनोबल और दूसरी ओर चोरी, विश्वासघात, षड्यन्त्र और विलास! युद्ध के दौरान भी क्या विलास जरूरी है? लेकिन तब भी सोने की चिलम होनी चाहिए, जड़ाऊ तलवार होनी चाहिए। चाबुक का अत्याचार और अमीर-उमरावों का विश्वासघात होना ही चाहिए!

मीरमदन ने गीता नहीं पढ़ी थी, लेकिन लड़ते-लड़ते जान देकर उसने बात रखी। लेकिन सामने जब दुश्मन खड़ा हो, तुम्हें अपने लोगों को इस तरह चाबुक नहीं लगवाना चाहिए था यारजान! कम से कम मुझसे पूछ तो लिया होता।

मीर जाफर अली साहब?

नवाब की आवाज आज बड़ी मुलायम थी। यह आवाज तब कहाँ थी आलीजाह, जब तुमने मुझे मोहनलाल को सलाम करने का हुक्म दिया था? उस दिन क्यों नहीं सोचा कि कभी तुम्हारे भी बुरे दिन आ सकते हैं?

नियामत ने आकर कहा, "खुदावन्द, मीर जाफर अली साहब को इत्तला कर आया हूँ।"

"लेकिन इतनी देर क्यों हो रही है। सभी लोग क्या मेरी हुक्म-उदूली करने पर तुले हुए हैं? मैं क्या मुर्शिदाबाद का नवाब नहीं हूँ? इन लोगों ने आखिर सोचा क्या है? जाकर फिर से इत्तला दे!"

अचानक चारों ओर बारिश होने लगी। नवाब बाहर आसमान की ओर देखने लगे। नवाब ने पास खड़े यारजान से पूछा, "जनरल लॉ कब तक आ जायेगा?"

"रवाना हो चुका है। कल तक आ पहुँचेगा।"

पास ही मीरमदन की लाश पड़ी थी। नवाब ने एक बार उस ओर देखकर कहा, "देखा न, मीर जाफर को बुला लाने को कितनी बार आदमी भेजा है, फिर भी अभी तक नहीं आया। क्या मैं उसे मनाने जाऊँ?"

जरा रुककर मिर्जा मुहम्मद ने फिर कहा, "नहीं यारजान, इस वक्त मैं गुस्सा नहीं होऊँगा। लेकिन कहे रखता हूँ, लड़ाई के बाद एक-एक को देख लूँगा—मैंने सबको पहचान लिया है।"

"आलीजाह, आहिस्ता! कोई सुन लेगा।"

"कौन सुन लेगा? मीरमदन? वह तो मर चुका है। मरने पर किसी को कुछ भी पता नहीं चलता। एक दिन नवाब अलीवर्दी खाँ साहब और नवाब सरफराज खाँ भी मर गये थे। उन्होंने शायद सोचा भी नहीं था कि मुझे यहाँ लक्काबाग में फिर से लड़ना पड़ेगा। मैं भी जब मर जाऊँगा तब मुझे भी पता नहीं चलेगा कि मेरे बाद मसनद पर कौन बैठा!"

"आलीजाह, इस वक्त आपका इन बातों को न सोचना ही बेहतर है।"

"लेकिन पता नहीं क्यों इतनी बातों के रहते बार-बार मरने की ही बात दिमाग में आ रही है! क्या मैं डर गया हूँ?"

यारजान ने कहा, "आप और डर? यह कौन यक़ीन कर सकता है?"

"अच्छा, फिरंगी कर्नल क्या मुझसे डरता है ?"

"जरूर !"

"तब मेरा मुकाबला करने की ताकत उसमें कहाँ से आयी ? मेरा मीर बख्शी चाहे तो उसे पीसकर रख दे सकता है।"

यारजान ने कहा, "शायद उसके सर पर मौत नाच रही है।"

नवाब मिर्ज़ा मुहम्मद भी ठहाका लगाकर हँसने लगे, "वाह ! क्या बात कह दी तुमने भी, लेकिन यारजान, दुनिया में अपनी मर्जी से कौन मरना चाहता है ?"

"जी हाँ, आलीजाह ! इस फिरंगी कर्नल ने ही दो बार पिस्तौल से खुदकुशी करने की कोशिश की थी।"

"तुम कहते क्या हो ?"

मिर्ज़ा मुहम्मद ने संजीदा होते हुए कहा, "खुदकुशी करने की कोशिश की थी ? आखिर क्यों ?"

"यह तो नहीं पता आलीजाह !"

"लेकिन मैं खुदकुशी नहीं करूँगा यारजान ! जो खुदकुशी करते हैं, वे लोग हार जाते हैं। मैं मरहूम नाना साहब की तरह जिन्दगी से लड़ूँगा। नाना साहब की तरह बूढ़ा होने पर भी लड़ूँगा और लड़ते-लड़ते ही मरूँगा।"

अचानक फिर मीर जाफर को याद आ गयी।

"अच्छा यारजान, तुम जाकर जरा मीर जाफर को तो बुला लाओ। कहना मीरमदन मारा गया है, नवाब आपको बुला रहे हैं। जाओ !"

यारजान उस बारिश में ही मीर जाफर को बुलाने चला गया। सामने ही मोहनलाल की फौज थी और उसके पास सिनफ्रे की। इसके बाद थोड़ा हटकर राजा दुर्लभराम, यार लुत्फ खाँ और सबसे आखिर में मीर जाफर अली की फौज थी। बारिश की वजह से सब तहस-नहस हो गया था। फिरंगियों की तोपों से गोलाबारी बंद थी। मीर जाफर अपने हाथी पर बैठा था, यारजान को देखकर नीचे उतर आया।

यारजान ने कहा, "अली साहब, नवाब ने मुझे आपको बुला लाने के लिए भेजा है।"

"क्यों ? मेरी क्या जरूरत आ पड़ी है ?"

"नवाब काफी डर गया है, आपसे थोड़ी तसल्ली पाना चाहता है।"

"इतनी देर तक क्या बातें हो रही थीं ?"

यारजान ने कहा, "सिर्फ मरने की बातें।"

सुनकर मीर जाफर अली को भी अजीब लगा। उसने पूछा, "मरने की बातें ?"

"अरे, मीरमदन की लाश पड़ी थी न, उसी को लेकर बात चल पड़ी। असल में नवाब बुरी तरह घबड़ा गया है।"

मीर जाफर ने कहा, "ठीक है। घबड़ाना अच्छा है। अभी हुआ ही क्या है ? यह मोहनलाल और मर जाये तो काम बने ! काफिर ने गोले बरसा-बरसाकर यह

फिरंगियों को मार डाला है। कर्नल पता नहीं क्या सोचता होगा!"

यारजान ने कहा, "नवाब पूछ रहा था कि जनरल लॉ कब आ रहा है?"

"कह दो कल आयेगा, मिर्जा उसी के भरोसे बैठा रहे।"

"और यह भी कहा है कि लड़ाई के बाद किसी को भी नहीं छोड़ेगा! एक-एक दुश्मन को कत्ल करा देगा!"

"पहले खुद बचेगा तभी न! देखो न, बारिश की वजह से सारी बारूद भीग गयी है, ये लोग ढँक रहे थे मैंने मना कर दिया।"

यारजान ने कहा, "आप एक बार नवाब के पास हो आइए, कई बार बुलवा चुका है, नहीं जाने पर शक करेगा।"

"अरे नहीं, इस वक्त जरा-से शक से बना-बनाया खेल बिगड़ जायेगा। चलो!"

●

लेकिन उधर फिरंगी छावनी में तहलका मचा हुआ था। इस बरसते पानी में ही अगर नेटिव हमला कर बैठे? लेसिंग्टन मारा गया था, उस जैसे बहुत-से और भी सिपाही मारे जा चुके थे। सिपाही नहीं चाहते कि लड़ाई हो। सभी मन ही मन बहुत घबड़ा रहे थे।

"रुपये के लिए क्या हम लोग जान देने आये हैं? हमारी जान की क्या कोई कीमत ही नहीं है?"

वर्दियाँ पानी में भींगकर बदन से चिपक गयी थीं। तभी देखा, कर्नल आ रहा था।

"कौन कहता है कि वह नहीं लड़ेगा?"

हाथ की पिस्तौल को ऊँचा करके क्लाइव ने कहा, "कौन है वह, आये मेरे सामने!"

चारों ओर सनसनी छा गयी, किसी को हिम्मत नहीं हो रही थी कि आवाज निकाले।

"बारिश हो रही है तो क्या हुआ? तुम लोग क्या मिट्टी के बने हो? पानी से क्या आदमी मर जाता है? लड़ाई के लिए आने के माने ही मरने आना है। इस दुनिया में हमेशा रहना ही किसे है? एक न एक दिन तो सभी को मरना होगा। अब बोलो, तुममें से कौन है जो जिन्दा रहना चाहता है? तुम? यू?"

सब चुप थे। जवाब देता भी कौन?

क्लाइव ने फिर कहना शुरू किया, "सब लोग लेक की ओर चले जाओ, जाकर ट्रेञ्च बनाओ और वहाँ से एनिमी लाइन पर फायर करो। जाओ! क्विक!"

आर्डर होते ही सब के सब मशीन की तरह खाईं की ओर चले गये।

"फायर! फायर!"

क्लाइव के अंदर जैसे एक साथ दस क्लाइव घुस आये थे। अकेले आदमी में

तनी हिम्मत !

क्लाइव ने पास खड़े आयरकूट से पूछा, "जनरल लॉ कब तक आ रहा है ? कोई खबर मिली ?"

"नो कर्नल !"

"अगर लॉ आ जाता है तो मरने के लिए तैयार रहो। यहाँ से कोई एक कदम भी पीछे नहीं हट सकता। नवाब की कैद से मरना कहीं अच्छा है। लेकिन कम्पनी के नाम पर धब्बा नहीं लगना चाहिए। फायर !"

अचानक लगा कि नवाब की आर्मी दायीं ओर हट रही है।

"कूट, वे लोग उस ओर क्यों जा रहे हैं ?"

मेजर कूट की समझ में भी कुछ नहीं आ रहा था। आश्चर्य से वह भी उस ओर देखने लगा।

"वे लोग क्या हमें एनसर्किल करने के लिए बढ़ रहे हैं ?"

"नहीं कर्नल, यह कैसे हो सकता है ? मीर जाफर ने हम लोगों को वर्ड दे रखा है।"

"कुछ कहा नहीं जा सकता। नवाब के अमीर-उमरावों का मुझे जरा भी यकीन नहीं है। ये लोग गॉड को भी चिट्ट कर सकते हैं।"

अचानक तभी फ्लेचर आ पहुँचा।

"क्या खबर है, फ्लेचर ?"

फ्लेचर ने कहा, "मीरमदन के मर जाने से नवाब काफी नर्वस हो गया है।"

"वेरी गुड ! जनरलों का क्या कहना है ?"

"मोहनलाल एक साथ मिलकर फाइट करने के लिए कह रहा है। राजा दुर्लभराम, यार लुत्फ खाँ और मीर जाफर कोई भी फायर नहीं कर रहे हैं।"

"वह सोने का क्या खो गया था, मिला ?"

"नहीं, नवाब के एक फ्रेन्ड ने सारे खिदमतगारों को बेंत लगाने का हुक्म दिया था लेकिन नवाब ने जाकर उसे खूब फटकारा और बेंत न लगाने का हुक्म दिया।"

"क्यों ?"

"नवाब घबड़ा गया है। अगर इस तरह मारपीट करने से ये लोग रिवोल्ट कर बैठें तो।"

"और मीर जाफर ! उसकी क्या खबर है ?"

फ्लेचर ने कहा, "मीर जाफर ने यह लेटर आपके नाम दिया है।"

कहकर फ्लेचर ने एक खत क्लाइव की ओर बढ़ा दिया।

क्लाइव जल्दी से लिफाफा फाड़कर पढ़ने लगा।

लिखा था, 'डियर कर्नल, तुम्हें जानकर खुशी होगी कि हमारी सारी बारूद और गोले भीगकर बेकार हो गये हैं। राजा दुर्लभराम, यार लुत्फ खाँ और मेरी फौज ने तुम्हारी फौजों पर एक भी गोली नहीं चलायी। मुझे इस बात का [illegible]

कि तुम्हारे बीस सिपाही और तुम्हारा अजीज लेसिंग्टन लड़ाई में काम आये। हमारे ओर के भी काफी सिपाही मरे हैं। मीरमदन मारा गया है। नवाब के आगे मुझे बां। और कोई चारा नहीं है, देखो क्या होता है।'

खत को मोड़ते हुए कहा, "रियल स्काउण्ड्रेल, अपना वादा पूरा किया है।"

आयरकूट पास ही खड़ा था। वह आश्चर्य में पड़ गया।

उसने पूछा, "रियल स्काउण्ड्रेल क्यों कह रहे हो कर्नल ?"

"रियल स्काउंड्रेल नहीं है ? नवाब ने जितने लोगों पर भरोसा किया है, सभी स्काउंड्रेल हैं। नवाब का नसीब ही खराब है ! सभी, सभी नवाब के अगेन्स्ट हैं। जगत्-सेठ से शुरू करके अमीचन्द, मीर जाफर तक सभी ! इंडिया का सचमुच दुर्भाग्य है।"

कूट फिर भी समझ न सका। कहा, "इसमें तो हमारा ही भला है कर्नल ! फिर तो हम जीत जायेंगे।"

क्लाइव यह सुनकर हँसा। एक शब्द भी वह न बोला। जरूर हमारा भला होगा। जरूर हम जीतेंगे। हम, तुम, सभी आज जैसे हैं, बाद में भी रहेंगे। हममें से कोई न जीतेगा। जीतेगी बस कम्पनी। ईस्ट इंडिया कंपनी के शेयर-होल्डर्स ही जीतेंगे। डिविडेंड में उनको मोटी रकम मिलेगी। वे अपना मकान बनायेंगे, बढ़िया गाड़ी खरीदेंगे और औरतें लेकर ऐश करेंगे। लेकिन हम अपने बाल-बच्चों से दूर मच्छर-मक्खी-साँपों के बीच जंगल में रहकर और किस तरह ज्यादा-से-ज्यादा लोगों का खून बहाया जाय इसी का प्रयत्न करेंगे। फिर जरूरत पड़ी तो लेसिंग्टन की तरह मुए में मारे भी जायेंगे।

क्लाइव वहीं से खड़े-खड़े चिल्लाया—"फायर ! फायर !"

इस घटना के बहुत दिनों बाद कर्नल क्लाइव इंग्लैंड लौटकर ये ही सब बातें भूलने की कोशिश करता था। सभी जानते थे कि लार्ड क्लाइव बस लार्ड ही नहीं, इंग्लैंड का सबसे अधिक धनी है। वह बेहद दौलत, ऊँचा खिताब, काफी जायदाद और रोबदाब का आदमी है।

पत्नी आकर पूछती, "क्या सोच रहे हो ?"

सहसा मानो लार्ड क्लाइव नींद से जाग पड़ता था। बंगाल के उस बैटल-फील्ड की बात याद आती। नवाब सिराजुद्दौला की बात याद आती। मीर जाफर, अमीचंद, जगत्सेठ और नवकृष्ण की बात याद पड़ती। फिर याद पड़ती मेरी विश्वास की बात !

"ताश खेलेंगे ?"

"ताश ?"

कभी-कभी दमदम के बगान-बाड़ी के बरामदे में बैठकर भी क्लाइव ने ताश खेला था। मामूली एक लड़की। बेगम मेरी विश्वास अपने जीवन का इतिहास क्लाइव को सुनाती थी। चारों तरफ से झींगुर की आवाज आती थी। थोड़ी दूर पर मिलिटरी बैरक था। वहाँ हाथी-घोड़ा-ऊँटों की भीड़ थी। वहीं सिपाही शराब पीकर हो-हल्ला मचाते रहते थे।

पीलखाना और मुतुरखाना के पीछे बड़े-बड़े दरख्त थे। ताश खेलते हुए उधर देखने पर कृष्णचूड़ा का एक पेड़ दिखायी पड़ता था, जिसमें उस समय अनेक लाल-लाल फूल खिले होते थे। बँगला में उस पेड़ का नाम था कृष्णचूड़ा और अंग्रेजी में—फ्लेम ऑफ दि फॉरेस्ट। वन की आग। वन की अग्नि-शिखा। क्लाइव के अपने जीवन में ही मानो हजारों लपटों में उस पेड़ की डालियों में जल उठी थी। और इंडिया? इंडिया तो उस समय अग्निगर्भ था ही। उस समय मानो सारे भारत में फ्लेम ऑफ दि फॉरेस्ट हो था! नवाब सिराजुद्दौला, फिर मीर जाफर अली, फिर मीर कासिम...

"ताश खेलेंगे?"

क्लाइव कहता, "नहीं, अभी ताश खेलने को मन नहीं कर रहा है।"

बेगम मेरी विश्वास भी कहती, "हाँ, मुझे भी अच्छा नहीं लग रहा है।"

फिर बेगम मेरी विश्वास कृष्णचूड़ा के उस पेड़ की ओर देखती रहती। अब कोई डर नहीं था। मराली अब किसी से नहीं डरती थी। एक दिन न जाने किस अशुभ क्षण में क्लाइव भारत आया था कि सारे देश को उसने तहस-नहस करके रख दिया।

एक दिन बेगम मेरी विश्वास चोरी-छिपे रो रही थी।

"क्या हुआ? रो क्यों रही हो?"

"कुछ तो नहीं हुआ।"

बेगम मेरी विश्वास ने साड़ी के आँचल से अपनी आँखें पोंछ ली थी।

लेकिन क्लाइव को सब कुछ मालूम था। एक-एक कर सभी कहानियाँ जिस तरह उद्धवदास सुनता था, उसी तरह क्लाइव भी सुनता था। उद्धवदास रायगुणाकर भारतचन्द्र की तरह काव्य लिखने लगा था। लेकिन क्लाइव? उस समय तो रॉबर्ट क्लाइव ही बिहार-बंगाल-उड़ीसा का नवाब-फौजदार-सूबेदार था। रॉबर्ट क्लाइव के एक हुक्म से उस समय राज्य बनता और बिगड़ता था। फिर भी क्लाइव साहब के विधाता में भी वह क्षमता नहीं थी कि बेगम मेरी विश्वास का दु:ख मिटा दे।

"शहर से दूर एक गाँव के जमींदार के नौकर के घर मैं पैदा हुई थी। लेकिन भाग्य के किस विधान से आज मैं राजरानी हो गयी हूँ। मेरे साथ कितनी ही बेगमें चेहल-सुतून में थीं—गुलशन बेगम, पेशमन बेगम, तक्की बेगम, बब्बू बेगम, नानी बेगम और लुत्फुन्निसा बेगम। आज वे सब कहाँ गयीं? मैं भी कहाँ आ गयी? उस समय मेरे पास दौलत नहीं थी, आज है।"

बात करते-करते कभी-कभी बेगम मेरी चौंक पड़ती। कहती, "तुमने नवाब को क्यों मारा? नवाब ने तुम्हारा क्या बिगड़ा था? वह अगर दुनिया के किसी कोने में जिन्दा रहा आता तो कम्पनी का क्या बिगड़ जाता?"

इस बात का कोई जवाब नहीं था, इसलिए रॉबर्ट क्लाइव चुप रहता। कुछ भी जवाब वह नहीं देता था। फिर जवाब देता भी तो क्या? क्लाइव क्या खुद ही जानता था कि ऐसा होगा? क्या वह जानता था कि मनुष्य की प्रतिहिंसा इस तरह

अपनी प्यास बुझायेगी ?

इस तरह अगर किसी की प्रतिहिंसा परितृप्त न होती तो क्या मराली यह क्लाइव की बगानबाड़ी में आकर बेगम मेरी विश्वास कहलाती ? और न कान्त के उस तरह...

लेकिन कान्त के बारे में भूल जाना ही अच्छा है। उसकी बात अभी रहने

केवल कान्त ही क्यों, घसीटी बेगम, अमीना बेगम, नानी बेगम वगैरह की बात अभी रहने दें। इतिहास में जब क्रांति होती है, तब कौन अपना और कौन पराया, कौन दोस्त और कौन दुश्मन इसका विचार नहीं किया जाता। बिना देखे भाले मनुष्य की प्रतिशोध-कामना चरितार्थ होती है। रोना तो बाद की बात है, पहले बात होती है इच्छा की पूर्ति। इस तरह इच्छा की पूर्ति करते हुए ही इतिहास अपना गति-पथ सुगम बनाता है।

नहीं तो ठीक भोर में ही हतियागढ़ का डिहीदार रजा अली मुर्शिदाबाद क्यों आता ?

२४ जून का वह सवेरा। सारे शहर में उस समय उथल-पुथल मची थी, लोग बाग सड़क पर निकल आये थे और सभी एक-दूसरे को पूछने लगे थे—क्या हुआ और क्या ठीक उसी समय डिहीदार रजा को भी आना था ?

रजा अली होशियार आदमी था। सीधी उँगली घी नहीं निकलता, यह रजा अली की तरह उन दिनों और कोई नहीं जानता था। नौकरी में तो सभी तरक्की चाहते हैं। खुशामद करके, बढ़िया काम दिखाकर या पाँव पकड़कर, नहीं तो हाथ जोड़कर तरक्की होती ही है। लेकिन जो उपाय सबसे अचूक था उसी उपाय को रजा अली हमेशा काम में लाता आया, वह है ऊपर वाले को खुश करना। ऊपर वाले को खुश करने के लिए उसकी कमजोरी को जानना जरूरी है। फिर उस कमजोरी का पता लग जाय तो और क्या चाहिए ? फिर उसी कमजोरी को जरा-सा सहलाया कि काम बना !

रजा अली का ऊपर वाला था मेंहदी निसार और मेंहदी निसार की कमजोरी थी औरत !

हतियागढ़ के छोटे सरकार की दूसरी पत्नी को चेहल-सुतून भेजकर रजा अली ने समझा था, अब मेरी उन्नति निश्चित है।

लेकिन दिन बीत गये, महीने बीत गये, साल भी बीत चले लेकिन उन्नति का नाम भी किसी ने नहीं लिया।

आखिर रजा अली का माथा ठनका। निजामत का इतना बड़ा काम किया लेकिन उसकी उन्नति नहीं हुई, इससे वह समझ गया कि कहीं जरूर कोई गड़बड़ी है। तब रजा अली ने फिर से जोर लगाया। हतियागढ़ के राजमहल के आसपास अपने आदमी रख दिये लेकिन उससे भी कुछ नहीं हुआ। वे आदमी बेकार साबित हुए। काफी सोच-विचार के बाद मामला साफ हो गया। राजमहल में रानी बीबी नहीं

फिर शोभाराम की लड़की कहाँ गयी? शोभाराम की लड़की को अगर रानी बीबी कहकर भेजा गया है तो रानी बीबी कहाँ छिपा दी गयी?

इसी चिन्ता से रजा अली पागल हो उठा।

फिर एक दिन उस पागल से भेंट हो गयी।

पागल था उद्धवदास भगत। पागल किस्म का आदमी, गाता फिरता था और दो मुट्ठी खाने को मिल गया तो खुश। उसी उद्धवदास ने खबर दी।

रजा अली ऐसे किसी की खातिर नहीं करता। लेकिन उस दिन उसने उद्धवदास की बड़ी खातिर की। पान-जर्दा-किमाम खिलाया।

फिर पूछा, "तुम ठीक जानते हो न?"

उद्धवदास ने कहा, "मैं ठीक नहीं जानूँगा तो कौन जानेगा?"

रजा अली ने पूछा, "फिर?"

उद्धवदास ने कहा, "फिर प्रभु, मेरी बीबी ने मुझे भगा दिया।"

"तुम्हारी अपनी बीबी ने तुम्हें भगा दिया?"

"मेरी बीबी मुझे क्यों भगायेगी? मेरी बीबी से तो उस औरत ने भेंट ही नहीं करने दी। साहब ने उस औरत को कितना समझाया। क्लाइव लेकिन आदमी अच्छा है।"

"साहब ने भेंट करने देना चाहा था?"

"हाँ प्रभु, उस औरत ने ही तो भेंट करने नहीं दी।"

"वह औरत कौन है?"

"वह मेरी बहू की नौकरानी है प्रभु! मेरी बहू की खिदमत करती है। लेकिन वह औरत है बड़ी तेज! मुझे देखते ही मारने दौड़ती है।"

"वह औरत देखने में कैसी है?"

उद्धवदास ने उस औरत के चेहरे-मोहरे का जो वर्णन किया उससे वह हातियागढ़ की नौकरानी दुर्गा ही लगती थी।

रजा अली को उसी दिन शक हुआ। इतने दिनों तक रजा अली ने ड्योढ़ीदार का काम किया लेकिन इतना बेवकूफ कभी नहीं बना था। उसने कलकत्ते बागबाजार में पेरिन साहब के बगीचे में अपना आदमी भेजा। उसी आदमी ने लौटकर बताया कि वहाँ कोई नहीं है। सभी चले गये हैं। क्लाइव साहब भी लड़ाई करने के लिए फौज लेकर नवद्वीप की ओर रवाना हो गया है।

फिर कई दिनों तक परेशानी बनी रही। आखिर में कृष्णनगर में पता चला।

अतिथिशाला की भीड़ में रजा अली का आदमी हिन्दू के भेस में छिपा था। वहीं उसने देखा कि उद्धवदास भी है। फिर एक दिन और रहते ही उसे पता चला कि राजमहल में बाहर से दो औरतें आयी हैं। उन दोनों औरतों के लिए अलग से खाने-पीने का इंतजाम हुआ है। क्लाइव साहब जिस दिन लड़ाई के लिए [illegible] उसी दिन ये औरतें यहाँ आयी थीं। कृष्णनगर के राजमहल में

उस जासूस ने आकर रजा अली को बतायीं।

रजा अली ने कुछ नहीं कहा। बस नुकीली मूंछों की नोकों को और भी नुकीला करते हुए कहा, "तोबा! तोबा!"

फिर जो कुछ करना था रजा अली ने दूसरे ही दिन किया। अब अपने आदमी के जरिये नहीं। नौकरी में तरक्की पाने के लिए खुद जाकर मेंहदी निसार को [illegible] देनी होगी। रात रहते ही रजा अली फिरंगी की पीठ पर बैठ गया। नवाब कहीं भी रह कोई हर्ज नहीं। मेंहदी निसार के रहने से ही काम बनेगा। निसार साहब का शागिर्द मंसूर अली भी रहे तो कोई हर्ज नहीं। दफ्तर छोड़कर वे सब जायेंगे भी कहाँ?

भोर में ही मुर्शिदाबाद पहुँचकर रजा अली आश्चर्य में पड़ गया। इतना शोर-गुल कैसा है? चौक बाजार में सवेरे तो इतनी चहल-पहल नहीं रहती?

माँझी-मल्लाह पास खड़े काँप रहे थे। एक बार जब मेंहदी निसार के आदमी से पाला पड़ा है तब किसी का भी बचना मुश्किल है, यह सभी समझ गये थे।

उधर कान्त शराफत अली की दुकान से अशर्फियाँ लाने गया था।

लेकिन बशीर मियाँ ज्यादा देर इंतजार न कर सका। वह धीरे-धीरे चलने लगा। फिर क्या निजामत बरबाद हो गयी? फिरंगी फौज क्या चौक बाजार में भी पहुँच जायेगी?

"क्या हुआ भैया?"

एक ने जवाब दिया, "सुना, निजामत खत्म हो गयी है।"

"धत् बेवकूफ!"

बेवकूफ नहीं तो और क्या? निजामत कैसे खत्म हो जायेगी? नवाब क्या मर गया? मेंहदी निसार क्या मर गया? यह सब क्या कह रहा है बेवकूफ की तरह? अभी तेरी नाक पर घूंसा जमाकर चेहरा चपटा कर दूंगा!

बशीर मियाँ ने यह सब अपने मन में कहा, लेकिन हाल कुछ ठीक नजर नहीं आ रहा था। वह धीरे-धीरे चलता बना। बुरी खबर शायद हवा से भी तेज जाती है। फिर क्या सचमुच कोई बुरी खबर आ गयी?

सड़क पर चलते हुए अचानक किसी की आवाज कानों में पहुँचते ही बशीर मियाँ ने मुड़कर देखा।

डिहीदार रजा अली था।

"अरे बशीर मियाँ, तू?"

बशीर मियाँ ने सलाम किया।

"सलाम अलैकुम जनाब! राजधानी में कैसे तशरीफ लाये?

हतियागढ़ होता तो रजा अली बशीर मियाँ से सीधे मुंह बात भी न करता। लेकिन मुर्शिदाबाद की बात अलग है। बशीर मियाँ ठहरा खास राजधानी का आदमी, फिर मंसूर अली मेहर उसका फूफा था!

फिरंगी की पीठ पर बैठे-बैठे रजा अली ने कहा, "मेंहदी निसार साहब से भेंट

रने आया हूं। निसार साहब शहर में हैं क्या ?"

वशीर मियां ने कहा, "हां जनाब, निसार साहब तो शहर में ही हैं, लेकिन स समय जरा परेशान हैं।"

"क्यों ? क्या परेशानी हुई ?"

बशीर मियां ने कहा, "वह बहुत लम्बा किस्सा है जनाब ! मेंहदी निसार साहब स समय आपसे भेंट न कर सकेंगे। इस समय निसार साहब के जिम्मे बहुत ाम है।"

रजा अली ने कहा, "इससे क्या ? मैं भी जरूरी काम से आया हूं।"

फिर चारों तरफ देखकर उसने पूछा, "इतना शोरगुल क्यों हो रहा है ?"

"क्या मालूम साहब, कोई कहता है, निजामत खत्म हो गयी है।"

"अरे ? खत्म हो गयी का मतलब ? ये लोग बेवकूफ हैं क्या ? खैर, कोई कुछ ी कहे, मेरा काम बहुत जरूरी है।"

"कैसा ?"

"तू किसी से बतावेगा तो नहीं ? बड़ी बेवकूफी हो गयी है बशीर ! असल नी बीबी समझकर उस बार जिसे चेहल-सुतून भेजा था, वह असल रानी बीबी हीं है।"

बशीर मियां को भी अचंभा हुआ। पूछा, "क्या कहते हैं जनाब ?"

"हां रे बशीर, बेवकूफी हो गयी थी। उस बार जिसे चेहल-सुतून भेजा था वह ियागढ़ के जमींदार के नौकर की लड़की थी। असली रानी बीबी तो कृष्णनगर के ाजमहल में छिपी है।"

बशीर मियां के सर पर जैसे बिजली गिरी !

रजा अली ने कहा, "हां, मेरा आदमी खुद रानी बीबी को देख आया है।"

फिर मरियम बेगम समझकर मेंहदी निसार ने किसको गिरफ्तार किया है ? ह कौन है ? वह क्या रानी बीबी नहीं है ?

"आप क्या कहते हैं जनाब ? रानी बीबी को गिरफ्तार कर आज मेंहदी िसार साहब ने मोतीझील में रखा है। अभी थोड़ी देर पहले निसार साहब [illegible] ये हैं।"

रजा अली मुस्कराया। बोला, "अरे धत् ! वह रानी बीबी नहीं है, वह हतिया- ढ़ के राजमहल के नौकर शोभाराम की लड़की नसीबन है। असली रानी बीबी [illegible] ष्णनगर के महाराजा की हवेली में छिपी है।"

"लेकिन हतियागढ़ के राजा छोटे सरकार को तो मेंहदी निसार ने [illegible] क्या है।"

"ताज्जुब की बात है !"

बशीर मियां ने कहा, "चलिए जनाब, [illegible] ाहब को यह सब बताना जरूरी है।"

फिर उसी भीड़ में से दोनों चलने लगे। रजा अली घोड़े की पीठ पर था औ
बशीर मियाँ पैदल।

लेकिन अचानक उधर से दो तामजान आते दिखाई पड़े। तामजान देखकर पत
चला कि आगे वाला नानी बेगम का है और पीछे वाला मेंहदी निसार का। सामने
तामजान दोनों चले गये। बशीर मियाँ कुछ भी न समझ सका। इतने भोर
बेगम मोतीझील में क्या करने आयी थीं? फिर चली भी क्यों जा रही हैं?

सबके पीछे दौड़ता हुआ पीर अली जा रहा था।

बशीर मियाँ ने उसे बुलाया, "पीर अली खाँ, क्या हुआ? नानी बेगम साहब
कहाँ जा रही हैं?"

"चेहल-सुतून!"

"क्यों? रात में मोतीझील क्यों आयी थीं?"

"यह नहीं मालूम।"

"चेहल-सुतून में क्या हुआ है? चारों तरफ इतना शोर क्यों हो रहा है?"

पीर अली खाँ ने कहा, "नवाब लड़ाई से वापस आये हैं।"

इतना कहकर पीर अली खाँ रुका नहीं, वह तामजान के पीछे-पीछे चेहल-सुत
की ओर दौड़ने लगा।

०

मुझे मालूम है, तुम सबने नकाब लगा रखी है। मुँह से भले ही मैं कुछ न कहूँ
लेकिन मीर जाफर, तुम दगा नहीं दे सकते। नया समझकर तुम अब तक मेरी तौहीन
करते रहे, बदले में मैंने भी अब तक तुम्हारी तौहीन करके जता दिया कि मैं नया नहीं
हूँ। लेकिन आज तुम्हारी बुद्धि के साथ मेरी मुसीबत का मुकाबिला हो जाय!

"अच्छा अली साहब, आपको शायद याद होगा कि यहाँ आने से पहले आपने
कुरान शरीफ हाथ में लेकर कसम खायी थी कि आप मेरे खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं
करेंगे?"

मीर जाफर इतनी देर से खड़ा नवाब की बातें सुन रहा था। उसने जवाब
दिया, "वह तो मैं अब भी कहता हूँ आलीजाह!"

"आप सचमुच मेरी खिलाफत नहीं कर रहे हैं?"

"आलीजाह, कुरान शरीफ गवाह है!"

नवाब मिर्जा मुहम्मद ने गद्गद भाव से आगे बढ़कर मीर जाफर को सीने से
लगा लिया।

"लेकिन अली साहब, फिर मुझे इतना डर क्यों लग रहा है?"

"डर किस बात का आलीजाह?"

अचानक तभी बड़े जोर से तोप गरजने की आवाज हुई।

नवाब ने कहा, "देखिए, उन लोगों की तोपें गोले बरसा रही हैं, लेकिन हमारे

तोपें खामोश क्यों हैं ?"

मीर जाफ़र जल्दी से उठकर बाहर जाने लगा।

उसने कहा, "मैं जाकर देखता हूँ, आखिर बात क्या है ?"

नवाब ने कहा, "रुकिए अली साहब, मैं आज आपसे इस बात का फैसला कर लेना चाहता हूँ। मीरमदन जिंदा होता तो मैं आपको इतनी तकलीफ न देता।"

"लेकिन आलीजाह, मोहनलाल तो है।"

"देखता हूँ, आप अभी तक उस वाकये को भूले नहीं हैं—मैं आपसे अर्ज करता हूँ अली साहब, खाँ के आने तक आप किसी तरह सम्हाल लीजिए, सिर्फ एक या दो दिन के लिए। कल, नहीं तो परसों तक खाँ आ ही जायेगा फिर मुझे किसी बात की फ़िक्र न रहेगी।"

यारजान पास खड़ा सुन रहा था। उसने कहा, "हाँ, अली साहब, इस वक्त मुर्शिदाबाद की इज्जत आपके हाथ में है।"

उधर कर्नल क्लाइव चिल्ला रहा था, "किलपैट्रिक !"

किलपैट्रिक के सिपाही पीछे हट रहे थे। किलपैट्रिक अपने सिपाहियों को खाई की ओर ले जा रहा था।

"स्टॉप ! स्टॉप देयर !"

दौड़ते हुए कर्नल ने मेजर के पास पहुँचकर कहा, "यह तुम क्या कर रहे हो ?"

मेजर किलपैट्रिक ने कहा, "उधर से एनिमी ने फायरिंग बंद कर दी है, इसीलिए इन्हें हाइड-आउट की ओर ले जा रहा हूँ।"

"लेकिन मैं चाहता हूँ कि एनिमी आगे बढ़ आये !"

"इस तरह तो हम पिस जायेंगे।"

क्लाइव ने कहा, "लेकिन हमारे पीछे हटने पर तो वे लोग भी पीछे हटेंगे।"

"तब तो और भी अच्छा होगा। हमारे सोलजर्स को जरा रेस्ट मिलेगा।"

"लेकिन पहले रेस्ट जरूरी है या विक्ट्री ?"

"सिपाही मर जायेंगे तो विक्ट्री कैसे हासिल होगी ?"

"डान्ट आरगू ! बहस मत करो ! जितना भी हो सके आगे बढ़ो, इससे एनिमी लाइन्स नजदीक आ जायेंगी। मैं चाहता भी यही हूँ। मैं इस लड़ाई को ज्यादा प्रोलांग नहीं करना चाहता। जनरल खाँ के आने से पहले ही आइ वान्ट टु फ़िनिश इट अप। गो अहेड ! क्विक ! फायर !"

अचानक फिरंगी फौज में जैसे बिजली की-सी तेजी आ गयी। कुछ सेक्रिफ़ाइस तो करना ही होगा। जरूरत हुई तो सब मरेंगे। वी मस्ट डू ऑर डाइ ...फायर .. फायर....



खबर घसीटी बेगम के कानों तक पहुँची। अमीना बेगम के कानों तक भी

पहुँची। हरेक बेगम ने अपने महल में बैठकर यह खबर सुनी और बाँदी से बार-बा पूछा, "क्या हुआ है रे बाँदी ? क्या हुआ ?"

एक दिन अलीवर्दी खाँ के जमाने में भी उनकी बेटियाँ अब्बाजान के साथ सलाह मशविरा करती थीं। कैसे मसनद चलायी जाय इसी बारे में सलाह-मशविरा होता था जरूरत पड़े तो अपने मददगार को मार डालने से भी आनाकानी नहीं की जा सकती यह दुनिया बस ईमानदारी से नहीं चलती। यह दुनिया चलती है खून-खराबा, स और अशर्फियों के बल पर। अलीवर्दी खाँ बेटियों को यही शिक्षा देते थे। वे मुझे भी यह मसनद आसानी से नहीं मिली। नवाबी कायदे-कानून के मुताबिक गलत रास्ता नहीं कहा जा सकता। जब तक मसनद मेरे कब्जे में है, तभी तक नवाब हूँ। यही दुनिया का नियम है। इसलिए जैसे भी हो मसनद को बनाये रखन है। जब तक मैं मसनद पर बैठा हूँ, तभी तक लोग मुझे कोर्निश करते हैं। जब मैं ह जाऊँगा तब लोग दूसरे किसी को कोर्निश करेंगे। यह कानून हमेशा का कानून है। य कानून खुदाताला का कानून है, अल्लाहताला का कानून है। यह कानून कभी नह बदलता, कभी बदला भी नहीं और कभी बदलेगा भी नहीं।

उस समय अमीना बेगम, घसीटी बेगम, पयमाना बेगम सभी छोटी थीं। उस बचपन से वे अब्बाजान से ये ही सब बातें सुनती थीं और सीखती थीं कि किसे नवाब कहते हैं और किसे खून-खराबा या साजिश कहते हैं।

फिर एक-एक कर सभी बड़ी हो गयीं। सभी ने देखा, सूबा ए बंगाल के लोग के जीवन की एकमात्र आकांक्षा है बंगाल की मसनद पर बैठना। उसके लिए अग दूसरे मर्द के साथ सोना भी पड़े तो कम है। इससे किसी की जात नहीं जाती ब उसकी इज्जत बढ़ती है। इज्जत तो बस रुपये में है। प्रतिष्ठा तो रोबदाब और खित में है। इसलिए अलीवर्दी खाँ की बेटियों ने यही सीखा कि रुपये रहने पर सब कुछ रहेगा। चरित्र और स्वभाव यह सब तो गाँव-देहात के लोगों के लिए है। अमीर उमराव या बेगमों में यह सब नहीं होना चाहिए। ये सब उन्नति के रास्ते में बाधा हैं

इसलिए कमाओ दौलत और उड़ाओ मौज और किस तरह रोबदाब और नाम बरी बढ़े उसके लिए साजिश करो।

लेकिन मुश्किल हो गयी मिर्जा मुहम्मद के नवाबी मिलते ही !

साजिश का जाल निजामत के कोने-अँतरे में बिछ गया। अमीरों में, उमराव में और बेगमों में होड़ होने लगी।

अमीना बेगम के साथ मिर्जा का झगड़ा शुरू हुआ। घसीटी बेगम के स मिर्जा का झगड़ा हुआ। घसीटी बेगम के साथ अमीना बेगम का झगड़ा शुरू हुआ किससे किसका झगड़ा शुरू नहीं हुआ यही समझना मुश्किल हो गया।

सभी मनाने लगे, मिर्जा मुहम्मद मरे तो अच्छा हो। मिर्जा मुहम्मद के मरत ही मानो मसनद पर उसी का हक होगा।

जो बाँदी खबर लेकर आयी उसे बख्शीश में अशर्फी मिली।

घसीटी बेगम ने कहा, "तूने ठीक सुना है न ?"

"जी हाँ, छोटी बेगम, मैंने ठीक सुना है।"

"किससे सुना है ?"

"खोजा सरदार पीर अली खाँ कह रहा था और बरकत अली भी।"

"नानी बेगम कहाँ हैं ?"

"वे तो मोतीझील गयी हैं। दोनों नानी बेगम को बुलाने गये हैं।"

घसीटी बेगम ने देर नहीं की। बहुत दिनों से वह चेहल-सुतून में नजरकैद थी। लेकिन वह मोतीझील। उसके बड़े अरमानों का मोतीझील। मोतीझील के एक-एक पत्थर पर मानो उसका जीवन खुदा हुआ था। जहाँगीराबाद में पति रहता था लेकिन घसीटी बेगम का जीवन मोतीझील में ही बीतता था। अलीवर्दी खाँ ने बड़े लाड़ से बड़ी लड़की का नाम मेहरुन्निसा रखा था जो मेहर बन गया था। राजा राजवल्लभ भी उसे मेहर कहकर ही पुकारता था। हुसैन कुली खाँ भी कभी-कभी रात को उसके कमरे में आता था और धीरे से पुकारता था, मेहर! सब के बाद आया था नजर कुली खाँ। आह, कितना खूबसूरत था नजर कुली खाँ। संगमरमर की तरह उसके हाथ-पाँव और नाक-मुँह चमकते थे। इसीलिए घसीटी बेगम उसके लिए पागल बनी थी।

लेकिन आज वे सब कहाँ गये!

घसीटी बेगम ने पूछा, "देख तो, बाहर फाटक पर कौन है ?"

बाँदी ने कहा, "कोई नहीं है बेगम साहबा, आज चेहल-सुतून की रखवाली करने वाला कोई भी नहीं है।"

"और नवाब ? नवाब के साथ कौन आया है ?"

"नवाब अकेले ही आये हैं बेगम साहबा! आते ही चेहल-सुतून में लुत्फुन्निसा बेगम के पास गये थे। फिर वहाँ से निकलकर अमीर-उमरावों को बुला भेजा है।"

"क्यों ?"

"नवाब फिर फौज बनायेंगे, नयी फौज। फिर उसी फौज को लेकर फिरंगियों से लड़ेंगे।"

घसीटी बेगम ने सब सुना, फिर कहा, "तू एक काम कर सकेगी रबिया ? तू मुझे अपनी पोशाक दे सकेगी ? तू मेरी पोशाक पहन कर मेरे कमरे में बैठी रह और तेरी पोशाक पहनकर मैं बाहर जाऊँगी।"

"क्यों छोटी बेगम, बाहर क्यों जायेंगी ?"

घसीटी बेगम ने कहा, "अपनी पोशाक जल्दी दे! इस समय वक्त नहीं है और यही मौका है। यह मौका हाथ से निकल जायेगा तो दोबारा नहीं आयेगा।"

"लेकिन कोई अगर आपको देख ले छोटी बेगम ? कोई अगर पकड़ ले ?"

"कौन पकड़ेगा ? सभी तो इसी मौके की ताक में थे। इतने दिनों बाद मौका आया है अब इसे हाथ से जाने नहीं दूँगी। तू जल्दी अपनी पोशाक दे दे।"

रबिया ने घसीटी बेगम को अपनी पोशाक दे दी।

बहुत दिनों पहले घसीटी बेगम के मन में एक क्षीण आशा जागी थी कि उसी ा बेटा एक दिन बड़ा होकर मुर्शिदाबाद की मसनद पर बैठेगा। फिर वह अपने बेटे ी आड़ में रहकर बंगाल-बिहार-उड़ीसा की मालकिन बन बैठेगी। लेकिन वह लड़का ी चल बसा। फिर अमीना के बेटे को गोद लिया, जिसका नाम था अकरामुद्दौला। ोकिन वह भी मर गया। ग्यारह साल की उम्र में ही उस लड़के ने घसीटी बेगम ारी आशा चकना-चूर कर दी थी। लेकिन अब? अब उसे मिर्जा मुहम्मद ेकेगा?

"लेकिन अभी आप जायेंगी कहाँ छोटी बेगम?"

"घबड़ा मत! मैं लौट जाऊँगी। मुर्शिदाबाद की मसनद मुझे चाहिए।"

"लेकिन आप जायेंगी कहाँ?"

"तू किसी से बतायेगी तो नहीं न?"

"नहीं बेगम साहबा! बस मेरे तक ही बात रहेगी।"

घसीटी बेगम एकदम चलने के लिए तैयार थी, बोली; "नजर के पास जाऊँगी।"

"नजर कुली खाँ?"

रबिया को नजर कुली खाँ के बारे में सब कुछ पता था। इसी नजर कुली खाँ ने बेगम के कितने ही हीरे-जवाहिरात और गहने मार दिये थे। जिस दिन नवाब ने घसीटी बेगम को गिरफ्तार करने के लिए मोतीझील पर हमला किया था नजर कुली यह कहकर कि जवाहिरात और गहनों से फौज को अपनी ओर मिलायेगा, सब कुछ लेकर चम्पत हो गया था। अब इतने दिनों बाद घसीटी बेगम फिर उसी के पास जायेगी।

"तू एक बार बाहर जाकर देख तो आ रबिया, कि कोई है या नहीं।"

रबिया महल के फाटक पर जाकर चारों तरफ निगाह दौड़ाकर देखने लगी। चेहल-सुतून के अन्दर शायद कुछ लोग बातें कर रहे थे। कुछ लोगों के पाँवों की ...ट मिली। आज जैसे सब नियम बदल गये थे। आज चारों तरफ विशृङ्खलता ही थी। इंसाफ मियाँ ने नौबत बजाते-बजाते एकाएक टोड़ी राग का अलापना बन्द कर दिया था। हलकी अँधियारी में चेहल-सुतून का रूप ही मानो बदल गया था। ऐसे भोर में चेहल-सुतून में कोई खास चहल-पहल रहती भी नहीं। सभी यहाँ देर से सोकर उठते हैं। लेकिन आज पहली बार सभी जल्दी जाग गये थे।

घसीटी बेगम ने धीरे से कदम बढ़ाया।

और दिन होता तो महल के फाटक पर पहरेदार मिलता। घसीटी बेगम के महल पर पहरेदारों की कड़ी निगाह रहती थी। लेकिन आज सब सुनसान था। आज कहीं कोई नहीं था। बहुत दूर से किसी के चलने की आहट मिली। घसीटी बेगम ने बुरका पहन लिया था। इसलिए कोई उसे पहचान नहीं सकता था। फिर भी वह डरते हुए आगे बढ़ने लगी। लेकिन अलीवर्दी खाँ के जमाने में इस चेहल-सुतून में उसका कितना रोब-दाब था। नवाब की लाड़ली बेटी थी वह, इसलिए उसे कभी कोई चीज

माँगनी नहीं पड़ी। बिना माँगते ही मिल जाना इस नवाबजादी का नसीब था। फिर भी मन-प्राण से एक चीज जो नवाबजादी ने चाही थी, वह अभी तक कहाँ मिल सकी ? और वह चीज थी मसनद।

"कौन ? कौन है ?"

पहले ऐसा होता तो घसीटी बेगम डाँट देती। लेकिन आज उसका परिचय ही है। आज जो परिचय है उसके मुताबिक सर ऊँचा करके बात करना ही गुनाह है। आज बस वह कोर्निश कर सकती है और हुक्म तामील कर सकती है।

जिसने दूर से आवाज लगायी थी उसको अपना जवाब न मिला तो उसने और जोर से आवाज लगायी "कौन है ?"

अब घसीटी बेगम के मन में आया कि उस आदमी को डाँट दें।

लेकिन अपने को काबू में कर उसने जवाब दिया, "मैं रबिया हूँ।"

"कौन रबिया ?"

"घसीटी बेगम की बाँदी।"

अब कोई बाधा नहीं। एक और फाटक पार करते ही बाहर की दुनिया में पहुँच जायेगी। फिर तो नजर कुली, वह खुद ही और अशर्फियाँ और गहने होंगे। घसीटी बेगम को अपने जीवन में काफी दौलत मिली है—अपने बाप से, राजा राजवल्लभ से और नजर कुली से भी। बेगम से उसने लिया भी बहुत है, जिसमें से थोड़ा-बहुत भेंट के रूप में लौट भी आया है। अब तक वह सोना गहनों के रूप में बस शरीर की सुन्दरता की शोभा को निखारता रहा और जवानी में चार चाँद लगाता रहा, लेकिन अब वह खोयी इज्जत वापस दिलाने का भी काम करेगा।

तुम डरकर मुझे छोड़ गये थे नजर कुली खाँ ! तुम मेरी मदद करोगे कहकर मेरे सारे गहने और हीरे-जवाहिरात लेकर चले गये थे और वापस नहीं आये। लेकिन तुम्हारे संगमरमर-से शरीर को मैं कभी न भूल सकी। मैंने सुना है, जुआ खेल-कर तुमने सारी दौलत उड़ा दी है लेकिन मैं तुम्हें आज भी नहीं भूल सकी ! तुम बनारस से लौटकर फिर चौक बाजार में रहने लगे हो। मेरे साथ मुलाकात करने की तुमने कोशिश भी की है। लेकिन उस समय मैं तुमसे कैसे मिल सकती थी ? लेकिन अब तुमसे मिलने का मौका मिला है। अब तुम मुझे मदद दो नजर कुली खाँ ! अब मेरा दुश्मन खत्म हो चुका है। अब नवाब सिराजुद्दौला बरबाद हो चुका है। बस, यही मौका है नजर कुली खाँ, अब तुम मुझे मदद दो।

चौक बाजार की सड़कों पर उस समय काफी भीड़ थी। क्या सभी को मालूम हो गया था कि नवाब लड़ाई में हारकर भागा है। फिर भी सड़क पर चलते हुए घसीटी बेगम को डर लगने लगा।

सभी सभी से पूछ रहे थे—क्या हुआ भैया ?

फिर क्या किसी को अभी तक मालूम नहीं है ?

पूरब दिशा में उजाला होने लगा था। जुम्मा मसजिद की चारों मीनारें पर-

छाई की तरह आसमान की पृष्ठभूमि में दिखाई पड़ रही थीं।

घसीटी बेगम और तेज चलने लगी।

पीछे से किसी ने सीटी बजायी।

घसीटी बेगम और भी डर गयी।

"अरे यार, चेहल-सुतून की बेगम है। पैदल जा रही है।"

"अरे नहीं! यह कोई बेगम नहीं, कोई बाँदी होगी।"

किसी तरह उनको पीछे छोड़ घसीटी बेगम आगे बढ़ गयी। थोड़ी दूर आ जाने पर ही निश्चिंत हुआ जा सकता था। तुम्हारा अता-पता मेरी बाँदी ने बताया है, नजर कुली! मैंने सुना है, तुम बड़ी तकलीफ में हो! बड़ी ही तकलीफ में! लेकिन मैं क्या कर सकती थी बताओ? मुझे तो उस शैतान ने नजरक़ैद कर रखा था। बताओ मैं कैसे तुम से मिलती?

आज मैं आजाद हो गयी हूँ नजर कुली! आज मेरे पास जो कुछ भी है, सब अपने साथ ले आयी हूँ। मेरे जो गहने अब भी हैं उन्हीं का दाम तीन लाख रुपये है। इसी तीन लाख रुपये से तुम फौज इकट्ठा करो नजर कुली! इस समय नवाब भिखारी हो गया है। अब उसके पास न तो फौज है, न रुपये। अमीर-उमराव भी नहीं हैं। इसी समय तुम चेहल-सुतून पर हमला करो। फिर जैसे हुसैन कुली खाँ को मिर्जा ने मारा था उसी तरह तुम भी उसे मारो।

घसीटी बेगम ने बुरके में उस पोटली को और भी जोर से पकड़ लिया।

"कौन हो तुम?"

घसीटी बेगम किसी एक के आमने-सामने पड़ गयी थी। झट से दूसरी तरफ मुँह फेरकर वह आगे बढ़ी जा रही थी कि उस आदमी ने रास्ता रोक लिया।

कहा, "डरो नहीं, बताओ तुम कौन हो?"

घसीटी बेगम ने धीरे से कहा, "मैं घसीटी बेगम साहबा की बाँदी हूँ।"

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"रबिया।"

बुरके की वजह से चेहरा देख सकना मुश्किल था। फिर भी वह आदमी जैसे तेज निगाहों से घसीटी बेगम का चेहरा घूर रहा था।

फिर पूछा, "इस वक्त कहाँ जा रही हो?"

घसीटी क्या कहे कुछ सोच नहीं पा रही थी। लेकिन बिना जवाब दिये छुटकारा पाना भी मुश्किल था।

"बताओ, कहाँ जा रही हो?"

घसीटी बेगम ने कहा, "नजर कुली खाँ की हवेली में।"

"अरे, अब हवेली कहाँ है, अब तो वह झोपड़ा है झोपड़ा! खैर, वह तुम्हारा कौन होता है?"

"मेरा भाई।"

"लेकिन वहाँ किसलिए जा रही हो ?"

घसीटी बेगम के जी में आया, उस आदमी के गाल पर जोर का एक तमाचा रसीद कर दे। लेकिन वह पकड़े जाने के डर से चुप रही।

फिर पता नहीं क्या सोचकर उसने आहिस्ते से कहा, "मैं चेहल-सुतून से भागकर आ रही हूँ, वहाँ गड़बड़ हो गयी है।"

सुनकर वह आदमी जैसे चुप हो गया।

फिर उसने कहा, "लेकिन तुम तो गलत रास्ते से जा रही हो। तुम आओ मेरे साथ, मैं तुम्हें नजर कुली के घर पहुँचा देता हूँ।"

फिर भी घसीटी बेगम को हिलते न देखकर उस आदमी ने कड़ककर कहा, "आओ!"

दूसरा कोई चारा न देखकर घसीटी बेगम उसके साथ चलने लगी। आसपास सभी उनकी तरफ देख रहे थे। अच्छा ही हुआ, अब कोई उसे घूरेगा नहीं! शायद उस आदमी को नजर कुली का घर मालूम हो।

"पहले तुम कभी नजर कुली के घर गयी थी ?"

घसीटी बेगम ने कहा, "नहीं।"

"फिर ? तुम तो महिमापुर की तरफ जा रही थी। वह तो मोतीझील का रास्ता है। नजर कुली तो चौक बाजार में रहता है। आओ, तुम्हें ठीक जगह पहुँचा देता हूँ।"

घसीटी बेगम कोई उत्तर दिये बगैर चुपचाप उसके साथ चलने लगी।

नजर कुली के मकान के सामने आकर बहुत देर तक बुलाने पर भी कोई आवाज नहीं मिली। बाद में एक नौकर निकल आया। उसने कहा, "खाँ साहब कल रात को निकले हैं अभी तक नहीं लौटे।"

"कब लौटेंगे ?"

नौकर ने बतलाया, "वापस आने का कुछ ठीक नहीं है। हो सकता है न भी लौटें।"

घसीटी बेगम सुनकर मायूस हो गयी। इतनी मुश्किल से वह यहाँ आयी और मुलाकात तक न हुई। लेकिन जो कुछ भी करना है, अभी करना होगा। नवाब के लौटने से पहले ही सब कुछ कर लेना होगा।

तभी उस आदमी ने कहा, "अब कहाँ जाओगी ? चेहल-सुतून लौट जाओगी ?"

घसीटी बेगम ने कहा, "नहीं, नजर कुली के वापस आने पर उनसे मुलाकात करके ही जाऊँगी।"

"लेकिन तब तक कहाँ रहोगी ? आओ, मेरे साथ ही चलो।"

इतना कहकर उसने बेगम की हाँ या ना सुने बिना [illegible] पिछवाड़े जाकर पुकारा, "बादशाह!"

वादशाह दरवाजा खोलकर दंग रह गया, "वावू जी आप ? साथ में यह कौ
है ?"

"चेहल-सुतून की एक वाँदी है, अपने भाई के यहाँ जा रही थी, रास्ता भू
गयी थी इसलिए साथ ले आया हूँ, थोड़ी देर यहाँ रुकेगी।"

वादशाह दरवाजा खोलकर वाहर चला गया। घसीटी वेगम मन ही मन थ
थर काँप रही थी।

कान्त ने चारों ओर देख लिया। कहीं कोई नहीं था।

फिर कहा, "अव वोलो, तुम असल में कौन हो ?"

"पहले ही वतला चुकी हूँ, मेरा नाम रविया है।"

"वह ठीक है, लेकिन मैं असलियत जानना चाहता हूँ।"

इतना कहकर कान्त ने झट से वुरके की नकाव उलट दी। घसीटी वेगम नहीं
नहीं करते हुए दोनों हाथों से अपना चेहरा छुपाने लगी।

लेकिन तव तक कान्त चेहरा देख चुका था।

"तुम रविया नहीं हो, सच-सच कहो, तुम कौन हो ?"

घसीटी वेगम जोर से चिल्लाने जा रही थी—नहीं-नहीं-नहीं !

कान्त ने कहा, "चिल्लाने की कोशिश मत करो, वात फैल जायेगी—वोलं
तुम कौन हो ?"

घसीटी वेगम ने चेहरा छिपाते हुए जवाव दिया, "किसी से कहना मत,
घसीटी वेगम हूँ।"

घसीटी वेगम ! जिसका नाम कान्त इतने दिनों से सुनता आया था।

इसके वाद अपने माथे पर हाथ रखते हुए कान्त ने कहा, "कोई वात नहीं,
किसी से नहीं कहूँगा। मैं खुद चेहल-सुतून से भागकर आया हूँ !"

घसीटी वेगम ने चौंककर उस आदमी के चेहरे की ओर देखा। उसे न जा
कैसा शक हो रहा था। उसने कहा, "चेहल-सुतून से ? कौन हो तुम ?"

"किसी से कहियेगा मत, मेरा नाम मरियम वेगम है।"

इतना कहकर उसने ओढ़नी खोल डाली। फिर उससे वदन को छिपाते हुए उस
कहा, "यहाँ मुझे सभी कान्त कहकर पुकारेंगे। लेकिन आप किसी से वता न दें।"

०

२४ जून १७५७ का इतिहास वंगाल के चरम संधिक्षण का इतिहास है
इतिहास तो है ही लेकिन साथ ही लज्जा, अगौरव और पराजय का इतिहास भी है
उस दिन वंगाल की मसनद पर कोई नवाव नहीं था; नवाव था भी तो उसे नवाव क
मर्यादा नहीं मिली थी। उस नवाव का न तो कोई अस्तित्व था और न उसका को
अधिकार। ठीक उसी दिन निजामत पर अपनी हुकूमत कायम करने के लिए मेंहदं
निसार आ पहुँचा था। हतियागढ़ के छोटे सरकार हिरण्यनारायण का चरम अपमान भं

उसी दिन हुआ था। मरियम बेगम भी ठीक उसी दिन मोतीझील के कैदखाने में डाल दी गयी थी और घसीटी बेगम चेहल-सुतुन के हरम से चाँदी की पोशाक पहनकर चौक बाजार की सड़क से पैदल चली थी।

ठीक उसी दिन बंगाल-बिहार-उड़ीसा के नवाब मिर्जा मुहम्मद सिराजुद्दौला हैबत-जंग शाह कुली खान आलमगीर भी अकेले ऊँट की पीठ पर सवार चेहल-सुतुन के फाटक के सामने आया था।

इसी फाटक से मुर्शिद कुली खाँ से शुरू कर शुजाउद्दौला, सरफराज खाँ और अलीवर्दी खाँ वगैरह सभी एक दिन चेहल-सुतुन के अन्दर गये या बाहर निकल आये। लेकिन उनके आगे-आगे चलते थे हाथी, ऊँट, तामजाम, पालकी और घोड़े। नवाबी कायदे-कानून के मुताबिक उनका नवाब के आगे-पीछे चलना अनिवार्य था। इस कानून में थोड़ा हेर-फेर हो जाने पर पहरेदार या खिदमतगार की गर्दन बची नहीं रहती थी। लेकिन उस दिन, जिस दिन की बात कही जा रही है, ऐसा कुछ भी नहीं हुआ था।

"कौन हो तुम?"

पहरेदार भी [illegible] को चेहल-सुतुन में घुसने क्यों देगा? तुम कौन हो? तुम्हारे पास पंजा है कि नहीं दिखाओ, अपना नाम-धाम पहले बताओ, फिर देखा जायेगा तुम्हें चेहल-सुतुन में घुसने दिया जाये कि नहीं!

उस बेचारे का कसूर कोई दोष नहीं था। उस समय सारा मुर्शिदाबाद नशे में धुत पड़ा था। [illegible] नशा बड़ा भयंकर था। एक बार यह नशा करने पर [illegible] कुछ [illegible] हो जाता था। ठीक उसी समय [illegible] की तरह कोई फाटक के सामने आ खड़ा हुआ। ऊँट पर कोई बैठा था, यह भी दिखाई पड़ा। लेकिन वह आदमी कौन है पूछने [illegible] पता नहीं चल रहा था। [illegible] पहरेदार ने पूछ [illegible]।

"कौन हो तुम?"

फिर [illegible] पहरेदार को लगा था [illegible] अभी गिर पड़ा है! [illegible]!

लेकिन पहरेदार के [illegible] ऊँट फाटक के अंदर [illegible] गया। तब [illegible] है!

फिर पहरेदार ने [illegible] फाटक के [illegible]। वह भी आश्चर्य में पड़ [illegible] इशारा [illegible] था कि [illegible], नवाब [illegible]!"

"[illegible]?"

[illegible] नवाब [illegible] वह [illegible]

लड़ने गये हैं। लेकिन लौट क्यों आये ? क्या लड़ाई में फतह हो गयी ?

"नहीं चाचा, नवाब अकेले लौटे हैं।"

"साथ में फौज नहीं है ?"

हाँ, सही में तो, अब इंसाफ मियाँ को ख्याल आया। ऐसा तो कायदा नहीं है। नवाब अलीवर्दी खाँ जब उड़ीसा से, पूर्णिया से लड़ाई फतह कर लौटते थे उस समय की बातें तो इंसाफ मियाँ को याद हैं। छोटे शागिर्द को भी याद हैं। ये नवाब जब पूर्णिया से अपने भाई शौकत जंग को हराकर लौटे थे तो उस समय कुछ और ही नजारा हुआ था। फिर क्या वह टोड़ी राग बजाना बंद कर दे ?

"जय-जयवन्ती बजाऊँ ?"

"नहीं उस्ताद जी, मामला गड़बड़ लग रहा है।"

"कैसा गड़बड़ ? नवाब क्या हारकर भाग आये हैं ?"

"ठहरो उस्ताद जी, क्या हुआ है मालूम करके आता हूँ।"

इंसाफ मियाँ ने नौबत बजाना बंद कर दिया। छोटे शागिर्द नौबत-मंजिल की पत्थर की सीढ़ियों से झटपट नीचे उतर आया। नीचे आकर देखा, चेहल-सुतून का छोटा फाटक बिना पहरेदार के है। फिर बड़े फाटक पर गया। वहाँ भी पहरेदार नहीं था। इधर-उधर चारों तरफ वह देखने लगा। मशालची लोग पास ही सोते थे, वह गया। वहाँ भी कोई नहीं था। वह ताज्जुब करने लगा। क्या सभी ने रातोंरात निजामत की नौकरी छोड़ दी ? फिर बाहर से हो-हल्ला कानों में आया। सड़क पर लोगों की भीड़ थी। कैसी भीड़ ? किस बात के लिए भीड़ ?

फिर छोटे शागिर्द से खोजा सरदार पीर अली की भेंट हो गयी। पीर अली खाँ हाँफता हुआ बाहर वाले फाटक की ओर दौड़ रहा था।

छोटे शागिर्द भी उसके पीछे दौड़ा।

"क्या हुआ पीर अली खाँ साहब ? क्या नवाब लौट आये ?"

उस समय पीर अली खाँ के पास बात करने की फुर्सत न थी। कहा, "हाँ।"

"लेकिन आप कहाँ जा रहे हैं खाँ साहब ?"

"मोतीझील में। नानी बेगम साहबा को बुलाने।"

"नवाब क्या लड़ाई में हार गये हैं खाँ साहब ?"

लेकिन पीर अली खाँ ने उस बात का जवाब नहीं दिया। उसी अँधेरे में छोटे शागिर्द बेवकूफ की तरह खड़ा रहा। फिर नौबतखाने की सीढ़ी से ऊपर चढ़ने लगा।

नवाब मिर्जा मुहम्मद उस समय चेहल-सुतून के अंदर पहुँच गये थे। जानी-पहचानी जगह। बचपन से मिर्जा मुहम्मद इसी चेहल-सुतून में हैं। उस समय सभी सो रहे थे। आसपास कोई नहीं था जिसे हुक्म किया जाय। नियामत लक्काबाग में ही रह गया था। मानो नवाब के जीवन की आखिरी मर्यादा ही लक्काबाग में रह गयी थी।

फिर उस समय नियामत से कुछ कहने का मौका भी नहीं मिला था। जो शख्स अपने जीवन में दो-दो बार आत्महत्या करने चला था उससे लड़ने से पहले कम से कम

नवाब को दो बार सोच लेना चाहिए था ! मारजान ने कहा था, नवाब दो-दो बार खुदकुशी करने गया था।

नवाब ऊँट की पीठ से उतरा। ऊँट भी काफी थका हुआ था। लश्करबाग से भागते-भागते सिर्फ एक बार दाऊदपुर में रुका था।

डर था कि फिरंगी फौज नवाब का पीछा करेगी।

"मरियम बेगम साहबा !"

उस दिन पता नहीं क्यों नवाब ने महसूस किया था कि इस विपत्ति के दिन एक मरियम बेगम के सिवा उसका कोई अपना नहीं है। फिर याद आयी, मरियम बेगम तो चेहल-सुतून में नहीं हैं। फिरंगियों से लड़ाई करने जाते समय ही यह बात नवाब के कानों में पहुँची थी। किसी ने कहा था, मरियम बेगम भाग गयी हैं। किसी ने कहा था, मरियम बेगम कलकत्ते गयी हैं फिरंगियों से सुलह करने। लेकिन नवाब को विश्वास नहीं हुआ था।"

नवाब एक बंद दरवाजे के आगे खड़े होकर पुकारने लगा, "मरियम बेगम ! मरियम बेगम !

तभी नजर मुहम्मद वहाँ आया। वह नवाब को देखकर अवाक् हो गया था।

"खुदावन्द !"

नवाब ने उससे पूछा, "मरियम बेगम का महल कौन-सा है ?"

"खुदावन्द, मरियम बेगम साहबा तो महल में नहीं हैं।"

"नहीं हैं ? अभी तक वापस नहीं आयी ? आखिर कहाँ गयी हैं ? तुझे मालूम है ?"

अचानक तभी जैसे नवाब को लगा आज उसका कोई भी नहीं है, लेकिन कभी एक चेहल-सुतून की हर बेगम, हर चीज उसकी अपनी थी। पुश्तों से जमा होती दौलत के वजन से चेहल-सुतून के पत्थर तक वजनी हो गये थे, लेकिन आज सब खोखले हो गये। आज नवाब का कोई अपना नहीं।

"नजर मुहम्मद !"

कोई जवाब नहीं।

नवाब ने फिर पुकारा, "पीर अली ! बरकत अली ! नजर मुहम्मद !"

सारे चेहल-सुतून में जैसे मुर्शिदाबाद की मसनद के सारे नवाबों की अशरतनशीन रूहें चीख उठीं—खुदावन्द !

सत्ताइस साल के नवाब चौंककर चारों ओर देखने लगे। किसने आवाज दी ? किसने ?

तभी नवाब को नानी बेगम का ख्याल आया। वे नानी बेगम के महल की ओर चल दिये। शायद वे नमाज पढ़ रही होंगी। नानी बेगम के महल में पहुँचकर नवाब पुकारने लगे, "नानी साहबा ! नानी साहबा !"

अचानक घुँघरुओं की आवाज करती कोई आकर सामने खड़ी हो गयी, लेकिन

को सामने देख उसे लगा जैसे भूत देख लिया हो। डर से काँपती हुई उसने कहा,
ी बेगम साहबा तो मोतीझील गयी हैं!"

"मोतीझील में क्यों?

"यह तो नहीं मालूम आलीजाह!"

नवाब का शुबहा कि उसका कोई नहीं है, और पक्का हो गया। मैंने
किये हैं, मैं कसूरवार हूँ नानी बेगम साहबा! मरियम बेगम साहबा, मैंने तुम्हारे
ी बेइंसाफी की है। मेरे चले जाने के बाद तुम इस बात को सारी दुनिया में फैला देना
कि मैं गुनाहगार हूँ, मैं खुदगर्ज हूँ, लम्पट हूँ, चरित्रहीन हूँ! लेकिन इसके साथ ही दुनिया
को यह भी बतलाना कि मैंने इसके लिए पश्चात्ताप किया है। अफसोस और पछतावे की
आग मुझे रात-दिन झुलसाती रही है। मैंने अच्छा-बुरा जो भी किया है उसके लिए
पछता रहा हूँ। पछतावे के बाद अगर माफी मिल जाये तो मुझे और कुछ नहीं चाहिए।

अचानक सामने एक तामजान आकर रुका।

"नानी साहबा!"

"मिर्जा!"

मिर्जा मुहम्मद ने दोनों बाँहों में नानी बेगम को जकड़ लिया।

नानी बेगम की आँखें भर आयीं।

उन्होंने पूछा, "क्या बात है रे? ऐसा क्यों कर रहा है?"

"नानी जी, मैं लड़ाई में हारकर वापस आया हूँ।"

नानी बेगम ने कहा, "तो इससे क्या हुआ? तेरे नाना भी कितनी ब
तरह हारे थे, लेकिन इसमें घबड़ाने की क्या बात है? अरे, तू तो काँप रहा है

"नानी जी, अगर मैं हार गया होता तो कोई बात नहीं थी। लेकि
अफसोस तो इस बात का है कि मुझे हराया गया है। मेरे अपनों ने, मेरे अ
मुझे हराया है, उन्होंने जिन पर मैंने विश्वास किया था।"

"किसने ऐसा किया?"

"मीर जाफर ने।"

"लेकिन कहाँ? कैसे?"

"पूरी बात बतलाने का वक्त नहीं है नानी जी! फौरन जो कुछ
करना होगा, नहीं तो तुम्हें, अपने आपको, तुम्हारे इस चेहल-सुतून को और
को मैं बचा नहीं पाऊँगा।"

"किसने कहा कि तू मसनद को नहीं बचा पायेगा?"

फिर तभी नानी बेगम को अचानक ख्याल आया, नौबत बजना ब

अपने को मिर्जा के हाथों से छुड़ाते हुए नानी बेगम ने आ
अली!"

पीर अली खाँ और बरकत अली पास ही खड़े थे। पीर अली
कोर्निश की।

नानी बेगम ने कहा, "यह नौवत क्यों बंद हो गयी है ? नवाब के जंग से वापस आने पर क्या नौवत बजना बंद हो जाता है ?"

छोटे शागिर्द इंसाफ मियाँ के सामने बैठा नीचे रास्ते को ओर देख रहा था। ताज्जुब ! ऐसा तो उसने कभी नहीं देखा ! सब कुछ उलट-पुलट हो जायेगा क्या ? थोड़ी देर पहले नानी बेगम साहबा आमजान से बाहर गयी थीं, अब लौट आयीं।

उसने पूछा, "चाचा, अब क्या होगा ?"

इंसाफ मियाँ भी हैरान था। ऐसा तो कभी नहीं हुआ !

तभी बरकत अली ने दौड़ते हुए आकर कहा, "नौवत बंद क्यों कर दी है ? बजाओ !"

दोनों ही बरकत अली को देखकर अवाक् हो गये। बरकत अली ने कभी इस तरह नौवतखाने में आकर उनको हुक्म नहीं दिया था।

"क्या हुआ बरकत ?"

"नानी बेगम साहबा पूछ रही थीं, नौवत बजना रुक क्यों गया ? वे बजाने को कह रही हैं।"

"लेकिन सुना, नवाब लड़ाई में हारकर लौट आये हैं।"

बरकत अली बिगड़ गया।

"अरे नहीं बड़े मियाँ, नवाब भला लड़ाई में हार सकते हैं ! लक्काबाग में लड़ाई चल रही है। फिरंगियों की क्या हिम्मत कि नवाब को हरा दें। बजाओ, तुम बजाओ।"

"बजाऊँ ?"

"हाँ, बजाओगे नहीं तो क्या चुपचाप बैठे रहोगे ? देख नहीं रहे हो नौवत बजना बंद हो जाने से सड़क पर भीड़ जम गयी है, हल्ला हो रहा है।"

हाँ, यह बात तो है। इंसाफ मियाँ बूढ़ा हो गया था। शायद नये जमाने का कायदा वह समझ नहीं पाया था। जमाना बदल रहा है। नवाब अलीवर्दी खाँ के जमाने का कानून नवाब सिराजुद्दौला के जमाने में क्यों चलेगा ? यह तो है ही।

बरकत अली झटपट नीचे उतर गया।

इस बार इंसाफ मियाँ ने जय-जयवंती बजाना शुरू किया।

छोटे शागिर्द ने धुन सुनते ही तबले पर जोर से चाँटा मारा—क्या बात है ! ...त है !

●

ऐसा भी होगा यह मरियम बेगम भी समझ नहीं पायी थी। कहाँ था त्रिवेणी घाट, फिर वहाँ से मुल्लाहाटी। मुल्लाहाटी से वह भाग सकती तो मेहदी निसार के हाथ न पड़ती। फिर वहाँ से सीधे मोतीझील आना पड़ा।

उसके बाद ?

उसके बाद क्या हुआ, इस बारे में सोचने से पहले एक बार मराली ने कमरे में ...फ देखा। इस कमरे में मराली पहले कभी नहीं आयी थी। चारों तरफ से ईंट ...र से मजबूती से चिना हुआ था। उस समय वह समझ भी नहीं पायी थी कि वह कभी भाग भी सकेगी।

बाहर सच्चरित्र पुरकायस्थ घटक को देखकर वह एक बार चिल्लायी थी... बेगम साहबा को एक बार खबर कर दीजिए घटक महाशय !"

लेकिन उसके बाद काफी समय बीत गया था। कोई नहीं आया।

अचानक दरवाजा खुलते देखकर मराली चौंक पड़ी। क्या नानी बेगम ...यीं !

लेकिन नहीं। दरवाजे पर नानी बेगम नहीं, कान्त खड़ा था। पास ही सच्चरित्र ...कायस्थ भी खड़ा था।

कान्त ने कहा, "मराली, झटपट यहाँ से निकल भागो !"

"भागूँ ?"

मराली को जैसे तब भी यकीन नहीं हो रहा था।

"तुमने दरवाजा कैसे खोला ?"

सच्चरित्र ने कहा, "दरवाजा मैंने खोला है बेटी, नियामत मुझे सारी चाभियाँ दे गया था।"

कान्त ने कहा, "अब तुम आगा-पीछा न करो मराली !"

"लेकिन मेंहदी निसार कहाँ है ? बशीर मियाँ कहाँ है ?"

"वे इस समय कहीं और गये हैं। नानी बेगम यहाँ आयी थीं। मेंहदी निसार भी आया था। नानी बेगम ने तुम्हें छोड़ने के लिए मेंहदी निसार को हुक्म किया था। लेकिन अचानक नवाब के आने की खबर पाकर वे दोनों चले गये।"

"नवाब ? नवाब यहाँ कैसे ?"

"हाँ, सुना है नवाब वापस आ गये हैं, शहर भर में कुहराम-सा मचा हुआ है। न जाने क्या होने वाला है ? अभी शायद नवाब मोतीझील पहुँच जायेंगे लेकिन उस... पहले ही तुम भाग जाओ।"

"और तुम ? तुमको उन लोगों ने क्यों छोड़ दिया ?"

"मुझे नहीं छोड़ा मराली ! मैं रुपये देकर तुम्हें छुड़ाने के लिए शराफत... की दुकान पर गया था। इधर हो-हल्ला सुनकर बशीर मियाँ खुद अपनी फिक्र में... गया। अब शायद निजामत खत्म होकर रहेगी।"

"इसका मतलब ?"

"इसका मतलब मैं नहीं जानता ! चारों तरफ का माहौल देखकर ... रहा है। लेकिन यह सब सोचने का मौका अब नहीं है। खैर, भागने का ऐसा... फिर नहीं मिलेगा। सुन रही हो ! नौबतखाने की नौबत बन्द हो गयी है।"

"लेकिन मैं भागूँगी कैसे ? कोई पहरेदार तो नहीं है ?"

"पहरेदार हैं। लेकिन सच्चरित्र पुरकायस्थ का वे बहुत यकीन करते हैं। वह इस समय इब्राहिम खाँ हैं। तुम्हें इन्हीं के जिम्मे रखकर वे गये हैं।"

"लेकिन छोटे सरकार को क्या खबर है?"

"छोटे सरकार यहाँ हैं।"

"पहले उनको छोड़ दो।"

"उन्हें भी छोड़ देंगे, पहले तुम तो भागो!"

"यह नहीं हो सकता, पहले छोटे सरकार को छोड़ो। उनके यहाँ रहते मुझे छोड़ने से क्या होगा? फिर मैं छोटी बहूरानी के लिए यह सब करने क्यों गयी थी?"

कान्त सच्चरित्र की ओर देखने लगा।

"आप छोटे सरकार को छोड़ सकेंगे पुरकायस्थ जी?"

थोड़ी देर सोचता रहा पुरकायस्थ। यह नौकरी, यह धर्म-परिवर्तन, इतनी लांछना, इतना कष्ट सभी एकबारगी उसके दिमाग में घूम गये। थर-थर काँपने लगा वह बूढ़ा। सभी तो उसे इस जीवन में छोड़ना पड़ा। जो उसके अपने थे, वे भी उनको छोड़ चुके। अब जो है वह उसका पेट है। इसी पेट के लिए वह शराबखाने की नौकरी कर दिन काट रहा है। अगर यह नौकरी भी चली गयी, रहने की यह जगह भी चली गयी तो रहने को जगह और खाने को दो मुट्ठी अन्न अब उसे कौन देगा?

सच्चरित्र के बदन में जैसे अचानक नया खून दौड़ने लगा। इतने दिनों बाद इतने अन्याय के प्रायश्चित्त की बात उसे याद आयी।

उसने कहा, "ठीक है, मैं छोटे सरकार के कमरे का ताला खोले देता हूँ।"

"फिर आप क्या करेंगे? अगर वे आपको...."

सच्चरित्र ने कहा, "जो होगा देखा जायेगा भैया। मैं स्वर्गीय इंदीवर घटक का पुत्र, स्वर्गीय कालीवर घटक का पौत्र हूँ। ऐसे ही मेरे पितरों को मेरे हाथ का पानी नहीं मिल रहा है। मेरा और क्या नुकसान ये करेंगे? मैं जा रहा हूँ।"

कहकर सच्चरित्र एक ओर चला गया।

कान्त ने कहा, "अब तो हुआ? अब तो तुम्हें किसी बात की आपत्ति नहीं है?"

"लेकिन यहाँ कोई पहरेदार तो नहीं है न?"

"पहरेदार थे लेकिन हल्ला सुनकर सब बाहर गये हैं। पहरेदार सच्चरित्र को पहचानते हैं।"

"लेकिन तुम्हारा क्या होगा?"

"तुम मेरी फिक्र न करो। मैं मर्द हूँ, जैसे भी होगा भाग जाऊँगा। अभी जो हालत है, इस हालत में मैं तुम्हें छोड़कर भाग भी नहीं सकता।"

"लेकिन मैं भागकर जाऊँगी कहाँ?"

कान्त ने कहा, "आज भर के लिए शराफत अली की दुकान में रह लो, वहाँ बादशाह है। मेरा नाम लेते ही वह तुम्हें मेरी कोठरी में रहने देगा। हालत सुधरते ही

मैं वहाँ आ जाऊँगा। सच्चरित्र है न, उसके रहते मेरे बारे में न सोचो।"

"लेकिन अभी क्यों नहीं चलते ?"

"नहीं, यह नहीं हो सकता है। मेंहदी निसार अगर अभी वापस आ गया तो तुम्हें न पाकर सच्चरित्र की जान ले लेगा।"

"लेकिन छोटे सरकार भी तो भाग रहे हैं ?"

"छोटे सरकार के लिए वह इतना नाराज नहीं होगा जितना तुम्हें न पाकर होगा।"

"लेकिन मुझे तो बड़ा डर लग रहा है, तुम्हें कुछ हो गया तो ?"

कान्त ने कहा, "लेकिन मेरे मन में कम से कम इतनी तसल्ली तो होगी कि तुम निरापद हो। एक बार यहाँ से निकलकर फिर कभी यहाँ न आना। यह मुर्शिदाबाद बड़ी खराब जगह है। मैं भी कभी यहाँ नहीं आऊँगा।"

●

"फिर क्या हुआ ?"

घसीटी बेगम ने पूरी कहानी सुनकर कहा, "फिर क्या हुआ ?"

मराली ने कहा, "इसके बाद मैं उसे मोतीझील के कमरे में छोड़ उसके मर्दाने कपड़े पहनकर यहाँ चली आयी। अब वह जब तक नहीं आता मुझे यहीं रुकना होगा। आते वक्त मुझे बड़ा डर लग रहा था। लेकिन देखा, सभी नवाब और निजामत के लिए सर खपा रहे हैं। मेरी ओर ध्यान देने की फुर्सत किसी को नहीं है। लेकिन आपको देखकर मुझे शक हो गया। चेहल-सुतून में रहते मुझे भी अरसा हो गया। मैं अब देखकर बतला सकती हूँ कि कौन बांदी है और कौन बेगम ! मेरी आँखों को आप कैसे धोखा दे सकती हैं ?"

"लेकिन अब क्या किया जाय ?"

"आप यहीं रुकिए, मैं नजर कुली खाँ के यहाँ पता लगाकर आती हूँ कि वह वापस आया है या नहीं। बादशाह मुझे पहचान नहीं पाया, आपको भी नहीं पहचानेगा। आप किसी से बात न कीजियेगा।"

इतना कहकर मराली बदन पर अच्छी तरह चादर लपेटकर बाहर निकल गयी। तभी अचानक चेहल-सुतून से नौबत बजने की आवाज आने लगी। इस वक्त नौबत क्यों बज रही है ?

महिमापुर में जगतसेठ जी की हवेली के फाटक पर उस दिन भी भीखू शेख पहरा दे रहा था। अचानक एक पहचानी सूरत देखकर भीखू शेख को बड़ा अजीब लगा।

"कौन ?"

न पालकी, न कहार, फिर भी आदमी रईस जैसा लगता था।

"सेठ जी हैं ?"

"जी हाँ, आइए !"

भास्तू घेख छोटे सरकार को अन्दर दीवान के पास ले गया।

दीवान ने कहा, "छोटे सरकार आप ?"

छोटे सरकार ने कहा, "मैं मोतीझील में कैद था। अभी-अभी छुटकारा मिला है, सीधे सेठ जी से मिलने चला आया। मेरी पत्नी को उन लोगों ने मोतीझील में ही बन्द कर रखा है।"

"कौन ?"

"अरे जिसको वे मरियम बेगम कहते हैं। हम दोनों को मेंहदी निसार ने एक साथ पकड़ा था। लेकिन मुझे छोड़ दिया गया तो मैं चला आया। अब जगत्‌सेठ जी से मिलकर जो उचित होगा किया जायेगा।"

दीवान जी ने कहा, "आप बैठिए। मैं जगत्‌सेठ जी को खबर भेज रहा हूँ।"

इतना कहकर दीवान चला गया।

रणजीत राय जगत्‌सेठ का खास आदमी था। नवाब से जब भी जगत्‌सेठ का विरोध हुआ तभी रणजीत राय ने परामर्श दिया है। कलकत्ते में जब पहली बार लड़ाई हुई उस समय भी दीवान रणजीत राय ने जाकर सुलह करा दी थी।

छोटे सरकार को यह सब मालूम था। लेकिन अन्दर की बात उनको कुछ भी मालूम न थी। अन्दर ही अन्दर इतना कुछ हो गया और हतियागढ़ के हिंदोदार रजा अली ने मुर्शिदाबाद आकर सब भण्डाफोड़ कर दिया है, यह भी छोटे सरकार को मालूम न था।

जगत्‌सेठ जी जब कमरे में आये उस समय भी छोटे सरकार को यह सब मालूम न था।

छोटे सरकार ने कहा, "मेरी पत्नी को मेंहदी निसार ने मोतीझील में कैद कर रखा है।"

जगत्‌सेठ ने पूछा, "यह आपको किसने बताया ?"

"मैं अपनी आँखों से देखकर आ रहा हूँ। यही तो मैंने आपसे कहा। मेंहदी निसार ने पहले मुझे पकड़ा था। फिर मुल्लाहाटी के पास जाकर मेरी पत्नी को पकड़ा। मेरी पत्नी मेंहदी निसार की नाव देखकर नदी में कूदकर भागने लगी थी लेकिन...."

"आपकी पत्नी अकेली थी ?"

"नहीं, उसके साथ कोई और था। मैं उसे पहचान नहीं पाया।"

"फिर ?"

"फिर वहाँ से हम लोगों को पकड़कर मोतीझील में लाकर रखा गया। कई घण्टे मैं वहाँ था। सोचा था, एक बार जब मेंहदी निसार के हाथ पड़ गया हूँ तो अब बचकर निकलना मुश्किल है। लेकिन देखा, अचानक किसी ने आकर मेरी कोठरी के दरवाजे का ताला खोल दिया।"

"वह कौन था ?"

"यह मैं नहीं जानता। चेहरा दाढ़ी-मूँछों से भरा था। कोई मुसलमान खि मतगार होगा।"

"नियामत? लेकिन वह इतनी जल्दी लौट भी कैसे सकता है? क्या कहा उ खिदमतगार ने?"

छोटे सरकार ने कहा, "कुछ नहीं कहा। मेरी कोठरी का दरवाजा खोल वह चला गया। फिर वह दिखाई न पड़ा। सोचा, एक बार देख लूँ, मेरी पत्नी कहाँ कैद करके रखा है। लेकिन वहाँ ठहरने की हिम्मत न पड़ी। इसलिए छुटके मिलते ही बाहर सड़क पर आ गया। देखा, चारों तरफ लोगों की भाग-दौड़ मची है लोग कह रहे थे, नवाब लक्कावाग की लड़ाई में हारकर रातों रात भाग आया है सभी को डर लगा है, निजामती हुकूमत खत्म हो जायेगी। कोई कह रहा था, क्लाइ फौज लेकर मुर्शिदाबाद की ओर आ रहा है।"

जगत्सेठ चुपचाप सुन रहे थे। उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया।

छोटे सरकार ने पूछा, "आपने कुछ नहीं सुना?"

जगत्सेठ ने कहा, "सब सुना है। बस सुना ही नहीं, नवाब ने मुझे बुला भी है!"

छोटे सरकार चौंके।

"अरे! नवाब ने आपको क्यों बुला भेजा है?"

"मेरे पास सभी रुपये के लिए आते हैं। मेरी सब से ज्यादा कद्र मेरे रुपयों व वजह से है। इसीलिए मुसीबत में पड़कर नवाब को मुझे याद करना पड़ा है।"

छोटे सरकार ने पूछा, "आप रुपये देंगे क्या?"

"यही सोच रहा हूँ। सोच रहा हूँ, नवाब के सामने जाकर क्या जवाब दूंगा एक बार सबके सामने नवाब ने मेरे मुँह पर थप्पड़ मारा था। मुझे कैद किया गय था। वह सब क्या मैं भूल सका हूँ?"

"अब नवाब की क्या हालत है?"

जगत्सेठ ने कहा, "यह नहीं मालूम! अभी उन्होंने सब को बुला भेजा है रात चार घड़ी के वक्त चेहल-सुतून में आ पहुँचे हैं। कोई उन्हें पहचान भी नहीं पाय था। फिर पहचानेगा भी तो कैसे? कैसे कोई सोच सकता है कि नवाब अकेले ऊँट व पीठ पर बैठे चेहल-सुतून में पहुँचेंगे। सभी उस समय अपनी-अपनी जगह सो रहे थे नौबतखाने में इसाफ मियाँ नौबत बजा रहा था। उसने भी शोरगुल सुनकर नौब बजाना बंद कर दिया था। सुना है, उस समय नानी बेगम भी चेहल-सुतून नहीं थीं।"

"आपको तो यह सब खबर मिलती ही रहती है, लेकिन आम लोगों को य सब खबर कैसे मिली? मैं जब गंगा घाट से भोर में आ रहा था तभी लगा, चौ बाजार में हो-हल्ला हो रहा है।"

"एक बात और...."

छोटे सरकार ने पूछा, "क्या ?"

"बता नहीं सकता, आप जानते हैं या नहीं। इधर तो यह झन्झट है उधर हतियागढ़ का डिहीदार रजा अली भी इसी बीच यहाँ आ पहुँचा है।"

"अरे ? वह किस मतलब से आया है ? उसे भी क्या नवाब की हार की खबर मिल गयी थी ?"

जगत्सेठ ने कहा, "उसे कैसे खबर मिलती ? वह शायद अपने किसी मतलब से आया है। अब यहाँ आने के बाद यह सब देख रहा है।"

छोटे सरकार ने कहा, "मुझे तो उसके आने की बात सुनकर बड़ा डर लग रहा है। मैं तो हतियागढ़ ऐसे ही छोड़कर चला आया हूँ। वहाँ के खजांची बाबू को सारा जिम्मा सौंपकर मैं घूम रहा हूँ। मेरी इतनी दौड़-धूप, देखता हूँ, बेकार गयी। आपने ही एक बार महाराज कृष्णचन्द्र के पास मुझे भेजा था। आपने ही मुझे क्लाइव साहब के पास भेजा था। कहाँ हतियागढ़ है और कहाँ कलकत्ता, फिर कहाँ कृष्णनगर है और कहाँ यह मुर्शिदाबाद। अब देख रहा हूँ कोई आशा नहीं है। आप को ठीक से मालूम है न कि रजा अली आया है ?"

जगत्सेठ ने कहा, "आया ही नहीं, वह मेंहदी निसार से मिल भी चुका है।"

छोटे सरकार चिंतित हो उठे।

कहा, "अब मैं क्या करूँ कुछ बता सकते हैं ? हतियागढ़ लौट जाऊँ ?"

जगत्सेठ ने कहा, "आप जब देख आये हैं कि आपकी पत्नी को उन लोगों ने मोतीझील में कैद रखा है तो आप वहाँ जाकर क्या करेंगे ? बल्कि अपनी पत्नी के छुड़ाने का ही कोई बंदोबस्त करें।"

"ऐसा कैसे होगा ?"

जगत्सेठ ने कहा, "बहुत दिनों पहले आपकी पत्नी एक बार मेरे यहाँ आयी थीं। यह तो आपको मालूम है न ? उस समय उन्होंने मुझसे कहा था, चौक बाजार में शराफत अली की जो दुकान है न, वहीं कान्त नाम का एक आदमी रहता है। उसी को खबर देने से आपकी पत्नी को खबर मिल जायेगी।"

छोटे सरकार ने कहा, "पहले मैं एक बार वहाँ गया था लेकिन उस समय वह आदमी नहीं था।"

"एक बार अब भी देख लें न। शायद वह आदमी मिल जाय। शायद वह कोई रास्ता बता सके। अगर वह न मिले तो वापस आ जाइएगा। तब तक मैं नवाब से मिल आऊँ। नवाब ने बहुत जल्दी आने के लिए कहला भेजा है।"

"ठीक है।"

छोटे सरकार फिर निकल पड़े। उस समय दिन की रोशनी खूब निकल आयी थी। सड़क पर लोगों की भीड़ भी ज्यादा थी।

छोटे सरकार के चले जाने के बाद जगत्सेठ का तामजान भी निकला। कई दिनों से जगत्सेठ को नींद नहीं आ रही थी। दीवान, खजांची, मुहर्रिर सभी कई दिनों

से व्यस्त थे। कोई लड़ाई होने से ही नवाव को रुपये उधार देना पड़ता है। यह नियम चला आ रहा था। लक्काबाग में नवाव जब लड़ाई करने गया तब भी रुपय उधार देना पड़ा था। सिपाही लोगों ने तनख्वाह वगैर लिये लड़ाई में जाने से साफ इंकार कर दिया था। मीर जाफर ने अलग बुलाकर जगत्सेठ को रुपये न देने के लिए कहा था। लेकिन रुपये न देने से भला कैसे छुटकारा मिलता ?

बस, मीर जाफर साहब ही नहीं, यार लुत्फ खाँ, राजा दुर्लभराम वगैरह ने कहा था, आप अगर इस समय रुपये देते हैं तो लड़ाई से वापस आकर नवाव आप गर्दन नापेंगे।

सचमुच उस समय सभी ने डराया था कि इतने दिनों की साजिश वेकार चली जायेगी। इसीलिए फौज लेकर नवाव के चले जाने के वाद से जगत्सेठ के मन में चिंता और अशांति वनी थी। कल सवेरे भी खवर आयी थी, नवाव का मिजाज ठीक नहीं है। मेंहदी निसार नवाव के साथ गया था। उससे भी नवाव ने कहा था, लौटकर सभी को सजा दूँगा। वहाँ किसी ने नवाव की सोने की चिलम चुरा ली थी। यह खबर भी यहाँ पहुँची थी। फिर वारिश में गोला-वारूद भींग गया, यह खवर भी आयी। फिर रात भर कोई खवर नहीं आयी। दीवान रात भर दफ्तर में वैठा था। कोई खवर आते ही वह अन्दर जाकर सेठ जी को दे आता। लेकिन रात को कोई खवर नहीं आयी।

वस भोर में खबर आयी कि नवाव मुर्शिदावाद लौट आये हैं। साथ में कोई नहीं था। ऊँट पर सवार चेहल-सुतून में प्रवेश करते समय भी कोई नवाव को पहचान नहीं पाया था।

उसी के वाद आम दरवार में नवाव ने जगत्सेठ को बुला भेजा।

फिर उसी के वाद हतियागढ़ के राजा हिरण्यनारायण राय आ पहुँचे।

सड़क पर सचमुच लोगों की वड़ी भीड़ थी जगत्सेठ का तामजान मुर्शिदाबाद के लोग पहचानते थे। आगे-आगे जगत्सेठ का निशान लिये उनके चोवदार चलते थे भीड़ हटाते हुए वे चल रहे थे। चेहल-सुतून के फाटक के सामने आकर तामजान रुकते ही जगत्सेठ उतर पड़े। फिर मेहरावदार खंभों के वीच से जगत्सेठ दरवार की तरफ चलने लगे। चारों तरफ कैसा तो उजड़ा-उजड़ा-सा माहौल था। चारों तरफ काना-फूसी चल रही थी। मंसूर अली मेहर ने जगत्सेठ को देखकर झुककर कोर्निश की।

"वंदगी सेठ जी !"

"नवाव ने क्यों वुलाया है मेहर साहव ?"

मंसूर अली मेहर ने कहा, "वस आप ही को नहीं सेठ जी, नवाव ने हम सभी को वुला भेजा है। मेंहदी निसार साहव को भी वुला भेजा है। मुर्शिदावाद में जितने अमीर-उमराव हैं, सभी को वुलाया गया है।"

"लेकिन क्या जरूरत पड़ी नवाव को ? लक्काबाग की लड़ाई की क्या खवर है ? मीर जाफर अली साहव कहाँ हैं ? वे सव नहीं आये ?"

मंसूर अली मेहर और पास खिसक आया। कान के पास मुँह लाकर धीरे-धीरे बोला, "फिरंगी क्लाइव साहब मुर्शिदाबाद की तरफ आ रहा है सेठ जी! अब हम लोगों को कोई डर नहीं है।"

"लेकिन फौज लेकर जनरल लॉ साहब के आने की भी बात थी न?"

"अब वह नहीं आयेगा सेठ जी। अब अगर नवाब रुपये माँगे तो आप पिछली बार की तरह रुपये दे न दीजियेगा।"

जगत्सेठ ने इस बात का जवाब न देकर पूछा, "तुम्हें ठीक मालूम है न कि जनरल लॉ नहीं आ रहा है?"

"हाँ सेठ जी, ठीक मालूम है, बिलकुल ठीक! लेकिन बता देता हूँ, आलीजाह ने आपको रुपये के लिए बुलाया है। लेकिन इस बार रुपये न दीजियेगा।"

"लेकिन रुपये लेकर आलीजाह क्या करेंगे?"

"फौज बनायेंगे। फिर नयी फौज लेकर फिरंगियों से लड़ाई करेंगे।"

"फौज बनायेंगे? नयी फौज?"

"हाँ सेठ जी, मेहदी निसार साहब ने मुझसे कहा है, आपसे मिलकर आपको सब बता देने के लिए।"

जगत्सेठ थोड़ी देर चुप रहे।

फिर उन्होंने पूछा, "मीर जाफर इस समय कहाँ हैं?"

"दाऊदपुर में। दाऊदपुर में मीर जाफर साहब को क्लाइव साहब ने बुला लिया है। वहीं मीर जाफर हैं, उनके लड़के मीरन हैं, मिर्जा उमर बेग हैं और स्क्रेफ्टन साहब हैं। क्लाइव साहब ने मीर जाफर साहब को बंगाल-बिहार-उड़ीसा का सूबेदार मान लिया है।"

जगत्सेठ चौंक उठे।

कहा, "अच्छा! फिर?"

"फिर मीर जाफर अली साहब और मीरन साहब दाऊदपुर से रवाना हो चुके हैं। खबर आयी है कि वे मुर्शिदाबाद की तरफ आ रहे हैं। उनको रोकने के लिए आली-जाह रातों-रात फौज बनाने की सोच रहे हैं।"

अचानक नियामत दौड़ता हुआ आया। उसने जगत्सेठ को देखकर कोर्निश कर कहा, "नवाब ने सेठ जी को बुला भेजा है। आप ही को मैं बुलाने जा रहा था।"

"चलो।"

जगत्सेठ अब नहीं रुके। वे आगे-आगे चलने लगे। आम दरबार में उस समय अनेक अमीर-उमराव आ जुटे थे। नवाब दूर खड़े होकर उनसे बातें कर रहे थे। जगत्सेठ को लगा, नवाब की शक्ल एकदम बदल गयी है। दो ही दिन में वह शख्स मानो टूट गया है। मानो नवाब की आँखों से आँसू बह रहा था। मानो नवाब कह रहे थे, मेरी मसनद आज मेरी अकेले की नहीं है, यह तुम सब लोगों की है। अगर मैं मसनद खो देता हूँ तो तुम लोग भी इसे खो दोगे। तुम सभी मेरी तरह कंगाल हो जाओगे। तुम्हीं लोगों की वजह से

मुझे नवाबी मिली थी, फिर नवाबी चली जायेगी तो तुम लोगों का अधिकार भी छिन जायेगा। क्या मैं ही अकेले तुम लोगों का था, तुम सभी तो मेरे थे। तुम लोगों पर मैंने जो अन्याय किया था आज वही हजार गुना होकर मेरे लिए वापस आया है। उसी तरह तुम लोग भी अगर मेरे प्रति अन्याय करोगे तो वह हजार गुना होकर तुम्हारे पास वापस आयेगा। अन्याय से अगर अन्याय का प्रतिकार हो सकता होता तो आज मुझे लक्कावाग से इस तरह लौटना न पड़ता? और न लौटकर इस तरह माफी माँगनी पड़ती।

नवाब बोल रहे थे और सारा दरबार मानो धमक रहा था।

दूर से जगत्सेठ सब सुन रहे थे। नवाब के सामने काफी भीड़ थी। मुर्शिदाबाद का कोई आने से न बचा था। एक तरफ मेंहदी निसार और दूसरी तरफ हतियागढ़ का डिहीदार रजा अली भी खड़ा था। उसके पास खड़े थे इराज खाँ और गुलाम हुसैन।

"मैंने इसीलिए आप सबको बुलाया है। आफत जो आ रही है उसके बारे में तो सभी को मालूम है। यह आफत, जो अलीवर्दी खाँ के जमाने में आयी थी उसकी तरह नहीं है। फिरंगी पश्चिम से आकर लूटपाट कर चले नहीं जायेंगे वल्कि मसनद ले लेंगे। हिन्दुस्तान को भी ले लेंगे। ये दिल्ली के बादशाह की मसनद छीनकर हिन्दुस्तान में मजबूती से जमकर हुकूमत करेंगे। इसलिए मैं हाथ जोड़कर आप लोगों से कह रहा हूँ, आप मुझे फौज दें, रुपये दें, सोना दें और आप लोगों के पास जो कुछ है मुझे देकर मेरी मसनद बचायें। मुझे बचाने पर आप भी बचेंगे। मेरी मसनद बचने पर मुर्शिदाबाद भी बचेगा। मैं अल्लाह के नाम कसम खाकर कह रहा हूँ, अगर यह मसनद बच जाय तो मैं यह आप लोगों में से किसी को देकर चला जाऊँगा। बहुत दूर कहीं जाकर अल्लाह का नाम लूँगा। कहिए, आप लोग मेरी मदद करेंगे? कहिए, आप लोग मेरे साथ रहेंगे?"

नवाब ने उस समय भी जगत्सेठ को देखा नहीं था। वे अपनी ही धुन में कहे जा रहे थे।

अचानक चेहल-सुतून के अंदर से शोरगुल की आवाज कानों में आयी।

नवाब अनमने हो गये।

"कौन? कैसा शोरगुल है? यह कैसी आवाज है?"

केवल नवाब ही नहीं, मेंहदी निसार भी उधर ही कान लगाये था। डिहीदार रजा अली भी अनमना हो गया। आम दरबार में जितने लोग थे सभी चंचल हो उठे। ऐसा तो नहीं होता? फिर क्या चौक बाजार की भीड़ चेहल-सुतून के अन्दर घुस आयी?

"जगत्सेठ भी अवाक् हो गये थे।

पास ही मंसूर अली खड़ा था। उससे पूछा, "कैसी आवाज है?"

मंसूर अली भी समझ नहीं पा रहा था। वह भी कान लगाये सुनता रहा।

चेहल-सुतून में तो कभी ऐसा शोरगुल नहीं होता!

जगत्सेठ जी को न जाने कैसा शक हुआ।

"फिरंगी था गये क्या ?"

यह बात मंसूर अली को जंची। कहा, "रुकिए, मैं देख आता हूं।"

इतना कहकर मंसूर अली चला गया।

नवाब फिर कुछ कहने जा रहे थे लेकिन शोरगुल बढ़ने लगा। किसी औरत की आवाज भी सुनाई पड़ रही थी। चेहल-सुतून के हरम में ऐसा शोरगुल करने की हिम्मत किसे हुई ?

इराज खाँ से बरदाश्त नहीं हुआ। उसने कहा, "नियामत कहाँ है ? नियामत !"

नियामत नहीं था। वह हरम के अन्दर चला गया था। वहीं शोरगुल हो रहा था।

पीर अली खाँ भूलभुलैया की तरफ दौड़ रहा था।

नियामत ने पुकारकर पूछा, "खाँ साहब, यह शोरगुल कैसा है ?"

खाँ साहब के कानों में उसकी बात न पहुँची।

लेकिन नियामत भी छोड़ने वाला नहीं था। नजर मुहम्मद सबके पीछे आ रहा था।

"क्या है रे नजर ? नानी बेगम साहबा चिल्ला क्यों रही हैं ?"

नजर मुहम्मद ने जाते-जाते कहा, "चेहल-सुतून में चोर पकड़ा गया है।"

चेहल-सुतून के हरम में चोर ! नियामत को मानो इस बात पर विश्वास नहीं हुआ।

नियामत ने पूछा, "किसने चोरी की है ?"

"अमीना बेगम साहबा ने ?"

अमीना बेगम साहबा ? नवाब सिराजुद्दौला की माँ ? क्या चुराया है ?

फिर भी नजर मुहम्मद ने खोलकर कुछ नहीं कहा। वह हरम के भीतर चला गया। आज चेहल-सुतून में मानो अराजकता फैली थी। नियामत को देखकर बेगमात हट नहीं गयीं। तक्की बेगम अस्त-व्यस्त पोशाक में सबके सामने आकर खड़ी हो गयी थी।

पूछा, "नियामत, क्या चोरी हुई ?"

नियामत इस बात का जवाब दिये बिना दौड़ता हुआ चला गया। सभी बेगमात वहीं जुटी थीं। बब्बू बेगम, गुलशन बेगम, पेशमन बेगम। सभी।

सहसा नवाब की आवाज सुनाई पड़ी। आम दरबार से नवाब हरम में पहुँच गये थे।

"पीर अली खाँ !"

ऊँट की पीठ पर बैठे दाऊदपुर आते-आते नवाब थक गये थे। फिर वे सो नहीं सके, आराम भी न कर सके और अब आम दरबार में अमीर-उमराओं को बुलाकर उनकी खुशामद कर रहे थे। उधर मुर्शिदाबाद की मसनद पर मुसीबत आई और हरम में यह गड़बड़ मच गयी।

"खुदावन्द !"

पीर अली खाँ कोर्निश कर सामने आ खड़ा हुआ ।

"क्यों इतना शोर हो रहा है ?"

"हरम में चोर पकड़ा गया है ।"

"किसने चोरी की है ? क्या चोरी की है ?"

पीर अली खाँ ने कहा, "जी खुदावन्द, मालखाने से हीरे-जवाहिरात, पन्ना और अशर्फियाँ...."

"किसने यह सब चुराया है ?"

"अमीना वेगम साहबा ने ।"

नवाब के सर पर मानो बिजली गिरी । माँ ! सर से पाँव तक वे काँप उठे।

नानी बेगम साहबा खबर पाते ही दौड़ी आयीं । कहा, "सुना है मिर्जा, मेहर भाग गयी है ।"

"घसीटी बेगम ?"

"हाँ । बहुत खोजा उसे, लेकिन कहीं भी नहीं मिली । पीर अली ने पूरा हरम छान डाला है ।"

नवाब मिर्जा मुहम्मद ने कुछ नहीं कहा । वे सब नानी बेगम साहबा की तरफ देखते रहे । कहा, "एक बात और तो नहीं कही ? नानी जी, मेरी माँ के बारे में तो कुछ नहीं कहा । मालखाने से माँ ने क्या चुराया है ?"

नानी बेगम साहबा ने कहा, "ये सब बातें रहने दे । तू अपना दिमाग रख । आ, मेरे साथ आ !"

मिर्जा ने कहा, "नहीं नानी जी, आम दरबार में सभी लोग मेरे लिए बैठे हैं । वे मेरा इंतजार कर रहे हैं । मैं वहीं जाता हूँ । मैं जानता हूँ, कुछ न होगा । जिसकी माँ अपने बेटे की दौलत चुराती है, जिसकी सगी मौसी उसकी दुश्मन है, उसके लिए कोई उम्मीद बाकी नहीं है । फिर भी एक बार कोशिश करके देखूँ । बार-बार बुलाने पर जगत्सेठ जी आये हैं ।"

इतना कहकर मिर्जा मुहम्मद वहाँ रुके नहीं । वे आम दरबार की तरफ चले गये ।

●

बूढ़े शराफत अली को पहले ही शक हुआ था । भोर में जब चौक बाजार की सड़कों पर हो-हल्ला शुरू हो गया था उस समय वह नशे की खुमारी का मजा ले रहा था लेकिन ज्यों-ज्यों दिन चढ़ता रहा, शोर-शराबा बढ़ता ही गया । फिर उसके मन में आशा जगी । हाजी अहमद का खानदान क्या तबाह हुआ ?

"बादशाह !"

बादशाह के आते ही मियाँ साहब ने पूछा, "यह कैसा शोरगुल है ?"

"हुजूर, नवाब लड़ाई से वापस आ गये हैं।"

"क्या कहा?"

बूढ़ा शराफत अली खुशी से भर उठा। क्या नवाब लड़ाई में हार गया है? क्या अल्लाह ने उसकी विनती सुन ली है?

इतने में दुकान के सामने कोई आकर खड़ा हुआ। शराफत अली ने उस की तरफ देखा। आदमी शरीफ और खानदानी लगा। क्या अर्क खरीदने आया है?

शराफत अली ने पूछा, "क्या चाहिए? अगरबत्ती? खुशबूदार तेल?"

छोटे सरकार को बड़ा संकोच हो रहा था। न शामियान न हाथी-घोड़ा। बाजार में बड़ी अफवाहें थीं। कोई कह रहा था, नवाब हारकर वापस चला आया है। कोई कह रहा था नवाब के पीछे लगी है। कोई कह रहा था फिरंगी फौजें मुर्शिदाबाद में आने ही वाली हैं।

"नहीं, अगरबत्ती नहीं चाहिए। अच्छा, यहाँ कान्त नाम का कोई लड़का रहता है?"

"बादशाह ने कहा, रहता तो जरूर है, जरा देर पहले ही गया है। आप कहाँ से आ रहे हैं? आपका नाम क्या है?"

छोटे सरकार ने कहा, "नाम से मुझे नहीं पहचान पायेंगे। कान्त बाबू कब तक वापस आयेगा?"

"आप थोड़ी देर बैठिए।"

बूढ़े शराफत अली को यह सब अच्छा नहीं लग रहा था। उसने कहा, "क्यों? यहाँ क्यों बैठेंगे? कौन हैं? कहाँ से आये हैं? कान्त बाबू आपका कौन है?"

छोटे सरकार चुपचाप सब सुनते रहे।

उन्होंने कहा, "मेरा एक निजी काम था।"

बूढ़ा शराफत अली बादशाह से कहे जा रहा था, "ऐरे-गैरे को इस तरह दुकान पर क्यों बैठा लेता है? तेरे बाप की दुकान है?"

छोटे सरकार बूढ़े को चिल्लाता देखकर वहाँ से चल दिये।

अंदर मरीयम बेगम सारी बातें सुन रही थी। उसे लगा जैसे खतरा छू गया आया है। उसे मेरे यहाँ आने की खबर मिल गयी क्या? लेकिन उसको क्या यह कैसे मालूम हो सकता है? मगर दुर्लभ को उसके यहाँ होने का पता कैसे चल सकता है? बादशाह से पूछने पर ही पता चल सकता है।

मरीयम बेगम ने बादशाह को चुपके से बुलाकर पूछा, "अभी जो आया, वह कौन था, जानते हो?"

"नाम तो नहीं जानता, कान्त बाबू को पूछ रहा था, बुलाऊँ?"

"नहीं, बुलाने की जरूरत नहीं है, सिर्फ इतना बता दो क्या है?"

छोटे सरकार अभी ज्यादा दूर नहीं गये थे। अचानक सामने से आते हल्ले की आवाज सुनकर चौंक उठे।

आवाजें आ रही थीं।

—होशियार, होशियार, फिरंगी आ रहे हैं!

जिसको जिधर सूझ रहा था वह उधर ही भाग रहा था।

छोटे सरकार किधर जायें समझ नहीं पा रहे थे। जब इस समय चारों ओर गड़बड़ी मची हुई है तो एक बार क्यों न मोतीझील ही हो आया जाय। इस समय मोतीझील जाकर मरियम बेगम से मिलने में क्या हर्ज है? इस समय क्या वहाँ कोई पहरेदार होगा? नवाब तो लक्काबाग से अकेले भाग आये हैं। इस समय तो सभी सिपाही वहीं पड़े होंगे। इस समय अगर कोई चेहल-सुतून से निकल भागे तो कोई न देख पायेगा। इसीलिए इस समय बड़ा डर रहता है। इसी समय बेगमात और बाँदियाँ नवाब का खजाना लूटकर भागती हैं। इसके पहले कितनी ही बार ऐसा हो चुका है। एक-एक करके कई नवाब मसनद से उतरे हैं और नवाब के हरम में हर बार इसी तरह लूट-पाट हुई है।

क्या एक बार मोतीझील चला चलूँ? छोटे सरकार ने सोचा।

लेकिन वह दाढ़ी वाला बूढ़ा खिदमतगार? उस बूढ़े ने कुछ भी नहीं कहा था। किसी बात का जवाब नहीं दिया था। बस, दरवाजा खोलकर वह एक किनारे खड़ा हो गया था। क्यों उसने छोटे सरकार को छोड़ा, इस बात का भी उसने कोई जवाब नहीं दिया था। छोटे सरकार को इस तरह छोड़कर उसे क्या फायदा हुआ? किसने उससे कहा था, छोटे सरकार को इस तरह छोड़ देने के लिए?

छोटे सरकार ने फिर भी उससे पूछा था, "मरियम बेगम साहबा कहाँ हैं? किस कमरे में है?"

बूढ़े ने कोई जवाब नहीं दिया था।

"एक बार मुझे उनके पास ले जा सकते हो?"

फिर भी बूढ़े ने कुछ भी न कहा था।

छोटे सरकार ने जब देखा कि यह तो कुछ बोलता ही नहीं तब वे सीधे जगत्-सेठ की हवेली में चले आये थे।

लेकिन अब कहाँ जाया जाय? जगत्सेठ जी तो नवाब के आम दरबार में गये हैं। नवाब एक बार आखिरी कोशिश करके देखेगा। फिर फिरंगियों से लड़कर अपमान का बदला लेना चाहेगा। लेकिन किसी तरह इसी बीच अगर छोटी बहू को छुड़ा लिया जाय तो कैसा रहे? जरूरत पड़ने पर मैं घूस भी दूँगा। न हो जगत्सेठ जी से रुपये उधार ले लूँगा।

मोतीझील के पास आकर छोटे सरकार रुके।

दूसरे दिनों की तरह फाटक पर पहरेदार नहीं था। नौबतखाने की नौबत रुक गयी थी। लेकिन फिर बजने लगी। लेकिन लोग बाग सब कहाँ गये?

छोटे सरकार ने सोचा, इसी मौके पर एक बार अंदर पहुँच जाऊँ तो कैसा रहे ? लेकिन वहाँ पहुँचकर अगर पकड़ा गया तो क्या होगा ? उस समय किसी सूरत से बचना मुश्किल होगा। छोटे सरकार ने एक बार मोतीझील के अन्दर निगाह दौड़ायी। झील के बाद बहुत बड़ी इमारत थी। इस मकान को बनते समय से छोटे सरकार देखते आ रहे थे।

"बाबू जी !"

छोटे सरकार ने घबड़ाकर देखा। पीछे से कोई उन्हें पुकार रहा था। अन-पहचाना चेहरा।

"तुम कौन हो ?"

उस आदमी ने कहा, "मेरा नाम बादशाह है हुजूर ! एक बाँदी ने मुझे आपके पास भेजा है।"

"बाँदी ? कौन बाँदी ? कहाँ की बाँदी ?"

वह आदमी जैसे साफ-साफ कुछ कहना नहीं चाहता था। शायद कहने से डर रहा हो।

आखिर में उस आदमी ने कहा, "आप मुझे पहचान नहीं रहे हैं।"

छोटे सरकार ने कहा, "नहीं।"

"मैं उस शराफत अली की दुकान पर ही रहता हूँ, वहीं नौकरी करता हूँ। आप थोड़ी देर पहले कान्त सरकार की तलाश करने वहाँ गये थे, मैं वहीं से आ रहा हूँ।"

छोटे सरकार ने पूछा, "क्या कान्त बाबू लौट आये हैं।"

"नहीं, एक बाँदी आपको बुला रही है।"

"कौन बाँदी ?"

"कान्त बाबू के साथ एक बाँदी आयी थी न, चेहल-सुतून की बाँदी। उसी ने आपका नाम पूछने को कहा।"

छोटे सरकार को बड़ा आश्चर्य लगा।

उन्होंने पूछा, "चेहल-सुतून की बाँदी तुम्हारी दुकान में कैसे आयी ?"

"यह तो नहीं मालूम बाबू जी ! कान्त बाबू ने कहा था, चेहल-सुतून की बाँदी है, इसीलिए कह रहा हूँ। मैंने उसका चेहरा तो नहीं देखा। वह बुरका पहने हुई है न।"

छोटे सरकार के मन में सन्देह होने लगा। बुरका पहने हुई है। चेहल-सुतून की बाँदी ! ऐसा तो नहीं होता। ऐसा होना भी संभव नहीं ! जरूर इसके पीछे कोई रहस्य है। फिर क्या कान्त बाबू ने मेरी पत्नी को चेहल-सुतून से निकालकर यहाँ छिपा रखा है ?

"यह बाँदी क्या पहले कभी तुम्हारी दुकान में आयी थी ?"

"नहीं हुजूर, यह तो नहीं मालूम। यह बाँदी आज ही कान्त बाबू के साथ आयी है। अब उसने मुझे आपका नाम पूछने के लिए भेजा है।"

छोटे सरकार अभी ज्यादा दूर नहीं गये थे। अचानक सामने से आते हल्ले की आवाज सुनकर चौंक उठे।

आवाजें आ रही थीं।

—होशियार, होशियार, फिरंगी आ रहे हैं!

जिसको जिधर सूझ रहा था वह उधर ही भाग रहा था।

छोटे सरकार किधर जायें समझ नहीं पा रहे थे। जब इस समय चारों ओर गड़बड़ी मची हुई है तो एक बार क्यों न मोतीझील ही हो आया जाय। इस समय मोतीझील जाकर मरियम बेगम से मिलने में क्या हर्ज है? इस समय क्या वहाँ कोई पहरेदार होगा? नवाब तो लक्काबाग से अकेले भाग आये हैं। इस समय तो सभी सिपाही वहीं पड़े होंगे। इस समय अगर कोई चेहल-सुतून से निकल भागे तो कोई न देख पायेगा। इसीलिए इस समय बड़ा डर रहता है। इसी समय बेगमात और बाँदियाँ नवाब का खजाना लूटकर भागती हैं। इसके पहले कितनी ही बार ऐसा हो चुका है। एक-एक करके कई नवाब मसनद से उतरे हैं और नवाब के हरम में हर बारइस तरह लूट-पाट हुई है।

क्या एक बार मोतीझील चला चलूँ? छोटे सरकार ने सोचा।

लेकिन वह दाढ़ी वाला बूढ़ा खिदमतगार? उस बूढ़े ने कुछ भी नहीं कहा था। किसी बात का जवाब नहीं दिया था। बस, दरवाजा खोलकर वह एक किनारे खड़ा हो गया था। क्यों उसने छोटे सरकार को छोड़ा, इस बात का भी उसने कोई जवाब नहीं दिया था। छोटे सरकार को इस तरह छोड़कर उसे क्या फायदा हुआ? किसने उससे कहा था, छोटे सरकार को इस तरह छोड़ देने के लिए?

छोटे सरकार ने फिर भी उससे पूछा था, "मरियम बेगम साहबा कहाँ है? किस कमरे में है?"

बूढ़े ने कोई जवाब नहीं दिया था।

"एक बार मुझे उनके पास ले जा सकते हो?"

फिर भी बूढ़े ने कुछ भी न कहा था।

छोटे सरकार ने जब देखा कि यह तो कुछ बोलता ही नहीं तब वे सीधे जगत्सेठ की हवेली में चले आये थे।

लेकिन अब कहाँ जाया जाय? जगत्सेठ जी तो नवाब के आम दरबार में गये हैं। नवाब एक बार आखिरी कोशिश करके देखेगा। फिर फिरंगियों से लड़कर अपमान का बदला लेना चाहेगा। लेकिन किसी तरह इसी बीच अगर छोटी बहू को छुड़ा लिया जाय तो कैसा रहे? जरूरत पड़ने पर मैं घूस भी दूँगा। न हो जगत्सेठ जी से रुपये उधार ले लूँगा।

मोतीझील के पास आकर छोटे सरकार रुके।

दूसरे दिनों की तरह फाटक पर पहरेदार नहीं था। नौबतखाने की नौबत रुक गयी थी। लेकिन फिर बजने लगी। लेकिन लोग बाग सब कहाँ गये?

छोटे सरकार ने सोचा, इसी मौके पर एक बार अंदर पहुँच जाऊँ तो कैसा रहे? लेकिन यहाँ पहुँचकर अगर पकड़ा गया तो क्या होगा? उस समय किसी सूरत से बचना मुश्किल होगा। छोटे सरकार ने एक बार मोतीझील के अन्दर निगाह दौड़ायी। झील के बाद बहुत बड़ी इमारत थी। इस मकान को बनते समय से छोटे सरकार देखते आ रहे थे।

"बाबू जी!"

छोटे सरकार ने घबड़ाकर देखा। पीछे से कोई उन्हें पुकार रहा था। अनपहचाना चेहरा।

"तुम कौन हो?"

उस आदमी ने कहा, "मेरा नाम बादशाह है हुजूर! एक बाँदी ने मुझे आपके पास भेजा है।"

"बाँदी? कौन बाँदी? कहाँ की बाँदी?"

वह आदमी जैसे साफ-साफ कुछ कहना नहीं चाहता था। शायद कहने से डर रहा हो।

आखिर में उस आदमी ने कहा, "आप मुझे पहचान नहीं रहे हैं।"

छोटे सरकार ने कहा, "नहीं।"

"मैं उस शराफत अली की दुकान पर ही रहता हूँ, वहीं नौकरी करता हूँ। आप थोड़ी देर पहले कान्त सरकार को तलाश करने वहाँ गये थे, मैं वहीं से आ रहा हूँ।"

छोटे सरकार ने पूछा, "क्या कान्त बाबू लौट आये हैं।"

"नहीं, एक बाँदी आपको बुला रही है।"

"कौन बाँदी?"

"कान्त बाबू के साथ एक बाँदी आयी थी न, चेहल-सुतून की बाँदी। उसी ने आपका नाम पूछने को कहा।"

छोटे सरकार को बड़ा आश्चर्य लगा।

उन्होंने पूछा, "चेहल-सुतून की बाँदी तुम्हारी दुकान में कैसे आयी?"

"यह तो नहीं मालूम बाबू जी! कान्त बाबू ने कहा था, चेहल-सुतून की बाँदी है, इसीलिए कह रहा हूँ। मैंने उसका चेहरा तो नहीं देखा। वह बुरका पहने हुई है न।"

छोटे सरकार के मन में सन्देह होने लगा। बुरका पहने हुई है। चेहल-सुतून की बाँदी! ऐसा तो नहीं होता। ऐसा होना भी संभव नहीं! जरूर इसके पीछे कोई रहस्य है। फिर क्या कान्त बाबू ने मेरी पत्नी को चेहल-सुतून से निकालकर यहाँ छिपा रखा है?

"यह बाँदी क्या पहले कभी तुम्हारी दुकान में आयी थी?"

"नहीं हुजूर, यह तो नहीं मालूम। यह बाँदी आज ही कान्त बाबू के साथ आयी है। अब उसने मुझे आपका नाम पूछने के लिए भेजा है।"

"यह बाँदी क्या मुझे पहचानती है ? मुझे देखा है ?"

"यह भी नहीं मालूम हुजूर !"

छोटे सरकार ने कुछ सोचा। शायद चेहल-सुतून की बाँदी से मरियम बेगम के बारे में पूछने पर कुछ मालूम हो जाय। चेहल-सुतून की बाँदी मरियम बेगम को जरूर जानती होगी।

"तुम मुझे उसके पास ले जा सकते हो ?"

बादशाह ने कहा, "हुक्म न मिलने पर आपको कैसे ले जा सकता हूँ ? बगैर इजाजत के मैं कैसे उसे आपसे मिला दूँ। आप अपनी जरूरत बताइए।"

"क्या जरूरत है यह मैं उसी से कहूँगा।"

"फिर मैं उससे पूछकर आपको साथ ले जा सकता हूँ।"

छोटे सरकार ने कहा, "एक काम करो तो ठीक रहेगा। मैं तुम्हारे साथ दुकान तक चला चलता हूँ। तुम अन्दर जाकर बाँदी से पूछ लो, फिर मुझे बुला लेना।"

बादशाह ने कहा, "फिर चलिए। लेकिन ज्यादा बातचीत न कीजियेगा। शराफत अली मुझ पर बिगड़ जायेगा। बूढ़ा बड़ा गुस्सैल है।"

"चलो।"

इतना कहकर छोटे सरकार फिर चौक बाजार की सड़कों पर बादशाह के साथ चलने लगे। पिछले दिन रात भर वे सो नहीं सके थे, दिन भर में एक बार आराम नहीं कर सके थे। मानसिक अशान्ति की भी सीमा न थी। फिर आज सवेरे से ही झंझट शुरू हो गयी। मुर्शिदाबाद की बुनियाद तक मानो हिल गयी थी। हतियागढ़ की तरह मुर्शिदाबाद के सर्वनाश के दिन भी मानो करीब आ गये थे।

अचानक सड़क पर चलते लोगों में कुछ ज्यादा ही खलबली मच गयी।

—फिरंगी फौज आ रही है ! फिरंगी फौज आ रही है ! होशियार ! होशियार !

जो जिधर चल रहा था, सहसा दौड़ने लगा।

बादशाह एक क्षण के लिए रुक गया। छोटे सरकार भी रुक गये। फिरंगी फौज आ रही है ! रॉबर्ट क्लाइव क्या आ रहा है ?

सन् १७५७ की २४ जून को बंगाल के सारे लोग मानो आशा से और आनन्द से पागल हो उठे। आ रही है, आ रही है, फिरंगी फौज आ रही है !

बादशाह भी सब की देखादेखी दौड़ने लगा। छोटे सरकार भी जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाने लगे। क्लाइव आ रहा है। अब कोई डर नहीं है। अब कोई तकलीफ नहीं है। अब सुन्दरी बहू-बेटियों को छिपाकर रखना नहीं पड़ेगा। रुपये-पैसे, गहने-अशर्फियाँ मिट्टी में गाड़कर रखना नहीं पड़ेगा।

पीछे मुड़कर बादशाह ने पुकारा, "जल्दी आइए हुजूर ! जल्दी आइए !"

थकावट के मारे छोटे सरकार का शरीर अवश हो चला था, फिर भी किसी तरह वे कदम बढ़ाने लगे।

शराफत अली सवेरे के वक्त जरा तरोताजा रहता है। पिछली रात का नशा इसी समय उतरता है। सवेरे खुशबू तेल की दुकान पर ज्यादा खरीदार नहीं आते। लेकिन इससे शराफत अली को नुकसान नहीं है। खरीदार न आयें तो अच्छा है। नशे की चीजें वह बेचता है और ऐसी चीजें खरीदने वाले सवेरे क्यों आयेंगे? यह समय हिसाब-किताब करने का है। घाटे और मुनाफे के बारे में कभी शराफत अली ज्यादा नहीं सोचता। अगर यही सोचता तो वह बंगाल छोड़कर यहां क्यों आता और बंगाल मुल्क के मुर्शिदाबाद शहर में क्यों दुकान खोलता?

लेकिन उम्र भी तो हो रही है! जितनी ज्यादा उम्र हो रही है यह और भी ज्यादा झुका जा रहा है। उसे लगता, शायद वह अपने जीवन में और कुछ नहीं देख पायेगा। चेहल-सुतून और निजामत की बरबादी शायद उसे देखने को नहीं मिलेगी।

सवेरे ही एक बदतमीज ने आकर मिजाज खराब कर दिया। शराफत अली ने सोचा था शायद कोई खरीदार आया है लेकिन नहीं, वह तो कान्त बाबू को ढूंढ़ने आया था।

अचानक बाजार में लोगों को भागते देखकर शराफत अली ने पूछा, "क्या हुआ?"

एक आदमी ने भागते हुए कहा, "फिरंगी फौज आ रही है।"

बूढ़े ने चौंककर पुकारा, "बादशाह! बादशाह!"

कोई जवाब नहीं।

"अरे बादशाह! यह कमबख्त आखिर गया कहां?"

कहकर शराफत अली उठ खड़ा हुआ। अंदर की ओर जाकर उसने फिर पुकारा, "बादशाह!"

लेकिन वहां बादशाह होता तो जवाब देता। कहां गया बदतमीज? ये लोग क्या कह रहे हैं। फिरंगी फौज क्या सचमुच आ रही है? अब क्या मुर्शिदाबाद पर हमला करेगी?

अचानक शराफत अली को लगा, कान्त बाबू के कमरे में जैसे कोई बैठा है। शराफत अली ने ठीक से देखने की कोशिश की।

"कौन? कान्त बाबू? अंदर कौन है?"

लेकिन फिर भी कोई जवाब नहीं मिला। शराफत अली फटाक् से दरवाजा खोलकर अंदर आ घुसा।

घसीटी बेगम डर के मारे कांप रही थी।

"तुम कौन हो? कहां से आयी हो?"

उस दरबे ऐसी कोठरी में बैठी-बैठी घसीटी बेगम पसीने से तर हो रही थी। बुरके के अन्दर हाथ से वह पोटली मानो बार-बार फिसलती जा रही थी।

शराफत अली की निगाह भले ही तेज न हो, लेकिन उस समय न

उतर चुकी थी।

पूछा, "जवाब दो, तुम कौन हो? यहाँ कैसे आयी?"

फिर भी जवाब देने में घसीटी बेगम घबड़ा रही थी। कहीं लोगों को यह न मालूम हो जाय कि घसीटी बेगम खुशबूदार तेल की दूकान में छिपी बैठी है। अगर ऐसा हुआ तो सर्वनाश हो जायेगा। नजर कुली खाँ अगर इस बीच आ गया तो उसे छुट्टी मिले। लेकिन वह यहाँ आने में इतनी देर क्यों कर रहा है? फिर क्या मरियम बेगम ने उसे खबर नहीं दी? या नजर कुली खाँ अभी तक लौटा ही नहीं? रात को वह कहाँ जाता है? अगर कहीं जाता भी है तो इतनी देर कर लौटता क्यों है?

शराफत अली को देर बरदाश्त नहीं हो रही थी।

जिन्दगी भर प्रतिहिंसा और प्रतिशोध-भावना अपने सीने में छिपाये वह बूढ़ा हो चला था। बहुत सारा अर्क, बहुत सारा तमाखू, बहुत सारी अगरबत्तियाँ वह खर्च कर चुका था। पठान-मुल्क से पैदल चलकर बंगाल वह क्यों आया? क्या अर्क, तमाखू और अगरबत्ती का कारोबार करना ही उसका उद्देश्य था? इतने दिनों से उसने अपने सीने में इतना सारा गुस्सा क्यों छिपा रखा? खुद जल-जल मरने के लिए?

"दो, जवाब दो!"

अब शराफत अली को देर बरदाश्त नहीं हो रही थी। उसने घसीटी बेगम का बुरका पकड़कर खींचा। शराफत अली की धुंधली दृष्टि के सामने घसीटी बेगम का चेहरा स्पष्ट हो उठा।

लेकिन बूढ़ा शराफत अली वह चेहरा पहचान न सका। वह उस चेहरे के पास झुक गया।

"कौन हो तुम? यहाँ क्या करने आयी हो?"

घसीटी बेगम ने गिड़गिड़ाते हुए कहा, "हजूर, मैं चेहल-सुतून की बाँदी हूँ।"

"चेहल-सुतून की बाँदी हो तो यहाँ क्यों?"

"हजूर चेहल-सुतून में इनकलाब शुरू हो गया है।"

"इनकलाब?"

"जी हाँ, इनकलाब शुरू हो गया है। सब लोग वहाँ से भाग रहे हैं, मैं भी भाग निकली। मैं घसीटी बेगम साहबा की बाँदी हूँ।"

"घसीटी बेगम!"

नाम सुनते ही जैसे जलती हुई आग में घी पड़ गया। शराफत अली ने घसीटी बेगम के बालों को पकड़ते हुए आवाज दी, "बादशाह! बादशाह!"

तभी ध्यान आया कि बादशाह तो नहीं है। उसने घसीटी बेगम को घसीटते हुए कहा, "आओ, मेरे साथ आओ, इनकलाब में सभी मर रहे हैं तो तू ही क्यों बची रहेगी? चल, तुझे घसीटी बेगम के साथ ही कब्र में दफना दूँ।"

घसीटी बेगम को घसीटते-घसीटते शराफत अली दुकान के बाहर ले गया। जरा ही देर में वहाँ अच्छी-खासी भीड़ जमा हो गयी।

"क्या हुआ अली साहब ?"

शराफत अली बूढ़ा हो गया था। बदन में ताकत नहीं थी फिर भी गुस्से में
पिता हुआ चिल्ला पड़ा, "बदतमीज ! उल्लू का पट्ठा !"

लोगों ने फिर पूछा, "बात क्या है अली साहब ?"

"अरे साहब, यह नमकहराम बाँदी चेहल-सुतून की है। वहाँ पर यह बेगमों
। खिदमत और खुशामद किया करती थी।"

लोग हो-हो कर हँसने लगे।

तभी किसी ने कहा, "बेगमों की खिदमत करना क्या गुनाह है ?"

"जरूर गुनाह है ! पसोटी हाजी अहमद की पुश्त की जो है !"

सुनकर लोग ठहाका मारकर हँसने लगे।

तभी शराफत अली को पता नहीं क्या सूझा, पसोटी बेगम के ऊपर थूक दिया
शराफत अली को देखा-देखी भीड़ के दूसरे लोग भी पसोटी बेगम के ऊपर
कने लगे। उन लोगों को जैसे बिना पैसे का तमाशा देखने को मिल गया था।
राफत अली की खुशी का आज ठिकाना न था।

वह चिल्ला रहा था, "थूको ! बदला लो ! मेरी बीबी के ऊपर हाजी अहमद
जो जुल्म किये हैं, आज सब लोग मिलकर उसका बदला लो ! इस निजामत, इस
बाग और इस बेगम पर तुम थूको। पठान आयें, मराठा आयें या फिरंगी हुकूमत
[illegible] मुझे कोई उज्र नहीं है लेकिन हाजी अहमद के वारिसों को मुर्शिदाबाद की मसनद
चलाने दूँगा। इन बेगम-बाँदियों पर मैंने हजारों अशर्फियाँ खर्च की हैं, सालों से
हें अर्क पिला रहा हूँ। आज मौका मिला है ! आओ, पहले इस बाँदी को ही खत्म
दें।"

थू ! थू !

तभी किसी को देखकर पसोटी बेगम चीख उठी, "नजर ! नजर !"

अपनी मेहर के अभाव में नजर कुली खाँ शायद कहीं रात बिताकर लौट रहा
। शराफत अली की दुकान पर इतने लोगों को जमा देखकर उसे पहले तो बड़ा
ज्जुब लगा। पास जाकर देखने पर पता लगा, बूढ़ा किसी को मार रहा है।

"अरे ! यह तो मेहर है !"

तभी शराफत अली की नजर उस पर पड़ी।

मेहर ! मेहर ! कहता नजर आगे बढ़ ही रहा था कि शराफत अली ने उसे
कड़ लिया। आज बूढ़े में पता नहीं कहाँ से इतनी ताकत आ गयी थी। नजर कुली
हालाँकि आज पहले जैसा नहीं रह गया था। एक जमाना था जब उसके गठीले
दन की ओर मुर्शिदाबाद की औरतें ललचायी नजरों से देखती थीं। जुए और रात-
त भर जागने की वजह से उसकी सेहत खराब हो गयी थी फिर भी नजर कुली में
नी ताकत तो थी ही कि वह बूढ़े शराफत अली को काबू में कर सके।

"अरे बूढ़ा कम्बख्त !"

कहकर नजर कुली खाँ भी पिल पड़ा।

उधर दोनों को गुत्थम-गुत्था होते देख घसीटी बेगम वहाँ से भाग निक

दो-एक ने उसे भागते हुए देख लिया था।

"अरे, बाँदी भाग गयी !"

"पकड़ो ! पकड़ो उसे !"

कुछ लोग घसीटी बेगम के पीछे भागने लगे।

लेकिन घसीटी बेगम बेतहाशा भाग रही थी। सामने ही चेहल-सुतून का फाटक खुला पड़ा था। घसीटी बेगम तीर की तरह उसी में घुस गयी।

इंसाफ मियाँ उस समय जय-जयंती का सुर अलाप रहा था। उसका अलापना करीबन पूरा हो गया था कि छोटे शागिर्द ने कहा, "उस्ताद जी, वह कौन भागी आ रही है ?"

ऊपर से नीचे का सब कुछ दिखाई पड़ता है। उसने झुककर देखा।

फिर भी नौबत बजाते वक्त बाधा पाकर इंसाफ मियाँ चिढ़ गया। ऐसे ही नवाबी की हालत देखकर, उसका मिजाज बिगड़ा हुआ था फिर राग अलापने में भी बाधा पड़ी। उसने बजाना बंद कर कहा, "चुप रह !"

रस-सर्जन में बाधा पड़ने पर गुणी लोग तो चिढ़ेंगे ही।

शराफत अली और नजर कुली अभी तक जूझ रहे थे। नजर कुली खाँ शराफत अली की मेंहदी लगी दाढ़ी पकड़कर खींच रहा था।

जैसे-जैसे दोनों का दंगल जोर पकड़ रहा था वैसे ही लोगों की भी रही थी।

बादशाह छोटे सरकार के साथ आ रहा था। फिरंगी फौजों का हल्ला वह छोटे सरकार को करीब-करीब दौड़ते हुए ही लिये आ रहा था।

दुकान के पास आते ही वह चौंक उठा।

लेकिन छोटे सरकार इस उम्र में बादशाह के साथ कैसे दौड़ सकते थे

बादशाह ने पीछे मुड़कर कहा, "जल्दी आइए बाबू जी ! बहुत जल्दी

छोटे सरकार ने कहा, "जरा धीरे भाई, मुझसे और दौड़ा नहीं ज

"फिरंगी फौज आ रही है, जल्दी भागिए !"

लेकिन छोटे सरकार भागे भी तो कैसे ? अगर एक दिन भाग शायद वे भाग सकते थे, लेकिन कई महीनों से उन्हें भागना पड़ रहा अगर कान्त मिल जाय ? इसीलिए वे बादशाह के साथ दौड़ रहे थे।

शराफत अली की दुकान के सामने आकर इतनी भीड़ देखकर गया था। अभी थोड़ी देर पहले वह बाबू जी को बुलाने दुकान से गया तो भीड़ नहीं थी। फिर क्या हो गया ? फिरंगी फौज आने की खबर शराफत अली की दुकान के सामने आ जुटे हैं।

भीड़ कैसी ?

उधर छोटे सरकार सोच रहे थे, क्या हुआ ? मरियम बेगम पकड़ी गयी क्या ?

"बादशाह, दुकान के सामने इतनी भीड़ क्यों है ?"

बादशाह ने इस बात का कोई जवाब नहीं दिया। वह भीड़ के पीछे खड़ा हो गया था। फिर अंदर झाँकने की कोशिश की।

"क्या हुआ जनाब ? यहाँ क्या हो रहा है ?"

"लेकिन बादशाह के सवाल का जवाब कौन देता ? सभी तमाशा देखने में लगे थे। कहीं तमाशे का मजा न किरकिरा हो जाय।

बादशाह के अच्छी तरह देखने से पहले ही सब फैसला हो चुका। एकदम आखिरी फैसला ! शराफत अली को नजर कुली ने जो जमीन पर पटक दिया तो वह दोबारा उठ न सका। वह वहीं औंधा पड़ा रहा।

"तभी किसी के मुँह से कराह निकली, "या अल्लाह !"

बादशाह जल्दी से भीड़ को चीरता हुआ अंदर पहुँचा। शराफत अभी जमीन पर पड़ा था। विजयी नजर कुली जैसे किसी और को खोज रहा था।

"मेहर ? मेहर कहाँ गयी ?"

किसी पाजी छोकरे ने आवाज कसी, "चिड़िया उड़ गयी !"

और छोटे सरकार ? छोटे सरकार ने देखा कि खुशबूदार तेल की दुकान का मालिक शराफत अली ही मारा गया है, तो वे बुरी तरह डर गये। लेकिन झगड़ा किसको लेकर शुरू हुआ ? मरियम बेगम को लेकर तो नहीं ?

छोटे सरकार ने किसी से पूछा, "वह लड़की कौन थी ?"

"जनाब, चेहल-सुतून की एक बाँदी थी।"

"कहाँ गयी वह ?"

"भाग गयी जनाब !"

"भाग गयी ? कहाँ भाग गयी ? किधर भाग गयी ?"

"उसी तरफ। चेहल-सुतून की तरफ। चेहल-सुतून में घुस गयी है।"

छोटे सरकार के सर पर मानो बिजली गिरी। मोतीझील से निकलकर शायद छोटी बहूरानी और कोई उपाय न देखकर यहाँ भाग आयी थी। शायद कान्त के साथ भागी थी। शायद सोचा था, यहीं से हुनियागढ़ खबर भेज दी जायेगी। लेकिन ऐसा न हो सका। पहले ही शराफत अली को मालूम हो गया और मारपीट-हाथापाई में उसकी जान ही चली गयी। अब शायद कोई उपाय न देखकर वह फिर चेहल-सुतून में भाग गयी है।

छोटे सरकार वहाँ से तुरंत चल पड़े।

अब देर नहीं की जा सकती। जगत्सेठ को खबर करनी ही होगी।

छोटे सरकार फिर महिमापुर की ओर चलने लगे।

●

शराफत अली की दुकान से निकलकर मराली नजर कुली खाँ के मकान क
ओर जा रही थी; लेकिन चेहल-सुतून से आती नौवत की आवाज़ सुनकर वह चौं
पड़ी।

यह क्या! नौवत वज रही है? नवाव क्या लड़ाई में जीत गये हैं?

और तभी आवाजें सुनायी दीं।

—फिरंगी फौज आ गयी!

कुछ लोग वातें करते चले जा रहे थे।

—फिरंगी आ गये हैं!

—निजामत खत्म!

हैं! निजामत खत्म! तव क्या फिरंगी मुर्शिदावाद की मसनद पर वैठेंगे
तव तो भागने के लिए मौका अच्छा है, सभी तो भाग रहे हैं। लेकिन कान्त
पुरकायस्थ जी तो होंगे। उससे कहकर कान्त को छुड़वा लूंगी।

मराली लौट पड़ी। वह शराफत अली की दुकान की तरफ चलने लगी। फिरं
फौज आने से पहले ही सारा इंतजाम कर लेना है। घसीटी वेगम शायद अभी त
उसी कोठरी में वैठी है। नजर कुली खाँ को वुला लाने की वात थी, शायद वह उ
का इंतजार कर रही है।

लेकिन शराफत अली की दुकान के पास पहुँचकर मराली ने देखा, वहाँ
काफी भीड़ इकट्ठी है। वहाँ क्या हो गया? क्या सवको मालूम हो गया है कि घसी
वेगम वाँदी के भेस में छिपी है?

मराली समझ नहीं पायी, क्या करेगी। वह एक क्षण चुपचाप वहीं खड़ी रह
अव आगे चलना मुश्किल था। लेकिन जायेगी कहाँ?

वह फिर लौट पड़ी। दूसरी तरफ महिमापुर जाने का रास्ता था। जगत्
की हवेली में पहुँचने का रास्ता। क्या जगत्सेठ जी के पास ही जाया जाय? व
जगत्सेठ से सव कुछ खोलकर कहा जाय? अव तो लोगों को मालूम हो जाने से व
डर नहीं है। अव अगर जगत्सेठ जी से हतियागढ़ के छोटे सरकर को खवर भेजने
कहा जाय तो क्या वे खवर नहीं भेजेंगे?

जगत्सेठ से मैं साफ-साफ कह दूंगी, मराली ने सोचा, कि मैं मरियम वे
नहीं हूं। असली मरियम वेगम तो महाराज कृष्णचन्द्र के घर है।

अव अगर मेंहदी निसार को मालूम भी हो जाय कि रानी वीवी के भेस
शोभाराम विश्वास की लड़की मराली चेहल-सुतून में आयी थी तो किस का
विगड़ेगा? अव तो फिरंगी हुकूमत कायम होने वाली है! अव तो क्लाइव नव
वनेगा!

यह सव सोचती हुई मराली मोतीझील की ओर वढ़ने लगी।

तभी देखा, सामने से सच्चरित्र पुरकायस्थ चला आ रहा है।

पास आने पर मराली ने कहा, "यह क्या ? आप ?"

"हाँ, बिटिया मैं हूँ।"

"कहाँ जा रहे हैं ?"

सच्चरित्र ने कहा, "मोतीझील छोड़कर जा रहा हूँ। फिरंगी आ रहे हैं न।"

"और सब कहाँ गये हैं ?"

"कोई नहीं है बेटी, सभी नौकरी छोड़कर भागे हैं। फिर मैं किसलिए रहता ? एक बार मुसलमान बना, फिर शायद ईसाई बनना पड़ेगा।"

इतना कहकर इब्राहिम खाँ रोने लगा।

"लेकिन कान्त ?"

"मैंने उससे बहुतेरा कहा लेकिन वह माना नहीं।"

"क्यों ?"

"उसे यही डर था कि उसके भाग जाने से कहीं तुम्हारे ऊपर कोई मुसीबत न आ जाय। मेंहदी निसार तुम्हारे ऊपर बिगड़ा हुआ है न !"

मराली ने कहा, "इस समय तो वहाँ कोई नहीं है, फिर वह क्यों अकेले रह गया।"

"नहीं बेटी, वह तुम्हारे लिए ही वहाँ है। तुम पर मुसीबत आयेगी सोचकर ही उसने ऐसा किया है। तुम्हारे बारे में सोचकर ही बेचारा परेशान है। मैंने कितना समझाया लेकिन उसने नहीं सुना। वह बस यही रट लगाये हुए है कि मेरा कुछ भी हो जाय, मराली का कोई नुकसान न हो। एकदम पागल लगता है !"

"आप जरा मेरे साथ चलिए।"

"हाँ बेटी, मेरी बात तो उसने सुनी नहीं, अगर तुम्हारी बात ही सुन ले।"

मराली जल्दी-जल्दी मोतीझील की तरफ चलने लगी। उसके साथ सच्चरित्र पुरकायस्थ भी चलने लगा।

मोतीझील के आस-पास लोगों की भीड़ थी, लेकिन मोतीझील के अन्दर सुनसान-सा था। और दिन होता तो जहाँ-तहाँ खिदमतगारों की भीड़ होती, चबूतरे पर नवाब या बेगम के तामझाम होते, हाथी-घोड़ा-पालकियों का जमघट होता लेकिन आज कहीं कोई नहीं था।

मराली का मन उस समय भी शराफत अली की दुकान पर पड़ा था। बस, थोड़ी देर के लिए वह वहाँ पर थी। लेकिन उतने ही समय में वह देख आयी थी कि कान्त कैसी कोठरी में, किस तरह रहता है। अँधेरी सीलनभरी कोठरी। बाहर से हवा या रोशनी पहुँच नहीं पाती। फिर वह वहीं दिन गुजार रहा है।

"अच्छा घटक जी, वहाँ इतनी भीड़ क्यों थी ?"

"कहाँ बेटी ?"

"शराफत अली की दुकान के सामने।"

सच्चरित्र ने कहा, "कैसे बताऊँ माँ, आज तो हर कहीं भीड़ है। सभी तो

मुर्शिदाबाद छोड़कर भाग रहे हैं। फिरंगी फौज के डर से कोई यहाँ रहना नहीं चाहता।"

"फिरंगी अत्याचार करेंगे क्या ?"

"इसलिए नहीं बेटी, काम-काज सब ठप हो गये हैं न ? भिश्तियों ने पानी तक नहीं छिड़का, हाथियों को कल से खाना नहीं मिला। मुर्शिदाबाद के घाट पर शराब की नाव आयी है लेकिन शराब की हाँड़ी लाने जा नहीं सका।"

"क्यों नहीं जा सके ?"

"मोतीझील का शराबखाना किसके भरोसे छोड़ जाता ? देख नहीं रही हो मां, सवेरे नौबत बज रही थी फिर एकाएक बन्द हो गयी। क्या पहले कभी ऐसा हुआ है ? क्या सुना है कि कभी ऐसा हुआ है ?"

आस-पास की भीड़ में लोग जो कुछ कह रहे थे वह भी कानों में आ रहा था।

कोई कह रहा था, फिरंगी आ रहे हैं।

कोई कह रहा था, जगत्सेठ को बुलाया गया है। वह रुपया देगा तो नयी फौज बनेगी।

कोई पूछ रहा था, क्या नयी फौज लेकर नवाब फिर लड़ने जायेगा ?

मोतीझील के सामने से जगत्सेठ का तामजान आ रहा था। मराली और सच्चरित्र हटकर खड़े हो गये।

सच्चरित्र ने कहा, "सुना है बेटी, नवाब ने रुपये के लिए जगत्सेठ को बुला भेजा था।"

"आपसे किसने कहा ? आपने किससे सुना ?"

"नियामत कह रहा था। वही तो मेरा मालिक है न ? नवाब लक्काबाग आये तो वह घोड़े पर सवार नवाब के पास पहुँच गया। वह थोड़ी देर पहले मोतीझील आया था।"

"उसने क्या कहा ?"

"उसी ने तो मुझसे चले जाने को कहा। कहा, फिरंगी फौज आ रही है, इसी वक्त भाग जाओ। अब इस बुढ़ापे में कहाँ जाऊँ बेटी ? मेरा कौन है ? किसके पास जाऊँगा ? यही सब सोचते हुए जा रहा था कि तुमसे भेंट हो गयी।"

इतने में दोनों मोतीझील पहुँच गये।

लेकिन मोतीझील पहुँचकर दोनों ही हैरान रह गये। दरवाजा खुला ही था लेकिन कान्त का कोई पता नहीं था।

मराली जल्दी-जल्दी सीढ़ी चढ़ने लगी।

ऊपर जाकर देखा। बरामदे के उस छोर पर का कमरा बंद था।

सच्चरित्र ने कहा, "कमरा खुला है माँ, धक्का दो।"

लेकिन दरवाजा खोलते ही मराली हैरान हो गयी।

मराली ने कहा, "कहाँ है कान्त ? कान्त !"

सच्चरित्र भी आश्चर्य में पड़ गया।

उसने कहा, "मैं तो यहीं छोड़ गया था।"

"आपके जाने के बाद यहाँ कोई आया था क्या ?"

"यहाँ आने को इस समय फुर्सत किसे है ?"

"उससे कोई बात हुई थी ?"

"मैंने उससे कहा था, भैया, अभी यहाँ कोई नहीं है, मैं भाग रहा हूँ, तुम भी जिधर चाहो, भाग जाओ। लेकिन उसने मेरी बात नहीं मानी। कहा, आप जायें घटक जी, मैं नहीं जाऊँगा। मैं जाऊँगा तो वे मराली को पकड़ लेंगे। मैंने बहुत समझाया लेकिन उसने मेरी एक न सुनी। फिर उसके कमरे का दरवाजा खोलकर मैं चला गया था।"

मराली ने फिर कहा, "कोई और तो नहीं आया था ?"

सच्चरित्र ने कहा, "अब यहाँ कौन आयेगा बेटी ? अब इधर देखने की फुर्सत किसे है ? इस समय सभी की निगाह चेहल-सुतून पर लगी है। जिसे जो कुछ मिल रहा है वह उसी पर हाथ साफ कर रहा है। सुना, घसीटी बेगम साहबा भी अपने गहने जेवर लेकर भागी हैं।"

मराली चौंकी।

पूछा, "घसीटी बेगम के बारे में आपको कैसे मालूम हुआ ?"

"कौन कहेगा बेटी ? आज तो सभी कह रहे हैं। और भी सुना है कि नवाब की माँ अमीना बेगम को भी नवाब ने रंगे हाथ पकड़ लिया है।"

"क्यों ?"

"वह भी चेहल-सुतून से गहने चुराकर भाग रही थी। सुना उसे कत्ल कर दिया गया है।"

"आपने ठीक सुना है न ?"

सच्चरित्र ने कहा, "अब सही है या गलत, यह कैसे बताऊँ ? लोगों से जो मालूम हुआ, यही बता रहा हूँ। यही सब सुनकर मेरी जान सूख गयी। मुझे अपनी बार सोचकर भी बड़ा आश्चर्य लगा। एक दिन जात चली गयी थी तो इच्छामती में डूब मरने को सोचा था लेकिन अब वही जान बचाने के लिए भाग रहा हूँ।"

"लेकिन अब क्या किया जाय ?"

सच्चरित्र ने कहा, "यही तो मैं भी सोच रहा हूँ बेटी, कान्त भैया से मैंने बार-बार भागने को कहा, लेकिन वह भागा नहीं। अब उसका क्या हुआ कैसे बताया जा सकता है ?"

मराली ने कहा, "हो सकता है, आपके जाने के बाद वह भी भाग गया हो ?"

"नहीं, कान्त भैया ऐसा नहीं है।"

"यह आपने कैसे समझा ?"

सच्चरित्र ने कहा, "भैया ने मुझसे सब कुछ कहा है। तुम्हारे साथ शादी न हो सकी, इसलिए उसे बड़ा सदमा पहुँचा है। मैंने उससे कहा भी कि इसके लिए

जिम्मेदार मैं हूँ। तुम लोगों की शादी भी नहीं हुई और मेरा भी सर्वनाश हो गया।

जरा देर रुककर सच्चरित्र फिर कहने लगा, "एक बात और है बेटी, भैया मुझसे बार-बार कहता था, मैंने ही मराली की जात बिगाड़ी है। मैं ही उसे चेहल सुतून में ले आया।"

मराली ने कहा, "जो होना था, वह तो हो गया, लेकिन अब वह इतना सोच क्यों रहता है?"

सच्चरित्र ने कहा, "यह उसे कौन समझाता? वह यही सोचते-सोचते ... मायूस हो गया था। मैं उसे कितना समझाता था, तुम्हारी उम्र कम है, तुम फि शादी करके घर बसाओ लेकिन उसने मेरी बात नहीं मानी।"

"चलिए घटक जी, अब यहाँ से चला जाय।"

"लेकिन कहाँ जाओगी बेटी?"

"आप कहाँ जायेंगे?"

"मेरी बात छोड़ो, मैं भी कोई आदमी हूँ। मेरी जान की क्या कीमत है? तु कहाँ जाओगी, यह बताओ।"

मराली ने कहा, "मेरा भी कोई अपना नहीं है। लेकिन आप मेरी चिंता करें, आप अपनी बात सोचें।"

सच्चरित्र ने कहा, "यह कैसे हो सकता है बेटी? मैं तुम्हें अकेले कैसे छो सकता हूँ? मुसलमान हो गया तो क्या इंसान नहीं हूँ? मेरी भी तो हिन्दू बेटी है।"

"फिर आप कहाँ जायेंगे?"

"जहाँ तुम जाओगी, मैं भी वहाँ जाऊँगा।"

मराली ने कहा, "मेरे जाने लायक कोई जगह तो है नहीं घटक जी! एक दि में हतियागढ़ से चेहल-सुतून में आयी थी, अब चेहल-सुतून भी गया तो मैं कह ज़ाऊँ?"

सच्चरित्र ने कहा, "अगर मेरी बात मानो तो इस समय तुम्हारा मुर्शिदाबा में रहना ठीक नहीं है। सुना है फिरंगी फौज आ रही है। अगर फिरंगी फौज आ गय तो यहाँ मारकाट शुरू हो जायेगी। इससे अच्छा है, तुम हतियागढ़ चलो, मैं भी तुम्हा साथ चलता हूँ।"

"लेकिन उन लोगों का क्या होगा? छोटी बहूरानी का क्या होगा? फि हतियागढ़ में किसके पास रहूँगी?"

"तुम अपने बाप के पास रहोगी और कहाँ जाओगी? इस समय जो हालत है देखो नवाबी रहती है या जाती है।"

"ठीक है। वहीं चलिए।"

सच्चरित्र ने कहा, "फिर मेरे साथ आओ। मुर्शिदाबाद के घाट से नाव मि जायेगी। नाव से जाना ही ठीक रहेगा। फिर मल्लाहों से मेरी जान-पहचान भी है शराब की हाँड़ी लाने घाट पर जाता था न!"

मरानी सच्चरित्र पुरकायस्थ के साथ मोतीझील के बाहर आयी। उस समय सड़क पर बड़ी भीड़ थी। मुर्शिदाबाद का बच्चा-बच्चा भाग रहा था।

•

लक्खाबाग के मैदान में तब बंगाल के भाग्य का निर्णय हो चुका था। वहाँ की जमीन अभी भी खून से सनी थी। आम के जो पेड़ सालों से राहगीरों को छाया और आराम देते आये थे, लड़ाई ने जैसे उन्हें भी घायल कर दिया था। किसी के तने में गोली का छेद था तो किसी की शाखा जल गयी थी।

मयदापुर की छावनी में जब सभी लोग सो रहे थे, हाथ में कलम लिये क्लाइव बैठा-बैठा न जाने क्या-क्या सोच रहा था।

हर चीज का जैसे अंत होता है, उसी तरह दुर्भावनाओं का भी कोई अंत हो जाये तो उसमें अचरज की क्या बात है? मयदापुर के आसमान की ओर देखकर राबर्ट क्लाइव जैसे अनमना हो गया।

खबर लेकर सबसे पहले मेजर किलपैट्रिक आया था।

"सर, नवाब भाग गया है!"

सर पर अगर बिजली गिरती तो भी फोर्ट सेंट डेविड का कमाण्डर इस तरह घबड़ा न जाता।

"ह्वाट?"

क्लाइव को इतनी बुरी तरह से चौंकते शायद किलपैट्रिक ने आज पहली बार ही देखा था। वह चौंक उठा। आज सभी जब मर रहे थे उस समय किसी का बच निकलना मानो चौंकाने वाला ही था।

"आर यू श्योर? तुम्हारा कहना ठीक है न?"

आश्चर्य! बड़े ही आश्चर्य की बात थी! मयदापुर की छावनी में जब सब लोग सो रहे हों तब यह सोचने में बड़ा अच्छा लगता है। क्लाइव फिर उस इमारत की छत पर गया। नवाब इसी इमारत में शिकार खेलने के लिए आकर ठहरते थे। यहाँ से नवाब की छावनी दिखाई पड़ती थी। वहाँ भागदौड़ मची थी। नवाब के सभी सिपह-सालार मटरगश्ती कर रहे थे।

"यस कर्नल, मीर जाफर ने अपना वादा पूरा किया है।

लेकिन फ्रान्सीसी जनरल सिनफ्रे की फौज अभी तक गोले बरसा रही है। एक-दो गोले अभी भी सिपाहियों के सामने आ गिर रहे हैं।

क्लाइव ने कहा, "क्विक किलपैट्रिक! अपनी पूरी ताकत अब हमें उसी ओर लगा देनी चाहिए!"

मेजर होने से क्या होता है, किलपैट्रिक अभी भी बच्चा है। नफे-नुकसान की बात घर-गृहस्थी वाले लोग करते हैं, लेकिन लड़ाई के मामले में इतना सोच-विचार नहीं चलता। तुम मेजर हो, कल हो सकता है कर्नल हो जाओगे लेकिन एम्पायर?

:म्पायर की नींव डालने के लिए तो मेरी ही जरूरत होगी !

कल जब मैंने नवाब की आर्मी पर अटैक करने के लिए आर्डर दिया, तुम लोग :र गये थे। कह रहे थे हम लोगों की आर्मी बहुत ही मामूली है, सोल्जर्स कम हैं, ोला-बारूद भी उन लोगों के मुकाबले में बहुत कम है। तुम लोगों का ख्याल था कि ावाब की फौज हमें देखते-देखते पीस डालेगी। लेकिन आज ?

आज यहाँ मयदापुर में आकर तुम लोग मजे से सो रहे हो। बतला सकते हो, सर्फ मेरी आँखों में नींद क्यों नहीं है ?

नहीं, तुम्हें इस बात का जवाब देने की जरूरत नहीं है। इस बात का जवाब देगी हिस्ट्री। हिस्ट्री ही बतलायेगी कि कल मैंने ठीक किया था या गलत। इसके अलावा वह लड़ाई थी ही कहाँ ? इंडियन अगर सच माने में लड़ते तो हम और तुम ाता नहीं कहाँ होते। मेरी डेड बॉडी शायद लक्काबाग की खाई में तैर रही होती।

"कौन ?"

अचानक क्लाइव को लगा कोई सामने आकर खड़ा है।

"कौन हो तुम ? हू आर यू ?" अर्दली शायद सो रहा होगा इसीलिए उसे पता नहीं कि कौन अंदर चला आया ?

फोर्ट सेंट डेविड फतह करने के बाद भी एक बार ऐसा हुआ था। मन जब भी जरा अकेले पड़ता तभी जैसे कोई सामने आकर खड़ा हो जाता है।

"तुम कौन हो ? हू आर यू ?"

लम्बा-चौड़ा डील-डौल। यूरोपियन लगता था। ऐसा क्यों होता है ? यह शक्ल बार-बार आकर क्यों तंग करती है ?

"कमाण्डर, मुझे पहचान नहीं पा रहे हो ? एक दफा पहले भी मैं यहाँ आया था।"

क्लाइव का हाथ कमर में बँधी पिस्तौल पर जा पहुँचा।

"वहाँ हाथ न रखो ! उससे मेरा कुछ भी नहीं बिगड़ेगा। मैं मर नहीं सकता !"

"लेकिन हू आर यू ? तुम बार-बार मेरे पास क्यों आते हो ?"

उस शख्स ने कहा, "मैं सक्सेस हूँ !"

"सक्सेस ?"

"हाँ, जो लोग किस्मत के साथ लड़कर आगे बढ़ते हैं, मैं उनसे मिलता हूँ। उन्हें सावधान कर देता हूँ। सावधान कर देना ही तो मेरा काम है। तुम भी अब कहाँ से कहाँ पहुँच गये हो ! तुमने मद्रास का फोर्ट सेंट डेविड हासिल किया, चन्दननगर पर कब्जा किया और अब बंगाल भी ले लिया।"

क्लाइव ने कड़ककर कहा, "तुम्हें जो कहना है झटपट कह डालो, मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं है !"

उस शक्ल ने हँसते हुए कहा, "इंसान जब सक्सेसफुल हो जाता है तो उसे वक्त की कमी महसूस होती है। फिर भी वक्त निकालना ही पड़ता है। इसीलिए तो मैं आया

हूँ। एक दिन था, जब तुम्हारे पास कुछ भी नहीं था। न दौलत थी न दोस्त। कभी उन दिनों की याद आती है ?

"लेकिन याद करने से फायदा ही क्या है ?"

"लेकिन मैं तो आज उसी बात की याद दिलाने आया हूँ कर्नल! उसको याद करना तुम्हारे हक में अच्छा होगा।"

"अच्छा क्या होगा ? मैंने अपनी हिम्मत और मेहनत से भाग्य को झुकाया है।"

उस शक्ल ने कहा, "मुझे मालूम था कि तुम यही बात कहोगे। लेकिन तुम क्या इसे पहचानते हो ?'

राबर्ट क्लाइव जोर से चीख उठा, "नहीं! नहीं!"

चीख सुनकर अर्दली दौड़ता हुआ आया—"हुजूर!"

उधर किलपैट्रिक और आयर कूट की भी नींद टूट गयी। वे दोनों भी दौड़े-दौड़े आये।

"ह्वाट्स अप कर्नल ? क्या बात है कर्नल ?"

शर्म से क्लाइव का चेहरा झुक गया। उसे इस तरह से नहीं डरना चाहिए था। प्लासी की लड़ाई जीतने के बाद वह इस तरह एक डरपोक की तरह चीखने लगा! लेकिन वह शक्ल आखिर क्यों आती है ? आकर इस तरह उसे 'हुकुम की बेगम' क्यों दिखलाती है ?

. यह ताश का पत्ता उसे क्यों दिखलाता है ?

सब लोग अपनी-अपनी जगह चले गये। पिछले दिन की लड़ाई के बाद सभी लोग बुरी तरह थके हुए थे। बेकार में नींद खराब हुई। क्लाइव फिर से लिखने की कोशिश करने लगा। डिसपैच लिखना भी मुश्किल हो गया।

क्लाइव किसी तरह कलम चलाने लगा, 'प्लासी की लड़ाई में हम लोगों ने फतह हासिल की है। मुर्शिदाबाद का नवाब भाग गया है। आर्मी लेकर मैं उसका पीछा कर रहा हूँ। हमारे सात ह्वाइट सोल्जर्स और कुछ नेटिव सिपाही मारे गये हैं। नवाब के जनरल मीर जाफर अली ने दाऊदपुर में मुझसे मुलाकात की थी। वह मुझ पर शक न करे इसलिए उसे गले से लगाकर मैंने पास में बैठाया। मैंने उससे कहा, मैं तुम्हें ही मुर्शिदाबाद का नवाब बनाऊँगा। मेरी बात सुनकर मीर जाफर खुश हो गया। मैंने उससे मुर्शिदाबाद पहुँचकर नवाब की गतिविधियों की खबर देने को कहा है। मीर जाफर का खत आने पर ही मैं बंगाल के कैपिटल के लिए कूच करूँगा।

खत को लिफाफे में रखकर बंद किया। कल सुबह ही यह लेटर चला जाना चाहिए। एक लेटर पेगी को भी लिखना है, लेकिन वह बाद में भी लिखा जा सकता है।

इसके बाद क्लाइव अपने बिस्तरे पर जा लेटा। उसने रोशनी जली रहने दी। अँधेरे में उसे बड़ा डर लगता है।

लेकिन कहाँ से नींद आ गयी, पता न चला। लेकिन नींद टूटते ही ... साहब ने

देखा, बाहर काफी उजाला हो चुका है।

"अर्दली !"

दौड़ते हुए अर्दली आया। हरीचरण नहीं था। वह तो हिन्दू लेडियों के साथ गया है। उसकी जगह यह नया अर्दली आया है।

अर्दली ने कहा, "हुजूर, कलकत्ते से मुंशी आया है।"

"ठीक है, ले आओ !"

कलकत्ते के किले से नाव में सारा रास्ता तय कर नवकृष्ण दाऊदपुर पहुँचा था। वहाँ जाकर पता चला कि साहब मयदापुर में है। वह रात को ही वहाँ आ पहुँचा था लेकिन रात के वक्त साहब को तकलीफ देना ठीक नहीं समझा।

मुंशी ने आते ही साहब के पैरों में सर टेककर प्रणाम किया।

क्लाइव ने कहा, "क्यों मुंशी, क्या खबर है ?"

मुंशी नवकृष्ण ने कहा, "पिछले पंद्रह दिन से मैं माँ सिंहवाहिनी की पूजा कर रहा हूँ। कल अचानक माँ के माथे से फूल गिरा।"

"फूल गिरा माने ?"

"मैंने माँ से कह रखा था कि अगर माथे से फूल गिरेगा तो समझूँगा कि हुजूर ने लड़ाई में फतह हासिल की है।"

क्लाइव को अचानक रातवाले सपने की याद आ गयी। इस मुंशी से पूछकर देखा जाये।

"मुंशी, तुम सपना देखते हो ?"

"जी, सपना ? रोज ही देखता हूँ।"

"क्या देखते हो ?"

"जी, देखता हूँ कि हुजूर राजराजेश्वर हो गये हैं और मैं हुजूर के चरणों में बैठा हुजूर की सेवा कर रहा हूँ।"

"अरे वह नहीं। और कोई सपना नहीं देखते ?"

"नहीं हुजूर, रोज यही सपना देखता हूँ।"

"अच्छा, रात के वक्त सपने में कोई तुम्हारे कमरे में नहीं आता ?"

"आयेगा कैसे हुजूर, मैं तो दरवाजा बंद करके सोता हूँ।"

क्लाइव ने कहा, "लेकिन सपने में तो दरवाजा बंद रहने पर भी कमरे में आया जा सकता है ?"

"जी हाँ हुजूर, ऐसा हो सकता है।"

"तब इसी तरह कोई आकर तुम्हें कुछ नहीं दिखलाता ?"

"क्या दिखलायेगा हुजूर ?"

"मान लो, ताश का एक पत्ता।"

"ताश ?"

मुंशी नवकृष्ण को बड़ा अजीब लग रहा था। साहब का दिमाग तो ठीक है ?

"हाँ मुंशी, ताश। क्वीन ऑफ स्पेड्स। हुकुम की बेगम।"

मुंशी सोच रहा था, साहब का दिमाग सचमुच खराब हो गया है।

"छोड़ जाने दो, तुम यह सब नहीं समझ पाओगे।"

सच ही तो, हर किसी की समझ में हर एक बात कैसे आ सकती है? यह नसीहत! यह क्वीन ऑफ स्पेड्स! वह सबल क्लाइव को क्वीन ऑफ स्पेड्स क्यों दिखाती है? तब क्या सक्सेस माने ही क्वीन ऑफ स्पेड्स है! सक्सेस माने ही क्या माया है? सक्सेस मिलना क्या अच्छा नहीं होता? सक्सेस माने ही क्या मौत है? डेथ ऑफ क्लाइव!

मद्रास में इस शख्स ने कहा था, क्लाइव तुम महान न बनो, महान होना माने ही सक्सेसफुल होना है। और सक्सेसफुल होना माने ही तकलीफ पाना है। तुम एक आम इंसान बनने की कोशिश करो। नार्मल ह्यूमन बीग बनने की कोशिश करो। तभी तुम्हें शांति मिलेगी।

अचानक बाहर से बिगुल बजने की आवाज आयी।

"कोई आया है क्या मुंशी? अर्दली!"

अर्दली ने आकर सैल्यूट किया।

"हुजूर, मीर जाफर अली साहब ने अपने लड़के मीरन अली को हुजूर से मिलने के लिए भेजा है।"

"ले आओ।"

मीरन ने आकर कोर्निश की।

"क्या खबर है मीरन साहब?"

"हुजूर, नवाब सिराजुद्दौला मुर्शिदाबाद से भाग निकले हैं।"

"नवाब भाग निकला है? कहाँ?"

"खोज करने के लिए चारों ओर आदमी जा चुके हैं।"

सुनते ही क्लाइव की सारी थकान और सपने हवा हो गये। अर्दली को बुलाकर उसने कहा, "मेजर किलपैट्रिक को सलाम बोलो!

अर्दली कोर्निश कर बाहर चला गया।

•

डिहीदार रजा अली उस समय मुर्शिदाबाद आया था जब उसके आने की कोई जरूरत नहीं थी। लेकिन न आने से भी कैसे चलता? उसके न आने पर शायद उद्धवदास का 'बेगम मेरी विश्वास' लिखना संभव न होता।

सारे खिदमतगार मोतीझील छोड़कर भाग गये थे।

इब्राहिम खाँ ने बहुतेरा कहा लेकिन कान्त ने भागने से इंकार कर दिया। नहीं, वह नहीं जायेगा। वह अगर मरालो को बचा लेता है तो उसे और चाहिए ही क्या? मरालो को दी जाने वाली हर सजा वह बिना एक बार भी उफ किये बर-

करेगा। वह आखिर भागे तो किस लिए ? जान जाने के डर से ?

कान्त को अचानक बहुत दिनों पहले की एक बात याद आ गयी। चौक बाजार के एक ज्योतिषी ने उसका हाथ देखकर कहा था—जिसके साथ आपका विवाह होने वाला था, उसी के साथ आपका विवाह होगा।

उसने एक बात और कही थी—पानी से जरा सावधान रहियेगा बाबू, हाथ में पानी में डूबने की रेखा है।

अपने लिए कान्त डरता नहीं था। वह डरता था मराली के लिए। वह ...था, मराली सुखी हो, मराली पर से विपत्ति टल जाय। ऐसा हुआ तो वह मरने को भी तैयार है। भले ही पानी में डूब मरे या आग में जल मरे।

तभी अचानक दरवाजा खुलने की आवाज हुई। कान्त जल्दी से बुरके में अपने को अच्छी तरह से छिपाकर बैठ गया।

दरवाजा खुलने पर कान्त ने देखा, मेंहदी निसार, हतियागढ़ का डिहीदार रजा अली और बशीर मियाँ अंदर आ रहे हैं। मेंहदी निसार को देखने से लगता था जैसे वह काफी हड़बड़ी में है।

बुरके में छिपकर कान्त ने तीनों को देखा। उनको देखकर कान्त का दिल धक से हो गया फिर दूसरे ही क्षण उसने सोचा, मैं किस लिए डरूँ ? मैं तो मरने ही आया हूँ ! मरने से अगर मैं डरता तो बहुत पहले मोतीझील छोड़कर भाग जाता। मैं तो मराली के लिए ही मर रहा हूँ। अगर मराली बच जाय तो मुझे मरने में भी सुख है।

मेंहदी निसार को शायद उस समय बहुत ज्यादा काम था। लेकिन डिहीदार रजा अली उसे जबर्दस्ती अपने साथ ले आया था।

मेंहदी निसार कह रहा था, "यह देखो, मरियम बेगम यह रही।"

बशीर मियाँ ने कहा, "खुदावन्द तो खुद मरियम बेगम को यहाँ छोड़ गये थे।"

डिहीदार रजा अली ने कहा, "लेकिन यह असली रानी बीबी नहीं है।"

"असली रानी बीबी नहीं है माने ?"

डिहीदार ने कहा, "हतियागढ़ के राजा ने अपनी असली रानी को तो कहीं छुपा दिया था और उसकी जगह नकली रानी बीबी को यहाँ भिजवा दिया था।"

"सबूत ?"

डिहीदार रजा अली ने कहा, "सबूत मंसूर अली मेहर साहब के दफ्तर में... हजूर की इजाजत हो तो हाजिर करूँ।"

बशीर मियाँ ने कहा, "खुदावन्द अगर हुक्म दें तो इसी से पूछा जाय।"

"अरे बेवकूफ, इससे पूछने पर तो यह झूठ बतलायेगी ही।"

डिहीदार ने कहा, "फिर जनाब, इसे चेहल-सुतून में कैद कर रखिए।"

"क्यों, यहाँ मोतीझील में क्या हर्ज है ?"

डिहीदार रजा अली ने कहा, "जनाब, मोतीझील में इस समय कोई खिदमतगार नहीं है, फाटक पर पहरा भी नहीं है और सभी लोग भाग गये हैं। इस हालत में

अगर यह भाग जाय ?"

मेंहदी निसार ने बशीर मियाँ से कहा, "बहुत अच्छा, फिर मरियम बीबी को चेहल-सुतून में पीर अली या नजर मुहम्मद के जिम्मे रख आ। फिर मैं फुर्सत मिलने पर इसे देखूँगा। इस समय नवाब भी बिगड़े हुए हैं, जगत्सेठ भी बिगड़े हुए हैं और मेरे जिम्मे भी काफी काम है।"

इतना कहकर मेंहदी निसार पीछे मुड़ा।

ढिढ़ोदार ने बशीर मियाँ को इशारा किया तो बशीर मियाँ ने मरियम बेगम की ओर देखकर कहा, "आइए बेगम साहबा, मेरे साथ आइए।"

कान्त ने अच्छी तरह अपने को बुरके में छिपा लिया। फिर वह दोनों के पीछे-पीछे चलने लगा।

चबूतरे के नीचे एक पालकी खड़ी थी। उसी में बैठने को कहा गया। कान्त पालकी में जा बैठा तो बशीर मियाँ ने पालकी का दरवाजा बंद कर दिया। फिर तो कान्त को कोई नहीं देख सकता था। पालकी झूमती हुई चलने लगी।

अब नौबत की आवाज साफ सुनाई पड़ने लगी। कान्त समझ गया, उसे चेहल-सुतून में ले जाया जा रहा है। धीरे-धीरे लोगों की चहल-पहल की आवाज भी कम होने लगी।

कान्त ने सोचा, पता नहीं मुझे इस बार कहाँ रखा जायेगा ? अगर किसी को मालूम हो जाय तो उसे कैद भी होना पड़ सकता है या मरना भी पड़ सकता है।

पालकी में ही बैठे-बैठे कान्त बुरके में पसीने से तर हो रहा था। उसने मन ही मन कहा, फिर भी मराली, तुम मेरी चिंता न करो। मैं जहाँ भी रहूँ, जैसे भी रहूँ, तुम्हारी मंगल-कामना करता रहूँगा। कम से कम इतना सोचकर तो शांति मिलेगी कि तुम्हें सुख मिला है। अगर हो सके तो तुम मुर्शिदाबाद से चली जाओ, फिर वह उद्धवदास मिल जाय तो उसी के साथ सुख से घर बसाओ।

अचानक पालकी हिल गयी।

यह कहाँ आना हुआ ? सर के ऊपर नौबत बज रही थी। फिर क्या इतनी देर बाद पालकी चेहल-सुतून में दाखिल हुई ?

बशीर मियाँ की आवाज सुनाई पड़ी।

"नजर मुहम्मद !"

नजर मुहम्मद की आवाज़ सुनाई पड़ी।

"क्या बात है ?"

"मोतीझील से मरियम बेगम साहबा को ले आया हूँ, पालकी में है। मेंहदी निसार साहब का हुक्म है, इसे ताले में बंद कर किसी महल में रखना होगा।"

"मरियम बेगम साहबा ने क्या कुसूर किया है ?"

बशीर मियाँ शायद यह सवाल सुनकर बिगड़ गया। उसने कहा, "यह सब जान-कर तुम क्या करोगे ? मेंहदी निसार ने जो हुक्म दिया है उसी की तामील करो।"

नजर मुहम्मद का मिजाज भी शायद ठीक नहीं था। उसने कहा, "बेगम साहबा अगर भाग जायें तो मैं कुछ नहीं जानता।"

"क्यों? भागेगी क्यों? कमरे में ताला बंद कर रखेगा, फिर भी भाग जायेगी!"

"अरे साहब, चेहल-सुतून में हंगामा मचा हुआ है। घसीटी बेगम तो भाग ही गयी थी।"

"क्या कहा?" अकेले बशीर मियाँ ही नहीं चौंका, बल्कि बुरके में छिपा कान्त भी यह सुनकर चौंक पड़ा था।

बशीर मियाँ ने पूछा, "फिर क्या हुआ?"

"हुजूर, नवाब तो चेहल-सुतून में आये हैं। खास दरबार में नवाब सबसे सलाह-मशविरा भी कर रहे हैं और इधर चोरी भी हो रही है।"

बशीर मियाँ मानों और भी हैरान हो गया। चोरी! किसने चोरी की? क्या चोरी की?

"हुजूर, अमीना बेगम साहबा रँगे हाथ गिरफ्तार हो गयी हैं।"

बशीर मियाँ ने कहा, "क्या कहते हो? क्या कहते हो नजर?"

"जी हाँ। अमीना बेगम मालखाने का संदूक खोलकर जेवर चुरा ही रही थीं कि पकड़ ली गयीं। फिर हंगामा शुरू हो गया। इसीलिए कह रहा था।"

"लेकिन नवाब कहाँ हैं? नवाब ने कुछ नहीं कहा?"

नजर मुहम्मद ने कहा, "नवाब तो इस समय खास दरबार से निकलकर [illegible] महल में गये हैं। वे इस समय नानी बेगम के महल में हैं।"

बशीर मियाँ के पास भी समय कम था। इसलिए उसने कहा, "ठीक है, मैं जा रहा हूँ, तुम मरियम बेगम को हिफाजत से रखना। कहीं भाग न जाय।"

बशीर मियाँ चला गया।

पालकी फिर चलने लगी। अब एक दूसरी जगह जाकर पालकी रुकी।

पालकी रुकते ही उसका दरवाजा खुल गया।

नजर मुहम्मद ने कहा, "आइए बेगम साहबा!"

कान्त ने अपने को बुरके में अच्छी तरह छिपा लिया। फिर वह नजर मुहम्मद के पीछे-पीछे एक कमरे में पहुँचा। यह मराली का कमरा था। इसी कमरे में [illegible] कितने ही दिन छिपकर आया था। यही नजर मुहम्मद कितने ही दिन उसे घूस लेकर यहाँ पहुँचा गया था। फिर काफी रात तक मराली के पास रहने के बाद वह सुरंग के रास्ते बाहर चला गया था।

नजर मुहम्मद पहुँचाकर बाहर चला गया। जाते समय उसने कहा, "आपको अगर किसी चीज की जरूरत हो तो मुझे हुक्म करेंगी। मैं आपका हुक्म बजा लाऊँगा। इस समय कोई जरूरत है?"

कान्त ने कहा, "नहीं।"

नजर मुहम्मद ने कहा, "बाहर से मैं ताला बंद कर रहा हूं।"

इतना कहकर वह ताला बंद कर चला गया।

कान्त बुरका उतारकर आईने के सामने जा खड़ा हो गया। मराली जिस तरह मरियम बेगम बन कर सजती थी, ठीक उसी तरह वह भी सजा था। अगर कोई देख ले तो तुरंत नहीं पहचान पायेगा।

कान्त पलंग पर लेट गया। अब थोड़ी देर के लिए वह निश्चिंत हो गया। अब थोड़ी देर के लिए उसे कोई परेशान न करेगा। अब किसी तरह दो दिन बीत जायें तो मराली जरूर मुर्शिदाबाद छोड़कर भाग जायेगी। बहुत दूर वह भाग जायेगी। बहुत दूर! ऐसी जगह वह पहुंच जायेगी, जहां न तो नवाब सिराजुद्दौला है और न मेंहदी निसार। सफी-उल्लाह या यारजान कोई भी वहां न होगा। जगत् सेठ, अमीचन्द, नन्दकुमार कोई भी वहां न रहेगा। वहां मराली अपना घर बसायेगी। सुख और शांतिमय उसका जीवन होगा। फिर कोई उसके रूप के लिए उसे परेशान न करेगा, कोई उसके यौवन के लिए भी परेशान न करेगा, कोई उसकी कम उम्र के लिए परेशान न करेगा। उसकी असहाय अवस्था से लाभ उठाकर भी कोई उस पर अत्याचार न करेगा।

जाओ मराली, तुम जाओ! जितनी जल्दी हो सके, तुम जाओ! मेरे बारे में न सोचो! मैं तुम्हारे लिए हंसते हुए सारा दुःख झेलूंगा। मुझे कोई तकलीफ न होगी। मुझे अगर ये लोग मार भी डालें तो मरते हुए यही सोच लूंगा कि मराली सुख से है, शांति से है।

सहसा कान्त के कानों में शोरगुल की आवाज आयी। चेहल-सुतून के अन्दर से यह आवाज आ रही थी। कई बेगमों और खोजाओं के चिल्लाने और बकने-झकने की आवाजें थीं। लेकिन साफ-साफ किसी की आवाज वह पहचान न पाया।

कान्त फिर भी कान लगाये रहा।

●

नानी बेगम के शरीर को न तो विश्राम मिल रहा था और न उनकी आंखों में नींद थी। वही जो भोर होने से पहले वे मरियम बेगम को देखने मोतीझील गयी थीं और उसी समय मिर्जा आये थे। लेकिन मिर्जा उनसे ठीक से बात करने से पहले ही खास दरबार में चले गये थे। फिर पीर अली से खबर मिलते ही वे मालखाने की तरफ भागी थीं।

पीर अली ने जो कुछ कहा था, सच था।

"तू? तू यहां क्या कर रही है?"

अमीना उन्हीं की कोख से जन्मी बेटी थी। मिर्जा की मां। आज उसी अमीना ने ऐसा किया!

अमीना भी पहले घबरा गयी थी। मालखाने की चाभी न जाने

मिल गयी थी। उसी चाभी से उसने मालखाने का संदूक भी खोल लिया था। यह दौलत क्या अकेले उसके लड़के की थी ! यह तो नवाब-निज़ामत की धरोहर थी। जितनी बेगमें थीं सभी की दौलत यहाँ जमा थी। बेगमों के लिए और चेहल-सुतून के लिए मुर्शिदाबाद के नवाबों ने यहाँ अकूत दौलत इकट्ठी कर रखी थी।

बहुत से गहने अमीना ने हटा लिये थे। किसी को पता भी न चला था।

सहसा नानी बेगम की आवाज सुनकर वह ठिठककर खड़ी हो गयी थी।

"यह क्या ? तू यहाँ क्या कर रही है ? मालखाने की चाभी तुझे कहाँ से मिली ?"

नानी बेगम साहबा को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

"तू यह क्या कर रही है अमीना ? मिर्जा की दौलत चुरा रही है तू ? अपने ही बेटे की दौलत चुरा रही है ?"

लेकिन अमीना भी चिल्लाना जानती थी।

"बेटा ? अपना बेटा ? मेरे बेटे ने भी क्या कभी अपनी माँ की तरफ देखा है ?"

"तू तो अजीब बात कर रही है अमीना ! तू कह क्या रही है ? मिर्जा तेरा अपना बेटा नहीं है ? क्या कह रही है तू ?"

अमीना भी फुफकार उठी। बोली, "अगर मिर्जा मेरा बेटा होता तो क्या अपनी माँ की तरफ से यों आँखें फेर लेता ? माँ की सुविधा और असुविधा का क्या उसने कभी ख्याल किया है ?"

"क्या ? मिर्जा ने तेरी सुविधा-असुविधा का कभी ख्याल नहीं किया ? तू मिर्जा की माँ होकर ऐसी बात कर रही है ?"

अमीना ने कहा, "क्यों नहीं करूँगी ? मालूम है, मिर्जा ने मेरा कितना नुकसान किया है ? अस्सी हजार रुपये का शोरा मिर्जा के लिए पड़ा रहा। अब मैं वह शोरा किसके हाथ बेचूंगी ?"

नानी बेगम साहबा ने अपने गाल पर हाथ रखा। कहा, "अरी अमीना, मिर्जा की इस मुसीबत से भी तेरा अस्सी हजार का शोरा ही बड़ा हुआ ? मिर्जा उसके आगे कुछ भी नहीं है ! मिर्जा क्या तेरा कोई नहीं है ?"

देखते-देखते और भी बेगमें वहाँ आकर खड़ी हो गयीं। वे भी माँ-बेटी का झगड़ा सुनने लगीं। चेहल-सुतून की बाँदियाँ और खोजा लोग भी पहुँच गये। माँ-बेटी का झगड़ा जैसे-जैसे जोर पकड़ता गया, वैसे-वैसे भीड़ भी इकट्ठी होने लगी।

ठीक उसी समय शोरगुल सुनकर खास दरबार से मिर्जा मुहम्मद भी वहाँ पहुँच गया।

नानी बेगम साहबा पहले कुछ समझ न सकी थीं। समझतीं भी कैसे ? मिर्जा भी माँ की हरकत देखकर थोड़ी देर के लिए गूँगे बन गये थे। जिसके पास मसनद है शायद वह कुछ बोल भी नहीं सकता। कुछ बोलना मानो उसके लिए गुनाह है।

मिर्जा ने दम्र कहा, "नानी जी, मेरे सीने में छुरा भोंक सकती है ?"

"यह तू क्या कह रहा है मिर्जा ? ऐसा भी कहा जाता है क्या ?"

मिर्जा ने कहा, "मैंने ठीक ही कहा है नानी जी ! जगत्सेठ का क्या दोष ? मीर जाफर या अमीचन्द का भी क्या दोष ? फिरंगी क्लाइव का भी क्या दोष ? सब मेरा दोष है नानी जी । अपने सीने में छुरा भोंक लेने पर ही शायद मुझे शान्ति मिल सकती है ।"

नानी बेगम साहबा ने दोनों हाथों से मिर्जा को धकेलकर कहा, "तू अपने महल में जा मिर्जा ! इस समय तेरा दिमाग ठीक नहीं है, तू समझ नहीं सकेगा ।"

मिर्जा ने कहा, "घर में या बाहर, कहीं भी मुझे शांति नहीं मिलती नानी जी ! कहीं भी जाकर मुझे शांति नहीं मिलेगी । अब तक क्लाइव शायद मुर्शिदाबाद के लिए रवाना हो गया होगा । अब मैं क्या करूँ नानी जी ? क्या करूँ ?"

"जगत्सेठ ने रुपया नहीं दिया ?"

मिर्जा बोले, "नहीं, इतना रुपया वह दे नहीं सकता ।"

फिर मिर्जा ने नानी जी से अपना हाथ छुड़ा लिया । कहा, "ठीक है नानी जी, मुझे किसी की दया नहीं चाहिए । अपने जीवन में मैंने कभी किसी से भीख नहीं माँगी । किसी ने मुझे प्यार नहीं किया तो मैंने भी प्यार की भीख नहीं माँगी । जब कोई भी मेरा नहीं है तो मैं भी किसी का नहीं हूँ । किसी के लिए मैं नहीं सोचूँगा । मेरे जो मन में आयेगा वही करूँगा ।"

इतना कहकर मिर्जा जल्दी-जल्दी बाहर चले गये ।

नानी बेगम ने पीछे से पुकारा, "मिर्जा ! मिर्जा ! अरे मिर्जा सुन तो ।"

लेकिन मिर्जा तब तक चेहल-सुतून के बाहर चले गये थे ।

नानी बेगम ने एकबारगी चारों तरफ देखा, फिर चिल्लाकर कहा, "तुम सब यहाँ क्या कर रही हो ? क्या देख रही हो ? जाओ, हटो यहाँ से ! दूर हो सामने से ।"

पेशमन बेगम, तकी बेगम, बब्बू बेगम, शिरीना, सकीना, महमूदा और जबीन सभी डरकर भाग गयीं ।

फिर अमीना की तरफ देखकर नानी बेगम ने कहा, "मुँहजली, तू डायन है ! तेरी कोख से तू डायन पैदा हुई है । तू मर क्यों नहीं गयी ? मेघना में डूबकर तू मर क्यों नहीं गयी ? तेरा मुँह देखना भी पाप है । माँ होकर तू अपने बेटे का बुरा चाहती है । तू इंसान है या हैवान ?"

अमीना भी कम नहीं थी । वह भी कुछ कहने जा रही थी कि पीर अली अचानक दौड़ता हुआ आया ।

"नानी बेगम साहबा, नवाब खजांचीखाने में गये हैं ।"

"क्यों रे ? वहाँ क्या करने गया मिर्जा ?"

"नवाब ने मुहर्रिर साहब को हुक्म दिया है कि निजामत में जितना रुपया

वकाया है सव वापस दे दिया जाय। चौक वाजार में डुग्गी पीटने के लिए आदमी गया है।"

यह सुनकर नानी वेगम मानो गूंगी हो गयीं। उनके मुंह से कोई आवाज़ नहीं निकली।

चौक वाजार के लोग भी वह ऐलान सुनकर हैरान हो गये।

"क्यों जी, प्यादे लोग क्या कह रहे हैं?"

जो जहां था, दौड़ा हुआ आया।

"नवाव मिर्जा मुहम्मद हैवते-जंग सिराजुद्दौला शाह कुली खान आलमगीर का हुक्म है—"

"क्या हुक्म है? क्या हुक्म है?"

"जिसका जो भी वकाया है, पावना है निज़ामत के खजांचीखाने से आकर ले जाय। खजांचीखाना खुला हुआ है। मुर्शिदावाद का कोई भी आ सकता है।"

वंगला और उर्दू की मिली-जुली भाषा में जिससे सभी समझ सकें प्यादे लोग डुग्गी पीट-पीटकर चिल्लाने लगे।

इस तरह की डुग्गी पिटने से भला लोग चुप वैठे रहते! सभी खजांचीखाने की ओर दौड़ पड़े। यों भी निजामत के खजांचीखाने में लोग नहीं थे, लेकिन वहां हजारों लोग पहुँच गये थे। सभी अपना पावना समझकर ले रहे थे। भले ही पावना न रहे लेकिन मुफ्त में रुपया मिल रहा है तो क्यों न लिया जाय। फिरंगी फौज तो आयेगी ही, उसके पहले कुछ रुपये मिल जायें तो उसी को लेकर भागा जा सकेगा।

जो मुर्शिदावाद छोड़कर भाग रहे थे, भागने के लिए नाव पर सवार हो रहे थे, वे भी लौट आये। रुपया मिल रहा है तो क्यों न लिया जाय? रुपया ही तो जीवन का मूल है!

मनुष्य के लोभ, मनुष्य के पाप और मनुष्य की कुप्रवृत्तियों ने मानो हजार हाथों से उस दिन मुर्शिदावाद को अपना ग्रास वनाने के लिए पकड़ लिया था। एक दिन वर्गी के हमले से वचने के लिए निजामत की ओर लोगों ने आशा से देखा था, अव वे ही निजामत पर पदाघात करते कुंठित न हुए। उन लोगों के लिए जो निजामत थी, फिरंगी कम्पनी भी वही थी। कोई भी हुकूमत अपनी नहीं थी। नवाव ने अपने अच्छे वक्त में हमारे वारे में कव सोचा था? अव उसके वुरे वक्त में हम भी क्यों उसके वारे में सोचें? हम तो मामूली लोग हैं, हमें तो अपना फायदा खुद देखना होगा! लेकिन नवाव का फायदा? वह नवाव खुद देखेगा। जव नवाव ने हमारे वारे में कभी नहीं सोचा तो हम ही उसके वारे में क्यों सोचें?

चार घड़ी रात के वक्त भी खजांचीखाने में लोगों की भीड़ कम नहीं हो रही थी! दो, मुझे पहले दो! पीछे से किसी और ने कहा, मुझे पहले दो! फिर सभी एक साथ चिल्लाये, हमें पहले दो! ऐसा दिन फिर कभी नहीं आयेगा। ऐसी रात भी शायद फिर कभी न आये। इतिहास में शायद कभी इसकी पुनरावृत्ति न हो। खजांची-

खाने का रुपया प्रजा का रुपया है। उस पर मेरा कोई अधिकार नहीं है। मैं तुम लोगों का नवाब हूँ। तुम्हारे दुःख में मैंने कभी मदद नहीं की। मैंने अनेक अन्याय किये हैं। अब मुझे कुछ न्याय भी करने दो। तुम्हीं लोगों को दान कर पुण्य कमाने दो। मेरे पास जो कुछ है सब कुछ तुम्हीं लोगों को देने के बाद मैं यह मसनद छोड़कर चला जाऊँगा। मुझे तुम लोगों का आशीर्वाद नहीं चाहिए, मुझे तुम लोगों की करुणा भी नहीं चाहिए, मुझे तुम लोगों से स्नेह-प्यार-ममता कुछ भी नहीं चाहिए। हालीशहर का एक कवि था। उसने मुझे गाना सुनाया था। उसका गाना सुनने के बाद ही मैंने सब कुछ छोड़कर चले जाना चाहा था। आज मेरे जाने का दिन आ गया है। आज तुम लोग जितना चाहो ले लो, चाहे जितना। खजांचीखाने का दरवाजा मैंने खोल रखा है। कोई यह न कहे कि मुझे कुछ नहीं मिला या नवाब ने मुझे कुछ नहीं दिया।

चेहल-सुतून में उस रात अचानक उल्लू बोल उठा।

नवाब ने चारों ओर देखा। लुत्फुन्निसा की आँखें शायद अभी-अभी लगी थीं। बदन में किसी का हाथ लगते ही वह जाग गयी।

"ओ, आप ?"

"मैं जा रहा हूँ।"

"कहाँ जा रहे हैं ?"

"जिधर खुदा ले जाये।"

लुत्फुन्निसा ने कहा, "लेकिन आप मुझे अकेला छोड़कर नहीं जा सकते। मैं भी साथ चलूँगी।"

"लेकिन मैंने तो तुमसे कभी सीधे मुँह बात नहीं की। किसी दिन तुम्हें अपनी बेगम का हक तक नहीं दिया, फिर भी तुम क्यों मेरे साथ जाना चाहती हो ?"

"जो भी हो, मैं आपके साथ चलूँगी।"

"ठीक है, चलो !"

आतिशदान पर टिमटिमाते दीये की धुँधली रोशनी में एक छाया को हिलते देखकर पीर अली खाँ चौंक उठा।

"कौन है ?"

"मैं हूँ।"

पीर अली खाँ ने आवाज पहचानकर कोर्निश की।

"पीर अली, मरियम बेगम का महल कौन-सा है ?"

पीर अली ने कहा, "मरियम बेगम को आज सुबह मेंहदी निसार साहब मोती-झील से लाकर यहाँ बन्द कर गये हैं, मैं चाभी लेकर अभी आया।"

कहकर पीर अली अँधेरे में गायब हो गया।

लेकिन तभी नवाब को लगा, इस बेचारे को बेकार में क्यों तकलीफ दूँ ! अपनी बदकिस्मती के साथ उसे क्यों जकड़ूँ ! मेरे चले जाने से ही अगर मुर्शिदाबाद

और चैन आये तो मैं चला जाता हूँ। मीर जाफर, तुम इन लोगों की बेइज्जती न करना! इन बेचारियों का कोई कसूर नहीं है। मेरे कसूरों की सजा इन लोगों को न देना! खुदा के नाम पर हलफ लेकर कहता हूँ, आज मैं हमेशा—हमेशा के लिए मुर्शिदाबाद छोड़कर जा रहा हूँ, फिर कभी भी लौटकर यहाँ नहीं आऊँगा, लौटने की कोशिश भी नहीं करूँगा।

कान्त मराली के पलंग पर चुपचाप पड़ा था। काफी देर से सोने की कोशिश कर रहा था लेकिन नींद किसी भी तरह आ ही नहीं रही थी। अचानक ताला खुलने की आवाज सुनकर चौंक उठा।

"कौन है?"

कोई जवाब नहीं।

कान्त ने फिर कहा, "कौन है?"

फिर भी कोई जवाब नहीं मिला।

अँधेरे में किसी के खूब आहिस्ता-आहिस्ता बात करने की आवाज आ रही थी, एक साथ कई कदमों की आहट जैसे दूर अँधेरे में जाकर खो गयी। उसके जरा देर बाद ही उल्लू के बोलने की आवाज सुनायी दी। हैं! चेहल-सुतून के अंदर भी क्या उल्लू बसते हैं?

●

मुर्शिदाबाद के घाट से ही सच्चरित्र ने नाव की थी। रवाना होते-होते सुबह हो गयी। दिन के वक्त चलने को कोई मल्लाह तैयार न हुआ।

मल्लाहों ने कहा, "आजकल हालत खराब है। चारों ओर जासूस फैले हैं—किसी को नाव से जाते देखते ही शक करते हैं कि सोना लेकर भाग रहा है।"

ठीक है, रात में ही सही। हतियागढ़ जाना है। जरा जल्दी है। सच्चरित्र ने इससे ज्यादा कुछ भी नहीं कहा था। नाव छप-छप करती आगे बढ़ रही थी। मराली को कान्त की चिन्ता सता रही थी। पता नहीं कहाँ होगा? मराली ने सोचा भी नहीं था कि आज इतने दिन बाद उसके मन में कान्त के लिए इतना खिंचाव पैदा होगा।

सच्चरित्र ने एक बार कहा, "बेटी, तुम थोड़ी देर को सो रहो।"

मराली ने कह दिया, "क्या करूँ? नींद ही नहीं आ रही है।"

"कोशिश करो, थोड़ी देर में नींद आ जायेगी। बेकार में मन खराब करने से क्या फायदा? उस बेचारे ने तो कभी किसी का बुरा नहीं किया।"

अचानक एक जगह पहुँचने पर लगा, जैसे कोई बड़े जोर से चिल्लाया।

"हॉल्ट! हॉल्ट!"

मराली डर के मारे चीख उठी।

"यह लोग कौन हैं पुरकायस्थ जी? क्या कह रहे हैं?"

इस आवाज की परवाह किये बिना मल्लाह डांड़ चलाये जा रहे थे।

चारों तरफ अँधेरा हो आया था। इस उथल-पुथल के दिनों में सच्चरित्र ने मल्लाहों को बत्ती जलाने को मना कर दिया था। उसने उनसे बार-बार कहा था—जमाना बड़ा खराब आ गया है।

जमाना जो खराब आ गया है यह मुर्शिदाबाद के मल्लाहों को मालूम था। कई दिनों से कोई सवारी नहीं मिल रही थी। माल आना-जाना तो पहले ही बन्द हो चुका था। फिरंगियों से लड़ाई शुरू होने के पहले से ही। जो व्यापारी थे, उनका माल खरीदने के लिए खरीदार नहीं थे। जो खरीदार थे वे भी माल खरीदकर अपने घर में रखने से घबड़ाते थे। माल खरीदने से ही तो नहीं चलता, उसे बेचना भी तो पड़ेगा। लेकिन किसको बेचें ? ज्यादा मुनाफा कमाने के चक्कर में जिन लोगों ने माल छुपाकर रखा था उन्हें भी बेचने की हिम्मत नहीं पड़ रही थी। अगर दाम गिर जाय। बेहतर है दाम और बढ़ जाय, फिर बेचा जायेगा। आज तो नवाब की सरकार है, लेकिन फिरंगी लोग अगर आ गये तो वे लूट-पाट भी मचा सकते हैं। उस हालत में दाम भी नहीं मिलेगा; मुनाफा भी नहीं, सारा माल मुफ्त में चला जायेगा।

सभी नावों की बत्तियाँ बुझी थीं। रात के अँधेरे में ही दो-चार नावें आ-जा रही थीं।

ऐसा भी होगा, इसकी किसने कल्पना की थी ?

आवाज फिर आयी, "हॉल्ट ! हॉल्ट !"

सच्चरित्र ने इस बार कहा, "लगता है फिरंगी घाट है, नाव घुमाकर वापस ले चलो।"

मल्लाहों ने कहा, "घुमाकर नाव कहाँ ले जायेंगे ? वापस मुर्शिदाबाद ?"

"और किया भी क्या जा सकता है ? फिरंगियों के हाथ पड़ने से तो नवाब के हाथों मरना ही अच्छा है।"

मराली इतनी देर से माजरा समझने की कोशिश कर रही थी। उसने कहा, "नाव वापस ले चलने की जरूरत नहीं है, घाट पर लगाओ।"

सच्चरित्र ने कहा, "घाट पर जाकर क्या फिरंगियों के हाथों पड़ना है ?"

मराली ने कहा, "अब भागने पर ज्यादा मुसीबत खड़ी होगी। मुझे लग रहा है हम लोग फिरंगी सिपाहियों के हाथ में आ पड़े हैं।"

मराली ने मल्लाहों से पूछा, "तुम लोगों को पता है यह कौन-सी जगह है ?"

"जी, यह मयदापुर है। आजकल फिरंगी फौजों की छावनी यहीं है।'

"ठीक है। नाव किनारे लगाओ।"

सच्चरित्र पुरकायस्थ थर-थर काँप रहा था।

मराली ने कहा, "आप बेकार में परेशान क्यों हो रहे हैं ? मैं जो हूँ।"

मल्लाहों ने तब तक नाव को किनारे से लगा दिया था। घाट पर अँधेरे में बहुत-से लोग थे।

सच्चरित्र को बड़ी फिक्र लगी थी। उसने कहा, "अगर उन लोगों को पता

"कुछ भी नहीं ! सभी संदूक खाली मिलेंगे। अगर हो सके तो कर्नल क्लाइव को अभी हमला करने को कहिए। और ज्यादा देर वे न करें।"

सचमुच दोनों फिरंगी सोचने लग गये।

तभी बशीर मियाँ ने कहा, "जी हाँ हुजूर, मैंने खुद देखा है ! जिसे देखो वही रुपये और अर्शाफयाँ लेकर यहाँ से भाग रहा है।"

मीर जाफर ने कहा, "वाट्स साहब, आप जाकर कर्नल को बतलाइए कि अब देरी करने का वक्त नहीं है, जल्दी से मुर्शिदाबाद पर हमला कर दें और रास्ते में जो भी मिले उसे गिरफ्तार कर लें।

"ऑल राइट !" कहकर वाट्स और वाल्स चले गये।

घोड़े की पीठ पर बैठे दोनों फिरंगी कासिमबाजार की ओर सरपट भागे। कासिम-बाजार के बाद ही मयदापुर था।

सब रास्ते लोग-बागों से भरे थे। झुंड के झुंड लोग मुर्शिदाबाद छोड़कर पैदल भागे जा रहे थे। जो भी अपने साथ जो कुछ ले सके, वे लिये जा रहे थे। गोद में, कंधे पर बच्चे या गट्ठर। कोई हरिनाम की माला जपता जा रहा था। किसी के गले से शालग्राम शिला लटक रही थी। म्लेच्छ फिर आयेंगे। अब देश का सर्वनाश होगा। भोर से ही लोगों ने चलना शुरू कर दिया था। अब इतनी रात हो गयी थी, लेकिन लोगों के चलने में विराम नहीं था। सभी अपने पुरखों का घरबार छोड़े जा रहे थे।

उधर मयदापुर की छावनी में क्लाइव वाट्स का इन्तजार कर रहा था। उसके पहुँचते ही क्लाइव ने पूछा—

"क्या खबर लाये ?"

"सेठ रुपया नहीं देगा।"

"नहीं देगा ? माने ?"

"हाँ, सेठ का कहना है कि इतना रुपया उसके पास नहीं है।"

"लेकिन कम्पनी का जो इतना नुकसान हुआ उसका हर्जाना कौन देगा ?"

वाट्स ने कहा, "वह मैंने कहा था, लेकिन उन लोगों के पास रुपया है ही नहीं।"

क्लाइव ने कहा, "नहीं है तो लोन ही दें, नवाब से कैश मिलने पर सब चुका दिया जायेगा।"

"लेकिन नवाब के पास भी रुपया नहीं है। उसने अपना सारा खजाना पब्लिक को चैरिटी कर दिया है।"

"चैरिटी ?"

वाट्स ने कहा, "मीर जाफर ने कहा है कि रुपया लेकर जो लोग भाग रहे हैं उन्हें हम रोकें।"

दूसरे ही दिन यह हुक्म हो गया। पैदल या नाव से जो भी जायेंगे, उनको चैलेंज किया जायेगा। किसी को छोड़ा न जायेगा। रुपये बांटने का हक तो नवाब को

है। नवाब के रुपये भी तो इसी मुल्क के रुपये हैं।

फिर सुबह-शाम-रात जब कभी कोई नाव नदी में मिल जाती तो फिरंगी सिपाही चैलेंज करते—हॉल्ट! हॉल्ट!

राह चलते लोगों को भी रोककर गिरफ्तार किया जाने लगा। बाँधी गर्थ कर जो मिला छीन लिया गया। फिर सब कुछ छीनकर वे लोग छोड़ दिये जाने लगे। लो, अब खाली हाथ कहीं भी जाओ!

गंगा के किनारे रात भर पहरा लग गया था। अँधेरे में कोई नाव दिखाई देते ही सिपाही चिल्लाते—हॉल्ट! हॉल्ट!

उसी दिन भोर में आकर मीरन ने खबर दी कि नवाब मुर्शिदाबाद छोड़कर भाग गये हैं। कर्नल क्लाइव ने सलाह करने के लिए मेजर किलपैट्रिक को बुला भेजा।

किलपैट्रिक के आते ही क्लाइव ने कहा, "सुनो मेजर, नवाब मुर्शिदाबाद छोड़कर भाग गये हैं।"

ठीक उसी समय एक संतरी ने आकर खबर दी, "कर्नल, रात को एक नाव पकड़ी गयी है।"

क्लाइव ने पूछा, "कितना रुपया मिला?"

"रुपया तो नहीं मिला। नाव में नवाब के स्पाई थे।"

"येस सर, फीमेल स्पाई, मर्दाने कपड़े पहनकर भाग रही थी।"

कर्नल ने कहा, "ऑलराइट! उसे ले आओ!"

जरा देर बाद ही सामने आकर जो खड़ा हुआ, उसे देखकर कर्नल चौंक पड़ा। फिर उसने कहा, "लगता है, तुम्हें कहीं देखा है। हू आर यू? तुम कौन हो?"

मराली ने कहा, "इन लोगों के सामने मैं कुछ भी नहीं कह सकती।"

"ठीक है, अंदर चलो।"

तभी सन्तरी ने कहा, "सर, इसके साथ एक बुड्ढा भी है।"

"ठीक है, उसे बाद में देखूँगा।"

कहकर क्लाइव बगल वाले खेमे में चला गया। साथ ही साथ मराली भी गयी।

अंदर से दरवाजा बंदकर क्लाइव ने पूछा, "अब बतलाओ, तुम कौन हो?"

मराली ने कहा, "मुझे क्या आप अब भी पहचान नहीं पा रहे हैं?"

"नहीं।"

मराली ने कहा, "पेरिन साहब के बगीचे में मैंने ही यह पत्र पहुँचाया था।"

"ओह! तुम....तुम क्या मरियम बेगम हो?"

मराली ने कहा, "हाँ।"

●

कृष्णनगर में उस समय रात गहरी हो गयी थी। महाराज कृष्णचन्द्र नींद में सो रहे थे। सहसा गृहिणी ने पुकारा। एक बार पुकारते ही महाराज [illegible]

उस आदमी के चले जाने के बाद महाराज ने दीवान से पूछा, "आपको क्या [लगा] दीवान जी, बातें सही हैं ?"

"मुझे तो ये बातें सही लगीं।"

महाराज ने कहा, "देखो, सही हैं तो हैं ही। अगर सही नहीं हैं तो मंगल है।"

"क्यों ?"

"आखिर इतने रुपये वसूले जायेंगे भी तो किससे ? करोड़ों रुपये की बात एक [दि]न में खत्म नहीं हो जायेगी। हो सकता है, मुझे भी इसके लिए कुछ रुपया देना पड़े।"

फिर महाराज खड़े हुए। बोले, "आप सोने जायें दीवान जी, आज तो मुझे [नीं]द नहीं आयेगी। मैं चला।"

रात खत्म होने में शायद ज्यादा देर नहीं थी। दुर्गा भोर में ही जाग गयी [थी]। छोटी बहूरानी उस समय भी सो रही थीं। अचानक दुर्गा के बुलाने से उसकी [नीं]द टूटी।

"ओ बहूरानी ! उठो, उठो, बड़ी बहूरानी का खत आया है।"

छोटी बहूरानी झटपट उठ गयी थी। पूछा, "किसका खत आया है ?"

दुर्गा ने कहा, "पापी नवाब मरा है। अभी रानी माँ ने कहा है।"

"कौन पापी ? किसकी बात कर रही है ? नवाब ? मुर्शिदाबाद का नवाब ?"

दुर्गा ने कहा, "हतियागढ़ से चिट्ठी लेकर एक आदमी आया है। जग्गा खजांची [बा]बू ने भेजा है।"

"कौन आया है ?"

दुर्गा ने कहा, "यह तो नहीं मालूम, सुना है, हतियागढ़ से बड़ी बहूरानी का [ख]त लेकर एक आदमी आया है। वही तुमसे कहने आयी थी। मैं अभी उस आदमी [से] मिलने जा रही हूँ।"

राजमहल की अतिथिशाला में उस समय काफी भीड़ थी। हतियागढ़ से जो [आ]या था वह अँधेरे में ही यहाँ आकर सो गया था। उस समय उसने किसी को नहीं [दे]खा था लेकिन सवेरा होते ही देखा, उद्धवदास एक कोने में बैठा है।

पास जाकर उस आदमी ने कहा, "कहो भगत जी, तुम यहाँ क्या कर [र]हे हो ?"

उद्धवदास भी उसे पहचान गया था। कहा, "अरे गोकुल, तुम यहाँ कैसे [आ]ये ?"

गोकुल ने कहा, "मैं राजा के काम से आया हूं। लेकिन तुम ? तुम्हारा ससुर [शो]भाराम विश्वास, याद है न, पागल हो गया है। लड़की के शोक में उसका दिमाग [ही] खराब हो गया है। हाँ, तुम्हें अपनी बहू का पता चला ?"

उद्धवदास ने कहा, "पता चला है। यहीं है।"

"यहाँ ?"

"हाँ भाई हाँ, इतने दिन कलकत्ते में साहब के पास थी, फिर साहब लड़ाई

करने चला गया तो यहाँ आयी है।"

गोकुल अवाक् हो गया। पूछा, "यहाँ? इसी राजमहल में?"

"हाँ भाई, कितनी बार कहूँ? आजकल तुम बहरे हो गये हो क्या? कानों से सुनाई भी नहीं पड़ता तो छोटे सरकार का हुक्म तामील कैसे करते हो?"

गोकुल ने इस बात पर ध्यान न देकर कहा, "अब तुम्हारी बहू क्या कहती है? उस दिन भागी क्यों थी?"

"अरे, मुझसे बात ही नहीं करती!"

"बात नहीं करती? अच्छा, मैं तुमसे बात करा दूँगा। सोनाराम की लड़की है न, उसे तो मैं, जब वह छोटी थी, तभी से देख रहा हूँ, तुमसे क्यों नहीं बात करेगी? तुमने क्या गलती की है?"

उद्धवदास ने कहा, "मैं घुमक्कड़ आदमी हूँ। भला, मुझे कौन लड़की पसंद करेगी?"

"घुमक्कड़ हो तो क्या हुआ? तुम्हारे साथ उसकी शादी नहीं हुई क्या? तुम उसके पति नहीं हो?"

उद्धवदास ने कहा, "जोर-जबर्दस्ती से प्रीति नहीं होती। क्या कभी जोर-जबर्दस्ती से भी हरि-भक्ति होती है? यह सब जोर-जबर्दस्ती से नहीं होता। इससे तो बढ़िया है कि मैं गाना गाता घूमता रहता हूँ। वह अगर सुखी रहे तो मुझे कुछ न चाहिए। सुख बड़ी दुर्लभ वस्तु है भाई! इसी सुख को लेकर मैंने एक गीत रचा है। सुनोगे?"

गोकुल हँसने लगा। कहा, "देखता हूँ तुम्हारा पागलपन अभी भी बना है। अभी भी तुम वैसे ही हो भगत जी! दुनिया में इतनी उथल-पुथल हो गयी, इतना रद्दो-बदल हो गया, लेकिन तुम नहीं बदले।"

अचानक उसी समय सरिश्ते का एक आदमी गोकुल को बुलाने आया। कहा, "तुम्हें दीवान जी बुला रहे हैं। चलो।"

उद्धवदास को बैठने के लिए कहकर गोकुल उस आदमी के साथ दीवान जी के पास चला गया।

गोकुल के आते ही दीवान कालीकृष्ण सिंह ने कचहरी के कमरे के दरवाजे-खिड़कियाँ बंद कर दिये।

दीवान ने पूछा, "रात को कोई तकलीफ तो नहीं हुई? नींद हुई थी न?"

गोकुल ने कहा, "हाँ हुजूर, कोई तकलीफ नहीं हुई। अतिथिशाला में मेरी जान-पहचान का एक आदमी भी मिल गया। उसी से तो बातें कर रहा था। वह कह रहा था, उसकी बहू, राजमहल में छिपी है।"

"किसके बारे में कह रहे हो?"

"अरे, वही जो उद्धवदास है न। उसे मैं जानता हूँ। वह कभी-कभी हतिया-गढ़ की अतिथिशाला में भी पहुँच जाता है।"

"तुमने क्या उससे यह भी बताया है कि किसलिए यहाँ आये हो ?"

"नहीं हजूर, यह सब कुछ नहीं बतलाया।"

"अब उससे भेंट न करना। हाँ, तुम्हें एक काम करना होगा। इसीलिए बुलाया है। लेकिन किसी से कुछ कहना नहीं, किसी से मिलना भी नहीं। मैं तुम्हारे रहने का अलग इंतजाम किये देता हूँ। तुम्हारी बड़ी बहूरानी को शायद मालूम नहीं है कि तुम्हारी छोटी बहूरानी यहीं हैं।"

"हतियागढ़ की छोटी बहूरानी ?"

"हाँ, तुम्हारे यहाँ की छोटी बहूरानी, जिनको ढूँढ़ने के लिए तुम्हारे छोटे सरकार इतनी दौड़धूप कर रहे हैं।"

"फिर एक बार मिलकर उनको प्रणाम कर आऊँ।"

दीवान ने कहा, "नहीं, अभी नहीं। इस समय चारों तरफ नवाब के जासूस घूम रहे हैं। तुम कह रहे हो कि नवाब भाग गये हैं, लेकिन हमारे पास अभी तक कोई पक्की खबर नहीं आयी है। छोटी बहूरानी हतियागढ़ लौटने के लिए बड़ी बेचैन हो उठी हैं। मैं तुम्हारे साथ सिपाही-प्यादा दूँगा, तुम उसे बड़ी बहूरानी के पास पहुँचा सकोगे न ?"

"क्यों नहीं पहुँचा सकूँगा ?"

"फिर यही बात रही। जब नवाब नहीं हैं, तब डरने की कोई बात नहीं। फिर भी होशियार रहना चाहिए। तुम अभी मेरे आदमी के साथ जाओ। अब अतिथि-शाला में जाने की जरूरत नहीं है। फिर तुम्हें जैसा होगा खबर करूँगा।"

दीवान को शायद उस समय काफी काम करना था। गोकुल दीवान के आदमी के साथ महल में चला गया। महल में जाते हुए गोकुल को लगा कि यह राजमहल भी कितना बड़ा है! कौन कहाँ रहता है, कौन सदर महल है और कौन अन्दर महल, कहाँ कचहरी है और कहाँ अतिथिशाला, बाहर से पता भी नहीं चलता।

और भी दिन चढ़ने लगा। सरिश्ते की कचहरी में लोगों का आना-जाना बढ़ता ही रहा। अतिथिशाला में और भी कुछ नये लोग आये। मुर्शिदाबाद में जो इतनी बड़ी उथल-पुथल हो गयी थी, अब उसकी लहर कृष्णनगर, वर्दवान, नाटोर और हुगली में पहुँचने लगी थी।

आधी रात के बाद से महाराज सो नहीं सके। महाराज के आदमी मुर्शिदाबाद में वकील के पास, वर्दवान के महाराज के पास, नागोर की महारानी के पास और नवद्वीप में वाचस्पति महाशय के पास भी गये।

उद्धवदास ने कई बार गोकुल की खोज की। जो भी उसे मिल जाता, उसी से वह पूछता, "प्रभु, गोकुल कहाँ गया ?"

"कौन गोकुल ?"

"अरे हतियागढ़ के छोटे सरकार का नौकर।"

लेकिन अतिथिशाला में कौन किसकी खबर रखता था ?

दिन जब ढलने को हुआ उस समय एक ल्हासरदार पालकी राजमहल के पिछवाड़े के दरवाजे से चुपचाप निकलकर उत्तर दिशा में चलने लगी। पालकी सड़क से शिवनिवास घाट में पहुँचेगी। वहीं महाराज का बजरा तैयार रहेगा। उसमें हतियागढ़ की छोटी बहूरानी और दुर्गा चढ़ जायेंगी। इस रास्ते से जाने पर किसी को पता नहीं चलता।

पहले से ही गोकुल एक दूसरी नाव में तैयार बैठा था। उसके साथ सिपाही और बरकन्दाज भी थे। वे हतियागढ़ की बहूरानी को पहुँचाकर लौट आयेंगे।

गोकुल के हाथ दीवान ने एक खत भी दिया था। सील-मुहर किया हुआ खत। खत महाराज की गृहिणी की जबानी लिखा गया था, जिसमें लिखा था—'आपकी सौत श्रीमती रासमणि को आज सिपाही, बरकंदाज और अपने आदमियों के साथ हतियागढ़ भेजने का प्रबंध किया। पहुँचते ही समाचार भेजियेगा। लेकिन आपके पतिदेव के बारे में कोई समाचार ज्ञात नहीं हो सका, इसलिए उनके बारे में कुछ भी न लिख सकी। महाराज उनका पता लगाने का प्रबन्ध करेंगे ऐसा निश्चय हुआ है। पता लगते ही यथाशीघ्र समाचार भेजा जायेगा। इति।"

छोटी बहूरानी और दुर्गा के बजरे में सवार होते ही बजरा चलने लगा। दोनों नावें पास-पास चलने लगीं।

कृष्णनगर के राजमहल में उद्धवदास उस समय भी लोगों से पूछ रहा था, "प्रभु, गोकुल कहाँ गया?"

"कौन गोकुल?"

गोकुल को वे लोग पहचानते ही नहीं थे। बार-बार उद्धवदास के मन में यही बात उठने लगी कि गोकुल तो भला आदमी है। वह जब कह गया था कि आऊँगा, तो फिर आया क्यों नहीं? कहाँ चला गया?

गोकुल कहाँ चला गया यह अंत तक उद्धवदास को मालूम न हो सका।

हतियागढ़ की छोटी बहूरानी को भेजने का इंतजाम करके भी महाराज कृष्णचंद्र निश्चित नहीं हो पा रहे थे। दीवान को मुर्शिदाबाद भेज दिया। कहा, "आप एक बार खुद मुर्शिदाबाद चले जायें और सब हालचाल मालूम कर आयें।"

दीवान रवाना होकर भी आधे रास्ते से लौट आया।

महाराज दीवान के लौट आने की खबर पाकर विस्मित हुए। फिर पूछा, "क्या हो गया? लौट क्यों आये?"

दीवान ने कहा, "रास्ते में वकील बाबू से भेंट हो गयी। वे आपको खबर देने आ रहे थे, इसलिए उनके साथ लौट आया। उन्होंने कहा, मुर्शिदाबाद में बड़ी गड़बड़ी मची है।"

"कैसी?"

इतने में शारदा बाबू खुद आये। उन्होंने विस्तार से सब कुछ बताया।

शारदा बाबू ने कहा, "क्लाइव का खून करने के लिए राजा दुर्लभराम ने

षड्यन्त्र किया है।"

"यह क्या? वह क्लाइव का खून करेगा? क्यों?"

"क्लाइव ने दो करोड़ बीस लाख रुपये जो माँगे हैं। रुपये की बात से जगत्-सेठ भी नाराज हो गये हैं। सबसे ज्यादा नाराज हुए हैं दुर्लभराय, मीरन और खादिम हुसैन। मीर जाफ़र चाहता था रुपया दे दिया जाय। लेकिन और कोई देने को तैयार नहीं है।"

"नवाब भाग गये हैं क्या यह खबर सच है?"

"मैंने जो सुना सच है। लेकिन कोई सबूत नहीं मिला। सड़कों पर लोगों की भीड़ थी और चौक बाजार की दुकानें बन्द थीं। शराफ़त अली नाम का फुलेल-तेल का एक दुकानदार था, देखा, किसी ने उसे मार डाला है और वह अपनी दुकान के सामने पड़ा है। और जो खबरें मिलीं उनमें कहाँ तक सच है और कहाँ तक झूठ, कहा नहीं जा सकता। नवाब की माँ ने रुपये चुराये थे, इसलिए नवाब ने अपनी माँ को थप्पड़ मारा है। फिर खजांचीखाने के सारे रुपये लोगों में बाँट दिये गये हैं जिससे वे फिरंगियों के हाथ में न पड़ें। उधर मयदापुर में क्लाइव की छावनी है, जहाँ फिरंगी लोग सभी को पकड़कर तलाशी ले रहे हैं और रुपए-पैसे छीन ले रहे हैं।"

महाराज कृष्णचन्द्र ने कहा, "मैं जानता था कि ऐसा होगा।"

फिर महाराज ने पूछा, "अगर नवाब भागे ही हैं तो वे कहाँ भागे हैं? कहाँ भाग सकते हैं?"

शारदा बाबू ने कहा, "यह कोई नहीं बता सका। नवाब कब भागे हैं यह भी किसी को नहीं मालूम। असल में भागे हैं कि नहीं यह भी निश्चित नहीं है। जो कुछ मैं बता रहा हूँ सब सुनी हुई खबर है। मुर्शिदाबाद में इस समय तरह-तरह की अफ़वाहें सुनने को मिल रही हैं। आप भी एक बार वहीं चलें। आपको ले चलने के लिए ही मैं आया हूँ।"

महाराज कृष्णचन्द्र भी समझ गये कि इस समय उनका मुर्शिदाबाद जाना जरूरी है। इस समय अगर उनसे कोई गलती होती है तो उसका फल भी उनको भोगना ही पड़ेगा।

महाराज उठे। बोले, "मैं अभी चलने के लिए तैयार होता हूँ।"

●

सचमुच उस दिन मुर्शिदाबाद में जैसे कानून नाम की कोई चीज रह ही नहीं गयी थी। रहती भी कैसे, आज मसनद जो खाली थी। निजामत की कचहरी और खजाना सब बंद थे। न कोई हुक्म माननेवाला था और न कोई हुक्म देनेवाला ही। जो लोग फिरंगी फौज के डर से शहर छोड़कर भागे थे उनमें से बहुत-से रास्ते में ही फिरंगियों के हाथ पड़ गये थे। फिरंगियों ने उनका सब कुछ छीन लिया था।

जगत्सेठ जी के यहाँ से एक-एक कर सभी के चले जाने के बाद छोटे सरकार

भी उठकर मोतीझील की ओर चल दिये।

भीड़ के मारे रास्ता चलना मुश्किल था। मंसूरगंज हवेली के सामने कड़ा पहरा लगा था। चौक बाजार में खुशबूदार तेल वाले की दुकान के पास वह लाश अभी तक उसी हालत में पड़ी थी। छोटे सरकार की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें? जब कुछ भी ठीक नहीं कर पाये तो वे वापस जगत्सेठ जी की हवेली पर आ गये। सेठ जी उस समय काफी परेशान नजर आ रहे थे।

छोटे सरकार ने पूछा, "कोई खबर मिली?"

सेठ जी ने कहा, "खबर तो मिली है, लेकिन बड़ी खराब खबर है। मीरन, दुर्लभराम और खादिम हुसैन तीनों में नवाब किसे बनाया जाए, इसी बात को लेकर झगड़ा हो गया है। उधर मीर जाफर का दामाद मीर कासिम भी आ जुटा है।"

"फिर आपने क्या ठीक किया है?"

"सोचता हूँ, क्लाइव को एक पत्र लिख दूँ कि वह यहाँ न आये। यहाँ आने पर उसके खून हो जाने का खतरा है।"

"लेकिन कोई क्लाइव का खून क्यों करने लगा?"

"मसनद के लिए। अब तो क्लाइव जिसे मसनद पर बैठायेगा वही नवाब बन सकता है।"

"लेकिन नवाब जो भी हो, अब आप मेरा कोई इंतजाम कर दीजिए। सुना है, मरियम बेगम इस वक्त चेहल-सुतून में है। मैं वहाँ जाकर एक बार उससे मिलना चाहता हूँ।"

सेठ जी ने कहा, "आप चेहल-सुतून के अंदर कैसे जायेंगे?"

छोटे सरकार ने कहा, "सुना है, चेहल-सुतून में घूस देकर सब कुछ किया जा सकता है, इसके अलावा अब तो नवाब भी वहाँ नहीं है।"

सेठ जी ने जरा देर सोचकर कहा, "आप अच्छी तरह जानते हैं कि मरियम बेगम ही आपकी धर्मपत्नी हैं?"

छोटे सरकार ने कहा, "जी हाँ।"

"ठीक है, आप दीवान जी से कहिए, वे इन्तजाम कर देंगे।"

और सचमुच दीवान जी ने सारा इंतजाम कर दिया। शाम होते ही दीवान जी ने अपने एक खास आदमी के साथ छोटे सरकार को चेहल-सुतून भेज दिया। चेहल-सुतून के फाटक पर पहुँचकर उस आदमी ने एक आदमी को बुलाकर उससे कहा, "नजर मुहम्मद, इन बाबू साहब को एक बार मरियम बेगम साहबा के पास ले जाना है।"

नाम सुनकर नजर मुहम्मद पहले तो घबड़ा गया। अगर मेंहदी निसार साहब को पता लग गया तो सीधे गर्दन पर ही आ बनेगी। लेकिन हाथ में आयी अशर्फी ने जैसे उसकी आँखें चौंधिया दी थीं। उसने कहा, "आइए बाबू साहब, आइए!"

सँकरी सुरंग जैसा रास्ता था। घुप्प अँधेरे में छोटे सरकार चोर की तरह पैर

दवा-दवाकर चलने लगे। एक दिन कान्त भी इसी रास्ते से मराली से मिलने के लि
आया था। शायद यही नियम भी था। इतिहास का रास्ता भी शायद चेहल-सुतून
रास्ते की तरह अंधकार और रहस्य से भरा है। इतिहास को भी शायद इसी तर
अँधेरे और सुनसान रास्ते से गुजरना होता है। किसी को खबर लगे बिना चुपचा
अपने गंतव्य स्थान पर पहुँचकर जब वह अचानक अपनी उपस्थिति जाहिर करता
तभी सब चौंक उठते हैं।

कान्त भी चौंक उठा था।

"कौन ?"

अंदर से बंद कमरे में होने के बावजूद कान्त नजर मुहम्मद की आवाज पहचा
गया था।

"बेगम साहबा ! बेगम साहबा !"

कान्त की समझ में नहीं आ रहा था कि इस वक्त जवाब देना ठीक होगा य
नहीं। लेकिन रात को इस वक्त नजर मुहम्मद आखिर उसे बुला क्यों रहा है ?

तभी फिर आवाज आयी, "बेगम साहबा मैं नजर हूँ।"

कान्त ने खिड़की में से पूछा, "क्या बात है ?"

"दरवाजा खोलिए न, बड़ी जरूरी बात है।"

कान्त ने अपने बदन को बुरके से अच्छी तरह ढक लेने के बाद दरवाजा खोल
दिया।

●

अचानक उस अँधेरे में एक साथ कई पैरों की आहट सुनाई दी। इधर कुछ दिन
से चेहल-सुतून के सारे कायदे-कानून जैसे उलट गये थे।

नवाब जिस दिन अचानक यहाँ आ पहुँचे थे, उसी दिन से सारी गड़बड़ी शु
हो गयी थी। नजर मुहम्मद या दूसरे खोजा किसी तरह सँभाल नहीं पा रहे थे। चा
जो कोई चेहल-सुतून में घुस रहा था। नवाब जो चेहल-सुतून से चले गये हैं, यह खब
भी छिपी न रही थी।

आहट सुनते ही नजर मुहम्मद चौंक उठा। इस वक्त कौन आया ?

खोजा सरदार पीर अली खाँ ने पिछले दिन ही होशियार कर दिया था। अस
में पीर अली खाँ के नहीं, नानी बेगम के हुक्म से ही ऐसा हुआ था। अब जो कोई
चाहेगा, चेहल-सुतून में घुस आयेगा—होशियार रहना पीर अली ! कितनी अशर्फिया
रुपये-पैसे और जड़ाऊ गहने यहाँ रखे हैं !

नजर मुहम्मद ने छोटे सरकार से कहा, "बाबू साहब, आप जरा इस ओर ओ
में हो जाइए।"

"क्यों क्या हुआ ?"

"लगता है कोई आ रहा है।"

"कहाँ जाऊँ ?"

"आप मेरे साथ आइए।"

कहकर नजर मुहम्मद जाकर एक जगह खड़ा हो गया। यह तो पीर अली सरदार ही है। साथ में क्या नवाब है? नवाब क्या वापस आ गये?

लेकिन तभी गले की आवाज सुनकर नजर मुहम्मद को पता लगा कि मेंहदी निसार साहब आया है, साथ में डिह्रीदार रजा अली और बशीर मियाँ थे।

नजर मुहम्मद ने आगे बढ़कर कोर्निश की।

मेंहदी निसार ने तेज निगाह से उसकी ओर देखकर पीर अली खाँ से पूछा, "पीर अली, यह कौन है?"

"खुदावन्द, अपना ही आदमी है।"

मेंहदी निसार ने कहा, "अपने सारे आदमियों को तुमने होशियार कर दिया है न? बेगम साहबाओं पर भी कड़ी नजर रखना! कोई भागने न पाये।"

फिर मेंहदी निसार ने बहुत सारी बातें कहीं। उन बातों का अभिप्राय यह था कि चारों तरफ अराजकता शुरू हो गयी है, इस समय चेहल-सुतून में कड़े पहरे का इंतजाम रखना होगा। बाहर का कोई भी आदमी अन्दर न आने पाये। नवाब का इस समय पता नहीं है, इसलिए नवाब के दुश्मन इस समय तरह-तरह के बहाने बनाकर अन्दर आने की कोशिश करेंगे। दुनिया भर के मतलबी लोगों के लिए यही मौका है। इस समय शहर में लूटपाट, खून-खराबा और राहजनी का माहौल है। इसकी लहर चेहल-सुतून के अन्दर भी पहुँच सकती है।

इतना कहकर मेंहदी निसार आगे बढ़ गये।

तभी डिह्रीदार रजा अली ने कहा, "हुजूर, वह मरियम बेगम साहबा जिसके बारे में मैंने कहा था ..."

मेंहदी निसार ने कहा, "मरियम बेगम यहीं चेहल-सुतून में ही नजरबंद है।"

इसके बाद उसने पीर अली की ओर मुड़कर कहा, "पीर अली, मालखाने की ओर सब ठीक है न, फिर तो उधर कोई नहीं गया? चलो, जरा उस ओर ही चलें।"

"हुजूर, मालखाने में तो नानी बेगम का ताला लगा हुआ है।"

"मैं उसके ऊपर एक और ताला लगा दूँगा।"

मेंहदी निसार मालखाने के पास पहुँचा ही था कि अचानक पता नहीं कहाँ से खबर पाकर नानी बेगम वहाँ आ पहुँचीं।

"कौन? मेंहदी? यहाँ क्या हो रहा है?"

"मालखाने में ताला लगवा रहा हूँ।"

अजीब बात है, आज मेंहदी निसार ने नानी बेगम को देखकर कोर्निश तक नहीं की।

"लेकिन तुम कौन होते हो चेहल-सुतून के मालखाने में ताला लगवानेवाले?"

मेंहदी निसार ने भारी आवाज में कहा, "सिर्फ चेहल-सुतून ही नहीं, आ

निजामत के मालिक हमीं लोग हैं।"

"तुम लोग ?"

"जी हाँ बेगम साहबा ! बेअदबी माफ हो, नवाब बहादुर मुर्शिदाबाद छोड़कर चले गये हैं, इसलिए अब हर चीज की जिम्मेदारी हम लोगों पर ही है।"

नानी बेगम ने कड़ककर कहा, "खबरदार मेंहदी निसार ! जब तक मैं मौजूद हूँ, चेहल-सुतून की मालकिन मैं हूँ। मेरे जिंदा रहते मालखाने में कोई हाथ नहीं लगा सकता, निकल जाओ यहाँ से !"

नजर मुहम्मद ने जब देखा कि बात जल्दी खत्म होनेवाली नहीं है तो चट् से छोटे सरकार के पास आकर उसने कहा, "बाबू साहब चलिए, आपको बाहर छोड़ आऊँ।"

छोटे सरकार अभी भी अंधेरे में चुपचाप खड़े थे। अन्त में क्या वे अपनी और छोटी बहूरानी की विपत्ति मोल लेते ?

"बाबू जी, आप निकल चलें, सब गड़बड़ हो गया है।"

"लेकिन मरियम बेगम ? मरियम बेगम साहबा का क्या होगा ?"

"कुछ नहीं होगा बाबू जी ! किसी भी बेगम साहबा से मुलाकात नहीं हो सकती। मेंहदी निसार साहब का हुक्म है।"

"मेंहदी निसार ? मेंहदी निसार साहब क्या अंदर आये हैं ?"

"जी हाँ, मेंहदी निसार बड़ा जबर्दस्त उमराव है।"

छोटे सरकार को आशा की क्षीण किरण दिखाई पड़ी। मेंहदी निसार तो जगत्सेठ के गुट का आदमी है। जगत्सेठ जी कोशिश करें तो छोटी बहूरानी को छुड़ाया जा सकता है।

"बाबू जी चलिए, मैं आपको बाहर पहुँचा दूँ। अब और देर न करें।"

छोटे सरकार ने कहा, "चलो।"

उधर मालखाने के पास मेंहदी निसार और नानी बेगम के बीच कहासुनी अभी तक चल रही थी।

मेंहदी निसार कह रहा था, "ताला तो मुझे लगाना ही पड़ेगा बेगम साहबा, मीर जाफर साहब का हुक्म है।"

नानी बेगम ने कहा, "लेकिन मैंने भी तो कह दिया है कि चेहल-सुतून में मेरे सिवाय और किसी का हुक्म नहीं चलेगा।"

"लेकिन कहे देता हूँ, इसका नतीजा अच्छा नहीं होगा !"

"इसके माने ?"

"कल मालूम हो जायेगा।"

सारे चेहल-सुतून में मानो सनसनी छा गयी थी।

अचानक नानी बेगम चीख उठीं, "निकल जाओ यहाँ से।"

मेंहदी निसार ने भी कड़ककर जवाब दिया, "देखता हूँ यहाँ से कौन निकलता

है, मैं या आप ?"

यह कहते हुए मेंहदी निसार बाहर की ओर चला गया। पीछे-पीछे डिहीदार रजा अली और बशीर मियाँ भी चले गये।

पाने और न पाने में जितना व्यवधान है, सुख और दुःख में क्या उतना ही व्यवधान है ? पाने में अगर सुख है तो उसका बहुत बड़ा भाग न पाने में भी बिखरा हुआ है। मैंने तुम्हें पाया, लेकिन मेरा पाना भी खत्म नहीं हुआ, यही तो असली पाना है। नदी जैसे समुद्र को पाती है, उसका पाना पूरा नहीं होता, इसलिए वह खत्म भी नहीं होता। वह समुद्र को पाती ही रहती है। प्रति दिन प्रति रात्रि प्रति क्षण वह पाती रहती है। यही पाना सार्थक है।

चेहल-सुतून के उस अँधेरे महल में पड़ा-पड़ा कान्त सोच रहा था, मराली, यह ठीक है कि मैं तुम्हें पा न सका, लेकिन तुम्हें पा न सका शायद इसीलिए हर क्षण तुम्हें पा रहा हूँ। मेरा यह न पा सकना शायद पा सकने से कहीं महान् है। जहाँ कहीं भी रहो, तुम हमेशा मेरे पास हो। जब मैं नहीं रहूँगा, तब भी तुम मेरे पास रहोगी। मैंने तुम्हें पाकर भी पाया है, खोकर भी पाया है। मेरी यह देह एक दिन खत्म हो जायेगी, मेरा हाड़-मांस सब मिट्टी में मिल जायेगा। लेकिन तब भी तुम मेरी ही रहोगी। तुम मेरी बनना चाहती हो या नहीं, मुझे इस बात की जरा भी चिंता नहीं है। मैं तुम्हारा हूँ और तुम मेरी हो, अपने इसी स्वप्न के भरोसे मैं तुम्हारे साथ एकाकार हो जाऊँगा।

उधर चेहल-सुतून में न जाने कैसा शोरगुल होने लगा।

चेहल-सुतून में ऐसा शोरगुल होता ही रहता है। कान्त अनेक बार चेहल-सुतून में आ चुका था, इसलिए ऐसा शोरगुल उसने अनेक बार सुना है। कौन उससे मिलने आया है, यह सोचने की उसे जरूरत न थी। पलंग पर पड़े-पड़े वह बस मराली के बारे में ही सोचने लगा। यही उसे अच्छा लगा। बाहर जिस समय इतिहास मोड़ ले रहा हो, उस समय एक व्यक्ति की चिन्ता की कोई कीमत नहीं होती यह भी वह जानता था। वह जानता था कि नवाब मसनद छोड़कर भाग गया है तो अभी फिरंगी आ जायेंगे। वह यह भी जानता था कि उससे पहले कोई आकर उसे कत्ल करेगा। बस यही नहीं, शायद सभी बेगमात कत्ल होंगी। फिर भी एक सांत्वना बनी रहेगी कि मरियम बेगम को कोई न पा सकेगा। मराली अगर निरापद रहे तो मुझे चाहे कुछ भी हो जाय। उसने मन ही मन कहा, मराली तुम दूर, बहुत दूर चली जाओ, और भी दूर ! जितनी ही तुम दूर चली जाओगी, मैं उतना ही तुम्हें करीब पाऊँगा।

शोरगुल सहसा बढ़ गया। मेंहदी निसार, डिहीदार रजा अली और बशीर मियाँ की आवाज भी सुनाई पड़ी। शायद मुर्शिदाबाद में विद्रोह शुरू हो गया था। शायद चेहल-सुतून की लूट शुरू हो गयी थी।

कान्त आँखें वंद किये स्वप्न देखने लगा। मालदा से राजमहल, राजमहल से पद्मा और पद्मा पार करने के वाद समुद्र। जिधर देखो उधर ही पानी, सिर्फ पानी। मराली वढ़ती जाओ, और भी आगे। तुम्हारे दूर चले जाने पर ही मैं तुम्हें अपने नजदीक पाऊँगा। आगे वढ़ती जाओ, नाव रोकना मत !

लेकिन उस रोज कान्त को शायद नहीं मालूम था कि राजमहल की ओर एक और ही वजरा जा रहा था। उस वजरे में भी एक इंसान ठीक कान्त की ही तरह सोच रहा था। दूर और दूर—जहाँ मुझे पहचाननेवाला कोई न हो ऐसी जगह चलो !

जो शख्स एक दिन जरा-सी नींद के लिए परेशान रहता था वही आज बैठा हुआ सामने अँधेरे में पानी की ओर टकटकी लगाये ताक रहा था। कहाँ गयी मोतीझील, कहाँ गया मंसूरगंज और कहाँ गया उसका चेहल-सुतून ? हर इंसान को एक न एक दिन इसी तरह सब कुछ छोड़कर चले जाना पड़ता है। जब जाना ही है तो रंज किस वात का ? मसनद का ? लक्कावाग में उस दिन सोने की चिलम चुराने के कसूर में वेचारे खिदमतगार पर कितने वेंत पड़े थे ! आते वक्त अगर वह सामने पड़ जाता तो मिर्जा मुहम्मद उसे विना किसी हिचक के अपनी मसनद सौंप देते। कह देते, ले, सोने की चिलम तो मामूली चीज है। तुझसे सम्हाली जा सके तो ले, यह मसनद सम्हाल ले !

"क्या सोच रहे हैं ?"

लुत्फुन्निसा आम तौर पर बहुत कम वोलती थी। अपनी वच्ची को लिये वह पास ही सो रही थी। नवाव के साथ अगर निकाह न हुआ होता तो उसे इस तरह चोरों की तरह भागना न पड़ता। नवाव की जगह, अगर नवाव की रिआया में से किसी मामूली आदमी की वीवी होती तो शायद वह अपने को ज्यादा खुशकिस्मत समझती।

"सोयेंगे नहीं ?"

आते वक्त मैं जान-वूझकर तुमसे नहीं मिला मरियम वेगम साहवा ! मेरे वाद जो कोई चेहल-सुतून में आयेगा, वह या तो तुम्हें तुम्हारे खाविंद के पास पहुँचा देगा या चेहल-सुतून में ही रखकर तुमसे अपने पैर दववायेगा। तुम्हारे उस काफिर फकीर का वह गाना याद आ रहा है—कहाँ था मैं आया कहाँ जाऊँ कहाँ क्या ठिकाना....! सचमुच मेरे साथ आतीं तो तुम्हें काफी तकलीफ उठानी पड़ती। तुम वेकार में मेरे लिए क्यों तकलीफ उठातीं ? तुम मेरी कौन हो ?

"सुवह होने को है, अव जरा देर सो लीजिए।"

मिर्जा ने कहा, "तुम सोओ, मुझे जागने दो।"

"दो दिन से तो जाग ही रहे हैं, विना सोये सेहत खराव नहीं होगी ?"

"सेहत के वारे में सोचने का वक्त मेरे पास नहीं है लुत्फो, तुम सोओ—"

लुत्फुन्निसा ने कहा, "आप जागते रहेंगे तो मुझे कैसे नींद आ सकती है ?"

"तव मत सोओ ! कौन तुमसे सोने के लिए कह रहा है ? तुमसे तो मैंने साथ आने के लिए भी नहीं कहा था। अगर तुम नहीं आतीं तो शायद मैं और भी अच्छी तरह से जाग पाता।"

लुत्फुन्निसा ने कोई जवाब नहीं दिया।

मिर्जा मुहम्मद ने कहा, "रो रही हो? रोओ, बच्चों की तरह से रोओ! मुझे जितना परेशान कर सको करो, खूब जोर-जोर से रोओ जिससे सबको पता लग जाय कि नवाब सिराजुद्दौला मुर्शिदाबाद छोड़कर भाग रहा है, और जिससे उन लोगों को मुझे गिरफ्तार करने में आसानी हो जाय।"

जरा रुककर मिर्जा मुहम्मद मन ही मन कहने लगे, "मैं ही कसूरवार हूँ, मैंने इंसानियत के साथ दगा की है, मुझे सजा क्यों नहीं मिलेगी? शायद मेरा इस दुनिया में पैदा होना ही सबसे बड़ा कसूर रहा है। लेकिन मैं अब कर भी क्या सकता हूँ? मैं क्या इस तरह भाग आता? जनरल लॉ को दस हजार रुपये भेजे, लेकिन वह अभी तक नहीं पहुँचा। वह अगर वक्त से आ जाता तो क्या मुझे इस तरह भागना पड़ता? मीर जाफ़र, दुर्लभराम और इन फिरंगियों को, सबको मैं मजा चखा देता।"

अचानक लुत्फुन्निसा की ओर देखकर कहा, "क्या तुमने कुछ कहा?"

लुत्फुन्निसा ने कोई जवाब नहीं दिया।

"तुम कुछ बोल क्यों नहीं रही हो?"

लुत्फुन्निसा ने फिर भी कोई जवाब नहीं दिया।

"कुछ तो बोलो! कुछ बोलकर ही मेरे ऊपर थोड़ा एहसान करो। अगर तुमसे यह भी नहीं हो सकता है तो फिजूल में मेरे साथ क्यों चली आयी?"

लुत्फुन्निसा बेचारी क्या कहती?

"ठीक है, मत बोलो! मैं अपने आपसे ही बातें करूँगा। आज मेरे अमीर-उमराव, वजीर या खिदमतगार कोई नहीं है, बेगम या बाँदी भी नहीं है। दुनिया में अकेला आया हूँ, अकेला ही जाऊँगा। मुझे न किसी के प्यार की जरूरत है न मुहब्बत की। मैं अगर मर जाऊँ, तो भी किसी को रोने की जरूरत नहीं है। मेरे मर जाने पर किसी को भी रोने का हक नहीं होगा।"

लुत्फुन्निसा ने नवाब के होंठों पर हाथ रख दिया।

कहा, "अब चुप भी रहिए, आपकी जबान पर तो कुछ भी नहीं रुकता।"

ठीक तभी बाधा पड़ी।

बूढ़े मल्लाह ने आकर कहा, "हुजूर, राजमहल आ गया है।"

ठीक है, यहाँ से अजीमाबाद जाने का सीधा रास्ता है। जनरल लॉ इसी रास्ते से आ रहा होगा। हो सकता है, रास्ते में मिल जाय।

नवाब ने कहा, "ठीक है बड़े मियाँ, बजरा घाट पर लगा दो।"

लुत्फुन्निसा भी उठने लगी। मिर्जा मुहम्मद ने कहा, "देखूँ, अगर यहाँ पर तुम्हारी लड़की के लिए दूध मिल जाय। लेकिन होशियार, किसी को पता न चले कि हम कौन हैं! अगर कोई पूछे तो क्या कहोगी?"

लुत्फुन्निसा ने कहा, "यही कहूँगी कि हम लोग पत्तापुर के रहनेवाले हैं, अजीमाबाद फकीर साहब की दरगाह जा रहे हैं।"

भोर हो आया था। बाहर घाट पर एक बजरा और भी लगा था। उस ब में दुर्गा अभी-अभी सोकर उठी थी। घाट पर दूसरा बजरा लगते देख उसने छो बहूरानी को जगाया।

"बहूरानी, देखो किसी का बजरा आया है।"

"किसका ?"

दुर्गा ने कहा, "पता नहीं। लगता है मुसलमानों का होगा।"

छोटी बहूरानी भी जँगले के पास आकर देखने लगी।

"हाय, कितनी सुन्दर बहू है री? साथ में बच्ची भी है। बता सकती है लोग कहाँ जा रहे हैं ?"

दुर्गा ने मल्लाह को बुलाकर पूछा, "क्यों भैया, ये लोग कौन हैं ?"

मल्लाह ने बतलाया, "फ्लाशपुर से आ रहे हैं, अजीमाबाद में फकीर सा की दरगाह पर जा रहे हैं।"

"हाँ, यही होगा।"

फिर दुर्गा उसी तरफ देखने लगी। बहू बड़ी खूबसूरत थी। एड़ी का रंग इत गोरा था मानों दूध में आलता मिलाया गया हो। साथ में जो आदमी था, वह खूबसूरत जवान था। बच्ची को गोद में लिये बीबी अपने आदमी के साथ किनारे उतरकर चलने लगी।



क्लाइव साहब के बाहर आते ही मुंशी नवकृष्ण ने पूछा, "यह कौन है हुजूर

क्लाइव ने कहा, "यह तुम्हें जानने की जरूरत नहीं है मुंशी, तुम अपने क से जाओ।"

नवकृष्ण सब समझ गया। वह धीरे-धीरे कमरे से निकल गया।

क्लाइव ने अर्दली को बुलाया।

उसके आने पर क्लाइव ने कहा, "वह जो बूढ़ा-सा आदमी पकड़ा गया है उसका नाम इब्राहिम खाँ है, उसे छोड़ देने को कहो।"

अर्दली जा ही रहा था कि क्लाइव ने उसे पुकारकर कहा, "और सुनो, आ पास में किसी ताँती का घर हो तो उससे दो-चार अच्छी साड़ियाँ जल्दी से ख लाओ।"

कहकर क्लाइव फिर अंदर आ गया। मराली उसी तरह खड़ी थी।

क्लाइव ने पूछा, "फिर ?"

"फिर क्या ? इस इब्राहिम खाँ के बिना मैं मोतीझील से भाग ही नहीं सक थी। लेकिन चेहल-सुतून में मरियम बेगम का भेस बनाये बेचारा कान्त फँस गया उसे निकालने की कोई तरकीब कीजिए न।"

"लेकिन मेरे मुर्शिदाबाद पहुँचने में अभी देर है।"

"क्यों ?"

"जगत्सेठ जी ने खत लिखा है कि कुछ लोग मेरा खून करने की साजिश कर रहे हैं। मैंने अपने आदमी भेजे हैं। उनसे जब तक सही हाल मालूम नहीं होता, तब तक कुछ भी नहीं कहा जा सकता। मैंने तांतियों के घर से साड़ी मँगवायी है, वही पहनकर रहो। डरने की कोई बात नहीं।"

"लेकिन कोई मुझे पहचान ले तो क्या होगा ? फिर तो सभी मुझे फाड़कर खा जायेंगे।"

क्लाइव ने कहा, "इसका डर नहीं है। मेरा नाम रॉबर्ट क्लाइव है।"

मराली ने अच्छी तरह देखा। इसके पहले बागबाजार में पेरिन साहब के बगीचे में जब उसने देखा था तो उस समय उसकी दूसरी ही आँखें थीं। इतने दिनों में मराली की आँखें बदली हैं, क्लाइव साहब की भी आँखें बदल गयी हैं। क्लाइव साहब आज जिस मरियम बेगम को देख रहा था, वह पहले की मरियम बेगम नहीं थी।

क्लाइव ने कहा, "लड़ाई में जो कैद होते हैं उनका क्या होता है, मालूम है ?"

"आप लोगों ने तो मुझे कैद किया ही है।"

"हाँ, तुमको कैद ही किया है। फिर भी तुम बेगम हो, इसलिए तुम्हारे लिए साड़ियाँ मँगवायी हैं। तुम्हारे कहने से उस आदमी को छोड़ देने का हुक्म भी दिया है।"

"इसलिए मैं आपकी कृतज्ञ हूँ। लेकिन मैं अपने लिए नहीं सोचती। मुझे कुछ भी हो जाय। चाहे तो आप मुझे फाँसी पर लटका सकते हैं, मुझे कोई दु:ख न होगा। लेकिन चेहल-सुतून में जो मरियम बेगम है, उसे आप कृपा कर छुड़ा लाइए।"

क्लाइव को बड़ा आश्चर्य हुआ।

"मरियम बेगम ! तुम्हीं तो मरियम बेगम हो ? चेहल-सुतून में क्या और कोई मरियम बेगम है ?"

"जी हाँ।"

"मुझे विश्वास नहीं होता। मुझे लग रहा है, पिछली बार की तरह तुम मुझे ब्लैकमेल करना चाहती हो। लेकिन मरियम बेगम, तुम्हें मैं होशियार किये देता हूँ कि अगर तुमको यह ख्याल हो कि औरतों के लिए मुझमें कमजोरी है तो तुम गलती पर हो। मैं जितना कोमल हूँ, उतना ही कठोर भी हो सकता हूँ। मैं अगर अभी हुक्म करूँ तो मेरे सिपाही अभी तुमको चबा डालेंगे। इससे मुझे भी कोई तकलीफ न होगी। क्या तुम यही चाहती हो ?"

मराली चुप रही।

अर्दली इतने में साड़ियाँ दे गया। क्लाइव ने एक साड़ी हाथ में लेकर कहा, "इसे पहन लो। मैं फिर आऊँगा। लेकिन खबरदार, भागने की कोशिश न करना, इसमें तुम्हारा ही नुकसान है।"

कहकर क्लाइव बाहर चला आया। इसके बाद उसने मेजर किलपैट्रि

पसीना एक करना पड़ा है। आप लोग तो बस लड़कर छुट्टी पा गये। लेकिन तोप-बंदूकों से ही लड़ाई जीती नहीं जा सकती। साथ में कूटनीति भी रहनी चाहिए। इधर कई दिन मुझे काफी दौड़-धूप करनी पड़ी। ठीक से नहा-खा भी नहीं सका। जब सब ठीक हो गया तब कर्नल साहब से मिलने आया। नहीं तो पता नहीं क्या सोचते ?"

अचानक मुंशी पर नजर पड़ी। नवकृष्ण ने तब तक अमीचंद के पाँव छू लिये।

"कहो नवकृष्ण, मजे में हो न ? नौकरी कैसी चल रही है ?"

"आपकी कृपा से मजे में हूँ, लेकिन—"

"लेकिन क्या ?"

"इस महीने की तनख्वाह अभी तक नहीं मिली, इसीलिए मालिक से मिलने आया था। अगर आप थोड़ा कह दें।"

अमीचन्द बिगड़ गया। कहा, "अरे, कितनी लम्बी तनख्वाह है तुम्हारी जो इतना घबड़ा रहे हो ? साहब क्या भागा जा रहा है ? अभी तो लड़ाई खत्म हुई है, अब नवाब की दौलत का हिस्सा-बाँट होगा, तब न ? तुम्हें तो बस थोड़े-से रुपये मिलने हैं, मुझे तो लाखों रुपये लेने हैं। ज़रा मेरे बारे में तो सोचो ?"

मुंशी ने कहा, "जी हाँ, सब सुना है। नवाब रुपया-पैसा लेकर भागा है।"

अमीचन्द हो-हो कर हँसने लगा। बोला; "तुम भी पागल हो ! नवाब इतना रुपया लेकर कैसे भागेगा ? उतने रुपये ढोने के लिए तो बीस हाथी चाहिए।"

"लेकिन वाल्स साहब ने तो आकर कहा, रुपये-पैसे कुछ भी नहीं हैं। मीर जाफर ने कहा है, रुपये-पैसे जो थे नवाब ने बाँट दिये हैं।"

मेजर साहब पास ही खड़ा था। अमीचन्द ने उसकी तरफ देखकर पूछा, "सच ?"

मेजर ने कहा, "हाँ।"

"बेकार बातें हैं। मेरी बात मानो, यह सब झूठ है। अगर झूठ न हो तो मैं अपने हाथ से अपने नाक-कान काट डालूंगा। नवाब के चेहल-सुतून से ही बीस करोड़ रुपये मिल सकते हैं।"

"लेकिन कर्नल ने तो लड़ाई के खर्च के लिए मीर जाफर से बस दो करोड़ बीस लाख रुपये माँगे थे। मीर ज़ाफर ने कहला भेजा है, रुपया नहीं है। कम-से-कम जगत्-सेठ से यह रकम उधार भी मिल जाती तो काम चलता लेकिन सेठ जी उधार देने को भी तैयार न हुए।"

अमीचन्द ने कहा, "ठीक है, कोई परवाह नहीं ! कर्नल साहब क्या इसीलिए सोच में पड़े हैं ? ठीक है, मैं खुद जाकर साहब से कहता हूँ, घबड़ाने की कोई बात नहीं है। नवाब के रुपये तो अकेले किसी के रुपये नहीं हैं। उसमें मेरा हिस्सा भी है। साहब से बात तय हो गयी है कि तीस लाख रुपये मुझे मिलेंगे। यह न मिला तो मैं मर जाऊँगा।"

इतना कहकर अमीचंद क्लाइव के तम्बू की ओर चला गया। मेजर किलपैट्रिक

अमीचंद के आने की खबर देने जल्दी-जल्दी चला गया।

नवकृष्ण फिर अमीचंद के पीछे दौड़ा।

"हुजूर, एक बात थी।"

अमीचंद रुक गया। पीछे मुड़कर कहा, "क्या है?"

"आपने एक खबर सुनी है? हमारे साहब की खबर? साहब यहां भी एक औरत के चक्कर में पड़े हैं।"

"अच्छा? यह बीमारी अभी तक है? लेकिन यह औरत है कौन?"

"यह नहीं जानता हुजूर! पेरिन साहब के बगीचे में जो दो औरतें थीं उनमें से कोई नहीं है। यह नयी आयी है। मर्दों की पोशाक पहने आयी थी। लेकिन है औरत।"

"उसका नाम क्या है? कहां की है?"

"यह सब नहीं जानता हुजूर! कमरे में है। साहब ने उसके लिए साड़ी मंगवायी है।"

अमीचंद चिंतित हो उठा। इस सुनसान मैदान में फौज की छावनी में औरत कैसे आयी?

इतने में मेजर किलपैट्रिक आ गया।

"आइए अमीचंद साहब, आइए!"

●

असल बात औरत नहीं है। असल बात तो रुपया है। दो करोड़ बीस लाख रुपए न मिलने पर फिरंगी कंपनी के लिए इतनी जहमत उठाना बेकार होगा। सन् १७५७ के उस दिन भी बंगला मुल्क के सामने यही सबसे संगीन प्रश्न था—रुपया! नवाब को रुपये के लिए ही फिरंगियों से लड़ना पड़ा और रुपये के लिए ही फिरंगियों को सात समंदर पार आकर बंगाल मुल्क की मसनद छीननी पड़ी। इसी रुपये के लिए अमीचंद, नंदकुमार से लेकर मामूली जासूस बशीर मियां तक ने नवाब का साथ छोड़कर फिरंगियों से हाथ मिलाया।

मंसूरगंज हवेली के सामने नये पहरेदार तैनात हुए थे। उनसे कह दिया गया कि सभी को मीर जाफर अली साहब के पास न जाने दिया जाय।

मीरन बड़ा होशियार लड़का था। इन्हीं कुछ दिनों में उसने काफी रोबदाब जमा लिया था। मीर जाफर साहब नवाब होगा तो उसका रोबदाब बढ़ेगा ही। पहरेदार भी यह बात समझ गये थे।

लेकिन तब तक किसी को पूरी हिम्मत नहीं हुई। राजा दुर्लभराम है, यार लुत्फ खां है, फिर बाकी में सरफराज खां का लड़का अमानी खां है। फिर नवाब सिराजुद्दौला कहां जाकर क्या साजिश कर रहा है यह भी किसी को नहीं मालूम। अब अजीमाबाद की तरफ गया है तो मुश्किल है। वहां से जनरल लॉ को साथ लेकर अग

आ धमका तो क्या होगा कहा नहीं जा सकता।

फिर भी सपना देखने में क्या दोष है ?

मीरन पूछता, "रुपए का क्या इंतजाम होगा अब्बाजान ?"

मीर जाफर कहता, "रुपये नहीं दूंगा।"

"लेकिन क्लाइव साहब को रुपये देने का तो करार हुआ है न ?"

मीर जाफर ने कहा, "एक बार नवाबी मिल जाय, फिर देखा जायेगा ! इस समय रुपया कहाँ मिलेगा ?"

हाँ, यह तो है। मीरन को बात पसंद आयी। एक बार नवाबी पा जाने पर क्या कोई करार की बात याद रखता है ? इससे तो अच्छा है दूसरी बात सोची जाय। मंसूरगंज की हवेली में दरवाजे-खिड़कियाँ बंद कर मीर जाफर और मीरन रात को सावधानी से सोते। इधर कई दिन बड़ी बेचैनी में कटे थे। फिरंगियों को एक करोड़ रुपये देने होंगे। अरमेनियनों को भी सत्तर लाख रुपये देने होंगे।

"अब्बाजान !"

रात को बिस्तर पर लेटे-लेटे भी मीरन को नींद नहीं आती। एक बात याद आते ही वह अब्बाजान के पास आया। मीर जाफर भी उस समय लेटे-लेटे सोच ही रहा था।

"क्या है ?"

अचानक मुर्शिदाबाद की सड़कों से बड़े जोरों की आवाज आयी—अल्लाह अकबर !

ऐसा लगा, एक साथ लाखों लोग चिल्लाये। फिर क्या सभी पागल हो गये हैं ! क्या अंग्रेजी फौज आ गयी ? कभी आवाज मोतीझील की तरफ से आती, तो कभी चौक बाजार की तरफ से, तो कभी महिमापुर की तरफ से।

मीर जाफर ने कहा, "जा, सो जा।"

"नींद नहीं आती।"

२४ जून से ही बाप-बेटे को नींद नहीं थी। बस, उन्हीं को क्यों ? पूरे चेहल-सुतून में नींद नहीं थी। कहा जाय तो मुर्शिदाबाद में भी नींद नहीं थी। चारों तरफ आदमी दौड़े हैं नवाब को खोजने। ढाका भी आदमी गया है अमानी खाँ की खबर लाने। अजीमाबाद की तरफ भी लोग गये हैं। क्या जनरल लाँ आ रहा है ? ज[illegible] से बहुत कहा जा चुका था। रुपये देने से सब ठीक हो जाता। किसी के आने से पहले ही सारा इंतजाम पक्का हो जाता।

शुजा-उल-मुल्क हिसामुद्दौला मीर जाफर अली खान बहादुर महाबतजंग !

खिताब सुनने में भी अच्छा है। मीर जाफर अली ने खिताब लिया है महाबतजंग और मीरन ने खिताब लिया है शहबतजंग !

फाटक पर पहरेदार मिलते ही झुककर सलाम करते। ये पहले भी सलाम कर[illegible] थे, लेकिन अब लगता है जैसे भीखू शेख जगत्सेठ को सलाम करता है उसी तरह वे[illegible]

मीरन को सलाम करते हैं।

उस दिन अचानक खबर आयी, क्लाइव साहब आ रहा है।

"तुझे कैसे मालूम हुआ?"

"मैंने देखा है, घोड़े की पीठ पर सवार एक फिरंगी साहब आ रहा है।"

"धत् बेवकूफ! क्लाइव साहब क्या अकेले आयेगा? उनके साथ फौज आयेगी, बहुत सारे लोग आयेंगे।"

उस दिन मेंहदी निसार, डिहीदार रजा अली वगैरह सभी मौजूद थे। मीर जाफर का लड़का मीरन भी था। सभी मीर जाफर से सलाह-मशविरा करने आये थे। मुर्शिदाबाद के सारे काम-काज बंद थे। मेहतर लोग सड़कों और गलियों की सफाई करना भी भूल गये थे। दुर्गंध फैल रही थी। कहीं बीमारी न फैल जाय।

मीर जाफर ने पूछा, "नवाब के बारे में कोई खबर मिली?"

मेंहदी निसार ने कहा, "मैंने हर ओर जासूस भेजे हैं।"

"चेहल-सुतून में तो सब ठीक है?"

"और तो सब ठीक है। लेकिन उस दिन मालखाने में ताला बदलने गया था तो नानी बेगम ने मेरी तौहीन करके मुझे वहाँ से चले जाने को कहा।"

"तुमने क्या कहा?"

"कह दिया कि मैं जाकर मीर जाफर साहब से कहे देता हूँ। लेकिन नानी बेगम का रुख भी ठीक नहीं है। हो सकता है, सारा रुपया लुटाकर खत्म ही कर दें।"

इस पर मीरन ने कहा, "हम लोगों को मालखाने पर कब्जा कर ही लेना चाहिए। वहाँ काफी रुपया मिलेगा।"

मीर जाफर ने कहा, "पहले क्लाइव साहब को आ जाने दो; फिर जैसा होगा किया जायेगा।"

तभी सन्तरी ने आकर खबर दी, "फिरंगी छावनी से वाट्स साहब आये हैं।"

सुनते ही मीरन दौड़कर नीचे गया।

वाट्स के आते ही मीर जाफर उठकर खड़ा हो गया। फिर उन्होंने मुस्कराते हुए पूछा, "कर्नल साहब मजे में हैं न?"

वाट्स ने कहा, "कर्नल क्लाइव ने मुझे एक बात का पता लगाने भेजा है।"

मीरन ने कहा, "हम लोग तो कब से उनकी राह देख रहे हैं। आने में देर क्यों हो रही है? रुपये नहीं मिल पाये, इसलिए क्या कर्नल साहब खफा गये हैं?"

मीर जाफर ने कहा, "हमने तो कहा है कि हम रुपये देंगे। वे आयेंगे तो सब इंतजाम हो जायेगा।"

वाट्स ने कहा, "नहीं-नहीं, वह बात नहीं है। साहब पता लगाने को कहा है कि चेहल-सुतून में मरियम नाम की -

"मरियम बेगम? पहले थी, अब नहीं है।"

"नहीं है ?"

मेंहदी निसार ने अब कहा, "मरियम बेगम ? मरियम बेगम के बारे में क्लाइव साहब ने पूछा है ? क्यों ?"

वाल्स ने कहा, "यह मुझे नहीं मालूम। लेकिन कर्नल साहब ने उसके बारे में बहुत जल्दी जानना चाहा है।"

मीर जाफर ने मेंहदी निसार की ओर देखा, "चेहल-सुतून के बारे में तो तुम्हें पता रहता है। वहाँ मरियम बेगम नाम की कोई है क्या ?"

डिहीदार रजा अली ने कहा, "जी हाँ, है।"

वाल्स ने कहा, "अच्छा तो मैं चलता हूँ, मुझे सिर्फ इतना ही मालूम करना था।"

कहकर वाल्स चला गया। उसके जाने के बाद मीर जाफर का चेहरा गंभीर हो गया। इसमें जरूर ही कोई राज है, वर्ना कर्नल एक बेगम के बारे में जानकारी हासिल करने के लिए अपने खास आदमी को क्यों भेजता ? लेकिन यह मरियम बेगम आखिर है कौन ?

मेंहदी निसार ने कहा, "मैं समझ गया हूँ।"

"क्या समझ गये ?"

"यह मरियम बेगम हतियागढ़ के जमींदार की बीवी है। नवाब ने उसे चेहल-सुतून में लाकर रखा था। लगता है, इसमें हतियागढ़ के जमींदार का हाथ है।"

मीरन ने कहा, "ठीक है, मैं इसका बन्दोबस्त करता हूँ।"

मेंहदी निसार ने कहा, "लेकिन मैंने तो पहले से ही सब ठीक कर रखा है, मरियम बेगम चेहल-सुतून में नजरबंद है।"

मीर जाफर ने कहा, "बहुत खूब ! कर्नल अगर मरियम बेगम के मिलने से खुश होता है तो एक मरियम बेगम ही क्यों, चेहल-सुतून की सारी बेगमात उसको नजर करके भी मैं उसे खुश करूँगा।"

●

राजमहल के घाट पर दुर्गा उस समय हाथ-मुँह धोकर खाने का इंतजाम कर रही थी। राजमहल से नाव में बैठे काफी दूर जाना था। फिर भी यहाँ से हतियागढ़ पहुँचने में ज्यादा देर नहीं लगेगी।

फिर भी छोटी बहूरानी ने दुर्गा को ताकीद की। कहा, "अरी दुर्गा, वे इतनी देर क्यों कर रहे हैं ? कब नाव छोड़ेंगे ?"

दुर्गा ने कहा, "जरा रुक जाओ छोटी बहूरानी, थोड़ी देर उन लोगों को भी आराम कर लेने दो। वे क्या दाना-पानी भी नहीं खायेंगे ? वे भी तो इंसान हैं।"

छोटी बहूरानी से देर बरदाश्त नहीं हो रही थी। कितने दिन हो गये वह हतियागढ़ से चली थी ! लगता है, सालों गुजर गये हों। ऐसे जो विपत्ति से छुटकारा

मिलेगा, यह किसे मालूम था ?

उसी समय साथ वाली नाव की बाँदी दुर्गा के पास आयी। बुरके की नकाब हटाकर उसने कहा, "माँ, आपके पास थोड़ा-सा दूध है ?"

"दूध ? दूध क्या करोगी बेटी ?"

बाँदी ने कहा, "मेरी मालकिन की छोटी बच्ची भूखी है, इसलिए थोड़ा-सा दूध मिल जाता तो उसे पिलाती।"

"तुम्हारा मालिक कौन है ? कहाँ जा रहे हो तुम लोग ?"

"मेरे मालिक पलाशपुर के ताल्लुकेदार हैं।"

"राजमहल तक चलना है क्या ?"

"नहीं माँ, यहाँ से अजीमाबाद जाना है। वहाँ फकीर की दरगाह में दुआ लेने जा रहे हैं।"

"साथ में छोटी बच्ची है, उसके लिए क्या दूध भी नहीं लायी ? अब दूध हमारे पास कहाँ है ?"

असल में नाव जहाँ लगी थी, वह राजमहल नहीं था। राजमहल तो उस पार था। जहाँ नाव लगी थी, वह जगह बड़ी सुनसान थी। महाराज कृष्णचन्द्र ने होशियार लोगों के साथ छोटी बहूरानी और उसकी नौकरानी को भेजा था। तय था कि इन दोनों को हतियागढ़ पहुँचाकर वे वापस चले आयेंगे। फिर भी जमाना खराब था, इसलिए महाराज ने सबको होशियार कर दिया था। चारों तरफ अराजकता थी। महाराज ने अपने आदमियों से कह दिया था, चारों तरफ देख-सुनकर तब जाना। दूर की राह है, किसी पर विश्वास न करना।

बस, इतनी ही आशा थी कि लड़ाई खत्म हो गयी है। नवाब मुर्शिदाबाद छोड़कर भाग गये हैं। निजामत के विषदन्त टूट गये हैं। अब कुछ समय के लिए बाहर की प्रजाओं पर अत्याचार नहीं होगा। इसी मौके से छोटी बहूरानी अपने घर पहुँच जायेंगी।

महाराज सबको रवाना करके भी अपने मन में निश्चिन्त न हो सके थे। समाज और राष्ट्र पर जब विपत्ति आती है तब देश के कर्णधारों के सामने व्यक्तिविशेष की समस्या तुच्छ हो जाती है। उस समय उनके मस्तिष्क में बस यही बात रहती है कि वृहत्तर मनुष्य समाज का मंगल कैसे होगा ? नवाब जो भाग गये, अपने अत्याचार से जनगण को त्रासित कर गये, उन्हें तो दंड नहीं मिला ?

दंड ! दंड जैसा शब्द ध्यान में आते ही महाराज को लगा—किसके लिए दंड ? पाप का दंड ? देश का इतिहास क्या कहता है कि पहले के नवाबों ने अत्याचार नहीं किया ? उनके पापों के लिए किसने दंड दिया ? नवाब मुर्शिद कुली खाँ के पापों के लिए उसे क्या दंड दिया गया ? बादशाह औरंगजेब के पापों का दंड किसने भोगा ? शायद पाप-पुण्य नाम की कोई चीज है ही नहीं। इतिहास के पहिये के नीचे आकर कोई पिस जाता है तो कोई सर को ऊँचा कर खड़ा हो जाता है। अगर

है तो यह संसार किस विधान के अनुसार चलेगा ?

वाचस्पति महाशय से भी एक दिन महाराज कृष्णचन्द्र ने यही पूछा था।

इसके उत्तर में वाचस्पति महाशय ने कहा था, "पाप का दंड कभी-कभी हाथों हाथ नहीं भी मिलता है महाराज !"

"अगर हाथों हाथ नहीं मिला तो मैं अपनी प्रजाओं को क्या कहकर आश्वस्त दूँगा ? वे तो परिणाम जानना चाहेंगी। वे तो पुण्य का परिणाम भी देखना चाहेंगी और पाप का परिणाम भी। अगर उनको दृष्टान्त न मिला तो वे आखिरकार अधार्मिक बन जायेंगी। सारा संसार रसातल में जायेगा। राज्य में अराजकता छा जायेगी।"

वाचस्पति महाशय ने कहा था, "इसीलिए तो महाराज, ईश्वर का दूसरा नाम अदृष्ट है। हम उसी ईश्वर को पुकारेंगे। हम उसी ईश्वर से कहेंगे—"हे ईश्वर तुम हमारे पापों को क्षमा करो।"

"नहीं वाचस्पति महाशय, जो क्षमा-प्रार्थना करते हैं वे दुर्बल हैं, भीरु हैं। क्षमा मांगने पर वह प्रार्थना ईश्वर के कानों तक नहीं पहुँचती। कहना होगा, हे ईश्वर, हमारे पापों का मार्जन करो।"

सचमुच उस दिन जब महाराज कृष्णनगर से मुर्शिदाबाद के लिए जा रहे थे तब चारों तरफ की हालत देखकर महाराज को वे ही बातें याद आ रही थीं। लड़ाई खत्म होने के बाद बस तीन ही दिन बीते थे, लेकिन नदी के किनारे धान के खेत वीरान पड़े थे—जोते नहीं गये थे। गंगा के दोनों किनारे के गाँवों के झोंपड़े सुनसान थे। इसी रास्ते से एक दिन नवाब की फौज लक्काबाग गयी थी, फिर इसी रास्ते फिरंगियों की फौज नवाब के पीछे-पीछे आयी थी।

शायद इसी का नाम प्रायश्चित्त है। पृथ्वी पर जब पाप स्तूपीकृत हो उठता है तब प्रायश्चित्त का विधान शायद ऐसा ही होता है। जहाँ जितना पाप है, अत्याचार है, अशान्ति है और अकल्याण है शायद इसी तरह ईश्वर उन सबका मार्जन करता है। लेकिन पृथ्वी पर सभी मनुष्य तो एक समान थे। इसलिए एक के पाप के लिए दूसरे को प्रायश्चित्त करना ही पड़ता है। पिता का पाप पुत्र को ढोना पड़ता है। प्रबल का पाप दुर्बल को सहना पड़ता है। एक भी मनुष्य पाप करता है तो सभी को उसका फल भोगना पड़ता है।

जगत्सेठ जी की हवेली में बैठकर महाराज कृष्णचन्द्र ने यही कहा था।

इधर कई दिनों से जगत्सेठ जी की दुश्चिता भी कम नहीं थी। एक-एक दिन एक-एक तरह की खबर आ रही थी और सब कुछ गड़बड़ होता जा रहा था। जिसके पास रुपये हैं, उसी को चोरी का भय रहता है। जिसके पास राज्य है उसी को अराजकता का भय सताता है। लेकिन मुर्शिदाबाद शहर के लोग इस तरह भीड़ क्यों बढ़ा रहे थे ? उन्हें किस बात का डर था ? जगत्सेठ जी ने अपना आदमी दिल्ली भेजा। फिर कचहरी में जाकर वे बैठ गये। फिर भी उन्हें चैन नहीं मिल रहा था। खबर उन्हें भी मिल रही थी कि एक-एक बार एक-एक काम का बहाना बनाकर

क्लाइव साहब मुर्शिदाबाद में अपना आदमी भेज रहा है। यह सब तो बस बहाना है, एक ढोंग है। मरियम बेगम नाम की कोई बेगम साहबा चेहल-सुतून में है कि नहीं, यही जानने के लिए क्लाइव के कौतूहल की सीमा न थी। असल में वह मुर्शिदाबाद के अन्दर की खबर जानना चाहता है। यार लुत्फ खाँ, मीर जाफर अली और राजा दुर्लभराम में झगड़ा शुरू होने की अफवाह सही है या गलत, यही यह जानना चाहता है।

महाराज ने कहा, "मैंने भूल की थी जगत्सेठ जी। अब मुझे लगता है, क्लाइव साहब का मतलब बुरा है। वह शायद खुद ही नवाब बनकर मसनद पर बैठना चाहता है।"

जगत्सेठ ने कहा, "यह भी असंभव नहीं है। मैंने सोचा था, यह आदमी होशियार है।"

"होशियार तो है ही! नहीं तो काम पूरा होने से पहले ही क्यों रुपया माँगता है? अब सोच रहा है, यहाँ आने पर शायद हम एक साथ उसके खिलाफ खड़े हो जाएँगे।"

जगत्सेठ जी ने कहा, "इसीलिए मैंने खबर भेजी है कि वह अभी मुर्शिदाबाद न आये। अभी वह मुर्शिदाबाद आ जायेगा तो उसके मारे जाने का डर है। लिख दिया है कि शहर में आपको कत्ल करने के लिए साजिश हो रही है।"

"इस तरह और कितने दिन साहब इंतजार करेगा?"

जगत्सेठ जी ने कहा, "यह मैं नहीं जानता। लेकिन मैंने अपना आदमी दिल्ली भेजा है और उससे खबर मिलने की उम्मीद में बैठा हूँ।"

अचानक बाहर भीपू शेख की आवाज सुनकर दोनों अनमने हो गये। कोई आया है क्या? आजकल किसी भी समय कोई भी घटना घट सकती थी। कब सिपाही बिगड़ जायें यह भी कहना मुश्किल था। नवाब नहीं है, अब वे लूटपाट भी कर लें तो कौन उन्हें रोकेगा? अफवाह जोर पर थी कि मेंहदी निसार मालखाना लूटने गया था। नानी बेगम साहबा ने उसे भगा दिया था। मालखाने में अब भी काफी सोना-चाँदी और हीरे-जवाहिरात थे। एक बार मालखाना लूट लिया जाय तो फिर मालामाल होने में कितनी देर लगती है?

फिर यही तो मौका है। इस समय नवाब भी नहीं है, पहरेदार भी नहीं है। एक तरह से कोई भी नहीं है। नियम मुताबिक इसाफ मियाँ भी नौबत नहीं बजाता। सब भी डर गये थे। उनको तनख्वाह मिलेगी कि नहीं इसका भी भरोसा नहीं था।

नानी बेगम साहबा रात भर पहरा देती हैं। पीर अली खाँ को होशियार कर देती हैं। कहतीं, "खूब होशियार रहना पीर अली! मेरे मालखाने की तरफ कोई न आने पावे! कोई भी आवे तो उसकी गर्दन पहले मार लेना, फिर कोई बात सुनना।"

पीर अली खाँ, नजर मुहम्मद, बरकत अली सभी हर घड़ी निगरानी रखते। बेगम महलों के फाटकों पर जाकर चिल्लाता—होशियार! होशियार!

जो सोते रहते वे हड़बड़ाकर जाग जाते। क्या हुआ? फिर क्या हुआ? फिर

कोई मालखाना लूटने आया है क्या ?

फिर जब बेगमें समझ जातीं तो मन ही मन गालियां बकतीं। कहतीं—मुए सोने भी नहीं देते !

सारा चेहल-सुतून रात भर इसी तरह डरता-कांपता रहता है। दिन तो किसी तरह बीत जाता, लेकिन रात होने पर सभी के मन में डर होने लगता। कब क्या हो जाय, कोई नहीं कह सकता।

उस दिन सचमुच किसी को नींद नहीं आयी। बहुत ज्यादा शोरगुल हो रहा था। क्या मेंहदी निसार फिर मालखाना लूटने आया है ? तब तो फिर नानी बेगम साहबा से झगड़ा शुरू होगा !

पेशमन बेगम ने अपने महल के फाटक के सामने आकर झांका। सभी लोग इधर-उधर दौड़ रहे थे।

पेशमन बेगम ने हिम्मत कर एक से पूछा, "क्या हुआ बरकत ?"

बरकत अली को शायद उस समय बात करने की फ़ुर्सत नहीं थी। दौड़ता हुआ वह नानी बेगम साहबा के महल की तरफ चला गया।

गुलशन बेगम ने पेशमन बेगम का सवाल सुन लिया था। मौका मिलते ही उसने पूछा, "क्या हुआ बहन ? इतना हल्ला क्यों हो रहा है ?"

पेशमन ने कहा, "क्या मालूम ? मुंहजलों ने फिर कुछ झगड़ा शुरू किया है ?"

"और किसी से पूछो न।"

"तुम पूछो भाई, मुझे तो डर लगता है।"

"शायद फिरंगी फौज आ रही है।"

पेशमन ने कहा, "फिरंगी फौज आ जाय तो हम बच जायें। अब यह रोज-रोज अच्छा नहीं लगता !"

बगल वाले फाटक से तक्की बेगम ने पूछा, "क्या हुआ बहन ? इतना शोरगुल क्यों है ?"

"वह देखो, सभी जाग गये हैं।"

"जाग तो जायेंगे ही। इधर कई दिनों से क्या कोई सोने पा रहा है ? न खाना, न सोना, न मन में चैन...."

तक्की बेगम ने पूछा, "फिरंगी फौज आ रही है क्या ?"

पेशमन ने कहा, "हां री, अब तो तेरे मजे हैं। तुझे नया कद्रदान मिल जायेगा। तेरा भी जायका बदल जायेगा।"

"मेरे जायका बदलने की जरूरत नहीं है। अब वह उम्र भी नहीं है।"

"फिर चली जा, मक्का जाकर हज कर आ। फिरंगी तुझे हज कराने ले जायेंगे।"

तक्की बेगम बिगड़ गयी। कहा, "हां, तुम सब तो कमसिन हो न !"

पेशमन ने भी ताना दिया, "मर तू ! हम सभी अपनी जान के डर से मर रही

हैं और तुझे कद्रदान की पड़ी है। इतने कद्रदानों से भी मन नहीं भरा क्या ?"

बात शायद और बढ़ जाती लेकिन बाधा पड़ गयी। पीर अली को उधर से आ रहा था। उसके आते ही सभी बेगमें अपने-अपने महल में जा छिपीं।

पीर अली ने जाते-जाते कहा, "होशियार ! होशियार !"

पीर अली सीधे नानी बेगम साहबा के महल के सामने पहुँच गया।

नानी बेगम साहबा, कहा जाय तो, जाग ही रही थीं। आवाज पाते ही कहा, "कौन ? पीर अली ?"

नानी बेगम आजकल रात के वक्त भी ज्यादातर जागती ही रहती थीं। लेकिन उस दिन शायद जरा खुमारी-सी आ गयी थी। नानी बेगम ने जैसे खुमारी में ही ख्वाब में देखा, नवाब अलीवर्दी खाँ सामने आकर खड़े हैं।

"यह क्या आलीजाह, आप ?"

"हाँ, मिर्जा के ऊपर मुसीबत है न, इसीलिए आया हूँ।"

"अच्छा किया। देखिए न, इन सब नमकहरामों ने मिलकर बेचारे को बुरी तरह से परेशान कर रखा है। आखिर में बेचारे को भाग ही जाना पड़ा। जाते वक्त मुझसे एक बार कहकर भी नहीं गया। अब क्या होगा ?"

"सब ठीक हो जायेगा, मैं तो आ गया हूँ न।"

"लेकिन मेरे मिर्जा का क्या होगा ?"

"क्या होगा ? कुछ भी नहीं होगा।"

"वह जो मेहदी निसार है न, वही तो मिर्जा के पीछे-पीछे घूमा करता था। आज वह मालखाने में ताला लगाने आया था। मैंने भगा दिया। अब वह अगर फिरंगी फौज के साथ आकर चेहल-सुतून पर हमला करे तो क्या होगा ?"

"रोओ नहीं। रोना तुम्हें शोभा नहीं देता। तुम नानी बेगम हो न ? तुम्हारी ओर ही आस लगाये चेहल-सुतून की बेगमें बैठी हैं न ? तुम्हें रोते देखकर वे क्या सोचेंगी कहो तो ? और मिर्जा के बारे में पूछ रही हो न ? मिर्जा मेरा ऐसा नाती नहीं है कि भाग जायेगा ? मिर्जा क्या फिरंगियों के डर से भाग जायेगा ! क्या तुम्हारा नाती ऐसा ही है ?"

"क्या आप जानते हैं कि वह कहाँ गया है ? क्या आप सचमुच जानते हैं ?"

"जानता हूँ। जरूर जानता हूँ। जानता हूँ, इसीलिए न तुमसे कहने आया हूँ।"

"कहिए न वह कहाँ है ? कैसा है ? कब आयेगा ?"

"आयेगा। दो दिन और सब्र करो। वह हाथी की पीठ पर बैठा मुर्शिदाबाद आयेगा।"

"सच कहते हैं, वह आयेगा ?"

"हाँ-हाँ, आयेगा। दो दिन बाद ही आयेगा।"

"लेकिन वह ऐसे भाग क्यों गया ? चोर की तरह वह राजधानी छोड़कर भाग क्यों गया ?"

नवाब अलीवर्दी हा-हा कर हँसने लगे। ठीक ऐसे ही वे पहले हँसते थे। कहा, "नवाबी बनाये रखने के लिए जिस तरह लड़ना पड़ता है, उसी तरह भागना भी पड़ता है। क्या मैं नहीं भागा था ? भास्कर पंडित के डर से क्या मैं नहीं भागा था ? तुम्हें उन दिनों की बातें याद नहीं हैं ?"

"लेकिन लड़ाई से भागना और चेहल-सुतून से भागना क्या एक ही बात है ?"

"एक ही बात है। जरूरत पड़ने पर मिर्जा अजीमाबाद से लड़ेगा या जहांगीराबाद से।"

"फिर आप ऐसा कह रहे हैं ? आप मुझे भरोसा दे रहे हैं ?"

"हाँ-हाँ, घबड़ाने की कोई बात नहीं है। तुम्हें कोई डर नहीं है। मिर्जा मुर्शिदाबाद आ रहा है। हाथी की पीठ पर बैठा वह आ रहा है।"

और ठीक तभी किसी चीज की आवाज सुनकर नानी बेगम की नींद टूट गयी। आँखों के आगे अँधेरा छा गया।

"कौन ?"

"जी, मैं हूँ पीर अली खाँ।"

नानी बेगम साहबा ने हड़बड़ाकर उठकर दरवाजा खोल दिया।

"क्या बात है ? क्या कोई मालखाना लूटने आया है ?"

"नहीं नानी बेगम साहबा, नवाब मिर्जा मुहम्मद सिराजुद्दौला मुर्शिदाबाद आ रहे हैं।"

"मिर्जा आ रहा है ? तुझे किसने बतलाया ?"

खुशी के मारे नानी बेगम का गला जैसे रुँध गया।

पीर अली खाँ कहने लगा, "खबर आयी है कि अजीमाबाद से लाँ साहब की फौज के साथ नवाब बहादुर मुर्शिदाबाद की ओर आ रहे हैं।"

नानी बेगम क्या करे ठीक नहीं कर पा रही थीं। आसपास में कोई भी नहीं था जिसे यह खुशखबरी सुनाकर दिल को तसल्ली देतीं। अरी अमीना, गुलशन, तक्की और पयमाना, तुम सब कहाँ मर गयीं ?

तभी जैसे ख्याल आया। नानी बेगम ने कहा, "पीर अली, तू जाकर नौबतखाने में खबर दे आ—नवाब बहादुर आ रहे हैं, नौबत बजायें।"

उसी दिन मंसूरगंज की हवेली में खबर पहुँच गयी। मीरन कई दिनों से रात को सो नहीं पा रहा था। मीर जाफर अली होगा शुजा-उल-मुल्क हिसामुद्दौला बहादुर महाबतजंग और मीरन खुद होगा शुजा-उल-मुल्क शहबतजंग।

अचानक मंसूरगंज हवेली में भी मानो शोरगुल होने लगा।

रात खत्म होने को आयी तो यह क्या शुरू हो गया ? यह कैसा शोरगुल होने लगा ? मीरन ने बाहर की तरफ देखा। भोर हो चली थी।

"अब्बाजान !"

मीर जाफर के कमरे के सामने जाकर मीरन ने बुलाना शुरू कर दिया। नीचे

फाटक पर कौन आये हैं। फिर फिरंगी साहब आये हैं क्या? बार-बार एक न एक फरमाइश शुरू हो जाती है। मरियम बेगम तो चेहल-सुतून में है। फिर उसकी खबरदारी क्यों?

"क्या हुआ? बुला क्यों रहा है?"

मीर जाफर के कान में भी आवाज पहुँची थी।

"नीचे शायद वही वाट्स साहब आया है?"

मीर जाफर साहब के आराम में बाधा पहुँची। उसने जरा सोचकर कहा, "असल में यह चालाकी है। वह बस यहाँ का हाल जानने आता है।"

लेकिन नहीं। मेहदी निसार आया था। उसके साथ रजा अली भी था।

"सुना, नवाब मुर्शिदाबाद लौट रहा है?"

"क्या?"

"नवाब शहर में आ रहा है, इसी की अफवाह जोर पर है। अजीमाबाद से जनरल लॉ साहब भी फौज लेकर नवाब के साथ आ रहा है।"

अचानक मानो सारे मुर्शिदाबाद के चेहरे पर किसी ने स्याही पोत दी। एक दिन जो मुर्शिदाबाद फिरंगी फौज के डर से थर-थर काँप रहा था, अब इस नयी खबर से मानो वह अवाक् हो गया। अठारहवीं सदी की इस अराजक राजधानी ने अनेक बार अराजकता देखी थी लेकिन कभी इस तरह आतंक से सिहरकर जड़वत् नहीं हो गयी थी। प्रति दिन प्रति क्षण इतिहास रोमांच का मसाला जुटाता रहा है। उस दिन जो लोग शहर छोड़कर भागे थे, वे भी यह खबर सुनकर बेचैन हो उठे। इन लोगों की इतने दिनों की भविष्यवाणी क्या रातों रात मिथ्या हो गयी? फिर क्या नवाब आ रहा है? फिर क्या वे अपने-अपने घरों में जाकर गृहदेवता या शालग्राम शिला को प्रतिष्ठित कर सकेंगे?

क्लाइव साहब से बातचीत खत्म कर आधी रात के बाद अमीचंद साहब चल दिया था। रात के अँधेरे में राजधानी पहुँचना ही अच्छा रहेगा। लेकिन रास्ते में ही यह खबर सुनकर उसने पालकी रोकने को कहा।

"क्यों रे, उस आदमी ने क्या कहा?"

पालकी के कहारों में से एक ने कहा, "हुजूर, वह कह रहा था कि नवाब आ रहा है।"

"नवाब फिर आ रहा है?"

"अजीमाबाद से फौज लेकर मुर्शिदाबाद में लड़ने आ रहा है।"

यह सुनकर अमीचंद थोड़ी देर तक खामोश रहा। एक बार उसने [illegible] पर हाथ फेर लिया। पालकी फिर चलने लगी थी। दो करोड़ [illegible] साहब ने आदमी भेजा था, लेकिन जगत्सेठ ने वह रुपया नहीं दिया। [illegible] तो तुम्हारा पानी में नहीं गिरा जा रहा था! तुम अभी रुपया दो, फिर [illegible] मालखाने में जाकर हिसाब-किताब होगा तब तुम्हें भी आना [illegible]

असल रुपया ही नहीं मिलेगा, वल्कि उसके साथ सूद भी मिल जायेगा। तुम तो सूदखोर हो, इसलिए विश्वास कर रुपया नहीं दे सके।

"अरे रोक के! रोक के!"

अमीचंद का हुक्म पाकर पालकी चलते-चलते बीच रास्ते में रुक गयी।

"पालकी घुमा ले! जिधर से आ रहा था, उधर ही चल!"

"हुजूर, फिर मयदापुर चलेंगे?"

"हाँ!"

पालकी लौट पड़ी। फिर पालकी उसी रास्ते से चलने लगी, जिस रास्ते से आ रही थी। जैसी हुजूर की मर्जी होगी, वैसा ही तो करना पड़ेगा। कितने दिन हो गये कलकत्ते से चले हैं। रास्ते में कितने ही काम थे, कहीं दो-चार दिन रुकना भी पड़ा, लेकिन चलना जारी था। अमीचंद साहब की मर्जी किसी की समझ में नहीं आती थी। कब कहाँ जायेगा, कहाँ रुकेगा, पहले से वह यह सब किसी से बताता नहीं था।

खैर, पालकी के कहार लोग तो जानते नहीं थे कि खुद अमीचंद साहब भी नहीं जानता कि कहाँ रुकना पड़ेगा। अपने जीवन में कभी भी एक ओर लक्ष्य स्थिर कर अमीचंद के लिए चलना संभव नहीं हुआ था। उसकी निगाह बस रुपये पर थी। रुपये के लिए वह कभी बायें मुड़ा तो कभी दाहिने। कभी इस गुट में शामिल हुआ तो कभी उस गुट में। जितने दिन अलीवर्दी खाँ जिन्दा थे, उतने दिन उसने उसी को खुश रखा। नवाब को खुश रखकर उसने अपना काम हासिल किया था। लेकिन उसके बाद जो नवाब आया वह कुछ देना ही नहीं चाहता था। बात-बात में यह नवाब कहता कि रुपये नहीं हैं। जब तुम्हारे पास रुपये नहीं हैं तो मैं भी तुम्हारे साथ नहीं हूँ। जिनके पास रुपये हैं, मैं भी उन्हीं के साथ हूँ।

पालकी चलते-चलते कासिमबाजार के पास पहुँच गयी। वहाँ से फिर मयदापुर पहुँचते-पहुँचते भोर हो आया। लॉ साहब अगर आ ही गया तो पहले से उसका भी बंदोबस्त कर रखना होगा।

नवाब मिर्जा मुहम्मद ही लौट आये या क्लाइव साहब ही आये, अमीचंद का इससे कुछ आता-जाता नहीं। तुम दोनों में से जो भी जीतेगा, अमीचंद उसी के साथ होगा। तुम्हारे पास रुपये हैं तो कोई बात नहीं, मैं उधर निगाह उठाकर देखूँगा भी नहीं। अगर मेरे पास दिमाग है तो वह रुपया मेरे पास चला ही आयेगा। मेरा नाम अमीचंद है। एक दिन मैं कंगाली हालत में पंजाब से बंगाल आया था। उस दिन रोटी के लिए सड़कों पर घूमा लेकिन किसी ने एक रोटी भी नहीं दी। आज मेरे पास रुपये हैं, इसलिए मैंने कसम खा ली है कि चोरी करूँगा, डाका डालूँगा लेकिन भीख कभी न माँगूँगा। जीवन का सार मैंने समझ लिया है, भीख माँगने से चोरी करना बेहतर है।

अचानक कोई आवाज कानों में आयी। इतने सवेरे इतना शोरगुल कैसा? मयदापुर आ गया क्या?

पास पहुँचते ही सिपाहियों ने घेर लिया।

"हुजूर, आप आ गये ?"

सिपाही सब बहुत तड़के ही जाग गये थे। ऐसा भला कौन-सा काम आ पड़ा ?

"हाँ, एक जरूरी खबर है। साहब से भेंट करनी होगी।"

"इधर रास्ते में आपको कोई औरत दिखाई पड़ी ?"

"औरत ?"

सिपाहियों ने कहा, "हाँ, कर्नल साहब ने एक औरत जासूस को पकड़ा था, ड़ी भी खरीद दी थी, लेकिन वह अचानक भाग गयी है।"

"भाग गयी ?"

यह तो गजब हो गया। अभी खबर आयी कि नवाब आ रहा है और इसी नवाब की औरत जासूस भाग गयी।

"कैसे भाग गयी ?"

उधर से मुंशी नवकृष्ण आ पहुँचा।

"अरे, हुजूर, आप लौट आये ? इधर तो भयानक कांड हो गया है। एक जासूस साहब के कमरे से भाग गयी है।"

अमीचंद ने कहा, "चलो, कर्नल साहब के पास चलो। भागने दो उस जासूस ाहब को बहुत बड़ी खबर देनी है।"

●

महाराज कृष्णचन्द्र ने साथ में अच्छे आदमी दे दिये थे। घाट पर नाव लगते लोगों ने खाना पकाने का इंतजाम किया। उनके साथ लकड़ी और बर्तन वगैरह छ था।

ठीक तभी दूसरे बजरे में आये ताल्लुकेदार की बीवी और उसकी बाँदी वहाँ आ ।

बीवी ने कहा, "आप लोग खाना बना रही हैं ?"

दुर्गा ने कहा, "तुम लोग नहीं बना रही हो क्या ?"

"हम लोगों के पास बर्तन वगैरह नहीं हैं।"

"इतनी दूर का सफर कर रही हो और साथ में बर्तन वगैरह कुछ भी लेकर कलीं ? यह तुम लोगों की कैसी अक्ल है ? साथ में तुम्हारा कौन है ? शौहर ?"

शायद वह बीवी समझ गयी, बोली, "हाँ।"

"तुम्हारे मर्द की भी कैसी अक्ल है बिटिया, साथ में बर्तन वगैरह भी नहीं ले ।"

उस बीवी का शौहर उस समय पेड़ के नीचे तने से टेक लगाये चुपचाप बैठा था।

"अब खाओगी क्या ?"

बीवी बोली, "वही कहने तो आयी थी। हम लोगों के साथ तो कुछ भी नहीं है।"

"लेकिन हम लोग हिन्दू हैं, तुम लोगों का छूआ खा नहीं सकते। तुम ल
हमारा छूआ खाओगे ?"

"हाँ, खा सकते हैं। वैसे हम लोगों को अपनी फिक्र नहीं है, इस बच्ची
लिए ही सोचती हूँ।"

"लेकिन यहाँ आसपास में क्या तुम लोगों की जात का कोई नहीं है जो
लोगों के खाने-पीने का इंतजाम कर दे ?"

जरा दूर पर एक पेड़ की ओट में खड़े दो आदमी काफी देर से इसी ओर त
रहे थे।

उनमें से एक ने कहा, "मुझे तो यह आदमी कोई नवाबजादा जैसा लगता है

"कैसे ?"

"अरे, जरा-से दूध के लिए एक मोहर दे दी, इसके अलावा पैरों की जरीद
चप्पलें देख रहे हो ? नवाबजादा न हो तो ऐसी चप्पलें कौन पहनेगा ?"

जिस शख्स की चप्पलों के बारे में बात हो रही थी वह एक पेड़ के नीचे बै
खोयी-खोयी नजरों से आसमान की ओर ताक रहा था। या खुदा ! मैं आज तुमसे
माफी नहीं माँग सकता। लेकिन तुम इन लोगों पर रहम खाओ। इन लोगों ने क
कसूर नहीं किया। मेरे कसूर की सजा ये बेचारे क्यों भुगतें ?"

थोड़ी देर में दोनों टोलियों में घनिष्ठता हो गयी। रात रहते ही दोनों परिव
दो नावों से इस घाट में उतरे थे। फिर धीरे-धीरे सूरज निकला। फिर दोनों टोलि
के लोगों में अदमनीय कौतूहल जागा। इन लोगों ने सोचा, वे कौन हैं ? वे लोग सो
लगे, ये कौन हैं ? विपत्ति के समय मनुष्य अपने पड़ोसी से सहानुभूति चाहता है; कि
का सहारा चाहता है।

"तुमने सुना है बेटी; मुर्शिदाबाद का नवाब भाग गया है ?"

यह बात सुनते ही वह मुसलमान बहू चौंकी। उस जून के महीने के भोर
अगर बिजली गिरती तो भी शायद उस बहू के मुख का भाव ऐसा ही होता। उसने भ
से छोटी बच्ची को गोद में खींच लिया। जैसे उस इकलौती बेटी को किसी का अभिश
न लग जाय !

मुसलमान बहू ने कहा, "अच्छा, मैं उठती हूँ।"

दुर्गा ने कहा, "अरी माँ, जा क्यों रही हो ? बैठो न।"

दुर्गा ने किसी तरह नहीं छोड़ा। उसने जबर्दस्ती उस मुसलमान बहू को बै
लिया। थोड़ी दूर पर उस बहू का मर्द पेड़ के तने से टेक लगाये बैठा था। उस आद
को मानो किसी बात का ख्याल नहीं था। अल्लाह की विचित्र मर्जी को समझने
ताकत किसमें है ? एक दिन यही राजमहल, यही मुर्शिदाबाद, यही सूबा बंगाल, य
के सभी लोग नवाब को देखते ही कोर्निश करते थे। हिन्दू, मुसलमान, फिरंगी स
नवाब के सामने आने से डरते थे। आज उनके वे ही नवाब पेड़ के नीचे चुपचाप
हैं तो उनकी तरफ कोई नहीं भी देख रहा था, कोई भी उनके आगे कोर्निश नहीं

रहा है। कोई समझ ही नहीं पाया, कि उसके नवाब ने आज उसी को मर्जी से राह की धूल पर अपनी मसनद बिछायी है।

छोटी बहूरानी ने कहा, "ऐसे नवाब का मुँह झुलस देना ही ठीक है! ऐसा नवाब रहे तो क्या और मर जाये तो क्या?"

दुर्गा ने कहा, "अच्छा, तुम लोग भी तो पलाशपुर के ताल्लुकेदार हो, क्या नवाब ने तुम लोगों पर अत्याचार नहीं किया?"

इस बात का जवाब देने की इच्छा लुत्फुन्निसा को नहीं हुई। उस भोर में दोनों नावों के यात्रियों में थोड़ी घनिष्ठता हो गयी थी। एक साथ थोड़ी देर रहने पर ही लोग एक-दूसरे की खबर जानना-जतलाना चाहते हैं। तुम मुसलमान हो तो क्या हुआ? रहनेवाले तो इसी देश के हो! हमारे हतियागढ़ में भी कितने ही मुसलमान बसे हैं।

दुर्गा ने कहा, "हमारे छोटे सरकार को सभी राजा के समान मानते हैं। छोटे सरकार हतियागढ़ के राजा हैं, लेकिन उस मुँहजले नवाब के मारे क्या कोई आराम से रह सकता था? नवाबी गयी तो बड़ा अच्छा हुआ!"

दुर्गा की बात सुनते-सुनते न जाने क्यों लुत्फुन्निसा को डर लगने लगा। अगर ये जान जायें? अगर ये पहचान जायें? पहचान गये तो फिर लोग-बाग सभी जान-जायेंगे।

"तुम्हारा आदमी इस तरह चुपचाप क्यों बैठा है? उसे क्या हुआ है?"

लुत्फुन्निसा ने कहा, "उनका मिजाज ठीक नहीं है।"

"इतने दिन हम लोगों का भी मिजाज ठीक नहीं था। ये दिन भी कैसी मुसीबत में बीते। पता नहीं, कहाँ-कहाँ रहना पड़ा! राह-बाट जहाँ भी जगह मिल गयी वहीं रहे। इतनी तकलीफ दुश्मन को भी न उठाना पड़े।"

"क्यों? आप लोगों को क्या हुआ था?"

"वही जो कहा न, मुँहजला नवाब! उस नासपीटे की वजह से क्या मुल्क में कोई बहू-बेटी लेकर रह सकता था? मेरी छोटी बहूरानी पर नवाब की निगाह पड़ी थी। अब वह मुँहजला गया तो हमने चैन की साँस ली।"

लुत्फुन्निसा ने पूछा, "इस छोटी बहूरानी पर निगाह पड़ी थी?"

"अरे बेटी, क्या इस छोटी बहूरानी पर ही नवाब की निगाह पड़ी थी? कितनी ही बहू-बेटियों का सर्वनाश नवाब ने किया। अब तो बस नवाब के पाप का प्रायश्चित्त शुरू हुआ है। ऊपर भगवान भी तो है! उसकी निगाह से भला कौन बच सका है?"

"सच बताइए न क्या हुआ था? नवाब को आप इतनी गाली क्यों दे रही हैं?"

छोटी बहूरानी ने कहा, "तू चुप रह दुर्गा, जो हो गया उसे भूल जा, अब कहने से क्या फायदा?"

"क्यों न कहूँ? अब किससे डरना?"

लुत्फुन्निसा ने कहा, "नहीं-नहीं, आप कहिए न।"

जो आदमी अभी तक पेड़ के नीचे बैठा था अब उठ खड़ा हुआ।

दुर्गा ने उधर देखा तो कहा, "वह देखो, तुम्हारा आदमी कहीं जा रहा है ! शायद उसे भूख लगी है। शायद तुम लोगों ने सवेरे से कुछ खाया नहीं ?"

लुत्फुन्निसा ने मुड़कर देखा।

दुर्गा ने कहा, "पता नहीं, तुम लोगों की भी कैसी अक्ल है ! पीर की दरगाह जा रहे हो तो साथ में चावल-दाल कुछ भी नहीं लिया !"

दुर्गा वगैरह की रसोई पहले वनी। कृष्णनगर से लोग सब-कुछ साथ ले आये थे। इन लोगों की रसोई वन जाने पर लुत्फुन्निसा वगैरह की रसोई वनने लगी। शीरीना खिचड़ी वना रही थी। लुत्फुन्निसा जिन्दगी में कभी ऐसी मुसीवत में नहीं पड़ी थी। भूख क्या होती है, यह भी शायद वह कभी जान न पायी थी। खुले आसमान के नीचे इस तरह वैठकर खाने की वात भी उसने शायद कभी न सोची थी। चिलचिलाती धूप में लुत्फुन्निसा झटपट गयी, "सुनिए !"

मिर्जा मुहम्मद ने मुड़कर देखा।

"कहाँ जा रहे हैं ? शीरीना ने खिचड़ी वनायी है।"

"क्या ?"

इतनी देर वाद वास्तविक जगत् मिर्जा मुहम्मद की आँखों के आगे प्रकट हुआ।

"कहाँ जा रहे थे ? तुमने अभी कहा था न वड़ी तेज भूख लगी है।"

"अव मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा है। वच्ची कहाँ है ?"

"सो रही है। चलो, खा लो।"

"वे कौन हैं ? अव तक किनसे वातें कर रही थीं ?"

"हतियागढ़ की छोटी रानी हैं।"

हतियागढ़ ! यह नाम सुनते ही मरियम वेगम की याद पड़ गयी। मरियम वेगम साहवा क्या यहाँ आयी है ? मिर्जा मुहम्मद सिराजुद्दौला थोड़ी देर के लिए अनमने हो गये। चेहल-सुतून की वात याद आयी। मरियम वेगम को फिर एक बार देखने की इच्छा हुई। चेहल-सुतून छोड़कर आते समय भी उससे एक वार भेंट करने की चाह जागी थी।

"वे यहाँ क्या करने आयी हैं ?"

"वे हतियागढ़ लौट रही हैं।"

तो वेगम साहवा अपने पति के पास वापस जा रही हैं। अच्छा ही हुआ ! एक दिन जब अशांति और मानसिक यंत्रणा से नवाव छटपटा रहे थे, जब अनिद्रा और क्लांति से नवाव का शरीर-मन अवश हो चला था तो इसी मरियम वेगम ने रात-दिन नवाब के पास रहकर उन्हें सान्त्वना दी थी।

मिर्जा ने पूछा, "क्या वे जानती हैं कि मैं यहाँ हूँ ?"

"नहीं। यह मैं उनसे कैसे कहती ? मैंने कहा है, मैं पलाशपुर के ताल्लुकेदार की वीवी हूँ, अजीमावाद के फकीर की दरगाह में दुआ लेने जा रही हूँ।"

मिर्जा मुहम्मद ने पूछा, "खिचड़ी वन गयी ?"

"थोड़ी देर और लगेगी। अभी बन जाती है। मैं देखे आती हूँ।"

"रुको, मैं भी चलूँगा।"

"कहाँ?"

"उन लोगों से बातें करूँगा।"

लुत्फुन्निसा डर गयी। कहा, "नहीं, तुम मत जाओ। वे पहचान जायेंगे।"

"तुम क्यों डरती हो? मरियम बेगम अगर पहचान भी जाय तो डरने की बात नहीं है।"

"नहीं-नहीं, यह मरियम बेगम नहीं है। वह कोई दूसरी है। वह जो अधेड़ औरत है न, नवाब को गाली दे रही है। वह अपनी बहूरानी के साथ तुम्हारे डर से भागी-भागी फिर रही है। नवाब भाग गया सुनकर अब वे दोनों हतियागढ़ जा रही हैं। तुम वहाँ मत जाओ।"

इतना कहते-कहते लुत्फुन्निसा की आँखों में आँसू आ गये। कहा, "जानते हो, सभी तुम्हारे दुश्मन हैं। कोई भी तुम्हारा भला नहीं देख सकता।"

मिर्ज़ा मुहम्मद एक क्षण के लिए स्तब्ध खड़े रह गये! सभी मेरे दुश्मन हैं। सभी मेरा बुरा चाहते हैं! सभी मेरा अमंगल चाहते हैं। मुर्शिदाबाद से इतनी दूर आकर भी लोगों की दुश्मनी से बचना मुमकिन नहीं हो पाया है!

"तुम रोओ नहीं।"

लुत्फो की आँखों में आँसू देखकर मिर्ज़ा मुहम्मद ढाढ़स बँधाने आगे बढ़े।

"कोई भी आपका भला क्यों नहीं चाहता? हतियागढ़ की छोटी रानी का भी आपने क्या बुरा चाहा था? क्यों कोई भी आपके लिए एक भी अच्छी बात नहीं कहता?"

"यह सब मेरा नसीब है लुत्फो! यह सब सोचकर तुम दुःखी न होओ। इस समय अगर तुम इस तरह रोओगी तो हम सभी के लिए खतरा है। मेरे लिए खतरा है, तुम्हारे लिए भी और उस छोटी बच्ची के लिए भी। चुप हो जाओ! आँसू पोंछ लो।"

लुत्फुन्निसा कहने लगी, "आपसे मैंने कभी इस बारे में कुछ नहीं कहा, आज भी नहीं कहती लेकिन तुम्हारी निन्दा सुनकर मुझे बड़ी तकलीफ होती है।"

"यह भी तुम्हारा दुर्भाग्य है।"

मोरीना रसोई बना चुकी थी। खिचड़ी की हाँडी उसने पेड़ के नीचे लाकर रखी। दूर-दूर तक रेत चमक रही थी। कहीं कोई छाँह नहीं, कहीं कोई आड़ नहीं। एक खिदमतगार भी साथ में नहीं था, एक पाईक या बरकंदाज भी नहीं। कोई पंखा झलने भी नहीं आया। पास में कोई ठंडे पानी की सुराही लेकर भी हाज़िर नहीं हुआ। मुर्ग-मुसल्लम की खुशबू से भी हवा भर नहीं गयी। सिर्फ दाल-चावल से बनी खिचड़ी थी। उसी के सामने नवाब बैठा। बगल में लुत्फुन्निसा बैठी।

"तुम भी मेरे साथ खाने क्यों नहीं बैठ जातीं?"

"पहले आप खा लीजिए, मैं बाद में खाऊँगी।"

अचानक दूर से कोई आवाज आयी। बहुत दूर से। मिर्जा मुहम्मद ने उ तरफ देखा। लुत्फुन्निसा ने भी देखा। बहुत दूर धूल उड़ रही थी। लगा, कुछ लो घोड़ा भगाते हुए आ रहे हैं।

नवाब ने अभी तक खिचड़ी को छूआ तक नहीं था।

"कौन लोग आ रहे हैं? फौज के सिपाही हैं क्या?"

लुत्फुन्निसा ने बुरके में अपना चेहरा छिपा लिया। मिर्जा मुहम्मद कुछ देर उध ही देखते रहे। फिर क्या जनरल लॉ आ रहा है? अजीमाबाद के खजांचीखाने से रुप तो भेज दिये गये थे। शायद इतने दिनों बाद साहब को रुपये मिले हैं। इसलिए वह फौ लेकर मुर्शिदाबाद की तरफ आ रहा है। तुम भी अच्छे आदमी हो साहब! इत देर क्यों कर दी तुमने? मैं तो तुम्हारे ही भरोसे ढाका-जहाँगीराबाद की तरफ न जाक अजीमाबाद की तरफ जा रहा था। मैं जानता था, तुम इसी रास्ते आओगे। लेकि इतनी देर क्यों कर दी? क्या तुम अंग्रेजों को नहीं जानते? अंग्रेज तुम लोगों के हमेश के दुश्मन हैं! तुम्हीं लोगों ने कहा था, हम अंग्रेजों से लड़ेंगे। लेकिन इतनी देर भ कभी की जाती है?

"क्या हुआ! आप उठ क्यों गये!"

मिर्जा मुहम्मद ने कहा, "जनरल लॉ आ रहा है, इस समय क्या मैं खाना ख सकता हूँ लुत्फो! अब एकदम मुर्शिदाबाद चलकर ही खाना खाऊँगा। फिर एक दि न भी खाया तो क्या होगा!"

घोड़ों की टापों की आवाज से दुर्गा और छोटी बहूरानी भी डर गयी थीं। अ यहाँ किसकी फौज आन पहुँची! नाव के मल्लाह लोग खाने बैठे थे। फौज आने क आवाज सुनकर वे भी अचंभे में पड़ उधर ही देखने लगे।



मयदापुर में मराली ने एक रात बितायी थी। छावनी में जब सभी सो रहे तब मराली बैठे-बैठे सोच रही थी। बाहर रात की खामोश अँधियारी थी। हतियाग में ऐसी ही वह खामोश रात थी जब वह छोटे सरकार की हवेली में जाग रही थी सीढ़ी के नीचे उस छोटी-सी कोठरी में बैठी वह उस दिन न जाने क्या-क्या सोच थी। आधी रात के समय दुर्गा एक बार दरवाजा खोलकर देखने आयी थी।

फिर कितने ही दिन बीत गये। कितने ही विचित्र लोगों के बीच मराली के दिन बीते। कैसा तो अद्भुत था वह समाज और कैसा विचित्र था वह परिवेश! क हतियागढ़ से वह चेहल-सुतून में आयी, फिर चेहल-सुतून से पेरिन साहब के बगीचे गयी, फिर वहाँ से हलसीबगान और फिर मोतीझील। फिर मोतीझील से वाप मयदापुर में फिरंगियों की इस छावनी में वह आ गयी।

शाम को क्लाइव साहब फिर आया था।

"कोई खबर मिली?"

क्लाइव ने कहा, "हाँ, तुम्हारी बात सही है। चेहल-सुतून में एक और मरियम बेगम है।"

"आपने क्या सोचा था कि मैं झूठ कह रही हूँ।"

"लेकिन दो मरियम बेगम कैसे हो गयीं? वह कौन है और तुम कौन हो?"

मराली ने कहा, "मैं ही असली मरियम बेगम हूँ।"

"और वह?"

"वह मेरी जान-पहचान का आदमी है।"

"जान-पहचान के माने?"

"वह मेरा अपना कोई नहीं है। लेकिन अपने जन से भी बढ़कर है।"

"साफ-साफ बताओ। तुम दोनों के नाम एक क्यों हैं?"

"उसका नाम भी मरियम बेगम नहीं है और मेरा नाम भी मरियम बेगम नहीं है।"

"देखता हूँ, तुम मुझे फिर बेवकूफ बना रही हो। सच बताओ, तुम कौन हो? तुम्हारा असली नाम क्या है?"

"मेरा असली नाम बताने पर तो बहुत सारी बातें कहनी पड़ेंगी साहब! उतनी बातें सुनने की फुर्सत क्या आपको है? मैं क्यों नवाब के चेहल-सुतून में आयी और क्यों वहाँ से भागी और क्यों मेरे बदले में एक और को मरियम बेगम बनकर चेहल-सुतून में रहना पड़ा, यह सब बताने लगूँ तो रात पूरी हो जायेगी। आपको भी शायद वे सब बातें अच्छी नहीं लगेंगी। आप बस मेरा एक उपकार कीजिए कि मुर्शिदाबाद जाने पर उस मरियम बेगम को चेहल-सुतून से छुड़ा दीजिएगा।"

क्लाइव ने पूछा, "मैं मुर्शिदाबाद जाऊँगा, यह तुम्हें कैसे मालूम हुआ?"

"आप मुर्शिदाबाद नहीं जायेंगे तो इतना सब-कुछ कर क्यों रहे हैं?"

"फिर तुम्हें भी मालूम हो गया है कि नवाब भाग गया है।"

"अंत में नवाब भागेंगे, यह मैं जानती थी। कोई भी नवाब का भला नहीं चाहता था, कोई भी नवाब को प्यार नहीं करता था। नवाब की सगी माँ और मौसी तक नवाब का सर्वनाश चाहती थीं।"

"और तुम?"

"मैं कह तो रही हूँ कि मेरी बात अलग है।"

"तुम्हारी बात क्यों अलग है?"

"चेहल-सुतून में आये बिना दूसरा चारा नहीं था। फिर चेहल-सुतून में रहे बिना मैं रहती भी कहाँ?"

"फिर क्यों उस दिन तुमने मेरे दफ्तर से चिट्ठी चुरायी थी?"

"इसलिए चुरायी थी कि मैं बचना चाहती थी। मैंने देखा, नवाब के सभी दुश्मन हैं। फिर सोचा, नवाब का बुरा होगा तो चेहल-सुतून का भी बुरा होगा। फिर

हल-सुतून का बुरा होगा तो मैं खुद कहाँ रहूँगी ? लेकिन अंत मे मैं कामयाब न हो की। मैं चेहल-सुतून को बचा न सकी।"

"लेकिन अब तुम कहाँ जाओगी ?"

"हतियागढ़।"

"वहाँ कौन है ?"

मराली ने कहा, "मेरे पिता जी हैं। पता नहीं अब तक पिता जी जिन्द... हैं या नहीं। लेकिन पिता जी के अलावा, इस दुनिया में मेरा कोई नहीं है, और किसी के पास भी मैं जा नहीं सकती।"

क्लाइव ने जरा सोच लिया। फिर पूछा, "तुम हिन्दू हो ?"

"पहले हिन्दू थी, अब मुसलमान हो गयी हूँ।"

"तुम्हारे हिन्दू पिता तुम्हें अपने घर रहने देंगे ?"

"नहीं रहने देंगे तो फिर निकल पड़ूँगी, कहीं न कहीं तो जगह मिलेगी ही।"

क्लाइव ने कहा, "सच कह रही हो न ? तुम पर विश्वास करने में भी ... लगता है।"

"आज ही तो आपने मेरी बात की परख की है, क्या अब भी विश्वास ... होता ?"

"ठीक है, तुम्हारे पिता जी के पास खबर भिजवा दूँगा, क्या नाम है उनक..."

"शोभाराम विश्वास।"

"और तुम्हारा ?"

"मराली बाला दासी।"

नाम सुनते ही क्लाइव उछल पड़ा था।

"झूठ ! मराली बाला दासी कभी तुम्हारा नाम नहीं है। मराली बा... को मैं जानता हूँ। वह पेरिन साहब के बगीचे में मेरे पास थी। एक और ... उसके साथ थी जिसे मैं दीदी कहता था वे बड़ी अच्छी हैं। उनका मकान भी ... में है। मराली बाला की शादी एक पोएट के साथ हुई थी। वह पोएट ... गाना गाता है। वह वर्ल्ड-सिटीजन है। तुम सब कुछ झूठ बोल रही हो ... हो ! तुम लायर हो !"

मराली ने कहा, "नहीं साहब, मैं झूठ नहीं बोल रही हूँ। ... बोलीं थीं।"

"क्या वे लेडीज झूठ बोली थीं ? उन्होंने खुद सब कुछ कहा है ... रही हो वे झूठ बोली थीं।"

मराली मुस्करायी। बोली, "साहब, आप कुछ भी नहीं जान... खोलकर कहूँगी तो आप समझ सकेंगे। आपके सामने कोई भी झू... लेकिन झूठ न बोलने पर हम सबका सर्वनाश होता, इसीलिए म... झूठ बोले।"

"लेकिन वह पोएट ? उसके साथ किसकी शादी हुई थी ? तुम्हारी या उस लेडी की ?"

"मेरी।"

"तुम्हारी शादी हुई थी उस पोएट से ?

मराली ने कहा, "साहब, आप इस देश में नये आये हैं, इसलिए आप कुछ भी नहीं जानते। आप और कुछ दिन रहेंगे तो सब जान जायेंगे। इस देश में औरत का जन्म लेना पाप है ! खूबसूरत होना तो और भी बड़ा पाप है !"

क्लाइव ने कहा, "मैं कुछ नहीं समझ पा रहा हूँ।"

"आप समझ भी नहीं पायेंगे। आप अगर इस देश में औरत होकर जन्म लेते तो शायद समझते।"

"नहीं-नहीं, मैं समझ सकूँगा। मैंने इतने किले जीते, फ्रेंच लोगों को हराया, नवाब को हराया और तुम्हारी बातें नहीं समझ पाऊँगा ?"

यहीं तक बातें हुई थीं कि उसी समय किसी ने बाहर से साहब को बुलाया था। साहब बाहर चला गया था। उसके साथ बात कर साहब जब लौट आया तो उसके चेहरे का भाव दूसरी ही तरह का था। अब तक जो आदमी मराली से बात कर रहा था मानो वह यह नहीं था। मराली को लगा बाहर फौज खड़ी है और साहब अभी लड़ने चला जायेगा।

क्लाइव ने कहा, "अभी मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा। नवाब फिर आर्मी लेकर मुर्शिदाबाद आ रहा है। मुझे अभी खबर मिली है।"

"फिर मैं क्या करूँगी ?"

क्लाइव ने कहा, "इस समय मैं किसी को यह जानने देना नहीं चाहता कि तुम यहाँ हो। मैं तुम्हें यहाँ से कहीं दूर भेज दूँगा।"

"कहाँ ?"

"कलकत्ते—दमदम हाउस में। तुम्हें कोई डर नहीं है। मेरे आदमियों के साथ तुम चली जाओ। मैं अभी मुर्शिदाबाद पर अटैक करूँगा। फिर कलकत्ते लौटकर मैं मैं तुमसे बातें करूँगा। तब तक तुम वहाँ अकेली रहोगी।"

"यहाँ अगर कोई मेरे बारे में पूछे तो आप क्या कहेंगे ?"

"कहूँगा, तुम नवाब की स्पाई थीं और कैद से भाग गयी हो। तुम तैयार रहना। हम भोर होने से पहले रवाना होंगे। उससे पहले ही मैं तुम्हें अपने आदमियों के साथ भेज दूँगा।"

फिर आधी रात के समय क्लाइव ने मराली को आवाज दी। साहब के साथ कोई नहीं था। कितनी रात थी, कोई नहीं जानता था। बस मनसापुर के आकाश के कई तारे भर दीख रहे थे। साहब की छावनी के पास एक नाव तैयार थी। उसमें दो मल्लाह तैयार थे। छावनी के और लोग जब लड़ाई में जाने की तैयारी में लगे थे उसी समय मराली घूँघट में चेहरा छिपाये नाव में जा बैठी।

दमदम की जो विशाल इमारत क्लाइव ने बनवायी थी, उस समय वह पूरी नहीं हुई थी। उस समय वहाँ एक छोटा-सा मकान था। बेगम मेरी विश्वास को जिन्होंने देखा था उन लोगों ने यह मकान भी देखा था। एक दिन वहीं भोर के आस-पास मराली की पालकी आकर रुकी थी। किसी को पता नहीं चला था, किसी को मालूम न हो सका था कि कहाँ से कौन आया था।

लेकिन यह काफी बाद की बात थी।

मराली को बस याद है कि उसके आते समय क्लाइव साहब ने कहा था, "चेहल-सुतून से तुम्हारी मरियम बेगम को मैं छुड़ाऊँगा। तुम्हें घबड़ाने की जरूरत नहीं है।"

फिर नाव चल दी थी।

●

उस दिन मुर्शिदाबाद में क्या हुआ था, इस बारे में भी उद्धवदास ने विस्तार से लिखा था। पूरे मुर्शिदाबाद में उस दिन एक ही चर्चा थी—नवाब आ गया! नवाब आ गया!

लेकिन कौन जानता था कि नवाब का यहाँ आना इतना मर्मान्तक होगा।

घुड़सवारों के नजदीक आते ही नवाब चौंक उठा, "फौजदार मीर दाऊद!"

"जी हाँ, मैं ही हूँ।"

मीर दाऊद की आँखों का भाव देखकर मिर्जा मुहम्मद पहले उतना नहीं समझ पाया था। लेकिन साथ में जब मीर कासिम को भी देखा तो उसका शक पक्का हो गया।

नवाब ने कहा, "मीर कासिम, तुम भी?"

"हाँ, मैं हूँ।"

आसपास सभी की तरफ देख लेने के बाद फिर भूल होने की कोई गुंजाइश नहीं थी। लुत्फुन्निसा ने बुरके में गहने की पेटी को जोर से पकड़ लिया था। जिस आदमी ने फौजदार को खबर दी थी वह उस समय सबके पीछे छिपकर खड़ा था। उसी ने जरीदार चप्पलें देखी थीं। उसी ने नवाब को दूध खरीदते समय अशर्फी देते देखा था। अब उसका शक ठीक निकला तो वही सबसे ज्यादा खुश था। उस आदमी का चेहरा दाढ़ी-मूँछों से भरा था। दाढ़ी-मूँछों में से उसके सफेद दाँत झाँक रहे थे। वह हँसे ही जा रहा था।

उस आदमी की निगाह सामने जाते ही वह अचानक चिल्लाया, "भाग! भाग यहाँ से!"

एक कुत्ता इसी मौके पर खिचड़ी चाट-चाटकर खाने लगा था।

"भाग! भाग! भाग!"

मीर कासिम साहब की नजर हर तरफ थी। अपने आदमियों से उसने तब तक

फिर साहब के विस्तर के पास जाकर उसने बुलाया, "साहब ! साहब !"

एक-दो बार बुलाते ही साहब की नींद टूट गयी थी। फिर मराली को सामने देखकर साहब को बड़ा आश्चर्य हुआ था।

"आपको क्या हो गया था ? आप चिल्ला क्यों रहे थे ?"

उस दिन क्लाइव मानो शर्माकर सिमट गया था। वह हड़बड़ाकर उठ बैठा था। मद्रास, चन्दननगर और बंगाल जीतने के बाद अब अपनी कमजोरी पकड़े जाने की लज्जा उसे सताने लगी थी। कहा था, "कुछ तो नहीं !"

इतना कहकर क्लाइव उठकर ठीक से विस्तर पर बैठने लगा था।

मराली ने कहा, "नहीं-नहीं, उठने की जरूरत नहीं है। आप लेटे रहिए। मैं जा रही हूँ।"

लेकिन जाना चाहकर भी मराली साहब के कमरे से जा नहीं पायी। साहब को सचमुच कोई बीमारी है तो उसे अकेले कमरे में छोड़ जाना क्या ठीक होगा ? मराली ने यही सोचा था।

"आपके नौकर को बुला दूँ ?"

क्लाइव ने कहा, "नहीं। वह सो रहा है। उसे सोने दो।"

"आपकी तबीयत खराब है क्या ?"

क्लाइव ने कहा था, "नहीं। तुम जाओ। मुझे कुछ नहीं हुआ है।"

"नहीं हुआ ? आपका चेहरा देखकर ही लग रहा है आपकी तबीयत ठीक नहीं है। देखूँ। बुखार तो नहीं है ?"

इतना कहकर मराली ने क्लाइव के माथे पर हाथ रखा।

क्लाइव ने कहा, "बुखार नहीं है। बल्कि तुम मुझे वह दवा दे दो। नींद की दवा है। उसी की एक खुराक दे दो।"

कमरे के कोने में दवा की शीशी रखी थी। उसी के पास एक गिलास भी था। मराली ने ऐसी दवा पहले नहीं देखी थी। विलायती दवा। दवा देते समय मराली ने सोचा था, आश्चर्य ! इस फिरंगी साहब को भी नींद नहीं आती। दूर से देखने पर लगता है यह शख्स कितना निष्ठुर होगा ! लोग इसके नाम से भी डरते हैं। मुर्शिदाबाद के नवाब भी तो ऐसे ही बदनाम थे। लेकिन उसी नवाब को मराली ने कितनी बार सुलाया था।

"एक खुराक से ज्यादा मत देना। वह जहर है।"

"जहर !"

यह शब्द सुनते ही मराली चौंक पड़ी थी। साहब को क्या वह जहर देगी ?

"एक खुराक पीने से वह जहर नहीं है, लेकिन उससे ज्यादा पीने पर फिर कभी नींद नहीं टूटेगी। हमारे डाक्टर ने होशियार कर दिया है।"

मराली ने दवा की शीशी रख दी। कहा, "फिर रहने दीजिए।"

"क्यों क्या हुआ ? दवा नहीं दोगी ?"

मराली बोली, "आप मेरे हाथ से यह खतरनाक दवा पी लेंगे ?"

"पीऊँगा क्यों नहीं ?"

"अगर कहीं मैं ज्यादा दे दूँ ?"

क्लाइव हो-हो कर हँसने लगा। कहा, "यह जानना चाहती हो कि तुम्हारे हाथ से जहर खाने में मुझे डर लग रहा है या नहीं ? नहीं, मैं डर नहीं रहा हूँ। अगर डरता तो तुमसे वह दवा देने को नहीं कहता।"

"लेकिन मैं आपको जहर भी तो दे सकती हूँ ! मैं नवाब की बेगम हूँ, नवाब आपके दुश्मन हैं। मुझ पर इतना विश्वास करना ठीक नहीं है।"

क्लाइव ने कहा, "नहीं। मुझे ऐसा कोई डर नहीं है। दो, दवा निकालकर दो।"

"नहीं। एक बार अच्छी तरह सोच लीजिए। आपके नौकर को बुला दूँ ?"

"अगर उसे बुलाना होता तो मैं पहले ही बुला लेता, तुमसे नहीं कहता। फिर मैंने इतने देश जीते हैं, क्या मैं अब भी आदमी नहीं पहचानता ?"

मराली तब भी चुपचाप खड़ी थी। वह क्या करे, समझ नहीं पा रही थी। एक दिन मुर्शिदाबाद के नवाब ने भी उस पर ऐसे ही विश्वास किया था। फिर यह साहब भी उस पर उसी तरह विश्वास कर रहा है। फिर क्या दोनों ही एक जैसे हैं ? क्या दोनों में कोई फर्क नहीं है ?

मराली ने पूछा, "आपको नींद क्यों नहीं आती ?"

क्लाइव ने कहा, "नींद मुझे आती है, लेकिन मैं सपना देखने लगता हूँ।"

"सपना तो सभी देखते हैं।"

"वैसा सपना नहीं। सपने में मुझे लगता है, कोई मेरे कमरे में घुस आता है। फिर वह मुझे एक ताश दिखाता है। क्वीन ऑफ स्पेड्स। हुकुम की बीबी। वही ताश दिखाकर वह मुझे होशियार कर देता है। आज भी वही आया था।"

"कौन आया था ? वह कौन है ?"

"क्या मालूम ? वह अपना नाम सबसेस बताता है।"

मराली ने उसी दिन पहले-पहल साहब के रोग के बारे में जाना था। यह भी एक अद्भुत रोग था। इतनी ख्याति, इतनी प्रतिष्ठा, इतना प्रभाव और इतनी क्षमता होना भी शायद अच्छा नहीं होता। किस दूर देश से छः रुपये की नौकरी करने वह इस देश में आया था। फिर वह फिरंगी कंपनी में चोटी का आदमी बन गया। यह भी क्या कोई रोग है ?

क्लाइव ने उस रात मराली के सामने सारी बातें कह डाली थीं। लोग जानते थे, क्लाइव फोर्ट सेण्ट डेविड का कमांडर है। लोग जानते थे, क्लाइव चन्दननगर का कॉन्क्वरर है लेकिन, क्लाइव ने कहा, मैं यहाँ मरने आया था। मैंने दो बार मरना भी चाहा था। लेकिन देखा मरना ही सबसे मुश्किल काम है। मेरी पत्नी है, मेरे बाल-बच्चे हैं, माँ-बाप हैं, फिर भी लगता है यह सारा संसार ही पराया है, मेरा अपना कोई नहीं है।

इन बातों को सुनते हुए मराली उस दिन विस्मित हो गयी थी। मयदापुर की फिरंगियों की छावनी में क्लाइव साहब का एक और ही रूप देखकर मराली आश्चर्य में पड़ गयी थी। कितनी ही तरह के लोग इस संसार में हैं और कितनी ही तरह के लोग उसने देखे थे! हतियागढ़ से शुरू करके चेहल-सुतून होते हुए मयदापुर तक मानो विभिन्न प्रकार के लोगों का जुलूस चल रहा था। कोई नवाब था, कोई अमीर था, कोई वख्शी था, कोई खिदमतगार था, कोई बेगम थी और कोई बाँदी थी। उन सबके बाहरी रूप अलग-अलग होते हुए भी वे अंदर ही अंदर एक समान थे। सभी मानो एकाकार होकर अखंड रूप से मराली के जीवन में आविर्भूत हुए थे।

उस रात बस वहीं तक मराली से क्लाइव की बातें हो पायी थीं। उसके बाद मराली अपने कमरे में सोने चली आयी थी। लेकिन नींद क्या आसानी से आती? फिर आश्चर्य की बात यह रही कि थोड़ी देर बाद साहब भी उसके कमरे में आकर उसे बुलाने लगा था। कहा था, "तुम्हें कलकत्ते जाना होगा।"

कहा जाय तो उसी समय से मराली का नाम मेरी पड़ गया था। न जाने कैसे मराली उस रात फिरंगी साहब का असली परिचय पा गयी थी।

साहब ने कहा था, "मैं यहाँ सभी से कह दूँगा कि तुम भाग गयी हो।"

मराली ने पूछा था, "मैं भाग गयी हूँ कहने से आपको क्या फायदा होगा?"

"हाँ, फायदा होगा। मैंने तुम्हें यहाँ अपने कैम्प में रखा है, यह यहाँ के लोग पसंद नहीं कर रहे हैं। फिर तुमसे मुझे बहुत सारी बातें भी करनी हैं, इसलिए तुम्हें कहीं दूर भेजने को भी मन नहीं करता!"

मराली ने पूछा था, "कैसी बातें करनी हैं?"

"यह सब कलकत्ते आकर ही कहूँगा।"

"फिर भी सुनूँ तो, आप क्या जानना चाहेंगे?"

"यही जानना चाहूँगा कि तुम दोनों के नाम एक क्यों हैं? फिर पोएट से होने के बाद भी तुम चेहल-सुतून में कैसे पहुँच गयीं? अगर तुम्हारा ही नाम मराली वाला दासी है तो वह मराली बाला दासी कौन थी? इंडिया में आने के बाद इंडिया की स्त्रियों को देखकर मुझे आश्चर्य ही होता है। यह कैसा विचित्र देश है तुम लोगों का!"

उस समय और ज्यादा बातें करने का समय नहीं था। साहब ने एक क्षण खामोश रहकर कहा था, "मुर्शिदाबाद से लौटकर मैं तुम्हें तुम्हारे पिता जी के पास पहुँचा दूँगा।"

चारों तरफ अँधेरा था। नदी का जल झिलमिला रहा था। नाव में मराली चुपचाप बैठी थी। साहब ने सारा इन्तजाम कर दिया था। किसी तरह की असुविधा होने की बात नहीं थी। मराली जब नाव पर बैठने लगी थी उस समय साहब ने पानी

के पास आकर कहा था, "चेहल-सुतून की बात मुझे याद है। तुम मत घबड़ाना।"

एक माँझी ने कहा था, "बेगम साहबा, आप सो जाइए। नाव पहुँचने पर हम आपको जगा देंगे।"

मराली मन ही मन हँसी थी। ये मल्लाह भी मुझे मरियम बेगम के नाम से जानते हैं। साहब ने शायद इन लोगों को मेरा यही परिचय दिया है। ठीक ही किया है साहब ने। नित नये नाम और नये परिचय से लोग मुझे जानें। कुछ लोग मुझे मरियम बेगम के नाम से ही पहचानें। अगर और ज्यादा दिन मैं जिन्दा रही तो मेरे न जाने और भी कितने नाम होंगे!

●

मीर दाऊद राजमहल का फौजदार था। वह मीर जाफर अली का भाई भी था। उसी का हुक्म मीर कासिम बजा लाता था। फौजदार की फौज का वह अफसर था। फिर मीर दाऊद के बड़े भाई का वह दामाद भी था। रिश्ता दूर का नहीं था।

लेकिन फौजदार होकर भी मीर दाऊद को आराम नहीं था। मीर जाफर साहब पर नवाब नाराज थे। इसलिए मीर जाफर के सभी रिश्तेदारों पर नवाब नाखुश थे।

राजमहल की हवेली में बैठे-बैठे मीर दाऊद अफसोस करता था और मीर कासिम सुनता था।

मीर दाऊद कहता, "खुदाताला की दुनिया में असली चीज की कोई कद्र नहीं है।"

मीर कासिम कहता, "आपने बड़ी सच्ची बात कही है जनाब!"

ससुर-दामाद का यह अफसोस खुदाताला के कानों तक पहुँचता था या नहीं किसे मालूम? दुनिया के सभी लोगों का रोना ही वे सुन लें तो खुदाताला कैसे? हजारों लोगों की हजारों आरजूएँ और हजारों फरियादें! सभी अगर सुनना पड़े तो खुदाताला बने रहना भी एक जहमत का काम हो जाएगा।

लेकिन यह भी देखा गया है कि कभी-कभी कोई विनती खुदाताला के कानों तक पहुँच भी जाती है।

उस समय चारों तरफ नवाब को ढूँढने के लिए आदमी दौड़े तो मीर दाऊद साहब के पास भी खबर गयी। लेकिन उस समय किसे मालूम था कि नवाब किस रास्ते से कहाँ भागे हैं। रास्ते तो एक-दो नहीं थे। मुर्शिदाबाद से भगवानगोला तक सड़क थी। वहाँ से पद्मा नदी के रास्ते जहाँगीराबाद पहुँचा जा सकता था। अगर नवाब भागे ही हैं तो इधर क्यों आयेंगे? विशेषकर राजमहल की तरफ, जहाँ मीर जाफर का भाई फौजदार है और मीर बख्शी है मीर जाफर का दामाद। खुदाताला क्या इतने मेहरबान होंगे? फिर भी कोशिश तो करनी ही पड़ेगी। कोशिश होती रही। लेकिन नवाब नहीं मिले।

आखिर एक दिन दोपहर को खबर आयी। जबर्दस्त खबर! ज

वह फकीर था। राजमहल के घाट के पास एक मसजिद में वह रहता था।

उसी आदमी ने आकर कहा, "हजूर, मुझे शक हो रहा है कि वही नवाब है।"

•

मीर दाऊद ने पूछा, "तुमने यह कैसे सोच लिया कि वह आदमी नवाब है ?"

"हजूर, उसके पैरों में जरीदार जूतियाँ थीं।"

"जरीदार जूतियाँ तो कोई भी रईस या सौदागर पहन सकता है।"

"लेकिन हजूर, जरा-से दूध के लिए उसने पूरी एक मोहर दे दी !"

"यह भी कोई बड़ी बात नहीं है। जरूरतमंद होने पर कोई भी रईस मोहर दे सकता है।"

इस पर मीर कासिम ने ही कहा था, "हजूर, एक बार चलकर देख लेने में क्या हर्ज है ? हो सकता है अल्लाह मियाँ की नेक नजर हम पर पड़ ही गयी हो।"

तो शुरुआत यहीं से हुई। जरा-सी गफलत होते ही हाथ आयी चिड़िया निकल जाती। खबर जब मुर्शिदाबाद की मंसूरगंज हवेली में पहुँची तो वहाँ भी सब हैरान रह गये। कहाँ तो खबर आयी थी कि नवाब जनरल लॉ के साथ आ रहा है और कहाँ यह, ठीक उससे उलटी खबर।

उधर मोहनलाल की हवेली में भी मीर जाफर के सिपाही जा पहुँचे थे। मोहनलाल लक्काबाग से वापस आने के बाद हवेली में ही था। किसी से मिलना-जुलना या कहीं भी आना-जाना उसने एकदम बंद कर दिया था। नवाब के आने की खबर उसे भी मिल चुकी थी।

मीर जाफर के सिपाहियों ने उसकी हवेली पर जाकर पूछा, "महाराज कहाँ हैं ?"

पहरेदार ने कहा, "महाराज नहीं हैं।"

"हैं कैसे नहीं ?"

कहकर सिपाही जबर्दस्ती हवेली में घुस गये। हवेली का चप्पा-चप्पा उन लोगों ने छान मारा लेकिन मोहनलाल का कोई पता नहीं लगा। तब क्या मोहनलाल भी भाग गया ?

मीर जाफर के आदमी मोहनलाल को ढूँढ़ने मुर्शिदाबाद के बाहर दौड़े। वह जायेगा भी तो कहाँ जायेगा ? बंगाल छोड़ कर जहाँ कहीं भी वह जायेगा वहीं विश्वासघाती लोग घात लगाये बैठे मिलेंगे। दुनिया में कहीं विश्वासघाती लोगों की कमी नहीं है। इतिहास में कभी ऐसा समय नहीं रहा जब बेईमान लोग न रहे हों।

मीरन का आदमी तब तक चेहल-सुतून में पहुँच गया था। पीर अली खाँ को उसने हुक्म दिया। नजर मुहम्मद और बरकत अली पर भी हुक्म जारी हो गया। सभी बेगमों को नजरबन्द करना होगा।

"मरियम बेगम साहबा ! मरियम बेगम साहबा !"

कान्त को झपकी-सी आ गयी थी। इन कई दिनों में वह महल से एक बार भी बाहर न निकला था। मेंहदी निसार जब से उसे मोतीझील से यहाँ लाया था, तब से उसने इसी कमरे में बैठे-बैठे सारा समय बिता दिया था। रात में भी वह सो नहीं सका था। बाहर निकलने का उपाय था नहीं इसलिए वह अँधेरे कमरे में बैठकर मन-प्राण से भगवान से प्रार्थना करता रहा कि मराली और भी दूर चली जाय। उसने बार-बार भगवान से यही प्रार्थना की। जितने भी देवताओं के नाम उसे मालूम थे सभी से उसने रो-रोकर प्रार्थना की। मन ही मन कहा—हे भगवन् ! तुम्हीं मराली की रक्षा करना ! वह निरापद रहे। वह इस पाप के प्रभाव से दूर रहे। वह सुखी हो। उसे शांति मिले।

"मरियम बेगम साहबा ! मरियम बेगम साहबा !"

झन-झन ! साँकल खोलने की आवाज हुई।

कान्त ने पूछा, "कौन है ?"

"मैं नजर मुहम्मद हूँ बेगम साहबा ! आप मेरे साथ आइए। मीरन साहब का हुक्म है।"

"कहाँ ?"

नजर मुहम्मद ने कहा, "मीरन साहब ने हुक्म दिया है कि सभी बेगम साहबाओं को गिरफ्तार कर मोतीझील में रखना होगा। नानी बेगम साहबा, घसीटी बेगम साहबा, अमीना बेगम साहबा और पयमाना बेगम साहबा, सभी को गिरफ्तार कर नजरबन्द रखना होगा।"

"क्यों ?"

नजर मुहम्मद ने कहा, "मोहनलाल जी मुर्शिदाबाद छोड़कर भाग गये हैं न। उधर नवाब की फौज मुर्शिदाबाद पर हमला करने आ रही है।"

और ज्यादा बातें न हो सकीं। कान्त बुरके में था। उसी हालत में उसे महल से बाहर आना पड़ा। अँधेरे में पालकियाँ खड़ी थीं। एक-दो नहीं, एक साथ बहुत-सी पालकियाँ थीं। दोनों तरफ कोतवाल के सिपाही खड़े थे। कान्त एक पालकी में जाकर बैठा और उसके दरवाजे बंद हो गये। फिर पालकी हिलती-डोलती बाहर चलने लगी। नानी बेगम साहबा की पालकी, घसीटी बेगम साहबा की पालकी, तक्की बेगम, बब्बू बेगम, पेशमन बेगम और मरियम बेगम की पालकियाँ। चेहल-सुतून के फाटक से निकलकर पालकियाँ सड़क पर आयीं, फिर मोतीझील की तरफ चलने लगीं।

●

अमीचंद को देखकर क्लाइव का चेहरा लाल हो उठा। लेकिन अपने पर काबू रखते हुए उसने कहा, "आप ?"

"जी, आपने कुछ सुना है ?"

"यही न कि नवाब फौज लेकर मुर्शिदाबाद पर हमला करने आ रहा है।"

"इसके अलावा मोहनलाल और जनरल लाँ भी साथ हैं।"

क्लाइव ने कहा, "यह कहकर क्या आप मुझे डराना चाहते हैं ?"

अमीचंद ने कहा, "च्च्, यह मैं कैसे सोच सकता हूँ ? डर और आप ! इसके अलावा आपकी जीत में तो मेरा ही फायदा है। तीस लाख रुपये मिलने की बात कैसे मैं भूल सकता हूँ ?"

"और कुछ कहना है ? मेरे पास वक्त नहीं है, फौरन मुर्शिदाबाद जाना है।"

"सुना है, आपने किसी औरत जासूस को गिरफ्तार किया था, क्या वह भाग गयी है ?"

"हाँ।"

"गजब हो गया ! अब तो बड़ी मुश्किल हुई। क्या फिर कुछ कागजात चुराकर भागी है ? औरतों के लिए आपकी इस कमजोरी के कारण ही ऐसा हुआ है।"

तब तक सिपाही मैदान में आकर खड़े हो गये थे। वे एकदम तैयार खड़े थे। बिगुल भी बज उठा। मुंशी नवकृष्ण पीछे खड़ा था। उसने कहा, "मेरी तनख्वाह के बारे में एक बार कहिए न अमीचंद जी !"

क्लाइव अपने खेमे में जा रहा था। उसे खड़े होने की फुर्सत नहीं थी।

अमीचंद ने कहा, "मैं भी आपके साथ चलूँ ?"

"क्या करेंगे जाकर ?"

"वाह मिस्टर क्लाइव, नवाब का खजाना खोलते वक्त वहाँ मेरा होना जरूरी नहीं है क्या ?"

"ठीक है, चलिए।"

नवकृष्ण इसी अवसर की प्रतीक्षा में था। उसने पूछा, "मैं भी चलूँ हुजूर ?"

अमीचंद ने बिगड़कर कहा, "तुम किस काम से जाओगे ? तुम्हें तो बस थोड़े रुपये लेने हैं। मुझे तो लाखों रुपये का हिसाब-किताब करना होगा।"

क्लाइव ने कहा, "मेरा मुंशी भी मेरे साथ चलेगा।"

क्लाइव के और कुछ कहने से पहले ही एक घुड़सवार दौड़ता हुआ आया। उसने घोड़े से उतरकर क्लाइव को कोर्निश की। फिर उसने साहब की तरफ एक खत बढ़ाया। साहब ने खत ले लिया। खत फारसी में लिखा था। साहब ने खत मुंशी को दिया।

नवकृष्ण खत पढ़ने लगा। खत मीर जाफर साहब का था।

पढ़ते-पढ़ते मुंशी का चेहरा जैसे खुशी से खिल उठा।

उसने कहा, "हजूर, नवाब पकड़ा गया है।"

"कहाँ, ह्वेयर ?"

"राजमहल में। नवाब के साथ चेहल-सुतून की तीन बेगमें भी गिरफ्तार कर ली गयी हैं। उधर भगवानगोला के पास मोहनलाल भी गिरफ्तार कर लिया गया है।"

उसे दुर्लभराम जी के यहाँ क़ैद कर रखा गया है।"

"और क्या लिखा है?"

"लिखा है कि चेहल-सुतून की सारी बेगमों को मोतीझील में क़ैद कर रखा गया है।"

"सभी बेगमों को?"

"हाँ हुज़ूर, सभी को।"

"मरियम बेगम को भी?"

"जी हाँ, हुज़ूर! सभी बेगमें मोतीझील में क़ैद हैं। वे सब आपको भेंट की जायेंगी।"

रॉबर्ट क्लाइव ने एक बार अपने ही मन में अपने उत्तरदायित्व के बारे में सोच लिया। बस, अपना ही उत्तरदायित्व नहीं, सभी के उत्तरदायित्व के बारे में उसने सोच लिया। फ़ौज का उत्तरदायित्व और कंपनी का उत्तरदायित्व। एक दिन अपनी तनख्वाह में एक रुपया बढ़ा सकने से जो शख़्स अपने को भाग्यवान समझता था, उसकी प्रतिष्ठा और ख्याति बढ़ने के साथ-साथ सभी का उत्तरदायित्व उस पर आ पड़ा। अब केवल अपने उत्तरदायित्व के बारे में सोचने से ही नहीं चलता। कंपनी के प्रॉफ़िट और लॉस के बारे में भी उसे सोचना पड़ता है। साथ ही साथ आर्मी के इतने सिपाहियों की सेफ़्टी के बारे में भी सोचना पड़ता है। यहाँ तक कि मुंशी नवकृष्ण के बारे में भी सोचना पड़ता है। और अमीचंद?

अमीचंद पर निगाह पड़ते ही घृणा से क्लाइव का चेहरा सिकुड़ गया।

"ऑलराइट। मुर्शिदाबाद चलिए।"

फिर मीर जाफ़र साहब तो वहाँ है ही। उसने ज़रूर सब इंतज़ाम कर रखा है। उसने कहला भेजा था, कोई डर नहीं है। आप यहाँ आयेंगे तो सभी आपको वेलकम करेंगे, आपके वेलकम में शंख बजायेंगे। देखेंगे, नवाब गिरफ़्तार हुआ है सुनकर लोग कितने ख़ुश हैं। बस, नवाब ही नहीं, नवाब का जिगरी दोस्त महाराज मोहनलाल भी पकड़ा गया है।

मेजर किलपैट्रिक सामने खड़ा था। उसने भी सब सुना है।

अमीचंद यह ख़बर सुनकर उछल पड़ा था। उसने कहा, "मैंने कहा था न साहब, कि मैं आप लोगों को हेल्प करूँगा। मैंने अपना वादा पूरा किया है।"

किलपैट्रिक ने कहा, "नवाब के मालख़ाने से माल मिलेगा तभी सबके शेयर हम देंगे।"

अमीचन्द ने कहा, "देखियेगा साहब, आप लोगों को करोड़ों की दौलत मिलेगी।"

"करोड़ मिले या लाख। आपका शेयर आपको ज़रूर मिलेगा।"

"मेरे हिस्से में केवल बीस लाख रुपये हैं।"

यह सुनते ही क्लाइव की आँखों से आग की लपट निकली थी। उसने र

हा था, इस स्काउण्ड्रेल को नहीं मालूम कि हम यहाँ पौंड-शिलिंग-पेन्स कमाने
, चैरिटी करने नहीं। हम वनिये हैं। जरूरत पड़ी तो हम इनवेस्ट करेंगे और
पड़ने पर घाटा भी सहेंगे और जव जरूरत पड़ेगी तव मुनाफा भी कमायेंगे।
पड़ेगी तो हम दुश्मनों से भी दोस्ती करेंगे। क्या सोचा है इसने ? क्या हम इस
मच्छर-दलदलों से भरे मुल्क में मरने, सिर्फ इन वदमाशों को मुनाफे का हिस्सा
आये हैं ?

"ठीक है। आपके साथ तो मेरा कॉनट्रैक्ट हो गया है।"

अमीचन्द ने कहा, "यह तो है ही, फिर भी साहव, एक वार आपको याद दिला
कहीं आप भूल न जायें।"

जिस समय फौज मुर्शिदावाद की तरफ चलने लगी उस समय क्लाइव को
द की वातें ही वरावर याद आने लगीं। मयदापुर की छावनी से कंपनी फौज
ही थी तो दूर-दूर से गाँवों के लोग आकर दोनों किनारे खड़े होकर फौज देखने
। वे लोग डर से, खुशी से और अचंभे से उस फौज को देख रहे थे। उन्हें मानो
स ही नहीं हो रहा था। क्या ये ही फिरंगी हैं ? क्या ये ही साहव हैं जो सात
पार वंगाल में व्यापार करने आये थे ? इनकी शक्ल-सूरत भी कैसी है ? लाल-
चेहरा ! कासिम वाजार कोठी के आस-पास जो लोग रहते थे उन्होंने पहले भी
देखे थे। मोम से मुलायम और आलता जैसे लाल-लाल चेहरे। मेमें देखने में
भी खूवसूरत ! भूरी आँखें। वड़ी-वड़ी आँखें। ऐसा लगता था मानो आँखों की
याँ आँखों के दरिया में वह रही हों। पहले लोग फिरंगियों की तरफ डरे हुए
थे। कहीं पकड़ ले जायें ! छू न लें !

हाथी की पीठ पर वैठा क्लाइव सव कुछ देख रहा था। पास ही किलपैट्रिक
रहा था। पीछे-पीछे मुंशी नवकृष्ण पैदल चल रहा था। फौज के आगे कुछ तोपें
रही थीं। लक्कावाग की लड़ाई में नवाव की फौजें ही ये तोपें छोड़कर भागी थीं।

कासिमवाजार कोठी के पास आकर देखा गया, कोठी वीरान पड़ी थी। क्लाइव
ओर देखने लगा। यहीं से नवाव के साथ झगड़े की शुरुआत हुई थी। क्लाइव को
क लगा जैसे आज वह सवका भाग्य-विधाता है, हर किसी की निगाहें उसी की
लगी हैं।

लेकिन मुर्शिदावाद के पास आने पर मालूम हुआ कि अपार जन-समूह उ
त करने के लिए उमड़ आया था। हजारों की भीड़ जमा थी। शंखध्वनि और
ास से वातावरण गूंज उठा था।

क्लाइव ने मेजर किलपैट्रिक की ओर देखा। किलपैट्रिक ने भी क्लाइव की ओर
।

तभी दूर से मीर जाफर आता दिखाई दिया। उसके पीछे उसका लड़का मीरन
और कई घुड़सवार थे भी।

क्लाइव ने मुड़कर कहा, "मुंशी !"

मुंशी नवकृष्ण ने फौरन आगे बढ़कर कहा, "हुजूर !"

"ये लोग इस तरह की आवाजें क्यों कर रहे हैं ?"

मुंशी कुछ कहने ही जा रहा था कि मीर जाफ़र साहब सामने आ गया और ...इव ने मानो चैन की सांस ली। इन्हीं लोगों ने नवाब को भगाया है, लेकिन अंत ... क्लाइव से कोई बात साफ़-साफ़ नहीं की। क्लाइव मन ही मन अपनी तारीफ़ करते ...ा। आदमी की पहचान में उसने गलती नहीं की थी। यार लुत्फ़ खां, दुर्लभराम ...र मीर जाफ़र में से मीर जाफ़र को चुनने में उसने क़तई गलती नहीं की थी। मीर ...फ़र क्लाइव के सामने दांत निकालकर हंस रहा था। क्लाइव ने अपने मन में सोचा, ...ना बड़ा ट्रेटर ! इतना बड़ा नमकहराम ! इतने बड़े स्काउंड्रेल पर क्या मैं विश्वास ...रूंगा ? जिस शख्स ने अपने रिश्तेदारों तक से नमकहरामी की वह मेरे साथ भी ...कहरामी नहीं करेगा, क्या यह मैं नहीं समझता ?

"सलाम अलैकुम कर्नल क्लाइव !"

"गुड मार्निङ्ग जनरल !"

पास खड़े मुंशी ने भी मौका देखकर कहा, "वालेकुम अस्सलाम, मीर जाफ़र ...हब !"

मीर जाफ़र ने मुड़कर मुंशी की ओर देखा।

"मुझे आप पहचान नहीं पा रहे हैं ? मैं कर्नल साहब का मुंशी हूं। आपके ...त का तर्जुमा करके साहब को मैं ही सुनाता था।"

क्लाइव ने पूछा, "यहां की क्या खबर है मीर जाफ़र ?"

"सब ठीक है कर्नल।"

"नवाब कहां है ?"

"राजमहल का फौजदार मीर दाऊद और मेरा दामाद उसे मुर्शिदाबाद ला ...हैं।"

"और, वह जनरल मोहनलाल ?"

"उसे भी गिरफ़्तार कर लिया गया है। वह राय दुर्लभ की हवेली में कैद है।"

तभी मेजर किलपैट्रिक ने पूछा, "और मुर्शिदाबाद सिटी ? यहां कोई गड़बड़ नहीं हुई ?"

"जी नहीं मेजर साहब, कोई गड़बड़ी नहीं हुई। सभी बड़े खुश हैं। देख नहीं ...हैं, कितनी भीड़ जमा हुई है ?"

"लेकिन वे आवाजें क्यों कर रहे हैं ? ह्वाट डू दे मीन ?"

"जी, यह काफ़िर लोगों की मंगलध्वनि है। खुशी के मौकों पर वे लोग ऐसा करते हैं, शंख बजाते हैं। आपके आने से वे लोग बहुत खुश हैं।"

कर्नल क्लाइव ने मुंशी की ओर देखा। मुंशी नवकृष्ण ने भी अपनी चोटी हिलाते ...कहा, "हां हुजूर, मीर जाफ़र साहब ठीक ही कह रहे हैं। मैं भी तो काफ़िर हूं, ...शी के मौके पर हम लोग ऐसा ही करते हैं।"

फिर उसके बाद ? उसके बाद क्लाइव जब मुर्शिदाबाद में आया तो वहाँ एक और ही दृश्य उपस्थित हो गया। शोर उठा—फिरंगी आये ! फिरंगी आये ! चौक बाजार से महिमापुर तक सड़क के दोनों किनारे भीड़ खड़ी थी। क्लाइव ने चारों तरफ देखा। लंदन की ही तरह मुर्शिदाबाद लम्बा-चौड़ा शहर था। लंदन की ही तरह इस शहर के भी मकान बड़े-बड़े थे और सड़कें लम्बी-चौड़ी थीं। लंदन की ही तरह यह शहर भी नदी किनारे बसा था।

अपनी ही कीर्ति मानों क्लाइव को अविश्वसनीय लग रही थी। क्या सचमुच क्लाइव अपनी फौज लेकर मुर्शिदाबाद में आ पहुँचा है ? चारों तरफ इतने लोग क्या उसी को देखने जुटे हैं ? क्या उसी के लिए ये शंख बजाये जा रहे हैं ? क्या उसी के लिए यह हर्षध्वनि की जा रही है ?

लेकिन ये सभी लोग अगर एक-एक ढेला भी क्लाइव की तरफ फेंक दें, तब क्या होगा ? उसके साथ तो बस तीन सौ देशी और दो सौ अंग्रेज सिपाही हैं। कुल पाँच सौ सोलजर्स ही उसके पास हैं।

चेहल-सुतून के नजदीक आते ही शहनाई की आवाज सुनाई दी।

"मुंशी, यह क्या है ?"

"हजूर, आप आये हैं न, इसीलिए शहनाई बज रही है। आपको वेलकम किया जा रहा है।"

इंसाफ मियाँ आज जय-जयवन्ती राग अलाप रहा था। मीर जाफर साहब का हुक्म था कि क्लाइव साहब के आते ही शहनाई बजनी शुरू हो जाय।

छोटे शागिर्द की मर्जी नहीं थी। उसने कहा था, "नहीं उस्ताद, कुछ और बजाओ, जय-जयवन्ती नहीं, यह मीर जाफर अपना कौन होता है ?"

इंसाफ मियाँ को यह बात अच्छी नहीं लगी थी। काफी दिनों से वह दुनियादारी देखता आ रहा था। इस नवाब के नाना बड़े नवाब को भी उसने देखा था। वह समझ चुका था कि इसी का नाम दुनियादारी है। इसी तरह दुनिया चलती है और इसी तरह चलती रहेगी। एक उठता है तो दूसरा गिरता है। यह सब लेकर अपना दिमाग नहीं खराब करना चाहिए, सोच-विचार भी नहीं करना चाहिए। आज जो नवाब है वही कल खिदमतगार भी हो सकता है।

इंसाफ मियाँ ने कहा, "अरे, जो भी मसनद पर बैठेगा वही नवाब कहलाएगा। हम तो नौकर ठहरे, हमें बस हुक्म बजा लाना है। ले, तबला सँभाल !"

फिर इंसाफ मियाँ ने हमेशा की तरह जय-जयवन्ती राग बजाना शुरू कर दिया। नवाब सिराजुद्दौला जब पूर्णिया से शौकत जंग को मारकर लौटे थे, उस समय भी उसने जय-जयवन्ती राग बजाया था। सरफराज खाँ को मारकर अलीवर्दी खाँ जब मुर्शिदाबाद की मसनद पर बैठा था उस समय भी इंसाफ मियाँ ने इसी तरह जय-जयवन्ती राग बजाया था। छोटा शागिर्द तो बच्चा ठहरा। अभी उसने दुनियादारी देखी ही नहीं थी सीखना तो दूर की चीज थी।

"ले, तबला सँभाल !"

फिरंगी पल्टन आगे बढ़ रही थी। चौक में शराफ़त अली की दुकान आते ही अचानक क्लाइव की नजर पड़ी।

"मुंशी !"

"हुज़ूर !"

"वह पोएट आ रहा है न, उसे बुला लाओ।"

"पोएट ?"

मुंशी नवकृष्ण की समझ में नहीं आ रहा था—हुज़ूर किसकी बात कर रहे हैं ? पोएट ? कवि ?

"अरे वही तो पोएट जा रहा है। जिसके सर पर बड़े-बड़े बाल हैं।"

उद्धवदास भीड़ में से अपनी ही धुन में गुनगुनाकर गाता हुआ जा रहा था। साहब ने उसे ठीक देख लिया था। लेकिन उद्धवदास को किसी तरफ़ का ख्याल नहीं था। एक बार हतियागढ़, एक बार कृष्णनगर और एक बार मुर्शिदाबाद। ऐसे ही उसके दिन कटते थे। इस बार मुल्लाहाटी से चलते समय न जाने क्या ख्याल आया और वह मुर्शिदाबाद की तरफ़ चल पड़ा। लेकिन मुर्शिदाबाद में क्यों इतनी उथल-पुथल मची थी, यह उसे मालूम नहीं था।

अचानक पीछे से किसी के हाथ पकड़ने पर उसने मुड़कर देखा। कहा, "कौन ?"

"तुम कवि हो क्या ?"

उद्धवदास अवाक् हो गया। कहा, "तुम कौन हो प्रभु, तुम्हें तो मैं पहचान ही नहीं पा रहा हूँ ?"

"साहब तुम्हें बुला रहे हैं।"

"कौन साहब ?"

सुनकर मुंशी को बड़ा अजीब लगा। क्लाइव साहब को भी यह नहीं पहचानता ?

तभी क्लाइव को देखकर उद्धवदास चौंक उठा। कहा, "पेरिन साहब का बगीचा छोड़कर तुम्हारा साहब यहाँ आया है ? तुम साहब के कौन होते हो प्रभु ? सर पर इतनी बड़ी चुटिया क्यों रखी है ?"

"अरे मैं क्लाइव साहब का मुंशी हूँ।"

"मैं भी हरि का मुंशी हूँ प्रभु, परन्तु मेरे सर पर तो चुटिया नहीं है।"

नवकृष्ण को उद्धवदास की बात बड़ी अजीब लगी। लेकिन उसने सिर्फ़ इतना ही कहा, "साहब तुमसे मिलना चाहते हैं, चलो !"

उद्धवदास भीड़ में से रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ रहा था। नौबत-मंजिल में तब जय-जयवन्ती के स्वर मन्द्र और मध्य से तार सप्तक में जा पहुँचे थे।

●

जो तरुणी एक दिन अठारहवीं सदी के काव्य की नायिका होनेवाली थी, उद्धव-

...स जिसको लेकर महाकाव्य लिखने वाला था। वह उस समय नाव में गहरी नींद सो ...ही थी। मयदापुर की फिरंगी छावनी से नाव में बैठने के बाद वह कुछ देर तक बाहर ...ंधेरे में एकटक देखती रही थी, फिर जब मल्लाहों ने उसे आराम से सो जाने को कहा, ...ो वह सो गयी थी।

इस बार माँझी बूढ़े नहीं, जवान थे। एक ने कहा था, "बेगम साहबा, आप ...ो जाइए! ठीक समय पर हम आपको जगा देंगे।"

कलकत्ता कहाँ था? जब वह हतियागढ़ में रहती थी उस समय उसने कलकत्ते ...ा नाम भर सुना था। उस समय कलकत्ता देखने के लिए उसके मन में आग्रह भी जगा ...ा। उसके बाद इस तरह कलकत्ता ही नहीं, सारा बंगाल मुल्क ही वह देख लेगी, यह ...स समय उसकी कल्पना के भी परे था।

सोने से पहले मराली एक बार मन ही मन हँसी थी। ये मल्लाह भी मुझे ...रियम बेगम के नाम से जानते हैं। क्लाइव साहब ने इनको मेरा यही नाम बताया ...। ठीक है बताये, रोज नये-नये परिचय से लोग मुझे पहचानें। कोई मुझे रानो बीबी ...े नाम से जाने तो कोई नवाब की जासूस के रूप में, तो कोई मराली के नाम से और ...ोई मरियम बेगम के नाम से। अगर जिन्दा रही तो मेरे और भी कितने नाम पड़ेंगे ...या पता?

अचानक किसी के जगाने से मराली की नींद टूट गयी।

"कौन?"

"बेगम साहबा, मैं हूँ गुलाम मुल्ला, साहब का मल्लाह।"

नाव अचानक बड़े जोर से डगमगाने लगी। इसके साथ कितने ही लोगों का ...ुल्ला सुनाई देने लगा।

मराली ने दरवाजा खोला तो हवा का एक तेज झोंका आकर उसके बदन पर ...गा। आँधी जैसी तेज हवा बह रही थी।

"बेगम साहबा, गजब हो गया है! मीर दाऊद साहब ने हमारी नाव पर ...मला कर दिया है।"

"मीर दाऊद कौन?"

"जी, राजमहल के फौजदार हैं! नवाब, उनकी सारी बेगमें और बाँदियाँ ...ाजमहल में ही कैद हैं। साथ में मीर कासिम साहब भी हैं। वे लोग मुर्शिदाबाद जा ...हे हैं।"

"वह हमसे क्या चाहता है?"

गुलाम मुल्ला ने कहा, "मुझसे पूछा, नाव में कौन है तो मैंने बताया कि मरियम ...गम साहबा हैं, तब आपको बुलाने के लिए कहा।"

"तुमने यह क्यों नहीं कहा कि हम लोग कर्नल क्लाइव के आदमी हैं।"

"कहा था, लेकिन उसने सुना ही नहीं, देखिए न, सारी नाव में सिपाही भरे हैं।"

मराली ने देखा, वाकई सिपाहियों ने नाव को किनारे लगवा लिया था।

"वह कौन खड़ा है ?"

"वही तो राजमहल के फ़ौजदार साहब हैं।"

"और उसके पास शायद मीर कासिम है ?"

गुलाम मुल्ला ने कहा, "जी हाँ।"

मराली ने कहा, "ठीक है, तुम कह दो मैं जरा तैयार हो लूँ।"

मनुष्य के जीवन में कभी-कभी एक समय ऐसा आता है, जिसे संधिक्षण कहा जा सकता है। वही संधिक्षण उसके जीवन-मृत्यु-उन्नति-अवनति-अभ्युदय-पराभव आदि सब कुछ को उलट-पुलटकर उसके लिए जीवन को दूसरा ही अर्थ दे जाता है। उस दिन आधी रात को मराली को भी ऐसा ही लगा था। मराली के जीवन में शायद वही महा संधिक्षण था। ठीक से सोचने का मौका भी उसे किसी ने नहीं दिया। बस, एक क्षण। उसी एक क्षण में उसे सोच लेना था कि उसे क्या करना है ? वह अगर गंगा में कूद पड़ती तो अतल में खो जाती। और नहीं तो मीर दाऊद और मीर कासिम के हाथों पकड़ी जाती। दोनों ही रास्ते उसके लिए खुले हुए थे।

लेकिन मराली ने उस दिन मरना नहीं चाहा। अगर वह मरना चाहती तो वह रास्ता भी उसके सामने खुला था। लेकिन मरना ही था तो वह पहले क्यों नहीं मरी ? जिस दिन उसके हतियागढ़ के मकान में उसकी शादी उद्धवदास से हुई, उस दिन भी तो वह मर सकती थी ? फिर चेहल-सुतून में शराफ़त अली का अर्क पीकर भी तो वह मर सकती थी ? इसलिए क्षण भर में ही उसने निश्चय कर लिया कि मैं जीऊँगी।

और उसी दिन मराली ने बचनेवाला रास्ता अपना लिया था, तभी तो उद्धवदास 'बेगम मेरी विश्वास' नामक महाकाव्य लिख पाया।

उद्धवदास ने पूछा, "फिर ?"

फिर मैंने निश्चय कर लिया कि मुझे जीवित रहना है। मुझे जीवन देखना है। जो जीवन चेहल-सुतून में आने के बाद भी खत्म नहीं हुआ, वह देखना है कहाँ तक आगे बढ़ता है ?

एक दिन बंगाल के एक घर में एक लड़की पति का घर बसाने और संतान को जन्म देने के लिए पैदा हुई थी। लेकिन उसने अपनी कोशिश से एक साम्राज्य का पतन अपनी आँखों से देख लिया। उसने एक नये साम्राज्य का उत्थान भी देखा। इस उत्थान-पतन की साक्षी होकर, दर्शक बनकर वह मानो उस उत्थान-पतन के केन्द्र में जा खड़ी हुई।

मीर दाऊद सफ़ीउल्लाह का खून होने की बात जानता था। मरियम बेगम के लिए नवाब की कमजोरी की बात भी वह जानता था। मेंहदी निसार से वह अनेक बार इसके बारे में सुन चुका था। इसलिए मल्लाहों से जब उसे मालूम हुआ कि नाव में मरियम बेगम है तो उसने उनकी हजार मिन्नत-विनतियों पर भी ध्यान नहीं दिया।

मीर कासिम ने कहा, "इसे भी ले चलिए जनाब !"

सच में इस औरत ने बड़ा गजब ढाया था। वह जरूर जानती थी कि नवाब भाग गये हैं और इसीलिए वह खुद चेहल-सुतून से भागी थी।

गुलाम मुल्ला ने कहा, "हुजूर, हम क्लाइव साहब के आदमी हैं। क्लाइव साहब ने ही हमें बेगम साहबा को कलकत्ते के दमदम बगानबाड़ी में पहुँचाने का हुक्म दिया है।"

मीर कासिम ने उसे डांट दिया, "तू फिर झूठ बोल रहा है !"

एक दूसरी नाव में मिर्जा मुहम्मद पत्थर-से जड़वत् बैठे भाग्य के परिहास के बारे में सोच रहे थे। क्या यही मसनद है? इसी मसनद के लिए लोगों ने मुझे इतने दिनों तक कोर्निश की और आज इसी मसनद के लिए इतने लोगों की दुर्दशा हो रही है! अल्लाहताला, तुमने मुझे बहुत कुछ दिया था और बहुत कुछ देकर सब कुछ छीन भी लिया। तुम्हारे देने को मैंने जैसे कोई मर्यादा नहीं दी, वैसे ही आज तुमने सब कुछ छीन लिया तो मैं तुम्हें दोष नहीं दूँगा। तुमने मुझे सुख नहीं दिया इसलिए मैंने अनेक बार शिकायत की लेकिन आज जब चरम दुर्दशा दी है तो क्या मेरी शिकायत तुम सुनोगे? एक दिन मैंने तुम्हारे अस्तित्व को अस्वीकार किया था, इसलिए आज मुझे उस अपराध के लिए क्षमा करना। फिर जब मैंने कुरान पढ़ा तब मुझे भले ही सुख न मिला लेकिन तसल्ली तो मिली थी। मसनद पाकर भी मुझे जो कुछ नहीं मिला वह कुरान पढ़कर मिला था। लेकिन तुमने शांति दी तो मसनद क्यों छीन ली? फिर मसनद छीन ली तो मुझे इस तरह मसनद के नीचे धूल पर क्यों ला पटका? यह किस पाप के प्रायश्चित्त का विधान है कि मसनद पाने पर ही किसी को अपमान की नरक-यंत्रणा भी सहनी पड़ेगी? अगर मेरा वही अपराध है तो मैं उसकी सजा को हँसते हुए सह लूँगा। अगर यह मेरी मसनद का पाप है तो इतिहास के और किस नवाब ने इस तरह प्रायश्चित्त किया है?

राजमहल से दोनों नावें जब रवाना हुईं तो दिन डूब चुका था, रात भी पूरी हो चली थी कि अचानक एक जगह आकर नाव मानो टकरा गयी।

मीर दाऊद ने एक बार सलाम तक नहीं किया था। न करे। मसनद के साथ ही मैंने कोर्निश पाने का अधिकार भी खो दिया है, यह मैं जानता हूँ। फिर भी एक दिन पहले तक मैं बंगाल का नवाब था। क्या इसी तरह रातों रात सारा गौरव मिट जाता है?

"तुम लोग मुझे कहाँ ले जा रहे हो मीर दाऊद?"

मीर दाऊद ने भारी आवाज में कहा, "मुर्शिदाबाद !"

"मुर्शिदाबाद ले जाकर क्या करोगे? मुझे क़ैद करके रखोगे? हवालात में बंद करोगे? कत्ल करोगे?"

मीर दाऊद ने इस बात का कोई जवाब नहीं दिया। नवाब ने एक बार मीर कासिम की तरफ भी देखा।

"अच्छा मीर कासिम, अगर मैं तुम लोगों को रुपया दूँ तो क्या तुम लोग मुझे छोड़ दोगे ?"

इसके बाद मीर दाऊद और मीर कासिम अन्दर नहीं आये। दरवाजे में ताला लगाकर वे बाहर चले गये। नवाब कहीं भाग न जाय, नाव से गंगा में कूदकर कहीं गायब न हो जाय, इसीलिए यह इंतजाम था। क्या तुम लोग यही चाहते हो कि मैं तुम लोगों के पैर पकड़कर माफी माँगूं ? आज जो तुम राजमहल के फौजदार बने हो, यह नौकरी भी तो मैंने ही तुम्हें दी थी। मैं अगर अपनी मुहर न लगाता तो क्या तुम्हें यह नौकरी मिलती ? तुम लोगों के पैर पकड़कर मैं कैसे माफी माँग सकता हूँ मीर दाऊद ? मेरा भी तो सम्मान और अभिमान है। तुम लोगों ने बेईमानी करके भले ही मुझे लड़ाई में हराया हो लेकिन बंगाल का नवाब तो मैं आज भी हूँ। अब भी मुर्शिदाबाद में मेरी मसनद है।

लुत्फुन्निसा एक कोने में चुपचाप बैठी थी। उसने शुरू से ही एक शब्द भी नहीं कहा था। मीर कासिम ने जब उसके हाथ से गहनों की पेटी छीन ली तो वह चिल्लायी तक नहीं।

"जानती हो, उन लोगों ने मेरी बात तक नहीं सुनी ?"

मिर्जा मुहम्मद ने फिर कहा, "तुम कुछ कहती क्यों नहीं ?"

मानो लुत्फुन्निसा कुछ कहेगी तो नवाब का दुःख दूर हो जायेगा। लेकिन लुत्फुन्निसा तो कुछ भी नहीं कह रही थी, उसने पहले ही कब क्या कहा था ? नवाब ने ही कब उससे कुछ कहने के लिए इतना कहा था ? उन दिनों नवाब को क्या लुत्फुन्निसा की याद थी ? उन दिनों तो नवाब ने कभी लुत्फुन्निसा की खबर तक नहीं ली थी !

मिर्जा मुहम्मद ने ही फिर पूछा, "हतियागढ़ की रानी बीबी क्या हमारे साथ हैं ?"

लुत्फुन्निसा ने छोटा-सा जवाब दिया, "हाँ।"

"कहाँ हैं ? बगल वाली नाव में ?"

"लुत्फुन्निसा ने फिर उसी तरह जवाब दिया, "हाँ।"

"क्या तुमने मुझसे न बोलना ही तय कर लिया है ?"

लुत्फुन्निसा ने कहा, "क्या बोलूँ ?"

"क्या कुछ भी कहने को तुम्हारा मन नहीं करता ? बातें करने के लिए मेरा मन छटपटा रहा है। कुछ भी तो कहो, नहीं तो मुझे ऐसा लग रहा है मानो मेरा कोई नहीं है।"

लुत्फुन्निसा ने फिर भी कुछ नहीं कहा। वह उसी तरह चुप बैठी रही।

मिर्जा कहने लगे, "जानती हो लुत्फो, अब देख रहा हूँ कि मेरा कोई नहीं है। इतने दिन जिन लोगों ने मेरे आगे कोर्निश की, जिन लोगों ने मुझसे तनख्वाह ली, आज देखता हूँ वे सभी मेरे पराये हो गये हैं। इस समय अगर मैं गला फाड़कर भी चिल्लाऊँ तो कोई जवाब न देगा। ऐसा भी होगा, मैंने कभी सोचा तक नहीं था लुत्फो !"

उसी समय अचानक बाहर से मीर दाऊद की आवाज आयी। मीर कासिम भी

किसी से चिल्लाकर बातें कर रहा था।

उधर मराली उस समय तक तैयार हो चुकी थी। मीर दाऊद सामने खड़ा था। उसके पास ही था मीर कासिम। मीर कासिम जरा आगे बढ़ गया। वह शायद देखना चाहता था कि बेगम साहबा के पास गहने की पेटी है या नहीं?

"क्या आप ही मरियम बेगम साहबा हैं?"

मराली ने कहा, "हाँ।"

"चेहल-सुतून छोड़कर आप कहाँ जा रही हैं?"

मराली ने कहा, "मैं चेहल-सुतून से नहीं, क्लाइव साहब की मयदापुर की छावनी से आ रही हूँ।"

मीर दाऊद ने मीर कासिम की ओर देखा। याने बेगम साहबा झूठ कह रही हैं। क्लाइव साहब को जैसे और कोई काम ही नहीं है, वह भला मरियम बेगम को नाव से क्यों भेजने लगा?

"आपके साथ क्या है?"

"कुछ भी नहीं।"

"लोगों को शक होगा, क्या इसीलिए कुछ साथ नहीं लायीं?"

मराली ने कहा, "मेरे पास कुछ था ही नहीं।"

"लेकिन बेगम साहबा, आपने सोचा था कि पोशाक बदल लेने से ही कोई पहचान नहीं पायेगा और आप बड़ी आसानी से लोगों की आँखों में धूल झोंककर निकल जायेंगी।"

मराली ने उस बात का कोई जवाब न देकर कहा, "आप लोग क्या मुझे गिरफ्तार करना चाहते हैं?"

मीर कासिम ने कहा, "जब हमने नवाब को ही गिरफ्तार किया है तो उनकी बेगम साहबा को कैसे छोड़ सकते हैं? आपको हमारे साथ चलना होगा।"

"आप लोग मुझे कहाँ ले जायेंगे?"

"मुर्शिदाबाद।"

"लेकिन इसके लिए आप लोगों को क्लाइव साहब के आगे जवाबदेही करनी पड़ेगी, यह कहे देती हूँ।"

"वह मीर जाफर अली साहब कर लेंगे।"

"लेकिन अगर मैं न जाऊँ तो?"

मीर दाऊद के हाथ की तलवार पर जल से प्रतिफलित होकर रोशनी पड़ी और मराली चमक उठी।

"चलिए, जहाँ भी आप लोग ले जाना चाहें, मैं चल रही हूँ।"

●

बगल की नाव में दुर्गा और छोटी बहूरानी चुपचाप बैठी सब सुन रही थीं। रात

भर वे भी सो नहीं सकी थीं। पिछले दिन दोपहर को ही उन लोगों को पकड़कर नाव में भर दिया गया था। एक बूंद पानी भी वे पी न सकी थीं। छोटी बहूरानी बस रोती रही और दुर्गा उसे धीरज देती रही। लेकिन धीरज देकर भी वह क्या करती? कितने दिन इस तरह धीरज देगी? एक दो दिन की बात तो थी नहीं, महीनों से ऐसा ही चल रहा था। एक जगह से दूसरी जगह उनको बस घूमते ही रहना पड़ा था। हातियागढ़ के लोगों ने शायद समझ लिया था कि वे मर गयी हैं। शायद छोटे सरकार हातियागढ़ लौट गये होंगे। वहाँ शायद उन्होंने और एक शादी कर ली होगी।

दुर्गा ने कहा, "चुप भी रहो छोटी बहूरानी, छोटे सरकार ऐसे आदमी नहीं हैं।"

लेकिन छोटी बहूरानी को उसकी बात पर विश्वास नहीं होता। पुरुष क्या होते हैं यह छोटी बहूरानी के लिए जानना बाकी नहीं था। जब जो स्त्री मिल गयी उसी में पुरुष डूब जाता है।

फिर छोटी बहूरानी का ही क्या दोष था? दुर्गा तो सब जानती थी। दुर्गा जैसा जानती थी वैसा उसकी माँ-मौसी-नानी-दादी भी जानती थीं। पुरुषों पर विश्वास नहीं किया जा सकता। कोई लड़की मिल गयी कि वे फौरन शादी कर लेंगे। फिर बंगाल तो लड़कियों का ही देश है। हर घर में बहुत सारी लड़कियाँ हैं! ईरान और तूरान से भी जो लोग आये थे, वे भी तो यहाँ की औरतों के लालच से ही आये थे। इब्राहिम लोदी को हराकर जिस मुहम्मद बाबर ने दिल्ली पर कब्ज़ा किया, वह तो अपने देश लौटकर नहीं गया था। हिन्दुस्तान की तरह ऐसा बढ़िया मुल्क और कहाँ मिलेगा? यहाँ के पेड़ों में फल, खेतों में धान, बाड़ों में गायें और पोखरों में मछलियों की कमी नहीं। यह देश तो स्वर्ग है। फिर यहाँ की औरतें! ऐसी मिठास भरी, ऐसी मुलायम, ऐसी आज्ञाकारी और ऐसी खूबसूरत बेगमें कहाँ मिलेंगी? इसलिए यहीं रह जाओ। इस देश को ही अपना देश बना लो। इसी तरह बादशाह औरंगजेब के जमाने तक चला आया था। तुम लोग जिस इलाके में हो स्वतंत्र होकर राज्य करो, गाँव बसाओ, पंचायतें बनाओ, लाठी-भाला-बंदूक-तोपों से चोर-डाकू-बलवाइयों को रोको, लेकिन मुझे तंग न करो। मैं तो दिल्ली के तख्ते-ताऊस पर बैठे-बैठे बेगम-बाँदियों को लेकर ऐश करूँगा। लेकिन साम्राज्य चलाना इतना आसान नहीं है जहाँपनाह! दौलत भी ऐसी मामूली चीज नहीं है। दौलत हुई कि रात की नींद और दिन का आराम गया। इसीलिए उधर मराठों और सिक्खों ने सर ऊँचा किया। उन सबों ने बादशाह औरंगजेब की नींद छीनी, और आराम हराम कर दिया। फिर बादशाह का इंतकाल हुआ और उसी के बाद चारों तरफ आग जल उठी। सभी स्वतंत्र हो गये। तुम दिल्ली के बादशाह हो तो मैं भी हैदराबाद का निजाम हूँ, मैं भी हैदर अली हूँ, फिर इस बंगाल मुल्क का नवाब भी तो मैं ही हूँ। मेरा नाम मुर्शिद कुली खाँ है। पाँच-पाँच बार मुर्शिदाबाद की नवाबी मसनद एक हाथ से दूसरे हाथ में गयी, फिर भी हिन्दुस्तान के आम लोगों का दुःख दूर नहीं हुआ। इसलिए उन लोगों ने कहा, फिरंगी हैं तो फिरंगी ही सही। फिरंगी अगर नवाब के हाथों से हमें बचाते हैं तो हम भी फिरंगी बन जायेंगे, हम भी अपनी जात बदल

लेंगे। जात जाने पर भी जान तो बची रहेगी!

अचानक किसी को सामने देखकर दुर्गा सहम गयी। अँधेरे में उसे पहचानना भी मुश्किल था।

"अरे तुम कौन हो? किसकी लड़की हो?"

तब तक उसने आकर दुर्गा के पाँवों पर सर रखकर प्रणाम किया। छोटी बहूरानी के पाँवों पर भी सर रखकर प्रणाम किया। कहा, "मैं मराली हूँ दुर्गा मौसी!"

"अरी माँ! तू है मुँहजली? तू कहाँ से आ गयी? तू तो मुसलमान हो गयी है! तेरा ही नाम तो मरियम बेगम हुआ है!"

मराली ने पूछा, "कैसी हैं छोटी बहूरानी!"

दुर्गा ने कहा, "तू क्यों यहाँ मरने आयी! तूने छू क्यों दिया! अब इतनी रात को कपड़े धोने पड़ेंगे।"

छोटी बहूरानी ने कहा, "अब हम लोगों का क्या होगा री! हम तो हतियागढ़ जा रही थीं। कृष्णनगर के महाराजा ने अपने आदमियों के साथ हमें भेज दिया था। लेकिन यह कैसी आफत हो गयी देख तो!"

दुर्गा ने कहा, "नवाब को भी बगल की नाव में बंद कर रखा है। उस हरामजादे को पकड़ा, ठीक किया, लेकिन हमने क्या दोष किया था?"

"तुम लोगों को बचाने के लिए मैंने इतना कुछ किया। अब भी देखूँगी, तुम लोगों के लिए मैं क्या कर सकती हूँ!"

"अब तू क्या करेगी! तेरे नवाब को तो इन लोगों ने गिरफ्तार कर लिया है!"

"नहीं मौसी, तुमने मुझे जिस तरह बचाया था, उसके लिए मैं तुम लोगों के कारण सब कुछ कर सकती हूँ। तुम घबड़ाओ नहीं, मैं नवाब से मिल कर आती हूँ।"

इतना कहकर मराली के बाहर आते ही फौजदार के सिपाहियों ने उसे रोक लिया।

मराली ने कहा, "मैं नवाब की नाव में जाऊँगी। मैं नवाब की बेगम हूँ।"

बात मीर दाऊद के कानों में भी गयी। मीर कासिम भी पास ही खड़ा था। उसने कहा, "जाने दो।"

नवाब की नाव पास आते ही मराली कूदकर उस नाव में चली गयी।

○

उस दिन मुर्शिदाबाद शहर के लोगों के कौतूहल की सीमा न थी। एक दिन फिरंगियों को हराकर नवाब इस मुर्शिदाबाद में सीना तानकर दाखिल हुए थे। बहुत ज्यादा दिन पहले की बात न थी। और आज वे ही फिरंगी मुर्शिदाबाद की सड़कों पर सीना तानकर घूम रहे हैं। देशी सिपाही और फिरंगी सिपाही साथ-साथ घूम रहे थे। शहर के निवासियों ने शंख बजाया था और हर्षध्वनि की थी। फिर भी मानो उनका मन न भरा था। वे बारबार क्लाइव साहब को देखना चाहते थे। मंसूरगंज की हवेली के सामने वे घंटों भीड़ लगा कर खड़े रहे थे।

पहरेदार उनको बार-बार भगा देते तो वे दौड़कर दूर हट जाते। लेकिन फिर धीरे-धीरे सामने आ जाते। वे फिर मुँह बाये सामने की ऊँची खिड़की की तरफ देखने लगते। काश ! एक बार भी साहब दीख जाता।

लेकिन उसी समय कहीं से यह उड़ती खबर आ गयी—नवाब आ गये हैं! नवाब आ गये हैं!

विश्वास कोई भी नहीं कर रहा था। विश्वास करने को किसी का मन भी नहीं करता—धत्! नवाब कैसे आ सकते हैं? नवाब भला कैसे आयेंगे?

"अरे, जाकर देख न आ गंगा के घाट पर। मीर दाऊद साहब नवाब को हथकड़ी पहनाकर बजरे से उतार रहे हैं।"

इस बात ने मानो सब के मन पर चाबुक की-सी चोट की।

एक ने कहा, "भैया, मजाक करने की और कोई जगह नहीं मिली?"

जिस आदमी ने यह कहा था, वह तब तक आगे बढ़ गया था। उसे फिर जवाब देने की फ़ुर्सत न थी। कई दिनों से शहर में झाड़ू नहीं लगा था, सड़कों पर बत्तियाँ नहीं जलायी गयी थीं। कई दिनों से चेहल सुतून के नौबतखाने में नौबत भी नहीं बज रही थी। कई दिनों से बाजार में खरीद-फरोख्त भी नहीं हो रही थी। सवेरे एक तरह की खबर आती थी तो शाम को दूसरी तरह की।

अचानक मानो तूफ़ान आ गया था। लोगों की भीड़ चौक बाजार की सड़क से बाढ़ की तरह गंगा घाट की तरफ बढ़ चली।

"अरे भाई, क्या हुआ? कहाँ जा रहे हो?"

सामने जो भी मिलता, उसी से सब पूछते।

"सुना नहीं? नवाब गिरफ्तार हो गये हैं!"

"सही कहते हो?"

"सुन तो ऐसा ही रहा हूँ, इसीलिए देखने जा रहा हूँ।"

सभी मानो दम साधे उधर ही दौड़ रहे थे। बात करने की भी फ़ुर्सत किसी को नहीं थी। मंसूरगंज की हवेली के सामने जो लोग खड़े थे वे दौड़ने लगे। नवाब गिरफ्तार हुए हैं। नवाब को हथकड़ी पहनायी गयी है। ऐसी अनहोनी बात भी क्या किसी ने सुनी या देखी थी! बाप-दादा क्या, उनके भी बाप-दादों ने ऐसी घटना घटने की बात नहीं सुनी थी? चलो यार? जल्दी चलो!

सूबे बंगाल के एक दिन जो मालिक होंगे, बंगाल ही क्या, हिन्दुस्तान के भी जो मालिक होंगे, बस वे ही उस दिन मुर्शिदाबाद की मंसूरगंज हवेली में चुपचाप बैठे थे। धीरे-धीरे सभी खबरें उनके कानों में पहुँच रही थीं। सभी आकर भेंट कर गये थे। जगत् सेठ जी भी देर तक क्लाइव से बातें कर गये। अमीचंद और मुंशी नवकृष्ण भी पास ही बैठे थे।

थोड़ी देर बाद क्लाइव ने अमीचंद को भी उठ जाने को कहा। कहा, "आप अभी जाइए अमीचंद जी!"

अमीचंद ने कहा, "फिर मेरा क्या होगा साहब ?"

क्लाइव ने कहा, "जो होगा, आप खुद देख लेंगे। रुपये अभी तो मिले नहीं जा रहे।"

"आखिर को ठेंगा तो नहीं दिखायेंगे साहब ?"

"ठेंगा ! ह्वाट इज दिस ठेंगा !"

क्लाइव ने मुंशी की ओर देखा। मुंशी नवकृष्ण ने ठेंगा का मतलब समझा दिया, "हुजूर, ठेंगा माने अँगूठा याने थम्ब ! ठेंगा माने लाठी याने स्टिक भी है !"

"ओह ! ठेंगा के इतने माने हैं ! लेकिन मैं अमीचंद जी को अँगूठा या लाठी क्यों दिखाऊँगा ?"

नवकृष्ण ने कहा, "नहीं हुजूर ! अमीचंद साहब का यह मतलब नहीं है। वे कहना चाहते हैं कि आप उनको धोखा तो नहीं देंगे ?"

क्लाइव ने कहा, "धोखा क्यों दूँगा ? उस दस्तावेज में अगर लिखा है तो अमीचंद जी को रुपया जरूर मिलेगा।"

"क्या उस दस्तावेज में लिखा नहीं है ?"

क्लाइव ने कहा, "पता नहीं ! जब मैं चेहल-सुतून जाऊँगा, उस समय देखा जायेगा। अभी आप जाइए अमीचंद जी ! मुंशी से कुछ जरूरी बातें करनी हैं।"

ठीक है। मैंने ही मुंशी दिया और अब मैं ही कोई नहीं हूँ ! अब मुंशी नवकृष्ण ही तुम्हारा सब कुछ हो गया। ठीक है ! रुपये से ही मेरा मतलब है। रुपये दे दो, बस ! फिर तुम से मेरा कौन-सा रिश्ता है ?

अमीचंद गुस्से में गरजता हुआ कमरे से निकल गया। कमरे से निकलते ही सामने लंबा बरामदा था। बाहर फिरंगी फौज के सिपाही टहल रहे थे। हवेली भी बहुत बड़ी थी। फौज के देशी-विलायती सभी सिपाहियों को मीर जाफर ने यही हवेली रहने को दी थी।

अमीचंद मीर जाफर साहब की हवेली में गया। पहरेदार खड़े थे।

"मीर जाफर साहब कहाँ हैं ?"

"बाहर गये हैं हजूर !"

"लेकिन उनके लड़के मीरन साहब ? मीरन साहब भी कहीं गये हैं ?"

"हजूर, हवेली में कोई नहीं है।"

धत्तेरे की ! सभी अपने-अपने मतलब से निकल पड़े हैं। शायद सभी रुपये की ही फिक्र में गये हैं।

इसीलिए एक दिन अमीचन्द ने नंदकुमार से कहा था, जितना हो सके रुपये कमा लो नंदकुमार ! लड़ाई में कौन हारता है और कौन जीतता है, इसका कोई ठिकाना नहीं है। दोनों से ही रुपये खाओ। फिर जो जीत जायेगा, उसी के साथ हो जाना।

बरामदे से चलते-चलते गुरु नानक का स्मरण कर अमीचंद ने मन ही मन उन्हें नमस्कार किया। जय गुरु जी ! गुरु जी की फतह !

फिर अमीचंद वहाँ नहीं रुका। लेकिन थोड़ा आगे बढ़ते ही फाटक के सामने से शोरगुल होने की आवाज आयी। सवेरे से वहाँ लोगों की भीड़ जमा थी। क्लाइव साहब के आते ही शोरगुल होने लगा था। अब फिर कैसा शोरगुल होने लगा?

"यह कैसी आवाज है? ये कौन हैं?"

कोई एक जा रहा था। अमीचंद ने उसी से पूछा।

फौज का कोई सिपाही था। बोला, "नवाब को गिरफ्तार करके लाया गया है।"

"अच्छा?"

अचानक अमीचन्द के खून का दौरा बढ़ गया। जय गुरु जी! फिर गुरु जी को नमस्कार करने का फल हाथों हाथ मिल गया। यह मसूरगद्दी भी तो नवाब की ही बनायी हुई है। बंगाल मुल्क के लोगों से मालगुजारी वसूल करके इसे अलीवर्दी खाँ ने मिर्जा मुहम्मद के लिए बनवाया था और आज उसी इमारत में फिरंगी साहब रॉबर्ट क्लाइव बैठा हुआ है। जय गुरु जी! यह सब आपकी मेहरबानी है! यह सब आपकी ही मर्जी है।

क्लाइव ने कहा, "अब दरवाजा बंद कर दो मुंशी, नहीं तो अमीचंद मौका पाकर फिर आ जायेगा।"

मुंशी नवकृष्ण ने उठकर दरवाजा बंद कर दिया। फिर वह साहब के पाँवों के पास आकर बैठ गया। कहा, "हुजूर, आपके श्री चरणों में मेरी भी एक विनती है।"

क्लाइव ने कहा, "कहो।"

"निडर होकर कहूँगा हुजूर? मुझे पिछले महीने की तनख्वाह नहीं मिली।"

"क्यों? तनख्वाह क्यों नहीं ली? तुम्हारी कितनी तनख्वाह है?"

नवकृष्ण ने कहा, "छः रुपये हुजूर!"

क्लाइव हँसा। कहा, "मुंशी, एक दिन मेरी भी तनख्वाह तुम्हारी तरह छः रुपये ही थी। लेकिन आज मुझे ईस्ट इंडिया कंपनी में सबसे ज्यादा तनख्वाह मिलती है। ऐसा कैसे हुआ जानते हो?"

मुंशी ने कहा, "हुजूर काबिल हैं इसलिए। हुजूर के गुणों की कोई हद है क्या?"

क्लाइव ने कहा, "नहीं। इसलिए नहीं मुंशी! यह सब तुम्हीं लोगों की वजह से हुआ है। तुम्हीं लोगों ने मेरी तनख्वाह बढ़ा दी है मुंशी, तुम्हीं लोगों के चलते आज मैं कर्नल हूँ।"

मुंशी गदगद हो गया। उसने साहब के पैर छूकर हाथ माथे से लगाकर कहा, "आप भी क्या कहते हैं हुजूर!"

"मैं ठीक कह रहा हूँ मुंशी! तुम लोग अगर बेईमानी न कर

रहता? तुम लोगों को छः रुपये क्या छः हजार रुपये भी दिये

लोगों की बेईमानी का कर्ज चुका नहीं सकतो। रुपयों को [illegible]

रुपये पाने पर तुम खुश होगे?"

मुंशी नवकृष्ण बड़ी मुश्किल में पड़ गया। क्या कहना चाहिए वह समझ नहीं पाया।

क्लाइव ने फिर पूछा, "कितने रुपये पाने पर तुम खुश होगे ?"

नवकृष्ण ने कहा, "मुझे रुपये का लालच न दीजिए हजूर, आपके श्री चरणों की सेवा करते रहने में ही खुशी होगी मुझे। और कुछ नहीं चाहिए।"

क्लाइव ने कहा, "ठीक है। रुपये के बारे में मैं सोचूंगा। अब काम की बातें की जायँ। जो खबर लाने को कहा था, वह खबर मिली ?"

"हाँ हजूर ! चेहल-सुतून में कोई बेगम साहबा नहीं है। मीरन साहब ने सभी को गिरफ्तार कर मोतीझील में रखा है।"

क्लाइव ने कहा, "यह मैं जानता हूँ। लेकिन मरियम बेगम नाम की कोई बेगम उनमें है या नहीं, इसका भी पता लगाया है ?"

"यह पता लगाया है हजूर। मरियम बेगम भी उनमें है।"

"उससे भेंट हुई थी ?"

"नहीं हजूर ! उससे भेंट नहीं कर सका। आपकी इजाजत पाने पर ही वे मिलने देंगे। उससे जाकर क्या कहना होगा हुजूर ?"

इतने में बाहर कुंडी खटखटाने की आवाज हुई। क्लाइव ने कहा, "देखो, शायद फिर अमीचंद आ पहुँचा है। उससे कह दो अभी भेंट नहीं होगी।"

नवकृष्ण ने उठकर दरवाजा खोला तो देखा, अमीचंद नहीं था। और कोई दो लोग थे।

क्लाइव ने उनको पहचाना। गुलाम मुल्ला और उसका साथी।

"हजूर, गजब हो गया है !"

दोनों साहब के सामने खड़े काँपने लगे। फिर एक अपरिचित आदमी को सामने खड़ा देखकर वे सहम गये।

क्लाइव ने उनको अलग ले जाकर पूछा, "क्या हुआ बताओ ! बेगम साहबा को कलकत्ते पहुँचा आये न ?"

"नहीं हजूर !"

"क्यों ?"

"नफरगंज के पास मीर दाऊद बेगम साहबा को गिरफ्तार कर ले गया।"

"ह्वाई ? क्यों ?"

"हमने कहा हजूर, कि हम कर्नल साहब के आदमी हैं, लेकिन उन लोगों ने हमारी एक न सुनी। मीर कासिम भी उनके साथ था। वे बेगम साहबा को पकड़ कर ले गये।"

"ठीक है, तुम लोग जाओ।"

क्लाइव अपनी जगह पर आकर बैठ गया। उसका चेहरा संजीदा हो उठा। थोड़ी देर बाद मुंशी ने पूछा, "हजूर कोई गड़बड़ हो गयी है क्या ?"

क्लाइव ने कहा, "अच्छा मुंशी, तुमसे जो उस पोएट को बुलाने को कहा था, वह नहीं आया ? वह कब आयेगा ?"

मुंशी ने कहा, "हुज़ूर, वह विकट पागल आदमी है। उसने मुझसे पूछा, तुम्हारे सर पर चुटिया क्यों है ? बताइए, कैसा अजीब सवाल है ! हिन्दू का लड़का चुटिया नहीं रखूंगा ? क्या मैं मुसलमान हूँ ?"

"होने दो उसे पागल, तुम अभी उसे बुला लाओ। मुझे उसकी सख्त जरूरत है। वह इस समय सड़क पर या गंगा किनारे, कहीं न कहीं जरूर मिल जायेगा। मैं तब तक थोड़ा आराम कर लूँ।"

जगत्सेठ जी की हवेली में दीवान रणजीत राय खबर देने गया। जगत्सेठ जी को कई दिनों से नींद नहीं आ रही थी। असल में जगत्सेठ जी जानते थे कि सारा झमेला उन्हीं को भोगना पड़ेगा। रुपये की जरूरत पड़ने पर सभी उनके पास आयेंगे। सात लाख रुपये फ्रांसीसियों को दिये गये थे, अब वे रुपये मिलने की कोई आशा नहीं थी। वे रुपये तो डूब ही गये !

खबर सुनकर सेठ जी ने पूछा, "नवाब को पैदल ला रहे हैं ?"

रणजीत राय ने कहा, "हाँ।"

थोड़ी देर सेठ जी मुँह लटकाये खामोश बैठे रहे।

दीवान ने कहा, "मुझे बड़ी दया आयी, कुछ भी हो नवाब तो हैं। देखा, बहुत लोग रो रहे थे। साथ में कई बेगम साहबाएँ भी थीं। वे भी पैदल आ रही थीं।"

"और नवाब ?"

दीवान ने कहा, "नवाब सर झुकाये पैदल आ रहे थे। किसी तरफ वे देख नहीं रहे थे। हाथों में हथकड़ी थी।"

जगत्सेठ जी सहसा उत्तेजित होकर बोले, "नवाब के लिए एक पालकी का इंतजाम करने से भला क्या नुकसान हो जाता ? यह मीर जाफर का हुक्म है या मीर दाऊद की बदमाशी ?"

इतना कहकर जगत्सेठ जी फिर थोड़ी देर लिए खामोश हो गये। उनकी आँखों के आगे पुराने दिनों की तस्वीरें घिर आयीं। नवाब के बचपन की शरारतें भी याद पड़ीं। धीरे-धीरे नवाब बड़े हुए। अलीवर्दी खाँ कितने ही दिन दरबार में बैठकर कहते थे—जगत्सेठ, मुझे अपने नाती के लिए बड़ी चिन्ता होती है। उसके बारे में सोचते-सोचते मरने के बाद भी मुझे चैन नहीं मिलेगा।

उस दिन जगत्सेठ ने नवाब को ढाढ़स दिया था। कहा था, आप कुछ न सोचें आलीजाह, मैं तो हूँ !

जगत्सेठ की बातों से शायद बूढ़े नवाब को बड़ा भरोसा मिला था। लेकिन जगत्सेठ ने अपना वचन पूरा नहीं किया। पूरा कर न सके।

सहसा जगत्सेठ जी ने पूछा, "लोग रो रहे थे ?"

दीवान ने कहा, "सभी नहीं। लेकिन बहुत-से लोग रो रहे थे।"

जगत्सेठ जी ने कहा, "देखिए दीवान जी, इन्हीं लोगों ने सवेरे क्लाइव साहब को देखकर शंख बजाया, हर्षध्वनि की, फिर ये ही अब नवाब को देखकर रो रहे हैं। आश्चर्य है! लेकिन मैं क्या कर सकता हूँ? मैंने अलीवर्दी खाँ से कहा था, मिर्जा मुहम्मद की हिफाजत करूँगा। लेकिन मैं अपनी बात निभा न सका। इसमें मेरा क्या दोष है?"

"नहीं महाराज, आप भी क्या करेंगे?"

"सचमुच नवाब को हथकड़ी लगाकर पैदल ला रहे हैं?"

"बस, नवाब को ही नहीं, उसी तरह सभी को ला रहे हैं। मीर दाऊद बेगमों को भी पैदल ला रहा है। चारों तरफ सिपाही हैं।"

जगत्सेठ जी ने पूछा, "नवाब को कहाँ रखेंगे? मोतीझील में या मंसूर-गद्दी में?"

रणजीत राय ने कहा, "मोतीझील में तो बेगमों को कैद करके रखा गया है, वहाँ कैसे रखेगा? मीरन साहब जहाँ कहेगा, वहीं नवाब को रखा जायेगा।"

"क्या अब मीरन ही मालिक बन बैठा है?"

"यही तो देख रहा हूँ। लक्काबाग की लड़ाई खत्म होते ही देख रहा हूँ, वही हर मामले में हुक्म चला रहा है। मीर जाफर साहब तो अपने रुपये-पैसे और लाभ-नुकसान के बारे में सोचने लगे हैं। चेहल-सुतून के मालखाने में कितनी दौलत है यही देखने-सुनने में वे लगे हैं।"

"कितने रुपये मिले?"

"यह जानने का अभी कोई उपाय नहीं है। क्लाइव ने हुक्म देकर वहाँ का फाटक बंद कराकर सील-मुहर करा दिया है।"

जगत्सेठ जी ने थोड़ी देर सोचकर कहा, "आप एक बार वहाँ जाइए, मेरा नाम लेकर कहिए कि नवाब को पैदल सबके सामने से न ले जाया जाय।"

"लेकिन मीरन क्या मेरी बात मानेगा?"

"आपकी बात न माने, लेकिन मेरी बात मानेगा। आप मेरा नाम लेकर कहिएगा।"

दीवान ने कहा, "आप जब कह रहे हैं, तो मैं जरूर जाऊँगा, लेकिन इससे हमारा क्या फायदा होगा?"

"देखिए दीवान जी, सूरज चौबीसों घंटे आसमान में नहीं रहता, एक समय उसे डूबना ही पड़ता है, लेकिन दूसरे दिन भोर में जब वह निकलता है तब अपना तेज लेकर ही निकलता है।"

"लेकिन यह नवाब क्या फिर उठ सकेगा? इसके बाद भी क्या वह कभी चेहल-सुतून में दरबार कर सकेगा?"

जगत्सेठजी ने कहा, "यह नवाब भले ही गद्दी पर न बैठे, कोई और तो बैठेगा? मसनद खाली तो पड़ी नहीं रहेगी। लेकिन नवाब का अपमान करने से मसनद का

अपमान होता है। मिर्जा मुहम्मद को चाहे वे जितना अपमानित करें लेकिन नवाब का अपमान नहीं कर सकते, इससे तो मसनद की ही इज्जत घटेगी। आप फ़ौरन जाकर मीरन से कहिए।"

दीवान जी को जाना पड़ा। जगतसेठ जी का हुक्म तो बजा लाना ही पड़ेगा। अब बूढ़ा हो चला था। दीवान ने मुर्शिदाबाद में बहुत-से नवाब देखे थे। बहुत-से नवाबों के आगे दीवान ने कोर्निश भी की थी। अनेक नवाबों का नमक खाया था। अब एक नवाब का अपमान दीवान को बरदाश्त नहीं हुआ। रणजीत राय निकल पड़ा। महिमापुर के रास्ते से लोगों की भीड़ बाढ़ की तरह बही जा रही थी। नवाब को हथकड़ी पहनाकर रास्ते से पैदल लाया जा रहा था। ऐसी घटना रोज-रोज नहीं घटती। यह दृश्य न देखा तो जीवन व्यर्थ हो जायेगा। मकानों की छत पर खड़ी अधेड़ और बूढ़ी औरतें घूँघट में से झाँक रही थीं, मोखों में से झाँक रही थीं। कम उम्र की औरतें कहती वह देखो! वही तो आ रहा है। वही आदमी जो आगे आ रहा है, नंगे सिर, वही तो नवाब है। पीछे-पीछे बेगम-बांदियाँ चल रही हैं।

इसके पहले सभी ने नवाब को देखा था। लेकिन यह वह नवाब नहीं था। उसके सर पर ताज रहता था और बदन पर जरीदार पोशाक। वह नवाब हाथी की पीठ पर बैठकर चलता था। बाजे-गाजे के साथ चलता था। सिपाहियों का सरदार भी नवाब के साथ रहता था। लेकिन आज का नवाब तो एक मामूली आदमी है। हाथों में हथकड़ी लगाये चिलचिलाती धूप में सर नीचा किये चल रहा है।

"अरे, देख रहा है, नवाब रो रहा है?"

"नहीं-नहीं, रो नहीं रहा है।"

"रो तो रहा है। टप-टप आँसू सीने पर गिर रहे हैं।"

"नहीं, वह पसीना है। इतनी तेज धूप है न।"

सचमुच सर पर चिलचिलाती धूप थी। सभी पसीने से तर हो उठे थे। सड़क के दोनों किनारे लोग खड़े थे। उचककर, झाँककर वे देख रहे थे। मीर दाऊद सीना ताने आगे-आगे आ रहा था। उसके साथ मीर कासिम था। वह चारों तरफ कड़ी निगाह रख रहा था। नवाब की टोली को सिपाहियों ने घेर रखा था। कहीं असामी भाग न जाय!

मीरन साहब ही ज्यादा खबरदारी रख रहा था। एक बार वह सबके पीछे चला जाता तो एक बार दौड़कर सबके आगे आ जाता। खबर पाते ही उसने मुर्शिदाबाद के घाट पर सिपाही तैनात कर दिये थे। फिर वह खुद सब कुछ देख-भाल रहा था। वह खुद ही भीड़ को हटा रहा था और सबको होशियार कर रहा था। एक दिन यही मीरन नवाब के सामने खड़े होने की भी हिम्मत नहीं करता था। एक दिन इसी मीरन को दरबार का खिदमतगार तक दुत्कार कर भगा देता था, मोतीझील के फाटक से पहरेदार भी भगा देता था। आज वही मीरन सब पर हुक्म चला रहा था। फिर दो दिन बाद इसी मीरन को कोर्निश करके ही मीर जाफर के दरबार में जाना होगा।

सी को नसीब का खेल कहते हैं।

वशीर मियाँ भी आया था। आज उसका रोवदाब देखते ही बनता था। ता नहीं, उसे कहाँ से एक लाठी मिल गयी थी, उसी से वह लोगों को खदेड़ रहा था, 'हटो! हटो यहाँ से!"

वशीर मियाँ के यार-दोस्तों ने सोचा था, वह उनको भगायेगा नहीं, और वह आज किसी को पहचान ही नहीं पा रहा था। निजामत के काम में खातिरदारी नहीं चलती—भागो! भागो यहाँ से!

इतने में जगत्सेठ के दीवान के आते ही लोगों ने उसके लिए रास्ता कर दिया।

"कौन है?"

"हजूर, जगत्सेठ जी का दीवान आपसे वात करने आया है।"

मीरन ने फिर भी उधर ध्यान नहीं दिया। कहा, "अभी फुर्सत नहीं है।"

"हजूर, जरूरी काम है।"

"कह दो; यहाँ और जरूरी काम हो रहा है। अभी फुर्सत नहीं है।"

रणजीत राय ने ऐसे अनेक उतार-चढ़ाव देखे थे। कहा, "मुझे भेंट करनी ही है।"

वह आगे बढ़ गया।

और समय होता तो मीरन दीवान को देखते ही हाथ बाँधकर खड़ा हो जाता। लेकिन आज का रंग-ढंग दूसरा ही था। कहा, "मैं क्या कर सकता हूँ?"

दीवान ने कहा, "जगत्सेठ जी ने कहा है, सबके सामने नवाब को इस तरह बेइज्जत न किया जाय।"

"नवाब? नवाब किसको कह रहे हैं साहब? मिर्जा मुहम्मद क्या आज भी मुर्शिदावाद का नवाब है?"

"लेकिन एक दिन तो ये ही नवाब थे। नवाब का अपमान करने पर मुर्शिदा-वाद की मसनद का अपमान होता है।"

मीरन हा-हा कर हँस पड़ा।

मीरन को हँसते देखकर वशीर मियाँ दौड़ा हुआ आया। बोला, "क्या हुआ हजूर?"

"देख वशीर, दीवान जी क्या कह रहे हैं!"

दीवान ने कहा, "मैंने नहीं कहा मीरन, जगत्सेठ जी ने कहला भेजा है।"

मीरन संजीदा हो उठा, कहा, "मैं जगत्सेठ जी का हुक्म मानूँ या अब्बा का? आप ही कहिए, किनका हुक्म मानूँ?"

वशीर मियाँ ने कहा, "नहीं हजूर, आप मीर जाफर साहब का ही हुक्म मानिए। अब तो मीर जाफर साहब ही नवाब हैं।"

"तुम चुप रहो। तुम क्यों बीच में बोलते हो?"

डांट सुनकर वशीर मियाँ चुप हो गया। लेकिन उसकी तरफ से मीरन ने जवाब

दिया, "आप उससे कुछ न कहिए दीवान जी, वह मेरा आदमी है।"

दीवान को यह बात खली। उसने बशीर मियाँ से कुछ न कहा, बल्कि असली बात छेड़ी, "तुम चाहे जो करो मीरन, लेकिन काम अच्छा नहीं हो रहा है।"

"अच्छा हुआ या खराब यह आप अब्बाजान से जाकर कहिए।"

इसके बाद और कुछ कहा नहीं जा सकता था। दीवान का चेहरा मायूस हो गया। इस तरह कभी भी किसी ने दीवान को अपमानित नहीं किया था। दीवान को अपमानित करने का मतलब जगत्सेठ जी को ही अपमानित करना था। दीवान रुका नहीं। पालकी में बैठकर वह चला गया।

नवाब की टोली आगे चलने लगी। अब वह चौक बाजार में शराफत अली की दुकान के सामने पहुँच गयी थी। मीर दाऊद इधर-उधर देख रहा था। वह चाहता था; देखें, सभी देखें।

अचानक किसी ने मीरन को पुकारा। बशीर मियाँ ने पहले सुना था, इसलिए आवाज दी, "कौन ? कौन है ?"

जो मीरन को बुलाने आया था, वह दौड़ता हुआ आया था, इसलिए खड़ा-खड़ा हाँफने लगा। उस भीड़ में मीरन के पास पहुँचना भी मुश्किल था।

बशीर मियाँ उस आदमी को पहचान गया। असगर अली मीर जाफर का खास खानसामाँ था।

"क्या है असगर ?"

"मीरन साहब को बुलाने आया हूँ। साहब ने बुलाया है।"

बशीर मियाँ रुका नहीं। उसने मीरन साहब से जाकर कहा। मीरन साहब को उस समय फुर्सत नहीं थी। भीड़ बढ़ रही थी। उसी को सँभालने में वह परेशान हो रहा था। उसे सुनकर अचम्भा हुआ। अच्छे काम में तो बाधा आती ही है।

ठीक है! मीरन ने पगड़ी खोलकर उसी से पसीना पोंछा। फिर मीर दाऊद को बुलाया।

"फौजदार साहब, अब्बाजान ने बुलाया है। मैं जा रहा हूँ।"

"मीर जाफर साहब ने बुलाया है ? कोई गलती तो नहीं हुई ?"

"क्या मालूम! अभी जगत्सेठ का दीवान आया था। कह रहा था, नवाब को पैदल क्यों ले जा रहा हूँ ? उस बदतमीज को नहीं मालूम कि नवाब जब मसनद पर था उस समय उसने हम लोगों को कितनी तकलीफ दी थी ? कहिए मीर दाऊद साहब नवाब ने हमें तकलीफ नहीं दी ?"

"जरूर दी है! हजार बार दी है। ठीक किया जो उसे पैदल ले जा रहे हैं।"

"फिर ? वे सब बातें क्या हम भूल गये हैं ?"

फिर चारों तरफ देखकर कहा, "तो मैं चला। देखूँ, अब्बाजान क्या कहते हैं।"

मीर दाऊद ने कहा, "अगर वे नवाब को पालकी में ले चलने को कहें तो आप राजी न होइयेगा।"

"नहीं-नहीं, अब्बाजान की इज्जत करता हूँ तो इसका मतलब यह नहीं कि डरपोक हूँ। मैं शेर बच्चा हूँ! मैं किसी की परवाह नहीं करता फौजदार साहब!"

इतना कहकर मीरन चला गया। कह गया, "निगाह रखियेगा फौजदार सा कहीं असामी भाग न जाय।"

नवाब की टोली बढ़ चली। सभी असामियों को आँखें फाड़-फाड़कर देखते इतिहास के परिहास से, कभी जो नवाब थे आज उन्हीं को हथकड़ी पहनकर गुलाम दरबार में हाजिर होना पड़ा है। इतने दिनों तक तुम लोग मेरी रिआया थे, आज एक नवाब की रिआया होने चले हो। तुम्हीं लोगों ने शंख बजाकर हर्ष-ध्वनि फिरंगियों का स्वागत किया। अब आँसुओं से मेरा स्वागत कर रहे हो! भाई, तुम अजीब हो। आज ये मुझे हथकड़ी पहनाकर गिरफ्तार कर लिये जा रहे हैं तो तुम ने विरोध में एक शब्द भी नहीं कहा। तुम लोग अगर विरोध करते, विद्रोह करते वे मुझे पैदल नहीं ले जाते। पालकी से मुझे ले जाकर कहीं कैद कर रखते। लेकिन लोग विरोध भी क्यों करोगे? मैंने तो कभी तुम लोगों का कोई उपकार नहीं किय उपकार करने का मौका पाने पर भी मैं तुम लोगों का उपकार करता या नहीं यह तुम लोगों ने नहीं देखा। मैं हार गया हूँ, मानो यही मेरा सबसे बड़ा अपराध है। के लिए आज तुम लोगों ने मुझे अपराधी करार किया है। जो हारता है, उसका कौन देता है? संसार में ऐसा बेवकूफ कौन है? जो जीतता है उसी का जय-जय होता है। यह संसार विजयी के गले में ही जयमाला पहनाता है। जयमाला पह समय न्याय-अन्याय का विचार नहीं किया जाता। इसलिए भाई, मैं भी न्याय-अ की बात नहीं करता। बस, मैं इतना ही कहूँगा कि आँसू बहाकर तुम लोग मुझे हँस नहीं! मैंने तुम लोगों को पहचान लिया है। तुम लोग अपने आँसू पोंछ डाल अगर हो सके तो मंसूर-गद्दी के सामने जाकर और जोर से हर्ष-ध्वनि करो, बजाओ!

उधर मंसूर-गद्दी में पहुँच कर मीरन साहब का मिजाज गरम हो गया। में फिरंगी फौज के पांच सौ सिपाही हो-हल्ला कर रहे थे। उनको खिलाना-पिला उनकी देखभाल करना मामूली बात नहीं थी! जरा भी त्रुटि हुई नहीं कि क्लाइव सा बिगड़ जायेंगे। फिरंगियों की खातिरदारी तो जमाई की खातिरदारी से भी बढ़कर थ बड़ी-बड़ी हाँड़ियों में पुलाव बन रहा था, बड़े-बड़े डेगों में गोश्त पक रहा था।

मीर जाफर साहब ने कहा, "नहीं, तुम्हें यह करना ही होगा! क्लाइव सा ने मुझे कड़ा हुक्म दिया है।"

"लेकिन मीर दाऊद क्यों मानेगा? वह बेगम साहबा को पकड़ कर लाया अब छोड़ना हो तो आप ही छोड़ दीजियेगा। क्लाइव कौन होता है? अब तो नवाब हैं?"

"चुप रह! बेवकूफ की तरह बात न कर। जो कह रहा हूँ, कर!"

"लेकिन नवाब आप हैं या वह फिरंगी का बच्चा क्लाइव?"

"खामोश !"

मीरन थोड़ी देर के लिए खामोश हो गया। लेकिन उसके बाद सर ऊँचा कर कहा, "मरियम बेगम पर क्लाइव साहब की इतनी नजरे-इनायत क्यों है ?"

"है तो तेरा क्या बिगड़ता है ? तू क्यों बिगड़ रहा है ? साहब क्या तेरी बीवी पर नजर डाल रहा है !"

यह भी ठीक है। फिरंगी का बच्चा ठहरा। अगर नवाब की बेगम की खूबसूरती और जवानी पर उसकी नजर पड़ गयी है तो मीरन का भला क्या नुकसान होता है ? नुकसान तो बेगम साहबा और क्लाइव साहब का है। क्योंकि सभी माल नकली है। वैसी बेगम की कीमत भी क्या है ?

"और सुन, आज दरबार में क्लाइव साहब के सामने इनाम भी देना होगा। सोना-चाँदी, हीरे-जवाहिरात जो भी चेहल-सुतून के मालखाने से निकलें साहब के सामने हाजिर करना होगा। नजराने के तौर पर बेगम साहबाएँ भी भेंट करनी पड़ेंगी।"

"बेगम साहबाएँ भी ?"

"हाँ रे बेवकूफ ! फिरंगी साहब लक्काबाग की लड़ाई जीतकर आया है, इस समय मेरा मेहमान है, उसे नजराना नहीं देना होगा क्या ? कितनी बेगमें हैं ?"

मीरन ने कहा, "गिनकर तो नहीं देखा। अनेक हैं ! सभी को मोतीझील में कैद कर रखा है।"

"सभी को साहब के सामने हाजिर करना होगा।"

"नानी बेगम साहबा को भी ?"

"तू बेवकूफ है ! उस बूढ़ी को लेकर साहब क्या करेगा ? मिर्जा की माँ, बहन, मौसी वगैरह को अलग रखना। उनको लेकर फिरंगी साहब क्या करेगा ? अगर वे सब साहब के सामने पेश की जायेंगी तो साहब मेरे मुँह पर थूकेगा नहीं ?"

ठीक है। जैसा हुक्म होगा वैसा ही करना पड़ेगा। जब अब्बाजान नवाब हैं तब उनकी बात तो माननी ही पड़ेगी ! कमरे से निकलते समय मीरन यही सोच रहा था। नवाब बनने पर भी अब्बाजान इतना डरते हैं ! इतना डरपोक होने से भी क्या नवाबी चलती है ?

मेहदी निसार और रजा अली से भेंट हो गयी। दोनों ही बड़े व्यस्त थे। सब काम छोड़कर दो सौ फिरंगी और तीन सौ देशी सिपाहियों के खाने-पीने का इंतजाम उन्हें करना पड़ रहा था। मीरन साहब को देखकर वे पास आये।

"कहिए जनाब ? मीर दाऊद ने आखिर नवाब को कैद कर ही लिया ?"

मीरन साहब का चेहरा देखकर डिहीदार रजा अली को अचंभा हुआ, "क्या हुआ जनाब, इतना मायूस क्यों हैं ? आज तो आपको खुश होना चाहिए। नवाब मिर्जा मुहम्मद कैद हुआ है, आज क्या इस तरह मुँह लटकाया जाता है ?"

मीरन ने कहा, "अरे भाई, नवाब कौन है, अभी तक इसी का फैसला

आ है। फिरंगी का वच्चा क्लाइव ही सब पर हुक्म चला रहा है।"

"क्लाइव ? क्यों ?"

"मैं कह क्या रहा हूँ ? क्लाइव साहव ने हुक्म दिया है मरियम वेगम को छोड़ ना होगा।"

"मरियम वेगम को ? उस पर फिरंगी के वच्चे की नेक नजर कैसे पड़ी ?"

"क्या मालूम भाई ? नवाव मिर्जा मुहम्मद मरियम वेगम को लेकर भाग रहा था। राजमहल में उन सवको गिरफ्तार किया गया। अव फिरंगी के वच्चे ने हुक्म दिया कि मरियम वेगम को छोड़ देना होगा।"

मेंहदी निसार को आश्चर्य हुआ। उसने आँखें गोल-गोल नचा कर कहा, "मरियम वेगम ? आपने ठीक सुना है न जनाव ?"

"अरे भाई, सुना है, तभी न मिजाज विगड़ गया है।"

"लेकिन मरियम वेगम को मीर दाऊद ने पकड़ा है, यह आपसे किसने कहा ?"

"अब्बाजान कह रहे थे। क्लाइव साहव को खवर मिली है कि मिर्जा मुहम्मद के साथ मरियम वेगम भी पकड़ी गयी है।"

"गलत ! गलत वात है ! वहम हुआ है।"

मीरन को अचंभा हुआ। कहा, "वहम हुआ है ?"

"अरे हाँ जनाव, मरियम वेगम तो मोतीझील में है। सब वेगमों को मोतीझील में कैद कर रखा गया है। मरियम वेगम भी वहीं है लेकिन उसी वेगम पर क्लाइव साहव की नेक नजर कैसे पड़ी ?"

"यही तो अन्दाज नहीं लगा पा रहा हूँ।"

"फिर एक काम कीजिए जनाव; सभी को मोतीझील से हटा दीजिए।"

मीरन ने कहा, "कैसे हटा दूँ ? नवाव की जितनी वेगमात हैं सब फिरंगी के वच्चे को भेंट करनी होंगी। फिर क्लाइव साहव को सब जवान वेगमात ही चाहिए। फिर उनको दूसरी जगह भेजूँ तो कहाँ भेजूँ ?"

"क्यों ? जहाँगीरावाद या ढाका नहीं भेज सकते।"

मीरन को वात पसंद आयी। उसने मेंहदी निसार की तरफ देखा। तरकीब अच्छी वतायी है।

"क्या देख रहे हैं जनाव ? सवको दूसरी जगह भेज दीजिए। नानी घसीटी वेगम, अमीना वेगम, मयमाना वेगम सभी को। मरियम वेगम को भी साथ भेज दीजिए जिससे फिरंगी के वच्चे को उसका पता ही न चले।"

"मरियम वेगम को भी ?"

मेंहदी निसार ने कहा, "हाँ जनाव, मरियम वेगम मामूली चीज नहीं है ! उसी ने तो सफीउल्लाह साहव का खून किया था। याद नहीं है ?"

"मरियम वेगम ही तो कलकत्ते जाकर पेरिन साहब के वगीचे में क्लाइव साहव के दफ्तर से अमीचंद की चिट्ठी चुरा लायी थी। तभी तो मिर्जा मुहम्मद ने यह

चिट्ठी देखी। पहले उसे हटाइए।"

मीरन सुन सब रहा था लेकिन उसे मानो विश्वास नहीं हो रहा था। कहा, "आप ठीक जानते हैं न भाई साहब, कि मरियम बेगम मोतीझील में है।"

"हाँ जनाब ! मैं नहीं जानता ? मैंने ही मरियम बेगम को कैद कर रखा है। मैं नहीं जानूँगा तो और कौन जानेगा ?"

"क्या मालूम, कितनी बेगमात और कितनी बाँदियाँ हैं, कौन हिसाब रख सकता है भाई साहब ? किसमें इतनी कुव्वत है ?"

फिर जरा रुककर कहा, 'चलो न, मोतीझील चलें, सभी बेगम साहबाओं को जहाँगीराबाद भेज दें। लेकिन जो कुछ करना है, आज ही करना होगा।"

मेंहदी निसार ने सब कुछ सोच लिया। डिहीदार रजा अली ने भी दिलचस्पी दिखायी। दोनों ने एक-दूसरे की तरफ देखा। मीरन साहब के जिम्मे बहुत सारे काम थे। उधर चौक बाजार की सड़क से नवाब को लाया जा रहा था। उसका भी कोई इंतजाम करना होगा। लेकिन सबसे पहले तो बेगम साहबाओं का इंतजाम करना होगा। उनको बस कैद करने से ही नहीं चलेगा, उनको एकदम पद्मा नदी के पार जहाँगीराबाद भेजकर ही निश्चिंत होना पड़ेगा। नानी बेगम साहबा और घसीटी बेगम साहबा सभी की आशा निर्मूल करनी होगी जिससे वे फिर कभी मुर्शिदाबाद की मसनद का ख्वाब न देखें।

तीनों मंसूरगंज से चले। बड़ा मुश्किल काम था। सिर्फ जहाँगीराबाद भेजो, कहने से काम नहीं चलता। नाव का इंतजाम करना होगा, बजरे का इंतजाम करना होगा। फिर सभी बेगम साहबाओं को बहला-फुसलाकर रवाना करना होगा।

"चलिए जनाब, चला जाय। बीमारी की जड़ ही खत्म करनी होगी !"

मुर्शिदाबाद के इतिहास में वह भी एक दिन था। भयानक दुर्दिन। बाजार में दुकानदार नहीं थे। दुकान-हाट बंद कर सभी सड़क पर तमाशा देखने निकले थे। पता नहीं कब एक चिनगारी मुर्शिदाबाद की मसनद पर आ पड़ी थी और इतने दिनों तक सबकी निगाह से छिपी रहकर आज सहसा धायँ-धायँ जल उठी थी जिससे सारा शहर झुलस गया था।

मीरन साहब ने सब इंतजाम कर रखा था। कहाँ मिर्जा मुहम्मद को रखा जायेगा, कहाँ बेगम-बाँदियों को रखा जायेगा, सब इंतजाम मीरन साहब ने पहले से कर रखा था। मीर जाफर साहब का लड़का बड़ा होशियार और अक्लमंद था। बहुत दिनों बाद आज मौका मिला था। अल्लाह की मेहरबानी से ही कभी-कभी ऐसा मौका आता है। मौका तो अल्लाह मुहैया कर देते हैं लेकिन उससे फायदा अक्लमंद लोग ही उठाते हैं। जो ऐसा फायदा उठा सकता है, लोग उसी को पुरुष-सिंह कहते हैं। चुप चाप घर बैठे रहोगे तो कोई तुम्हारे मुँह में कौर डालने नहीं आयेगा।

इतने दिनों बाद आज वही मौका आया था।

शाम को चेहल-सुतून में दरबार लगेगा। वहाँ मुर्शिदाबाद के अमीर-उमराव सभी आयेंगे। आदमी भेजकर सभी को खबर दी गयी है। क्लाइव साहब तैयार बैठा था। मीर जाफर साहब के पास उसने खबर लाने के लिए कई बार आदमी भेजा था। वह धीरज नहीं रख पा रहा था। उसने फिर आदमी भेजा। अब मीर जाफर आया।

"मैंने अपने लड़के को भेजा है हुजूर, लेकिन वह अभी तक लौटा नहीं!"

क्लाइव ने पूछा, "मरियम बेगम का क्या हुआ?"

मीर जाफर ने कहा, "उसी के लिए तो भेजा है।"

"उसके लिए माने?"

"कहा है, उसे लाकर आपके सामने पेश करने के लिए।"

क्लाइव ने कहा, "हाँ, उसे मेरे सामने लाना होगा!"

अंत में काफी देर तक इंतजार करने के बाद भी जब मरियम बेगम की कोई खबर नहीं मिली तब क्लाइव के लिए और इंतजार करना मुश्किल हो गया। क्लाइव ने सोचा, इनका मतलब कुछ और है। मतलब ही नहीं, जरूर मेरे खिलाफ कोई साजिश चल रही है। एक बार मेजर किलपैट्रिक आया। क्लाइव ने उससे पूछा, "कैसा लग रहा है किलपैट्रिक?"

किलपैट्रिक ने कहा, "मैं कुछ समझ नहीं पा रहा हूँ।"

"अगर तुम्हें ऐसा ही लगे तो तैयार रहना। जरूरत पड़ी तो हमारी आर्मी को भी रेडी रखना पड़ेगा। मीर जाफर पर विश्वास नहीं किया जा सकता। उसका लड़का और भी शैतान है। वह समझता है कि हमने उनकी कंट्री में ट्रेसपास किया है, उनका थ्रोन छीन लिया है।"

"लेकिन इतनी हिम्मत क्या वे करेंगे?"

क्लाइव ने पूछा, "चेहल-सुतून के हरम के मालखाने की चाभी कहाँ है?"

किलपैट्रिक ने कहा, "यह है।"

क्लाइव ने चाभी लेकर अपने पास रख दी। फिर कहा, "देखो, इस समय किसी पर विश्वास नहीं किया जा सकता। सभी को मालूम हो गया है कि मॉसिये ला राजमहल तक आया था। फिर उसने जब सुना कि नवाब अरेस्ट हो गया है तो वह लौट गया। अमीचंद कहाँ है?"

"मेरे पास आया था, रुपये माँग रहा था।"

"उसे अपने पास ज्यादा न फटकने देना। वह शख्स एक ही स्काउंड्रेल है। मैंने उसे कमरे से निकाल दिया है। तुम अपने जासूसों से कह दो कि वे जगत्सेठ, या लुत्फ खाँ और दुर्लभराम के मकान पर निगाह रखें।"

किलपैट्रिक जा रहा था। क्लाइव ने फिर बुलाकर कहा, "मुंशी क्यों नहीं आ रहा है? मुंशी कहाँ गया, जरा पता लगाने के लिए तो शहर में आदमी भेजो। उ

एक खास काम से भेजा था।"

इतने में मुंशी की आवाज सुनाई पड़ी। मुंशी आ गया था। वह खूब हँस रहा था।

"क्या हुआ ? मैं अभी तुम्हारे बारे में ही पूछ रहा था।"

मुंशी ने कहा, "मेरे बारे में पूछ रहे थे ! तब तो मैं बहुत दिन जीऊँगा। उस रगले को बड़ी मुश्किल से ढूँढ़ निकाला है।"

फिर उसने बाहर की तरफ देखकर पुकारा, "आओ भाई !"

उद्धवदास आया। क्लाइव ने कहा, "क्या हो गया पोएट, तुम्हें खबर भेजी, तुमने कहला भेजा, आऊँगा। लेकिन तुम नहीं आये ?"

उद्धवदास ने कहा, "हुजूर, आपके महल के पहरेदार अन्दर घुसने ही नहीं देते। आप लोगों के पास आना भी जहमत का काम है। अपने हरि से मिलने जाने पर रा इतना झमेला नहीं है। हरि की ड्योढ़ी पर तो कोई दरबान नहीं रहता।"

क्लाइव ने उसकी बात पर ध्यान न देकर नवकृष्ण की तरफ देखकर कहा, 'तुम अभी बाहर जाओ, पोएट से कुछ प्राइवेट बातें करनी हैं।"

मुंशी के बाहर जाते ही क्लाइव ने हँसकर कहा, "पोएट, तुम अपनी वाइफ से मिलोगे ? अपनी बीवी से !"

"मेरी बहू ?"

"हाँ, मराली बाला दासी। वह अभी यहीं है।"

उद्धवदास हँसा। बोला, "यहीं रहे, चाहे कहीं रहे, वह क्या मेरे सामने आयेगी हुजूर ? वह तो मुझे देखना भी पसंद नहीं करती।"

"वह पसंद करे या न करे, मैं उससे तुम्हारी भेंट करा दूँगा पोएट !"

उद्धवदास ने कहा, "इससे आपको क्या फायदा होगा प्रभु ?"

"फायदा ? पोएट, मैं फायदा या नुकसान नहीं समझता, लेकिन तुम मुझको जाने क्यों बहुत अच्छा लगते हो ! तुममें और मुझमें बड़ी समानता है।"

"आप क्या कह रहे हैं प्रभु ? मैं तो एक घुमक्कड़ आदमी हूँ।"

क्लाइव ने कहा, "कुछ भी हो, तुम जैसे प्यार न पाने पर पोएट हुए हो, उसी तरह मैं भी सबकी घृणा पाकर सोलजर बना हूँ। असल में तुम और हम एक जैसे हैं। मैं चाहता हूँ, तुम्हें अब प्यार मिले।"

"इससे भी आपको क्या लाभ होगा ?"

"लाभ जरूर होगा पोएट ! तुम्हारी जिस तरह अपनी वाइफ से भेंट नहीं होती उसी तरह मैंने भी बहुत दिनों से अपनी वाइफ को नहीं देखा। अगर तुम्हें अपनी वाइफ का प्यार मिले तो मैं भी अपनी वाइफ को चिट्ठी लिखूँगा। लिखूँगा, इंडिया में आकर मैंने अपनी वाइफ को अपने पास पाया है।"

उद्धवदास ने कहा, "फिर कविता कैसे करूँगा ? काव्य कैसे लिखूँगा ?"

"तुम्हारे लिए क्या अपनी पोएट्री ही इतनी बड़ी हो गयी ?"

"आपके लिए क्या लड़ाई बड़ी नहीं है! क्यों आप इस देश में लड़ने आये हैं?"

इतने में अर्दली ने आकर खबर दी, "हजूर, एक जमींदार आपसे मिलना चाहते हैं।"

"कौन? क्या नाम है उसका?"

अर्दली ने कहा, "हतियागढ़ के राजा हिरण्यनारायण राय।"

"ठीक है। यहाँ लाओ।"

छोटे सरकार आये। देखा, वही पगला बैठा हुआ है। पहले तो उसके सामने कुछ कहने में उनको जरा संकोच हुआ। लेकिन क्लाइव ने कहा, "आप इसके सामने सब कह सकते हैं। लेकिन आपको पहले भी एक बार देखा है।"

छोटे सरकार ने कहा, "एक बार महाराज कृष्णचंद्र के साथ मैं आपके पास गया था।"

"हाँ, याद है। कहिए!"

"अभी मैं जगत्सेठ जी के पास गया था, उन्होंने आपके पास भेजा। सुना है, आज सभी बेगम साहबाएँ आपके सामने पेश की जायेंगी।"

"मैंने इस बारे में अभी कुछ नहीं सुना। बेगमात मेरे सामने भला क्यों पेश की जायेंगी?"

छोटे सरकार ने कहा, "यही नवाबी क़ायदा है। लेकिन मोतीझील में जो बेगमात हैं उनमें मेरी पत्नी भी है, जिसका नाम यहाँ मरियम बेगम है, आप उसे छुड़ा दीजिए।"

"आपको ठीक से मालूम है न कि मरियम बेगम आपकी वाइफ हैं?"

"हाँ साहब, मैं अच्छी तरह जानता हूँ।"

"आप अपनी वाइफ को पहचान सकेंगे?"

"जरूर पहचान सकूँगा। भला मैं अपनी पत्नी को नहीं पहचान पाऊँगा? उसी के लिए तो आज महीनों से परेशान हो रहा हूँ।"

क्लाइव ने किलपैट्रिक को बुलाया। कहा, "इनको मीर जाफर साहब के पास ले जाओ, और उनसे कहो कि मोतीझील में इनकी वाइफ हैं, जिनका नाम मरियम बेगम है, उन्हें इनके सुपुर्द कर दिया जाय। कहना मेरा हुक्म है।"

मेजर किलपैट्रिक के साथ छोटे सरकार चले गये।



बहुत दिनों बाद चेहल-सुतून को सजाया जा रहा था। शाम को दरबार लगेगा। मुर्शिदाबाद के सभी अमीर-उमराव उस दरबार में आयेंगे। फिरंगी कंपनी का क्लाइव साहब आकर उस मसनद पर बैठेगा। जगत्सेठ भी आयेंगे, यार लुत्फ़ खाँ आयेगा, राजा दुर्लभराम आयेगा, मीर जाफर साहब आयेगा, मीरन आयेगा, मेंहदी निसार

मंसूर अली, मीर दाऊद, रजा अली और मीर कासिम वगैरह सभी आयेंगे ।

इंसाफ मियाँ फिर नौबतखाने में जा बैठा था ।

छोटे शागिर्द ने कहा, "उस्ताद जी, आज कौन-सा राग बजायेंगे ?"

इंसाफ मियाँ को आज नौबत बजाने में तबीयत नहीं लग रही थी । उसने पूछा, "क्या बजाऊँ ?"

छोटे शागिर्द ने कहा, "अलीवर्दी खाँ जब मसनद पर बैठे थे, उस समय जो राग बजाया था, वही बजाइए ।"

उधर मोतीझील के पिछवाड़े जहाँ गंगा मुड़ गयी थी, वहीं घाट पर छः बजरे लगे थे । मोतीझील के पीछे के दरवाजे से एक-एक कर बुरके में छिपी कई शक्लें खुले आसमान के नीचे निकल आयीं । गंगा का स्रोत खामोशी से बह रहा था । छल-छल कर पानी बजरे के खोल से टकरा रहा था । एक-एक बेगम एक-एक बजरे में पहुँच गयी ।

मीरन साहब के आदमी आस-पास खड़े थे । कुछ फासले पर खड़े मीरन साहब देखभाल कर रहे थे । वे अपने मन में बेगमात की गिनती लगा रहे थे ।

—नानी बेगम !

—घसीटी बेगम !

—अमीना बेगम !

—मयमाना बेगम !

—लुत्फुन्निसा बेगम !

सबके बाद सहमे हुए कदम आगे बढ़े । मीरन ने गौर कर देखा । हाँ, फिरंगी के बच्चे की नजर जिस बेगम पर थी, वही मरियम बेगम यह है । मरियम बेगम भी जहाँगीराबाद जा रही थी ।

मुर्शिदाबाद का वह दिन बड़ा भयंकर दिन था । वह तिथि बड़ी भयानक तिथि थी । सूरज का मुँह देखना जिनके लिए गुनाह था, चेहल-सुतून के भूल-भुलैया में नवाब के साथ लुका-छिपी का खेल खेलते समय जो जान-बूझकर भटक जाती थीं, आज उन्हीं को तेज धूप में हमेशा का कानून तोड़ना पड़ा । उद्धवदास की पोथी के देशी कागज के सफों में वे बेगमात खो गयीं ।

इसीलिए लगता है; उद्धवदास ने सब-कुछ देखा था । अपनी आँखों से उन्होंने कुछ नहीं देखा था, वह सब मेरी विश्वास से सुना था । फिर देखने और सुनने का व्यवधान मिटाकर ही इस महाकाव्य का सर्जन हुआ ।

सचमुच, मुर्शिदाबाद के वे लोग खो गये । उन्होंने खोकर 'बेगम मेरी विश्वास' पोथी के पन्नों की शक्ल ले ली । कहाँ रहा वह चेहल-सुतून जहाँ कर्नल क्लाइव ने मीर जाफर से ग्यारह बेगमात की भेंट ली थी ? कहाँ रहा वह मंसूरगंज

ी ड्योढ़ी, जहाँ क्लाइव अपनी फौज के साथ ठहरा था।

क्लाइव ने कहा था, "चलो पोएट, तुम्हारी बीवी से तुम्हारी भेंट कराये ता हूँ।"

उद्धवदास ने कहा था, "लेकिन प्रभु, मेरी वहू अगर उस बार की ही तरह मेरे ामने न आये तो?"

"तुमने क्या दोष किया है पोएट?"

"दोष-गुण तो प्रभु, मन का भ्रम है, मेरे लिए जो गुण है, शायद वही आपके लिए दोष है। रायगुणाकर भारतचन्द्र का नाम सुना है प्रभु?"

"कौन हैं वह?"

"वह भी एक कवि हैं प्रभु, उन्होंने लिखा है—विद्या की चतुराई से दोष भी गुण हो गया। इसलिए कहता हूँ प्रभु, कभी-कभी दोष भी गुण होता है और गुण भी दोष होता है। मनुष्य की अदालत बड़ी विचित्र जगह है प्रभु, यहाँ के किसी भी नियम का ता ही नहीं चलता।"

क्लाइव को बड़ा आश्चर्य हुआ। कहा, "तुमको इतना सब कैसे मालूम है पोएट?"

"हरि से मालूम हुआ है प्रभु, हरि ही मुझे सब बता देता है!"

"हरि? हरि कौन है? तुम्हारा गॉड?"

"मैं तो भक्त हरिदास हूँ प्रभु!"

"इसका मतलब?"

"मैं मनुष्य में ही हरि को देखता हूँ, इसलिए मेरे करोड़ों हरि हैं प्रभु! आपमें भी मुझे हरि दिखाई पड़ता है, मेरी वहू में भी हरि दिखाई पड़ता है। हरि को ढूंढ़ने मुझे जंगल में नहीं जाना पड़ता। मेरा हरि तो लोकालय में रहता है प्रभु।"

"तुम्हारी बीवी तुम्हें दुत्कार देती है तो तुम्हें दुःख नहीं होता? मेरी बीवी अगर मुझसे ऐसा करती तो मैं उसे डाईवोर्स कर देता।"

उद्धवदास ने कहा, "हरि अगर मुझे त्याग दे तो क्या मैं हरि को त्याग सकता हूँ प्रभु? मुझे तो समाज के सभी लोगों ने त्याग दिया है, लेकिन मैं क्या समाज को छोड़ सका हूँ? इसीलिए मैं समाज में ही विचरता हूँ। कभी मैं मुर्शिदाबाद आता हूँ तो कभी मुल्लाहाटी, तो कभी कृष्णनगर और कभी हतियागढ़।"

"अच्छा, एक बात सच-सच बताओगे?"

"सच छोड़ मैं कभी झूठ बोलता नहीं प्रभु!"

"फिर बताओ, तुम्हारी बीवी का नाम क्या मराली बाला दासी है?"

"हाँ प्रभु, आपने ठीक ही कहा है।"

"क्या तुम्हें मालूम है इस समय तुम्हारी बीवी कहाँ है?"

"नहीं प्रभु, क्योंकि यह जानने की इच्छा भी अब नहीं है।"

"तुम क्या अपनी बीवी को देखना चाहते हो?"

"प्रभु, मैंने तो बहू को नहीं देखा, लेकिन बहू मुझे छोड़कर चली क्यों गयी!"

"मैं फिर तुमसे कहता हूँ पोएट, तुम्हारी बीवी यहीं है।"

"इसी मुर्शिदाबाद में?"

"हाँ पोएट, लेकिन मुझे अभी छुट्टी नहीं है। अभी मुझे बहुत कुछ सोचना है। मेरी तबीयत भी ठीक नहीं है। लोग समझते हैं, मैं बहुत बड़ा विक्टर हूँ। वे जानते हैं मैं कम्पनी का कर्नल हूँ, लेकिन वे नहीं जानते कि मेरे तरह कायर कोई दूसरा नहीं। वे नहीं जानते कि सोते समय मैं डरकर काँप उठता हूँ।"

उद्धवदास ने पूछा, "आपको क्या डर है प्रभु?"

"सक्सेस का डर पोएट। कुछ ही महीनों में मैंने कितने-कितने मुल्क जीत लिये। यह क्या मामूली बात है पोएट? कितने कर्नल ऐसा कर सके हैं? आज मीर जाफर, मीरन, जगत्सेठ वगैरह सभी मेरी खुशामद कर रहे हैं, उनकी नज़रों में मैं बहुत बड़ा हूँ। लेकिन पोएट, मैं जानता हूँ, मैं कितना गरीब हूँ, मैं कितना कमज़ोर हूँ। वे नहीं जानते कि इतने देशों को जिसने जीता वह मैं नहीं हूँ, मेरा भूत है।"

"क्या कहते हैं प्रभु? भूत?"

"हाँ पोएट, वही भूत कभी-कभी मेरे कमरे में घुस आता है। जब मैं सोता रहता हूँ, तभी वह आता है, मुझे डराता है और रात भर एक सपना दिखाता है, क्वीन ऑफ स्पेड्स, जिसे तुम लोग हुकुम की बीबी कहते हो।"

"हुकुम की बीबी? क्यों प्रभु?"

"हाँ, तुम्हें अगर कर्नल क्लाइव बनना पड़ता पोएट, तो तुम्हें भी वह भूत आकर डराता और तुम भी बीमार पड़ जाते। फिर तुम्हें भी मेरी तरह दवा पीनी पड़ती।"

"क्यों प्रभु?"

"यह तुम नहीं समझोगे पोएट! मैं कर्नल क्लाइव हूँ, मुझे नींद नहीं आती और उसे दवा पीनी पड़ती है। तुम्हारी बीबी ने एक दिन देखा था। उसने एक दिन अपने हाथ से मुझे दवा पिलायी थी। उस दवा की खुराक ज्यादा बढ़ाकर वह मुझे मार भी सकती थी, लेकिन उसने वैसा नहीं किया। इसीलिए मैंने उसे अपने पास रखा है और तुम्हें बुला भेजा।"

उद्धवदास चुपचाप सब कुछ सुन रहा था। कहा, "अब मुझे क्या करना होगा प्रभु?"

"तुम मेरे साथ चलोगे। मैं तुम्हें तुम्हारी बीबी के पास ले चलूँगा। आज ही सब फैसला हो जायेगा। मुर्शिदाबाद की मसनद का भी फैसला हो जायेगा।"

उद्धवदास ने पूछा, "मेरा क्या फैसला करेंगे प्रभु?"

"तुम्हें तुम्हारी बीबी से मिला दूँगा।"

उद्धवदास ने हँसकर कहा, "क्या आप ऐसा कर सकेंगे?"

"मैंने क्या नहीं किया है पोएट? मैं जैसे तोड़ सकता हूँ, उसी तरह जोड़ भी सकता हूँ। इतिहास में यही लिखा रहे। बहुत दिनों बाद जब इस मुर्शिदाबाद का इति-

हास लिखा जायेगा, तब कम से कम, लोग यह तो जान सकेंगे कि मैं विलेन ही
था वल्कि एक इंसान भी था। दुःख-दर्द, शोक-भय सभी कुछ मुझमें था। सभी
तरह मैं भी हँसा था, रोया था, प्यार किया था, नफरत की थी, डरा था और डर
भी सीना तानकर फिर खड़ा हो गया था।"

सहसा दरवाजे पर दस्तक होते ही क्लाइव ने जोर से आवाज दी, "कौन ?"

"मैं हूँ हुजूर। मैं हुजूर के श्री चरणों का दास हूँ, नवकृष्ण मुंशी।"

"अभी नहीं मुंशी वाद में आना।"

उद्धवदास ने पूछा, "वह कौन है प्रभु ? उसके सर पर वहुत वड़ी चुटिया है

क्लाइव ने कहा, "वह और अमीचन्द, दोनों रुपये के दास हैं। उनकी
अलग है। उनके लिए रुपया ही सव कुछ है। रुपये के लिए वे वरावर मेरे पीछे-
घूमते हैं। हर समय वे मेरे पास रहें यह मुझे अच्छा नहीं लगता, इसीलिए तुम्हें
भेजा था। अव चलो, तुम्हारी वीवी से तुम्हारी मुलाकात करा दूँ।"

इतना कहकर क्लाइव उठ खड़ा हुआ। पोएट भी उसके साथ चलने के
तैयार हो गया।

●

मयदापुर से जिस दिन मराली नाव से रवाना हुई थी, उस दिन उसने सपने
भी नहीं सोचा था कि मुझे उसी वुरे दिन मुर्शिदावाद में लौट आना होगा। उसने स
में भी नहीं सोचा था कि छोटी वहूरानी से फिर भेंट होगी या नवाव मिर्जा मुहम्म
उस तरह मुलाकात होगी।

नवाव मिर्जा मुहम्मंद ने एक वार मराली की ओर देखा। लेकिन उन्होंने
कहा नहीं।

मराली ने नवाव को देखते ही पूछा था, "यह क्या आलीजाह ? यह
हुआ ?"

लुत्फुन्निसा वेगम नवाव के पाँवों पर सर रखकर सो गयी थी। वाँदी
हटकर वैठी थी। उसकी गोद में लुत्फुन्निसा की लड़की थी।

मराली को देखकर लुत्फुन्निसा जरा हिली।

मराली ने फिर कहा, "इस तरह आपसे फिर भेंट होगी, यह मैंने कभी
सोचा था आलीजाह, फिर इस हालत में तो कभी भी नहीं !"

मिर्जा मुहम्मद ने इस वात का कोई जवाव न देकर कहा, "इन लोगों ने
भी गिरफ्तार किया है मरियम वेगम साहवा ? तुमने क्या गुनाह किया था ?"

"मेरी वात रहने दीजिए आलीजाह, लेकिन आपने ही कौन-सा गु
किया था ?"

मिर्जा मुहम्मद ने कहा, "मेरी वात कह रही हो ? मैंने कौन-सा गुनाह
किया, पहले यही वताओ !"

मराली ने कहा, "कुछ भी मेरी समझ में नहीं आ रहा है आलीजाह, मैं खुद गवाह हूँ, आपने कभी किसी का नुकसान नहीं किया।"

"नहीं मरियम बेगम साहबा, मैंने हजारों गुनाह किये हैं! तुम सभी-कुछ तो नहीं जानती।"

"लेकिन आपने कौन ऐसा गुनाह किया, जिसकी यह सजा मिली?"

मिर्जा मुहम्मद ने कहा, "इस दुनिया में पैदा होकर ही मैंने बहुत बड़ा गुनाह किया है बेगम साहबा! बड़े नवाब जिस दिन फौजदार बने, उसी दिन पैदा होकर मैंने गुनाह किया था। फिर बड़े नवाब ने मुर्शिदाबाद की मसनद देकर मुझे और गुनहगार बनाया।"

"लेकिन अब क्या करेंगे आलीजाह?"

मिर्जा मुहम्मद ने कहा, "तुम अपने बारे में सोचो मरियम बेगम साहबा! बस, इतना जान लो कि मैं सिर्फ खलनायक ही नहीं था, एक इंसान भी था। अब तो चले ही जाना पड़ेगा। मैंने बहुत कुछ सोचा था बेगम साहबा! सोचा था, लॉ साहब अजीमाबाद से फौज लेकर मेरे पास आयेगा और एक बार फिर नये सिरे से कोशिश करके देखूँगा। लेकिन सभी कोशिशें बेकार गयी बेगम साहबा, अब देख रही हो न, मेरे दोनों हाथ बँधे हुए हैं!"

मराली ने पूछा, "लेकिन उन लोगों ने आपको पहचाना कैसे?"

"अब वह सब सोचने से क्या होगा?"

"क्या अब छुटकारा पाने का कोई उपाय नहीं है?"

मिर्जा मुहम्मद ने कहा, "मेरे ही लिए तुम लोगों को इतनी तकलीफें उठानी पड़ीं। मैं बस यही सोच रहा हूँ।"

"बस मैं अकेली नहीं आलीजाह, मेरे साथ हतियागढ़ की असली छोटी बहूरानी भी पकड़ी गयी हैं।"

"इसका मतलब?"

मिर्जा मुहम्मद चौंक पड़े।

"इसका मतलब? फिर तुम हतियागढ़ की असली छोटी बहूरानी नहीं हो?"

"नहीं।"

"फिर तुम कौन हो?"

"मैं उसके बदले में आयी थी। मैं हतियागढ़ की राजगद्दी के नौकर की लड़की हूँ। छोटी बहूरानी को बचाने के लिए ही मैं चेहल-सुतून में आयी थी। मेरा असली परिचय चेहल-सुतून में कोई नहीं जानता था। सोचा था, छोटी बहूरानी को नवाब के यार-दोस्तों के अत्याचार से बचा सकूँगी, लेकिन आज देख रही हूँ कि उसे भी न बचा सकी। आज देख रही हूँ, किसी के बदले यहाँ आना भी बेकार ही हुआ।"

मिर्जा मुहम्मद थोड़ी देर चुपचाप रहे। इतिहास के उस महान् संधिक्षण में एक महान् समस्या उनके सामने आयी। इतने लोग, इतना बड़ा देश सबका सर्वनाश मानो

उनके सर्वनाश के साथ ही आ पहुँचा।

थोड़ी देर बाद उन्होंने कहा, "कह नहीं सकता, इस मसनद के लिए मैं क्यों इतना पागल हो गया था ? उस समय क्या मैं जानता था कि इस मसनद के साथ इतना दुःख जटित है !"

फिर मरियम बेगम साहबा की तरफ देखकर कहा, "तुम मेरा एक अनुरोध पूरा करोगी बेगम साहबा ? तुम अपने हाथों से मेरा गला दबा सकोगी ? इतने ज़ोर से कि मेरा दम घुट जाय और मेरी साँस रुक जाय ?"

मराली ने कहा, "छी: आलीजाह, आप मुर्शिदाबाद के नवाब हैं ?"

मिर्जा मुहम्मद ने कहा, "मुझे और ज्यादा शर्मिन्दा न करो बेगम साहबा, मैं अपने ही फौजदार का कैदी हूँ, इस पर भी मुझे शर्मिन्दा करते तुम्हें शर्म महसूस नहीं होती ?"

"लेकिन मैं आपके लिए और क्या कर सकती हूँ आलीजाह ?"

"एक दिन तुमने मुझे किसी का गाना सुनाया था, याद है ? कौन था वह शायर ?"

"शायर ? शायरी करता था क्या ?"

मिर्जा मुहम्मद ने कहा, "नहीं, शायरी नहीं करता। उसने वही जो गाना गाया था—माँ मेरी यही भावना, कहाँ था मैं आया कहाँ, जाऊँ कहाँ क्या ठिकाना।"

मराली ने कहा, "उसका नाम रामप्रसाद सेन है।"

मिर्जा मुहम्मद ने कहा, "हाँ बेगम साहबा, कल से बार-बार उसकी बात याद आ रही है। सोच रहा हूँ, उसकी मसनद तो कोई नहीं छीन लेता ? उसकी मसनद के लिए तो इतनी मारकाट नहीं होती ? उसकी मसनद के लिए तो कोई उसे हथकड़ी लगाकर नहीं ले जाता ? इसीलिए एक बार और उसे देखने को मन कर रहा है। उसका गाना सुनने को भी मन कर रहा है।"

मराली ने कहा, "लेकिन अभी उसके बारे में सोचने का समय नहीं है आलीजाह, अभी दूसरी बात सोचनी होगी। अभी मैं कैसे आपको छुड़ा सकती हूँ, यही सोच रही हूँ।"

"तुम मुझे छुड़ा सकोगी बेगम साहबा ?"

मराली ने कहा, "बस आपको नहीं आलीजाह, हतियागढ़ की रानी बीबी को भी कैसे छुड़ा सकूँगी, यह भी सोच रही हूँ।"

"कैसे छुड़ाओगी ? अगर छुड़ा सको तो मेरी लुत्फो और मेरी इस बच्ची को भी छुड़ाओ। मेरा कुछ भी हो जाय, लेकिन मैं इन्हीं के बारे में सोच रहा हूँ।"

मराली ने कहा, "मैं सबके बारे में सोच रही हूँ आलीजाह !"

लुत्फुन्निसा अब तक चुपचाप नवाब के पाँवों के पास लेटी थी। कहा, "आली-जाह, आप जहाँ रहेंगे, मैं भी वहीं रहूँगी।"

मिर्जा गुस्सा हो गये, बोले, "अगर मैं जहन्नुम में जाऊँ तो क्या तुम भी

मेरे साथ जाओगी ?"

लुत्फुन्निसा ने कोई जवाब नहीं दिया। नवाब के पाँवों पर सर रखकर रोने लगी।

मराली ने कहा, "तुम रोओ मत बहन, जब तक मैं हूँ, कोई डर नहीं है।"

मिर्जा मुहम्मद ने कहा, "बेगम साहबा, तुम मीर दाऊद को नहीं जानती। मीर कासिम को भी नहीं जानती। इसलिए ऐसा कह रही हो।"

मराली बोली, "शैतान को किस तरह काबू में किया जा सकता है, यह मैं खूब जानती हूँ आलीजाह, नहीं तो क्या मैं सफीउल्लाह का खून कर सकती थी? मुझे और थोड़ा समय मिलता तो अमीचंद और मेंहदी निसार का भी खून करती। वे अगर खत्म हो गये होते तो आज आपकी यह दशा न होती।"

फिर जरा रुककर कहा, "फिर मैं जा रही हूँ आलीजाह, देखूँ, कैसे उन हराम-जादों को खत्म कर सकती हूँ!"

"बेगम साहबा, तुम सचमुच उनका खून कर सकोगी? क्या सचमुच तुम ऐसा कर सकोगी? अगर ऐसा न कर सको तो कम से कम उनको यह समझा देना कि मैं कभी इस जिन्दगी में उनके रास्ते का रोड़ा नहीं बनूँगा। अगर हो सके तो मुझे थोड़ी-सी जमीन दे दें, जहाँ रहकर मैं चैन से आखिरी जिन्दगी काट दूँगा और कभी किसी के चैन में खलल न डालूँगा। बस, थोड़ी-सी जमीन अगर मिल जाय—"

मराली को याद है, उस दिन यह कहते-कहते मिर्जा मुहम्मद का गला रुँध आया था। बस, नवाब ही नहीं, रानी बीबी की बात भी मराली को याद थी। अगर मुर्शिदाबाद लौटना ही पड़े तो वह सबके लिए ही लौटेगी। मराली ने एक साथ सभी का भला करना चाहा था। बँगला मुल्क के स्वार्थ के लिए न सही, लेकिन चरम सर्वनाश से पहले मराली ने कइयों को बचाना चाहा था। उस दिन उसके मन में यही हुआ था कि इस तरह अंतिम क्षण में उसे ऐसा सु-अवसर मिल जायेगा, यह किसे मालूम था?

एक बार मन ही मन विश्व-ब्रह्मांड के देवताओं को प्रणाम कर मराली ने कहा था, मेरी मनोकामना पूरी करो भगवन्! एक दिन संसार के सुख-ऐश्वर्य के लिए मेरे मन में कामना थी। उस कामना को तुमने निराशा में बदल दिया। अब भगवन्, तुम मेरी एक और कामना, मेरी एक और इच्छा पूरी करके मेरे नारी-जन्म को सार्थक करो!

बाहर आसमान में उस समय चाँद निकल आया था। बड़ी सुनसान रात थी। शायद ऐसी ही रातों में मनुष्य के पाप साँप की तरह फन काढ़कर फुफकारते हैं। ये रातें बड़ी भयंकर होती हैं। इन रातों में अठारहवीं सदी के अमीर-उमराव षड्यन्त्र के सोपान पर खड़े होकर उत्थान का स्वप्न देखते हैं। अंगूरी शराब के जाम को होंठों से लगाकर वे बहिश्त की वास्तविक कल्पना करते हैं। इन्हीं रातों में उन्हें सुन्दर नारियों की जरूरत पड़ती है। नारी के शरीर की वक्रताओं में उन्हें रोमांच का आभास मिलता है।

मीर दाऊद और मीर कासिम। फौजदार और मीर बख्शी। दोनों समान रूप से

क्षुब्ध थे। निराशा, अवहेलना और नेक नजर न पाने के लिए ही वे क्षुब्ध थे। पिछ
दिन सवेरे वे राजमहल से चले थे और उनको मुर्शिदाबाद जाना था। वहाँ नये नव
मीर जाफर के पाँवों पर मिर्जा मुहम्मद को रखकर उनसे इनाम पाने की आशा थी।

सिपाही बजरे के पीछे के हिस्से में थे। आगे के हिस्से में वे ही दोनों थे। आसम
में चाँद हँस रहा था। भीगी-सोंधी हवा बह रही थी। शराब की गर्मी में नदी की ठं
हवा उनको बड़ी अच्छी लग रही थी। मरियम बेगम जब नवाब के बजरे में गयी
उसी समय उन दोनों ने उसे देखा था। बेगम साहबा उनको तरो-ताजा और ब
खूबसूरत लगी थी। जाने दो, उसे अन्दर जाने दो! नवाब के हाथों में हथकड़ी तो
ही। नवाब बड़े मायूस हो गये थे। रो रहे थे। शराब के नशे में उनको नवाब
रोना बड़ा अच्छा लगा था। वे हा-हा कर हँसने लगे थे। अरे, हम क्या करेंगे? ह
तो नवाब के नौकर हैं। जब जो भी नवाब होगा हम उसी का हुक्म बजा लायेंगे।

मीर कासिम ने पूछा था, "नवाब का क्या होगा जनाब?"

मीर दाऊद ने कहा था, "होगा क्या? फाँसी होगी।"

"फाँसी? फाँसी होने पर तो बड़ा तमाशा होगा जनाब!"

इतना कहकर मीर कासिम ने शराब की प्याली मुँह से लगायी थी। नवा
की फाँसी होने पर कैसा तमाशा होगा, मीर कासिम नशे की खुमारी में यही सोच
लगा था।

अचानक मीर कासिम ने मानो भूत देखा। अरे, मरियम बेगम साहबा साम
आकर खड़ी है। औरत है तो बड़ी खूबसूरत!

"आइए बेगम साहबा, आइए।"

मराली दाँत पीसकर उनके सामने से जाने लगी। हे ईश्वर, एक दिन बड़े दुः
से, बड़ी चोट सहकर इस विश्व-व्यापी श्मशान में पाप के पंक्ति-भोज में बैठी थी। उ
दिन से शुरू करके आज तक मैंने बहुत कुछ देखा। बहुत कुछ सहा और बहुत कु
झेला। शायद और भी बहुत कुछ देखना, झेलना और सहना होगा। लेकिन आ
का-सा अवसर शायद फिर कभी नहीं आयेगा। तुम मेरे सारे पापों को पवित्र बना
भगवन्! आज मेरा सारा कलंक धो डालो! आज तुम्हारा ही नाम लेकर मैं शैता
की भोग्या बनूँगी।

"अरे, बड़ा खूबसूरत माल है जनाब!"

नशे की हालत में फौजदार और मीर बख्शी एक हो गये। नारी के नाम औ
गंध ही शायद ऐसे हैं। नारी के आगे सब एकाकार हो जाते हैं।

मराली ने साड़ी को ढीला कर आँचल बदन पर से सरका दिया। कह
"काफी देर से शराब नहीं पी मेहरबान, बड़ी प्यास लगी है। देंगे बाँदी को थोड़ी-
शराब?"

मराली मीर दाऊद से मानो सटकर बैठ गयी।

मीर कासिम भी मराली के पास खिसक आया। बोला, "मुझ पर भी ज

नजरे इनायत हो बेगम साहबा ! मैंने क्या कसूर किया है ?"

मराली ने दोनों की तरफ दोनों हाथ बढ़ा दिये। कहा, "आप दोनों शराब की प्याली दीजिए जनाब ! मैं दोनों के हाथों से पीऊँगी।"

दोनों ने दो तरफ से शराब की दो प्यालियाँ मराली के होंठों के पास बढ़ायीं। लेकिन दोनों उस समय नशे में धुत थे। उनके हाथ लरजते ही शराब की प्यालियाँ छलक गयीं और मराली के मुँह, छाती और बदन शराब से भीग गये।

मराली खिलखिलाकर हँस पड़ी।

"आप लोग भी क्या हैं जनाब, मुँह तो मेरा एक है, किसे पहले खुश करूँ ?"

मीर कासिम की उम्र कम थी। वह झूम उठा। वह सरककर मराली से और सटकर बैठ गया। कहा, "पहले मुझे अशरफजादी !"

मीर दाऊद भी क्या पीछे हटनेवाला था ? वह भी मराली के बदन पर लुढ़क कर बोला, "पहले मुझे महबूबा !"

यह तमाशा देखकर मराली दिल खोलकर हँसने लगी। हँसते-हँसते उसके बदन पर से आँचल सरकने लगा। वह जितना ही आँचल से अपना बदन छिपाने लगी मीर दाऊद और मीर कासिम उतना ही उसका आँचल खींचने लगे।

"बड़ा आराम मिला जनाब, बड़ा आराम मिला !"

मीर कासिम के खून का दौरा तेज हो गया। कहा, "तुम्हारा आराम मैं आसमान में पहुँचा दूँगा अशरफजादी !"

"फिर एक काम कीजिए जनाब, मुझे बहुत शर्म लग रही है। बजरे में नवाब है। नवाब की बेगम है, उनको हटा दीजिए।"

नशे में जैसा मजा है, वैसी ही तकलीफ भी है। लेकिन नशे की हालत में खूबसूरत औरत मिल जाने पर मजा भी बढ़ जाता है और तकलीफ भी कम हो जाती है। उस समय जब उनकी आँखों के आगे नौकरी की तरक्की झलमला रही थी, उसी समय मौज की नाव अपने पाल में हवा भरकर सर-सर आगे बढ़ चली। मन ही मन कहा, कोई परवाह नहीं साकी, जाम पिलाओ !

मीर दाऊद की भी वही हालत थी। सिपाही जो बंदूक लिये तीनों बजरों की रखवाली कर रहे थे, उधर उसका ध्यान नहीं गया। बजरे में जो नवाब, उनकी बेगम और बाँदियाँ कैद हैं उनकी बात भी वह भूल गया।

कहा, "नवाब को हटाओ !"

मीर कासिम ने भी नशे के झोंक में कहा, "निकाल दो नवाब को !"

मीर दाऊद ने कहा, "आओ अशरफजादी, जाम पियो !"

मराली ने दाँत पीसते हुए शराब का प्याला होंठों से लगाया। उसे लगा आग की लपट मानो गले से धीरे-धीरे उतरकर एकदम पेट के निचले हिस्से में पहुँच गयी !

फिर शुरू हो गयी लड़ाई। शैतान और इंसान में, नाखून और दाँत में। फिर उस रात की निस्तब्धता की आड़ मानो फटकर तार-तार हो गयी। अब तक अदब-

कायदे के जिस पर्दे में वे अपना चेहरा छुपाये हुए थे, अब वह पर्दा हट गया और उनका असली रूप प्रकट हो गया। नाखून की खरोंचों और दांत के दागों से मराली के जिस्म का नरम गोश्त हमेशा के लिए दागी हो गया।

मराली ने एक बार अपना चेहरा उठाकर कहने की कोशिश की, "जनाब, अब आप मेरे नवाब को छोड़ दीजिए ! रानी बीबी को छोड़ दीजिए !"

मीर दाऊद उस समय जानवर की तरह मराली के नरम जिस्म को दांतों से काटने लगा था। उसे बात करने की फुर्सत ही कहाँ थी ?

मराली ने मीर कासिम की तरफ देखकर कहा, "आप लागों ने तो कहा था कि आप लोगों के साथ सोने पर आप नवाब को छोड़ देंगे, रानी बीबी को छोड़ देंगे।"

मीर कासिम उस समय लड़ने के लिए अपने को तैयार कर रहा था। एक घूंट शराब और पीकर उसने कहा, "हाँ महबूबा, छोड़ दूँगा। जरूर छोड़ दूँगा, लेकिन उससे पहले...."

मराली रोने लगी। कहा, "लेकिन कब छोड़ेंगे ? मुर्शिदाबाद तो आ ही गया है। अब मौका कहाँ मिलेगा ?"

"चिल्लाओ मत अशरफजादी !"

मनुष्य का ईश्वर भी मनुष्य के दुर्दिन में कभी-कभी इसी तरह मुँह फेर लेता है। एक दिन तामजान में बैठकर मराली रानी बीबी बनकर चेहल-सुतून में आयी थी। शायद उस दिन भी उसने मनुष्य के ईश्वर को इस तरह नहीं पुकारा था। शायद उसी क्षोभ से मनुष्य के ईश्वर ने मुँह फेर लिया। उस दिन तुम्हें पुकारा नहीं था, क्या इसीलिए आज तुम मुझसे इस तरह रूठ गये ! हे भयंकर ! हे प्रलयंकर ! आज मैं पाप का विनाश करने के लिए अपने अंतःकरण की समस्त जाग्रत शक्ति से अपना बलिदान कर रही हूँ। इसे अगर तुम पाप कहते हो तो मैं पापिन हूँ। इसे अगर तुम कलंक कहो तो मैं कलंकिन हूँ। तुम अपने उद्यत कृपाण के आघात से मेरे टुकड़े-टुकड़े कर दो भगवन् ! मैं उफ तक नहीं करूँगी। बस, मेरे नवाब को छोड़ दो। मेरी रानी बीबी को छोड़ दो मेरे बदले उनको मुक्त कर दो। उनको मुक्ति मिल जाने से मैं भी परित्राण पा जाऊँगी। उनको शांति मिलने पर मुझे भी मुक्ति मिलेगी।

"क्या आप लोग अपना वादा पूरा नहीं करेंगे ? क्या आप लोग मुझे धोखा देंगे ?"

दाँत और नाखून उस समय वासना से उद्दाम और उत्ताल हो उठे थे। दुनिया में अब उनको सुख कहाँ ? दौलत की आकांक्षा भी उनमें नहीं थी। आलस्य और विश्राम भी वे भूल गये थे। अब सिर्फ भोग और भोग ! चूड़ांत भोग का उपचार लिए भूरि भोज उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। खुदा तो एक धोखा है। मुल्लाओं के धोखे की बहिश्त में वह भी बेहोश पड़ा है। वह तो कुरान का इंद्रजाल है। औरत ही उस समय उनकी सदाकत थी। औरत ही उस समय उनकी सचाई थी। औरत ही उस समय उनका हक था। और सब कुछ तो मानो झूठ था।

उस वजरे से आड़ में खड़ी दुर्गा ने भी अँधेरे में सब कुछ देख लिया। कहा, "ओ छोटी बहूरानी, देखो-देखो ! मरी की बेहयाई तो देखो।"

छोटी बहूरानी दुर्गा की बात से चिढ़ गयी। कहा, "क्या देखूँ भला ?"

दुर्गा ने कहा, "मरी ने वेहयाई की हद कर दी ! अपना धरम भी बिगाड़ने गयी है। छी ! छी !"

"क्यों ? क्या कर रही है ?"

दुर्गा ने कहा, 'करेगी और क्या ? हम से कहकर गयी कि हमारे बारे में कहेगी लेकिन वहाँ जाकर मर्दों के साथ शराब पीकर बेहयाई की हद कर रही है।"

"कहाँ ?"

दुर्गा ने कहा, "वह देखो न ! वही तो पटरे पर नंगी पड़ी है !"

छोटी बहूरानी ने देखा। दुर्गा ने देखा। आकाश, पवन और अंतरिक्ष ने भी देखा। अतीत, वर्तमान और भविष्य ने देखा। अठारहवीं सदी के बीचों-बीच उस सधिक्षण के इतिहास ने देखा। सबने देखकर घृणा से मुँह फेर लिया। खुले आसमान के नीचे बजरे के एक पटरे पर अवश-अचेतन प्राणलक्ष्मी पड़ी थी। बंगाल-बिहार-उड़ीसा की प्राणलक्ष्मी की अस्थि-पेशी-मज्जा को मुगल साम्राज्य के कौवे-चील-शकुन नोंचने लगे थे।

मराली उस समय भी घिघियाकर कहने की कोशिश कर रही थी, "आप लोगों ने मुझे इस तरह क्यों धोखा दिया ? इस तरह क्यों लूट लिया ?"

उसी समय तीनों बजरे मुर्शिदाबाद के घाट पर आ लगे।

●

मोतीझील के फाटक के सामने उस समय पहरा देने के लिए कोई नहीं था। जो भी थे वे भाग गये थे। एक-एक कर सभी बेगम साहबाओं को पीछे के दरवाजे से बजरे में बैठाया गया। गिन-गिनकर उनको बजरे में बैठाया गया। कोई छूट न [illegible] मिर्जा मुहम्मद का कोई भी अपना मुर्शिदाबाद में नहीं रहेगा। मुर्शिदाबाद [illegible] मीर जाफर के लिए निष्कंटक करनी होगी। मीरन खुद खड़ा होकर देख-[illegible] रहा था।

मेंहदी निसार खड़ा था। उसने तेज निगाह से चारों तरफ देखा। [illegible] भी खड़ा होकर देख रहा था। एक-एक को गिन-गिनकर बजरे में [illegible] रहा था।

—नानी बेगम !

—घसीटी बेगम !

—अमीना बेगम !

—मयमाना बेगम !

—लुत्फुन्निसा बेगम !

अचानक मेंहदी निसार को ख्याल आया।

"अरे, नवाब की बच्ची कहाँ गयी ?"

मीरन ने कहा, "अरे उसे रहने दो। वह तो बच्ची है। उसे जहाँगीराबाद भेजकर क्या होगा ?"

सब के बाद दो सहमे पाँव आगे बढ़ते दिखाई पड़े।

मीरन ने गौर कर देखा। फिरंगी के बच्चे क्लाइव की इसी पर नेक नज़र पड़ी है। यही मरियम बेगम है! इसी ने सफ़ीउल्लाह का खून किया था। यह रहेगी तो मुर्शिदाबाद में आग लगा देगी।

मीरन ने हुक्म दिया, "जल्दी कर! जल्दी!"

बजरे तैयार खड़े थे। मल्लाहों ने रस्सी खोल दी। डांड़ों के चलने से पानी में छप-छप आवाज होने लगी।

मीरन ने मल्लाहों को पुकारकर कहा, "भगवानगोला की ओर बजरों को धीरे-धीरे ले चलो। मैं आ रहा हूँ।"

उधर नवाब की टोली आ रही थी। भीड़ में से उसकी आवाज आयी। मीर दाऊद और मीर कासिम नवाब मिर्जा मुहम्मद को सड़कों से पैदल लिये आ रहे थे। अब देर नहीं की जा सकती। जो बेगमात मोतीझील में रह गयीं, वे क्लाइव को भेंट की जायेंगी। अब वे क्लाइव की संपत्ति हैं।

फाटक के सामने आते ही मेजर किलपैट्रिक से भेंट हो गयी।

"कहिए साहब, क्या खबर है ?"

मेजर किलपैट्रिक ने सारी बात समझा दी, "इन्हीं का नाम हिरण्यनारायण राय है। ये हतियागढ़ के जमींदार हैं। कर्नल साहब ने हुक्म दिया है, मरियम बेगम को इनके सुपुर्द कर दिया जाय।"

डिहीदार रजा अली ने एक बार छोटे सरकार की तरफ देखा। लेकिन मानो वह पहचान ही न पाया।

"क्लाइव साहब का हुक्म है ?"

"येस !"

"लेकिन क्लाइव का हुक्म तो मैं नहीं मान सकता। मीर जाफर साहब का हुक्म हो तो कहिए ?"

किलपैट्रिक ने कहा, "मीर जाफर ने ही तुम्हारे पास भेजा है।"

मीर जाफर का नाम सुनकर मीरन मानो मुरझा गया।

"बेगमात तो आज दरबार में क्लाइव साहब के सामने हाजिर की जायेंगी। उस समय क्लाइव साहब जिस बेगम को जिसे चाहे दे दें।"

किलपैट्रिक ने कहा, "नहीं। पहले मरियम बेगम को इस जेन्टलमैन के सुपुर्द कर दो। कर्नल का ऑर्डर है।"

ऑर्डर है! तो फिर तुम्हीं हुक्म बजा लाओ। हो सके तो मरियम बेगम को ढूंढ़

करेगा ?"

मीरन रुका नहीं। कहा, "अब आपके जो मन में आवे कीजिए साहब, मुझे फुर्सत नहीं है। मैं चलता हूँ, नवाब की टोली आ रही है। बहुत सारा काम पड़ा है।"

ड्योढ़ीदार रजा अली और मेंहदी निसार भी मीरन के साथ ही चले गये।

●

उधर मंसूर-गद्दी में उस समय बंगाल की भाग्य-लिपि लिखी जा रही थी। बस, बंगाल ही नहीं, पूरे हिन्दुस्तान की भाग्य-लिपि लिखी जा रही थी। मुर्शिदाबाद के घाट पर जब बजरे आ लगे तो मराली निश्चल-निर्वाक् बन गयी। उसे ख्याल ही नहीं था कि कब बजरे घाट पर आ लगे और कब हजारों लोग नवाब को देखने के लिए आ गये।

वह उस समय भी घिघियाकर कहना चाह रही थी, "तुम लोगों ने मुझे आखिर धोखा ही दिया!"

मल्लाह-माँझियों और सिपाही-बरकंदाजों की भीड़ में मराली की बात किसके कान तक पहुँच सकी? इतिहास की किताबों में तो मरियम बेगम का नाम ही नहीं है। उद्धवदास अगर 'बेगम मेरी विश्वास' काव्य न लिखता तो मैं उसके बारे में जान भी नहीं सकता था। एक मामूली गाँव की एक मामूली लड़की। वह दिल्ली से मुजरा करने नहीं आयी थी। चौंसठ कलाओं के आकर्षण से उसने नवाब को मुट्ठी में करना नहीं चाहा था। वह नवाब की दिल-पसंद बेगम भी नहीं हो सकी थी। मरियम बेगम का आविर्भाव मामूली ढंग से हुआ था। शायद इसीलिए रियाजुस्सलातीन के मुताशरीन में उसका उल्लेख नहीं मिलता। गुलाम हुसैन के रोजनामचे में भी उसका नाम नहीं है। तारीखे बंगाल में भी मरियम बेगम का नाम नहीं है।

यहाँ तक कि जॉर्ज फॉरेस्ट, सी० आई० ई०, जिन्होंने दो खंडों में क्लाइव साहब की जीवनी लिखी है, उनके जीवनी-ग्रन्थ में भी ढूँढ़ा था। फिर सन् १९६३ में छपी माइकेल एडवर्ड्स की किताब 'बैटल ऑफ प्लासी' में भी मरियम बेगम का नाम नहीं मिला। इसका कारण यह है कि मराली इतिहास से खो गयी थी। इतिहास में ऐसे अनेक खो जाने वालों का भी इतिहास लिखा है। जो सब की निगाह की आड़ में रहकर इतिहास का सर्जन करते हैं वे अंत तक आड़ में ही रह जाते हैं। वे हमेशा के लिए ओझल हो जाते हैं।

उस दिन मरियम बेगम के साथ भी ऐसा ही हुआ था।

मुर्शिदाबाद के गंगा-घाट पर जब सभी नवाब की चरम दुर्दशा देखने में व्यस्त थे, उस समय बेगम-बाँदियों के बीच मराली का घूँघट में छिपा चेहरा कोई भी न देख सका था। किसी ने देखना भी नहीं चाहा था। मयदापुर में क्लाइव ने उसे जो तांत की साड़ी खरीद दी थी उसी को पहने वह उस टोली के साथ घाट पर उतरी थी। उसका सारा बदन दुख रहा था। कमर और सर में बेहद दर्द था। नाखून और दांत की

ज्जा साड़ी में छिपाकर वह सर झुकाये चल रही थी। वह मन में यही कहे जा रही
। कि इस संसार ने मुझे बस धोखा ही दिया। किसी का मैं कोई उपकार न कर सकी।
वाब मिर्ज़ा मुहम्मद आगे-आगे चल रहे थे। उनके पीछे थी लुत्फुन्निसा बेगम। उनके
छे थी शीरीना। वह नवाब की बच्ची को गोद में लिये चल रही थी। उनके पीछे
दुर्गा, छोटी बहूरानी और मराली।

मीरन एक बार आगे देख रहा था तो एक बार पीछे। कोई असामी कहीं
ाग न जाय।

"पीछे कौन है रे?"

चारों तरफ़ खड़े लोगों की भीड़ में से कुतूहल-भरे प्रश्न सुनाई पड़े। कोई
सी को नहीं पहचानता था। वे बस नवाब को पहचानते थे। और सभी उनके लिए
जनबी थे। चेहल-सुतून के हरम की बेगम-बाँदियों को वे भला कैसे पहचान सकते
? कभी तो किसी ने उनको सड़क पर नहीं देखा था। उनकी बात तो दूर आकाश के
ाँद-सूरज-तारों ने भी उनको कभी न देखा था। कुल कितनी बेगम-बाँदियाँ चेहल-
ुतून में थीं, कौन उनकी खबर रखता था?

मीर दाऊद और मीर कासिम सबके आगे गाज़ी मर्द बने सीना तानकर चल
हे थे। मानो वे ही इस उत्सव के मुख्य आकर्षण थे और सब-कुछ गौण था। लेकिन
ल रात की बात किसी को नहीं मालूम थी। फ़ौजी पोशाक की आड़ में उनका असली
प लोगों की आँखों से छिपा था। उनके दाँत और नाखून जो इतने तेज थे, यह भी
ोई न जान सका। फिर भी वे आज ही चेहल-सुतून के दरबार में खिलअत और
नाम पायेंगे।

एक क्षण के लिए मराली के पाँव रुक गये।

एक जानी-पहचानी आवाज़ मराली के कानों में आयी। बशीर मियाँ था। साथ
ी साथ उसे एक और की भी बात याद आयी। शायद वह अभी भी चेहल-सुतून के अँधेरे
में बुरके में छिपा चरम आदेश की प्रतीक्षा में मुहूर्त गिन रहा हो। तुमने अपने को
्योछावर करना चाहा था लेकिन तुम्हें मालूम भी न हो सका कि तुम मुझे बचा न सके।
ुमने चाहा था, मैं नवाब-मसनद-अमीर-उमराव और विलास-व्यसन-वैभव से दूर जाकर
रति के साथ शांतिमय घर बसाऊँगी। मैं निरापद हो सकूँ इसीलिए तुमने अपने ऊपर
ारी विपत्ति ले ली थी। लेकिन तुम मुझे बचा नहीं सके। उनके नाखून और दाँतों की
हिंस्रता से आज मैं निःशेष हो गयी हूँ।

कहीं एक जगह आकर नवाब की टोली रुक गयी। मीरन साहब की आवाज़
सुनाई पड़ी। सभी उत्सुक हो उठे। असामी भाग न जायें। लेकिन हम भागेंगे कैसे?
तुम लोगों ने क्या हमें भागने लायक भी रखा है? मनुष्य का धर्म-विश्वास-अस्तित्व
सब कुछ ध्वंस करके तब तुम हमें मुक्ति दोगे।

जिस कमरे में मराली को रखा गया था वह बड़ा ही अँधेरा था। अँधेरे का
कष्ट अलग था। यह कष्ट बस अस्तित्व का नहीं, लज्जा-धिक्कार-प्रवंचना का भी था।

उस समय भी मराली को विश्वास नहीं हो रहा था। मैंने जो कभी नहीं किया था, वह भी तुम लोगों के लिए किया। लज्जा-घृणा सब कुछ को तिलांजलि देकर हँसते-हँसते तुम लोगों की शराब होंठों से लगायी लेकिन तुम्हीं लोगों ने मुझे धोखा दिया। क्या कभी किसी को इस तरह भी ठगा जाता है ?

पास-पास कई कमरे थे। मीरन ने सभी को अपने मकान में रखा था। इस बीच कब लुत्फुन्निसा को मोतीझील में भेज दिया गया, किसी को पता ही न चला। मीरन सब काम सोच-समझ कर हिसाब लगाकर करता था। उसने बाँदियों को रहने दिया था, क्योंकि बाँदियों से कोई डर नहीं था। वे कभी छूटकर मसनद पर दावा नहीं करेंगी। वे ठहरी बाँदियाँ, जो भी मसनद पर बैठेगा, उसी की बेगमों की खिदमत करना उनका काम था।

मीर दाऊद ने मीरन से कह दिया था, "होशियार रहियेगा मीरन साहब, नवाब भागने की फिक्र में है।"

मीरन ने बगुले की तरह गर्दन घुमाकर पूछा था, "क्यों! नवाब ने कुछ ऐसा कहा ना किया है क्या ?"

"कहा नहीं है। बस छोड़ देने के लिए कहा था। और कहा था कि कभी मसनद के लिए लड़ाई नहीं करेगा। कह रहा था, छोड़ देने पर जहाँगीराबाद में जाकर बाकी जिन्दगी बिता देगा।"

मीरन ने यह सब सुनकर कहा था, "ठीक है, बाकी जिन्दगी काटने का इंतजाम मैं किये देता हूँ।"

"नवाब का भी इंसाफ होगा क्या ?"

मीरन ने कहा, "जरूर होगा।"

"कौन इंसाफ करेगा ?"

"नवाब मीर जाफ़र अली महाबत जंग करेंगे। मुर्शिदाबाद के आलमगीर करेंगे। नवाब का इंसाफ नवाब ही करेंगे। इंसान का इंसाफ इंसान के बिना और कौन करेगा ?"

फिर जरा रुककर कहा, "शाम को दरबार में आयेंगे न फौजदार साहब ?"

"जरूर आऊँगा। मीर कासिम भी तो आयेगा न ?"

"हाँ-हाँ, जरूर आयेगा। अभी मैं चलूं। लुत्फुन्निसा बेगम को जो मोतीझील भेज दिया है, यह किसी को मालूम न हो। क्या लुत्फुन्निसा बेगम के पास कुछ गहने थे ?"

मीर दाऊद यह सवाल सुनकर घबड़ा गया। मीर कासिम ने फौरन कहा, "नहीं जनाब, कुछ भी नहीं था।"

"सुना था, नवाब काफी गहने-जेवर और अशर्फियाँ लेकर भागा था। वे सब कहाँ गये ?"

"पता नहीं कहाँ गये! शायद पकड़े जाने के डर से गंगा में य फेंक दिये हों।

यह भी तो हो सकता है किसी को दे दिये हो।"

"इस कोठरी में दोनो कौन हैं ?"

मीर दाऊद ने कहा, "नवाब की बाँदियाँ है।"

"और इस कोठरी में ?"

मीर दाऊद ने कहा, "इसमें मरियम बेगम साहबा हैं।"

मरियम बेगम साहबा ! मीरन ने आश्चर्य से फौजदार साहब की ओर देखा। मरियम बेगम को तो अभी उसने बजरे से जहाँगीराबाद भेज दिया था। मरियम बेगम फिर यहाँ कैसे आ गयी ?

"हाँ जनाब ! मैं कह रहा हूँ न मरियम बेगम है। मैंने और मीर कासिम साहब ने बजरे पर उसको लेकर महफिल भी जमायी थी।"

"मतलब ?"

"मतलब एक साथ शराब पी, मौज की। बढ़िया माल है जनाब ! सफीउल्लाह का खून किया था, याद नहो है ! इसीलिए जरा बदला ले लिया।"

"बदला कैसे लिया ?"

मीर कासिम हा-हा कर हँसने लगा। कहा, "अरे जनाब, हम दोनो ने मिलकर जरा मौज-मजा किया। देखता हूँ, आप इशारा भी नहो समझते। माल बड़ा खूबसूरत है जनाब, मिजाज खुश हो गया।"

मीरन नाराज हो गया। कहा, "आप गलत कह रहे हैं जनाब ! एकदम गलत ! मरियम बेगम को मेंहदी निसार साहब ने चेहल-सुतून मे गिरफ्तार कर रखा था, वहाँ से मैं उसे मोतीझील ले गया था और अब तो वह जहाँगीराबाद गयी है।"

"यह कैसे हो सकता है जनाब ? तोबा ! तोबा !"

मीर दाऊद और मीर कासिम घृणा से 'तोबा-तोबा' कर उठे। फिर क्या उन्होने पिछली रात मरियम बेगम को बाँदी के साथ मौज की थी ! बाँदी का जूठा प्याला होंठों से लगाया था ?

पिछली रात की बातें याद पड़ते ही मीर दाऊद और मीर कासिम का मन घृणा से भर उठा। मन-ही-मन दोनों ने अपने कान पकड़े ! अब ऐसी बेवकूफी फौजदार साहब कभी नहीं करेगा ! रात के अँधेरे में पहचानना मुश्किल था, इसलिए ऐसी गलती हो गयी। फिर भी बाँदी हो या बेगम, माल बढ़िया था।

"कहो मीर कासिम, छोकरी खूबसूरत थी न ?"

"बड़ी खूबसूरत थी जनाब, मुझे तो बड़ा मजा मिला।"

मीरन वहाँ से चला गया था। उसके जिम्मे अनेक काम थे। बाँदी की कहानी सुनने से भला उसका काम कैसे चलता ? उस फिरंगी के बच्चे की सनक की भी दवा करनी थी। मरियम बेगम पर उसकी भी निगाह पड़ी थी। अब उसे भी एक बाँदी देकर कहना होगा—यही मरियम बेगम है !

मीरन सीधे मीर जाफर के पास गया। सबेरे से उसे खूब खटना पड़ा था।

शहर का सारा काम-काज ठप्प था। चेहल-सुतून की चाभी भी क्लाइव ने ले ली अब वह चाभी किसी को दे नहीं रहा था।

मीरन खफा हो गया था। कहा, "आपने चाभी क्यों दे दी ?"

मीर जाफर ने कहा, "चाभी न देता तो क्या करता ?"

"अब अगर सारा रुपया-पैसा वही ले जाय तो क्या होगा ?"

"ले भी जाय तो मैं क्या करूँगा ?"

"फिर सिपाहियों की तनख्वाह कहाँ से दी जायेगी ? वे बिगड़ जायेंगे होगा ? मैंने इतने दिनों तक उन लोगों को समझा-बुझाकर रखा है।"

मीर जाफर भी नाराज हो गया। बोला, "तेरी अक्ल से चलें तो फिर हो तुझसे जो कुछ कहा है, वही कर।"

"मैंने दरबार का इन्तजाम किया है। अमीर-उमरावों को भी इत्त दी है।"

"जगत्सेठ जी से कहा है न ?"

"कहा है।"

"अमीचंद से भी कहा है न ?"

"उससे कहने की जरूरत नहीं पड़ी। वह अपनी तरफ़ से आकर मुझसे ले गया है।"

"फिरंगी साहबों से भी कहा है न ?"

"कोई भी फिरंगी साहब बचा नहीं है। किलपैट्रिक, ड्रेक, वाट्सन, वाट् फिरंगी सिपाहियों के लिए भी दरबार में बैठने का इंतजाम किया गया है।"

मीर जाफर मानो इससे भी खुश नहीं हुआ। पूछा, "उनके खाने-पीने क इंतजाम किया है ? उन सबको कोई तकलीफ न हो।"

मीरन ने कहा, "मेंहदी निसार और रजा अली को इसका जिम्मा दे दिय

"वे सब साले चोर हैं ! मेंहदी निसार का कभी यकीन नहीं करना। व वार इस तरफ है तो एक वार उस तरफ। वह रुपये-पैसे भी चुरा सकता है। कड़ी रखना।"

मीरन चला। लेकिन सर उठाते ही देखा, क्लाइव आ रहा था। साथ मे दास था।

मीरन ने क्लाइव को देखते ही कोर्निश की। कहा, "आदाब अर्ज है किसी बात की तकलीफ तो नहीं है ?"

मीरन ने देखा साहब का चेहरा संजीदा था। मुर्शिदाबाद आने के बाद का ऐसा संजीदा चेहरा उसने कभी नहीं देखा था।

क्लाइव ने पूछा, "मीर जाफर कहाँ है ? ह्वेयर इज़ मीर जाफर अली ?

"वह हैं सर ! वह हैं।"

मीरन का कलेजा धक्-धक् करने लगा। फिरंगी साहब बिगड़ते ही त

मचा देगा। फिर मीरन और मीर जाफर की भी खैरियत नहीं रहेगी।

क्लाइव की आवाज सुनते ही मीर जाफर उठ खड़ा हुआ। कहा, "कहिए हुजूर! क्या हुआ है?"

अचानक साहब मानो फट-सा पड़ा। ऐसा गुस्सा करते कभी किसी ने साहब [illegible] नहीं था।

"क्या हुआ है कहिए न हुजूर! क्या खता हो गयी है?"

"मैंने मरियम बेगम की खबर लाने को कब-से कहा है, अभी तक उसकी खबर क्यों नहीं मिली? ह्वेयर इज शी?"

मीर जाफर को यह सुनकर शर्मिन्दा होना पड़ा। ताज्जुब की बात है! जिधर खुद नहीं देखेगा, उधर ही गलती होगी। साहब की इतनी खातिरदारी करने के बाद भी एक औरत भेंट न कर सका! चेहल-सुतून में इतनी औरतें रहते आज एक औरत के लिए साहब को गुस्सा होना पड़ा!

क्लाइव के सामने ही मीर जाफर ने मीरन को दस गालियाँ दीं—उल्लू! बेवकूफ! गधा! जहन्नुम का कुत्ता! उर्दू और फारसी भाषा में न जाने और कितनी गालियाँ दीं, साहब समझ नहीं सका। उर्दू और फ़ारसी में जो इतनी गालियाँ हैं और बाप भी बेटे को इतनी गालियाँ दे सकता है, यह भी साहब नहीं जानता था।

मीरन ने एक का भी जवाब नहीं दिया। सर झुकाये वह गालियाँ सुनता रहा।

फिर मीर जाफर ने कहा, "आप अपने महल में जाइए हुजूर, मैं मरियम बेगम साहबा को आपके पास भेज रहा हूँ।"

उसी दिन मंसूर-गद्दी में मीर जाफर साहब के महल की मेहराब के नीचे खड़े होकर मीरन ने एक और जालसाजी की। मीरन ही नहीं, शायद इतिहास भी कभी-कभी ऐसी जालसाजी की शरण लेता है। जो मरियम बेगम मुर्शिदाबाद में नहीं थी जिस मरियम बेगम को बजरे में बैठाकर जहाँगीराबाद भेजा गया था, बजरे के छप्पर के नीचे बैठी जिन मरियम बेगम की आँखें आसमान देख रही थीं उसी के नाम [illegible] दिन मंसूर-गद्दी के बरामदे में खड़े होकर और एक जालसाजी की गयी।

क्लाइव ने और कुछ नहीं कहा। उसने पास खड़े उद्धवदास से कहा [illegible] पोएट!"

उस काल में सारे हिन्दुस्तान के निवासियों की बुद्धि-विद्या-[illegible] के चिह्न प्रकट होने लगे थे। दिल्ली के बादशाह के नाम [illegible] स्थान के राजपूतों में घरेलू झगड़े थे। दक्षिण का सूबेदार [illegible] में लगा था, मराठे लूटपाट करने में व्यस्त थे और पूर्व [illegible] आँखों की आड़ में दाँत और नाखून के हथियार तेज किए [illegible]

इतिहास के उसी संधिकाल में एक लड़की [illegible]

गढ़ जैसे मामूली जनपद से निकल पड़ी थी। उसके पास न विद्या थी, न बुद्धि थी और न कोई दूसरा ही सहारा था। फिर न जाने कैसे हिन्दुस्तान के राष्ट्र-विप्लव के साथ उसका भाग्य जुड़ गया। अपनी आँखों से उसने भाग्य-विधाता का परिहास देखा और धर्म-अधर्म का कलह भी। अर्थ-लिप्सा का चरम विकास और वासना के अनिर्वाण ज्वालानल भी देखे, फिर एक दिन उसी में उसने आत्माहुति भी दी। उसके एक ही जीवन में इतना सब कुछ घट गया। यह अनुभव भी बड़ा विचित्र था। उद्धवदास ने उसके देखने को अपने देखने में रूपांतरित किया। मरियम बेगम को उसने अमर बना दिया।

उद्धवदास ने लिखा था—यह कलियुग है। लेकिन सत्ययुग के मनुष्य दूसरे प्रकार के थे। उस समय मनुष्य की साधना थी मुक्ति की साधना। अध्यात्मवाद का अवलम्बन कर मुक्ति की साधना करना उस समय के लोगों का प्रधान काम था। फिर आया त्रेता युग। उस समय धर्म का आविर्भाव हुआ। क्षत्रियों का जन्म हुआ! दुर्जनों के हाथ से सत्यनिष्ठ की रक्षा का धर्म। पाप के हाथ से पुण्य को बचाने का धर्म। फिर आया द्वापर! द्वापर में न्याय की मर्यादा बढ़ी। सच्चे मार्ग से अर्थोपार्जन आरंभ हुआ। वैश्यों का जन्म हुआ। अर्थ के सद्व्यवहार से मनुष्य समृद्ध हो उठे। सबके बाद कलि का आगमन हुआ। क्रोध के औरस और हिंसा के गर्भ से कलि का जन्म हुआ। धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष सब बह गये। म्लेच्छों का आगमन हुआ। स्वार्थ से स्वार्थ का संघात शुरू हुआ। देश से विदेश का संग्राम शुरू हुआ। मनुष्यों में परस्पर संघर्ष छिड़ गया। यौन-क्षमता से मनुष्य के श्रेष्ठत्व का विचार होने लगा। दुर्जनों की विजय हुई। पाप को प्रतिष्ठा मिली।

पांडुलिपि पढ़ते-पढ़ते अवाक् हो गया। मामूली एक घुमक्कड़ आदमी था उद्धवदास। उस दिन उसे किसी ने नहीं पहचाना था। शायद मराली भी उसे पहचान न पायी थी। हतियागढ़ के छोटे सरकार और कृष्णनगर के महाराजा भी अंत तक उसे पहचान नहीं सके थे। लेकिन उसे विदेश से आया एक विधर्मी पुरुष ही शायद पहचान सका था!

बरामदे से चलते समय उद्धवदास ने पूछा था, "आप मेरे लिए क्यों इतना कष्ट कर रहे हैं प्रभु?"

क्लाइव ने कहा था, "मैंने तुमसे कहा न पोएट, कि मैं तुम्हें चाहता हूँ।"

"लेकिन प्रभु, मैं तो आपको नहीं चाहता!"

"न चाहो। इससे मेरा कोई नुकसान नहीं है। लोग तो मेरी निन्दा करते हैं। कोई कहता है, मैं अत्याचारी और लोभी हूँ। कोई कहता है, औरतों के लिए मेरे मन में दारुण लोभ है। फ्रेंच अगर मुझे पा जायें तो मार ही डालें। डच भी मेरे ऊपर खुश नहीं हैं। मैं सभी का दुश्मन हूँ। नवाब को हथकड़ी लगाकर यहाँ लाकर रखा गया है लेकिन मीर जाफर अली क्या नवाब से अच्छा है?"

उद्धवदास ने कहा "मैं इस बारे में कभी नहीं सोचता प्रभु!"

"तुम न सोचो, लेकिन मुझे तो सोचना पड़ता है पोएट! मैं किसी को क्षमा

नहीं कर सकता। भले के लिए मैं भला हूँ, लेकिन बुरे के लिए मौत हूँ। नवाब को आज दरबार में हथकड़ी पहनाकर जो भी हाजिर करेगा उसे मैं ऐसी सजा दूँगा जैसी सजा कभी किसी ने किसी को नहीं दी होगी।"

"भगवान अगर सजा न दें तो आप सजा देनेवाले कौन होते हैं?"

क्लाइव ने कहा, "तुमने ठीक कहा है पोएट, रोज रात को मुझे भगवान से सजा मिलती है, उसका प्रतिकार कौन करेगा? जानते हो पोएट, रात को मुझे नींद नहीं आती?"

उद्धवदास ने कहा, "मैं तो भर पेट खाकर खूब सोता हूँ प्रभु!"

"सपना नहीं देखते?"

"सपना? हाँ, सपना देखता हूँ प्रभु।"

"सपना देखते हो? तुम भी सपना देखते हो?"

"क्यों प्रभु? सपना तो सभी देखते हैं!"

क्लाइव मानो उत्तेजित हो उठा। कहा, "ताश का सपना देखते हो? हाँ-हाँ, ताश का सपना!"

"आप क्या ताश का सपना देखते हैं प्रभु?"

क्लाइव ने कहा, "हाँ पोएट, रात को जब आँखें बंद हो आती हैं, तभी कोई मेरे कमरे में घुस आता है। वह मुझे ताश दिखाता है—क्वीन ऑफ स्पेड्स! हुकुम की बीबी। मेरी नींद टूट जाती है। मैं चिल्ला पड़ता हूँ! एक दिन तुम्हारी बीबी बगल के कमरे में सोयी थी। मेरे चिल्लाने से उसकी नींद टूट गयी थी और वह दौड़ती हुई मेरे कमरे में आयी थी। वह कुछ समझ न सकी थी। मैंने उसे एक खुराक दवा देने के लिए कहा। उसने मुझे दवा पिलायी तभी मैं फिर सो सका।"

"कौन आता है प्रभु?"

"सक्सेस!"

"सक्सेस क्या है प्रभु?"

"सक्सेस माने यश-ख्याति-जय-ऐश्वर्य-पराक्रम-धन-नौकरी-उन्नति। यही सब कुछ मनुष्य का रूप लेकर मेरे पास आता है। इतने लोगों के रहते मेरे ही पास क्यों आता है, यह मैं नहीं जानता पोएट! मैंने मुंशी से पूछा था, लेकिन उसके पास यह नहीं आता, तुम्हारे पास भी यह नहीं आता। मैंने अपने लोगों में से किसी से नहीं पूछा, किसी से कुछ कहा भी नहीं। इंगलैंड में अपने पिता के पास खत लिखता हूँ, अपनी बीवी पेगी को खत लिखता हूँ, तो इंडिया की सारी बातें लिखता हूँ, लेकिन इस बारे में उनको भी कुछ लिखते डरता हूँ क्योंकि तब वे मुझे देश में लौट आने को कहेंगे।"

चलते-चलते क्लाइव अपने महल के सामने पहुँच गया। उद्धवदास उसके साथ ही चल रहा था। मंसूरगंज की हवेली बहुत बड़ी थी। मोतीझील को अलीवर्दी नवाब खाँ ने मिर्जा मुहम्मद के लिए बनवाया था। उसमें कितने ही बरामदे थे, कितनी ही खिड़कियाँ थीं, कितनी ही मेहराबें थीं और कितने ही चबूतरे थे।

बरामदा पार कर साहब अपने महल में दाखिल हुआ।

सामने खड़े अर्दली ने फौजी ढंग से सलाम किया। महल में दाखिल होते ही पहले बैठक थी। सर के ऊपर मखमली चँदोवा टँगा था, जिसके चारों तरफ भीने झालर थे। इस कमरे के चार कोनों में और भी चार कमरे थे। सवेरे से अभी तक क्लाइव इसी महल में था। इसी बैठक में बैठकर उसने जगत्सेठ से बातें कीं, अमीचन्द से बातें कीं और मुंशी नवकृष्ण से बातें कीं। मीर जाफर अली से भी उसने बातें कीं, मीरन से भी बातें कीं और किलपैट्रिक से भी !

"कौन ?"

उद्धवदास को बैठक में बैठाकर क्लाइव अपने सोने के कमरे में गया था। अचानक लगा, दीवार के पास झालर के पीछे कोई हिला। हाथ की पिस्तौल को साहब ने निशाना साधकर पकड़ा। कोई स्पाई तो नहीं है ! चारों तरफ निगरानी थी, फिर कौन कमरे में घुस आया ?

"कौन हो तुम ?"

झालर फिर हिल गया।

"हू आर यू ?"

पिस्तौल का निशाना बनाकर क्लाइव धीरे-धीरे आगे बढ़ गया। अब कमरे में घुसनेवाली की आवाज सुनाई पड़ी।

"उन सबों ने मुझे ठगा है ! उन सबों ने मुझे...।"

झालर हटाकर देखते ही क्लाइव विस्मित हो गया।

"तुम ? तुम यहाँ कैसे आयीं ? मुझे सब खबर मिली है। मल्लाह लोग मुझे बता गये हैं। तुमको मेरे पास भेज देने के लिए मैंने उन लोगों से कहा था। लेकिन तुम यहाँ कैसे आयीं ?"

मराली ने किसी तरह कहा, "भागकर।"

"लेकिन कैसे भागीं ? किसी ने तुमको देखा नहीं ?"

"नियामत ने मेरे दरवाजे का ताला खोल दिया था और मैं सबकी निगाह बचाकर यहाँ चली आयी। मुझे देखते ही वे मार डालेंगे।"

"और नवाब ?"

"क्या मालूम ? यही कहने के लिए मैं आपके पास आयी हूँ। मैं जानती हूँ अब आप ही नवाब को बचा सकते हैं। नवाब को ही नहीं, नवाब के बगल के कमरे में हतियागढ़ की छोटी रानी बीबी और उसकी नौकरानी हैं, उनको भी आप मेहरबानी कर छुड़ा लें। उनको भी वे पकड़ लाये हैं।"

"उनको क्यों पकड़ा है ?"

"सोचा, ये भी नवाब की बेगमें हैं। उनके लिए मैंने बहुत कुछ किया लेकिन उनको शैतानों के कब्जे से किसी तरह बचा नहीं पायी। यह देखिए, उन शैतानों ने क्या किया है ?"

मराली ने साड़ी का आँचल ढीला कर अपना शरीर दिखाया।

क्लाइव ने पूछा, "यह सब क्या है ?"

मराली ने कहा, "उन सभी ने मुझे नोचा है, काटा है। यही मैं आपको दिखाने आयी हूँ कि वे इंसान नहीं, हैवान हैं।"

"किन्होंने ऐसा किया है ? कौन हैं वे ?"

"मीर दाऊद और मीर कासिम ! मेरे सारे बदन में दर्द हो रहा है। अब मुझसे खड़ा भी नहीं रहा जाता। उन लोगों ने मुझे धोखा दिया है। उन्होंने कहा था, नवाब और रानी बीबी को छोड़ देंगे। इसीलिए मैंने उनके हाथ से शराब भी पी और उनके साथ..."

याद है, मराली की बातें सुनकर थोड़ी देर के लिए क्लाइव का चेहरा लाल हो उठा था। एक तरफ मुर्शिदाबाद के नवाब थे और दूसरी तरफ मराली थी। दोनों के बारे में सोचकर साहब उस दिन समझ नहीं पाया था कि क्या करे। मारे क्रोध के वह थर-थर काँप उठा था।

फिर क्लाइव ने कहा, "क्या तुम चाहती हो, मैं नवाब को छोड़ दूँ ? दरअसल तुम यही चाहती हो ?"

"सिर्फ नवाब को नहीं, हतियागढ़ की रानी बीबी को भी छुड़ा दीजिए।"

"और तुम ?"

मराली ने कहा, "मुझे मेरे पिता के पास हतियागढ़ भेज दीजिए। जहाँ से मैं आयी थी, वहीं लौट जाऊँगी।"

"और तुम्हारा हज़बैंड ? तुम्हारा पति ?"

मराली ने कहा, "पति के पास जाने का अब मुँह नहीं रहा।"

"क्यों क्या हुआ ?"

मराली ने उस समय कोई उत्तर नहीं दिया था। क्या उत्तर देती ? फिर क्लाइव को भी सुनने की फुर्सत कहाँ थी ? उस समय साहब के जिम्मे बहुत सारे काम थे। अमीचंद से हिसाब-किताब करना होगा, चेहल-सुतून में दरबार करना होगा। जगत्सेठ से बातें करनी होंगी। बहुत सारे काम करने थे। यार लुत्फ खाँ, राजा दुर्लभराम और जगत्सेठ के मकान के सामने सिपाई तैनात थे। किसी भी समय मुर्शिदाबाद में ग़दर हो सकता था।

"ठीक है, मैं तुम्हारे पति को लाता हूँ।"

"मेरा पति ?"

"हाँ, पोएट !"

क्लाइव उद्धवदास को बुलाने अपनी बैठक में जा ही रहा था लेकिन मराली ने उसे रोका। कहा, "नहीं-नहीं, उसे मत बुलाइए। मैं भ्रष्ट हो गयी हूँ, भ्रष्ट !"

क्लाइव फिर भी नहीं मान रहा है यह देखकर मराली रो पड़ी। बोली, "आपके पाँवों पड़ती हूँ, उसे न बुलाइए। मेरा धर्म बिगड़ चुका है। मैं भ्रष्ट हो चुकी हूँ।"

क्लाइव उसकी बातों पर ध्यान न देकर बाहर बैठक में आया, लेकिन वहां मेजर किलपैट्रिक खड़ा था। उसके साथ हतियागढ़ के छोटे सरकार भी आये थे।

"कर्नल, मैं मोतीझील गया था। वहाँ मरियम बेगम नहीं है।"

"ह्वाट ?"

छोटे सरकार को देखकर लगा कि वे अभी रो देंगे। उन्होंने कहा, "हाँ, मेरी पत्नी वहाँ नहीं है।"

"कोई बेगम नहीं है ?"

किलपैट्रिक ने कहा, "जो बेगमात वहाँ हैं, उनको बुलाकर मीरन ने दिखाया। मैंने सबका नाम पूछा। पेशमन पेगम, गुलशन बेगम, बब्बू बेगम, तक्की बेगम और बहुत-सी दूसरी बेगमात हैं, बांदियाँ हैं लेकिन मरियम बेगम कोई नहीं है।"

"यह कैसे हो सकता है ?"

छोटे सरकार ने कहा, "जी हाँ, यही मैं सोच रहा हूँ कि यह कैसे हो सकता है ?"

उद्धवदास खड़े होकर उनकी बातें सुन रहा था। वह सब कुछ समझ रहा था और कुछ भी नहीं समझ रहा था।

क्लाइव ने कहा, "अच्छा रुकिए, मैं अभी आता हूँ।"

वह अन्दर चला गया। मराली वहाँ उसी तरह खड़ी थी।

क्लाइव ने उसके पास जाकर कहा, "सुनो, मोतीझील में मरियम बेगम नाम की कोई बेगम नहीं है।"

"कोई नहीं है ?"

"दूसरी बेगमात हैं। पेशमन बेगम, गुलशन बेगम, बब्बू बेगम, तक्की बेगम सभी हैं, लेकिन मरियम बेगम नहीं है।"

मराली ने पूछा, "लेकिन नानी बेगम साहबा ? घसीटी बेगम, अमीना बेगम, मयमाना बेगम और लुत्फुन्निसा बेगम कहाँ गयीं ?"

"कह नहीं सकता। मैंने अपने मेजर को भेजा था, वह सब को देख आया है।"

मराली ने कहा, "लेकिन चेहल-सुतून में देखा है ?"

"नहीं। चेहल-सुतून के मालखाने की चाभी मेरे पास है। मैं वहाँ बाद में जाऊँगा।"

"आप अभी किसी को चेहल-सुतून भेजिए, नहीं तो वे सभी को मार डालेंगे या और कहीं भेज देंगे। उनको आप नहीं जानते। वे शैतान हैं, जानवर हैं, वे सब कुछ कर सकते हैं।"

क्लाइव ने कहा, "ठहरो ! मैं अभी आता हूँ।"

उसने किलपैट्रिक से जाकर कहा, "तुम अभी चेहल-सुतून जाओ। बहुत जल्दी ! मरियम बेगम को उन लोगों ने जरूर चेहल-सुतून में रखा है।"

किलपैट्रिक के साथ छोटे सरकार भी गये।

उद्धवदास की तरफ देखकर क्लाइव ने कहा, "पोएट, आओ मेरे साथ। तुम्हें तुम्हारी बीवी से मिला दूँ।"



मीरन के जीवन में भी वह दिन भारी दुर्योग का दिन था। वह पहले समझ नहीं पाया था कि क्लाइव उससे भी बढ़कर शैतान है। मीर जाफ़र साहब की डाँट सुनकर उसका मिजाज बिगड़ गया था। क्या किया जाय, वह समझ नहीं पा रहा था। मरियम बेगम तो अब तक भगवानगोला के पास पहुँच गयी होगी। अब उसे कैसे वापस लाया जाय और वापस लाये भी क्यों? फिरंगी की खिदमत वह क्यों करेगा? कौन है क्लाइव? कहाँ का यह फिरंगी का बच्चा है जिसकी इतनी खातिर की जाय? नवाब तो मीर जाफ़र साहब हैं। मीर जाफ़र साहब तो मुर्शिदाबाद की मसनद पर बैठ ही गया है, समझ लो।

तभी मेंहदी निसार से मीरन की भेंट हो गयी। रजा अली भी निसार साहब के साथ ही था।

"कहिए जनाब, क्या खबर है? इतने मायूस क्यों हैं?"

मीरन ने कहा, "अरे भाई, फिरंगी के बच्चे ने बड़ी मुश्किल में डाल दिया है। कहता है, मरियम बेगम को हाजिर करो! अब मरियम बेगम कहाँ मिले? उसे क्या मैं पैदा करूँगा? वह तो अब जहाँगीराबाद पहुँचती होगी।"

सच में बड़ी चिंता की बात थी। मेंहदी निसार ने भी सोचना शुरू किया। फिरंगी के बच्चे ने जब जिद पकड़ ली है तब वह आसानी से नहीं मानेगा।

मीरन ने कहा, "बताओ भाई, अब क्या किया जाय? अब्बाजान अलग मुझ पर बिगड़ रहे हैं, गालियाँ दे रहे हैं।"

डिहीदार रजा अली कोई रास्ता नहीं बता सका। बस इतना कहा, "हाँ, बड़ी मुसीबत हो गयी।"

मेंहदी निसार ने कहा, "साहब ने जिद पकड़ ली है तो अब आसानी से मानेगा नहीं। उसे मरियम बेगम जरूर देनी होगी।"

उधर से मीर दाऊद आ रहा था। उसके साथ मीर कासिम भी था। उन लोगों ने भी यह सब सुना। सचमुच, बड़ी मुसीबत हुई! साहब तो अकेले नहीं है। उसके साथ उसके अमीर-उमराव और सिपाही भी हैं।

अचानक मीर दाऊद को एक उपाय सूझा।

कहा, "जनाब, मेरे दिमाग में एक तरकीब आयी है।"

सभी उत्सुक हो उठे। पूछा, "कौन-सी तरकीब?"

मीर दाऊद ने कहा, "एक काम कीजिए जनाब, जफरगंज से जिस औरत को पकड़ लाया हूँ, उसी को क्लाइव के सामने हाजिर कीजिए। कहिए, इसी का नाम

ारियम बेगम है। वह पहचान नहीं पायेगा।"

यह तरकीब सभी को पसंद आयी।

मेंहदी निसार ने कहा, "बड़ी अच्छी तरकीब है।"

रजा अली ने भी कहा यही ठीक होगा।

उस दिन सभी ने यह मान लिया कि इससे बढ़कर कोई तरकीब नहीं सकती। क्लाइव उस समय अपने महल में इंतजार कर रहा था। देर करने से साहब नाराज हो सकता था। फिर मीर जाफर के पास फिर आदमी भेज सकता था। तब फिर मीर जाफर बुलाकर डाँट-फटकार करेगा। इसलिए देर करने से कोई फायदा नहीं।

मीरन के साथ सभी उसके मकान पर पहुँचे तो उनके सर पर बिजली गिरी। मकान के पिछवाड़े एक कतार में कई कोठरियाँ थीं। मीरन ने नियामत पर देख-रेख करने का जिम्मा छोड़ दिया था। मोतीझील का खिदमतगार नियामत ही उन सबकी खबरदारी कर रहा था। उसी के पास उन कोठरियों की चाभियाँ थीं। नियामत के अलावा और जो पहरेदार थे, वे भी उस समय वहाँ नहीं थे। मकान का वह हिस्सा भायँ-भायँ कर रहा था। सभी कोठरियों के ताले खुले थे।

"बाँदियाँ कहाँ गयीं ?"

मीरन ने कोठरी में झाँककर देखा। अच्छी तरह देखा। कहाँ गयीं बाँदियाँ ?

वह बगल की कोठरी में गया। वह कोठरी भी खाली थी। मीरन तीसरी कोठरी में गया। मिर्जा मुहम्मद इसी कोठरी में थे।

या अल्लाह !

अँधेरे में हथकड़ी पहने नवाब चुपचाप बैठे थे। शायद भागते। लेकिन मीरन के ठीक समय पर पहुँचने से ही शायद वे भाग नहीं सके !

सामने मीरन को देखकर नवाब ने सर उठाया। आँखों में कौतूहल था।

"कौन ? कौन हो तुम लोग ?"

मीरन ने कोई जवाब नहीं दिया। जल्दी से दरवाजा बंदकर वह बाहर आया।

मीर दाऊद ने पूछा, "नवाब अन्दर है ?"

मीरन ने कहा, "हाँ जनाब, खुदा ने बचा लिया है। नियामत पर जिम्मा देकर गया था, लेकिन वह बेईमानी कर भाग गया है। अब वह कम्बख्त मिल जाय तो उसे कत्ल करूँगा।"

"अच्छा किया जो लुत्फुन्निसा बेगम को पहले ही हटा दिया था। नहीं तो वह भी भाग जाती जनाब !"

मीरन को अब एकदम फुर्सत नहीं थी। किसी भी समय क्लाइव बुला सकता था। मीरन ने दूसरे पहरेदार को बुलाया।

"महम्मद बेग, नियामत कहाँ है ?"

बेग ने कहा, "नियामत मुझसे कुछ कहकर नहीं गया हुजूर !"

"चाभियाँ तुझे पास दे गया है ?"

"नहीं हुजूर !"

"फिर दूसरे ताले-चाभी ले आ।"

दूसरे ताला-चाभी आये। मिर्जा मुहम्मद की कोठरी के दरवाजे पर फिर से ताला लगाया गया। जो भागे हैं, भागें; लेकिन नवाब न कहीं भाग जाय ! देखना, होशियार रहना ! नवाब भाग गया तो गजब हो जायेगा। मीर जाफर साहब का नवाब बनना फिर धरा ही रह जायेगा।

मीरन फिर वहाँ रुका नहीं। मीर दाऊद, मीर कासिम, मेंहदी निसार और रजा अली, सभी वहीं रह गये। मोतीझील के घाट पर आकर मीरन ने जल्दी से एक बजरा लिया। बहुत देर हो गयी थी।

उस समय छः बजरे भगवानगोला की तरफ बढ़ रहे थे। पीछे के बजरे में बेगम के वेश में कान्त बुरके में छिपा बैठा था। उसका जीवन भी मानो बुरके में छिप गया था। किसी तरफ उसका ध्यान नहीं था। वह मन-प्राण से अदृश्य भगवान से प्रार्थना कर रहा था—तुम उसे सुखी करो भगवान्। वह मुर्शिदाबाद के पाप और पंकिलता से दूर चली जाय। बहुत दूर जाकर उसे शांति मिले। उसे सुख-संसार-पति-संतान और अपना घर मिले।

ज्वार के स्रोत में बजरे बहे जा रहे थे। भाटा के बाद ज्वार आया था। फिर भाटा आयेगा और फिर ज्वार। ज्वार-भाटे के समान हमारा जीवन भी है। इतिहास में भी ज्वार-भाटा आता है। उसी ज्वार-भाटे के आकर्षण-विकर्षण से राज्य बनता और बिगड़ता है, मसनद खाली होती है और भर जाती है। इसी तरह शताब्दियाँ बीत जाती हैं। जन्म से जीवन शुरू होता है, मृत्यु से पूर्ण विराम लगता है। लेकिन इस संसार की मानो मृत्यु नहीं है। इसलिए बार-बार उसका जन्म होता है और बार-बार उसकी मृत्यु होती है। जन्म-जन्मांतर का जीवन इसीलिए अनन्त है। अंत की ओर उसका प्रयाण है, लेकिन वह यात्रा अंतहीन है। इस अनन्त प्रयाण-पथ का जो पथिक है उसके मन में कोई शंका नहीं है, कोई विकार नहीं है, कोई अनुशोचना नहीं है।

वह बस यही कहता जा रहा था—हे ईश्वर, तुम उसे सुखी करो ! मुर्शिदाबाद की पाप-पंकिलता से वह दूर चली जाय। बहुत दूर जाकर उसे शान्ति मिले। उसे सुख-संसार-पति-संतान और अपना घर मिले।

पीछे से एक और बजरा बड़ी तेजी से चला आ रहा था। उस बजरे की रफ्तार मानो क्रमशः तेज होती जा रही थी। मीरन बजरे की गलही के पास खड़ा बहुत दूर तक देखने की कोशिश कर रहा था। और जोर से चलाओ ! और जोर से ! देर होने से सर्वनाश हो जायगा। मुर्शिदाबाद की मसनद हाथ से निकल जायेगी।

उधर चेहल-सुतून में दरबार लगा था। फूलों से दरबार सजाने का इंतजाम मीरन करके गया था।

अमीचंद और जगत्सेठ बगल में बैठे थे। सिर्फ़ अमीचंद नहीं, सभी आये थे। मंसूर अली मेहर, मेंहदी निसार, मीर दाऊद, मीर कासिम, यार लुत्फ खाँ, दुर्लभराम,

रजा अली और नन्दकुमार वगैरह सभी लोग आये थे। फिरंगियों की तरफ से आये थे वाट्सन, ड्रेक, किलपैट्रिक, वाट्स और मुंशी नवकृष्ण। कौन नहीं आया था ?

शाम को अमीचंद जब रुपये के लिए घबड़ा रहा था उस समय जगत्सेठ जी ने उसे समझाया था, "आप क्यों इतना घबड़ा रहे हैं ? आपके साथ जब लिखा-पढ़ी हो गयी है तब फिरंगी उसे जरूर मानेंगे !"

फिर भी अमीचन्द को डर बना रहा। कहता था, "मुझे किसी पर विश्वास नहीं होता जगत्सेठ जी !"

जगत्सेठ जी ने कहा था, "आपने ही क्या नवाब का विश्वास किया था ?"

अमीचंद ने इस बात का कोई जवाब नहीं दिया था।

जगत्सेठ जी ने पूछा था, "क्लाइव साहब कहाँ है ?"

"चेहल-सुतून के मालखाने में गया है।"

"आप उसके साथ क्यों नहीं गये ?"

"मुझे अपने साथ नहीं लिया। साथ में मुंशी नवकृष्ण गया है।"

"फिर ?"

"फिर क्या ? अब तो साहब मुझसे भेंट ही नहीं कर रहा है। उसके बाद आपके साथ चला आया। यहाँ भी तो साहब व्यस्त है।"

मंसूर अली एक कागज में लिखे नामों को एक-एक कर पढ़ने लगा। मीर जाफर साहब एक-एक को नजराना देने लगा।

"गुलशन बेगम !"

बशीर मियाँ एक किनारे खड़े होकर सब देख रहा था। मंसूर अली मेहर भी खड़ा था। मीर जाफर अली मसनद पर बैठा था। निजामत सरकार के सभी अहलकार वहाँ हाजिर थे। सारे मुर्शिदाबाद के लोग आज गाँव-शहर से बटुरकर चेहल-सुतून के आम दरबार में हाजिर हुए थे। सभी को अन्दर जाने की इजाजत नहीं मिली थी। सवेरे से ही चौधरी, जमींदार और ताल्लुकेदार लोग पहुँचने लगे थे। महाराज कृष्णचन्द्र सामने बैठे थे।

गुलशन बेगम का नाम पुकारा जाते ही पीछे का दरवाजा खोलकर वह अंदर आयी। साथ में बाँदी थी।

मीर जाफर ने कहा, "यह भी आपकी है हजूर !"

पहले से सब इंतजाम था। हरम के खोजा सरदार पीर अली को हुक्म हुआ था। मोतीझील से गिन-गिनकर सभी बेगमात चेहल-सुतून में पहुँचायी गयी थीं। सवेरे से सभी बेगमात ने सजना-सँवरना शुरू कर दिया था। आँखों में सुर्मा लगाया था। बेल-बूटेदार अँगिया पहनी थी। नाखूनों में मेंहदी का रंग लगाया था। लहँगा, चोली, ओढ़नी सब कुछ पहन-ओढ़ लिया था।

"पेशमन बेगम !"

आज किसी को कोई शिकायत न थी। हालांकि पहले भी किसी को कोई शिकायत

नहीं थी। नवाब के हरम में किसी को कोई शिकायत [illegible] नहीं [illegible]। फिर एक ओर आयी। नौबत-मंजिल में [illegible] रहा था।

छोटे शागिर्द ने तबला [illegible] :

"तक्की बेगम !"

सचमुच नाटे के बाद [illegible] आयेगा। इसी तरह शताब्दियाँ [illegible]। [illegible] उस पर पूर्ण विराम लगता है। लेकिन [illegible] फिर जन्म होता है, फिर मृत्यु होती है। [illegible] है। अंत की ओर उसको [illegible] है, लेकिन वह [illegible] प्रयाण-पथ का जो पथिक है, [illegible] नहीं है। वह बस यही कहता जा रहा [illegible] बाद की पाप-पंकिलता से वह बहुत दूर [illegible] मिले। उसे सुख-संसार-पति-[illegible] और [illegible]

"मरियम बेगम !"

अचानक सब गड़बड़ हो गया। [illegible] जाफ़र चुपचाप इंतजार करने लगा। कोई नहीं आया।

सभी एक-दूसरे का मुँह देखने लगे। [illegible] मीर जाफ़र बेचैन होकर पीछे की तरफ़ देखने लगा। [illegible]

मीर दाऊद ने फिर एक बार मीर कासिम की तरफ़ देखा। [illegible] भी एक बार रजा अली की ओर देखा लेकिन [illegible]

"मरियम बेगम !"

नौबत-मंजिल में बैठे-बैठे छोटे शागिर्द ने कहा, "[illegible]!"

इंसाफ़ मियाँ ने एक बार छोटे शागिर्द की तरफ़ देखा।

छोटे शागिर्द ने कहा, "चाचा, मरियम बेगम नहीं [illegible]"

मीर जाफ़र अली के सर पर मानो बिजली गिरी। [illegible] अली की तरफ़ देखा। बरकत अली, नजर मुहम्मद [illegible]

क्लाइव साहब चुप बैठा था। मीर जाफ़र ने [illegible] में मरियम बेगम को हाजिर किया जायेगा। लेकिन [illegible] मुहम्मद की बारह बेगमात में ग्यारह मिलीं और एक [illegible] गयी ?

"मरियम बेगम ! मरियम बेगम !"

मीरन का बजरा तेज रफ़्तार से चला जा रहा था। [illegible] दूर आ गया था। बेगमात को लेकर छः बजरे [illegible] थे। जोर से चलाओ माँझी ! और जोर से !

अनन्त प्रयाण-पथ का पथिक एकाग्र हो प्रार्थना किये जा रहा था। तुम
सुखी करो ईश्वर ! मुर्शिदाबाद की पाप-पंकिलता से वह बहुत दूर चली जाय।
जाकर उसे शांति मिले। उसे सुख-संसार-पति-संतान और अपना घर मिले।

चेहल-सुतून के आम दरबार में मीर जाफर साहब ने आखिरी बार पुक

"मरियम बेगम !"

शान्ति पर्व

यहीं यह कथा पूरी होती है। पूरी होती है, लेकिन शुरू भी यहीं से होती है। इतिहास के एक अध्याय के पूरे होने पर दूसरा अध्याय प्रारम्भ होता है। मनुष्य जन्म लेता है तो मरता भी है। जीवन-मरण की खींचतान के सहारे जिस तरह एक अखण्ड ब्रह्माण्ड की सृष्टि हुई है, उसी तरह आदि और अंत के समन्वय से एक कभी भी पूरे न होनेवाले इतिहास की सृष्टि हुई है। उस अनन्त इतिहास के एक भग्नांश को लेकर उद्धवदास यह 'बेगम मेरी विश्वास' लिख गया है। अपने आखिरी दिनों में उद्धवदास अपने घर से बाहर नहीं निकलता था। चौबीस परगने में कान्तनगर की एक कोठी में बैठे-बैठे वह काव्य लिखता रहता था। क्लाइव से कहकर यह जमीन बेगम मेरी विश्वास ने उसके नाम करा दी थी। हिन्दुस्तान में उस समय फिरंगी राज्य कायम हो चुका था। मीर जाफर अब सिर्फ मामूली मीर जाफर नहीं था, अब वह शुजाउल-मुल्क हिसामुद्दौला अली महाबत जंग बहादुर हो गया था। मीरन भी अब शहाबतजंग हो गया था। और तो और मीर जाफर का भाई कासिम खाँ भी हैबत-ए-जंग बहादुर हो चुका था।

और क्लाइव ?

कर्नल क्लाइव जितने दिन इंडिया में रहा, लड़ता ही रहा। अंदर और बाहर दोनों से उसे लड़ाई करनी पड़ी। उसे अपनी अंतरात्मा और मुर्शिदाबाद के नवाब दोनों के साथ संघर्ष करना पड़ा। इस लड़ाई के दौरान उसे किसी की भी मदद नहीं मिली। रात को जब नींद नहीं आती थी तो वह जहरीली दवा पीता जिसकी खुराक अगर जरा भी ज्यादा हो जाती तो उसे हमेशा के लिए सुख-दुख से छुटकारा मिल जाता। लेकिन जिसके दुर्भाग्य की मियाद जिंदगी भर चलनेवाली थी उसे इतनी जल्दी छुटकारा कैसे मिलता ?

उस दिन के उस दुर्दैव की बात याद है। दुर्दैव ही तो था। चेहल-सुतून में दरबार होनेवाला था। उससे पहले ही सारा इन्तजाम कर लेना था। जिस नवाब को क़ैद किया गया था उससे कहीं ज्यादा शैतान वे लोग थे जिन्होंने उस नवाब को क़ैद किया था!

रॉबर्ट क्लाइव ने कहा था, "मीर जाफर या मीरन, मुझे इन दोनों में से किसी का यकीन नहीं है।"

मेजर किलपैट्रिक ने कहा था, "ये लोग कहते हैं कि महीनों से उनकी फौज के सिपाहियों को तलब नहीं मिली।"

"इसके माने ? इन लोगों ने हमें जो रकम देने का वायदा किया था क्या नहीं देंगे ?"

"शायद इसी बहाने वे अपनी बात से मुकरना चाहते हैं।"

क्लाइव ने कहा, "तब तो हमें फौरन चेहल-सुतून के मालखाने पर कब्जा कर लेना चाहिए।"

मीर जाफर तो अपने नये खिताब शुजाउल-मुल्क हिसामुद्दौला अली महाबत-जंग खान बहादुर से ही खुश थे। उसने सिर्फ इतना ही कहा, "मैं भी वहाँ चलूँगा।"

क्लाइव ने कहा, "नहीं !"

"लेकिन कहाँ मालखाना है, यह आप कैसे पहचान सकेंगे कर्नल ? मैं जानता हूँ, कि मालखाना कहाँ है।"

क्लाइव फिर भी अड़ा रहा। कहा, "नहीं। मैं पहचान लूँगा।"

मीर जाफर ने कहा, "लेकिन अगर आप कहीं भूलभुलैया में फँस गये तो ?"

क्लाइव ने मुंशी नवकृष्ण की ओर देखकर कहा, "मुंशी ह्वाट इज भूल-भुलैया ?"

मुंशी ने कहा, "हजूर, भूलभुलैया माने गोरखधन्धा।"

क्लाइव की समझ में बात फिर भी नहीं आयी।

इस पर मुंशी ने समझाया, नवाब शुजाउद्दीन ने इसे बनवाया था। इसमें फँस जाने पर निकलना मुश्किल होता है। एक जमाना था जब भूलभुलैया में नवाब अपनी बेगमों के साथ आँख-मिचौली खेला करते थे।

क्लाइव ने कहा, "फिर आप किसी खोजा सरदार को मेरे साथ कर दीजिए।"

आखिर में यही ठीक हुआ। कर्नल क्लाइव, मुंशी नवकृष्ण, खोजा सरदार पीर अली खाँ, वाट्स और उसका मुंशी रामचंद अंदर गये। बाकी सब लोग बाहर ही खड़े रहे।

जो चेहल-सुतून एक दिन हँसी और कहकहों, सौन्दर्य और स्वर्ण, यौवन और नंगी जाँघों के बीच लीला करता रहा, वही आज स्तब्ध था। उसके एक-एक रोशन-दान, एक-एक मोखे से उस दिन सदियों से सोयी मृतात्माएँ अचानक वापस आकर झाँक रही थीं। ये कौन आये ? ये लोग कौन हैं ? हमने बंगाल की रिआया का खून बूँद-बूँद चूसकर दौलत जमा की है। यह हमारी अपनी कमायी है। इसमें हिस्सा बँटानेवाले तुम कौन होते हो ?

क्लाइव हैरत से चारों ओर देख रहा था। इतनी दौलत, इतना ऐश्वर्य !

उस दिन चेहल-सुतून में आकर क्लाइव जैसे मौत के आमने-सामने आ खड़ा हुआ था। लग रहा था जैसे यह जीवन नहीं, मृत्यु है। साक्षात् मृत्यु ! मृत्यु के उस

गह्वर में खड़े होकर क्लाइव ने महसूस किया था—यह ठीक नहीं चलता। ईमान के लेन-देन का हिसाब करने का वक्त जब आ गया है तब इस चेहल-सुतून का अस्तित्व फिजूल है। काफी दिनो पहले चौक बाजार के शराफत अली ने जो कहा था, उस दिन क्लाइव ने भी ठीक वही कहा।

ऊपर मोखों में कुछ कबूतर गुटर-गूं करते फिर रहे थे। पिछले कई दिनों से चेहल-सुतून खाली ही पड़ा था। बावर्चीखाने में एक भी अंगीठी नहीं सुलगी थी, झाड़ू न लगने से दौलतखाने में धूल जमा हो गयी थी। भिश्तियों ने पानी भी नहीं भरा था। धोबीखाने में कपड़े भी नहीं साफ किये गये थे। सारा चेहल-सुतून ऐसे भायँ-भायँ कर रहा था, मानो हाहाकार कर रो उठा हो। बेगमों को अर्क पिलाकर बूढ़ा शराफत अली जो कुछ न कर सका था, सात समंदर पार से आकर क्लाइव ने विश्वासघात की रसद जुटाकर नौ घंटे की लड़ाई में वही कर दिखाया था।

एक-एक कर सब देखा गया। खोजा सरदार पीर अली खाँ पुराना खिदमतगार था। उसने बेगम साहबाओं के महल दिखाये और भूलभुलैया भी दिखायी। कहाँ किस मसजिद में बेगमात नमाज पढ़ती थी, वह भी दिखलाया। कहाँ बैठकर नवाब सुजाउद्दीन बेगम के साथ शतरंज खेलता था, वह जगह भी दिखायी। एक-एक कर सब कुछ देख लेने के बाद मुंशी रामचंद, मुंशी नवकृष्ण, वाट्स और क्लाइव के विस्मय की सीमा न रही।

उस दिन नवाब के मालखाने में एक करोड़ छिहत्तर लाख चाँदी के रुपये, बत्तीस लाख सोने के सिक्के, दो सन्दूकों में भरे सोने के बाद और चार संदूकों में भरे हीरे-जवाहिरात मिले थे। अलग दो छोटे संदूकों में जेवर थे—बस जेवर! बंगाल मुल्क की रिआया का खून चूसकर नवाब मुर्शिद कुली खाँ के जमाने से नवाब निजामत के खजाने में यह सब जमा हुआ था।

लेकिन जिस खजाने का हिसाब न हो सका, वह था नानी बेगम का मालखाना। वहाँ घुसने की किसी ने भी हिम्मत नहीं की। वह बड़ी दुर्गम जगह थी। वहाँ न हवा थी न कोई खुली जगह। फिर भयंकर अँधेरा भी था। ऐसा लगा, मानो कोई कह रहा हो—यहाँ कोई न आना! जो आयेगा उसका प्राण भले ही बच जाय, लेकिन जीवन छिन जायेगा।

मुंशी रामचंद क्लाइव का पुराना मुंशी था। नवकृष्ण तो अमीचन्द का दिया आदमी था। लेकिन उसी को क्लाइव ज्यादा पसंद करता था।

मुंशी की आँखें इतना अँधेरा बरदाश्त न कर सकीं। मालखाने के संदूक खोले जाने पर उसकी आँखें चौंधिया गयीं।

खोजा सरदार पीर अली खाँ ने पकड़ लिया, नहीं तो नवकृष्ण गिर ही पड़ता।

क्लाइव ने भी झाँककर देखा, कहा, "ह्वाट इज दिस? यह क्या है?"

मुंशी ने कहा, "सोना है हुजूर! गोल्ड! प्योर गोल्ड!"

क्लाइव ने कहा, "इतना!"

मुंशी ने कहा, "इतना कहाँ हुज़ूर ? यह तो थोड़ा-सा ही है।"

"यह सब ले कैसे जाया जायेगा ?"

मुंशी रामचंद को साथ लाना ठीक नहीं हुआ था। उसकी आँखें भी गोल-गो हो गयी थीं। यहाँ इतना ख़ज़ाना है जानने पर नवकृष्ण कभी भी रामचंद को सा न लाने देता। अब उसे भी हिस्सा देना होगा।

पीर अली खाँ सोने के बाटों को हाथ से उठाने जा रहा था। बाट काफी भा थे। पीर अली खाँ ने कभी यह सब देखा नहीं था। इस सबकी कल्पना करना उसने नहीं सीखा था। वह बस जानता था, नबाब माने खुदा है। वह सिर्फ जानत था, नबाब-बादशाहों से कोई कुछ सवाल नहीं कर सकता, कोई उनसे जवाब-तल नहीं कर सकता। वे वाक्य और मन के अगोचर अल्लाह हैं। उन तक हमारी पहुँ नहीं है।

क्लाइव ने कहा, "यह सब कैसे ले चलोगे मुंशी ?"

रामचंद ने कहा, "उन्हीं लोगों को कहने पर वे संदूकों में भरकर कलकत्ते भे देंगे।"

"नहीं-नहीं हुज़ूर !"

मुंशी नवकृष्ण के दिमाग में तिकड़म खूब भरा था। उसने झट से कहा, "नहीं नहीं हुज़ूर, उनको दिखाने पर वे भी हिस्सा माँगेंगे। इससे तो अच्छा यही है, ह तीनों बाँट लें।"

हुआ भी वही। नबाब सिराजुद्दौला के चेहल-सुतून के मालखाने में कित दौलत थी किसी को इस बात का पता न लग पाया।

जब तीनों बाहर आये तब वाट्स वहाँ खड़ा था।

वाट्स ने पूछा, "मालखाने में क्या था ?"

मुंशी नवकृष्ण ने जवाब दिया, "कुछ भी नहीं था। लगता है नबाब ने सा ख़जाना रातों-रात हटा लिया था।"

लेकिन काफी दिनों बाद उद्धवदास ने ही मुंशी रामचन्द के बारे में लिखा था मुंशी रामचन्द ने बाद में अन्दूल राज-घराने की नींव डाली थी। मरते वक्त उसने ज सम्पत्ति छोड़ी थी उसमें बहत्तर लाख रुपये थे, बीस लाख के जवाहिरात, अठारह ला की जमींदारी और चार सौ कलश थे जिनमें से अस्सी सोने के थे और बाकी चाँदी के

और मुंशी नवकृष्ण ?

अपनी माँ के श्राद्ध के अवसर पर उसने बारह लाख रुपये खर्च किये थे उसकी ख्याति से हम-जैसे आजकल के लोग भी परिचित हैं। उद्धवदास के 'बेगम मे विश्वास' काव्य को पढ़ते हुए भी इसके काफी प्रमाण मिले।

लेकिन कर्नल क्लाइव जो सिर्फ छः रुपये महीने की नौकरी लेकर इंडिया आया था, इंगलैंड वापस जाने पर वहाँ का सबसे धनी व्यक्ति कहलाया। उद्धवदास उसके बारे में भी लिखा था। इंगलैंड पहुँचकर भी कर्नल क्लाइव उद्धवदास को ख

रखा करता था। छः महीने में खत आता था। साहब अमीर था, लेकिन इंडिया के स गरीब पोएट को भूल नहीं सका था। वह अपनी बीवी पेगी की बात भी लिखता था, ल-बच्चों के बारे में लिखता था और लिखता था अपनी बातें। दुःखी होकर साहब हुत सारी बातें लिखता था। लिखता था, इंडिया में जो कई साल बीते, वे ही सुख से ीते। अब मेरे जीवन में कोई सुख नहीं रह गया है। देश के लोगों ने मेरे खिलाफ क़दमा किया है। मुझ पर इलजाम लगाया है। राजा के दरबार में मुझे चोर कहा या है।

अपने एक खत में उसने लिखा था, 'पोएट, मैं अगर तुम्हारी तरह गरीब और म्हारी तरह अनसक्सेसफुल होता तो शायद ज्यादा अच्छा रहता। समझ में नहीं ाता मैं बंगाल कॉन्क्वर करने क्यों गया, और गया भी तो इस तरह सक्सेसफुल क्यों आ!'

बाद के एक खत में उसने लिखा था, 'पोएट, मुझे फिर वही बीमारी लग गयी , बिस्तर पर लेटते ही वही शक्ल आ जाती है। वही सक्सेस! आकर ठीक पहले की रह वह मुझे ताश का पत्ता दिखलाती है। क्वीन ऑफ स्पेड्स। हुकुम की बेगम। ींद लाने के लिए मुझे फिर वही जहरीली दवा पीनी पड़ती है। मुझे लगता है, अब यादा दिन नहीं जीऊँगा।"

और सचमुच कर्नल इसके बाद ज्यादा दिन नहीं रहा। बाद में उसकी बीवी ः खत से उद्धवदास को पता लगा था। एक दिन कर्नल ताश खेलने बैठा था। कुछ नों से रात को नींद नहीं आ रही थी। जिस आदमी ने इंडिया में ब्रिटिश एम्पायर ी नींव डाली थी, उसे बेचैनी की वजह से नींद नहीं आती थी। अर्थ, ख्याति और क्सेस की बेचैनी! वही बेचैनी मानो रात को घर में घुस आती थी।

कर्नल क्लाइव रात को सोते-सोते चिल्लाने लगता था, "कौन? तुम कौन ो?"

वह शक्ल कहती, "मैं सक्सेस हूँ।"

"लेकिन तुम्हें क्या चाहिए? तुम मेरे पास क्यों आयी हो?"

"इसे पहचानते हो?"

ताश का वही पत्ता। क्वीन ऑफ स्पेड्स! हुकुम की बेगम!

और साथ ही कर्नल चीख उठता। बगल वाले कमरे से उसकी पत्नी पेगी ागी-भागी आती। आकर उसे वही जहरीली दवा पिला देती।

एक बार क्लाइव की पत्नी ने लिखा था, 'यह मेरी बेगम कौन है? रॉबर्ट क्सर उसके बारे में कहता है। रॉबर्ट इंडिया में जितने लोगों से परिचित हुआ था, नमें से किसी के बारे में वह विशेष नहीं कहता। वह बस मेरी बेगम के बारे में ही हता रहता है। तुम्हारे बारे में भी कहता है। एक और शख्स के बारे में कहता है। सका नाम है कान्त सरकार। कान्त सरकार कौन है? हू इज ही? रॉबर्ट कहता है, गया था इंडिया जीतने लेकिन मेरी बेगम ने मुझे ही जीत लिया। नवाब सिराजुद्दौला

को मैंने हराया है लेकिन मेरी वेगम ने खुद मुझे ही हरा दिया।'

सचमुच, मरियम वेगम इस तरह सभी को हरा देगी, यह किसी ने सोचा भी नहीं था। हतियागढ़ की राजगढ़ी के एक मामूली नौकर शोभाराम विश्वास की लड़की इस तरह हिन्दू, मुसलमान और ईसाई सभी को हरा देगी, इस बात की कोई स्वप्न में भी कल्पना नहीं कर पाया था। कर्नल क्लाइव मद्रास में रहा, वंगाल में रहा। और भी कितनी जगहों पर गया, लेकिन उसे कभी भी इस तरह मुँहकी नहीं खानी पड़ी थी। उसने खुद दो-दो वार आत्महत्या करने की कोशिश की थी, लेकिन वह असफल रहा। फिर इस तरह की मौत?

मेरी वेगम ने कहा था, "मरने से मैं नहीं डरती साहव!"

क्लाइव ने कहा था, "मैं भी नहीं डरता, लेकिन फिर भी मर कहाँ सकता हूँ?"

मेरी वेगम ने कहा था, "मरने के लिए भी हिम्मत की जरूरत है, हर किसी में वह हिम्मत नहीं होती।"

क्लाइव ने कहा था, "तुम्हारे कहने का मतलव है, मुझमें हिम्मत नहीं है?"

"आपके अंदर मारने की हिम्मत है लेकिन मरने की नहीं है।"

"इसके माने, मैंने तुम्हारे नवाव का खून किया है?"

"आपने नहीं किया तो और किसने किया है?"

"मैंने कव उसका खून किया? वह तो मीरन ने किया है। मैंने तो तुमसे वादा किया था कि मैं नवाव को वचाऊँगा। सिर्फ नवाव को ही नहीं, तुम्हारी रानी वीवी और कान्त सरकार को भी वचाऊँगा।"

सचमुच क्लाइव ने वादा किया था! लेकिन वह अपना वादा पूरा नहीं कर पाया था। इसका उसे अफसोस भी कम नहीं था। कहा जाय तो वह किसी को वचा नहीं पाया था। वह जव वापस इंगलैंड गया तव भी उसे हर वक्त यही एक वात सालती रहती थी। उस दिन ताश खेलते-खेलते अचानक एक पत्ते पर नजर पड़ते ही क्लाइव चौंककर उठ खड़ा हुआ।

उसकी पत्नी ने पूछा, "क्या हुआ? उठे क्यों?"

क्लाइव कोई जवाव दिये विना वगल के कमरे में चला गया।

"तुम्हें क्या हो गया है? कहाँ जा रहे हो?"

कर्नल क्लाइव ने वहुतों को जीते और मरते देखा था। कितने ही उत्थान और पतन देखे थे। कितने आरंभ और कितने अवसान देखे थे। जीवन भर वह काम करता रहा। काम करते-करते कहीं गांठ उलझ जाती। फिर उस उलझन की वजह से काम और भी वढ़ जाता। उसे सुलझाते-सुलझाते वहुत कुछ खींचतान करनी होती, जिसकी वजह से उसे सम्मान की जगह वदनामी ही ज्यादा मिली। उसको अपनी कंट्री के लोगों ने ही वुरा-भला कहा। उसे वायकॉट किया। चोर, लुटेरा और दगावाज तक कहा।

"आखिर कुछ कहो भी! कहाँ जा रहे हो?"

उस दिन वूढ़े क्लाइव ने वगल के कमरे में जाकर अंदर से दरवाजा वंद कर

लिया था। पेगी क्लाइव का यह हाल देख हैरान थी! आखिर क्या हुआ? दरवाजा क्यों बंद किया?

अचानक....

लेकिन वह बात फिलहाल रहने दें। जिस आदमी को दुनिया में किसी से भी प्यार और स्नेह नहीं मिला, किसी का सम्मान नहीं मिला, अपने किसी काम के लिए बड़ाई नहीं मिली, उसका जीवन अगर व्यर्थ होता है तो हो। उसके जीवन की व्यर्थता भी मिथ्या हो जाय तो हो लेकिन उसके जीवन की व्यर्थता की व्यथा ही कम से कम सत्य हो और वेदना की उस वह्निशिखा से 'बेगम मेरी विश्वास' काव्य भी पवित्र हो जाये। उद्धवदास की रचना की प्रत्येक पंक्ति में उसी वेदना को मूर्तिमान देखा। लेकिन नहीं, वह बात अभी रहने दें। उससे पहले बेगम मेरी विश्वास के बारे में जानना होगा, मरियम बेगम के बारे मे बताना होगा। मराली की व्यर्थता की वेदना का हाल जाने बिना क्लाइव की व्यर्थता की वेदना निरर्थक हो जायेगी!

●

मेरी बेगम!

उन दिनों दमदम के सभी उसे मेरी बेगम के नाम से जानते थे। दूर-दूर से लोग मेरी बेगम के पास सहायता मांगने आते थे। जिस दिन वह मुर्शिदाबाद से पहले-पहल यहां आयी थी उस दिन सभी ने देखा था पालकी में से एक बहू उतरी। उस समय कोई नहीं जानता था कि वह कौन है? फिर कितने ही दिन वह यहां रही। सामने ही फिरंगी फौज की छावनी थी। कैन्टूनमेंट! बहुत-से हाथी रहते थे। तोप खींचनेवाले हाथी और हजारों घोड़े थे। फौज के सिपाही भी थे। सामने मैदान मे वे कवायद करते थे। रात को वे आग जलाकर हाथ सेंकते थे।

पास ही एक गिरजाघर था। जिस दिन मराली पहले-पहल यहां आयी थी, उसी दिन गिरजाघर गयी थी।

क्लाइव ने शुरू में आपत्ति की थी, "तुम ईसाई क्यों हो रही हो?"

मराली ने कहा था, "एक बार जब मुसलमान हो चुकी हूं तो अब ईसाई होने मे क्या बिगड़ता है?"

"लेकिन अगर कोई आपत्ति करे?"

"आपत्ति करनेवाला है ही कौन?"

"क्यों, यह पोएट?"

उद्धवदास पास ही खड़ा था। मुर्शिदाबाद से साहब के साथ वह भी आया था। मंसूर-गद्दी में मुंशी नवकृष्ण जब उसे ले गया था, उसी समय से यह साहब के साथ था। उसके बाद कितनी ही घटनाएं घटी। मराली को दुर्भाग्य के कितने ही विकराल रूप देखने पड़े। हतियागढ़ से शोभाराम विश्वास के मरने की खबर आयी। मराली ने खबर सुनी। लेकिन रोयी नहीं।

उसने सिर्फ इतना ही कहा, "अब मैं कहाँ जाऊँगी ?"

"अपने हज़बैंड, इस पोएट के साथ जाओ न ।"

इसके बाद क्लाइव ने उद्धवदास की ओर देखकर कहा, "पोएट, तुम्हारी वाइफ मुसलमान हो गयी है । इसलिए उसे अपने घर में रखने में तुम्हें क्या कोई आपत्ति है ?"

उद्धवदास ने कहा, "मुझे कोई विकार नहीं है प्रभु, मेरे लिए हिन्दू, मुसलमान और ईसाई सब बराबर हैं ।"

अचानक मराली ने कहा, "लेकिन मुझे आपत्ति है ।"

क्लाइव ने पूछा, "तुम्हें किस बात पर आपत्ति है ?"

मराली ने कहा, "मैं भ्रष्ट हो चुकी हूँ ।"

उद्धवदास ने कहा, "अजी, देह भ्रष्ट होने से मनुष्य भ्रष्ट नहीं होता है । देह खोल है, उसके लिए आत्मा में कोई दाग़ नहीं लगता । है न प्रभु ? आत्मा का लिंग नहीं है, मन नहीं है, अहंकार नहीं है । तुम्हारी आत्मा तो भ्रष्ट नहीं हुई है ।"

मराली फिर भी कहने लगी, "मैं भ्रष्ट हो चुकी हूँ ।"

कोई चारा न देखकर क्लाइव ने कहा, "ठीक है, तुम फिर दमदम में ही रहो ।"

फिर वही तय हुआ । अब मराली बोली, "लेकिन नवाब का क्या होगा, और मोतीझील में वह जो मरियम बेगम है उसके बारे में कुछ पता लगा ? आपने तो कहा था, सबको छुड़ा दूँगा ।"

क्लाइव ने कहा, "मैं आज ही मुर्शिदाबाद जा रहा हूँ । आज दरबार होने वाला है । मीर जाफर मसनद पर बैठेगा । फिर मैं नवाब को छोड़ देने का हुक्म दूँगा ।"

"और हतियागढ़ की रानी बीबी ?"

"उनका भी पता लगाया था । वे मीरन के घर कैद थीं, वहीं से लापता हो गयी हैं । नियामत नाम का नवाब का एक खिदमतगार था । उसने जिस तरह तुम्हारी कोठरी का दरवाजा खोल दिया था, उसी तरह हतियागढ़ की रानी बीबी की कोठरी का भी दरवाजा खोल दिया था । अब वहाँ मुहम्मद बेग पहरा दे रहा है । लेकिन उसके बाद रानी बीबी का कोई पता नहीं चला ।"

"फिर आप नवाब को छोड़ने का हुक्म दीजिए न !"

"दूँगा । दरबार के बाद मैं चेहल-सुतून में जाऊँगा । वहाँ के मालखाने में क्या है यह भी तो देखना होगा । फिर नवाब के बारे में हुक्म दूँगा । मैंने मीर जाफर से कह दिया है कि मुझसे इजाजत लिए बगैर नवाब के बारे में कुछ न किया जाय ।"

मराली ने कहा, "लेकिन मेरे कलकत्ते चले जाने के बाद क्या आपको यह बात याद रहेगी ?"

क्लाइव ने कहा था, "जरूर याद रहेगी । मुझे सब याद रहता है । याद रहना ही तो मेरी बीमारी है । मैं कुछ भी भूल नहीं सकता ।"

"और उसका क्या होगा ?"

"तुम मोतीझील वाली मरियम बेगम के बारे में कह रही हो न! [illegible] के सरकार मेरे पास आये थे। वे अब भी समझते हैं कि मोतीझील में जो मरियम [illegible] कैद है, वही उनकी वाइफ है। मैंने किलपैट्रिक के साथ उन्हें मोतीझील देखा[illegible]। लेकिन मरियम बेगम वहाँ नहीं है।"

मराली चौंक उठी। कहा, "क्या कहा? आप क्या कह रहे हैं? कहाँ गया [illegible] है?"

क्लाइव ने कहा, "समझ नहीं पा रहा हूँ। [illegible], नानी बेगम, [illegible]गम, घसीटी बेगम और लुत्फुन्निसा बेगम के साथ मरियम बेगम को भी उन लोगों [illegible] कहीं भेज दिया है।"

"किसने भेज दिया है?"

"शायद मीरन ने। मीर जाफर का बच्चा।"

मराली ने कहा, "फिर आप मीरन को गिरफ्तार क्यों नहीं करते? आपके पास सिपाही हैं, तोपें हैं, बंदूकें हैं और उसे पकड़ नहीं पा रहे हैं? फिर आप कैसे कर्नल हैं? कैसे फिरंगी हैं?"

क्लाइव हँसा। कहा, "मैंने उसका पता लगाया था, लेकिन वह भागा हुआ है।"

"भागा हुआ है? मुर्शिदाबाद छोड़कर भाग गया है?"

"हाँ।"

"मुर्शिदाबाद से वह भागा है तो क्या उसका पता नहीं चल सकता? फिर [illegible]वाब मिर्जा मुहम्मद का पता कैसे चला? [illegible] चला? आप क्या इसका पता नहीं लगायेंगे कि बेगमात कहाँ भेज दी गयीं? उन मरियम बेगम को ढूँढ ही निकालना होगा।"

क्लाइव ने कहा, "मैं तुम्हारे सामने वादा करता हूँ कि उन्हें जरूर ढूँढ निकालूँगा।"

"कब? कब ढूँढ निकालेंगे?"

क्लाइव ने कहा, "अभी। मैं अभी मेजर को बुलाता हूँ। तुम्हारे सामने उनसे [illegible]ूँगा उन बेगमात को ढूँढ निकालने के लिए। उन्हें ढूँढकर तुम्हें [illegible] [illegible]ज देने के लिए।"

"वह जब तक नहीं मिल जाती, मैं नहीं जाऊँगी। मैं [illegible] नहीं जाऊँगी।"

क्लाइव ने फिर मुस्कराकर कहा, "तुम जाओ। तुम्हारे [illegible] कह रहा हूँ, तुम यहाँ से चली जाओ। तुम यहाँ रहोगी तो उसे ढूँढने में दिक्कत होगी।"

"लेकिन वह नहीं मिलती तो मैं नहीं जाऊँगी।"

क्लाइव को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने कहा, "वह तुम्हारी कौन है?"

हा, "वह कौन है, यह आप कैसे समझेंगे ? क्या आपके लिए कभी कोई अपनी जान ने गया है ? किसी ने आपकी भलाई के लिए अपना नुकसान हँसते हुए सहा है ?"

क्लाइव ने कहा, "क्या कहती हो ?"

मराली ने कहा, "उसके बारे में कितना कह ही पा रही हूँ ? आप उसके बारे i जानते ही कितना हैं ? आपने तो बस लड़ना ही सीखा है, प्यार करना तो कहाँ ोखा ?"

कहते-कहते मानो मराली रो पड़ी। फिर किसी तरह अपने को संभालकर हा, "आप फिरंगी हैं। आप उसे समझ नहीं सकेंगे। आपको समझाऊँ ऐसी शक्ति ी मुझमें नहीं है। जैसे भी हो, आप उसे मेरे पास लाइए।"

"उसे ला देने पर क्या करोगी ?"

"क्या करूँगी, यह नहीं जानती। फिर भी आप उसे ले आइए।"

क्लाइव ने कहा, "लेकिन तुम तो उससे शादी नहीं कर सकतीं ? तुम तो मुसलमान हो गयी हो। वह हिन्दू होकर क्या तुम्हें अपने घर में रहने देगा ?"

मराली ने कहा, "मेरी कोई जात नहीं है। मैं हिन्दू थी, फिर मुसलमान हो गयी। अब मैं ईसाई हो जाऊँगी।"

उद्धवदास की पोथी में देख रहा हूँ, इसके बाद मेजर किलपैट्रिक ने उसी दिन मराली को कलकत्ते भेज दिया था। कोई न जान सका था। किसी को शक नहीं हुआ था। किसी ने पूछा भी नहीं था। सभी ने जाना था, क्लाइव साहब नवाब के हरम के मालखाने से कोई कीमती चीज़ संदूक में भरकर कलकत्ते भेज रहा है।

बजरे में संदूक रखा गया।

फिर उसी बजरे में उद्धवदास भी जा बैठा।

●

अब दमदम ! दमदम हाउस ! मराली और उद्धवदास के चले जाने के कई दिन बाद फिरंगी फौज भी मुर्शिदाबाद से चली गयी थी। लेकिन जिस समय चेहल-सुतून में दरबार चल रहा था और मीर जाफर अली क्लाइव साहब को नज़राना देकर खुश कर रहा था उसी समय एक और घटना घट गयी।

नियामत मोतीझील का पुराना खिदमतगार था। उसने एक दिन नवाब मिर्ज़ा मुहम्मद की भी खिदमत की थी। यह सब हालचाल देखकर उसे बड़ी तकलीफ हुई। उसने इन्हीं नवाब का नमक खाया था, अब इन्हीं नवाब को कैद में रहना पड़ रहा है, यह शायद उसे बरदाश्त नहीं हुआ। मीरन उसे बार-बार होशियार कर गया था—असामियों पर ठीक से निगाह रखना ! पास-पास तीन कोठरियाँ थीं। एक में नवाब थे और दूसरी कोठरियों में बाँदियाँ थीं। लुत्फुन्निसा बेगम की दुर्दशा देखकर नियामत को और ज्यादा तकलीफ हुई थी। नवाब की टोली जब आ रही थी, तभी मीरन उसे पकड़कर मोतीझील ले आया था। फिर उसने उसे कहाँ भेज दिया था

अचानक सेठ अमीचंद ने अपनी जगह से उठकर कहा, "मेरा हिस्सा ? मेरे हिस्से की रकम कहाँ है ?"

क्लाइव अब तक चुपचाप बैठा था। उसने कहा, "कैसा हिस्सा अमीचंदजी ?"

"वाह ! आप कह क्या रहे हैं क्लाइव साहब ? दस्तावेज में मैंने भी दस्तखत किया था। मुझे बीस लाख रुपये मिलने की बात थी।"

"लेकिन दस्तावेज तो यह रहा ! इसमें आपका नाम कहाँ है ?"

दस्तावेज को अच्छी तरह से उलट-पुलटकर अमीचंद चिल्ला उठा, "लेकिन यह तो वह दस्तावेज ही नहीं है। मैंने जिस पर दस्तखत किया था उसका रंग लाल था—यह तो सफेद है—यह दस्तावेज जाली है !"

क्लाइव ने ठंडी आवाज में कहा, "अगर यह दस्तावेज जाली है तो असली कौन-सा है ?"

"असली को आप लोगों ने छुपा लिया है, फाड़ डाला है। आप लोगों ने मेरे साथ दगाबाजी की है।"

लेकिन सेठ अमीचंद को शायद मालूम नहीं था कि जो शख्स सात समंदर पार आकर इस देश की मसनद पर कब्जा कर सकता है वह खानदानी बनिया है। अमीचंद से भी बड़ा बनिया। व्यापार में ईमानदारी के लिए कोई स्थान नहीं है। अगर है तो फिर वह व्यापार नहीं है। यह बात खुद अमीचंद भी अच्छी तरह से जानता था लेकिन शायद बीस लाख रुपये के लालच ने उसकी बुद्धि पर पर्दा डाल दिया था।

सेठ अमीचंद और भी बहुत कुछ कहने जा रहा था, लेकिन मीर जाफर ने उसे रोक दिया। कहा, "अमीचंद साहब, आप तशरीफ रखिए। दस्तावेज में जिस-जिसके दस्तखत हैं सभी को दस्तावेज के मुताबिक रकम दे दी गयी है, आपका नाम होता तो आपको भी मिलती।"

जगत्सेठ जी और महाराज कृष्णचंद्र भी अमीचंद से बैठने को कह रहे थे। मुंशी नवकृष्ण ने भी उसे चुप रहने को कहा। लेकिन उस समय तो अमीचंद के लिए बस पागल होना ही बाकी था। उसने चीखकर कहा, "तू कल का छोकरा, बीच में क्यों बोल रहा है ? मेरे बीस लाख रुपये मारे जा रहे हैं और मैं चुप रहूँगा ?"



मीरन की हवेली से निकलकर छोटी बहूरानी और दुर्गा एक ओर चल दीं। मुर्शिदाबाद उन दोनों के लिए बिलकुल नयी जगह थी। किसी से पूछने पर पकड़े जाने का डर था। अचानक एक हवेली देखकर लगा जैसे किसी हिन्दू की है।

सदर फाटक पर भीखू शेख खड़ा था। जनाना देखकर उसने जरा मुलायम आवाज में पूछा, "कहाँ जाना है ?"

दुर्गा ने पूछा, "यह हवेली किसकी है ? किसी हिन्दू की है क्या ?"

भीखू शेख ने कहा, "हाँ, जगत्सेठ जी की हवेली है।"

"भाई, हम भी हिन्दू हैं, जरा अंदर जाने दोगे ?"

उधर नियामत बगलवाली कोठरी का दरवाजा खोलकर पुकार रहा था, "जहांपनाह !"

"कौन है ?"

मिर्जा मुहम्मद ने उस अँधेरी कोठरी में सर उठाकर देखा।

"जहांपनाह, मैं हूँ नियामत।"

"तुम यहाँ कैसे ? वे लोग कहाँ गये ?"

कभी-कभी अँधेरा भी शायद बातें करता-सा लगता है। अगर अँधेरा बोल सकता है तो मान लेना होगा कि सचमुच में खुदा नाम की कोई चीज है। और अगर खुदा नाम का कोई है तो मैं उसके दरबार में अपनी अर्जी पेश करूँगा। मैंने किसी से कुछ नहीं माँगा। मेरे पास जो कुछ था, उन लोगों ने ले लिया; इसके बाद भी मुझे यहाँ कैद क्यों कर रखा है ? मैं तो मैं, उस बेकसूर लुत्फुन्निसा और मासूम बच्ची का भी पता नहीं उन लोगों ने क्या किया है ? उन लोगों ने मेरी मसनद छीन ली है, चेहल-सुतून लूट लिया है, अब तो मुझे वे छोड़ ही सकते हैं। मैं जानता हूँ कि मैंने अपनी जिन्दगी को ऊल-जलूल कामों में लगाया है। मैं जानता हूँ कि मैंने कभी किसी का भला नहीं किया। फिर भी....

"जहांपनाह, मैं नियामत हूँ, आपका खिदमतगार।"

नहीं नियामत! मैं जानता हूँ, तुम नियामत नहीं हो। मैं जानता हूँ, मैं सपना देख रहा हूँ। मैं जानता हूँ, कभी-कभी अँधेरा भी बातें करता है। मैं जानता हूँ, मैं अपने मोतीझील में नहीं हूँ। मैं जानता हूँ, मीर दाऊद, मीर कासिम और मीरन ने मुझे कैद कर रखा है। मुझे सपना न दिखाओ नियामत ! मुझे उम्मीद न दो, मुझे खुशी न दो, मुझे रोशनी न दिखाओ।

"जहांपनाह, यहाँ कोई नहीं है, आप भाग जाइए। जल्दी कीजिए ! पिछवाड़े का दरवाजा खुला रख छोड़ा है।"

फिर वही बात ! तुम क्या मुझे बहकाना चाहते हो ? मुझे अच्छी तरह मालूम है कि मैं हारकर लवकाबाग से भागा हूँ। मैंने तो मान ही लिया है कि जिन्दगी हकीकत नहीं है, हकीकत है मौत ! जब मौत ही हकीकत है तो मुझे भी वह मंजूर है। जिन्दा रहने की मुझे कतई ख्वाहिश नहीं, मुझे मसनद का भी लालच नहीं है। मैं तुम सभी के सामने इकरार करता हूँ कि तुम लोगों की दुनिया ने मुझे पनाह दी, तुम लोगों के सूरज ने मुझे रोशनी दी, तुम लोगों की हवा ने मुझे साँस लेने दी। मैं यह कभी नहीं कहता कि मैं इन्सान की दुनिया में अक्षय अधिकार लेकर पैदा हुआ हूँ। मैं कभी भी नहीं कहूँगा कि दुनिया ने मुझे शान्ति और आराम दिया है। बस यही कहूँगा, इस दुनिया के किसी भी कोने में मुझे पड़े रहने के लिए जरा-सी जमीन मिल जाती तो मैं सभी की निगाह से ओझल रह कर जिन्दगी बिता देता।

"कर्नल, कर्नल !"

रात को अचानक किसी की आवाज सुनकर क्लाइव की नींद टूट गयी।

"कौन ?"

"कर्नल, मैं हूँ किलपैट्रिक। नवाब का क़त्ल हो गया है।"

"कत्ल ! मर्डर ? नवाब सिराजुद्दौला का ?"

क्लाइव चौंककर बिस्तर पर उठ बैठा।

"लेकिन मैंने तो आर्डर दे रखा था कि नवाब को अभी कोई पनिशमेंट न दिया जाय। उसका फैसला मैं खुद करूँगा। मर्डर किसने किया ?"

"मुहम्मद बेग ने।"

"वह कौन है ?"

किलपैट्रिक ने कहा, "मीरन का खास आदमी है।"

"मीरन कहाँ है ?"

किलपैट्रिक ने कहा, "उसका कोई ट्रेस नहीं मिल रहा है !"

"चलो, मैं आ रहा हूँ।"

इतना कहकर जल्दी-जल्दी किसी तरह कपड़े पहनकर क्लाइव बाहर निकल पड़ा।

●

उधर अनन्त यात्रा का पथिक निःसीम आकाश की ओर देखकर प्रार्थना किये जा रहा था—हे भगवान, मराली को तुम मुर्शिदाबाद से दूर ले जाओ ! दूर जाकर उसे सुख मिले, पति मिले, वह अपना घर बसाये और संतानवती हो।

पूरब से पश्चिम, पश्चिम से उत्तर और उत्तर से दक्षिण। इसी तरह महीनों गुजर गये। छहों बजरे कुछ दिन जहाँगीराबाद जाकर रुके; फिर वहाँ से चल देते तो और कहीं जाकर रुकते, फिर निरुद्देश्य यात्रा।

मीरन किसी भी तरह अपने को समझा नहीं पा रहा था। हर वक्त मेजर किलपैट्रिक की टुकड़ी का डर लगा रहता। कलकत्ते से कर्नल क्लाइव का आर्डर आया था, जैसे भी हो मीरन को फौरन गिरफ्तार करके लाया जाय। सिर्फ मीरन ही नहीं। मीरन के साथ जो बेगमें हैं उन्हें भी।

उस दिन अचानक रिमझिम-रिमझिम पानी बरसने लगा। बारिश होने पर कान्त को बड़ा अच्छा लगता। उस समय वह एकांत रूप से अपने आपको महसूस करता। वह एकाग्र चित्त से मराली के दूर चले जाने की कामना करने लगता।

तभी बजरे ने बड़े जोर का हचकोला खाया। पीछे से कोई चिल्ला रहा था, "फिरंगी आ रहे हैं जोर से चलाओ !"

लेकिन जोर से चलाओ कहने से ही तो नाव जोर से नहीं चलती। अन्दर ताकत न होने पर बाहर भी वह कमजोर हो ही जाती है। नवाब अलीवर्दी खां के वक्त से ह

नवाब निजामत जैसे खाली हो गयी थी। थोड़ी-बहुत जो ताकत थी वह भी नवाब सिराजुद्दौला के समय जाती रही। ताकत ही कहाँ थी कि नाव जोर से चलती!

कोई खर्च करके खाली हो जाता है तो कोई अभाव की वजह से। सन् १७५७ की २६ जुलाई को नवाब-निजामत सचमुच खोखली हो गयी थी। कहीं भी रुपया नहीं था। फिरंगी कम्पनी की फौज को रसद जुटाने के लिए अलग रुपया चाहिए था। इसके अलावा किस्त भरने के लिए भी लाखों रुपये चाहिए। अगली किस्त में ही उन्नीस लाख रुपये चाहिए थे। इतने रुपये कहाँ से आयेंगे? हुगली, कृष्णनगर और बर्दवान, हर जगह रुपये के लिए खत गया।

उधर कर्नल क्लाइव जिद पकड़े था, मुझे मरियम बेगम चाहिए।

मीर जाफर साहब ने मसनद पर बैठकर देखा, खजाना खाली था। इधर क्लाइव तगादे पर तगादा कर रहा था। जगत्सेठ जी कह रहे थे रुपया नहीं है।

मराली बार-बार पूछती, "कुछ पता लगा?"

क्लाइव कहता, "किलपैट्रिक को भेजा है। कुछ दिन और सब्र करो।"

मीरन के पास भी खबर पहुँच चुकी थी। इतिहास के इंगित पर जो इंग्लैन्ड इंडिया आया था, वह ऐसे ही नहीं आया था। बिना किसी वजह के राज्य का उत्थान या पतन नहीं होता। उत्थान के लिए किसी अकबर बादशाह या शिवाजी जैसे बन्दा का आविर्भाव होता है। इसी तरह पतन के लिए किसी रॉबर्ट क्लाइव का होना भी जरूरी है। एक बनाने के लिए आता है तो दूसरा बिगाड़ने के लिए। रोजमर्रा के इतिहास में भी एक बार अँधेरा होता है तो एक बार उजाला। हर रोज सुबह होने पर उठना और रात होने पर सो जाना। ज्वार-भाटे की खींचतान में से इतिहास अपना रास्ता बनाकर चलता है। इतिहास कहता है, मैं ऊँच-नीच, धनी-गरीब या ज्ञानी-मूर्ख में भेदभाव नहीं मानता। अनादि काल से मेरी यात्रा प्रारम्भ हुई है। मेरे लिए महाराज अशोक और झोंपड़ी में रहनेवाली गरीब प्रजा में कोई भेद नहीं है। काम पूरा होते ही तुम्हें चले जाना होगा और तुम्हारी जगह पर कोई नया आयेगा। अब वे बहुत दूर से आये हैं। तुम्हारी बैलगाड़ी और नावों का जमाना अब लद चुका है। अब उन लोगों के देश से स्टीम इंजिन और भाप से चलनेवाले जहाज, छापेखाने, धान कूटने और कपड़ा बुनने की मशीन आ रही है। नोट छापनेवाली मशीन आ रही है, गाना सुनानेवाला ग्रामोफोन आ रहा है और फोटो खींचने के लिए कैमरा आ रहा है। अब उन लोगों के यहाँ ज्वार आया है और तुम्हारे यहाँ भाटा। तुम उन लोगों की बराबरी कैसे कर सकते हो?

तुम रो रहे हो? तुम्हारे बंगाल के नवाब का कत्ल हो गया, इसलिए रो रहे हो? लेकिन अगर नवाब को बचा लूँ तो तुम्हारे भाटे की मियाद पूरी नहीं होगी। तुम्हारी बैलगाड़ी और नावों का जमाना भी खत्म नहीं होगा।

"कौन?"

भाटेवाले मुल्क के नवाब ने सर उठाया।

"मैं हूं, मुहम्मद बेग !"

"तुम मेरा खून करने आये हो न ? लेकिन मैंने तो ऐसा कोई गलत काम नहीं किया। मैंने जो भी जुल्म और बेइंसाफी की हो, मेरे पुरखों ने तो उससे कहीं ज्यादा जुल्म ढाये थे। उन्होंने गांव के बाद गांव जलाकर राख कर दिये थे। तुम लोगों ने उनका तो खून नहीं किया ?"

मुहम्मद बेग के हाथ का तेज छुरा चमक उठा।

"मेरा खून करने से ही क्या तुम दुनिया में होती बेइंसाफी को रोक पाओगे ? मुझे मारकर तुम लोग जिसे ला रहे हो वह क्या जुल्म नहीं ढायेगा ? वह भी अगर मेरी तरह बंगाल की रिआया का खून चूसे, उनके घर की बहू-बेटियों को लाकर हरम में डाल ले, उनको जबर्दस्ती ईसाई बनाये और उनका अँगूठा काट ले तो क्या उसका भी खून कर पाओगे ?"

मुहम्मद बेग जैसे लोग तो महज इतिहास के खिदमतगार हैं। एक नये का रास्ता बनाने के लिए इन्हीं के हाथों एक पुराने का खून हमेशा-हमेशा से होता आया है, जिससे भाटे के बाद ज्वार का बहाव तेज हो।

कर्नल क्लाइव खड़ा-खड़ा उसी ओर देख रहा था। मीरन की जाफरगंज हवेली की एक अँधेरी कोठरी में जैसे एक अध्याय पूरा हुआ। पतन का एक अध्याय पूरा हुआ। एक जीवन पर यवनिका-पतन हो गया।

क्लाइव ने कहा, "लेकिन मैंने तो कहा था कि नवाब को सिर्फ कैद में रखा जाय।"

मीर जाफर ने कहा, "इस बारे में मैं कुछ भी नहीं जानता कर्नल, यह सब मीरन ने कराया है। मुहम्मद बेग को उसी ने नवाब को मार डालने के लिए हुक्म दिया था।"

नवाब मिर्जा मुहम्मद सिराजुद्दौला के गले की कंठी के ठीक ऊपर एक छेद से खून की धार निकल रही थी। बहते-बहते वह धार कोठरी के कोने में नाली की ओर जा रही थी। नवाब के चेहरे पर हैरत का भाव था। दोनों आँखें जैसे टकटकी लगाये क्लाइव की ओर देख रही थीं। सर जरा बायीं ओर झुका था। ठीक उसी तरह, जिस तरह नवाब के आगे कोर्निश करते वक्त अमीर और उमरावों का सर झुक जाता है। नवाब भी जैसे क्लाइव को कोर्निश कर रहा था। जैसे मूक भाषा में कह रहा था, सलाम अलेकम !

उस अँधेरी कोठरी में खड़े क्लाइव का जैसे दम घुटा जा रहा था। पास ही नया नवाब शुजा-उल-मुल्क मीर जाफर अली खाँ महाबत जंग आलमगीर बहादुर खड़ा था। उसके बाद जगत्सेठ जी का दीवान रणजीत राय, उसके बाद नवाब मिर्जा मुहम्मद का श्वसुर इराज खाँ और महाराज कृष्णचंद्र वगैरह खड़े थे। उनसे हटकर मीर दाऊद, मीर कासिम, डिहीदार रजा अली, हतियागढ़ के छोटे सरकार, मेजर किलपैट्रिक, वीचर, वट्स वगैरह खड़े थे। इतिहास का इंसाफ देखकर जैसे सभी गूंगे बन गये थे।

र मियाँ भी एक किनारे खड़ा था।

पता नहीं कहाँ से भिन्न-भिन्न करती एक मक्खी सीधे नवाब मिर्जा मुहम्मद की र पर आ बैठी। बैठकर पंख हिलाने लगी। इसके बाद जैसे गरदन पर बैठना उसे न्द नहीं आया और वह वहाँ से उड़कर नवाब के होंठों पर बैठकर हाथ-पाँव हिलाने । कोठरी में इतने बड़े-बड़े अमीर-उमराव खड़े थे लेकिन उस मक्खी को जैसे किसी परवाह नहीं थी।

क्लाइव से यह नहीं देखा गया। जेब से रूमाल निकालकर वह उस ओर गने लगा जैसे कहना चाहता हो—भागो, बी ऑफ! बी ऑफ!

सभी उस मक्खी को देख रहे थे। लेकिन किसी के भी मन में इस तरह ठेस हीं लगी। किसी को ख्याल नहीं आया कि एक वीर का अपमान सारे मनुष्य-जाति अपमान है।

मक्खी क्लाइव के मुँह के पास जाकर भिनभिनाने लगी। रूमाल से उसे एक र करते हुए क्लाइव ने कहा, "डेड बॉडी के ऊपर कोई कपड़ा डलवा दीजिए।"

इतना कहकर वह बाहर की ओर चल दिया। नया नवाब मीर जाफर भी छे-पीछे आ रहा था।

"कर्नल!"

क्लाइव ने मुड़कर देखा।

"मुझे सख्त अफसोस है कर्नल कि...."

"क्यों? ह्वाई?"

"मरियम बेगम को आपके पास भेजने का अपना वादा मैं पूरा नहीं कर या।"

बिना कोई जवाब दिये क्लाइव आगे बढ़ गया।

मीर जाफर अभी भी पीछे-पीछे आ रहा था।

"नवाब मिर्जा मुहम्मद को कत्ल करने का हुक्म मैंने नहीं दिया था कर्नल! बगैर मेरे हुक्म के मुहम्मद बेग ने ऐसा किया है।"

"फिर किसके हुक्म से नवाब का खून हुआ?"

"वह कहता है, मीरन ने हुक्म दिया था।"

"मीरन कहाँ गया?"

"उसे ढूँढ रहा हूँ, मिल नहीं रहा है। शायद वह बेगमात को लेकर जहाँगीरा-बाद की तरफ गया है। ढूँढने के लिए मैंने आदमी भेजा है।"

"नवाब के साथ जो बेगम-बाँदियाँ कैद थीं, वे कहाँ गयीं?"

"नियामत ने कमरे का ताला खोल दिया था। वे कहाँ चली गयी हैं, किसी को नहीं मालूम।"

"अच्छा, आप जाइए।"

मीर जाफर के जाते ही मेजर किलपैट्रिक पास आया। [illegible]

"मेजर, तुम अभी आर्मी लेकर चले जाओ। 'आई मस्ट हैव मीरन! उसके साथ जितनी बेगमें हैं, उन्हें भी जैसे हो लाना होगा। हरी अप!"

❁

लेकिन इतिहास के देवता अपनी मर्जी के मुताबिक सृष्टि, स्थिति और प्रलय का काम किये जाते हैं। इसीलिए मनुष्य जाति के इतिहास के माने ही सृष्टि और प्रलय का इतिहास है। जो हतियागढ़ एक दिन नवाव-निजामत की मनमानी से तहस-नहस हो गया था, उसी हतियागढ़ में छोटे सरकार फिर वापस आ गये।

बड़ी बहूरानी के पास पहले ही खबर आ चुकी थी। छोटे सरकार उसी घाट पर आकर वजरे से उतरे। नायव-गुमाश्ते-पाइक-प्यादे और सारे गाँववाले वहाँ हाजिर थे। वजरे से छोटे सरकार के वाहर आते ही गोकुल सामने आकर खड़ा हो गया।

छोटे सरकार ने कहा, "पालकी कहाँ है, पालकी नहीं लाये?"

दुर्गा छोटी बहूरानी से कह रही थी, "उतरो बहूरानी, हतियागढ़ आ गया।"

छोटी बहूरानी को जैसे तब भी यकीन नहीं आ रहा था। सचमुच हतियागढ़ आ गया। सब शिव जी की कृपा है। पहुँचते ही पूजा चढ़ानी पड़ेगी।

धीरे-धीरे महावर लगा पाँव बढ़ाकर छोटी बहूरानी घाट पर आयी। दुर्गा भी उसके पीछे-पीछे आयी। छोटी बहूरानी ने माथे तक घूँघट खींच लिया। मानो शादी के वाद नयी दुलहिन हतियागढ़ की राजगढ़ी में आ रही थी। आगे-आगे छोटे सरकार चलने लगे। गोकुल उनके सर पर छाता थामे चलने लगा। जगा खजांची भी उनके साथ था।

छोटी बहूरानी के पालकी में बैठते ही दरवाजे बन्द हो गये। पालकी छातिम-तल्ला के टीले की ओर चलने लगी। छातिमतल्ला के टीले के वाद राजगढ़ी की अतिथिशाला का बड़ा फाटक था।

अतिथिशाला के सदर फाटक पर माधव ढाली लाठी लिये पहरा दे रहा था। छोटे सरकार को देखते ही उसने हाथ जोड़कर झुककर प्रणाम किया।

छोटे सरकार ने कहा, "क्यों रे माधव, मजे में है न?"

जगा खजांची ने कहा, "जी आपके विना राजवाड़ी भायँ-भायँ कर रही थी।"

छोटे सरकार कोई जवाव दिये विना उसी तरह चलते रहे। अतिथिशाला के वायीं ओर होकर अंदर जाने का रास्ता था। अंदर पहुँचते ही पहले पक्का तालाव था। तालाव के वायीं ओर शिव जी का मंदिर था। छोटी बहूरानी से शादी होने के वाद छोटे सरकार जब अपने घर आये थे, उस समय भी पहले शिव जी के मंदिर में गये थे।

छोटे सरकार उसी ओर जा रहे थे। पालकी से उतरकर बहूरानी भी उसी ओर जा रही थीं।

तभी अचानक बड़ी बहूरानी की आवाज आयी, "दुर्गा !"

दुर्गा ने जल्दी-जल्दी पांव बढ़ाते हुए कहा, "आयी, बड़ी बहूरानी !"

बड़ी बहूरानी की ऐसी आवाज सुनकर छोटे सरकार आश्चर्य में पड़ गये।

"छोटे सरकार से कह दे कि छोटी को लेकर अंदर न आयें।"

बड़ी बहूरानी की बात सुनकर सभी हैरान थे।

छोटे सरकार ने जल्दी से आगे बढ़कर कहा, "तुम कह क्या रही हो ?"

"जो कुछ कह रही हूं, ठीक कह रही हूं—छोटी को लेकर अंदर न आना।"

"लेकिन वह अंदर नहीं आयेगी तो कहाँ जायेगी ?"

"इस घर के बाहर क्या रहने की और कोई जगह नहीं है ?"

"इस घर के बाहर ? बड़ी बहू, तुम क्या कह रही हो, मैं समझ नहीं पा रहा। कहाँ रहेगी छोटी बहू ? उसका क्या बाप का घर भी है कि वहाँ चली जायेगी ?"

"बाप का घर नहीं है तो क्या हतियागढ़ की राजगद्दी का बाहर-महल भी नहीं ? वह वहीं रहेगी।"

पालकी से उतरकर बड़ी बहूरानी की बातें कान में जाते ही छोटी बहूरानी का र चकरा गया। दुर्गा ने उसे पकड़ लिया, नहीं तो वह गिर पड़ती।

बड़ी बहूरानी कह रही थी, "छोटी का तकिया-बिस्तर अंदर से भिजवा देती, आज से वह वहीं सोयेगी।"

छोटे सरकार ने पूछा, "और मैं ?"

बड़ी बहूरानी ने कहा, "जहां तुम्हारा मन होगा, वहीं सोओगे। तुम्हें किसी अन्दर सोने के लिए कसम नहीं धरायी है।"

बड़ी बहूरानी ने और कुछ नहीं कहा। वह अन्दर चली गयी। छोटे सरकार भी कुछ न कह सके। वे वहीं पत्थर बने चुपचाप थोड़ी देर खड़े रहे।

●

मराली को ज्यादा दिन दमदम हाउस में नहीं रहना पड़ा था। फिर भी वह जितने दिन रही, रोज एक बार गिरजाघर जाती। विशेषकर हर रविवार को तो वह जाती ही थी। दमदम गिरजाघर के फिरंगी पादरी साहब ने मराली का नामकरण किया था—मेरी। लोग मेरी बेगम कहते थे।

गिरजाघर से निकलकर जब वह घूंघट काढ़े पैदल जाती थी उस समय चौबीस परगने के लोग सड़क के दोनों तरफ खड़े होकर आश्चर्य से मेरी बेगम को देखते थे। किसी की गोद में बच्चा रहता तो मेरी बेगम उसे दुलार करती। कोई फटा कपड़ा पहने रहता तो वह उसे नया कपड़ा खरीदने के लिए पैसा देती। कोई बीमार पड़ा है सुनने पर वह वैद्य से दवा लाने का पैसा देती। दमदम के पास उसने एक तालाब बनवा दिया था। बनवा दिया था, कहना गलत होगा। एक तालाब था, लेकिन सूख गया था। गांववालों को पानी की तकलीफ थी। वहां की जमीन उसने

साहब से कहकर उद्धवदास के नाम लिखवा दी थी। तालाब का नाम पड़ा था 'कान्त-सागर'।

फिर दिन भर उपवास रहने के बाद वह अपने हाथ से चावल पकाकर खाती थी। लोग मेरी बेगम को बहुत मानते थे। साहब कलकत्ते में रहता तो कभी-कभी एकाध दिन के लिए दमदम-हाउस में भी आता।

छावनी बहुत बड़ी थी। उस समय भी छावनी पूरी नहीं बनी थी। साहब की फौज के सिपाही पास ही रहते थे। हाथियों और घोड़ों के लिए बड़े-बड़े अस्तबल बने थे। फिर सड़क के मोड़ पर साहब का बगीचे वाला मकान था। यह मकान भी बहुत बड़ा था। फाटक पर फौज के सिपाही पहरा देते थे। बिना इजाजत अंदर जाने का हुक्म नहीं था।

लेकिन मेरी बेगम का नाम लेने पर सभी को इजाजत मिल जाती। मेरी बेगम ने बुलाया है! बस। मेरी बेगम के पास जाकर अगर कोई रोता तो वह कभी खाली हाथ नहीं लौटता था। वह मन लगाकर सभी का दुःख सुनती थी। किसी का बैल मर जाता तो किसी की लड़की की शादी में दहेज देना होता तो किसी के घर का छप्पर उड़ जाता।

और क्लाइव? क्लाइव साहब के जिम्में काफी काम था। अठारहवीं सदी की राजनीति उस समय और भी जटिल हो गयी थी। मीर जाफर से भी कंपनी का झगड़ा शुरू हो गया था। कभी-कभी एक दिन के लिए साहब आता भी तो आँधी के समान आता था।

उस समय उद्धवदास फर्श पर बैठा लिख रहा होता। मराली ने जो कुछ देखा और सुना था, वह सब कुछ लिख लेता था।

कभी-कभी उद्धवदास सर उठाकर पूछता, "फिर?"

साहब कमरे में आते ही तकलीफ के मारे बेचैन हो बिस्तर पर पड़ जाता।

मराली पूछती, "क्या हो गया आपको?"

"फिर दर्द बढ़ गया है। कल रात सो नहीं सका। वह फिर आया था।"

"कौन?"

"वही सक्सेस! ठीक उसी तरह वह कमरे में घुस आया था।"

"फिर? नींद आने की दवा क्यों नहीं पी ली?"

"कौन दवा देता? कमरे में तो कोई था नहीं।"

अपने देश में लौटकर भी साहब का यह रोग ठीक नहीं हुआ था। इंडिया को जीतने के लिए क्लाइव आया था लेकिन इंडिया ने आखिरकार साहब को जीत लिया। साहब ने आखिरी दिनों में अफीम खाना शुरू किया था। अफीम ने अंत में साहब को ही अपना ग्रास बना लिया था। उसने पोएट को खत में लिखा था, पहले की तरह आज भी वह रात को कमरे में आता है। वही सक्सेस! वह बस कहता है—सक्सेस माने सफरिंग है। साहब मराली के बारे में भी लिखता था। ग्रेट लेडी

दि ग्रेट लेडी ऑफ बेंगाल ! इंगलैंड जाकर भी साहब मराली को भूल नहीं सका था। मराली के मरने के बाद भी साहब का खत आता था, लेकिन एक दिन उसका खत आना बंद हो गया। अब खत आया मेम साहब का।

याद है उस समय मराली बहुत ज्यादा चिंतित थी। साहब एक बार आता और फिर चला जाता।

कहता, "पूर्णिया जा रहा हूँ।"

लेकिन उस दिन मराली ने नहीं छोड़ा। कहा, "कोई खबर मिली ?"

साहब ने कहा, "किलपेट्रिक को ढूंढ़ने के लिए भेजा है।"

"लेकिन एक आदमी को ढूंढ़ने में कितने दिन लगते हैं ?"

साहब ने कहा, "मीरन बड़ा शैतान है। उसने बेगमात को कहाँ छिपाकर रखा है यह किसी को नहीं मालूम।"

"फिर आप लोग किसलिए हैं ? इतनी औरतों को लेकर वह आसमान में तो उड़ नहीं सकता। जरूर कहीं छिपा होगा !"

क्लाइव कहता, "वह जहाँगीराबाद में नहीं है, अजीमाबाद में भी नहीं है, पूर्णिया में नहीं है, हुगली में नहीं है। हरेक जगह उसे ढूंढ़ा गया है।"

"फिर वह जा कहाँ सकता है ?"

"यही तो मैं भी सोच रहा हूँ।"

लेकिन उस दिन अचानक कान्त आ पहुँचा। मराली दमदम हाउस के अपने कमरे में सो रही थी। काफी दूर एक बट के पेड़ पर चमगादड़ों की किचकिच आवाज हो रही थी। तभी कैन्टूनमेंट के घंटे की आवाज आयी। एक-दो-तीन। गहरी रात थी। बट के पत्तों से टपटप करके ओस की बूंदें गिर रही थीं। कान्त-सागर के पास एक कुटिया में बैठे उद्धवदास नरकट की कलम और देशी स्याही से 'बेगम मेरी विश्वास' लिखने में डूबे थे। रात-रात भर जागकर तुम्हारे लिए यह महाकाव्य लिखूंगा। बहुत दिन पहले इसी तरह की एक रात को मैं हतियागढ़ की अतिथिशाला में सोया हुआ था। ठीक ऐसी ही रात थी। उस समय मैंने न मृत्यु को स्वीकारा था, न जीवन को। इसीलिए मैंने विवाह को भी अस्वीकार किया। लेकिन उसके बाद कितने ही जीवन देखे, मृत्युएँ देखीं और विवाह देखे। बहुत-से उत्थान-पतन और उलट-फेर देखने के बाद मैं आज इस निश्चय पर पहुँचा हूँ कि जिसकी छाया मृत्यु है, अमृत भी उसी की छाया है। इसीलिए मृत्यु और अमृत, दोनों उसके लिए समान हैं। जिनके पास पहुँचकर सारा द्वन्द्व, सारी उलझन मिट जाती है, चरम सत्य वे ही हैं। पाप और पुण्य, स्वार्थ और परमार्थ, यश और अपयश सभी उस चरम सत्य के समीप एकाकार हो जाते हैं। सारी विच्छिन्नताएँ वहाँ पहुँचने पर संयुक्त हो जाती हैं।

"अरे ! तुम ?"

अचानक जैसे बरगद के पेड़ पर चमगादड़ों की किच-किच आवाज रुक गयी।

"तुम कहाँ से आ गये ? इतने दिन तक कहाँ थे ? उन लोगों ने तुम्हें कह
छुपा रखा था ?"

उधर अपनी कुटिया में उद्धवदास ने दीये की लौ को जरा बढ़ाया। उद्धवदा
'शान्ति पर्व' लिख रहा था। 'बेगम मेरी विश्वास' का आखिरी पर्व। एक युद्ध
बीच से गुज़रे एक जीवन का अन्तिम पर्व। एक युग का अन्तिम चरण!

"लेकिन क्लाइव साहब तो कह रहे थे कि मीरन ने तुम्हें कहीं छुपा रखा है
वहाँ से भागे कैसे ?"

अगर वे प्रेमस्वरूप हैं तो इस दुनिया में इतना कष्ट क्यों है ? इतना विच्छे
क्यों है ? विरोध इतनी चोट क्यों पहुँचाता है मृत्यु सारे दुःख क्यों हर लेती है ? अगर
मंगलमय हैं तो दुनिया में इतना अमंगल क्यों है ? तब क्या इस मन, इस बुद्धि और इ
अहम् के लिए ही यह विरोध, यह मृत्यु और यह अमंगल है ! मैंने तो सब छोड़ दिय
था। मुझे संसार या स्वार्थ का कोई बन्धन नहीं बाँध पाया। कामना-वासना औ
माया-मोह छोड़ने के बाद ही तो मैं हरि का दास हो सका था। लेकिन मन, बुि
और अहंकार का तो त्याग नहीं कर पाया!

"देखो, तुम आ गये, यह अच्छा ही हुआ। अब चलो, हम दोनों कहीं च
जायँ। आज तुम जहाँ भी जाने को कहोगे, मैं जाने के लिए तैयार हूँ, आज मैं तुम
छोड़कर कहीं भी नहीं जाऊँगी।"

लिखते-लिखते उद्धवदास रुक गया। रात खत्म हो चली थी। कैन्टूनमेंट
घंटे ने ठन्‌ठन् चार बजाये और करीब-करीब तभी एक संतरी ने आकर आवाज़ दी-

उद्धवदास बाहर आया। संतरी हाथ में मशाल लिये हुए था। अभी
अच्छी तरह से उजाला नहीं हुआ था।

"क्या बात है ?"

"मेरी बेगम साहबा ने आपको बुलाया है।"

"क्यों ? इतने भोर में क्यों मुझे बुलाया ? साहब वापस आये हैं ?"

"जी हाँ; कर्नल साहब आ गये हैं। मेजर किलपैट्रिक आये हैं। मरियम बेग
साहबा जहाँगीराबाद में पकड़ी गयी है, उसे भी लाया गया है।"

"ठीक है, चलो।"

उद्धवदास बदन पर चादर डाले चलने के लिए तैयार हो गया।

●

उस दिन अचानक क्या से क्या हो गया। इतने दिन सब मजे में थे। मुर्शिद
बाद की मसनद पर बैठकर मीर जाफर को लग रहा था जैसे किसी ने उसे ज्वाल
मुखी के ऊपर बैठा दिया हो। खजाना खाली था। मुर्शिद कुली खाँ जो दौलत इकट्ठा क
गया था, नवाब शुजाउद्दीन ने उसे खत्म कर दिया था। फिर नवाब अलीवर्दी खाँ
जिन्दगी भर बादशाही पेशकश देने और बर्गियों का हमला रोकने में ही खजाना खा

कर डाला था। आखिर के तीन सालों में उसने थोड़ी-बहुत दौलत इकट्ठी की थी। लेकिन सिराजुद्दौला ने मरते तक उसे भी खर्च कर दिया। फिर आया क्लाइव। वह आते ही तगादा पर तगादा करने लगा—रुपये दो, बकाया रुपये दो।

मीर जाफर को अब महसूस हो रहा था कि मसनद पर वह जरूर बैठा था, लेकिन मसनद का असली मालिक क्लाइव ही है। फिर घर का भेदी भी लंका ढाह रहा था। राजा दुर्लभराम अलग साजिश कर रहा था।

और मीरन ?

उसका भी कोई पता नहीं। क्लाइव उसे ढूंढ़ निकालने के लिए बार-बार हुक्म भेज रहा था। मीरन एक बार जहांगीराबाद गया। वहां कुछ दिन छिपे रहने के बाद जब उसे खबर मिली कि क्लाइव के आदमी आ रहे हैं तब उसके बजरे और किसी घाट में जा लगे। एक घाट से दूसरा घाट। नवाब-निजामत जब अपने को छिपाये भागी तो फिर भागती ही रही।

लेकिन एक दिन बचना मुश्किल हो गया। पद्मा के बीच छः बजरे चल रहे थे। अचानक लगा पीछे से फिरंगी फौज आ रही है।

मीरन चिल्ला उठा, "जोर से ! और जोर से चलाओ !"

बजरे तीर की भांति चलने लगे। आगे भी अंधेरा था और पीछे भी। अंधेरे के समुद्र में मानो ज्वार आ गया था। आकाश और पवन उन्मत्त हो उठे। पीछे आ रहे बजरों के डांड़ चलाने की आवाजें कानों में आने लगीं।

"चलाओ ! और जोर से चलाओ !"

फिरंगी फौज ने क्या समझ लिया है ? लक्काबाग की लड़ाई में जीत गयी है तो क्या मुर्शिदाबाद की मसनद भी उसके कब्जे में आ गयी ? मसनद तो मीर जाफर अली महाबत जंग आलमगीर की है। उसमें हिस्सा-बांट करने क्यों आती है ? मैं बेगमों को चाहे जहां रखूंगा, उनको लेकर चाहे जो करूंगा और मेरी खुशी होगी तो उनको मार भी डालूंगा।

दूर से किलपैट्रिक साहब की आवाज सुनाई पड़ी।

"हॉल्ट ! हॉल्ट !"

मीरन फिर चिल्लाया, "जोर से चलाओ ! जोर से !"

लेकिन जोर से चलाओ कहने से ही नाव जोर से नहीं चलती। अन्दर ताकत नहीं रहेगी तो कमजोर होना ही पड़ेगा। नवाब अलीवर्दी खां के जमाने से निजामत कमजोर हो चली थी। फिर भी जितनी ताकत थी, नवाब सिराजुद्दौला के समय खत्म हो गयी। अब जी-जान से भी डांड़ चलाने पर भी नाव तेज नहीं चलती। आज समुद्र के उस पार से और एक फौज आयी है। इसका तेज प्रबल है, विक्रम तीव्र है और पराक्रम भयंकर। ये लोग बहुत दूर से आये हैं। तुम्हारा बैलगाड़ी और नाव वाला जमाना लद चुका है। अब समुद्र पार वालों के देश से आ रहे हैं भाप से चलनेवाले इंजन और जहाज और छापाखाना। आ रही हैं धान कूटने और कपड़ा बुनने की कल। नोट छापने की

मशीन आ रही है और गाना सुनाने के ग्रामोफोन और फोटो खींचने के कैमरे आ हैं। अब उन लोगों का ज्वार आया है और तुम लोगों का भाटा। उनका मुकाब तुम कैसे कर सकते हो ?

तुम लोग रोते क्यों हो ? वंगाल का नवाव मारा गया है क्या इसीलिए लोग रो रहे हो ? सिराजुद्दौला की लाश हाथी की पीठ पर रखकर सारे शह घुमायी गयी। एक वार महिमापुर, एक वार चौक वाजार, एक वार मंसूरगंज, वार जाफरगंज और सवके वाद चेहल-सुतून के सामने लाश लायी गयी।

तुम लोग मृत नवाव को देखो और रोओ ! आँखें पोंछते हुए तुम लोग सोचो मुर्शिदावाद के नवाव को यह सजा क्यों मिली ? जिस नवाव को कोर्निश न करने पर लोगों की गर्दन नापी जाती थी आज चाहो तो उसके मुँह पर थूक भी सकते हो। गर्दन नहीं नापेगा, कोई वाधा न डालेगा और कोई मना भी नहीं करेगा। खुदा हाफि

●

अंत समय वेगम साहवाओं को वड़ी तकलीफ उठानी पड़ी थी। नानी अपनी जिन्दगी में कभी इस तरह खींचतान में नहीं पड़ी थी। अमीना वेगम, घर वेगम और मयमाना वेगम को नवाव अलीवर्दी खाँ ने वड़े लाड़-प्यार से पाला-प था। तुम कहाँ हो नजर अली ? तुम्हें ढूँढ़ने एक दिन मैं चेहल-सुतून से निकलकर वाजार की सड़कों पर गयी थी। वहाँ शराफत अली की खुशवूदार तेल की दुकान भी मैं गयी थी। लेकिन अब तुम कहाँ हो नजर अली ?

शायद उस दिन नानी वेगम की जवान पर ही कुरान की आयत उच्चा हुई थी। खुदाताला, मैंने वार-वार तुमसे यही प्रार्थना की है कि भय से और वि से मेरी रक्षा करो, मृत्यु से मेरी रक्षा करो। लेकिन व्यर्थता से वचाने की, जड़त वचाने की या तुम्हारे अप्रकाश से वचाने की प्रार्थना कभी नहीं की। आज तुम लिए दंड दो खुदाताला !

उद्धवदास ने लिखा है—छहों वेगम साहवाओं को मीरन ने जब उस रात को पद्मा में डुवो दिया था उस समय किसी के सर पर विजली नहीं गिरी थी, उल्कापात नहीं हुआ था और एक भी तारा टूट नहीं पड़ा था।

लेकिन एक की आर्त पुकार शायद कोई भी न सुन सका था। वह था का कान्त की आर्त पुकार मीरन ने नहीं सुनी थी, मेजर किलपैट्रिक ने नहीं सुनी थी आकाश-पवन-अंतरिक्ष-ईश्वर-खुदा-गॉड ने भी नहीं सुनी थी। शायद मराली ही सुन सकी थी। दमदम कैंटूनमेंट के क्लाइव साहव के वगीचेवाले मकान के एक छो कमरे में वह सोयी थी। दिन भर के वाद अपने हाथ से पकाकर उसने दो मुट्ठी खाया था। दूर, वहुत दूर उस समय उस वड़े वरगद के पेड़ पर कुछ चमगादड़ किच कर रहे थे। कैंटूनमेंट के सिपाही घंटा वजाकर प्रहर का हिसाव रख रहे एक, दो, तीन। गहरी रात थी। वरगद के पेड़ के पत्तों से ओस की वूँदें टपक

थीं। कान्त-सागर के पास एक कुटिया में बैठे नरकट की कलम और देशी स्याही से उस समय उद्धवदास एकाग्र हो 'बेगम मेरी विश्वास' लिख रहा था। मैं तुम लोगों के लिए रात जागकर यह महाकाव्य लिख रहा हूँ। एक दिन ऐसी ही रात को मैं हातियागढ़ की राजगद्दी को अतिथिशाला में सोया पड़ा था। वह रात भी ऐसी ही थी। उस समय मैंने जीवन को ठुकरा दिया था, मौत को भी तुच्छ समझा था और विवाह को भी स्वीकार नहीं किया था। लेकिन उसके बाद अनेक जन्म, अनेक मृत्युएँ और अनेक विवाह देखे। अनेक उत्थान-पतन और अनेक षड्यंत्र देख लिये। इसलिए आज समझ रहा हूँ कि मृत्यु जिनकी छाया है, अमृत भी उन्हीं की छाया है। उनके लिए मृत्यु और अमृत दोनों समान हैं। आज समझ सका हूँ, जिनके आगे समस्त द्वन्द्व की परिसमाप्ति होती है, वे ही परम सत्य हैं। पाप और पुण्य, अर्थ और परमार्थ, सम्मान और अपयश सभी परम सत्य के समीप एकाकार हो जाते हैं। उनके आगे समस्त खंड सत्ताओं की विच्छिन्नताएँ सम्मिलित हो उठती हैं।

"अरे तुम?"

कान्त का चेहरा सफेद फक पड़ गया था।

मराली हड़बड़ाकर उठ बैठी। उसने कहा, "तुम्हें क्या हो गया है? मैं तुम्हें कब से ढूँढ़ रही हूँ! हर जगह तुम्हारी तलाश में लोग गये हैं। आखिर तुम थे कहाँ?"

मराली को लगा कान्त की आँखें डबडबा आयी हैं।

"यह क्या, तुम रो रहे हो?"

मराली ने अपने आँचल से कान्त की आँखें पोंछी। फिर कहा, "एक दिन तुमने मुर्शिदाबाद से भाग चलने को कहा था, लेकिन मैं नहीं गयी थी। लेकिन आज मैं तुम्हारे साथ चलूँगी। तुम्हारा गाँव बड़ा-चातरा है न, हम दोनों वहीं चलकर रहेंगे।"

कान्त ने जैसे इतनी देर बाद कहा, "देखो, मुझे बड़ी तकलीफ हो रही है।"

"तकलीफ? कैसी तकलीफ? अब तुम मेरे पास आ गये हो। अब तुम्हें कोई तकलीफ नहीं होगी। अब मैं तुम्हारे पास-पास रहूँगी! वह मीरन बड़ा बदमाश है। ये सभी बदमाश हैं। मेंहदी निसार, मीर दाऊद, मीर कासिम, रजा अली और मीर जाफर सभी दुष्ट हैं। मैं साहब से कहकर सबको सजा दिलाऊँगी। सभी को मसनद से हटाऊँगी। उन लोगों के रहते किसी को चैन नहीं मिल सकता।"

कान्त चुपचाप सब सुन रहा था। कहा, "उन लोगों की बातें रहने दो, तुम अपनी बातें कहो। तुम तो सुखी हो न?"

मराली ने कहा, "उन लोगों की बातें क्यों रहने दूँ? उनके जिन्दा रहते क्या हम सुखी हो सकेंगे?"

फिर जरा रुककर कहा, "तुम खड़े क्यों हो? बैठो! तुम्हें ढूँढ़ने के लिए मैंने साहब से कहकर हर जगह आदमी भेजे थे। जहाँगीराबाद, पूर्णियाँ, अजीमाबाद और हुगली कोई भी जगह तो नहीं छोड़ी। अच्छा ही हुआ, तुम आ गये। अब चलो, अब मेरे साथ चलो।"

कान्त ने पूछा, "कहाँ ?"

"जहाँ तुम्हारा मन चाहे, लेकिन यहाँ अब नहीं रहना। इस मुल्क में अब नहीं रहना। जहाँ नवाब, अमीर, डिहीदार, मीर बख्शी वगैरह कोई नहीं हैं, ऐसे ही किसी देश में चले जायेंगे।"

"अगर कोई तुम्हारी निन्दा करे ? कोई तुम्हें बिरादरी से बाहर करे तो ?"

मराली ने कहा, "अब मैं किसकी परवाह करूँगी ? जिनको मैंने बचाना चाहा था, उनमें किसी को भी बचा न सकी। मीरन ने नवाब का खून किया है, हतियागढ़ की छोटी बहूरानी का पता नहीं चला। पता नहीं कैसे क्या हो गया ? फिर भी तुम शैतानों के हाथ से बचकर लौट सके हो, यही मेरा बहुत बड़ा सौभाग्य है। अब कोई मेरी निन्दा करे भी तो क्या होगा ? फिर अब मैं हिन्दू नहीं हूँ, अब मैं गिरजाघर जाकर ईसाई बन गयी हूँ। अब कौन मुझसे क्या कहेगा ? अब इतनी हिम्मत किसे है ?"

कान्त ने कहा, "ठीक है, चलो।"

मराली ने कहा, "चलो।"

"कहाँ जाओगी ?"

मराली ने कहा, "जहाँ तुम्हारी मर्जी हो ले चलो।"

कहकर मराली के उठकर खड़े होते ही आवाज आयी, "बेगम साहबा ! बेगम साहबा !"

और साथ ही साथ मराली की नींद टूट गयी। कहाँ ? कहाँ गये तुम ? अँधेरे के बीच मराली अपनी आँखों को मल-मलकर देखने की कोशिश कर रही थी। नहीं, वह कहीं भी तो नहीं है। तब क्या वह ख्वाब देख रही थी ?

बाहर से फिर आवाज आयी, "बेगम साहबा !"

जल्दी से दरवाजा खोलकर बाहर आने पर मराली ने देखा सामने आँगन में बहुत-से लोग जमा हैं। कर्नल क्लाइव एक ओर सर झुकाये खड़ा था। उसकी बगल में मेजर किलपैट्रिक और उसके बाद कम्पनी के प्रायः सभी अफसर खड़े थे। सबसे पीछे उद्धवदास खड़ा था। सब के सब चुप थे, जैसे किसी ने उनके होंठों को सी दिया हो।

मराली हैरानी से उन लोगों की ओर देख रही थी। क्या हुआ है ? तुम लोग चुप क्यों हो ? बोलते क्यों नहीं कि बात क्या है ?

सामने की ओर बढ़ते ही अचानक उसे नजर आया, कोई जमीन पर लेटा पड़ा था और साथ ही जैसे मराली के सर पर बिजली गिरी। वह झपटकर आगे बढ़ी। कौन ? तुम कौन हो ? कौन ?

कहते-कहते मराली जमीन पर पड़ी कान्त की लाश पर गिर पड़ी। उसे लगा, जैसे दूर कहीं से प्रार्थना के अस्पष्ट शब्द गूंज रहे हों। हे भगवन्, तुम उसे सुखी रखना ! उसे तुम मुर्शिदाबाद के पाप और पंकिलता से बाहर पहुँचा दो। वह अपना घर बसाये और सुखी रहे।

दूर उस बड़े बरगद के पेड़ पर चमगादड़ किचकिच कर रहे थे। केन्टूनमेन्ट के

सिपाही घड़ियाल पीट-पीटकर एक-एक प्रहर का हिसाब रख रहे थे—ठन्-ठन्-ठन् ।

•

इसके काफी दिनों बाद की बात है । मैं तब यूनिवर्सिटी में पढ़ता था ।

एक दिन रास्ते में जसीमुद्दीन साहब से मुलाकात हो गयी । जसीम साहब उस समय भी विश्वविख्यात कवि नहीं हुए थे । मैं एम० ए० में पढ़ता था । बँगला साहित्य मेरा विषय था । जसीम साहब यूनिवर्सिटी के बँगला डिपार्टमेंट में रिसर्च स्कॉलर थे । कवि के रूप में उसी समय हर कोई उनका नाम जान चुका था । वे राय बहादुर दीनेशचन्द्र सेन को पुरानी पोथियों के बारे में बतलाते थे । कोई नक्काशीदार मिट्टी का बर्तन, खिलौना या कटोरी मिलने पर वे फौरन दीनेशचन्द्र सेन के पास जा पहुँचते । यूनिवर्सिटी ऐसी चीजें अच्छी कीमत देकर खरीद लेती थी ।

एक दिन मैंने जसीम साहब से कहा, "एक पोथी मिली है जसीम साहब, आप उसे देखेंगे ?"

"कैसी पोथी ? नाम क्या है ?"

मैंने कहा, "नाम है बेगम मेरी विश्वास ।"

जसीम साहब उत्सुक हो उठे । बोले, "बड़ा विचित्र नाम है । नाम से लगता है, मुसलमान भी है, हिन्दू भी है और ईसाई भी । पोथी कितने साल पुरानी है ?"

मैंने कहा, "लगता है दो सौ साल पुरानी होगी । प्लासी की लड़ाई की पृष्ठभूमि पर लिखी गयी है । कवि का नाम है उद्धवदास । करीब हजार सफों की पोथी है ।"

जसीम साहब ने कहा, "कहीं जाली तो नहीं है ? आजकल लोग कच्चे कोयले का धुआँ लगाकर पुस्तक को पुरानी बना लेते हैं ।"

मैंने कहा, "लगता तो वैसा नहीं है । आप तो पोथी के एक्सपर्ट हैं । आप एक बार देखेंगे तो समझ जायेंगे ।"

"कितना माँग रहा है ?"

मैंने कहा, "कुछ भी नहीं । खरीदने-बेचने की बात ही नहीं चली । आप सिर्फ चलकर देख लीजिए । कहिए, कब चलेंगे ? ज्यादा दूर नहीं है, यही बागबाजार तक जाना है ।"

जसीम साहब ने कहा, "ठीक है, किसी दिन चलूंगा ।"

इस बात को भी अरसा हो गया । इस बीच न जाने क्या-क्या कांड हो गये । लड़ाई छिड़ी । बम गिरे । अकाल पड़ा । हिन्दू-मुस्लिम दंगे हुए । देश का बँटवारा हुआ । याने सब कुछ उलट-पुलट हो गया । जसीमुद्दीन साहब भी पाकिस्तान चले गये । आज शायद उन्हें भी ये बातें याद नहीं होंगी ।

याद न रहना ही स्वाभाविक है । लेकिन मैं नहीं भूल पाया । 'बेगम मेरी विश्वास' के अन्तिम सर्ग 'शांति पर्व' में उद्धवदास जो कहानी लिख गया है प्राचीन

साहित्य के इतिहास में वह अतुलनीय है।

करीब पन्द्रह दिन बाद ही मैं जसीमुद्दीन साहब को पशुपति बाबू के घर ले गया।

रास्ते भर उन्हें वही कहानी सुनाता रहा। जसीम साहब बड़े चाव से सुन रहे थे। जरा रुकते ही पूछते, "फिर क्या हुआ?"

मैं भी जैसे उस समय 'बेगम मेरी विश्वास' काव्य में डूबा हुआ था।

पूछता, "कहाँ तक कह चुका हूँ?"

जसीम साहब कहते, "मरियम बेगम को पद्मा के बीच बजरे से पकड़ लाया गया। फिर मराली पानी में कूद पड़ी।"

मैंने कहा, "उद्धवदास ने इस 'शांति पर्व' में पूरे 'बेगम मेरी विश्वास' का सार कह डाला है। पोथी अगर खराब हो जाय या खो जाय तो बंगाल के इतिहास का एक हिस्सा हमेशा के लिए लुप्त हो जायेगा, क्योंकि पोथी के पृष्ठों को छोड़ इसका कोई चिह्न कहीं नहीं है। वह मुर्शिदाबाद भी आज नहीं है। चौक बाजार की वह सड़क भी नहीं है। चेहल-सुतून भी नहीं है। वह जाफरगंज और मंसूरगंज भी नहीं हैं। सिराजुद्दौला, मीर जाफर, मीर कासिम, मीर दाऊद, मेंहदी निसार, रजा अली, कोई भी नहीं है। यहाँ तक कि उस दिन के क्लाइव और मराली भी आज नहीं हैं। खुद दिल्ली के शाहंशाह से खिताब पानेवाला जबर्दस्त-उल-मुल्क नासिरुद्दौला साबता-जंग बहादुर कर्नल क्लाइव भी आज इतिहास से खो गया है। उसे कहाँ कब्र दी गयी थी, आज उसका भी कोई निशान नहीं है। सन् १७७४ की २२ नवम्बर की रात को ताश खेलने के लिए बैठने पर उसके हाथ में पता नहीं कौन-सा पत्ता आ गया था। शायद क्वीन ऑफ स्पेड्स! हुकुम की बेगम! उसी हुकुम की बेगम को लिये क्लाइव बगल वाले कमरे में चला गया था।

पेगी ने आवाज दी, "क्या हुआ रॉबर्ट? उठ क्यों गये? तबीयत ठीक है न?"

बगल वाले कमरे में घुसकर क्लाइव ने अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया था। आज तुम कोई भी मेरे अपने नहीं हो। तुम लोगों के लिए मैंने इंडिया में एम्पायर की नींव डाली। फिर भी तुम लोग मुझे चोर, लुटेरा और गुंडा कहते हो! मुझे तुम लोगों ने अदालत में खड़ा किया, गालियाँ दीं, बेइज्जत किया और सजा दी।

"रॉबर्ट! रॉबर्ट!"

अचानक अन्दर से पिस्तौल की आवाज आयी और साथ ही साथ अठारहवीं सदी के ब्रिटिश साम्राज्य की नींव दो सौ सालों के लिए पक्की हो गयी।

इस समय सड़क जहाँ वेस्ट कैनाल रोड और ईस्ट कैनाल रोड में बँटकर दो दिशाओं में चली गयी है, वहीं दोनों सड़कों के बीच कर्नल क्लाइव की जमींदारी थी। दमदम कैंटूनमेंट भी है और दमदम हाउस के बड़े-बड़े खंभे आज भी सर पर छत को सम्हाले दो सौ साल से खड़े हैं। बगल में रेलवे लाइनें हैं। लेकिन आज रेलगाड़ी में चलनेवाले इस कोठी को नहीं पहचानते। वे नहीं जानते कि एक दिन वहीं महाराज

कृष्णचन्द्र, नवाब मीर जाफर अली, हतियागढ़ के छोटे सरकार और जगत्सेठ जी पहुँचे थे। उसी के सामने वह दलदल थी। आज को यह सॉल्ट लेक दमदम ड्राइव के बरामदे से नजर आती थी। वह गीली जमीन दिगंत तक फैली थी। आज भी उस विशालकाय बरगद के पेड़ के पत्तों से ओस की बूँदें गिरती हैं। कान्त-सागर अब नहीं रहा। वहाँ पर रिफ्यूजी क्वार्टर्स की कतारें हैं। अब तो रात को वहाँ जुगनू झिलमिल-झिलमिल करते रहते हैं, पेड़ की डालियों में चमगादड़ किच-किच करते रहते हैं और सर के ऊपर कोई हवाई जहाज चक्कर काटता हुआ ऊँची उड़ान भरने के लिए थोड़ा धुआँ छोड़कर बादलों में खो जाता है।

उद्धवदास के शान्ति पर्व से पता लगता है कि उस दिन सुबह क्लाइव ने उद्धवदास को कान्त-सागर की उसकी कुटिया से बुलवाया था। ठीक उसी समय मंसूरगंज हवेली से नवाब मीर जाफर को भी बुलाहट हुई थी। कृष्णनगर के महाराज कृष्णचन्द्र और हतियागढ़ के छोटे सरकार की भी बुलाहट हुई थी। दीवान रणजीत राय ने जाकर जगत्सेठ जी को सोते से जगाया था।

"कौन ?"

दीवान को देखकर जगत्सेठ जी ने पूछा, "क्या बात है ?"

दीवान ने कहा, "कर्नल क्लाइव बुरी तरह नाराज हो गया है। लगता है फिर लड़ाई करने मुर्शिदाबाद आयेगा।"

"क्यों ? अब ऐसा क्या हो गया ? सब तो निपट गया है।"

"सारी आफत मीरन की वजह से है। शायद वही पकड़ा गया है।"

"मीरन पकड़ा गया है ?"

"पकड़ा तो नहीं गया। लेकिन वह जब भाग रहा था, तब किलपैट्रिक ने उसका पीछा किया था। उसके साथ जो बेगमात थी, उन्हें पद्मा में डुबोकर वह भाग निकला है।"

"फिर क्या हुआ ?"

"फिर मीर जाफर साहब ने मुझे मंसूर-गंज़ी में बुलवाया था। नवाब काफी परेशान है। पिछले भुगतान की रकम तो बाकी है ही। उस पर इस बार की किस्त के उन्नीस लाख रुपये भी देने हैं। अब क्लाइव अगर गुस्से में आकर ज्यादा रुपया माँग बैठे तब ?"

सेठ जी ने कहा, "अब मुझे क्या करना होगा ?"

"नवाब ने कहा है कि आप एकबार दमदम में क्लाइव साहब की कोठी पर जायें।"

"मैं ?"

सेठ जी सोचने लगे। फ्रांसीसियों के पास सेठ जी के सात लाख रुपये पड़े हैं। वे रुपये फिरंगियों को खुश रखकर वसूल करने होंगे। इसलिए फिरंगियों को हाथ में रखना भी जरूरी है। सेठ जी ने कहा, "ठीक है आप जाकर नवाब से कहिए मैं जा रहा हूँ।"

इसी तरह मीर जाफर साहब ने कृष्णनगर भी खबर भिजवायी। महाराज ष्णचन्द्र भी क्लाइव के पास दमदम हाउस जाने के लिए तैयार हुए।

उधर हतियागढ़ के छोटे सरकार को जग्गा खजांची ने नींद से जगाया। छोटे रकार भी चलने को तैयार हुए। उन्होंने बजरा तैयार करने का हुक्म दिया।

सभी ने सोचा था दमदम हाउस जाकर कर्नल साहब का गुस्सा मिटाना होगा। ायद और रुपये देने का वादा करना होगा। फिरंगी जो ठहरा ! फिरंगी बड़ा तोता-श्म होता है। करीब दो सौ नावें भरकर रुपये-पैसे-गहने ले गया था उससे भी पेट हीं भरा। चौबीस परगने की जमींदारी पाकर भी खुश नहीं हुआ। शायद वह और ो रुपये चाहता है।

लेकिन दमदम हाउस के सामने पहुँचकर सभी हैरत में पड़ गये। वहाँ लोगों ी बड़ी भीड़ जमी थी। आस-पास के गाँवों से झुंड के झुंड औरत-मर्द और बच्चे-बूढ़े ाकर कैंटूनमेंट के मैदान में इकट्ठा हुए थे। चारों तरफ फौज के सिपाही खड़े थे। ाजर किलपैट्रिक, वाट्स, वीचर, कनिंघम और क्लाइव खड़े थे ! उनके साथ मुंशी वकृष्ण और रामचन्द्र भी खड़े थे।

पालकी पास पहुँचते ही मामला साफ हो गया। किसी को घेरकर सभी विस्मय से, श्रद्धा से और आतंक से विमूढ़ हो खड़े थे।

जगत्सेठ को देखकर क्लाइव ने कहा, "गुड मॉर्निंग !"

जगत्सेठ ने पूछा, "क्या हुआ है ? इतनी भीड़ क्यों है ?"

तब तक मीर जाफर, कृष्णचन्द्र और छोटे सरकार भी पहुँच गये थे।

उनके भी विस्मय की सीमा न रही। पूछा, "वह कौन है ? वहाँ कौन लेटा है ?"

•

जसीमुद्दीन साहब को लेकर जिस वक्त मैं पशुपति बाबू के घर पहुँचा उस समय ाम हो आयी थी। पशुपति बाबू घर पर नहीं थे। एक लड़के ने आकर दरवाजा ोल दिया और कहा, "पिता जी अभी तक ऑफिस से नहीं आये हैं। आप लोग ैठिए, पिता जी अभी आ जायेंगे।"

मैंने जसीम साहब से कहा, "यही पशुपति बाबू का लड़का है। इन लोगों की उपाधि खास विश्वास है। क्लाइव साहब ने दिल्ली के बादशाह से उद्धवदास के लिए ख़ास विश्वास खिताब मँगा दिया था। अपने लिए भी नया खिताब मँगाया था।"

जसीम साहब ने पूछा; "हाँ, तो फिर क्या हुआ ?"

मैंने कहना शुरू किया, "फिर बड़ी अद्‌भुत घटना घटी। उद्धवदास जब उस दिन भोर में दमदम हाउस पहुँचा तो उसने भी नहीं सोचा था कि ऐसा होगा ! मेजर किलपैट्रिक ने उस दिन जब पद्मा में जाते बजरों पर हमला कर दिया था तो मीरन ने ौर कोई रास्ता न देखकर सब बेगमात को पानी में डुबो दिया था। लेकिन मेजर

के सिपाही भी इतनी आसानी से छोड़नेवाले नहीं थे। वे लोग भी पानी में कूद पड़े थे। जो मिले, उनमें से कोई भी जिंदा नहीं था। सिर्फ कान्त ने एक बार जरा पलकें झपकायी थी। बाकी लाशों को वहीं छोड़कर मेजर के सिपाही उसे ही दमदम हाउस ले आये। लेकिन उसकी आयु शायद पूरी हो आयी थी। जो कुछ जान बाकी थी, रास्ते में ही निकल गयी। उसका शरीर ही दमदम हाउस लाया गया।

क्लाइव ने लाश को दफनाने के लिए कहा।

लेकिन मराली ने कहा, "नहीं, शव-दाह की व्यवस्था करनी होगी।"

आखिर में वही हुआ। लकड़ी आयी, पुरोहित जी आये। चिता सजायी गयी। घी, चंदन, फूल वगैरह किसी भी चीज की कमी नहीं थी। एक दिन जिस कान्त ने चौक बाजार के उस ज्योतिषी से अपना भविष्य जानना चाहा था उसे दमदम हाउस के आँगन में जलाकर भस्म करने का पूरा प्रबन्ध किया गया। मराली ने खुद खड़े होकर हर चीज का इन्तजाम कराया। अब चिता में आग लगाने की पारी थी।

मेरी बेगम ने अचानक कहा, "पुरोहित जी, जरा रुकिए, मैं अभी आयी।"

इतना कहकर मराली अंदर चली गयी। थोड़ी देर बाद जब वह लौटकर आयी, उस समय वह लाल किनारे की एक नयी साड़ी पहने थी। उसकी माँग में सिंदूर भरा था, पाँवों में आलता था और माथे पर बड़ी-सी बिंदी लगी हुई थी। धीरे-धीरे उसे चिता की ओर बढ़ते देखकर क्लाइव उसके आगे जा खड़ा हुआ। पूछा, "कहाँ जा रही हो?"

मराली ने कहा, "इस समय मुझे न रोकिए।"

"क्या कहती हो तुम? तुम क्या हिन्दू हो? तुम तो अब क्रिश्चियन हो गयी हो।"

मराली ने कहा, "नहीं। अब आप बाधा न डालिए। बहुत दिनों पहले एक बार उसने आने मे देर कर दी थी लेकिन अब वह पहले आ पहुँचा है। अब आप मेरे चलने में बाधा न दें। आपके पाँवों पड़ती हूँ, मुझे जाने दीजिए। मेरा रास्ता छोड़िए।"

उस भोर के धुँधलके में दमदम हाउस में खड़े होकर क्लाइव को बड़ा डर लग रहा था। मेजर किलपैट्रिक भी गूँगा बन गया था। मेरी बेगम क्या सती होगी? हिन्दू औरतें जिस तरह मृत पति की चिता पर बैठकर जल मरती हैं, क्या वह भी वैसा करेगी? फौज के सिपाही भी मेरी बेगम की हरकत से ताज्जुब में पड़ गये थे।

"आप हटिए!"

क्लाइव ने कहा, "नहीं, मैं हर्गिज तुम्हें इस तरह जलकर नहीं मरने दूँगा।"

मराली अब चुपचाप थोड़ी देर क्लाइव की ओर देखती रही, फिर कहा, "लेकिन आप मुझे रोकनेवाले कौन होते हैं?"

"तुम्हारा हज़बैंड अभी जिन्दा है।"

किलपैट्रिक ने तुरंत एक सिपाही कांत-सागर से उद्धवदास को बुला लाने के लिए भेज दिया। उद्धवदास आकर सब सुनकर चुप रहा।

इसके बाद क्लाइव ने उद्धवदास को पास बुलाकर कहा, "पोएट, तुम इसको रोको। मेरा कहना तो यह मान नहीं रही है, शायद तुम्हारी बात सुने।"

उद्धवदास क्लाइव की ओर देखकर हँसने लगा।

"यह क्या, तुम हँस रहे हो? रोकते क्यों नहीं? तुम अपनी आँखों से अपनी वाइफ को जलकर मरते देखोगे?"

मराली ने कहा, "मैं इस समय किसी की बात नहीं सुनूँगी। मुझे छोड़ दें।"

"लेकिन जलने से तुम्हें तकलीफ होगी, सारा बदन झुलस जायेगा, तब दर्द के लिए तुम छटपटाओगी!"

मराली ने मुस्कराते हुए कहा, "नहीं साहब, मुझे कोई तकलीफ नहीं होगी।"

"आग में जलने पर भी कोई तकलीफ नहीं होगी? तुम कह क्या रही हो?"

"साहब, फिर आप मुझे पहचान नहीं पाये हैं! आपके साथ मुर्शिदाबाद में जो ग्यारह बेगम साहबाएँ आयी हैं, मैं उनकी तरह नहीं हूँ। मैं उनसे अलग किस्म की हूँ।"

"यह मैं मानता हूँ कि तुम अलग किस्म की हो, फिर भी तुम्हारे प्राण हैं, दूसरों की तरह तुम्हारे अंदर भी फीलिंग है, तुम्हें भी भूख लगती है और कट जाने पर तुम्हारे शरीर से भी खून निकलता है।"

मराली ने कहा, "नहीं!"

"क्या कहती हो? आग में जलने पर तुम्हें तकलीफ नहीं होगी?"

"नहीं! आप इसकी परीक्षा ले सकते हैं।"

●

अचानक तभी पशुपति बाबू अंदर आये। मुझे देखकर वे आश्चर्य में पड़ गये। बेचारे बाल-बच्चेदार आदमी थे। दफ्तर से लौटते समय एकदम सब्जी बाजार से खरीदारी करके लौटे थे। हाथ में झोला था। उसमें से गोभी, मूली, पालक का साग और बैंगन झांक रहे थे।

मैंने कहा, "आइए पशुपति बाबू, इनसे आपका परिचय करा दूँ। आप हैं शमीमुद्दीन साहब, यूनिवर्सिटी में रिसर्च स्कॉलर हैं। 'बेगम मेरी विश्वास' वाली पोथी देखने आये हैं।"

पशुपति बाबू ने कहा, "एक मजेदार बात हो गयी है। अच्छा, आप लोग जरा बैठिए, मैं कपड़े बदलकर अभी आया। आप लोगों के लिए चाय बनाने के लिए भी कह दूँ।"

कहकर पशुपति बाबू अंदर चले गये। विश्व-ब्रह्माण्ड के विराट् परिवेश में जैसे कहीं एक अस्थिर उन्मादना प्रारंभ हो गयी थी। मृत्युतीर्थ में तर्पण करते वक्त हर किसी के हृदय में शायद इसी तरह की अनुभूति होती है। लग रहा था, जल-थल और अंतरिक्ष, हर ओर से जैसे वही अमृतवाणी सुनायी दे रही है। लग रहा था

जीवन और मृत्यु की परिधि से परे, एक अनादि-अनन्त लोक के अमर अस्तित्व का साक्षात्कार हो रहा है। यथार्थ त्याग की वेदना भी सचमुच मुक्ति का आनन्द है। इच्छा हो रही थी, एक बार फिर उसी असह्य वेदना की अनुभूति मिले जिसमें विलाप का अवसान हो। हम सहज ही सुखी होना चाहते हैं, सहज ही ऐश्वर्यशाली होना चाहते हैं, इसीलिए हमें तीव्र यंत्रणा से छटपटाना पड़ता है; लेकिन उस तरह मन, बुद्धि और अहंकार सबसे मुक्ति पाये बिना कैसे कह सकता हूँ कि तुम्हें पा लिया। तुम्हें पाने का मूल्य चुकाये बिना तुम्हें पाना मेरे लिए व्यर्थ है। इसीलिए हर बंधन से मुक्त होकर ही मैं आज तुम्हारे साथ युक्त हो रही हूँ। हे ईश्वर, मुझे मुक्त होने की शक्ति दो!

तब तक जगत्सेठ जी, मीर जाफर, महाराज कृष्णचन्द्र, छोटे सरकार वगैरह सभी पास आकर खड़े हो गये थे। आसपास के गाँवों से भी बहुत-से लोग ख़बर पाकर आये थे। वे भी झुंड के झुंड आकर भीड़ बढ़ाने लगे थे।

"सचमुच आग में जलने पर तुम्हें जलन नहीं होगी?"

"जलन होगी या नहीं, इसकी परीक्षा कर देखिए न।"

किलपैट्रिक एक जलती हुई मशाल ले आया। मशाल से तेज लपट उठ रही थी। मराली ने आग की लपट पर हाथ बढ़ा दिया। हाथ की पाँचों उँगलियाँ चट्-चट् आवाज के साथ जलने लगीं। झुलसकर उँगलियाँ काली पड़ गयीं। उनसे दुर्गंध निकलने लगी।

फिर पाँचों उँगलियाँ टेढ़ी-मेढ़ी हो गयीं। इस पर भी मराली के चेहरे पर कोई विकार नहीं था।

उसने कहा, "अब तो आप सन्तुष्ट हैं न?"

क्लाइव में उस समय जवाब देने की सामर्थ्य नहीं थी। वह निर्वाक् खड़ा मराली की ओर देख रहा था। मराली के चेहरे पर एक अद्‌भुत मुस्कान झलक रही थी।

मराली चिता पर जाकर बैठ गयी। उसने कान्त का सर दोनों हाथों से उठा कर अपनी गोद में रखा। कहा, "हाँ, अब आग लगाओ।"

साथ ही साथ आग की लपटें उठने लगीं। दमदम हाउस के मैदान से उठी लपटों ने पूरे हिन्दुस्तान को अपनी चपेट में ले लिया। आग की इस लपट से [illegible] का बादशाह खाक हो गया। मराठे, सिख भी खाक हुए। लेकिन उसके बाद [illegible] इंजिन आये, जहाज और बड़े-बड़े कल-कारखाने आये, फोटो लेने के कैमरे और [illegible]फोन आये।

जगत्सेठ जी, मीर जाफर, महाराज कृष्णचन्द्र, छोटे सरकार [illegible] मुंशी रामचन्द, कर्निघम, वाट्स और वौचर सबके सब [illegible] गये। मीर जाफर के सारे बदन में आखिरी दिनों में कोढ़ हो [illegible] हाथ से गंगाजल पीकर भी उसे रोग से मुक्ति नहीं मिली। [illegible]

मृत्यु और भी मर्मान्तिक हुई। विजली गिरेगी तो ढूँढ़-ढाँढ़कर उसी के सर पर गिरेगी, यह किसे मालूम था ? अमीचंद को वहुतों ने सड़कों पर घूमते हुए देखा था। वह वड़वड़ाता हुआ सड़कों पर घूमा करता था। अंत तक वीस लाख रुपये के शोक ने उस जैसे करोड़पति को भी वेकल कर दिया था। उसके वाद वह फिर कभी दिखाई नहीं पड़ा था।

आज लालवाजार के चारों ओर जो एंग्लो-इंडियन और अरमेनियनों की भीड़ जमी है, वे सव कर्नल क्लाइव को नजराने में मिली ग्यारह वेगमों के वंशधर हैं। पुश्तों से वे लोग यहीं रह रहे हैं।

और हतियागढ़ की छोटी वहूरानी ? छोटी वहूरानी की वाकी जिन्दगी महल के वाहर के हिस्से में कटी। वड़ी वहूरानी ने अपने आखिरी दिनों में किसी वच्चे को गोद लिया था। हतियागढ़ की सारी सम्पत्ति का उत्तराधिकार उसी को मिला। छोटी वहूरानी के भी अपनी कोई सन्तान नहीं थी। उसने भी दूसरे के वच्चे को गोद लिया था। लेकिन मुसलमान के हाथ का भूठा खाने के अपराध में उसके वंशज आज भी पतित हैं। हतियागढ़ के राजवंश की मर्यादा के हिस्सेदार वे नहीं वन सके।

●

पशुपति वावू कमरे में आये। चाय भी आयी।

मैंने जसीम साहव से कहा, "ये ही उद्धवदास के वंशज हैं। ईसाई हो जाने के वाद मेरी वेगम ने अपनी पसंद से उद्धवदास का विवाह करा दिया था। इन्हें तो कुछ भी मालूम न था। पोथी पढ़ने के वाद मैंने ही इन्हें वतलाया।"

जसीम साहव ने कहा, "जरा उस पोथी को लाइए न, देखा जाय।"

पशुपति वावू ने कहा, "अरे हाँ, एक मजेदार वात कहना तो भूल ही गया। आपको वह पोथी दिखलाने के वाद मैंने और भी दो-चार लोगों से उसके वारे में वात की। उसके वाद एक अमेरिकन साहव अचानक आकर उसे ले गये।"

"ले गये माने ? वापस नहीं करेंगे ?"

पशुपति वावू ने कहा, "नहीं, वे डेढ़ सौ रुपये में उसे खरीदकर ले गये हैं।"

"अरे ! आपने उस पोथी को वेच दिया ? उन साहव का पता मालूम है ?"

पशुपति वावू ने कहा, "वह तो मुझे नहीं मालूम। मैं ठहरा वाल-वच्चेदार मामूली आदमी, नकद डेढ़ सौ रुपये मिल गये, इसलिए मैंने पता-वता नहीं पूछा।"

इसके वाद हम लोग क्या करते ? वापस चले आये। लेकिन जव भी उस कहानी की याद आती है, दो सौ साल पहले की उस विचित्र मेरी वेगम की कथा जैसे मन को झकझोर देती है। लगता है, एक दिन ऐसा भी आ सकता है जिस दिन आज की यह कुटिल और जटिल दुनिया के लोगों की भीड़ में से कम से कम एक ऐसे आदमी का आविर्भाव होगा, जो कह सकेगा, अपनी वुद्धि, मन और अहंकार से मुक्ति पाये वगैर कैसे कह सकता हूँ कि मैंने तुम्हें पा लिया। तुम्हें पाने का मूल्य चुकाये वगैर तुम्हें